हज़रत मौलाना
तारिक़ जमील साहब के
इबरत अंगेज़
बयानात
तर्तीब
मौलाना अरसलान बिन अख़्तर
FARID
BOOK DEPOT

हज़रत मौलाना
तारिक़ जमील साहब के

इब्रत अंगेज़ बयानात

तर्तीब

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

नाम किताब

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब के

इबरत अंगेज़ बयानात

लेखक: मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

पहला एडीशन: 2008 साइज़: 23x36x16

पेज: 960

प्रस्तुत-कर्ता: जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Maulana Tariq Jameel Sahab ke Ibrat Angez Bayanat

By: **Maulana Arslan Bin Akhtar**

Pages: 960 Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13
Ph.: 65851762, 9990438635

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

मुअल्लिफ़ की अर्ज़

कुछ दर्द भरी बातें

अल्हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्लाह मेरे करीम आक़ा का मुझ स्याहकार पर एहसान है कि उसने हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब दामत बरकातुहुम के बयानात पर सन् 2000 ई० में किताब तर्तीब देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उस वक़्त किसी ने भी मौलाना के बयानात को किताबी शक्ल में ढालने का दिलचस्प अन्दाज़ व तर्तीब व उनवानात के साथ काम नहीं किया था। उस वक़्त मौलाना के बयानात को लोगों ने हाथो हाथ लिया और मेरे गुमान से ज़्यादा उसे लोगों ने पसन्द किया।

यह बात हैरत वाली भी है और शुक्र के लाएक़ भी है। शुक्र इस बात पर है उस आक़ा ने इस आजिज़ को कुछ सफ़हात स्याह करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। हत्ताकि ख़तों और फ़ोन पर दर्जनों लोगों ने एहक़र के काम को सराहा और मज़ीद बयानात पर काम करने पर अमादा किया। इन मुहब्बत भरे ख़तों पर एहक़र को दोबारा इस पर मज़ीद काम करने की हिम्मत हुई। जबसे मैंने होश संभाला किताब हमेशा आँखों के सामने रही। मुताला मेरा सबसे महबूब मशग़ला बना मगर मौलाना के बयानात से मैं मौलाना का आशिक़ होकर रह गया।

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब दामत बरकातुहुम का सिर्फ नाम की हद तक जमील (ख़ूबसूरत) नहीं हैं बल्कि आमाल और किरदार भी आपका बेमिसाल है। आप जब बयान करते हैं तो फ़िक्रे उम्मत, ग़मे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपकी ज़बान चेहरे से ज़ाहिर होता है। इसीलिए एक एक बोल दिल में उतरता चला जाता है और आप इस शे'र का चलता फिरता नमूना नज़र आते हैं—

ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर
सारे जहां का दर्द हमारे जिगर में है

आपका एक एक जुमला व फ़साहत बलाग़त से सजा होता है। आपका बयान ऐसा दिलनशीन होता है कि सुनने वाले अपने आँसुओं में डूब जाते हैं। उनकी आँखें झलक उठती हैं। दिल बेक़रार हो जाते हैं। सिसकियाँ फिज़ाओं में बुलन्द होना शुरू हो जाती हैं।

यही वह दौलत है जिसकी वजह से लाखों लोग मौलाना के बयानों को सुनकर तौबा कर रहे हैं। आप लाखों लोगों को रुलाते हैं और ख़ुद भी रोते हैं। ऐसा लगता है जैसे जहन्नम आपके सामने है। मौलान के बयान का एक एक बोल नायाब मोती से ज़्यादा अहम है। उनकी हक़ीक़त सिर्फ क़द्रदान लोग ही जानते हैं।

किसी दिल वाले ने क्या ख़ूब कहा है। मेरे नज़दीक यह लफ़्फ़ाज़ी मौलाना पर सादिक़ आती है—

पैकरे जमाल भी हैं, फ़िक्र की इब्तिदा भी हैं, फ़हम की इन्तेहा भी हैं, आफ़ताब की चमक भी, कलियों की महक भी, सब्ज़े की लहक भी, बुलबुल की चहक भी, हीरे की डलक भी।

हक़ीक़त में मौलाना को मेरे मौला ने बड़ा ही निराला बनाया है। आपकी अदा भी बेमिसाल है, आपकी मुस्कुराहट भी अजीब है, आपका बोलना कभी तो आँसुओं से रुलाता है, कभी चहरों पर खुशियाँ बिखेरता है। आपकी मजलिस में बैठकर इंसान दुनिया और सारी चीज़ों से बेख़बर होकर एक अजीब नूरानी फ़िज़ा में पहुँच जाता है। आपकी मजलिस में लोगों की ख़ौफ़े आख़िरत से चीखें निकल जाती हैं और साथ ही साथ अल्लाह से लौ लगाने का जज़्बा पैदा हो जाता है और हर आदमी की कैफ़ियत इस शे'र का मिसदाक़ बन जाती है—

याद में तेरी सबको भुला दूँ कोई न मुझे याद रहे
सब ख़ुशियों को आग लगा दूँ ख़ाना-ए-दिल आबाद रहे

सुनूँ मैं नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आ जाए सोया दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसलसल याद अपनी
खुदाया रहम फ़रमा दिल बदल दे

तेरा हो जाए बस इतनी आरज़ू है
बस इतनी तमन्ना है दिल बदल दे

अल्लाह तआला ने आपको क़ुरआन पर बेमिसाल उबूर दिया है। आप एक ही मौज़ू पर क़ुरआन में ग़ोता मारकर एक ही उनवान पर मोती चुन चुनकर ढेर लगा देते हैं कि सुनने वाले हैरान होकर रह जाते हैं। एक ही जैसे अल्फ़ाज़ का जोड़ मौलान ही की शान है।

ऐसा मालूम होता है कि अल्फ़ाज़ व क़ाफ़िया आपके सामने हाथ जोड़कर खड़े हैं कि हम आप ही के लिए हैं और यही

अल्फ़ाज़ का ज़ख़ीरा आपकी तक़रीर के हुस्न में निखार पैदा करता है। किसी ने ख़ूब कहा है—

मौलाना की तक़रीर होगी, अल्लाह का क़ुरआन होगा, कमली वाले का फ़रमान होगा, जो मान लेगा वह पक्का मुसलमान होगा।

मौलाना हक़ीक़त में इस दौर के हकीमुल-उम्मत हैं। आपके बयान मुर्दा दिलों में नई रूह फूंक देते हैं। आपकी तक़रीर में दरिया की सी रवानी होती है, मौजों का शोर होता है।

यही वजह है कि मौलाना से ख़्वाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया—

ऐ मौलवी तारिक़! तेरा दीन सलामत रहे।

तीन बार फ़रमाया।

हज़रत मौलान अबुल हसन अली नदवी रह० ने आपके बयान सुनकर फ़रमाया—

मुझे तमन्ना थी कि मैं मौलाना का बयान सुनूं। फिर जब मैंने बयान सुना तो मुझे तारिक़ के हाफ़ज़े व फ़साहत व बलाग़त व तर्तीबे अल्फ़ाज़ को देखकर पुराने बुज़ुर्गों की शख़्सियात याद आ गई और फिर अल्लाह का शुक्र अदा किया कि इस दौर में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जिनको देखकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का दौर यादा आ जाता है।

आप ख़ुत्बात के बादशाह हैं। फ़साहत व बलाग़त तो आपके घर की चीज़ है। मौलान के बयानात में ज़्यादातर वाक़िआत होते हैं। गोया आप सबक़ और इबरत देने वाले वाक़िआत को ख़ूबसूरत लड़ी में पिरोकर सुनने वालों को सुनाते हैं कि सुनने वाला बयान के अन्दाज़ से आख़िरत की वादियों में गुम हो जाता है। आपकी मजलिसों में बैठने वालों का दिल यह चाहता है कि

यह मजलिस कभी ख़त्म ही न हो।

मेरे भाईयो! आज मौलाना के बयानों की हम क़द्र करें। यह न हो कि कल कोई कहने वाला कहने पर मजबूर हो जाए—

बाद तेरे हुस्न व इश्क़ समझाएगा कौन?

वह बज़्म अब कहाँ वह मुहब्बत भरी बातें कहाँ

तुम क्या गए रूठ गए दिन बहार के

मुझे उम्मीद है कि यह किताब आपका मुख़्लिस दोस्त साबित होगी। जिन हज़रात को इस किताब से नफ़ा हो वह हज़रात मौलाना जमील साहब और बन्दे आजिज़ को, अहक़र के पीर व मुर्शिद व उस्तादों और जिन हज़रात ने किताब की तैयारी में मदद की उनको और ख़ासतौर पर मरहूम भाई हाफ़िज़ अकबर (उम्र 26) को अपनी दुआओं में याद रखें।

आख़िर में मैं अपने मौला का जितना शुक्र अदा करूं वह कम है। मैं तो गुनाहों से सना हूँ लेकिन हक़ीक़त में बड़ी चाहत से बिखरे हुए मोतियों का जमा किया है। मेरी दुआ है और आप भी दुआ करें—

ऐ बेकसों के मौला! तू इन मोतियों को क़ुबूलियत की दौलत बख़्श दे और इस स्याहकार को दर्दे दिल अता फ़रमा दे।

﴿اللهم كن لى محبا﴾ ऐ अल्लाह! तू मेरा बन जा और मुझे अपना बना ले।

बन्दा स्याहकार

अरसलान बिन अख़्तर

यकुम रमज़ान सन् 1425 हिजरी

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर हज़रत मौलाना डा० मुफ़्ती निज़ामुद्दीन शहीद की नज़र में

डा० साहब के क़लम से मुख़्तलिफ़ किताबों पर लिखी गई तक़रीरों की कुछ चुनींदा इक़्तिबासात

मौलवी अरसलान बिन अख़्तर की किताब "नमाज़ में ख़ुशू व ख़ुज़ू" बुज़ुर्गों की बातों का अच्छा ज़ख़ीरा है। ख़ुसूसन दूसरे हिस्से में ख़ुशू व ख़ुज़ू की सिफ़त पैदा करने का तरीक़े ख़ूब बयान किए गए हैं। अल्लाह से दुआ है कि अल्लाह तआला इनको उम्मत के लिए फ़ायदेमंद बनाए। (आमीन)

बन्दे ने अज़ीज़ मौलवी अरसलान की किताब "हुसूले विलायत" देखी माशाअल्लाह इस मक़सद के लिए बहुत फ़ायदेमंद है। इस किताब के मज़मून भी माशाअल्लाह बहुत ऊँचे हैं। इन्शाअल्लाह इसके पढ़ने से हर शख़्स में मुहब्बते इलाही का जज़्बा पैदा होगा।

अल्लाह तआला मुअल्लिफ़ को अपनी मख़्लूक़ के लिए बाइस-ए-हिदायत बनाए। (आमीन)

हज़रत डा० साहब रह० ने मौलाना अरसलान की किताब "अल्लाह के आशिक़ों की आशिक़ी" की तक़रीज़ में लिखा है कि मौलवी अरसलान साहब का बैअत का तअल्लुक़ क्योंकि आरिफ़ बिल्लाह हज़रत्त मौलाना मुहम्मद हकीम अख़्तर साहब से है इसलिए उनके मुरीदों को भी इन चीज़ों में से अच्छा ख़ासा हिस्सा मिला है। इसलिए मुहब्बते इलाही का मौज़ू मुअल्लिफ़ के लिए अजूबा नहीं है बल्कि देखाभाला है। मेरी दुआ है अल्लाह तआला

मौलवी अरसलान को अपनी कामिल मुहब्बत व पहचान नसीब फ़रमाए। (आमीन)

हज़रत डा० साहब ने "गुनाहों का समुंद्र" नामी किताब में तक़रीज़ के दौरान लिखा है—

बन्दा मौलवी अरसलान की मेहनत को क़द्र की निगाह से देखता है और दुआ करता है कि अल्लाह तआला इस किताब को अपने दरबार में क़ुबूल फ़रमाए। (आमीन)

हज़रत मौलाना डा० मुफ़्ती निज़ामुद्दीन शामज़ई रह०

○ ○ ○

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर अकाबिर की नज़र में

हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब दामत बरकातुहुम

किताब "अल्लाह तआला बन्दों से कितनी मुहब्बत करते हैं" तीन सौ किताबों से मुस्तनद है। जिसमें सूफ़ी मौलवी अरसलान साहब सल्लमहूल्लाह तआला ने अपने फ़ितरी ज़ौक़, आशिक़ाना, आरिफ़ाना से मुहब्बत और माअरफ़त के निहायत मुफ़ीद मज़मून जमा किए हैं। मुझे क़वी उम्मीद है कि यह किताब और मौसूफ़ की दूसरी किताबों का पढ़ना उम्मते मुस्लिमा के लिए माअरफ़त

और मुहब्बते ख़ुदावन्दी के हुसूल में निहायत मुफ़ीद साबित होगा। दिल से दुआ करता हूँ कि हक़ तआला मौसूफ़ की तसनीफ़ और तालीफ़ की हुई किताबों को उम्मते मुस्लिमा के लिए निहायत मुफ़ीद बनाकर पढ़ने वालों और मददगारों के लिए सदक़ा जारिया बनाए।

(आमीन)

○ ○ ○

हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी शहीद रह०

हज़रत लुधियानवी रह० ने मौलाना अरसलान की किताब "अलामाते मुहब्बत" की तक़रीज़ में लिखा है कि ज़ेरे नज़र मजमुआ में हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब के मुरीद जनाब मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर ने निहायत मेहनत और कोशिश से आसानी से भरी और मुस्तनद हवालों से सजी ज़ेरे नज़र किताब मुरत्तब फ़रमाई है जो कि तारीफ़ और भरोसे के लायक़ है। अल्लाह तआला इस मजमुए को फ़ायदेमंद फ़रमाए।

(आमीन)

अल्‌आरिज़ हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी शहीद रह०

○ ○ ○

विषय सूची

मज़मून	पेज न०

अल्लाह का तआरुफ़

○ ○ ○

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने मुबारका

O O O

अल्लाह से दोस्ती

O O O

कुरआन नमाज़ की बरकत

O O O

सुकून की तलाश

O O O

फ़ज़ाईल दावत व तलबीग़

O O O

क़ब्र की अंधेरी रात

O O O

अल्लाह के नाफ़रमानों का इबरतनाक अंजाम

O O O

नदामत के आँसू

O O O

दुनिया से मुहब्बत का

इबरतनाक अंजाम

○ ○ ○

जन्नत की परी चेहरा हूर

O O O

तक़्वा क्या है?

○ ○ ○

ईद उसकी जिसने अल्लाह को राज़ी किया

○ ○ ○

नमाज़ और नौकर

○ ○ ○

क़यामत की निशानियाँ

O O O

ईमान व यक़ीन के हैरान करने वाले असरात

○ ○ ○

आज अल्लाह नाराज़ है

○ ○ ○

जज और वकीलों से ख़िताब

○ ○ ○

जज और वकीलों से ख़िताब

○ ○ ○

अल्लाह तआला का ख़ौफ़

○ ○ ○

O O O

मिसाली शादी

O O O

पॉप सिंगरों से ख़िताब

O O O

पत्थर दिल इन्सान

O O O

अल्लाह का तआरुफ़

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

अव्वल भी तू आख़िर भी तू

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला हमेशा हमेश से है, बाक़ी तमाम मख़्लूक़ शुरू और आख़िर की पाबन्दियों से बन्धी और जकड़ी हुई है। अल्लाह तआला का तआरुफ यह है—

﴿هو الاول والآخر والظاهر والباطن وهو بكل شىء عليم.﴾

वह अव्वल है वह आख़िर है, वह ज़ाहिर है वह बातिन है और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

अव्वल वह है जिसकी शुरूआत कोई नहीं और अल्लाह वह

ज़ात है जिसका कोई आख़िर नहीं। वह क़दीम है मगर दिशा से पाक है उसकी कोई दिशा नहीं,

﴿قديم بلا بداية ودائم بلا نهاية﴾

﴿وهو الذى فى السماء وفى الارض.﴾

वह अल्लाह आसमान पर भी है और ज़मीन पर भी है,

﴿اينما تولوا فثم وجه الله.﴾

जिधर देखोगे उधर अल्लाह ही अल्लाह है,

﴿لله المشرق والمغرب.﴾

पूरब भी अल्लाह का है पश्चिम भी अल्लाह का है,

﴿فاينما تولوا فثم وجه الله.﴾

इधर देखो अल्लाह, उधर देखो अल्लाह।

इधर देखो अल्लाह उधर देखो अल्लाह, ऊपर देखो अल्लाह, नीचे देखो अल्लाह।

﴿سنريهم ايتنا فى الافاق.﴾

मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ काएनात में भी दिखाऊँगा।

﴿وفى انفسهم.﴾ तुम्हारी अपनी ज़ात में भी दिखाऊँगा। वह अल्लाह जिसके सामने ज़मीन व आसमान झुके हुए हैं।

ज़मीन आसमान का शहंशाह

जो ज़मीन आसमान का अकेला बादशाह हो, ﴿لا وزير﴾ न उसका कोई वज़ीर है, ﴿ولا مشير﴾ न उसका कोई सलाहकार है ﴿ولا مدبر﴾ न उसका कोई मददगार है, ﴿ولا شريك له﴾ न उसका कोई शरीक है, ﴿لا مثل له﴾ न उसका कोई मिस्ल है, ﴿لا ندله﴾ मुकाबिल उसका

कोई नहीं है, ﴿لا مثال له﴾ मुशाबेह उसका कोई नहीं है, ﴿لا شبيه له﴾ उस जैसा काएनात में कोई नहीं है, ﴿من قبل﴾ न उससे पहले कुछ है, ﴿من بعد﴾ न उसके बाद में कुछ है, न उसके ऊपर कुछ है न उसके नीचे कुछ है, ﴿بلا بداية﴾ शुरूआत से पाक, ﴿بلا نهاية﴾ आख़िर से पाक, ﴿بلا مكان﴾ मकान से पाक, ﴿بلا زمان﴾ ज़माने से पाक, ﴿اينما تولوا فثم وجه الله﴾ जेहत से पाक।

निराला बादशाह

शक्ल से पाक, रंग से पाक, ऐब से पाक, नींद से पाक।

﴿لا تاخذهٔ سنة﴾ ऊँघ से पाक,

﴿ولا نوم﴾ नींद से पाक,

﴿يطعم ولا يُطعم﴾ खाने से पाक, खिलाता है, देता है ख़ुद लेने से पाक है।

﴿لا تراه العيون﴾ जिसको कोई आँख देख नहीं सकती,

﴿لا تخالطه الظنون﴾ जहाँ ख़्याल न पहुँच सके,

﴿لا يصفه الواصفون﴾ जिसकी कोई तारीफ़ न कर सके,

﴿لا تغيره الحوادث﴾ जिस पर कोई असर अन्दाज़ न हो सके,

﴿ولا يخشى الدوائر﴾ जो न किसी से डरे न झिझके,

﴿لا يسئل عما يفعل﴾ उसको कोई पूछ न सके,

﴿وهم يسئلون﴾ और हमारे किए हुए अमाल को वह सामने करके दिखा दे,

﴿احق من ذكر﴾ जिससे ज़्यादा बन्दगी के क़ाबिल कोई न हो,

﴿انصر من ابتغى﴾ जिससे बड़ा मददगार कोई न हो,

﴿الرؤف من ملك﴾ जिससे ज़्यादा मेहरबान कोई न हो,

﴿اجود من سئل﴾ जिससे बड़ा कोई सख़ी नहीं,

﴿الفرد لا ندله﴾ अकेला है कोई उसका शरीक नहीं,

﴿العلی لا سمیع له﴾ इतना ऊँचा कि कोई उसके बराबर नहीं,

﴿الغنی لا ظهیر له﴾ ऐसा ग़नी कि कोई उसका मददगार नहीं,

﴿کل شیء هالك﴾ हर चीज़ फ़ना हो जाएगी,

﴿الا وجهه﴾ वह बाकी रहेगा,

﴿کل ملك زائل﴾ हर मुल्क को ज़वाल है,

﴿الا ظله﴾ उसका साया कभी नहीं ढलता,

﴿ولن تطاع الا باذنه﴾ अल्लाह की ताकत के बग़ैर कोई उसकी इताअत नहीं कर सकता,

﴿ولن تعصٰی الا باذنه﴾ और अल्लाह से छिपकर कोई गुनाह नहीं कर सकता,

﴿تطاع فتشکر﴾ या अल्लाह तेरी मानते हैं तो तू ख़ुश होता है, कद्रदानी करता है,

﴿تعصی فتغفر﴾ या अल्लाह तेरी नाफ़रमानी करते हैं तू माफ करता है,

﴿اقرب شهید﴾ तू सबसे ज़्यादा करीब है,

﴿ادنیٰ حفیظ﴾ तू सबसे बड़ा निगहबान है,

हिफ़ाज़त करने वालों में सबसे ज़्यादा करीब अल्लाह है,

﴿اقرب الیه من حبل الورید.﴾ रगे जान से भी ज़्यादा करीब है,

﴿حلت دون النفور﴾ हमारे और हमारे इरादों के दर्मियान हाएल हो जाता है, अगर हमने चाहा और उसने न चाहा तो नहीं हो सकता अगर हमने न चाहा उसने चाह लिया तो हो जाएगा, हमने रोकना चाहा उसने करना चाहा, कर दिया, हमने करना चाहा उसने रोकना चाहा, रोक दिया।

हर ऐब से पाक कौन है?

﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ न सोता है न ऊँघता है,

﴿ما كان ربك نسيا﴾ न भूलता है,

﴿لا يضل ربى﴾ न भटकता है,

﴿ولا ينسى﴾ न चूकता है,

﴿ان ربكم الله﴾ बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है,

﴿الذى خلق السموت والارض﴾ जिसने ज़मीन व आसमान बनाए,

﴿فى ستة ايام﴾ छः दिन में,

﴿ففروا الى الله﴾ दौड़ो अल्लाह की तरफ़ जो कुल जहान का बादशाह है, अल्लाह वह बादशाह है जिसके मुल्क पर कोई आता नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिससे कोई टकराता नहीं,

﴿الملك لا شريك له﴾ बादशाह, शरीक कोई नहीं,

﴿الفرد لا ندله﴾ अकेला मिस्ल कोई नहीं,

﴿العلى لا سميع له﴾ ऊँचा, हमसर कोई नहीं,

﴿الغنى لا ظهير له﴾ ग़नी, मददगार कोई नहीं,

﴿المدبر لا مشير له﴾ मुदब्बिर, कोई उसका सलाहकार नहीं,

﴿القاهر لا معين له﴾ वह क़ह्हार और उसका कोई फौज व लश्कर नहीं जिसके ज़रिए चढ़ाई करके छा गया बल्कि,

﴿له ما فى السموت والارض﴾ सारे जहानों का बादशाह है,

﴿يحى و يميت﴾ ज़िन्दगी और मौत का मालिक,

﴿وهو على كل شىء قدير﴾ हर चीज़ पर क़ादिर है,

﴿هو الاول﴾ वह अव्वल, ﴿والآخر﴾ वह आख़िर है,

﴿والظاهر﴾ वह ज़ाहिर है, ﴿والباطن﴾ वह बातिन है,

﴿وهو بكل شيء عليم﴾ वह हर चीज़ का जानने वाला है।

हर मुहताजी से पाक है

और वह ऐसा निराला बादशाह है जिसे न पहरे की ज़रूरत है, जिसे न हिफ़ाज़त की ज़रूरत है, जिसे न खाने की ज़रूरत है, जिसे न पीने की ज़रूरत है, जिसे न बीवी की ज़रूरत है, जिसे न बच्चों की ज़रूरत है, जिसे न जी लगाने के लिए किसी साथी की ज़रूरत है, जिसे न काम करने के लिए किसी मददगार की ज़रूरत है। वह अल्लाह है।

﴿لا يستعين بالشيء﴾ किसी से मदद नहीं लेता,

﴿لا يحتاج الى شيء﴾ किसी चीज़ का मुहताज नहीं,

﴿لا يضره شيء﴾ कोई चीज़ उसे नुक़सान नहीं पहुँचा सकती,

﴿لا ينفعه شيء﴾ कोई चीज़ उसे नफ़ा नहीं पहँचा सकती, कोई चीज़ उससे भाग नहीं सकती, कोई चीज़ उससे लड़ नहीं सकती, किसी चीज़ का वह मुहताज नहीं है,

﴿خلق كل شيء فقدره تقديرا﴾ हर चीज़ उसके हाथ से बनी है,

﴿مالك كل شيء﴾ फिर हर चीज़ का मालिक है,

﴿خبير بكل شيء﴾ जानता है और अन्दर बाहर सारी काएनात उसके क़ब्ज़े में है,

﴿يتنزل الامر بينهن﴾ आसमान पर भी अल्लाह का हुक्म चलता है, फिर वह अल्लाह ऐसा है न तो उसे घर की ज़रूरत है न उसे

मकान की ज़रूरत है,

﴿لا يحويه مكان﴾ किसी मकान में नहीं आता,

﴿لا تشتمل عليه الزمان﴾ किसी ज़माने की क़ैद में नहीं,

माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल से वह ऊपर है, हमें माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल में बाँधा। वह अपनी ज़ात में न हाल का मुहताज न माज़ी का मुहताज न मुस्तक़बिल का मुहताज न वह मकान का न छत का न दीवारों का न फ़र्श का मुहताज और इस सारे निज़ाम को चलाने में ﴿لا تاخذه سنة﴾ वह ऊँघता नहीं, ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं, ﴿ولا يؤده حفظهما﴾ वह थकता नहीं ﴿وما مسنا من اللغوب﴾ जहाँ को बनाकर नहीं थका, निज़ाम को चलाकर नहीं थका फिर इस सारे निज़ाम को चलाते हुए वह ग़ाफ़िल नहीं ﴿لا تحسبن الله غافلا﴾ वह भूला नहीं, ﴿وما كان ربك نسيا﴾ वह ग़लत फ़ैसले नहीं करता ﴿لا يضل ربي﴾ और वह भूलकर फ़ैसले नहीं करता ﴿ولا ينسى﴾।

अल्लाह के इल्म की बुलन्दी

फिर इस सारी काएनात में कोई चीज़ उससे छिपी हुई नहीं है,

﴿يعلم ما في البر والبحر﴾ ज़मीन के अन्दर को भी जानता है पानियों के अन्दर को भी जानता है,

﴿سواء منكم من اسر القول﴾ कोई ज़ोर से बोले तो भी वह सुनता है आहिस्ता बोले तो वह भी वह सुनता है,

﴿ومن جهر به﴾ कोई ज़ोर से बोले तो भी वह सुनता है, ﴿ومستخف بالليل﴾ कोई रात को छिप के चले तो वह भी देखता है, ﴿وسارب بالنهار﴾ कोई दिन के उजाले में चले तो वह भी देखता है. अल्लाह अपनी बादशाही में बेमिस्ल है, बेमिसाल है।

वह, वह अल्लाह है जो सबको खिलाता है खुद खाने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको पिलाता है खुद पीने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको देता है खुद लेने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको पहनाता है खुद पहनावे से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको सुलाता है खुद सोने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको थकाता है खुद थकने से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको मारता है खुद मौत से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबको इम्तिहान में डालता है खुद आज़माइश से पाक है, वह, वह अल्लाह है जो सबकी ज़रूरतें पूरी करता है खुद हर ज़रूरत से पाक है वह अल्लाह है जो सबको जोड़ा जोड़ा बनाता है खुद जोड़े से पाक है।

न उसकी कोई शबाहत है न उसका कोई मिस्ल न उसकी कोई मिसाल है न उसका कोई शरीक है न उसका कोई सलाहकार है न उसका कोई मुहाफ़िज़ है न उसका कोई मददगार है न वह किसी से दबता है न किसी से घबराता है न किसी से डरता है न कभी करके पछताया है न ख़ता खाई ﴿لا يضل ربي ولا ينسى﴾ करे तो भूलता नहीं करे तो गलत नहीं करता। वह अपने आपको माबूद कहलवाने में हमारी बन्दगी का मुहताज नहीं, अपने आपको अकबर और कबीर कहलवाने के लिए हमारी तकबीरों का और अज़ानों का मुहताज नहीं, अपनी तारीफ़ करवाने के लिए हमारी तस्बीह का मुहताज नहीं।

ख़्यालात से ऊँची ज़ात

कोई उसको माने या न माने वह हर हाल में पाक ज़ात है, हर

हाल में बुलन्द ज़ात है, हर हाल में बरतर ज़ात है, हर हाल में अज़ीम ज़ात है, हर हाल में वरा-उल-वरा ज़ात है,

﴿لا تدركه الابصار﴾ उसे न आँख देख सके,

﴿لا تخالطه الظنون﴾ उसे न ख़्याल पहुँच सके,

﴿لا تغيره الحوادث﴾ उसे न हादसात बदल सकें,

﴿لا يخشى الدوائر﴾ वह इन्क़लाबों से डरता नहीं,

﴿لا يصفون الواصفون﴾ तारीफ़ करने वाले उसकी तारीफ़ करके थक जाएं और उसकी तारीफ़ ख़त्म न हो, हमारी ज़बानें कट जाएं, ख़त्म हो जाएं, हमारे हाथ लिखते-लिखते टूट जाएं, हमारे क़लम घिस जाएं मगर अल्लाह की तारीफ़ ख़त्म नहीं हो सकती,

﴿ما كان معه من اله﴾ उसके मुक़ाबले में इलाह कोई नहीं,

﴿لم يتخذه صاحبة﴾ बीवी कोई नहीं, ﴿ولا ولدا﴾ बेटा कोई नहीं,

﴿ولم يكن له شريك فى الملك﴾ उसका शरीक कोई नहीं,

﴿ولم يكن له ولى من الذل﴾ कोई मददगार और मुईन और साथी नहीं,

इसलिए अल्लाह ने कहा—

﴿فكبره تكبيرا﴾ उसी को कह अल्लाह तू बड़ा है, उसी की तस्बीह पढ़, उसी की किबरियाई का बोल बोल कि ये सारे बादशाह बौने हैं, मिट्टी के माधो हैं और ये पत्थर के बुत हैं जैसे लात व मनात से कुछ नहीं होता था आज के ऐटम बम से अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कुछ नहीं होगा, जैसे लात व उज़्ज़ा से कुछ नहीं होता था इसी तरह साइंस से अल्लाह के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता, मख़्लूक़ में अल्लाह ने ताक़त रखी है, अल्लाह छीन ले तो कौन दे सकता है?

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दहकती आग से हिफ़ाज़त

आग भड़कने वाली, जलने वाली, जलाने वाली, इब्राहीम अलैहिस्सलाम हवा में उड़ते हुए चले आ रहे हैं और सब टकटकी बाँधे हुए देख रह हैं कि अब जला, वह गिरा और वह जला और नीचे जाने तक हड्डियाँ भी नहीं मिलेंगी और उसी आग में ग़र्ज़ यह कि ऊपर से हुक्म आया ﴿كونوا بردا﴾ हो जा ठंडी बुझाया नहीं बादशाही कैसे पता चलती? ताक़त का कैसे पता चलता? बुझाया नहीं आग आग है मगर कहा इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए ﴿بردا﴾ ठंडी हो जा तो शोलों ने यूँ लपक के अपने दामन में ले लिया, इब्राहीम यूँ नहीं गिरे "गड़प" बल्कि शोलों ने उठा लिया और यूँ ऐसे नीचे लाए जैसे माँ अपने बच्चे को गोद से बिस्तर पर लिटाती है किसी मख़्लूक़ की ताक़त ज़ाती है? कोई ऐटम अपनी ताक़त से ताक़तवर बन चुका है? वह लोहे को मोम बना दे, मोम को लोहा बना दे, तिनके को ऐटम बम बना दे ऐटम बम को तिनका बना दे। उसकी ताक़त है और ऐसी सर्दी की लहर उठी कि फिर दूसरा हुक्म आया ﴿وسلاما﴾ ऐ क्या कर दिया तूने? ठंडक की तकलीफ़ पहुँचा दी, सलामती वाली बन कि न गर्मी लगे न सर्दी लगे तो वह आग, आग है औरों के लिए और वही आग गुलज़ार है ख़लील के लिए इसलिए कि अल्लाह की ताक़त है, ﴿ان القوة لله جميعا﴾।

अल्लाह की बड़ाई अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी

अल्लाह का नबी अपने अल्लाह की तारीफ़ में कह रहा है:
वह अपनी ज़ात व सिफ़ात में ला महदूद है,
﴾احق من ذكر﴿ याद करना है तो अकेला है तो वह अकेला ही इस क़ाबिल है,
﴾احق من عبد﴿ बंदगी करनी है तो वह अकेला ही इस क़ाबिल है,
﴾انصر من ابتغى﴿ मदद चाहनी है तो वह अकेला है,
﴾اجود من سئل﴿ सख़ावत देखनी है तो वह अकेला है,
﴾اوسع من اعطى﴿ बेइन्तिहा देने में वह अकेला है,
﴾الملك لا شريك له﴿ अपनी बादशाही में वह अकेला है,
﴾الفرد لا ندله﴿ अपने वजूद में वह अकेला है,
﴾لا يحتاج الى شیء﴿ न किसी का मुहताज है,
﴾لا يغلبه شیء﴿ कोई चीज़ उस पर ग़ालिब नहीं आती,
﴾لا يؤده شیء﴿ कोई चीज़ उसे थकाती नहीं,
﴾لا يعزب عنه الشیء﴿ कोई चीज़ उससे छिप नहीं सकती, ﴾لا يخفى على الله من شیء﴿ उसके लिए अंधेरा भी बराबर, उजाला भी बराबर।

इन्सान अल्लाह की क़ुदरत का नमूना

माँ के पेट के अन्दर तीन अंधेरों में एक नुत्फ़े पर तजल्ली को डालता है। तीन अंधेरों में आँखें बनाता है, मुँह को बनाता है और उसकी खाल बनाता है, उसकी पलक बनाता है, भवें बनाता है,

नाख़ुन बनाता है, उंगलियाँ बनाता है, दिल बनाता है, फेफड़े बनाता है, दिमाग़ बनाता है।

और एक वक़्त में एक बच्चा नहीं बन रहा है, एक वक़्त में करोड़ों माँओं के पेट में बच्चे और बच्चियाँ बन रहे हैं।

हमें ग़ाफ़िल से वास्ता नहीं, आजिज़ से वास्ता नहीं कि वह हमारा कुछ नहीं कर सकता।

﴾وما هم بمعجزين﴿ तुम में ताक़त है तो मुझे आजिज़ करके दिखाओ, चलो मुझे धोका देकर दिखाओ कि किसी की फाइल बदल दो कि मैंने तो क्या ही नहीं।

﴾لا يضل ربى ولا ينسى﴿ तेरा रब भूलता नहीं, तेरा रब ग़लत फ़ैसले नहीं करता, ﴾لا تاخذه سنة﴿ ऊँघता नहीं ﴾ولا نوم﴿ सोता नहीं, ﴾وما كان ربك نسيا﴿ भूलता नहीं, ﴾لا يؤده حفظهما﴿ थकता नहीं, खाता नहीं खिलाता है, सोता नहीं सुलाता है, पीता नहीं पिलाता है, मरता नहीं मारता है,

﴾حى قبل كل حى﴿ हर ज़िन्दा से पहले ज़िन्दा है,

﴾وحى بعد كل حى﴿ हर ज़िन्दा के बाद ज़िन्दा है,

﴾وحى ليس كمثله حى﴿ ऐसा ज़िन्दा कि कोई ज़िन्दा उस जैसा ज़िन्दा नहीं है,

﴾وحى لا يشبهه حى﴿ ऐसा ज़िन्दा कि कोई ज़िन्दा उसके मिस्ल नहीं है,

﴾لا شريك له﴿ शरीक से पाक है,

﴾ام يتخذه صاحبة﴿ बीवी से पाक है,

﴾ولا ولدا﴿ बेटे से पाक है।

अल्लाह तआला का सिलसिल-ए-नसब

अहले अरब को दस-दस, बीस-बीस पुश्तों के नाम मुँह ज़बानी याद होते थे, मेरा बाप, दादा और फ़लाँ, फ़लाँ सारी नस्लों के नाम जानते थे, घोड़ों की नस्लों के नाम जानते थे। एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहने लगे ﴿ما ذا انسب لنا ربك﴾ हमें तो अपने बाप दादा का हसब व नसब मालूम है, तेरे रब का नसब क्या है? इससे पहले कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बोलते, अल्लाह खुद बोला। जिब्राईल अलैहिस्सलाम पलक झपकने में अर्श से चले और फ़र्श पर आए, या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला ने अपना नसबनामा भेजा है, आओ क़ुरैश मेरे रब का नसबनामा सुनो!

﴿قل هو الله احد. الله الصمد. لم يلد. ولم يولد. ولم يكن له كفوا احد.﴾

मेरा रब अकेला है, समद का तर्जुमा बेनियाज़ सही नहीं है बल्कि ग़नी है, समद उसे कहते हैं कि जिसके बग़ैर किसी का काम न बने और जिसका काम सबके बग़ैर बन जाए, अल्लाह बेनियाज़ होता तो ज़मीन व आसमान बर्बाद हो जाते, वह तो सबसे ज़्यादा हमारे नाज़ उठाता है।

ज़मीन तड़पने लगती है कि या अल्लाह मेरे ऊपर इतने गुनाह हो रहे हैं कि मेरा सीना जल गया है, मुझे इजाज़त दे दें कि मैं फट जाऊँ, मैं इनको घरों समेत निगल जाऊँ, समुंद्र इजाज़त मांगते हैं या अल्लाह इजाज़त दे दे लगाम ढीली छोड़ दे मैं इन्हें ग़र्क़ कर दूँ, फ़रिश्ते तड़प जाते जाते हैं और कुछ गुनाह तो ऐसे होते हैं जब इन्सान करता हे तो फ़रिश्ते डरकर ज़मीन से ऊपर चले जाते

हैं कि अब अल्लाह के अज़ाब को कोई चीज़ नहीं रोक सकती, अल्लाह तआला फिर भी नाज़ उठाते हैं और वे गुनाह हर हर जगह हो रहे हैं फिर भी अल्लाह तआला ज़मीन को लेकर चल रहा है, बेनियाज़ नहीं बल्कि समद है। समद उसे कहते हैं जिसके बग़ैर किसी का काम न बन सके और जो अपना काम सबके बग़ैर बना ले।

बादशाहों का बादशाह कौन है?

﴿هو الذى فى السماء اله﴾ ज़मीनों का भी बादशाह अल्लाह है,

﴿وفى الارض اله﴾ आसमानों का बादशाह भी अल्लाह है,

﴿يرسل الرياح مبشرات﴾ हवाओं का बादशाह अल्लाह है,

﴿هو الذى سخر البحر﴾ समुंद्रों का बादशाह अल्लाह है,

﴿وسخر لكم الانهار﴾ दरियाओं का बादशाह अल्लाह है,

﴿ما كان لكم ان تنبتو شجرها﴾ पेड़ों का ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह है,

﴿وما تخرج من ثمرات من اكمامها﴾ फल-फूल और ग़ल्लों का मालिक अल्लाह है,

﴿وجعلنا السماء سقفا محفوظا﴾ आसमान की छत का मालिक अल्लाह है,

﴿خلق سبع سموات طباقا﴾ सातों आसमान ऊपर नीचे बनाने वाला अल्लाह है,

﴿يتنزل الامر بينهن﴾ फिर उनके अन्दर अपनी हुकूमत को क़ाएम करने वाला अल्लाह है,

﴿لله الامر﴾ उसी की हुकूमत है ﴿من قبل﴾ जिसकी कोई इब्तिदा नहीं है, ﴿من بعد﴾ जिसकी कोई इन्तिहा नहीं है।

न उसकी ज़ात की कोई शुरूआत और आख़िर है न उसके मुल्क की कोई शुरूआत और आख़िर है।

﴿سبح لله ما في السموات والارض وهو العزيز الحكيم﴾

सारी काएनात उसकी है।

कोई है मेरे अलावा?

अल्लाह का रसूल कह रहा है–

﴿انت الاول فليس قبلك الشيء﴾ तू ही तू है तुझसे पहले कुछ नहीं,

﴿انت الاخر فليس بعدك الشيء﴾ तू ही तू है तेरे बाद कुछ नहीं,

﴿انت الظاهر﴾ तू सबसे बुलन्द है, ﴿ليس فوقك الشيء﴾ तुझसे ऊपर कोई नहीं,

﴿انت الباطن﴾ तू अन्दर में उतरकर ऐसा छिपा हुआ है, ﴿ليس دونك الشيء﴾ तुझसे छिपा हुआ कोई नहीं, ﴿الملك﴾ तू वह बादशाह है ﴿لا شريك لك﴾ जिसका कोई शरीक नहीं, ﴿الفرد﴾ तू वह अकेला है ﴿لا ندلك﴾ जिसका कोई मिस्ल नहीं, जिसका कोई हमसर नहीं।

और ख़ुद अल्लाह कहता है ﴿هل تعلم له سميا﴾ मेरे बन्दे तेरा रब तो नहीं जानता कि उसका हमसर कोई है तुम बता दो अगर तुम्हें कोई पता हो कि यह तेरी टक्कर का है, तुम्हारे इल्म में है तो तुम बता दो, न कोई ज़मीन में उसका मुक़ाबिल न आसमान में उसका कोई मुक़ाबिल न ख़ला में उसका कोई मुक़ाबिल न पूरब व पश्चिम में कोई उसका मुक़ाबिल है।

कोई है जो अल्लाह की कारीगरी में ऐब निकाल सके?

﴿الم تر كيف خلق الله سبع سموات طباقا﴾

देखो तो सही रब कौन है जिसने सात आसमान ऊपर नीचे बना दिए और अल्लाह तआला फ़रमाता है—

﴿هل ترى من فطور﴾ तुझे मेरे आसमान में कोई कमी नज़र आती है?

﴿فارجع البصر﴾ एक दफ़ा नहीं बार बार देखो,

﴿ثم ارجع البصر﴾ फिर बार बार देखो,

﴿كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير﴾

तू जितनी बार मेरे आसामान को देखेगा, मेरा आसमान ऐब से पाक है। तेरी निगाह मेरे आसमान में कोई ऐब नहीं दिखा सकती और मैंने ही आसमान को थामा हुआ है और कोई आसमान को टूटने से रोक नहीं सकता। अल्लाह की क़ुदरत कैसी है?

﴿يمسك السموات والارض ان تزولا﴾ ज़मीन व आसमान को थामा,

﴿الشمس تجرى لمستقرها﴾ सूरज को थामा,

﴿الشمس والقمر والنجوم مسخرات بامره﴾ सूरज चाँद सितारे उसके ताबे हो के चले, अर्श थामा ﴿رب العرش العظيم﴾ मलाईका को थामा ﴿لا يعصون ما امرهم ويفعلون ما يؤمرون﴾ समुंदरों को मज़बूती से अपने हुक्म में बांधा, ﴿وهو الذى سخر البحر﴾ दरियाओं पर क़ब्ज़ा जमाया ﴿وسخر لكم النهر﴾ पहाड़ों पर अपने अम्र को साबित किया ﴿والجبال ارسها﴾ कड़वे मीठे पानी के चश्मे चलाए ﴿مرج البحرين يلتقين﴾ दोनों को आपस में मिलने न दिया। ﴿بينهما برزخ لا يبغيان﴾

﴿هذا عذب فرات سائغ شرابه وهذا ملح اجاج.﴾

एक मीठा है एक कड़वा है बीच में कोई आड़ नहीं, रुकावट नहीं, दीवार नहीं लेकिन मीठा कड़वे में नहीं आता, कड़वा मीठे में नहीं आता। यह उसकी क़ुदरत है।

अल्लाह के इल्म की वुसअत

मालिक कैसा है?

﴿لله ملك السموات والارض وما فيهن.﴾

ज़मीन व आसमान अल्लाह का, ﴿رب المشرق﴾ पूरब अल्लाह का, ﴿والمغرب﴾ पश्चिम अल्लाह का,

﴿رب المشرقين ورب المغربين.﴾ उत्तर पूरब, दक्षिण पूरब, उत्तर पश्चिम और दक्षिण पश्चिम सब का सब अल्लाह का है।

﴿كل قد علم صلاته وتسبيحه.﴾ पानी और ज़मीन, अर्श व फ़र्श, ज़र्रा व पहाड़, तिनका और जंगलात, हवाई और फ़िज़ाई, ख़लाई और ख़ाकी, नूरी और नारी, सारी की सारी मख़्लूक़ अल्लाह की नमाज़ और तस्बीह बयान कर रही है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों से किसी हाल में, किसी पल में, किसी लम्हे में भी ग़ाफ़िल नहीं है। सिर्फ़ बन्दे ही नहीं बल्कि काएनात का ज़र्रा ज़र्रा, चप्पा-चप्पा उसके सामने है और उसकी हरकात व सकनात से बाख़बर भी है ﴿انها ان تك مثقال حبة من خردل﴾ राई के दाने का कोई हज़ारवाँ हिस्सा हो ﴿مثقال من حبة من خردل﴾ एक तो राई ऐसी छोटी होती है फिर उसका भी कोई हिस्सा, इतनी छोटी भी कोई चीज़ है? ﴿فتكن فى صخرة﴾ पहाड़ों की ग़ारों

में छिपा हुआ हो ﴿في السموات﴾ या इस लम्बी और लामहदूद फ़िज़ा में कहीं तैर रहा हो ﴿او في الارض﴾ या ज़मीन की ज़ुल्मतों में कहीं पड़ा हुआ हो, ﴿يات بها الله﴾ अल्लाह उसको खींचकर बाहर लाने पर ताक़त रखता है और ﴿احاط بصره بجميع المرئيات﴾ उसकी नज़र काएनात पर पूरी तरह हावी है।

अल्लाह पाक की क़ुदरते कामिला

﴿سواء منكم﴾ उसके लिए बराबर है,

﴿من اسر القول﴾ सरगोशी करे या मेरी तरह ज़ोर से बोले,

﴿مستخف بالليل﴾ रात के अंधेरों में छिपकर चले,

﴿وسارب بالنهار﴾ या दिन के उजाले में चले ये सब उसकी नज़र के सामने बराबर है,

﴿سواء منكم من اسر القول﴾ सरगोशी की,

﴿ومن جهر به﴾ ज़ोर से बोला,

﴿مستخف بالليل﴾ रात के अंधेरों में छिपा,

﴿وسارب بالنهار﴾ दिन के उजाले में चला, ये सब अल्लाह तआला के सामने खुली किताब की तरह है,

— ﴿لا يعزب عن ربك من مثقال ذرة﴾ एक ज़र्रे के बराबर उससे पोशीदा नहीं है।

वह तो काली च्युँटी को भी देखता है

हदीस मुबारक में है ﴿احاط بصره بجميع مرئيا﴾ अल्लाह तआला की नज़र सारी काएनात को देख रही है, मिसाल के तौर पर

﴿يرى دبيب النملة السوداء على الصخرة السماء في ليلة الظلماء﴾

एक काला पत्थर है, पहाड़ भी काला है, फिर रात भी काली है फिर ऊपर जंगल छा चुका है, पत्ते पड़े हुए हैं, घास है, पुराली है, काला पत्थर, काला पहाड़, काली रात फिर ऊपर से घास वग़ैरह है नीचे एक काली च्युँटी जा रही है अल्लाह तआला अर्श पर है, च्युँटी फ़र्श पर है बीच में इतने पर्दे हैं च्युँटी के चलने से काले पत्थर पर एक लकीर पड़ रही है अल्लाह तआला कह रहा है मैं उस लकीर को भी देख रहा हूँ।

कभी आप च्युँटी को उठाकर देखें उसके पाँव ही नज़र नहीं आते वह लकीर क्या बनाएगी? वह तो नरम मिट्टी पर चले तो लकीर मुश्किल से बने, तो पहाड़ों पर और पत्थरों पर लकीर कैसे बनेगी? अगर बड़ी बड़ी दूरबीनें लगाई जाएं तो भी बनती नज़र न आएगी, अल्लाह तआला अर्श पर कह रहा है कि मैं उसे देख रहा हूँ।

रात का अंधेरा, पहाड़ का अंधेरा, घास और पुराली का अंधेरा, जंगल का अंधेरा, च्युँटी का अपना अंधेरा, और उसकी हकीर काली टांगों का अंधेरा, मुझ से यह लकीर नहीं छिप सकता वह ऐसा देखने वाला है।

वह सुनने वाला कैसा है? ﴿وأسروا قولكم﴾ आहिस्ता बोलो ﴿أو اجهروا به﴾ ज़ोर से बोलो ﴿إنه عليم بذات الصدور﴾ तुम्हारे अन्दर के छिपे हुए भेद को भी जानता है ﴿يعلم السر﴾ तुम चुपके-चुपके बोलो ﴿وأخفى﴾ तुम दिल ही दिल में बोले अल्लाह कहता है मैं यह भी सुन लेता हूँ।

तुम्हारे साँस को निकलता देखे, उतरता देखे,

तुम्हारे साँस की आवाज़ को सुने, दिल की धड़कन को सुने,

रगों में चलते ख़ून की आवाज़ तक को सुने,

पत्ता टूटे उसकी टूटने की आवाज़ को सुने,

ज़मीन पर गिरे उसके गिरने की आवाज़ को सुने,

च्युंटी की पुकार को सुने और आवाज़ सुने, फ़रियाद सुने,

ज़मीने के नीचे चलने वाले कीड़े की आवाज़ और सदा को सुने,

सात समुंद्र की तह में चलने वाली मछली की पुकार को सुने, सदा सुने,

रेत का एक-एक ज़र्रा, ज़मीन का एक-एक ज़र्रा, पेड़ का एक-एक पत्ता।

﴿يعلم ما فى البر والبحر.﴾ ज़मीन के अन्दर जो कुछ है अल्लाह के इल्म में है,

लम्बे से लम्बा बर्मा तक़रीबन पाँच किलोमीटर है जिसने ज़मीन को खोदा है। इससे आगे ज़मीन इससे ख़ोदी नहीं जा सकती और यह पचास किलोमीटर तक है ज़मीन और मिट्टी और आगे आग है और ये सिर्फ़ पाँच किलोमीटर तक पहुँचे हैं। आगे इनके सिर्फ़ अन्दाज़े हैं।

ऐसे ही समुंद्र में इनके अन्दाज़े हैं तह तक तो नहीं जा सकते और नीचे जाएं तो पानी ही दबाकर, पिचका कर रख दे। इनके नीचे तो आबदोज़े भी नहीं जा सकतीं। पानी उनको ऐसे दबाकर रख दे और ऊपर निकलने ही न दे।

﴿ما تسقط من ورقة الا يعلمها﴾ पत्ता भी गिरे तो तेरा अल्लाह जाने,

﴿عدد ورق الاشجار﴾ सारी काएनात के पेड़, पेड़ों के पत्ते उनकी मजमूई तादाद अल्लाह के इल्म में है।

﴿عدد قطر الامطار﴾ बारिश, बारिश के क़तरे, उन क़तरों की

मजमूई तादाद अल्लाह के इल्म में है।

﴿يعلم ماء البحار﴾ सारे समुंद्रों में कितना पानी है अल्लाह के इल्म में,

﴿مثاقيل الجبال﴾ सारे पहाड़ों का कितना वज़न है अल्लाह के इल्म में है,

﴿لا تواعي منه السماء سماء﴾ आसमान को कोई चीज़ उससे छिपा नहीं सकती,

﴿ولا ارض ارضا﴾ ज़मीन उससे कोई चीज़ छिपा नहीं सकती,

﴿ولا جبل ما في وارعيه﴾ पहाड़ अपने ग़ार में छिपी हुई चीज़ें उससे छिपा नहीं सकते।

﴿ولا بحر ما في قعره﴾ और समुंद्र अपने अंधेरों में और उसकी तह में पड़ी हुई चीज़ों को अल्लाह से नहीं छिपा सकते। यह अल्लाह का इल्म है।

दुनिया भर के क़लम अल्लाह की तारीफ़ लिखने से आजिज़

मेरे भाईयो! कौन अल्लाह की तारीफ़ कर सकता है। अल्लाह तआला खुद अपनी सिफ़ात बयान करता है—

﴿ولو كان البحر مدادا﴾ अल्लाह कहता है कि समुंद्र को स्याही बना दो,

﴿والبحر يمده من بعده سبعة ابحر﴾ सात समुंद्र भी स्याही बन जाएं,

﴿ولو ان ما في الارض من شجرة اقلام﴾ सारी दुनिया के पेड़ लेकर क़लम बना दिए जाएं, एक संदल के पेड़ से कितने क़लम बनेंगे?

समुंद्र स्याही, पेड़ कलम, इन्सान और जिन्नात लिखने बैठ जाएं, फ़रिश्ते भी आकर लिखना शुरू करें तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं–

﴿لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربی، ولو جئنا بمثله مددا.﴾

समुंद्र सूख जाएंगे, कलम टूट जाएंगे मेरी तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी, इतने कलम और स्याही और ले आएं तो वह भी ख़त्म हो जाएंगे।

अल्लाह वह ज़ात है जिसे सारा जहान पुकारे, ﴿اولكم﴾ पहले पुकारें, ﴿اخركم﴾ पिछले पुकारें, ﴿انسكم﴾ इन्सान पुकारें, ﴿جناكم﴾ जिन्नात पुकारें, ﴿حيكم﴾ ज़िन्दा पुकारें, ﴿ميتكم﴾ मुर्दा पुकारें, ﴿رطبكم﴾ तर पुकारें, ﴿يابسكم﴾ खुश्क पुकारें, ﴿صغيركم﴾ छोटे पुकारें, ﴿كبيركم﴾ बड़े पुकारें, ﴿ذكركم﴾ मर्द पुकारें, ﴿وانثكم﴾ औरतें पुकारें, ﴿فی صعيد واحد﴾ एक मैदान में खड़े होकर पुकारें।

अल्लाह सबसे यह नहीं कहेगा कि बारी बारी बोलो। यह नहीं कहेगा सिर्फ़ अरबी बोलो कि मेरी ज़बान अरबी है। अल्लाह तआला फ़रमाएगा बोलो बोलो, पश्तू भी बोलो, उर्दू भी बोलो, हिन्दी भी बोलो, पंजाबी भी बोलो, सिन्धी भी बोलो, बलूची भी बोलो, बरोही भी बोलो, अंग्रेज़ी भी बोलो, फ्रांसीसी भी बोलो, लातेनी भी बोलो। काएनात की सब ज़बानों में अपने रब को पुकारो, मैं तुम्हारा वह सुनने वाला रब हूँ कि मुझे बारियाँ लगाने की ज़रूरत नहीं, मैं तुम्हारी चीख़ पुकार अलग अलग सुनूँगा, समझूँगा।

﴿لا تغلطه كثرة المسائل﴾ तुम सबका इकट्ठा बोलना मुझे ग़लती में नहीं डालेगा कि उमर क्या बोला और ख़ालिद क्या बोला

अकरम क्या बोला और सईद क्या बोला तुम सबको अलग अलग सुनूँगा और यह सुनकर,

﴿لا يشغله سمع عن سمع﴾ एक का सुनना मुझे दूसरे से ग़ाफ़िल नहीं करता,

﴿ولا يلهيه قول عن قول﴾ एक को सुनते हुए दूसरे कोई नहीं भूलता,

﴿لا يمنعه فضل عن فضل﴾ एक को देते हुए दूसरे को यह नहीं कहता कि ज़रा इन्तिज़ार करो, ख़ज़ाना ख़ाली है, अब तुम कल आना, तुम्हें कल दिया जाएगा।

ऐसी ज़बर्दस्त शान वाले अल्लाह को न मानना, उसकी नाफ़रमानी करना, इसमें हमारी ही हलाकत है, हमारा ही नुक़सान है।

और अल्लाह का नबी कह रहा है ﴿غدا الحساب ولا عمل﴾ कल हिसाब होने वाला है और उस वक़्त अमल कोई नहीं कर सकता।

अंधेरी कोठरी में बल्ब ले जाओ

तो जो सबसे बड़ी आफ़त और मुसीबत है कि इन्सान दुनिया को छोड़कर जाता है। कितने अरमानों से आप लोगों ने घर बनाए हुए हैं, और हर शख़्स ने बनाए यहाँ तक कि चिड़िया भी घोंसला शौक़ से बनाती है। एक बया एक छोटा सा परिन्दा भी बड़े शौक़ व ज़ौक़ से तिनके जमा करता है और अपने लिए घोंसला बनाता है कि हर जानदार की फ़ितरत है कि वह रहने के लिए कोई न कोई ठिकाना बनाता है। कितने अरमानों से इन्सान घर बनाता है और फिर ख़ामोशी से छोड़कर लोगों के कन्धों पर सवार होकर अंधेरी कोठरी में जाकर सो जाता है।

ख़ूबसूरत चेहरा! कीड़ों की गि़ज़ा

स्पेन से कम्बल मंगवाए सोने के लिए, दस बरस भी न सोने पाए थे कि हमेशा के लिए मिट्टी की चादर ओढ़कर सो गए, बड़े सारे डिज़ाईन देखकर पलंग बनवाए बैड बनवाए और जब उठे तो एक पल में उठकर चले गए और जाकर मिट्टी के बिस्तर पर हमेशा के लिए जाकर सो गए, अपनी ख़्वाबगाह में बड़े डिज़ाईन की लाईटें लगवायीं, बड़े ख़ूबसूरत क़ुमक़ुमों में बल्ब लगाए और कुछ दिन भी नहीं रहने पाए थे कि उठकर अंधेरी कोठरी में जाकर सो गए। हर वक़्त अपने घर को चमकाने वाले जाकर वहशत और तन्हाई के घर में और कीड़ों के साथ जाकर सो जाते हैं, बदन पर कोई च्युंटी आ जाए तो आदमी उसको झाड़ देता है, मार देता है, आज उसके बदन पर करोड़ों कीड़े फिर रहे हैं, जिस चेहरे को गर्मी से बचाता है, सर्दी से बचाता है, भूख से बचाता है, थकन से बचाता है उसी चेहरे पर आज कीड़ों का हमला है कोई इसकी आँख खा रहा है, कोई इसकी खाल खा रहा है, कोई इसकी ज़बान नोच रहा है, कोई इसकी टाँगों को लगा हुआ है और वह पेट जिसके भरने के लिए सारी ज़िन्दगी धक्के खाता रहा, वही पेट क़ब्र में सबसे पहले फट जाता है और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दे! दुनिया को लालच की नज़र से मत देखा कर, क़ब्र में सबसे पहले तेरे वजूद को जो कीड़ा खाता है वह तेरी आँखें यही होती हैं, सबसे पहले यही शमा बुझती है और सबसे पहले इसी को अल्लाह निकालता है और कीड़ों को खिला देता है।

तो जिस इन्सान का यह हैरतनाक अन्जाम हो कि मौत उसकी शिकारी हो, आफ़तों के फंदे उसके चारों तरफ़ क़ायम किए जा चुके हों, मुसीबतों की खाईयाँ क़दम क़दम पर उसके लिए खोदी गई हों, ग़मों के बादल कभी उसके उफ़क से अटते ही न हों, ख़ुशियों की किरन बिजली की चमक की तरह आकर गुज़र जाती हो, परेशानियों और फ़िकरों के समुंद्रों में डूबा हुआ हो, और बीमारियाँ उसके साथ अपना रोल अदा कर रही हों, दोस्तों की बेवफ़ाईयाँ और औलाद की नाफ़रमानियाँ उसके दिल पर नश्तर चला रही हों, क़ब्र उसको रोज़ाना पुकार रही हो,

﴿انا بيت وحشة، انا بيت الدور، انا بيت الظلمة﴾

मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं अंधेरों का घर हूँ, कीड़े मकोड़ों का घर हूँ, मेरे पास आना है तो कोई सामाने सफ़र लेकर आना, आप ज़रा ज़िन्दगी की गहराई में देखें कि यह कितनी बेपाएदार, बेसबात, बेवफ़ा, बे क़रार ज़िन्दगी है कि जहाँ एक पल इन्सान को क़रार नहीं, कहीं एक पल इन्सान को ठहराव नहीं, थोड़ी सी ख़ुशियाँ देखता है और फिर चारों तरफ़ ग़मों के बादल एक ख़ुशी को लेने के लिए लाखों पापड़ बेलने पड़ते हैं और वह ख़ुशी आती है और चली जाती है, भला यह भी ज़िन्दगी है।

सबसे ज़्यादा डराने वाली क़ुरआनी आयत

मैंने एक आयत आपके सामने पढ़ी ख़ुत्बे में जिसके बारे में उलमा फ़रमाते हैं यह क़ुरआन पाक की सबसे ख़ौफ़नाक आयत है—

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ख़ौफ़नाक आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा डराने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे लरज़ा देने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा हैबत तारी कर देने वाली आयत,

﴿اخوف اية فى القران﴾ क़ुरआन की सबसे ज़्यादा फड़फड़ा देने वाली आयत और लरज़ा देने वाली आयत और डरा देने वाली आयत और हैबत तारी कर देने वाली आयत और पैरों तले से ज़मीन निकाल देने वाली आयत है। कौन सी?

﴿فمن يعمل مثقال ذرة خيرا يره ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره.﴾

ग़ाफ़िल संभल कर चल, देखने वाला तुझ से ग़ाफ़िल नहीं, उसने पुकार पुकार कर ऐलान किया है। एक राई के दाने के बराबर भी तूने गुनाह किया तो याद रख सज़ा के लिए तैयार हो जा और एक राई के दाने के बराबर भी तूने नेकी की तो उसके बदले के लिए तैयार हो जा। तेरा रब ज़ालिम नहीं है।

﴿ان تك مثقال حبة من خردل﴾

एक राई के दाने के बराबर नेकी कर ली, बुराई कर ली, कहाँ?

﴿فتكن فى صخرة﴾ किसी पहाड़ की ग़ार में, ﴿او فى السموت﴾ कहाँ? आसमान की वुसअतों में गुम होकर, ﴿اوفى الارض﴾ कहाँ? ज़मीन की ग़ारों में, अंधेरों में छिपकर। क्या होगा? ﴿يات بها الله﴾ एक दिन आएगा अल्लाह तुझे सामने करके दिखा देगा।

हबीब रह० का ख़ूबसूरत लड़की की तरफ़ न देखना

हबीब बिन उमैर ताबई हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के शार्गिद बड़े ख़ूबसूरत कैद हो गए। कुल दस आदमी थे तो उन्होंने नौ कत्ल कर दिए, इनको पकड़ लिया। रोमन सरदार ने कहा गुलाम बनाऊँगा। कैद में लेकर कहने लगा अगर तू इसाई हो जाए तो अपनी बेटी तुझे दे दूँगा। तुझे अपनी रियासत में से हिस्सा भी दूँगा। उन्होंने फ़रमाया तू सारा जहान भी दे दे तो यह नहीं हो सकता।

कुफ़्र तो बेहया होता ही है। हया तो सरासर इस्लाम में है। उसने अपनी बेटी से कहा इससे बदकारी करो। जब यह इस रुख़ पर आएगा तो इस्लाम भी छोड़ जाएगा। रोम की लड़की थी, इधर रोम का हुस्न उधर अरब की जवानी। आग भी तेज़ है और कुव्वत भी जवान है और दो हैं तीसरा है कोई नहीं।

अब यहाँ सारी रुकावटें ख़त्म हैं और वह औरत दावत दे रही है और यह नौजवान अपनी नज़र झुकाने की लज़्ज़त में झुके हुए हैं, इसे पाकदामनी की लज़्ज़त का पता है लिहाज़ा उसकी नज़र उठने का नाम नहीं लेती। उसने सारे जतन कर मारे, अपने हुस्न का हर तीर आज़माया, अपने मकर का हर जाल फेंका लेकिन पाकदामनी की तलवार ने हर हर जाल के हर हर तार को तार तार कर दिया और हर तीर को बेकार कर दिया।

आख़िर तीन दिन के बाद उसने हथियार डाल दिए, कहने

लगी, ﴿ما اذا يمنعك منى﴾ अल्लाह के बन्दे यह तो बता तुझे रोकता कौन है? आज तीसरा दिन है तूने मुझे नज़र उठाकर नहीं देखा, रोकने वाला कौन है?

उसने कहा मुझे रोकने वाला वह है

﴿لا تاخذه سنة ولا نوم﴾ जो न सोता है न ऊँघता है, जो मुझसे ग़ाफ़िल नहीं, मैं उससे ग़ाफ़िल हूँ, वह मेरा रब है जो अर्श पर बैठा मुझे देख रहा है कि मेरी मुहब्बत ग़ालिब आती है या शहवत ग़ालिब आती है, मुझे आगे करता है या शैतान को आगे करता है। ऐ लड़की मुझे मेरे रब से हया आती है। इसलिए मैंने अपनी ताक़त को रोक रखा है। वह बाहर निकलकर अपने बाप से कहने लगी—

﴿الى اين ارسلتنى الى حديد او حجر لا يكل لا يبصر﴾

आपने मुझे किस पत्थर के पास भेजा किस लोहे के पास भेजा है जो न देखता है न खाता है मैं कहाँ से गुमराह करूँ?

हज़रत जरीर रज़ियल्लाहु अन्हु की अमानतदारी

जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने घोड़ा ख़रीदा। नौकर से कहा ख़रीदकर लाओ। वह ले आया। तीन सौ रुपए में सौदा हुआ। जब घोड़ा देखा तो वह घोड़ा मंहगा था। मालिक को ख़ुद पता नहीं था अपनी चीज़ की क़ीमत का तो वह मालिक से कहने लगे तेरे घोड़े के चार सौ तुझे दे दूँ? कहने लगा जी अच्छा अच्छी बात है।

कहा अगर पाँच सौ कर दूँ,

कहा यह इससे भी अच्छी बात है।

कहा छः सौ कर दूँ?

कहा यह इस इससे भी अच्छी बात है।

कहा सात सौ कर दूँ?

अब जो बेचने वाला था वह चक्कर में पड़ गया कि यह क्या हो रहा है? कभी ख़रीदार ने भी क़ीमत बढ़ाई? ये जो दुकानदार बैठे हैं ये क्या करते हैं, क़ीमत बढ़ाते हैं और जो लेने वाला होता है वह क्या करता है वह क़ीमत घटाता है, घटाओ, वह कहता है, नहीं। वह कहता है क़ीमत घटाओ, दुकानदार कहता है नहीं।

यहाँ उल्टा हो रहा है। ख़रीदार रक़म बढ़ा रहा है, बेचने वाला हैरान होकर सुन रहा है।

फिर कहने लगे आठ सौ कर दूँ?

वह कहने लगा मैं तो तीन सौ पर भी राज़ी था।

कहने लगे आठ सौ दे दो और घोड़ा ले लो।

जब वह चला गया तो नौकर, ग़ुलाम ने कहा यह क्या किया? मैं तो तीन सौ में सौदा पक्का करके लाया था। ये पाँच सौ किस ख़ुशी में दे दिए हैं?

इर्शाद फ़रमाया यह घोड़ा आठ सौ का था मैं तीन सौ में रखकर अल्लाह को क्या जवाब देता? जबकि मैंने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ वायदा किया था कि जब तक ज़िन्दा रहूँगा मुसलमान की ख़ैरख़्वाही करूँगा।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ौफ़े ख़ुदा

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा दुश्मन

अल्लाह का नाफ़रमान है तो तुझे बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला खुद अपने नाफ़रमान से बदला चुकाएगा। जो मुजरिम बनकर मर गया तो किस इबरतनाक तरीक़े से क़ब्र उसका हश्र करेगी। सारी दुनिया के इन्सानों को इस आने वाले दिन से बचाना है और अपने आपको भी बचाना है। गर्मी सर्दी से भी बचाना है यह हुक़ूक़ का मामला है लेकिन अपने आपको जहन्नम की आग से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴿قوا انفسكم واهليكم نارا وقودها الناس... الخ﴾

जिस आग का ईंधन हम और आप हैं।

इस आयत को सुनने के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए बाहर निकल गए, तीन दिन ग़ाएब रहे और किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको तलाश करो, जब तलाशी हुई तो पहाड़ों में बैठे हुए थे। सिर पर मिट्टी पड़ी हुई थी और रो रहे थे कि हाय उस आग की हालत क्या होगी जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर हैं उनको पकड़कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाया गया तो फ़रमाया कि इस आयत ने मुझे बेक़रार कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आप उनमें से नहीं हैं, सलमान तू तो वह है जिसको जन्नत खुद चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वह जंगलों और पहाड़ों में निकल जाए और जिसको कुछ पता ही नहीं जन्नत और जहन्नम का वह मज़े की नींद सो जाए।

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं कि ऐ अल्लाह! जहन्नम की आग से बचा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर देखा और फ़रमाया अरे भाई तूने क्या कर दिया तेरे रोने

की वजह से आसमान में सफ़े मातम बिछी हुई है तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया। ऐसा दर्द व ग़म उनके अन्दर उतर गया था।

तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया

मेरे भाईयो! क्या करें कभी तो बैठकर इतना रोना आता है कि हम कहाँ से कहाँ चले गए। एक लड़के की दुआ पर आसमान से फ़रिश्ते उतरते थे। एक नौजवान सहाबी अपने घर में नमाज़ पढ़ रहे थे, दोज़ख़ की आयत पढ़कर चीख़ निकली। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गली में से गुज़र रहे थे। आपने रोने की आवाज़ को सुना। मस्जिद में वह सहाबी जब नमाज़ पढ़ने के लिए आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे अल्लाह के बन्दे! आज तेरे रोने ने आसमान के बेशुमार फ़रिश्तों को रुला दिया। ऐसे जवान थे जिनके रोने पर फ़रिश्ते रोया करते थे।

देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है

एक नौजवान ने दोज़ख़ का ज़िक्र सुना और कपड़े उतारे और जाकर रेत पर लेट गया और तड़पने लगा और कहने लगा ऐ नफ़्स! देख दोज़ख़ की आग। यह रेत की आग बर्दाश्त नहीं तो दोज़ख़ की आग कैसे बर्दाश्त करेगा? रात को मुर्दार बनकर सारी रात सोता है और दिन को बेकार फिरता है, तेरा क्या बनेगा? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सारा मंज़र देख रहे थे। फ़रमाया इधर आ तुझे ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, तेरे लिए आसमान के

सारे दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह तआला खुश हो रहा है और फ़रिश्तों से कहता है कि देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है।

क़यामत के बारे में क़ुरआन का लहजा

जब क़ुरआन का रुख़ आख़िरत की तरफ़ फिरता है तो एक दम उसका लहजा बदल जाता है। जब दुनिया की तरफ आता है तो एक दम लहजा बदल जाता है। जब आख़िरत की तरफ़ होता है तो एकदम लहजा मे हैबत आ जाती है, एक रोब आ जाता है जैसे हम कहते हैं!!! ﴿هل اتاك، وما ادراك﴾ यह अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जैसे कोई बम मार रहा हो।

यह हमारी बदक़िस्मती है कि हम ने न क़ुरआन समझा न क़ुरआन की ज़बान समझी। इस क़ौम की इससे बड़ी बदक़िस्मती और क्या होगी जो अपनी किताब जो उनको किनारे लगाने वाली थी न उसको समझा न जाना। हाय अफ़सोस!

﴿فاصدع بما تومر... واعرض عن المشركين، انا كفيناك المستهزئين.﴾

इस आयत के अल्फ़ाज़ में जो गर्मी है। इसको एक बद्दू ने सुना। वह अरब था, अरबी जानता था। जब यह आयत सुनी तो ऊँट पर जा रहा था, ज़मीन पर जा गिरा थर्रा गया। उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मख़्लूक़ ऐसा कलाम नहीं कर सकती। हमें तो पता ही नहीं कि क़ुरआन हम से क्या कहता है। कितनी बदक़िस्मती है कि जिस चीज़ को समझना था उसको समझा नहीं।

तालीम के नाम पर जिहालत आम हो गई। रोटी कैसे कमानी है इसको इल्म बना दिया, लोहे को कैसे ढालना है यह इल्म बन गया। अरे भाई इन्सानियत में कैसे ढलना है सबसे बड़ा इल्म है।

जहन्नम की पुकार

﴿هل اتك حديث الغاشية﴾ वह दिन जो तुम पर छा जाएगा उसकी कोई तुम्हें ख़बर है?

﴿وجوه يومئذ خاشعة. عاملة ناصبة﴾ कुछ चेहरे काले होंगे, वीरान होंगे, परेशान होंगे, हैरान होंगे,

﴿تصلى نارا حامية﴾ जो दहकती हुई आग का शिकार हो जाएंगे,

﴿تسقى من عين انية﴾ जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा,

﴿ليس لهم طعام الا من ضريع﴾ जहाँ काँटेदार झाड़ियों के अलावा खाना नहीं होगा,

﴿لا يسمن ولا يغني من جوع﴾ जो न भूख को दूर करेगा न वह जिस्म के काम आएगा, उस दिन की तुम्हें कोई ख़बर है?

﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ तुम्हें नहीं डर तो मैं डराता हूँ, मेरे बन्दो उस आग से डर जाओ ﴿وقودها الناس والحجارة﴾ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं। जो चीख़ती है और चिंघाड़ती है और अल्लाह की बारगाह में पुकारती है—

﴿اللهم اشتدى حرى وبعد قعرى وعزم جهرى فعجل الى باهلى﴾

ऐ अल्लाह मेरे अंगारे बड़े दहक गए, मेरी गहराईयाँ बड़ी गहरी हो गयीं और मेरी चट्टानें बड़ी सुर्ख़ हो गयीं, या अल्लाह अपने मुजरिमों को मेरे अन्दर डाल दे कि मैं उन्हें जलाऊँ रोज़ाना यह जहन्नम की पुकार है।

चंगेज़ ख़ान और हलाकू ख़ान का ज़िक्र

चंगेज़ ख़ान ने चालीस शहर ऐसे तबाह कर दिए जिनकी

आबादी तीस लाख से ज़्यादा थी और ऐसे तलवार चलाई जैसे बकरियों पर तलवार चलाई जाती है लेकिन वह अपनी मौत आप मर गया, उसको दुनिया की कोई अदालत सज़ा न दे सकी, उसका पोता मंगू ख़ान अपनी मौत मर गया, हलाकू ख़ान अपनी मौत आप मर गया, उन पर अल्लाह की तलवार न बरसी और न ही अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा।

आज के फ़िरऔन हों या मूसा अलैहिस्सलाम का फ़िरऔन हो, अल्लाह उनकी गर्दनों को एक दिन मरोड़ देगा।

﴿ان يوم الفصل كان ميقاتا﴾ अल्लाह तआला ने बताया कि मेरे क़ानून को तोड़ने या मेरे क़ानून की पाबन्दी पर जज़ा व सज़ा का पूरा निज़ाम तय है। इसमें कोई कमी नहीं लेकिन इन्तेज़ार करो।

क़यामत की हौलनाकियाँ

﴿ان يوم الفصل كان ميقاتا﴾ वह तयशुदा दिन आ गया,

﴿يوم ينفخ فى الصور﴾ एक आवाज़ पड़ेगी,

﴿فتاتون افواجا﴾ तुम फ़ौज-दर-फ़ौज आओगे,

﴿وفتحت السماء﴾ आसमान के दरवाज़े खुलेंगे,

﴿فكانت ابوابا﴾ वह दरवाज़े बन जाएंगे,

﴿وسيرت الجبال فكانت سرابا﴾ पहाड़ फट कर रेत बन जाएंगे,

﴿يوم يجعل الولدان شيبا﴾ जिस दिन बच्चा बूढ़ा हो जाएगा,

﴿وجىء يومئذ بجهنم﴾ जब जहन्नम लाई जाएगी,

﴿وبرزت الجحيم للغوين﴾ दोज़ख़ को भी नाफ़रमानों के लिए सामने किया जाएगा,

﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ जन्नत भी लाई जाएगी,

﴿ونضع الموازين القسط﴾ एक तराज़ू भी लाया जाएगा,

﴿وان منكم الا واردها﴾ पुलसिरात को भी बिछाया जाएगा,

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ अल्लाह खुद तश्रीफ़ लाएंगे,

﴿وجاء ربك والملك﴾ साथ फरिश्ते भी आएंगे,

﴿يوم يقوم الروح والملئكه﴾ आज सब फ़रिश्ते दम साधे खड़े होंगे, आज अल्लाह के सामने कोई बोलने वाला नहीं होगा,

﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अर्श का साया सिरों पर आ जाएगा, उसे आठ फ़रिश्तों ने उठाया होगा और अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मेरे बन्दों!

﴿انى انصت لكم منذان خلقتكم الى يوم احييتكم﴾

मैंने तुम्हें जिस दिन पैदा किया और जिस दिन तुम्हें मौत देकर उठाया, इस दौरान मैंने तुम्हें कुछ न कहा, बस तुम्हें देखता रहा और तुम्हारी सुनता रहा, मैं तुम्हें देखता रहा कि मेरा बंदा क़ुरआन सुन रहा है कि गाना सुन रहा है, हलाल खा रहा है कि हराम खा रहा है, नमाज़ पढ़ रहा है कि छोड़ रहा है।

अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम

अब अल्लाह तआला कहेगा तैयार हो जाओ अपने किए को भुगतने के लिए। यह वह वक्त है जब बच्चा भी बूढ़ा हो जाएगा। मरकर मर जाते तो छुट्टी हो जाती, मर मरना नहीं है। यह सब कुछ होने वाला है और जब कोई आदमी नाकाम हो जाएगा और उसकी नेकियों का पलड़ा हल्का हो जाएगा, गुनाहों का पलड़ा

वज़नी हो जाएगा और फ़रिश्ता ऐलान करेगा नाकाम हो गया तो फिर अल्लाह कहेगा ﴿خذوه﴾ पकड़ो, तो फ़रिश्ते भागेंगे और उसको कहाँ से पकड़ेंगे? उसके मुँह में हाथ डालेंगे। उसके नीचे वाला जबड़ा खोलकर और उसके मुँह में हाथ डालकर ठोड़ी के साथ झटका देंगे, नीचे वाला सारा जबड़ा निकलकर बाहर आ जाएगा और उसको नंगे बदन घसीटेंगे। वह कहेगा रहम करो। वह कहेंगे तुम पर रहमान ने रहम नहीं किया हम कहाँ से रहम करें और किसी औरत की नाकामी का फ़ैसला हो गया कि बाज़ी हार गई, उसकी सारी मता लुट गई, पकड़ो उसे तो फ़रिश्ते भागेंगे और उसे सिर की चोटी से पकड़ेंगे और एक झटका देंगे। वह कहेगी रहम करो। वे कहेंगे रहमान ने रहम नहीं किया, हम कहाँ से रहम करें।

यह तो अभी पकड़ हो रही है। अभी आगे घर आ रहा है किस चीज़ का? आग के पर्दे का ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ अभी बिस्तर बिछाएं जाएंगे ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ अंगारे जोड़कर मुसहरी बन जाएगी और बिस्तर बिछाया जाएगा ﴿ومن فوقهم غواش﴾ आग की चादरों को गहरा करके उनके बिस्तर बनाकर उसके अन्दर डाल दिया जाएगा।

क्या आप ने जहन्नम से हिफ़ाज़त की तैयारी कर ली?

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम नबियों की रातों की नींद उड़ती थीं, दिन का क़रार उठता था। इसलिए नहीं कि रोटी से परेशान होते हैं इसलिए कि जन्नत व दोज़ख़ को देखते हैं, फिर

इन्सानियत की नाफ़रमानी को देखते हैं फिर वे बेक़रार हो जाते हैं कि उनको कैसे अज़ाब से बचाऊँ?

﴿ان عذابها كان غراما﴾ अज़ाब कोई छोटा मोटा अज़ाब नहीं है। वह भड़कती हुई आग खाल को उतार देने वाली आग है,

﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ अल्लाह कहता है मैं तुम्हें इस आग से डराता हूँ जो भड़कने वाली आग है मैं तुम को उस आग से डराता हूँ,

﴿سيصلى نارا ذات لهب﴾ वह अंगारों वाली, वह भड़कने वाली आग है,

﴿فى عمد ممددة﴾ वह बड़े बड़े सुतूनों में भरी हुई आग है,

﴿لهم من جهنم مهاد﴾ उनके सुतून भी आग के हैं,

﴿يسقى من ماء صديد﴾ उनका पानी पीप है, पीने को दिया जाएगा जो ज़ख़्मों से पीप निकलेगी उसको जमा करके गर्म किया जाएगा फिर वह पीने को दिया जाएगा। फ़रिश्ते कहेंगे पियो।

जहन्नम का खौलता पानी

﴿يتجرعة ولا يكاد يسيغه﴾ पीना चाहेगा पी नहीं सकेगा, ﴿وياتيه الموت من كل مكان﴾ चारों तरफ़ से मौत आती दिखाई देगी ﴿وما هو بميت﴾ लेकिन वह मरेगा नहीं, मौत को पुकारेगा, मौत आएगी नहीं। पीने को पानी है तो ऐसा ज़बरदस्त कि जिन प्यालों में वह पानी है। मुँह के क़रीब लाएगा तो प्याले की तपिश और पानी की तपिश से होंट सूजकर नीचे वाला होंट लटक के पाँव तक चला जाएगा और ऊपर वाला होंट सूजकर सिर के ऊपर चला जाएगा न पी सकेगा न उगल सकेगा न निगल सकेगा और फिर फ़रिश्ते

मारेंगे, पियो पियो। पिएगा तो आँते कट जाएंगी, पाख़ाने के रास्ते बाहर निकलेंगी, फ़रिश्ते फिर सारी आँतों को उठाकर उसके मुँह में ठूँसकर उसके नीचे भरकर फ़िट कर देंगे। उसकी खाल बयालिस हाथ मोटी होगी और उसके सिर के ऊपर जब पानी डालेंगे, ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ कि तफ़सीर में लिखा हुआ है कि फ़रिश्ते पकड़ेंगे काफ़िर को और उसके सिर के ऊपर रखेंगे कील और फिर मारेंगे हथौड़ा उसकी खोपड़ी पर और खोपड़ी फट जाएगी और उसके ऊपर डालेंगे पानी, अन्दर जाएगा तो आँतो को काट के बाहर फेंक देगा और उस पर गिरेगा तो बयालिस हाथ मोटी खाल उधड़कर ज़मीन पर गिर जाएगी। अल्लाह तआला कहेंगे ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ चखो इसको तू दुनिया में बड़ा मुतकब्बिर था।

अब किसी आदमी को सारा जहान मिल गया और मरने के बाद दोज़ख़ में चला गया तो क्या देखा उसने?

चखो दोज़ख़ का अज़ाब! बड़े मज़े किए थे दुनिया में

हज़रत सिद्दीक़ अकबर का इर्शाद है ﴿لا خير فى خير تاتبهم النار﴾ वह भलाई कोई भलाई नहीं जिसको दोज़ख़ मिल जाए। जब देखेंगे अज़ाब का घेरा डाल दिया तो फिर कहेंगे मालिक (फ़रिश्ता दारोग़ा) से या मालिक! अपने रब से कह दो हमें मौत दे दें, वह कहेंगे ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती, अब तो यहीं रहना पड़ेगा, कहेंगे अच्छा ﴿يخفف عنا يوما من العذاب﴾ ऐ फ़रिश्तो! अपने रब से कहो कि थोड़ा अज़ाब कम कर दे तो जवाब आएगा,

﴿اولم تاتيكم رسلكم بالبينت﴾ तुम्हें किसी बताने वाले ने नहीं बताया था कि क्या होने वाला है, कहेगा बताया तो था फिर तुम ने क्या किया था?

﴿ما نزل الله من شيء ان انتم الا في ضلال كبير﴾

हम ने कहा सब झूठ है कोई नहीं जो होगा देखा जाएगा। उन्होंने कहा अब चखो ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ कि अज़ाब बढ़ता जाएगा।

﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नम जहन्नमी का इन्तेज़ार कर रही है ﴿للطغين﴾ सरकशों के लिए ﴿مابا﴾ वह ठिकाना है ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें रहना हमेशा है ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ न पानी न ठंडक, ﴿الا حميما وغساقا﴾ खौलता पानी, काँटेदार झाड़ियाँ ﴿جزاء وفاقا﴾ पूरा पूरा बदला ﴿انهم كانوا لا يرجون حسابا﴾ यह हिसाब का यक़ीन नहीं रखते थे ﴿وكذبوا بايتنا كذابا﴾ उन्होंने मेरी निशानियों को झुठलाया ﴿وكل شيء احصينه كتابا﴾ मैंने एक एक चीज़ को लिखा है ﴿فذوقوا﴾ आज चखो, ﴿فلن نزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता जाएगा बढ़ता जाएगा।

जहन्नम उन मुसलमानों के लिए है जो बग़ैर तौबा किए मर गए, बड़े गुनाह करते हुए तौबा किए बग़ैर मर गए। जहन्नम उनके लिए है, नसारा के लिए है, यहूदियों के लिए है, सईर मजूसियों के लिए है, सक़र सितारों के पुजारियों के लिए है। जहीम मुश्रिकीन के लिए हाविया। मुनाफ़िक़ीन के लिए है और हर नीचे वाला दर्जा ऊपर वाले दर्जे से ज़्यादा शदीद है। ज़्यादा सख़्त है, ज़्यादा ख़ौफ़नाक है, ज़्याद हैबतनाक है। जहन्नम में से किसी आदमी को निकालकर एक लाख इन्सानों के बीच बिठा दिया

जाए तो और वह साँस ले तो उसकी साँस की गर्मी से एक लाख आदमी जलकर ख़त्म हो जाएंगे।

दोज़ख़ की आग का बिस्तर

﴿فيمشى به الى النار﴾ जहन्नम के दहकते हुए अंगारे उसकी सीट बन जाएंगे, ﴿لهم من جهنم مهاد﴾ दोज़ख़ का बिस्तर दोज़ख़ की चारपाई, ﴿ومن فوقهم غواش﴾ दोज़ख़ का बिस्तर आग के कमरे आग के बिस्तर,

﴿سموم وحميم﴾ खौलते हुए पानी,

﴿لا يسمن ولا يغنى من جوع﴾ काँटेदार खाना जो न चैन हो न आराम हो।

जहन्नम का खौलता पहाड़

﴿سارهقه صعودا﴾ फ़रिश्ते गर्दन में तौक़ डालकर एक पहाड़ है उस पर चढ़ने को कहेंगे। वह पहाड़ इतना गर्म है कि उस पर पाँव रखेगा तो पाँव पिघल जाएगा फिर पाँव हटा लेगा फिर हाथ रखेगा तो हाथ सारा पिघल जाएगा फिर हाथ खींच लेगा। फिर कहेंगे चढ़ो। कहेगा चढ़ा नहीं जाता फिर उसकी गर्दन में तौक़ डालेंगे और घसीटेंगे और वह घिसटता हुआ जा रहा होगा और उसका पूरा जिस्म पिघल जाएगा। बनेगा फिर पिघलेगा, बनेगा फिर पिघलेगा जैसा लोहा पिघलता है आग की तपिश से फिर उसको साँचे में ढालेंगे तो वह फिर पिघलेगा फिर बनेगा। सत्तर साल तक पहाड़ की चढ़ाई है उसके ऊपर ले जाकर यूँ छोड़ देंगे। मर्द हो या

औरत। यह इसी तरह पिघलता हुआ बनता हुआ दोबारा नीचे आकर गिरेगा।

जहन्नम के साँप और बिच्छू

और आगे जहन्नम के साँप हैं जो एक दम उस पर टूट पड़ेंगे। एक एक बिच्छू का एक डंक एक साँप का एक बार डसना चालीस चालीस साल तक उसको तड़पाता रहेगा और कोई उसको छुड़ाने वाला नहीं होगा,

﴿يوم يتذكر الانسان ما سعى وبرزت الجحيم لمن يرى.﴾

और आज जहन्नम खिंची चली आ रही है, चीखती आ रही है, चिंघाड़ती आ रही है, शोर मचाती आ रही है, ﴿تفور﴾ फट रही है, ﴿تفور﴾ जोश मार रही है, ﴿تكاد تميز من الغيظ﴾ गुस्से से फट रही है।

दोज़ख़ का कढ़वा पानी

एक क़तरा दोज़ख़ के पानी का ज़मीन में डाल दें तो सारा जहान कढ़वा हो जाएगा, एक लोटा पानी समुंद्र में डाल दें तो सारे समुंद्रों का पानी उबलने लग जाएगा। दोज़ख़ का एक पत्थर दुनिया के पहाड़ों पर रख दें तो सारे पहाड़ पिघलकर स्याह पानी में बदल जाएंगे।

एक ज़ंजीर का कड़ा (जो ज़ंजीर उनकी गर्दन में लपेटी जाएगी, उनके जिस्म से लपेटी जाएगी) उसका एक कड़ा निकालकर हिमालय पहाड़ पर रख दिया जाए तो उसके टुकड़े-टुकड़े करता

हुआ सातों ज़मीनों को चीरता हुआ नीचे चला जाएगा। इतना वज़नी एक कड़ा होगा। सारी ज़ंजीर कितनी वज़नी होगी और कैसे तप रही होगी।

जहन्नम की वह आग है जिसमें से अगर जहन्नमियों को निकालकर दुनिया की आग में लिटा दिया जाए तो वह ऐसा सोएगा कि कई सौ साल करवट भी नहीं बदलेगा, ऐसी गहरी नींद दुनिया की आग में सोएगा।

﴿انها لظى﴾ भड़कती, ﴿نزاعة للشوى﴾ खाल को खींचती, ﴿تدعوا من ادبر وتولى﴾ नाफ़रमानों को पुकारती, पकड़ती, जकड़ती, अज़ाब बढ़ाती हुई यह मुजरीमों की तरफ़ बढ़ती हुई चली जाएगी और इधर से जन्नत लाई जाएगी।

आँसूओं की बरकत

तो मेरे भाईयो! यह बात नबियों को रुलाती है, यह बात हमें भी रुलाए कि या अल्लाह! हमने तेरे बन्दों को दोज़ख़ से बचाना है। हमारा रोना है कारोबार का, बीवी बच्चों का, सेहत का, बीमारी का, मुक़दमे का। हम एक रोना और सीख लें। हमारा रोना क्या रोना हो? ख़त्मे नबुव्वत का रोना, नबियों वाला रोना, क्या हो? या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जा रहे हैं, मैं इनको कैसे दोज़ख़ से बचाऊँ? अल्लाह की क़सम ये आँसू आपके कितने लम्बे बड़े मुजाहिदों पर यह आँसू का एक क़तरा भारी हो जाएगा।

अल्लाह से तौबा कर लें

तो भाई! हम अल्लाह की मानें। आज तक जो हुआ उससे

तौबा कर लें। अल्लाह की ज़ात जैसा रहीम और करीम और उस जैसा मेहरबान और माफ़ करने वाला खुश्की और तरी में कोई नहीं। सारी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़र जाए सिर्फ़ एक बार कह दे या अल्लाह माफ़ कर दे। अल्लाह तआला सारे ही गुनाह माफ़ कर देते हैं, ताना भी नहीं देता। आपकी और हमारी माँ खुदा न ख़ास्ता नाराज़ हो जाए, उसे राज़ी करना पड़े, पहले ताने बोलियाँ देगी फिर माफ़ करेगी और अल्लाह तआला सुब्हानअल्लाह या अल्लाह मुझे माफ़ कर दे, ग़लती हो गई। चल मेरे बन्दे सारे ही गुनाह माफ़ तो भाई माफ़ी मांग लें अल्लाह तआला से सुलह हो जाएगी। वहीं सारा मस्अला हल हो जाएगा।

ज़मीन व आसमान तो जोश खाते हैं कि ऐ अल्लाह इजाज़त हो तो तेरे नाफ़रमानों को निगल जाएं और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मुझ से बड़ा कोइ सख़ी हो सकता है? मैं तो अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ।

आज सच्चे दिल से तौबा कर लें कि आज के बाद हम अल्लाह को मनाएंगे, अल्लाह तआला की मानेंगे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

O O O

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शाने मुबारका

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلي ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعني وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبي صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह जल्ले जलालुहू ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सारी काएनात की कामयाबी और इज़्ज़तें देकर भेजा और यह तय कर दिया—

﴿وجعل الذلة والصغار على من خالف امرى﴾

जो मेरे नबी के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसके लिए ज़िल्लत मुकद्दर कर दी गई। सारी दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ

लेकर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए। अब सारे इन्सानों के लिए कामयाबी का एक ही रास्ता है बाक़ी सारे रास्ते बंद।

﴿يا محمد لو استفتحوني كل باب وجاءوني من كل طريق.﴾

"ऐ हमारे नबी! हमने सारे रास्ते और दरवाज़े बन्द कर दिए। एक रास्ता खुला है।"

एक दरवाज़ा खुला रखा है जो लोग मेरे तक आना चाहते हैं, मेरे तक आने का कोई रास्ता नहीं है सिवाए आपकी इत्तिबा के जो आपके तरीक़े पर चलकर आएगा मेरे तक पहुँचेगा और जो आपके तरीक़े से हट जाएगा वह ज़लील व ख़्वार होगा।

﴿لو كان موسى حيا لما وسعه الا اتباعي.﴾

अगर आज मूसा अलैहिस्सलाम भी ज़िन्दा हों तो मेरे तरीक़े पर चले बग़ैर उनको कोई चारा नहीं।

कामयाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों में है

मेरे भाईयो! एक ही रास्ता बाक़ी है। दुनिया और आख़िरत के ख़ज़ानों का। कुफ़्फ़ार इससे टकराए कि उसकी मानेंगे तो हमारी हुकूमतें चली जाएंगी। इसके पीछे चलेंगे तो हमारी इज़्ज़तें चली जाएंगी और हमारा माल चला जाएगा, हमारा मुल्क चला जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

يا معشرَ قريش كلمة واحدة لو تعطونيها دانت
لكم العرب فوادى لكم العزية

ऐ क़ुरैश की जमाअत। मैं तुम्हारी हुकूमतें लेने नहीं आया, मेरी मानोगे तो तुम्हारी हुकूमतें भी बढ़ जाएंगी और तुम्हारा माल भी बढ़ जाएगा।

किसरा के बाग़ व बहार, क़ालीन एक एकड़ चौड़ा (2201 फिट लम्बा और 190 गज़ चौड़ा) आज का एकड़ उस वक़्त का पता नहीं एकड़ कितना था लेकिन आज का एकड़ 2201 फिट लम्बा और 190 गज़ चौड़ा इतना लम्बा क़ालीन, 30 खरब दीनार सोने के सिक्के और 100 ख़ज़ाने अलग छिपे हुए और उसका तख़्त 270 हाथ लम्बा 210 हाथ चौड़ा था जिस पर 53 मन 30 सेर सोना लगा हुआ था, 1232 मन उस पर चाँदी लगी हुई थी। यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में अल्लाह तआला ने मदीने पहुँचा दिया।

﴿نصر من الله وفتح قريب وبشر المومنين﴾

डेढ़ डेढ़ हज़ार दिरहम का जोड़ा एक एक बदरी सहाबी को वह सहाबा जिन्होंने जंगे बदर में शिरकत की थी।

मुहब्बत का अनोखा अन्दाज़

अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी को अपने सिफ़ाती नाम नहीं अता फ़रमाए, अल्लाह तआला के अपने नाम हैं कोई उसके नामों में शरीक नहीं। उसकी सिफ़ात में कोई शरीक नहीं। अपनी ज़ात के बारे में फ़रमाया. ﴿ان ربكم لرؤف رحيم﴾ और अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया ﴿بالمؤمنين رؤف رحيم﴾ मेरा नबी भी रऊफ़ और रहीम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रऊफ़ और रहीम होना अपनी ज़ात

के एतबार से है और अल्लाह तआला का रऊफ़ और रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है। अल्लाह तआला ने अपने नाम में मुशाबिहत पैदा फ़रमाई है कि मेरा नबी किस पर रऊफ़ और रहीम है अपनी उम्मत पर रऊफ़ और रहीम है।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में हर नबी को नाम लेकर पुकारा लेकिन अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी पुकारा है तो नाम नहीं लिया,

﴿يا ايها الرسول، يا ايها النبى، ياايها المزمل، ياايها المدثر.﴾

एक जगह भी नाम नहीं लिया और चार जगह नाम लिया है और यह ख़िताब नहीं किया सिर्फ़ नाम बताया है कि मेरे हबीब के नाम हैं और यह नाम न अब्दुलमुत्तलिब ने रखा न आमना ने रखा है। यह नाम मैंने रखा है। हज़ारों साल पहले आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश से भी पहले अल्लाह तआला ने क़ुरआन पढ़ा। उस वक़्त भी नामे "मुहम्मद" क़ुरआन में मौजूद था।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ﴿لعمرك﴾ ऐ नबी तेरी जान की क़सम, ﴿انهم لفى سكرتهم يعمهون﴾ यह अल्लाह तआला ने अपने हबीब की क़सम खाई, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई और किसी नबी के शहर की क़सम नहीं खाई ﴿وهذا البلد الامين، لا اقسم بهذا البلد﴾ फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की क़सम खाई। किसी नबी की रिसालत पर क़सम नहीं खाई।

﴿يٰسٓ القران الحكيم. انك لمن المرسلين.﴾

क़सम है क़ुरआन-ए-हकीम की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

मेरे रसूल हैं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए कसम उठाई। छः महीने "वही" नहीं आई। क़ुरैश-ए-मक्का कहने लगे इसके रब ने इसे छोड़ दिया है, इसका रब इससे नाराज़ है तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन क़ुरआन उतारा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ क़ुरआन की ज़बान से

والضحى واليل اذا سجى ما ودعك ربك وما قلى وللاخرة
خير لك من الاولى ولسوف يعطيك ربك فترضى.

पहला तर्जुमाः इस रौशन दिन की क़सम, इस अंधेरी रात की क़सम, न मैं तुझ पर नाराज़ हूँ न मैंने तुझे छोड़ा, आख़िरत तेरे लिए दुनिया से बेहतर है, मैं तुझे इतना दूँगा कि तू राज़ी हो जाए।

इसका दूसरा तर्जुमा जो इमाम राज़ी रह० बयान फ़रमा रहे हैं:

तेरे रौशन चेहरे की क़सम, तेरी बिखरी हुई स्याह ज़ुल्फ़ों की क़सम, ﴿ما ودعك ربك وما قلى﴾ भला मैं तुझे छोड़ सकता हूँ? भला मैं तुम से नाराज़ हो सकता हूँ, दुनिया भी तेरी और आख़िरत भी तेरी और आख़िरत तेरे लिए दुनिया से बेहतर है, तुझे वह दूँगा कि तू राज़ी हो जाएगा।

देखो भाईयो! सारे जहाँ को कहा कि मुझे राज़ी करो और अपने नबी से कहा तू राज़ी हो जा। अल्लाह के नबी की ज़िन्दगी को ले लो उस तरह जैसे अल्लाह कहता है ऐसे नहीं जैसे मिरासी करते हैं ईमानी हमियत व ग़ैरत हो।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बुज़ुर्गी पर अल्लाह का क़सम खाना

﴿والنجم اذا هوى﴾ क़सम है मुझे सितारे की जब वह अपने मदार पर चलता है, जब वह टूटता है कि मेरा नबी गुमराह नहीं है, मेरा नबी अपने रास्ते से हटा नहीं है बल्कि सही रास्ते पर है, सीधी राह पर है। अल्लाह तआला ने किसी नबी के अख़्लाक़ की क़सम नहीं खाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ और आदात की क़सम खाई। क्या फ़रमाया ﴿ن. والقلم وما يسطرون﴾ क़सम है क़लम की और क़लम के लिखे हुए की।

ما انت بنعمت ربك بمجنون . وان لك لا جرا
غير ممنون وانك لعلى خلق عظيم

आप बड़े ऊँचे अख़्लाक़ वाले हैं। यह तो क़ुरआन अल्लाह के नबी की सीरत बयान कर रहा है।

मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से तौरात लेने के लिए गए। जल्दी-जल्दी आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जल्दी क्यों आए हो तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ﴿عجلت اليك رب لترضى﴾ या अल्लाह जल्दी आया हूँ ताकि आप राज़ी हो जाएं ﴿لترضى﴾ आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इर्शाद फ़रमाया ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आपको इतना दूँगा कि आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम को हुकूमत दी तो इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تتبع الهوى﴾ ऐ दाऊद! ख़्वाहिश का गुलाम न बनना, दाऊद अलैहिस्सलाम को नसीहत फ़रमाई,

बाहर की ग़ुलामी न करना और अल्लाह तआला ने अपने हबीब की सफ़ाई पेश की,

﴿وما ينطق عن الهوى﴾ मेरा हबीब ख़्वाहिश की ग़ुलामी में बोलता ही नहीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ ﴿وجعلني من ورثة النعيم﴾ या अल्लाह जन्नत दे दे। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को फ़रमाया,

﴿انا اعطينك الكوثر﴾ हमने आपको कौसर अता कर दी।

﴿ليطهرك تطهيرا﴾ ऐ मरे हबीब मैं आपको और आपके घर को पाक करना चाहता हूँ।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿حسبي الله ونعم الوكيل﴾ अल्लाह मुझे काफ़ी हो जा। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को बिना मांगे फ़रमाया,

﴿يايها النبي حسبك الله﴾ ऐ मेरे नबी तेरा अल्लाह तुझे काफ़ी है।

अल्लाह की बारगाह में आपने अर्ज़ किया या अल्लाह!

اتخذت ابراهيم خليلا وموسى كليما وعلمت لداؤدا لحديد و
سخرت لسليمان رياحا واحييت لعيسى الموت فماذا جعلت لي.

या अल्लाह! इब्राहीम अलैहिस्सलाम! आपके ख़लील, मूसा अलैहिस्सलाम आपके कलीम, दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहा ताबे, सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवा ताबे, ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मुर्दा ज़िन्दा करने की ताक़त, मेरे लिए क्या है?

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿قد اتيت افضل من كل ذلك﴾ ऐ मेरे हबीब मैंने आपको सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई।

वह क्या है? क़यामत तक आपका और मेरा नाम इकठ्ठा

चलेगा, जुदा नहीं हो सकता, एक जगह रहेगा, "ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" अब यह बदल नहीं सकता, इकठ्ठा रहेगा।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी ﴿واجعل لی لسان صدق فی الاخرین﴾ या अल्लाह मेरा मकाम ऊँचा कर दे। अल्लाह तआला ने कबूल कर ली, हर नमाज़ में दरूदे इब्राहीमी पढ़वा दिया मगर हमारे नबी को मांगने से पहले ही अल्लाह तआला ने कह दिया, ﴿ورفعنا لك ذكرك﴾ मैंने तेरा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी ﴿رب شرح لی صدری﴾ ऐ अल्लाह! मेरा सीना खोल दे। अल्लाह तआला ने खोल दिया लेकिन अपने हबीब को हाथ उठाने से पहले कहा, ﴿الم نشرح لك صدرك﴾ मेरे हबीब मैंने तेरा सीना खोल दिया।

मैं सिर्फ़ क़ुरआन में से अल्लाह के नबी की बात बता रहा हूँ। बातों से बात निकल आती है। यह आजकल के नात पढ़ने वाले भी नात पढ़ते हैं मगर गानों के तरज़ पर हाँलाकि नात पढ़ना तो मुबारक अमल है पर यह कैसा ज़ुल्म व सितम है कि गानों के तर्ज़ पर नातें पढ़ी जाएं।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे। बादशाहों के तख़्त उल्टे हो गए। जो बादशाह उस वक़्त दरबार सजाए बैठे थे और उनके सिरों पर ताज थे वे उछलकर ज़मीन पर जा गिरे।

आग की पूजा की शुरूआत

किसरा के महल में एक हज़ार साल से आग जल रही थी

जिसकी पूजा की जाती थी। ज़हाक के ज़माने से पूजा शुरू हुई आग की।

ज़हाक एक मर्तबा शिकार को निकला। एक साँप हमलावर हुआ। उसने उसे पत्थर मारा। पत्थर आगे पत्थर पर पड़ा। उससे शोला निकला, शोले ने साँप को लपेट में ले लिया। उसने कहा यही मेरी नजात का ज़रिया है। यहाँ से आग की पूजा ईरान में दाख़िल हुई।

इसको हज़ार बरस हो चुके थे और एक पल के लिए यह आग बुझने न पाई थी, इसको जलाते रहते थे, जलाते रहते थे, जलाते रहते थे। सागौन, ऊद की लकड़ियों से दारचीनी की लकड़ियों से यह आग जलाई जाती थी। जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए आग एकदम बुझ गई। सारा ज़ोर लगाया जलती नहीं थी।

आपकी पैदाईश पर अल्लाह की खुशी

अल्लाह तआला ने रबियुल अव्वल से अगले रबियुल अव्वल तक पूरी दुनिया में हर औरत को बेटा दिया किसी को बेटी नहीं दी। अपने नबी के एज़ाज़ में। एक समुंद्र की मछली ने दूसरे समुंद्र की मछलियों को जाकर मुबारकबाद दी। देखने में यतीम पैदा हो रहा है आलम में तब्दीली इस तरह आ रही है, बुत गिर रहे हैं, आग बुझ रही है, आसमानों पर चिराग़ां, समुंद्रों में ख़ुशियाँ, फ़िज़ाओं में ख़ुशियाँ। ज़ाहिरी असबाब यह हैं।

जब हज़रत आमना ने गोद में लिया तो हैरान होकर देख रही

हैं यह बच्चा कैसा है? यह बच्चा कैसा है? इधर उनके घर की छत फट गई और एक बादल अन्दर आ गया।

﴿فغشيته وغيبته﴾ एक दम बादल फैला और एक लम्हे के लिए हज़रत आमना को महसूस हुआ कि बच्चा गोद में नहीं है, गोद ख़ाली है और उस बादल के अन्दर से आवाज़ आई,

﴿طوفوا به مشارق الارض ومغاربها﴾

इस बच्चे को पूरब व पश्चिम फिरा दो, उत्तर दक्षिण फिरा दो ﴿ليعرفوا باسمه ونعته وصورته﴾ ताकि सारा जहान इसके नाम को सिफ़ात को, ज़ात को पहचान ले।

अल्लामा सयूती रह० ने एक रिवायत में नक़ल किया है कि जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए उस दिन से लेकर अगले पूरे एक साल तक अल्लाह तआला ने किसी औरत को बेटी नहीं दी। सबको बेटे अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़तना के साथ पैदा हुए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़तना नहीं किया गया ﴿ولد مختونا﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़त्ने के साथ पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाक पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ग़लाज़त नहीं लगी हुई थी। जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारा कमरा रौशन हो गया। हज़रत आमना फ़रमात्ती हैं कि पूरब पश्चिम मेरे सामने खुल गए, शाम के महल देखे, मदाइन के महल देखे, हिरा और यमन के महल्लात को अल्लाह पाक ने दिखाया, सारी काएनात को रौशन कर दिया।

अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए, सारी

दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे। बादशाहों के तख़्त उलट गए और बुत ज़मीन पर जा गिरे। अपने आप ज़मीन पर गिर गए। क्या हुआ? बुतों का तोड़ने वाला आ गया, बुत शिकन आ गया, तौहीद की दावत देने वाला आ गया, अल्लाह से मिलाने वाला आ गया, ज़ुलमत को मिटाने वाला आ गया, अंधेरों को दूर करने वाला आ गया, सारी काएनात को नजात दिलाने वाला आ गया तो भाई ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो अल्लाह के नबी के तर्ज़ पर गुज़ारो जो अल्लाह का महबूब है।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे आपके बचपन में पता चल गया था कि आप बड़ी शान वाले हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह कैसे? कहा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चारपाई पर लेटे थे जैसे बच्चा यूँ हाथ मारता है, पाँव मारता है, टाँगें चलाता है, हाथ चलाता है और ऊपर चौदहवीं का चाँद था कभी हाथ मारते मारते आपका हाथ ऊपर जाता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ के साथ ही चाँद भी यूँ हो जाता था। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यूँ करते थे चाँद यूँ हो जाता था। आपकी हरकत से चाँद हरकत कर रहा था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

﴿كان القمر يناغيني ويحاكيني ويلهيني عن البكاء﴾

चाँद मुझ से बातें करता था, मेरा दिल लगाता था, मुझे कहानियाँ सुनाता था ﴿يحاكيني﴾ चाँद मुझे कहानियाँ सुनाता था। जिसको आसमान का चाँद उसके पंघोड़े में लोरियाँ दे और कहानियाँ सुनाए वह कितनी ऊँची शान वाला नबी होगा?

तो हम कहते हैं हर मुसलमान इस अज़ीमुश्शान नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाए जिसको अल्लाह तबारक व तआला ने सारी दुनिया की सरदारी अता फ़रमाई।

बुतपरस्ती का ज़वाल (वाक़िआ)

यमन में एक काहिन कभी बाहर नहीं निकलता था। जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए घबराकर बाहर निकला, कहने लगा ऐ अहले यमन! आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया, आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया। जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बड़े बड़े बुतख़ानों के बुतों से आवाज़ आई कि हमारा ज़माना ख़त्म, अब नबी आख़िर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना शुरू हो गया, बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया है।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों बुत टूटे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवाफ़ कर रहे हैं, तीन सौ साठ बुत खड़े हुए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ऊँटनी पर तवाफ़ फ़रमा रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ मुबारक में कमान है, आप चलते जा रहे हैं और बुतों को यूँ इशारा करते हैं—

﴿جاء الحق وزهق الباطل ان الباطل كان زهوقا.﴾

और यूँ इशारा फ़रमाते ही बुत टूटकर गिरता है फिर यूँ इशारा करते हैं और बुत टूट के गिरता है।

फिर यूँ इशारा करते हैं और बुत टूटकर गिरता है। तीन सौ साठ बुत जो बैतुल्लाह में रखे थे हाथ के इशारे से हालाँकि उस

वक़्त कमान हाथ में थी लेकिन कमान को लगाया नहीं किसी बुत को, यूँ किया, इशारा करते चले जा रहे थे और बुत टूटते चले जा रहे थे कि बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत वजूद में आई तो सारे आलम में ज़लज़ला आ गया, सारे आलम के बुत गिरे, सारे आलम के बादशाह गूंगे हो गए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश पर यहूदी का शोर-व-ग़ुल

एक यहूदी मक्का मुकर्रमा की गलियों में शोर मचाता फिरता है कि आज कोई बच्चा पैदा होने वाला है? उन्होंने कहा फ़लाँ का लड़का पैदा हुआ है। कहा उसका बाप ज़िन्दा है? कहने लगे हाँ। कहा नहीं नहीं, कोई ऐसा बच्चा बताओ जिसका बाप मरा हुआ हो। उन्होंने कहा अब्दुल मुत्तलिब का पोता पैदा हुआ है। उसने कहा मुझे दिखाओ। जब देखा तो चीख़ निकली और कहने लगा ﴿يا ويل لبنى اسرائيل﴾ ऐ बनी इसराईल तेरे लिए हलाकत, ﴿قد خرجت النبوة منها﴾ आज बनी इसराईल से नबुव्वत निकल गई ﴿ورحتم بها يا معشر قريش﴾ और ऐ क़ुरैश की जमाअत! तुम नबुव्वत को आज हम से ले गए। एक वक़्त आएगा,

﴿وليسطون بكم سطوة يخرج صوتها فى المشرق و المغرب﴾

यह एक दिन टक्कर लेगा जिसकी टक्कर की आवाज़ मशरिक़ व मग़रिब में सुनाई देगी। अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हो रहे हैं, अभी काम शुरू नहीं किया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न की कहानी अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बानी

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर औरतों ने हाथ पर छुरियाँ चलायीं थीं मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखतीं तो सीने पर छुरियाँ चला बैठतीं।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं चौदहवीं का चाँद चमक रहा था और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुर्ख़ धारीदार चादर पहने हुए मस्जिदे नबवी के सहन में बैठे हुए थे। हम कभी चाँद को देखते, कभी आपके चेहरे को देखते आपके चेहरे का जमाल चौदहवीं रात के चाँद से ज़्यादा रौशन था।

अल्फ़ाज़ ही कोई नहीं लेकिन क्योंकि ताबीर अल्फ़ाज़ से होती है लिहाज़ा अल्फ़ाज़ ही बयान किए जाएं अल्लाह की अज़मत आएगी तो तब अल्लाह की मानकर चलेगा, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत आएगी तो तब उसकी सुन्नत पर चलेगा। अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत कोई नहीं कि अल्लाह ने आपको कितना आली मक़ाम बनाया।

राहिब (सन्यासी) की बशारत

अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र दस बरस है और अबू तालिब आपको लेकर तिजारती क़ाफ़िले में जा रहे हैं।

बुहैरा राहिब रास्ते में पड़ता है। उसकी नज़र पड़ी क़ाफ़िले पर कहने लगा क़ाफ़िले का सरदार कौन है? उन्होंने कहा मैं हूँ। कहा कल आप सबकी दावत है। वह कहने लगे कि आपने पहले तो कभी ऐसा काम नहीं किया। कहा यह काम एक अर्से से कर रहा हूँ।

अगले दिन सारे क़ाफ़िले वाले आ गए। पेड़ के नीचे बैठे हुए देखा तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नहीं हैं। बहैरा ने कहा सारे हैं कोई बाक़ी है? कहने लगे एक बच्चा है वह ऊँट चराने गया है। वह कहने लगा उसी की बरकत से तो तुम्हें बुलाया है, वह न होता तो मैं क्या पूछता था? उसको बुलाओ।

अब एक आदमी भागा भागा गया तो उनको बुलाकर लाए। अब बुहैरा की नज़र पढ़ रही है और देख रहा है और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो कोई जगह साए की नहीं, साया ख़त्म हो चुका है, सारे लोग साए के नीचे बैठ चुके हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धूप में बैठ गए। एक शाख़ तेज़ी से आगे बढ़ी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर साया कर दिया। यह दस साल की उम्र में हो रहा है। उस पेड़ को पता है कि यह बच्चा आख़िरी रसूल है। यह पेड़ जानता है कि आख़िरी रसूल हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा! सूखा पेड़ ख़ुजूर देने लग गया

आप सर्दी में बाहर निकले। देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु परेशान हाल बाहर फिर रहे हैं। आपने फ़रमाया अली क्या हुआ? कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! भूख लगी

है, बैठा नहीं जा रहा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे भी भूख लगी है मैं भी इसीलिए बाहर निकल आया हूँ बैठा नहीं जा रहा है। आगे गए तो कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम बैठे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या हुआ? क्यों बैठे हो? कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! भूख लगी है बैठा नहीं जा रहा। हमने कहा चलो बाहर आकर बातचीत करते हैं कोई रात तो कटे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त फ़रमाया। (यह ज़माना सर्दियों का है।) अली जाओ इस खजूरे के पेड़ से कहो अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खुजूरें दो। खुजूर तो गर्मी में आती है और यह ज़माना सर्दी का है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़कर गए। आगे उन्होंने यह भी नहीं कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कैसे होगा? जैसे हम किसी दुकानदार से कहें सच बोलो अल्लाह के नबी का फ़रमान है। कहता है फिर दुकान कैसे चलेगी, फिर कारोबार कैसे चलेगा?

वह कहते या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहाँ से फल आएगा, यह तो सर्दी का ज़माना है। वह दौड़े हुए गए कहा ﴿ايها نخلة﴾ ऐ खुजूर! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते हैं ताज़ा खुजूर दो। टप टप टप पत्तों से ताज़ा खुजूरें गिरने लगीं।

आपकी नबुव्वत की गवाही जानवर की ज़बानी

मदीने की बात है। एक बद्दू गुज़रा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मजलिस में तश्रीफ़ फ़रमा हैं। कहने लगा कौन

है? उन्होंने कहा यह वही हैं जो आसमान की ख़बरें देते हैं। अच्छा यह है वह। आया ﴿انت الذى تقول ما تقول﴾ तू ही नबुव्वत का दावा करने वाला है? आपने कहा हाँ मैं ही हूँ। उसने कहा अगर मेरी कौम ने तेरे साथ अहद न किया होता ﴿لقتلتك كر قتلة﴾ मैं तुम्हें बुरे तरीक़े से क़त्ल कर देता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को गुस्सा आया ﴿دعنى اضرب عنقه﴾ या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इजाज़त हो तो गर्दन उड़ा दूँ। आप ने कहा उमर सब्र करो, तुम्हें पता है दरगुज़र करना नबुव्वत की शान है। हम तो दरगुज़र तो छोड़ो जब तक एक की दस न सुना लें तो सब्र नहीं आता।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा भाई बद्दू मेरी मजलिस में आकर तू मेरी बेइकरामी करे यह बात तो मुनासिब नहीं है।

वह आगे से कहता है अच्छा आगे से बातें भी बनाते हो।

वह एक गोह शिकार करके लाया हुआ था और उसे ऊँट के पालान से बाँधा हुआ था, गुस्से में आया, उसको खोला और आपके सामने यूँ फेंका कहने लगा ﴿لا يومن او يومن هذا الضب﴾ मैं तेरी नबुव्वत को नहीं मान सकता जब तक कि यह गोह तेरी नबुव्वत की गवाही न दे। अब वह गोह मरी पड़ी है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿ياضب﴾ ऐ गोह! ﴿فاجاب بلسان عربى فصيح مبين﴾ गोह फसीह अरबी ज़बान में बोली,

﴿لبيك وسعديك يا زين من وافى يوم القيمة﴾

क्या बोली? लब्बैक मैं हाज़िर हूँ और मेरी सआदत है तू कौन है?

﴿يا زين من وافى يوم القيمة﴾ ऐ वह ज़ात जो कयामत के दिन लोगों को मुज़य्यन कर देगी, मैं हाज़िर हूँ हुक्म कीजिए।

आप ने फ़रमाया ﴿من تعبد﴾ (उलूहियत का पहला सवाल) ﴿من تعبد﴾ तू किसकी बन्दगी करती है? गोह कहती है,

من فى السماء عرشه وفى الارض سلطانه وفى البحر
سبيله وفى الجنة رحمة وفى النار غضبه.

बद्दू सुन रहा है और सहाबा सुन रहे हैं कि मुर्दा गोह बोल रही है। क्या कहती है?

﴿من فى السماء عرشه﴾ मैं उसकी बन्दगी करती हूँ जिसका अर्श आसमानों पर है,

﴿وفى الارض سلطانه﴾ मैं उसकी ताबेदार हूँ जिसकी सलतनत ज़मीनों पर है,

﴿وفى البحر سبيله﴾ मैं उसकी गुलाम हूँ जिसके मुसख़्ख़र किए हुए रास्ते समुंद्रों में हैं,

﴿وفى الجنة رحمة﴾ मैं उसकी गुलाम हूँ जिसने जन्नत को अपनी रहमत की जगह बनाया है,

﴿وفى النار عقابه﴾ और मैं उसके सामने अपना माथा टेकती हूँ जिसने दोज़ख़ को इन्सानों की बर्बादी के लिए बनाया है।

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि ने फ़रमाया ﴿من انا﴾ दूसरा सवाल किया मैं कौन हूँ? (सब सुन रहे हैं, बद्दू भी देख रहा है) आप सवाल फ़रमा रहे हैं ﴿من انا﴾ मैं कौन हूँ? गोह कहती है,

انت رسول رب العالمين وخاتم النبين قد افلح من
صدقت وقد خاب من كذبت يارسول الله.

आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबियीन हैं जो

आपकी मानेगा कामयाब हो जाएगा जो आपको ठुकराएगा वह हलाक बर्बाद हो जाएगा। इस गोह की गवाही आज भी हम पर सादिक़ आ रही है।

सरकश ऊँटों की फ़रमांबरदारी का वाक़िआ

आक़ा की ख़िदमत में एक अन्सारी सहाबी आए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि मेरे दो ऊँट सरकश हो गए हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे ले चलो। आप गए तो दरवाज़ा बन्द था। एक ऊँट सामने खड़ा था, बिलबिला रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सारी से फ़रमाया दरवाज़ा खोलो। उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे डर लगता है कि आपको नुकसान पहुँचाएंगे। आप ने फ़रमाया ये मुझे कुछ नहीं करेंगे तुम दरवाज़ा खोलो।

जब ऊँट की निगाह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पड़ी, दौड़कर क़दमों में गिर गया ﴿القى بجرانه﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रस्सी से बाँध दिया। दूसरे की तरफ़ देखा वह भी इसी तरह आया और आपके क़दमों पर सिर डाल दिया।

आपने उसको भी रस्सी से बाँध दिया और फ़रमाया लो अब यह भी नाफ़रमानी नहीं करेगा। जानवरों को भी पता था कि आप अल्लाह के रसूल हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पेड़ों के पास से गुज़रते तो पेड़ कहते ﴿السلام عليك يا رسول الله﴾ यही हाल पत्थरों का था।

झाड़ियों ने दीवार बना दी

आप पेशाब करने निकले। देखा तो झाड़ियों छोटी छोटी थीं। उनके पीछे पर्दा नहीं हो सकता था। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि इन झाड़ियों को कहो आपस में इकठ्ठी हो जाओ। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा तो झाड़ियाँ दौड़ती हुई आयीं और आपस में इकठ्ठी हो गयीं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पेशाब से फ़ारिग़ हो गए तो आपने जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा इनको कहो कि वापस अपनी जगह चली जाएं। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने से फ़ौरन वापस अपनी जगह चली गयीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की गवाही पेड़ की ज़बान से

एक बद्दू आया। आपने पूछा मुझे नबी मानते हो। कहने लगा नहीं। आपने फ़रमाया कि यह खुजूर का जो पेड़ है, वह टहनी अगर मैं उसे कहूँ कि आकर मेरी गवाही दे तो फिर मुझे नबी मानेगा? कहने लगा हाँ मानूँगा। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेड़ को बुलाया, उसकी टहनी को इशारा किया कि आजा। वह अपनी जगह से टूटी और खुजूर के तने के साथ लगकर ऐसे उतरी जैसे आदमी उतरता है और फिर अपने सिरे पर चलती हुई आई और आकर आपके सामने ऐसे टेढ़ी हो गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ टहनी! ﴿من انا﴾ कहा ﴿اشهد انك رسول الله﴾ मैं गवाही देती हूँ कि तू अल्लाह का रसूल

है। आप ने तीन बार पूछा उसने तीन बार कहा तू अल्लाह का रसूल है, तू अल्लाह का रसूल है, तू अल्लाह का रसूल है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न व जमाल शायर की नज़र में

हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु का जो शे'र है, सारी दुनिया की इज़्ज़तें जमा हो जाएं, सारी दुनिया के अश'आर जमा हो जाएं, हस्सान रज़ियल्लाहु अन्हु के दो बोल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में हावी हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े होकर कहे थे:

واحسن منك لم ترقط عينى   واجمل منك لم تلدا النساء
خلقت مبرأ من كل عيب   كانك قد خلقت كما تشاء

और मेरी आँख ने आप जैसा हसीन नहीं देखा और आप जैसा जमाल वाला किसी माँ ने नहीं जना, हर ऐब से पाक पैदा किए गए, गोया कि आपको आपके रब ने आपकी मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किया। कमाल कर दिया।

لم يخلق الرحمن مثل محمد   ابدا وعلم انه لا يخلق

अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसा कोई पैदा नहीं किया और मेरा इल्म है यक़ीन है कि आइन्दा ऐसा कोई पैदा नहीं करेगा।

फिर जिसको अल्लाह ने इज़्ज़त दी हो, हबीब का ख़िताब दिया हो, अपने नाम के साथ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम को जोड़ दिया हो सुब्हानअल्लाह जहाँ मेरा नाम होगा वहाँ तेरा नाम भी होगा।

पहले नबी भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और आख़िरी नबी भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अब आप बताओ जो आपका सफ़ीर बनेगा क़यामत के दिन उसका क्या मक़ाम होगा? मैराज की रात में आपने दरख़्वास्त की या अल्लाह ﴿ابراهيم خليلا ما فعل لي﴾ तो अल्लाह तआला ने आपके नाम को अपने नाम के साथ ज़िक्र किया।

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने का वाक़िआ

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का एक लम्बा क़िस्सा है लेकिन मैं इसका आख़िरी टुकड़ा सुनाता हूँ। वह इसाई राहिब के पास रहते थे। कहा आप तो मर रहे हैं तो मैं अब किसके पास जाऊँ? उन्होंने कहा बेटा अब दुनिया में सच मिट गया है। अब तू आख़िरी नबी का इन्तिज़ार कर, वह आने वाला है। जब वह आ जाएगा तो उसका साथ देना। कहा उसकी निशानियाँ क्या होंगी?

राहिब ने कहा वह ज़कात नहीं खाएगा, सदक़ा नहीं खाएगा, हदिये का माल क़ुबूल करेगा और उसकी कमर के बीच सीधे कंधे के क़रीब मुहर होगी नबुव्वत की। यह तीन निशानियाँ याद रखो। बस वह नबी है।

फिर एक लम्बी कहानी चली। बहरहाल वह मदीने पहुँचे इधर रसूल पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मदीने पहुँच गए। अब सलमान फ़ारसी को पता चला कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए हैं। अब पहले दिन सलमान फ़ारसी आए और कहा मैं सदक़ा लाया हूँ। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने वह उठाकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दे दिया। कहा भाई खाओ तुम तो इन्होंने दिल में कहा ﴿هذا اولى﴾ यह पहली निशानी है। फिर खुजूर लेकर आए और कहा मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हदिया लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी खाई और सहाबा को भी कहा तुम भी खाओ तो उन्होंने कहा ﴿هذا ثانيه﴾ यह दूसरी निशानी हुई। अब सोच में पड़ गए कि तीसरी निशानी कैसे देखूँ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीसरी दिखा दूँ? तीसरी भी दिखा दूँ? आओ देख लो कुर्ता उठाया कहा यह देख लो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

﴿انا نبي الانبياء﴾ मैं नबियों का नबी हूँ,

﴿قائدهم اذا وخدوا﴾ सारे जहाँ की क़यादत करने वाला हूँ,

﴿خطيبهم اذا انصتوا﴾ सारा जहान महशर में ख़ामोश होगा, मैं बोलने वाला हूँ,

﴿شافعهم اذا اخصروا﴾ सारा मैदान हश्र जब रुक जाएगा तो मैं सिफारिश करने वाला हूँ,

﴿مبشرهم اذا التوا﴾ जब सारे नाउम्मीद हो जाएंगे मैं खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ,

﴿لواء الحمد بيد يوم القيمة﴾ अल्लाह का झंडा मेरे हाथ में है

﴿ان آدم وجميع الانبياء تحت لوائى﴾ आदम अलैहिस्सलाम और उनकी सारी औलाद मेरे झंडे के नीचे है,

﴿ان الجنة حرمت على الانبياء حتى ادخلها﴾ सारे नबियों पर जन्नत हराम है जब तक मैं न चला जाऊँ,

﴿والنهار لمحرمة على الامم حتى تدخلها امتى﴾ और सारी उम्मतों पर

जन्नत हराम है। जब तक मेरी उम्मत जन्नत में न चली जाए।

मेरे भाईयो ज़िन्दगी गुज़ारनी तो है ही और आदमी की तबियत है कि असर लेता है, हम भी असर लेंगे, किसी न किसी से असर लेंगे और वैसा वजूद बनाएंगे, वैसा लिबास पहनेंगे, वैसा कारोबार करेंगे, वैसा ही घर बनाएंगे। अल्लाह तआला कहता है कि किसी से असर न लो, ﴿صبغة الله﴾ अल्लाह के रंग में रंगो। अल्लाह का रंग क्या है? मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। यह मेरा हबीब है इसके तरीक़े पर आओ।

मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेमिसाल दिलनशीन जिस्म मुबारक का तज़्किरा

आप देखते कैसे थे? ﴿جل نظره الملا حظه﴾ आप आँखों के गोशों से देखते थे। आँखे फाड़कर नहीं देखते थे। हया की वजह से नज़र नहीं उठाते थे। सबक़ दिया कि मैं तुम्हारा नबी हूँ। मैं तो मर्दों के सामने नज़र नहीं उठाता औरों की बेटियों को अपनी नज़र से बचाना, बेहया न हो जाना, बेहयाओं को कभी इज़्ज़त नहीं मिलती।

क़द मुबारक

आपका क़द कैसा था? ﴿اطول من المربوع واقصر من المشذب﴾ न ज़्यादा लम्बा न ज़्यादा छोटा लेकिन आपका मौजिज़ा था कि आप लम्बे से लम्बे आदमी के साथ चलते तो आपका क़द ऊँचा होता था उसका नीचा होता था। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का

क़द तक़रीबन दस फिट था जब वह घोड़े पर बैठते तो उनके पाँव ज़मीन पर लगते थे मगर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चलते थे तो हज़रत अब्बास का क़द नीचे होता और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ऊँचा।

जबीन (माथा) मुबारक

आपका माथा कैसा था? ﴾واسع الجبين﴿ कुशादा पेशानी थी।

नाक मुबारक

आपकी नाक कैसी थी? ﴾اقنى العرنين﴿ ऊँचा उठा हुआ था और बारीक ﴾له نور يعلوه﴿ साथ नूर का हाला था जिसने दायरा बनाया हुआ था।

अबरू मुबारक

आपके अबरू कैसे थे? ﴾ازج الحواجب سوابغ من غير قرن﴿ कमान की तरह थे। क़ौस की शक्ल में थे दर्मियान में बाल नहीं थे, बीच में एक रग थी तो जब गुस्से में आते ﴾بينهما عرق يدره الغضب﴿ तो यह रग उभर आती थी।

आँख मुबारक

आपकी आँखें कैसी थीं? ﴾ادعج اشكل احور اكحل﴿ सरमदी आँख, स्याह आँख मोटी आँख, लम्बी आँख, अन्दर की सफ़ेदी पूरी तरह सफ़ेद, स्याही पूरी तरह स्याह थी और आप जब नज़र उठाते तो कोई आपकी आँखों में नज़रें नहीं डाल सकता था।

होंट मुबारक

आपके होंट कैसे थे? ﴿ضليع الفم﴾ ख़ूबसूरत तराशे हुए होंट थे, दहन मुबारक कुशादा था।

गाल मुबारक

आपके गाल कैसे थे? ﴿سهل الخدين﴾ आपके गाल इस तरह चमकते थे ﴿مشرب اللون﴾ कि उसमें से नूर की शुआएं निकलती थीं।

दाँत मुबारक

आपके दाँत कैसे थे? ﴿مفلج الاسنان﴾ चमकते हुए दाँत। सामने के दाँत कुछ कुशादा मोतियों की तरह चमकते हुए और जब हँसते थे तो कभी कभी दाँतों की चमक सामने दीवार पर भी पड़ती थी।

दाढ़ी मुबारक

आपकी दाढ़ी कैसी थी? ﴿كثرة للحية﴾ घनी दाढ़ी क़ुदरती एक मुश्त थी न मुंडवाई न कटवाई।

गर्दन मुबारक

आपकी गर्दन कैसी थी? ﴿كان عنقه جيد دمية﴾ गोया हसीन व जमील तराशी हुई मूर्ति की गर्दन हो ﴿فى صفاء الفضة﴾ चाँदी की तरह साफ़ और चमकती हुई थी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में कुफ़्फ़ार ने मशहूर किया हुआ था कि इसकी बात न सुनना जो सुनता है वह फँस जाता है। अब भी तो लोग कहते हैं इनके क़रीब न जाना जो जाता है वह फँस जाता है। वह बिस्तर उठा ही लेता है, इनके क़रीब न जाना।

आपकी दिलनशीन आवाज़ का जादू

एक थे तुफ़ैल इब्ने उमर दौसी उनको इतना डराया दिया गया कि उन्होंने कानों में रूई दे ली। उन्होंने कहा मैं उसकी सुनूँगा ही नहीं। कहीं मेरे ऊपर असर न हो जाए तो कहने लगे, "मैं बैतुअल्लाह में गया तो देखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे थे तो मेरे जी में आया कि मैं आक़िल बालिग़ आदमी हूँ, मैं समझदार आदमी हूँ क्या मुझे पता नहीं चलता कि ग़लत क्या है, सही क्या है। मैं सुनूँ तो सही यह कहता क्या है। यह दिल में आया तो मैंने कान से रुई निकाल दी और आपके पास आकर बैठ गया।"

यह आमिल भी थे जादू बड़ा जानते थे। कहने लगे भतीजे मैंने बड़ों बड़ों का जादू निकाला है और जिन्न भगाएं हैं अगर तेरे ऊपर भी कोई जिन्न आ गया है, अगर जादू हो गया है तो मैं तेरा इलाज कर सकता हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया,

ان الحمد و استعينه واومن به من يهده الله فلا
مضل له ومن يضلله فلا هادى له

इन अल्फ़ाज़ में जो असर है जो अरब हैं वही समझ सकते हैं

रसूल के हाथों में हाथ देना पड़ेगा नहीं तो हम भटक जाएंगे, हलाक हो जाएंगे, रास्ता नहीं मिलेगा, मंज़िल नहीं मिलेगी। मंज़िल तक पहुँचने के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम से क़दम मिलाकर चलना पड़ेगा।

यह गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं, पचास लाख से लेकर पाँच लाख तक की गाड़ियाँ खड़ी हुई हैं। पचास लाख की गाड़ी के एक टायर में से हवा निकाल दो। क्या निकला? एक रुपए की हवा निकल गई। यह गाड़ी अब नहीं चल सकती, कौन दीवाना है जो इसको चलाएगा? कहेंगे उलट जाएगी। कोई कहे मेरी पचास लाख की गाड़ी है अगर हवा निकल गई तो क्या हो गया? एक रुपए की हवा ही तो निकली है, इससे क्या होता है? गाड़ी चलाओ तो चलाएगा तो ज़रूर मगर उलटकर गिरेगी उसी के ऊपर।

मेरे भाईयो! गाड़ी के पहिए में से हवा निकली गाड़ी उलट गई, महबूबे ख़ुदा की सुन्नत निकली तो क्या ईमान की गाड़ी सलामत चलेगी?

क्या अल्लाह के नबी की सुन्नत टायर की हवा से भी सस्ती है?

क्या अल्लाह के रसूल का तरीक़ा टायर की हवा से भी ज़्यादा सस्ता है?

क्या इसकी अहमियत इतनी भी नहीं जितनी टायर में हवा की?

क्या इसकी क़ीमत इतनी भी नहीं जितनी इस हवा की?

मेरे भाईयो! एक तार कट जाए तो सारा सिस्टम फ़ेल हो जाता है। एक सुन्नत जब टूटती है तो बन्दे और रब का सिस्टम

ज़रूर टूटता है क्योंकि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत नहीं जानते। इसलिए मस्‌अला यहाँ अटका हुआ है। अल्लाह को वैसा नहीं जानते जैसे वह हैं, उसके रसूल को वैसा नहीं जानते जैसे वह हैं, उसकी मुहब्बतों को हमने नहीं पहचाना, जैसे वह कर के गए, उनके दर्द और दुख हमने नहीं पढ़े जैसे वह कर के गए।

मेरे भाईयो! अल्लाह के रसूल की एक-एक अदा अल्लाह को महबूब है। इस पर आना पड़ेगा। जब तेरी आँखों से दुनिया का पर्दा हटेगा और मौत आएगी और पर्दा खुलेगा ﴿فكشفنا عنك غطاءك﴾ जब तेरी आँख से पर्दा हटाऊँगा फिर तुझे पता चलेगा कि मेरे नबी की एक एक सुन्नत की क्या क़ीमत है?

सुन्नत पर अमल करने से फ़तह

सहाबा के दौर में क़िला फ़तह नहीं हो रहा था। सारे हैरान थे कि क्या वजह है कि क़िला फ़तह नहीं हो रहा है तो अब तवज्जोह की कि किस वजह से फ़तह नहीं हो रहा है?

मेरे भाईयो! मुसलमान की सोच देखो, उन्होंने किस बुनियाद पर क़ैसर व किसरा को तोड़ा? आज इसकी सोचो। सोच में पड़ गए कि क़िला क्यों फ़तह नहीं हो रहा है। कहने लगे हम से मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है। नतीजा यह निकला, क़िला इस लिए फ़तह नहीं हो रहा है कि मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है। सारे लश्कर को हुक्म दिया सब मिसवाक करो।

और हम मज़ाक़ उड़ा रहे हैं कि यह लकड़ियाँ मुँह में लेकर फिरते हैं, अब तो नया ज़माना है, अब तो ब्रश करना चाहिए, यह

तुम क्या मुँह में लकड़ियाँ लेते रहते हो तो ऐसों के साथ अल्लाह की मदद कैसे आएगी? मिसवाक की सुन्नत छूटने पर अल्लाह की मदद हट गई है कि तुम ने मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सुन्नत को हल्का समझा लिहाज़ा मेरी मदद तुम से दूर हो गई।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत दिल की गहराईयों में उतर जाए कि बस यह मेरे नबी का तरीक़ा है, मैं इसके ख़िलाफ़ नहीं करूंगा। इस सतह पर आना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। और इतना एहसान वह कर गए हैं या तो उन जैसा कोई मोहसिन लाओ फिर उनका तरीक़ा छोड़ दो या उन जैसा कोई क़ुर्बानी करने वाला लाओ फिर उनके तरीक़े छोड़ दो जाकर पूछो तो सही ओहद की वादी में कि यहाँ आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कैसे पत्थर पड़े थे। किस तरह काफ़िरों ने घेरे में ले लिया था और चारों तरफ़ से तलवारों की बारिश बरस रही थी और बड़े-बड़े जाँनिसारों के क़दम उखड़ चुक थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब्र की चट्टान बनकर खड़े हुए थे। एक पत्थर पड़ा मुँह पर और दाँत मुबारक टूट गए, कड़ियाँ गालों के अन्दर घुस गयीं। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े तो अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अबूबक्र! तुझे अल्लाह का वास्ता पीछे हट जा, यह इज़्ज़त मुझे लेने दे।

अब हाथ से निकालना मुश्किल हो रहा था तो अपने दाँतों से एक कड़ी को निकाला तो कड़ाक एक दाँत टूट गया, साथ ही कड़ी भी निकल गई। फिर दोबारा अपने मुँह में लिया और दूसरी को खींचा, दूसरा दाँत टूट गया, कड़ी बाहर निकल गई।

फिर तीसरी कड़ी को डाले। तीसरा दाँत भी टूट गया। कड़ी बाहर निकल आई। फिर चौथा दाँत टूट गया। अगले दोनों ऊपर नीचे के दाँत टूट गए। इसके बावजूद सहाबा फ़रमाते हैं कि इन दोनों दाँतों के टूटने से तो हुस्न अधूरा रह जाता है लेकिन हम देखते थे कि अबू उबैदा का हुस्न दोबाला हो गया था। ﴿ما را ينا احتم احسن ابى عبيده احتم﴾ जिसके अगले दो दाँत ऊपर नीचे के टूटे हों उसको अहतम कहते हैं तो आदमी यूँ हो जाता है। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु का हुस्न दोबाला हो गया। यह फिर इधर आ गए । अब्दुल्लाह बिन कमिया ने सिर पर तलवार मारी एक तलवार यहाँ पड़ी, एक महीने तक ज़ख़्म रहा। एक तलवार सिर पर पड़ी। उससे चकराकर गिर गए, गढ़े में बेहोश हो गए, यहाँ यह ख़बर मशहूर हो गई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हो गए। होश में आते ही पहला जुमला या अल्लाह इन्हें कुछ न कहना, उन्हें मेरा पता कोई नहीं।

या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना,

या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना, तलवारों की बारिश हो रही है (लेकिन दुआ कर कर रहे हैं कि) या अल्लाह! इन्हें अज़ाब न देना।

मौलाना इलयास रह० और फ़िक्रे उम्मत

मौलाना इलयास रह० ने जब मेवातियों में गश्त शुरू किया और वह मारते थे, गालियाँ देते थे। उलमा ने कहा मौलवी इलयास ने इल्म को ज़लील कर दिया क्योंकि काम वजूद में नहीं था किसी को पता नहीं था। उलमा कहते यह इल्म की ज़िल्लत है। मौलाना इलयास रह० ने कहा—

"हाय मेरा हबीब तो अबूजहल से मार खाता था मैं मुसलमान की मिन्नत करके ज़लील कैसे हो सकता हूँ। मैं तो इस अल्लाह के कलिमे के लिए ज़लील होकर इज़्ज़त हासिल करना चाहता हूँ कि अल्लाह के कलिमे के लिए ज़िल्लत भी इज़्ज़त है।"

यह ज़लील होना नहीं है यह इज़्ज़त वाला होना है।

उम्मत की मुहब्बत में काएनात के सरदार को पत्थर मारे जा रहे हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ख़ेमे में गए और उनसे बात की। उन्होंने कहा हमारा सरदार आ जाए फिर तेरे से बात करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठ गए इन्तिज़ार में बजला बिन कैस करशी क़ुरैशी नहीं बल्कि क़बीला क़शीर से था। बजला बिन कैस आया। उसने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा यह वही क़ुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं अल्लाह का नबी हूँ और कहता है कि मुझे पनाह दो, मैं अल्लाह का कलिमा पहुँचाना चाहता हूँ। उस ख़बीस ने पीछे से जो नेज़ा मारा और ऊँटनी

उछली आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उलट कर ज़मीन पर गिरे फिर भी ज़बान से बद्‌दुदआ नहीं निकली। लोग कहें कि क्यों ज़लील होत फिरते हो? अरे वह तो ऐसों के सामने गिरे लेकिन ज़बान से बद्‌दुआ नहीं निकली।

अबूजहल ने मारा लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से बद्‌दुआ के बोल नहीं निकले।

एक सहाबी कहते हैं कि मैंने देखा एक नौजवान है बड़ा ख़ूबसूरत और लोगों को दावत देता है। सुबह से चल रहा है और एक कलिमे की तरफ़ बुला रहा है। मैंने कहा कौन है? उन्होंने ने बताया क़ुरैश का नौजवान है जो बेदीन हो गया है।

﴿حتى انتفك النهار﴾ सुबह से वह आदमी बात करता करता करता यहाँ तक कि जब सूरज सिर पर आया एक आदमी ने उसके मुँह पर थूका। दूसरे गिरेबान फाड़ा, एक ने आकर सिर पर मिट्टी डाली, एक ने पत्थर मारा।

लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बर्दाश्त को देखा कि ज़बान से एक बोल बद्‌दुआ का नहीं निकाला। इतने में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो वह ज़ार व कतार रोते हुए आईं और प्याले में पानी लेकर जब बेटी को रोते देखा तो ज़रा आँखें नम हो गयीं हाय! कहा बेटी ﴿لا تخشى على ابيك الخيل﴾ कहा बेटी अपने बाप का ग़म न कर तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कलिमा ज़िन्दा होगा। वह सहाबी कहते हैं जो अभी काफ़िर थे बाद में मुसलमान हुए। मैंने कहा यह लड़की कौन है? उन्होंने कहा यह इसकी बेटी है। अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने इस दीन के ख़ातिर बेपनाह तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं हत्ता कि,

﴿حملوا على الاخشاء﴾ वह सूलियों पर लटक गए,

﴿ونشروا بالمناشير﴾ वह आरियों से चीर दिए गए।

और एक और हदीस में आता है,

﴿يمشط بامشاط الحديد ما دون لحميه وعظامه﴾

उनके गोश्त में कंघियाँ लोहे की ऐसे डालते थे फिर उनकी बोटियाँ उतार लेते थे, उन्हें कहते कि इस्लाम का कलिमा छोड़ दो। वे कहते नहीं छोड़ेंगे। उनकी बोटियाँ उतार देते थे।

कोई माँ इतना नहीं तड़पी जितना आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम तड़पे

तो मेरे भाईयो! कोई ऐसा मोहसिन लाकर दिखाए, कोई अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसा मोहसिन तो लाकर दिखाए जो इतना ज़्यादा रोए अपनी उम्मत के लिए कि अल्लाह तआला को रोकना पड़ा कि आप इतना क्यों रो रहे हैं? वह अल्लाह पूरी काएनात को कह रहा है ﴿وليبكوا كثيرا﴾ अल्लाह के सामने कसरत से रोया करो। वही अल्लाह अपने महबूब से कह रहा है ऐ मेरे प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरा इतना ज़्यादा रोना मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रहा। जैसे महबूब औलाद रोए तो माँ तड़प जाती है ऐसे ही अल्लाह पाक ने तड़पकर कहा:

﴿فلا تذهب نفسك ان لا يكونوا مومنين. (سورة الشعراء)

ऐ मेरे प्यारे नबी तुम क्यों रो रोकर अपने को हलाक कर रहे हो इनके पीछे, ये नहीं ईमान लाते तो न लाएं क्यों इतनी आहें

भरते हो? तेरी आहें तो अर्श को हिला देती हैं, क्यों इतनी हाय हाय करते हो?

कोई ऐसी हाय-हाय करने वाला तो दिखाए अगर दिखा सको तो उसी की मान लेना, मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़ देना।

जब ऐसे दर्द वाला कोई नहीं, जब ऐसी मुहब्बतें देने वाला कोई नहीं, जब रातों को उठकर ऐसा रोने वाला कोई नहीं, कि जिसकी घनी दाढ़ी हो और आँखों से आँसू टपककर दाढ़ी मुबारक को भर दें और ज़मीन पर आँसुओं का पानी टपक रहा हो और जो आँसू कमीज़ मुबारक को तर कर दें। कमीज़ मुबारक भी लठ्ठे की नहीं बल्कि सौफ़ की ऊनी जो किलो पानी तो वैसे ही पी जाए, फिर जो वह सज्दे में सिर रखता है तो यसरिब की पत्थरीली ज़मीन को भी आबाद कर देता है और ज़मीन पर आँसुओं के ढेर लगा देता है और कहता है कि या अल्लाह! यह तो तेरी नहीं मानेंगे मेरे आँसुओं की लाज रख ले।

कोई ऐसा दर्द वाला दिखाओ, कोई ऐसा रोने वाला, तड़पने वाला दिखा दे अगर कोई नहीं है तो फिर उसी की शरिअत रह गई आपको मज़ाक करने के लिए?

उम्मत के लिए पाँच घंटे फ़िक्र करने वाला कौन?

इस महबूब के तरीके को छोड़कर कहाँ भागना है? कोई माँ तो ऐसी लाओ जो इतना रोई हो जितना उम्मत के लिए आप रोए। कोई तो ऐसा दिखाएं जो अपनी औलाद के लिए इतना पिसा हो, जितना आप पिसे। कोई बाप तो दिखाओ जिसने पाँच

घंटे लगातार अपने बच्चों के लिए दुआ की हो। कोई माँ तो दिखाएं जिसने पाँच घंटे लगातार अपने बच्चों के लिए दुआ की हो और यह देखो मुहबूबे ख़ुदा अप्रैल का महीना है, आपके सिर के ऊपर तो छत पड़ी हुई है। कुछ न कुछ गर्मी तो रुकी हुई है। अरफ़ात का मैदान, अप्रैल का महीना और एक बजे से लेकर सूरज छिपने तक कोई छः घंटे के क़रीब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँटनी जैसी सवारी पर जिस पर कोई आराम नहीं, बैठे हुए हैं और अपनी उम्मत के लिए दुआ में लगे हुए हैं।

सूरज की चिलचिलाती धूप भी थक हारकर लौट गई और सूरज भी डूब गया पर महबूबे ख़ुदा की दुआएं ख़त्म नहीं हुई।

या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह! आने वाली नस्लों के लिए दुआएं कर दीं और न खाया न पिया, शक पड़ गया कि पता नहीं रोज़ा है।

उम्मे फ़ज़ल रज़ियल्लाहु अन्हा का अल्लाह भला करे उन्होंने दूध भेज दिया जो आपने अरफ़ात के मैदान में पिया। इसके अलावा कुछ नहीं पिया। इतनी लम्बी दुआएं न कोई माँ मांगे न कोई बाप मांगे। उसके तरीक़ों में हमें इज़्ज़त नज़र न आए, उसके तरीक़ों में हम अपनी नजात न समझें, तो फिर कहाँ जाएंगे?

जब उम्मत के लिए नालैन मुबारक ख़ून से रंगीन हो गयीं

एक कुत्ता एक रोटी खाकर दर नहीं छोड़ता। तू उसके एहसान भूल गया जो ताएफ़ में तेरे लिए लहूलुहान हो गया। ज़मीन रोने लगी। हदीस सुना रहा हूँ ज़मीन रो पड़ी, ताएफ़ के पहाड़ रो पड़े

जब उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पत्थर पड़ते देखे। अल्लाह भी देख रहा है।

ऐसी महबूब हस्ती, ऐसी मुक़द्दस हस्ती हाय! कहाँ से उन अल्फ़ाज़ को लाऊँ उनकी ज़ात को बयान करने के लिए मैं तो छोटा सा तालिब इल्म हूँ, मेरे पास तो कुछ नहीं।

अल्लाह! तूने किसके हवाले कर दिया, ﴿اليك اشكوا﴾ मैं और किसी से कुछ नहीं कहता, तुझ से गिला ज़रूर करता हूँ ﴿نوبت بایں جا رسید﴾ यहाँ तक मामला पहुँचा लेकिन इतने दुख दर्द के बाद उम्मत के लिए बद्दुआ का हाथ नहीं उठाया। फ़रिश्ते आ गए थे बताइए इनको पीसकर सुरमा बना दें? नहीं नहीं! यह नहीं तो इनकी नस्ल शायद ईमान वाली बन जाए।

आपने उम्मत के लिए पेट पर पत्थर बाँधे, पेवन्द लगे कपड़े पहने, तीन चार दिन घर में कुछ खाने को नहीं, दो दो महीने चूल्हा नहीं जलता और इसके बावजूद अपनी उम्मत के लिए सारी सारी रात रो रहे हैं और अपनी उम्मत के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं और हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मुझे छोड़कर मुसल्ले पर तशरीफ़ ले जाते। एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए और चुपके से वापस चले गए तो मुझे ख़्याल आया कि मुझे छोड़कर किसी और बीवी के पास चले गए। मुझे ग़ैरत आई तो उनके पीछे चली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की तरफ़ जा रहे हैं और जन्नतुल बक़ी की तरफ़ जा रहे हैं। जन्नतुल बक़ी में जाकर दुआएं मांग रहे हैं और मैं पीछे खड़ी हो गई। जब दुआ से फ़ारिग़ होकर पीछे देखा तो फ़रमाया ऐ आएशा! तू यहाँ कैसे? मैंने कहा या रसूलल्लाह! मुझे ख़्याल आया कि आप मुझे छोड़कर किसी और बीवी के पास चले गए। तो फ़रमाया आएशा! नबी

बनकर कोई ख़्यानत नहीं कर सकता। मैं तो अपनी उम्मत के लिए दुआ करने आया था। रातों को छोड़कर अपनी उम्मत के पास आते हैं।

मौत के वक़्त भी उम्मत की फ़िक्र

ऐ मेरे भाईयो! जो इतनी वफ़ाएं कर गया कि मौत पर भी उम्मत को याद किया। मौत का पैग़ाम आया। इज़राईल अलैहिस्सलाम ने दस्तक दी। जिब्राईल अलैहिस्सलाम अन्दर आते हैं या रसूलल्लाह! इज़राईल अन्दर आ जाएं? इजाज़त हो तो अन्दर आ जाएं? कहा आ जाएं। अन्दर आए या रसूलुल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब से मुझे मौत का काम मिला है मैंने किसी से इजाज़त नहीं ली न आइन्दा किसी से लूँगा। आपके बारे में आपके रब का इर्शाद है कि मेरा हबीब इजाज़त दे तो अन्दर जाना नहीं तो वापस चले आना। या रसूलल्लाह जब से मुझे मौत का काम मिला अल्लाह तआला ने किसी को इख़्तियार नहीं दिया और न आइन्दा किसी को देंगे। आपके बारे में आपके रब का इर्शाद है कि आपको इख़्तियार है ﴿عش ماشئت﴾ जब तक आप ज़िन्दा रहना चाहें आप रह सकते हैं और चलना चाहें तो अल्लाह भी आपकी मुलाक़ात चाहते हैं। अब आप जो फ़रमाएं मैं वैसे करूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया जाओ मेरे रब से पूछकर आओ कि मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा? मैं फिर जवाब दूँगा। औलाद का नहीं पूछा, उम्मत का पूछा मेरा और आपका पूछा जो हम सारा दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों को

ज़िक्र करते हैं। जाओ सुपर मार्केट की हर दुकान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी का जनाज़ा लिए बैठी है। इस्लामाबाद के हर घर में जाकर देखो, सारे पाकिस्तान के घरों में जाकर देखो सिवाए कुछ घरों को छोड़कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी के लाशें पड़े हुए हैं जो मरते वक़्त भी नहीं भूला ऐ जिब्राईल! जा मेरे रब से पूछ कर आ। मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा? फिर जवाब दूँगा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम वापस गए जवाब लेकर आए या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह कह रहा है आपकी उम्मत को अकेला नहीं छोड़ेंगे, साथ लेंगे। कहा बस अब मेरी आँखें ठंडी हैं ऐ अल्लाह! मुझे अपने पास बुला और मेरा निगहबान बन जा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम रोने लगे,

या रसूलल्लाह! अगर आपने मौत को पसन्द कर लिया है तो मेरा भी आज इस दुनिया में आख़िरी दिन है। आज के बाद "वही" का ज़माना ख़त्म होगा। यहाँ नहीं भूले हैं। क़ब्र से निकले हैं। हश्र का मैदान है माँ-बाप भूल चुके हैं आप नहीं भूले। पुलसिरात पर चलते हुए क़दम डगमगा रहे हैं और आप पुलसिरात का पाया पकड़कर कह रहे हैं या रब! मेरी उम्मत पार लगा दे, ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत पार लगा दे। आपके लिए मिम्बर लाया जाएगा। क़यामत के मैदान में इर्शाद होगा ऐ मेरे नबी मिम्बर पर बैठो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं नहीं बैठूँगा, क्यों? इस डर से कि कहीं यह मिम्बर मुझे जन्नत में ले जाए और मेरी उम्मत मेरे बग़ैर पीछे रह जाए तो मैं क्या करूँगा। मैं मिम्बर

पर सिर्फ़ हाथ रखूँगा, बैठूँगा नहीं ताकि अल्लाह तआला का हुक्म पूरा हो जाए, मिम्बर पर हाथ रखा है, पाँव ज़मीन पर हैं, नज़र उम्मत पर है कि ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत का हिसाब मेरी उम्मत का हिसाब मेरी उम्मत को पार लगा दे।

﴿واٰخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین۔﴾

O O O

अल्लाह से दोस्ती

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मुहब्बत के आदाब

मेरे भाईयो! मुहब्बत के कुछ उसूल और आदाब होते हैं अगर इसको नहीं जाना तो फिर मुहब्बत आगे बढ़कर तकलीफ़ में बदल जाती है तो अल्लाह की क़ुदरत और फ़ैसलों पर सिर झुकाना पड़ता है। इन्सान अपने पिछले हालात से तो मुँह नहीं मोड़ सकता। गुज़रे ज़माने की यादें आदमी कितना ही नज़रअन्दाज़ करता रहे कुछ हवाएं ऐसी होती हैं जो ज़रूर याद ताज़ा करा देती हैं। अच्छे दिन गुज़रें हैं तो ठंडी हवाएं आती हैं बुरे दिन गुज़रे हैं तो गर्मी के झोंके महसूस होते हैं।

चार महीने के आख़िर में जब पेशावर के एक लड़के ने मुझे मदरसे में दाख़िल होने की तर्ग़ीब दी। मैंने राइविन्ड के बुज़ुर्गों से बात की। उन्होंने ने कहा हमारे बड़े बुज़ुर्ग भाई अब्दुल वह्हाब मर्दान गए हुए हैं। उनसे पूछकर हम फ़ैसला करेंगे। ऐसा वक़्त कभी नहीं आया था कोई जान पहचान नहीं थी।

शुक्र की कसरत के ईनाम

15, 16 फ़रवरी सन् 1972 ई० तहज्जुद के वक़्त निकला और यहाँ इशा पर पहुँचा। सारे रास्ते आज जैसा मौसम, सर्दी बहुत शदीद थी। इधर एक मस्जिद है वहाँ एक क़ाफ़िला चलाया था बुज़ुर्गों ने। मैं जब पहुँचा तो भाई अब्दुल वह्हाब साहब बयान फ़रमा रहे थे। मौलाना हबीबुल हक़ साहब तर्जुमा फ़रमा रहे थे। मुझे इस तरफ़ जगह मिली। मुझे कोई जानता नहीं था, कोई आशनाई नहीं थी। शुक्र के लिए यह वाक़िआ बता रहा हूँ तकब्बुर के लिए नहीं क्योंकि ﴿واما بنعمت ربك فحدث﴾ यह भी अल्लाह तआला ही का इर्शाद है कि अपने रब की नेमतों को बयान करो, शुक्र की कैफ़ियत बढ़ती है। इसी बरकत से एक हदीस बड़े ज़माने के बाद याद आई।

﴿اهل الشكر اهل الزيادة﴾ जो मेरा शुक्र करते हैं मैं ज़्यादा कर देता हूँ,

﴿اهل طاعتى اهل كرامتى﴾ जो मेरी इताअत करते हैं उनको इज़्ज़त देता हूँ,

﴿اهل ذكرى اهل مجالستى﴾ जो मुझे याद करते हैं मैं उन्हें याद करता हूँ, मेरी मज्लिसों में उनका ज़िक्र होता है और,

﴿اهل معصيتى اهل رحمتى﴾ अपने से ना उम्मीद और अपने नाफ़रमानों को भी ना उम्मीद नहीं करता,

﴿ان تابوا فانا حبيبهم﴾ वह तौबा करें तो मैं उनका महबूब हूँ,

﴿ان لم يتوبوا فانا طبيبهم﴾ तौबा न करें तो उनका तबीब हूँ, डाक्टर हूँ, सर्जन हूँ।

मैं (मौलाना तारिक़ जमील) आलिमे दीन कैसे बना?

हमारे सारे ज़मींदार रिश्तेदार इकठ्ठे हुए कि तू मौलवी बनेगा ज़लील हो जाएगा। डाक्टर बनेगा तो बड़ी इज़्ज़त होगी। सारा ख़ानदान मुझे समझा रहा था। तुझे पूछेगा कौन? तुझे रोटी कौन खिलाएगा? तू डाक्टर बनेगा बड़ी इज़्ज़त होगी, शोहरत होगी। अल्लाह का अजीब निज़ाम है जो चाहे करे। यही तो हम सीख रहें हैं तबलीग़ में कि जो कुछ करता है वह अल्लाह करता है।

दूसरा वाक़िआ यह हुआ कि मुझे ऐसा दर्द उठा कि ज़िन्दगी में कभी नहीं हुआ। यह भी मरदान में हुआ। मज़े की बात है कि इतनी मुशक़्क़त उठाकर मैं मरदान पहुँचा मगर फिर भी अब्दुल वह्हाब साहब ने कहा कि इसको दाख़िला नहीं देना।

और जब मैं रात को सो रहा था तो मुझे सारी रात पिस्सुओं ने काटा। मैं सुबह को अब्दुल वह्हाब साहब के पास फिर गया और उन्हें कहा कि आप हाँ करें तो मैं वापस जाऊँ।

अब्दुल वह्हाब साहब मुझे ज़बरदस्ती चार सद्दा तक ले गए शाम को मैंने फिर भाई अब्दुल वह्हाब साहब से कहा आप मुझे

इजाज़त दे दें ताकि मैं वापस जाऊँ तो मौलाना जमशेद साहब कहने लगे इसको इजाज़त न देना, यह मुझे जज़्बाती नज़र आता है। कहीं यह भाग न जाए। इतना सफ़र भी किया और इंकार भी हो गया। फिर अगले साल मुझे दाख़िला दिया। वह भी एक साल लगातार मेहनत करने के बाद दिया।

सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला नबी

अल्लाह का निज़ाम है, अल्लाह जब किसी चीज़ को हलाक करना चाहता है तो बड़ी दूर तक कहानी चलाता है। फ़िरऔन को जब हलाक करना चाहा तो मूसा अलैहिस्सलाम को दावत देने के लिए भेजा। मूसा अलैहिस्सलाम तक किसी नबी ने तलवार नहीं उठाई थी। मूसा अलैहिस्सलाम तक अल्लाह बराहे रास्त अज़ाब भेजता था और क़ौमों को तबाह करता रहता था।

सबसे पहला नबी ﴿اول من قاتل فی سبیل اللہ یوشع﴾ पहला नबी जिसने सबसे पहले अल्लाह के रास्ते में क़िताल किया वह यूशा अलैहिस्सलाम हैं तो आदम अलैहिस्सलाम से लेकर मूसा अलैहिस्सलाम तक तलवार नहीं चली बल्कि अल्लाह का सीधा अज़ाब आया ﴿ومن هم اغرقنا﴾ किसी पर पत्थरों की बारिश, किसी को ज़मीन में धंसाया, किसी पर फ़रिश्ते की चीख़, किसी को पानी में ग़र्क़ फ़रमाया; यह अल्लाह तआला ने पिछली क़ौमों के साथ मामले का दस्तूर बताया। जब तौरात आई तो तौरात की बरकत से यह किया कि बराहे रास्त उमूमी अज़ाब को हटाया और अहले ईमान को आगे किया।

अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत

यह ज़मीन व आसमान का निज़ाम एक क़ानून के तहत चल रहा है। हमारी ज़मीन की रफ़्तार 66 हज़ार किलोमीटर फ़ी घंटा है, 18 किलोमीटर फ़ी सेकेंड सफ़र करती है और हर सेकेंड यानी हर 18 किलोमीटर के बाद यह दो अशारिया आठ मिलीमीटर सूरज से दूर हो जाती है। अगर यह दो अशारिया आठ के बजाए दो अशारिया पाँच या तीन अशारिया एक सूरज से क़रीब या दूर हो जाए अगर यह फ़ासला रोज़ाना होने लग जाए तो कुछ दिनों में सारी काएनात आपस में टकरा जाएगी।

इस काएनात पर अल्लाह का इतना ताक़तवर क़ानून लागू है, जिसमें अल्लाह तआला ने किसी से मदद नहीं ली बल्कि अपनी ज़ाती क़ुव्वत से वह इस सारे निज़ाम को चला रहा है।

मेरे भाईयो! अल्लाह कहता है इसमें ग़ौर तो करो इस ज़मीन को किसने बनाया है? यह सारी ज़मीन गिलगित के पहाड़ों की तरह होती तो यह ज़िन्दगी कितनी मुश्किल हो जाती और यह सारी ज़मीन रेत के रेगिस्तान की तरह होती तो भी ज़िन्दगी कितनी मुश्किल हो जाती।

फिर हमने तुम्हारी आसानी के लिए पानी को मीठा भी बनाया और नमकीन भी और इन दोनों के बीच अल्लाह का ग़ैबी पर्दा है। अल्लाह की क़सम ये दोनों पानी दाएं बाएं चलते हैं, आपस में नहीं मिलते एक नहीं होते। दोनों अल्लाह के हुक्म के मुहताज हैं। पानी को हुक्म होता है कि तू इधर नहीं जा सकता अगर अल्लाह पानी को यह हुक्म न देता तो पूरी ज़मीन पर एक बूँद मीठा पानी

किसी को नसीब नहीं होता तो अल्लाह इन आयतों में इस काएनात का क़ानून बतला रहे हैं कि यह काएनात मेरे हुक्म के ताबे चलती है। आसमान को बुलन्दी उसके इरादे से नहीं मिली बल्कि ﴿والسماء رفعها﴾ आसमान को हमने बुलन्द किया, पहाड़ों की सख़्ती उसकी अपनी ताक़त नहीं, पानी का बहना यह उसकी अपनी ताक़त नहीं और फलों में रस आ जाना यह उसकी ज़ाती ताक़त नहीं और उसकी टहनी टहनी अलग अलग लटक जाना यह हमारे हुक्म से है ﴿فانبتنا فيها حدائق الخ﴾

पानी के करिश्मे

इन सब फलों की ख़ूबसूरती, इनका रंग, इनकी मिठास यह अल्लाह के क़ब्ज़े क़ुदरत में है। एक को अल्लाह तआला ने कड़वा बना दिया। इसी में से फल को निकालकर मीठा बना दिया, एक पत्ते पर काँटे लगाए और फिर उसी में फूल को भी निकाला और उसके अन्दर ख़ुशबू को डाला, रंग को डाला। एक ही पानी का क़तरा है मैं उसको मुँह में डालता हूँ तो पेशाब बन जाता है, इसी क़तरे को शहद की मक्खी के मुँह में डाला तो वह शहद बन गया, इसी क़तरे को साँप के मुँह में डाला तो वह ज़हर बन गया, इसी क़तरे को सदफ़ के मुँह में डाला तो वह मोती बन गया, इसी क़तरे को रेशम के कीड़े में डाला तो वह रेशम बन गया, इसी क़तरे को गाय ने पिया तो वह दूध बन गया, हिरनी ने पिया तो मुश्क बन गया, अनार ने पिया तो एक एक दाना ख़ूबसूरत शक्ल में सजकर धजकर आपके सामने आ गया। कोई है जो किसी फल को अनार जैसा रंग दे दे? बिखरे हुए दानों को ख़ूबसूरत खोल में

निफ़ासत और सलीक़े से जमा कर सके? और फिर इसमें पर्दे लगा दे? हर अनार के दाने में जन्नत के पानी का एक क़तरा होता है। इस एक फल को हर बीमारी के लिए शिफ़ा बना दिया। यह अल्लाह का निज़ाम है जिसमें कोई शरीक नहीं।

कोई है मेरे जैसी क़ुदरत वाला?

न कोई उसका मुशीर है न कोई उसका वज़ीर है न उसका कोई बदल है न कोई उसका वारिस है, ﴿لم يلد ولم يولد، لم يتخذه صاحبة ولا ولدا﴾ न उसकी कोई बीवी न उसका कोई बेटा है, वह अपनी ज़ात में तने तन्हा है, ﴿الله لا اله الا هو﴾ अकेला है, कैसा अकेला है? ﴿الحي﴾ ज़िन्दा है उसको ज़िन्दगी के लिए रोटी की ज़रूरत नहीं, पानी की ज़रूरत नहीं, हवा की ज़रूरत नहीं, जगह की ज़रूरत नहीं, मकान की ज़रूरत नहीं, ज़माने की ज़रूरत नहीं। वह अपनी ज़ात में क़ायम है, न वह खाता है न वह हँसता है न वह ऊँघता है न वह थकता है न वह घबराता है न वह ग़ाफ़िल होता है न वह कमज़ोर होता है।

पूरा क़ुरआन अल्लाह की मुहब्बत भरी बातों से भरा हुआ है। हम पढ़ें तो सही। ज़मीन व आसमान का बादशाह हम से मुख़ातिब है ﴿فاين تذهبون﴾ ऐ मेरे बन्दो! कहाँ जा रहे हो? जैसे माँ से बच्चा बिगड़ जाए और भाग जाए तो माँ उसे कहती है बेटे तू कहाँ जा रहा है? अल्लाह तआला उससे लाखों करोड़ों गुना ज़्यादा मुहब्बत के साथ कह रहा है,

﴿فاين تذهبون﴾ ऐ मेरे बन्दो! कहाँ जा रहे हो?

﴿يا عبادى﴾ ऐ मेरे बन्दो! जैसे माँ कहती है ऐ मेरे बेटे! इसी

तरह ही है। कहती है बेटा! ऐ अब्दुर्रहमान! यह भी तो कह सकती है। मेरा बेटा! मेरा बच्चा! मेरे बेटे! अल्लाह तआला कहता है ﴿يٰعبادى﴾ ऐ मेरे बन्दो! सबको कहा है मुसलमानों को नहीं कहा ﴿يٰعبادى﴾ जो शराबी है तो यह भी मेरा बन्दा है, जो ज़िना कर रहा है वह भी मेरा बन्दा है, यह जो क़त्ल कर रहा है यह मेरा बन्दा है, डाके डाल रहा है, ज़ुल्म का बाज़ार गर्म कर दिए और ज़मीन में आग लगा दी वह भी मेरा है ﴿يٰعبادى﴾ ऐ मेरे बन्दे! ﴿يٰعبادى﴾ जो सज्दों में पड़े हैं तुम भी मेरे हो, जो रातों को रो रहे हो तुम भी मेरे बन्दे हो, जो रातों को नाच गाने कर रहे हो तुम भी मेरे बन्दे हो जो हलाल कमाईयों में पिस रहे हो तुम भी मेरे बन्दे हो, जो हराम खा रहे हो तुम भी मेरे हो, लिहाज़ा ﴿يٰعبادى﴾ ऐ मेरे बन्दो!

﴿الذين اسرفوا على انفسهم﴾ जिन्होंने अपनी ज़िन्दगियों को गुनाहों में डुबो दिया है, उनके दामन में कोई सफ़ेद नुक़्ता नहीं है बल्कि सारा दामन काला हो चुका है, दिल भी वजूद भी, कपड़े भी, ज़िन्दगी भी जिन्होंने अपनी ज़िन्दगियों को काला कर दिया है तो यह सोचो ना उम्मीद न हो तुम मेरे हो ﴿لا تقنطوا من رحمة الله﴾ मेरी रहमत से ना उम्मीद न होना ﴿ان الله يغفر الذنوب جميعا﴾ जब तुम तौबा करोगे मैं तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दूँगा ﴿انه هو الغفور الرحيم﴾ इसलिए कि मैं गफ़ूरुर्रहीम हूँ।

बन्दों के दिलों में मेरी मुहब्बत बिठा दो

अल्लाह तआला दाऊद अलैहिस्सलाम से फ़रमा रहे हैं कि जाओ,

﴿حبب الناس الی وحببنی الی الناس﴾

ऐ दाऊद! जा लोगों के दिल में मेरी मुहब्बत बिठा। कहा या अल्लाह! तेरी मुहब्बत कैसे बिठाऊँ?

कहा ﴿بالائی ونعمائی وبلائی﴾ मेरी नेमतें बता, मेरे एहसान बता, मेरी रहमत बता, मेरे फ़ज़ल बता, मेरी पकड़ बता, खुद ही लोग मुझसे मुहब्बत करेंगे,

احق من ذكر احق من عبد عر عفا من ملك اجود من
انل اوسـاء مـن اعـطـاء الملك لا شريك لا وزير لا
مشـيـر لا معين لا ناصر له لم يتخذه صاحبة ولا ولدا.

याद में तेरी सब को भुला दूँ

याद करना हो तो अल्लाह, इबादत करनी हो तो अल्लाह, कोई देने वाला है तो अल्लाह, उससे ज़्यादा मेहरबान कोई नहीं, उससे बड़ा सख़ी कोई नहीं, उससे बड़ा कोई देने वाला नहीं, वह बादशाह है जिसका कोई शरीक नहीं, जिसका कोई वज़ीर नहीं, जिसका कोई मुशीर नहीं, जिसका कोई मददगार नहीं, जिसकी कोई बीवी नहीं, जिसका कोई बेटा नहीं,

﴿لم يكن له شريك فى الملك ولم يكن له ولى من الذل﴾

जिसका कोई शरीक नहीं मुल्क में और न ही है कोई मदगार ज़िल्लत के वक़्त।

मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ

जब नाफ़रमानियाँ होती हैं तो समुंद्र पूछते हैं कि ऐ अल्लाह

﴿حبب الناس الی وحبنی الی الناس﴾

ऐ दाऊद! जा लोगों के दिल में मेरी मुहब्बत बिठा। कहा या अल्लाह! तेरी मुहब्बत कैसे बिठाऊँ?

कहा ﴿بالائی ونعمائی وبلائی﴾ मेरी नेमतें बता, मेरे एहसान बता, मेरी रहमत बता, मेरे फ़ज़्ल बता, मेरी पकड़ बता, ख़ुद ही लोग मुझसे मुहब्बत करेंगे,

احق من ذکر احق من عبد عرعفا من ملك اجود من
انل اوساء من اعطاء الملك لا شريك لا وزير لا
مشير لا معين لا ناصر له لم يتخذه صاحبة ولا ولدا.

याद में तेरी सब को भुला दूँ

याद करना हो तो अल्लाह, इबादत करनी हो तो अल्लाह, कोई देने वाला है तो अल्लाह, उससे ज़्यादा मेहरबान कोई नहीं, उससे बड़ा सख़ी कोई नहीं, उससे बड़ा कोई देने वाला नहीं, वह बादशाह है जिसका कोई शरीक नहीं, जिसका कोई वज़ीर नहीं, जिसका कोई मुशीर नहीं, जिसका कोई मददगार नहीं, जिसकी कोई बीवी नहीं, जिसका कोई बेटा नहीं,

﴿لم يكن له شريك فی الملك ولم يكن له ولی من الذل﴾

जिसका कोई शरीक नहीं मुल्क में और न ही है कोई मदगार ज़िल्लत के वक़्त।

मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूँ

जब नाफ़रमानियाँ होती हैं तो समुंद्र पूछते हैं कि ऐ अल्लाह

डुबो दें?

﴿ما من يوم الا والبحر يستاذن به ان يغرق ابن آدم﴾

हर रोज़ समुंद्र अल्लाह तआला से इजाज़त मांगता है कि बनी आदम को डुबो दूँ? और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

ان الذى امرت البحار ففتحت قولى تاتى
الامواج بامثال الجبال البستهالباس ماذالذى

मैंने समुंद्रों को हुक्म दिया और समुंद्रों ने मेरे हुक्म को माना, उसकी मौजें पहाड़ों की तरह आती हैं मगर मैंने उनकी एक हद तय कर दी है। उस तयशुदा हद पर आकर मैं उनको लिबास पहनाता हूँ और वे वहीं टूट जाती हैं। लोगों को डुबोती नहीं वरना एक समुंद्र सातों बर्रेआज़मों को निगल सकता है फिर,

﴿والارض تستاذن فى ان تبتلعه﴾

ज़मीन इजाज़त मांगती है कि हम इनको उलट दें? फ़रिश्ते इजाज़त मांगते हैं कि या अल्लाह इजाज़त हो तो हलाक कर दें? तेरा खाकर तेरी नाफ़रमानी कर रहे हैं।

आपने पन्द्रह सौ का नौकर रखा अगर ड्यूटी नहीं देता तो पिटाई शुरू कर देते हैं। और इतने बड़े वजूद को अता करके ज़मीन व आसमान को क़ाबू में करके वह इतना भी नहीं कह सकता कि मेरी इताअत करो। मेरी बात मानो। फिर भी इतना बड़ा ज़र्फ है कि ज़मीन, पानी, फ़रिश्ते जब बोलते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है,

﴿دعا عبدى فانا اعلم بعبدى اذانشاته بيدى﴾

मेरे बन्दे को छोड़ दो तुम मेरे बन्दे को नहीं जानते मैंने उसे हाथों से पैदा किया है।

﴿ان كان عبد كم فشانكم به وان كان عبدى فمنى وبين عبدى﴾

अगर यह तुम्हारा बन्दा है तो मार दो और अगर मेरा बन्दा है तो यह मेरा और उसका मामला है और मैं इसकी तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूँ,

﴿ان اتانى نهارا قبلته وان اتانى ليلا قبلته﴾

जब कभी तौबा करेगा दिन में या रात में तो मैं इसकी तौबा कबूल करूँगा। और अल्लाह भी कैसा सख़ी बादशाह है तौबा करने वाले को कहा ﴿فاولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات﴾ उसके साथ ले लें। उसको अपना बना लें और वह सबका बनने को तैयार है। अल्लाह काले, गोरे मर्द, औरत सबसे मुहब्बत का ऐलान कर चुका है,

يادائود لو يعلمون المدبرون عنى ما عندى
من الاشواقالله لتقطعت اوسانهم

ऐ दाऊद! अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ तो उनके जोड़ जुदा हो जाएं। इस बात को सुनकर ऐसा वज्द तारी हो कि उनके जोड़-जोड़ जुदा हो जाएं। ऐ दाऊद! जब नाफ़रमानों के लिए यह हाल है तो बता फ़रमांबरदारों से मेरी मुहब्बत कैसी होगी?

यह बात अलग है कि कभी आज़माने के लिए हालात ले आता हूँ। यह बात अलग है लेकिन फिर भी मैं अपने बन्दे से मुहब्बत करता हूँ।

लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत उतारें अल्लाह की रहमत बताकर, करम बताकर, फ़ज़्ल बताकर, उसकी बख़्शिश बताकर ﴿ياداؤد بشر المذنبين﴾ ऐ दाऊद! जा मेरे नाफ़रमानों को बशारतें सुना। नाफ़रमानों को कौन बशारतें सुनाता है?

या अल्लाह नाफ़रमानों को क्या बताऊँ? कहा जा उनको बता ﴿لايتعازم على ذنب ان اغفره﴾ तुम्हारा बड़े से बड़ा गुनाह मेरे नज़दीक कोई हैसियत नहीं रखता। तुम तौबा करो मैं सारे गुनाह माफ़ कर दूँगा। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿تصافنی اصافيك﴾ मुझसे साफ़ रख देख मैं कैसे साफ़ तअल्लुक़ रखता हूँ। ﴿تعرض عنی وانا مقبل عليك﴾ तु मुँह मोड़ जा मगर मैं फिर भी तुझे बुलाता रहूँगा, आजा! आजा!

﴿من تقرب الی تلقيته من بعيد﴾ जो मेरी तरफ़ चलता है मैं आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल करता हूँ,

﴿سمعه التی يسمع بها﴾ ऐ मेरे बन्दे! जब तू मेरे ज़्यादा क़रीब होता है मैं तेरे कान बन जाता हूँ जिससे तू सुनता है,

﴿وعينه التی يبصر بها﴾ मैं तेरी आँख बन जाता हूँ जिससे तू देखता है,

﴿ويده التی يبطش بها﴾ मैं तेरे हाथ बन जाता हूँ जिससे तू पकड़ता है,

﴿ورجله التی يمشی بها﴾ मैं तेरे पाँव बन जाता हूँ जिससे तू चलता है।

इतना ऊँचा मक़ाम यह अल्लाह की बारगाह में लेता है कि ज़िब्राईल भी उसकी गर्द को देखते रह जाता है यह "ला इलाहा" में सब कुछ छिपा हुआ है।

माबूद तू ही है, महबूब तू ही है, मतलूब तू ही है

यह इक़रार मअरफ़त, यह इक़रार अब्दियत, यह इक़रार तौहीद। सबसे कटकर अपनी सवारी को अल्लाह की तरफ़ फेर दें।

﴿تركتها وليلى وسعدآء بمعزل.﴾

मैंने छोड़ दिया लैला को, मैंने छोड़ दिया सअदा को,

﴿وعدت الى مسحوب اول منزل﴾

और मैं अपने पहले महबूब की तरफ़ लौट गया,

﴿فنادت بها الاشواق منها فهذه منازل من تحوى رويدك فانزل﴾

तो मेरे शौक़ ने पुकारा कि रुक जा, थम जा, ठहर जा, सामान रख दे। तेरी मंज़िल आ गई, तेरे महबूब का घर आ गया।

हदीसे क़ुदसी है,

﴿عبدى انت تريد وانا اريد ولا يكون الا ما اريد.﴾

ऐ मेरे बन्दे तेरा इरादा एक तेरे रब का इरादा जो तुम चाहते हो अल्लाह के बग़ैर नहीं हो सकता।

हम वह करें जो अल्लाह चाहता है

जो अल्लाह चाहता है तुम्हारे बग़ैर वह कर लेता है।

﴿فان سلمت لى فيما اريد كفيتك فيما تريد.﴾

तो मेरे साथ मुआहिदा करो, दुनिया में जो मैं चाहता हूँ वह तुम करो फिर जो कुछ तुम कहोगे होता चला जाएगा।

﴿كفيتك فيما تريد﴾ तेरा रब खुद आकर तेरी तरफ़ से मददगार बन जाएगा,

﴿وان لم تسلم فيما اريد﴾ अगर तूने वह न किया जो मैं चाहता हूँ,

﴿اتعبتك فيما تريد ولا يكون الا ما اريد.﴾

तो फिर तू अपनी हाजतों में धक्के खाएगा। होगा वही आख़िर जो अल्लाह चाहेगा, कुछ भी नहीं बन सकेगा अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत करके।

﴿خلقت الاشياء لا جلك﴾ ऐ मेरे बन्दे सारा जहाँ तेरे लिए है,

﴿وخلقتك لا جلی﴾ और तू मेरे लिए है लिहाज़ा मेरी मानकर चल।

हमें भाई आप की ख़िदमत में दो तीन बातें करनी हैं। उनमें से पहली बात मैंने पूरी की है कि हम अल्लाह की मानने वाले बनें। वह न मानें जो मेरा जी चाहता है, वह मानें जो अल्लाह चाहता है। आप लोग हुकूमत की मानते हैं तो आपको तंख़्वाह मिलती है ना और अगर आप हुकूमत की मानना छोड़ दें तो हुकूमत वाले निकाल देंगे और जब आप अल्लाह की मानेंगे तो अल्लाह तो से ज़्यादा ग़ैरत वाला है। जब आप अल्लाह की मानेंगे तो अल्लह ग़ैबी ख़ज़ाने आप के लिए खोलेंगे। हुकूमत आपके लिए ग़ैरत खाती है तो जब आप अल्लाह के सिपाही बनेंगे तो अल्लाह आपके लिए ग़ैरत खाएगा। अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम आपके लिए हरकत में आएगा।

गुनाहों के पहाड़ बख़्शिश का सैलाब

मेरे दोस्तो! वहाँ ऐसा मामला नहीं है बल्कि हदीसे क़ुदसी है,

﴿يا ابن آدم لو بلغت ذنوبك عند السماء﴾

ऐ मेरे बन्दे! तू इतने गुनाह करे कि सारी ज़मीन भर जाए, फिर ख़ला भर दे, आसमान तक तेरे गुनाह चले जाएं, इतने गुनाह करने के लिए कितनी ज़िन्दगी चाहिए? करोड़ों साल भी थोड़े हैं इतने गुनाह करने के लिए तो अल्लाह क्या कह रहा है? तुझे इतनी ज़िन्दगी दूँ, इतने असबाब दूँ, इतनी ढील दूँ, कि तू इतने गुनाह करे कि ज़मीन भर जाए, समुंद्र भर जाए, पहाड़ों के ऊपर चले जाएं, सूरज काला हो जाए, चाँदनी कहीं चली जाए, सितारों

में भी गुनाह भर जाएं और ख़ला में भी भर जाएं और आसमान की छत के बराबर जाकर तेरे गुनाह लग जाएं तो कितने करोड़ों साल होंगे और कितना बड़ा मुजरिम होगा, अल्लाह कहता है कि तू सिर्फ़ एक बोल बोल दे कि या अल्लाह माफ़ कर दे तो मैं तेरे सारे गुनाह माफ़ कर दूँगा मुझे कोई परवाह नहीं ﴿غفرت لك ولا ابالی﴾, हमारा मामला भी किसी दुनियादार बादशाह से नहीं किसी थानेदार से नहीं सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह करीम ज़ात से है। अल्लाह की सिफ़ात की कोई हद नहीं।

रहमत भरी इबादत

अहले इल्म दो सिफ़तों से अल्लाह की तारीफ़ लिखते हैं क़हर और ग़ज़ब।

यूँ समझ लीजिए कि क़ह्हार और ग़फ़्फ़ार दो सिफ़ाती नाम अल्लाह की सारी सिफ़ात को घेरे में डालती हैं।

ग़ज़ब करने वाला, गुस्सा करने वाला, करम करने वाला, फिर अल्लाह तआला ने इन दिनों सिफ़तों का ख़ुद मुक़ाबला कर डाला। अर्श के ऊपर बड़ी तख़्ती है उसकी लम्बाई चौड़ाई अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता तो अल्लाह पाक ने ख़ुद अपने इरादे से उस पर लिखा हुआ है:

﴿ان رحمتی سبقت غضبی﴾ मेरी रहमत मेरे गुस्से से आगे है।

यह ज़िंदगी अल्लाह की इताअत में गुज़ारी तो काम बन गया, अल्लाह की नाफ़रमानी में गुज़ारी तो काम बिगड़ गया। अल्लाह तआला ने जिस तरह हमें मौत में इख़्तियार नहीं दिया अपनी बक़ा में भी इख़्तियार नहीं दिया। मर्द और औरत होने में इख़्तियार नहीं

दिया, इसी तरह ज़िन्दगी का मक़सद अपने तौर पर चुनने में अल्लाह तआला ने इख़्तियार नहीं दिया। अल्लाह तआला ने ख़ुद मक़सद तय किया है कि मेरे बन्दो! मुझे राज़ी करके आओ, मेरे बनकर आओ।

﴿وما خلقت الجن والانس الا ليعدون﴾ मुझे रब मानकर आओ, मेरी बन्दगी करते हुए मेरे पास आओ। दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया

﴿يا ابن آدم خلقت لعبادتی فلا تلعب﴾

मैं तेरे लिए मक़सद तय कर चुका हूँ कि मेरे लिए है तू खेलकूद में ज़ाए न हो।

दुकानों की दौड़, फैक्टरियों की दौड़, घरों की दौड़, घरों और बंगलों की दौड़, कीमती लिबास और पोशाक की दौड़ इसको अल्लाह तआला ने खेल तमाशा कहा है और फ़रमाया कि तुझे इसलिए पैदा नहीं किया कि तो अपने ज़ाहिर को संवार बल्कि तू अपने अन्दर को संवार कि मैं तुझे पसन्द कर लूँ मैं तेरे दिल में उतर जाऊँ।

हम अपने लिए साफ़ कपड़े इस्तेमाल करते है, मैले हो जाएं तो उतार देते हैं। अल्लाह तआला भी फ़रमाता है कि मैं ज़मीन व आसमान में तो आता नहीं यह तो बहुत छोटे हैं मुझे सहारा नहीं दे सकते लेकिन ऐ मेरे बन्दे! मैंने तेरा दिल ऐसा बनाया है कि उसमें आ सकता हूँ तू उसे साफ़ कर दे कि मैं इसमें आऊँ।

टूटा हुआ दिल अल्लाह का घर

एक मेरा अर्श ऊपर है एक मेरा अर्श नीचे है। ऊपर तो अर्श है वह जिस पर मैंने अपने तख़्त को बिछाया और नीचे अर्श वह

है जो तेरे सीने में धड़कता है।

﴿انا عند منكسرة قلوبهم﴾ और यह जितना टूटा होता है जितना शिकस्ता होता है जितना ख़्वाहिशात से पाक होता है उतना ही यह मेरा महबूब होता है, उतना ही मैं इसमें आता हूँ और उतरता हूँ।

मैं उसके दिल व दिमाग़ में रग व रेशे और ख़ून में, खाल और बाल में हड्डियों में उसके जिस्म के एक एक ज़र्रे में अपनी मुहब्बत के दरिया बहाता हूँ

और उसके अन्दर नूर ही नूर बना देता हूँ। उसके अन्दर ओर बाहर की ज़िन्दगी ऐसी बना देता हूँ कि जो उसके पास बैठता है उसे भी अल्लाह की मुहब्बत की गर्मी महसूस होती है।

जैसे आदमी बड़े घर के सामने से गुज़रता है तो पता चलता है यहाँ कोई पैसे वाला आदमी रहता है, किसी झोपड़ी से गुज़रता है तो पता चलता है यहाँ फ़कीर रहता है। जिसके दिल में अल्लाह आता है उससे बड़ा तो दुनिया में बादशाह ही कोई नहीं है। चाहे मर्द है या औरत है।

"ला इलाह इल्लल्लाह" का मुतालबा

मेरे भाईयो! अल्लाह पाक को मानना अल्लाह पाक के सामने झुक जाना अपने आपको झुका देना अपने आपको ज़लील कर देना यही ला इलाह इल्लल्लाह है। इसी का हम से मुतालबा है। अल्लाह से बढ़कर रब कौन होगा? अल्लाह से बढ़कर हफ़ीज़ कौन होगा? अलीम कौन होगा? ख़बीर कौन होगा?

तू ही है जिसे याद किया जाए

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है,

﴿اللهم انت احق ممن ذكر واحق ممن عبد.﴾

ऐ अल्लाह! याद करें किसी को तो आप सबसे ज़्यादा याद करने के क़ाबिल हैं, अगर इबादत करें किसी की तो आप सबसे ज़्यादा इबादत के क़ाबिल हैं।

﴿ارفع ممن ملك﴾ सबसे ज़्यादा मेहरबान हैं,

﴿اجود من سئل﴾ सबसे ज़्यादा सख़ी हैं,

﴿اوسع من اعطى﴾ सबसे ज़्यादा देने वाले हैं,

﴿الملك لك﴾ तेरे साथ कोई शरीक नहीं,

﴿الفرد ند لك﴾ तेरा कोई हमसर नहीं,

﴿كل شئ هالك الا وجهه﴾ हर चीज़ को हलाकत तेरी ज़ात को बक़ा है।

तूने मुझे पा लिया तो सब कुछ तुझे मिल गया

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की तारीफ़ फ़रमा रहे हैं,

﴿يا ابن آدم اطلبنى تجدنى ان وجدتنى وجدت كل شئ وان
فاتنى فاتك كل شئ وانا خير لك من كل شئ.﴾

मेरे बन्दे! मेरी तलब में निकल अगर मेरी तलब करेगा तो मेरा वायदा है मैं तुझे मिलूँगा और मैं तुझे मिला तो सब कुछ मिला और तुझे मैं न मिला तो तुझे कुछ न मिला।

फिर याद रखो कोई तेरे दिल के ज़ख़्मों का मरहम नहीं बन सकता, तेरे दर्द का मदावा नहीं बन सकता, तेरे ज़ख़्मों को ठीक नहीं कर सकता, तेरे अन्दर की वीरानियों को वह कभी भी आबादी में नहीं बदल सकता जब तक अल्लाह न मिले।

जितने एहसान हैं उतनी ही नाफ़रमानियाँ

"ला इलाह इल्लल्लाह" में एक अल्लाह का हमसे मुतालबा है कि ऐ मेरे बन्दो! सब पर "ला इलाह" की तलवार चला दो,

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

बुला लो अल्लाह और उसके रसूल को दिल को साफ़ करके तो अपका दिल अल्लाह का अर्श बन जाएगा, आपका दिल अल्लाह की रसूल की मुहब्बतगाह बन जाएगी।

﴿يا ابن آدم خلقت الاشياء لاجلك وخلقتك لاجلي﴾

तमाम जहान तेरे लिए बनाया और तुझे मैंने अपने लिए बनाया। तू मेरा बनकर दिखा।

औलाद नाफ़रमान हो तो माँ-बाप फूट फूटकर रोते हैं और माँ परेशान होती है जिस मालिक ने गंदे पानी से इन्सान बनाया क्या अल्लाह तआला का माँ-बाप से ज़्यादा एहसान नहीं है? माँ-बाप तो घर से निकाल देते हैं कभी अल्लाह तआला ने भी निकाला है? कि फ़लाँ की रोटी छीन ली, उसकी आँखें निकाल दीं और यह फ़िल्म देखता है, यह गाने सुनता है, इसके कानों के पर्दे फाड़ दो। नहीं अल्लाह तआला ने कभी ऐसा नहीं किया।

कभी आगे देखे कभी बाएं देखे, कभी दाएं देखे, कभी पीछे

देखे, कभी कुछ देखे, कभी कुछ देखे, कभी कुर्ता देखे, कभी पतलून देखे कि कैसे लग रहा हूँ। इसी को अल्लाह तआला कह रहा है कि लोगों के लिए कैसा बनता है, संवरता है। कभी मेरे लिए भी तो बनकर आया कर तो अल्लाह तआला के लिए बनने का क्या मतलब है? अच्छे कपड़े पहन लो? अल्लाह के लिए बनने का मतलब यह है कि दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत ले लो और जिस्म में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा ले लो।

कोई है मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करने वाला

मेरे भाईयो! वह अल्लाह यह सारा बताकर कहता है ऐ मेरे बन्दो! अपने इस अल्लाह का मान लो, इतनी बड़ी बादशाही के बावजूद उसकी मुहब्बत तुमसे बेमिसाल है ﴿يا ابن آدم﴾ ऐ इब्ने आदम ﴿انى لك محب﴾ मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ ﴿فبحق لى عليك﴾ तुझे मेरी क़सम तू भी मुझसे मुहब्बत कर ﴿يا ابن آدم كن لى محبا﴾ मैं तुम्हें याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है ﴿اذكرك وتنسانى﴾ ﴿واسترك ولا تخشانى﴾ मैं तेरे गुनाहों पर पर्दा डालता हूँ फिर तू भी मुझसे हया कर तो जो आप गर्मी में बैठे हुए हैं अल्लाह आप में से हर एक का नाम अर्श पर बैठा नाम लेकर खुश हो रहा है, कह रहा है देखो ज़रा! मेरे बन्दे मेरे लिए कैसी गर्मी सह रहे है, कैसी प्यास बर्दाश्त कर रहे हैं? कैसी धूप सह रहे हैं? कैसे पसीने निकल रहे हैं? ऐ फरिश्तों ज़रा बताओ तो सही यह क्यों बैठे हैं?

इन्होंने ठंडे कमरे छोड़े, ठंडी छांव को छोड़ा, घर के साए और पेड़ों को छोड़ा, घर के पानी को छोड़ा, बीवी बच्चों को छोड़ा और बर्फ़ के पानी को छोड़े, यहाँ पतली सी छत के नीचे और तपते

मैदान में क्यों बैठे हुए हैं? पसीना पसीना हो रहे हैं। फ़रिश्ते कह रहे हैं ऐ अल्लाह तेरे लिए बैठे हैं वह आगे कह रहा है कि जाओ गवाह बन जाओ कि मैंने इन सबको माफ़ कर दिया।

इधर भी तू उधर भी तू, हर जगह तू ही तू

मसनून दुआ,

﴿اللهم انا لك عبدا سواى كثير وليس سواك.﴾

मौला तेरे बन्दे! तेरे फ़रमांबरदार! तेरे ग़ुलाम! तेरे बन्दे बेशुमार! पर मेरे लिए तेरे सिवा कोई आक़ा नहीं, मेरे लिए तो तू आका है लेकिन तेरे लिए तो मेरे सिवा लाखों, करोड़ों ला तादाद, ला महदूद हैं पर मेरे लिए तो तू अकेला आक़ा है, तू ही न मिला तो कुछ न मिला तो कुछ भी न मिला। तो अल्लाह को कैसे अपना बना लें कि मेरा भी रब बन जाए तो अगला जुमला बता रहा है ﴿حتى يحكموك فيما شجر بينهم﴾ इनसे कहो तेरे फ़ैसलों पर राज़ी हो जाएं, तेरी तर्तीबे ज़िन्दगी पर राज़ी हो जाएं तो मैं भी उनका बन जाऊँगा।

है कोई मुझ से बड़ा मेहरबान

अल्लाह करीम व मेहरबान और अल्लाह की इताअत उसकी मुहब्बत के बग़ैर नहीं हो सकती और मुहब्बत कोई क़ानून नहीं कि नाफ़िज़ कर दिया जाए यह मुहब्बत अन्दर उठती है, क़ुर्बानी देने से मुहब्बत करने से मुहब्बत करने से जान जोखो में डालकर अल्लाह तआला यह नेमत अता फ़रमाता है तो अल्लाह तआला

फ़रमाता है—

من اعظم منی جودا و کرما بیار زونی بالعزائم
اکلئهم فی المزجع کانه لم یعصنی۔

मुझसे बड़ा सख़ी कौन है? ये बन्दे गुनाह कर करके मेरी ज़मीन को गुनाहों से भर देते हैं, धरती का कलेजा ज़ख़्मी कर देते हैं और रात को जब बिस्तर पर आते है तो मैं उनको ऐसी मीठी और गहरी नींद सुलाता देता हूँ गोया सारा दिन उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की ही नहीं,

﴿عبادی یبارزونی بالعزائم﴾

मेरे बन्दे ललकारते हैं मुझे गुनाह करके और जब तक साँस की आवाज़ नहीं उखड़ती तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है। तबलीग़ में वह ख़ास मेहनत है जिसमें अल्लाह का तअल्लुक़ मिलता है और जब बन्दा तौबा कर लेता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है,

﴿ومن اعرض منی نادیته عن قریب۔﴾

और जो मेरी नाफ़रमानी पर लगा रहता है मैं उसे क़रीब जाकर पुकारता हूँ जैसे माँ अपने बच्चे को पुकारती है इधर आजा, कहाँ जा रहा है? ग़लत रास्ता छोड़ दे।

इसलिए पहला काम है तौबा। मामलात में, इबादात में इधर इन्सान तौबा करता है उधर सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। माँ अगर नाराज़ हो जाऐ तो उसे मनाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है और अल्लाह तआला एक बोल पर माफ़ कर देता है। ऐसे मेहरबान अल्लाह की नाफ़रमानी क्यों की जाती है?

अल्लाह का हबीब कह रहा है—

तू ही है जिसे याद किया जाए, तूही है जिसे पुकारा जाए, तू ही है जिसके सामने सिर झुकाया जाए, तू ही है जो सख़ावत के दरिया बहाता है, तू अकेला है तेरा साथी कोई नहीं, तू अकेला है तेरा शरीक कोई नहीं, तू अकेला है तेरा वज़ीर कोई नहीं।

"ला इलाह इल्लल्लाह" में सब कुछ छिपा हुआ है, इक़रारे मअरफ़त, इक़रारे अब्दियत, इक़रारे तौहीद, इक़रारे नबुव्वत कि या अल्लाह बस हम तेरे हो गए हैं। अपनी सवारी को अल्लाह की तनफ़ छोड़ दे और अपने महबूब की तरफ़ लौट जा।

तो मेरे शौक़ ने मुझे पुकारा कि रुक जा, थम जा, सामान रख तेरी मंज़िल आ गई कि तेरे महबूब का घर आ गया।

अल्लाह पर मर मिटिए

भाईयो! इन्सान मुहब्बत करने वाली मख़्लूक़ है। यह मुहब्बत के बग़ैर नहीं रह सकता। किसी न किसी से ज़रूर दिल लगाएगा, यह दिल किसी पर ज़रूर आएगा। अल्लाह चाहता है कि तेरा दिल मुझ पर आ जाए, तू दिल में मुझे बसा ले, यही अल्लाह हम से चाहता है।

﴿والذين امنوا اشد حبا لله﴾ अल्लाह पर मर मिटिए, यह जज़्बा अल्लाह हमारे दिल में चाहता है,

﴿ان صلوتی ونسکی ومحیای ومماتی لله رب العالمین﴾

मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी नमाज़ मेरी क़ुर्बानी मेरा सब कुछ मेरे अल्लाह के लिए बन जाए। अल्लाह तआला इस दिल में यही देखना चाहता है।

देखो भाईयो! जैसे वह अपनी इताअत में शिर्क बर्दाश्त नहीं करता, अपनी मुहब्बत में भी शिर्क बर्दाश्त नहीं करता। यह तो मख़्लूक़ बर्दाश्त नहीं करती। औरत को सौकन से आर क्यों होती है कि मुहब्बत में शरीक दाख़िल हो गया और अन्दर ही अन्दर तड़प रही है और अन्दर ही अन्दर आग जल रही है और जो है ही ग़य्यूर ज़ात वहदहु ला शरीक ज़ात वह भी अपने बन्दे या बन्दी के दिल में किसी ग़ैर को देखना नहीं चाहता। अल्लाहु अकबर नमाज़ की नियत बाँधकर खड़े हो जाइए अभी पता चल जाएगा कि दिल में अल्लाह है कि कोई और है। हमने ग़ैरों को बसाया हुआ है, इस दिल को वीरान कर दिया, बे आवाज़ कर दिया, जाले बन गए, घर में जाला नज़र आ जाए तो नौकर की शामत बेगम की शामत कि ऐसी फूहड़, ऐसी बदतमीज़ है कि घर में जाले लटके हुए हैं।

ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत का जाल

यह जो मेरे दिल में जाला बन गया सालों साल का अल्लाह के ग़ैर की मुहब्बत का इसका कोई ग़म नहीं। कपड़े पर दाग़ आ जाए तो फ़ौरन धोया जाए अगर दिल के दाग़ नज़र आ जाएं तो हम अपने से नफ़रत करने लग जाएं। बर्तन में बदबू आ जाए तो हम उठाकर फेंक देते हैं अगर अपने दिल की बदबू अल्लाह सुंघा देता तो हम अपने दिल उठाकर बाहर फेंक देते, ये कितने गंदे हो चुके हैं कि इसमें ग़ैर ही ग़ैर है। वह नहीं है जिसको इसमें बसाना था।

दिल को अल्लाह की मुहब्बत से भर दो

अल्लाह की क़सम अर्श भी इस दिल के सामने छोटा पड़ जाता है जिसमें अल्लाह की मुहब्बत उतर जाती है। अर्श भी छोटा है जिसमें अल्लाह तआला आ गया।

जबकि सूई के नाके से तंग है वह दिल जिससे अल्लाह निकल गया, अल्लाह से तअल्लुक़, मुहब्बत, मअरफ़त निकल गई सूई के नाके से भी तंग है। तो मरने से पहले अपने अन्दर से जी लगा लें। अल्लाह की क़सम! काएनात की शक्ल, कोई नग़मा, कोई नेमत, कोई शर्बत, कोई ग़िज़ा, कोई तख़्त, कोई जलवा, कोई नज़ारा दिल की दुनिया को आबाद नहीं कर सकता। यह आबाद सिर्फ़ अल्लाह से होता है अगर अल्लाह होगा तो आबाद होगा अगर अल्लाह न हुआ तो काएनात का हसीन से हसीन मंज़र भी इसकी दुनिया को वीरान रखेगा, इसके दिल का दिया न जल सका न कोई जला सकता है न कभी जलेगा। इसका दिल अल्लाह से हट गया, इसके दिल की शमा बुझी हुई है, यह कभी न जलेगी न राग व रंग से न जलवों से न नज़ारों में, न काएनात की दौलत में, न अर्श व फ़र्श में इस को जलाना है, इस दीप को रौशन करना है तो इसमें अल्लाह को ले लें। अल्लाह को जो तैयार बैठा है कि तू मुझे बुला तो मैं आ जाऊँ।

कुत्ते से सबक़ लो

तुझे वजूद दिया था कि मेरी इताअत में झुक जा, तूने उसी

वजूद को मेरे ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया ﴿هكذا جزاء من احسن اليك﴾ जो एहसान करें उसके साथ यही किया जाता है?

अपने घर के कुत्ते से आदमी को सबक़ लेना चाहिए। आप उसको मारते हैं तो सिर झुकाता है, आपके घर का कोई बच्चा उसको मारे तो सिर नहीं उठाएगा, बाहर से सात फ़िट का कोई आदमी आ जाए तो उस पर झपट पड़ेगा चाहे उसकी जान भी चली जाए और अपने घर का बच्चा मार रहा है, उसके ऊपर बैठा हुआ है कुछ नहीं कहता। रोटी खाते हुए बुलाओ तो वह रोटी छोड़कर आ जाता है, सारे बैठे रहते हैं।

वफ़ा सीखनी हो तो घोड़े से सीखो

अल्लाह तआला ने सूरह आदियात में बड़ा गिला किया है,

والعديت ضبحا فالموريت قدحا فالمغيرت صبحا فاثرن به نقعا
فوسطن بهه جمعا ان الانسان لربه لكنود.

क़सम है तेज़ी से दौड़ने वाले घोड़ों की! क़सम है उनकी जो पत्थरों पर पाँव रखते हैं तो आग निकलती है (अरब जब घोड़े दौड़ाते थे तो उनके पैर पत्थरों पर पड़ते तो आग निलकती थी) और क़सम है उन घोड़ों की जो धूल उड़ाते हैं जो सुबह के वक़्त हमलावर होते हैं और दुश्मन के अन्दर घुस जाने वाले घोड़ों की। अल्लाह पाक क़समें खा रहा है और आगे मज़मून यह है कि ऐ इन्सान! तू बड़ा नाशुक्रा है। इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन लिखते हैं कि इन आयतों में जोड़ यह है कि अल्लाह फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दे! मैंने घोड़ा पैदा किया, घोड़े का वजूद और फिर तेरी मिल्क बना दिया, उसके अन्दर मैंने रखी मालिक से वफ़ा, इसमें

वफ़ा मालिकुल मुल्क ने रखी तूने क्या किया?

एक वक़्त में पानी पिलाया, दो वक़्त चारा खिलाया, कभी सूखा खिलाया कभी तर खिलाया लेकिन तेरे दो वक़्त के खाने की उसने वह वफ़ा की है तू इस पर सवार होता है तो वह दौड़ता है, तू हमला करता है वह आगे चलता है, तू दुश्मन के बीच उतरता है तो वह बीच में कूदता है। सारा दिन लड़ता है तो पीछे मुँह नहीं मोड़ता, आगे सुबह फिर हमला करता है तो तेरा घोड़ा यह नहीं कहता कि मैं थका हुआ हूँ मैं नहीं जाता वह फिर तेरे साथ चलता है।

"सबा मुआल्लिक़ात" यह दरसे निज़ामी की एक किताब का नाम है का शायर अपने घोड़े की तारीफ़ करता है,

يدعون عنك غرما هو كانها   الستان بير في لبان ادهيم

"सबा मुआल्लिक़ात" शे'र की मशहूर किताब है। वह अपने घोड़े की तारीफ़ करता है कि मैं जब अपने घोड़े को लेकर हम्लावर होता हूँ तो इतने बड़े बड़े नेज़े उस घोड़े के सीने में लग रहे होते हैं जैसे कुंए के डोल में रस्सी लगती है।

यह बात पूरी उस वक़्त समझ में आती है जब कि अरब का नक़्शा सामने हो। अरब में पानी बहुत नीचे होता है तो उसके लिए लम्बी लम्बी रस्सी होती थी तो लम्बी रस्सी बाँधकर डोल से पानी निकालते थे। नेज़ा जितना लम्बा होता है उतना ज़ोर से अन्दर उतरता है। बड़ी ताक़त से अन्दर जाता है तो वह कहता है कि जब मैं घोड़े को लेकर हमला करता हूँ तो कुएं की रस्सी की तरह लम्बे नेज़े उसके सीने पर लगते हैं तो वह घोड़ा कभी नहीं कहता कि मालिक मैं ज़ख़्मी हो गया हूँ, पीछे हटता हूँ। उसका

यह हाल होता है कि ख़ून की शलवार पहन लेता है, मेरी नाफ़रमानी नहीं करता। अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे! घोड़ा तेरा इतना वफ़ादार तो फिर तू मेरा वफ़ादार क्यों नहीं बनता मैंने तुझे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया।

मेरा जीना मेरा मरना अल्लाह के लिए हो

मेरे भाईयो! रातों को रोने की लज़्ज़त भी सीख लो। मख़्लूक़ से मुहब्बत को सीखा और बाज़ारी औरत की मुहब्बत को सीखा, अपने मालिक से भी मुहब्बत करना सीखो। यह दिल अल्लाह के लिए है। इसमें चाहे सारा जहाँ बिठा दो, मेरे रब की क़सम! वह सुन रहा है, वह गवाह है कि सारी काएनात की दौलत और हुस्न व जमाल आपके क़दमों में ढेर कर दिया जाए।

बेचैन दिल का मरहम! अल्लाह

यहाँ अगर अल्लाह नहीं है तो यह रूह बेक़रार रहेगी, यह जिस्म बेक़रार रहेगा। इसे दुनिया की कोई रौनक़, कोई महफ़िल, कोई क़ुमक़ुमों में, कोई होटलों की महफ़िलें लाखों हसीन चेहरे इसके दिल की आग को ठंडक नहीं पहुँचा सकते।

यह आग भड़कती रहेगी, यह प्यासा रहेगा, इसकी प्यास बढ़ती रहेगी, इसका ग़म बढ़ता रहेगा। इसका सिर्फ़ एक इलाज है उससे मुहब्बत करे जो इससे मुहब्बत किए बैठा है। कैसी अजीब बात है माँ-बाप की नाफ़रमानी करो तो घर से निकाल देते हैं, वह अख़बारों में छाप देते हैं कि फलाँ बिन फलाँ मेरा नाफ़रमान है, मैं इसे अपनी सारी जाएदाद से महरूम करता हूँ।

कितनी नाफ़रमानियाँ मगर करीम आक़ा ढील देता रहा

इन आँखो ने कितना ग़लत देखा है किसी की अल्लाह ने आँखे लीं वापस कि आँखों से महरूम कर दो,

इन कानों ने कितना ग़लत सुना है कभी अल्लाह ने किसी के पर्दे फाड़े?

यह शहवत कितनी ग़लत इस्तेमाल हुई है कभी अल्लाह ने अज़ाब का कोड़ा बरसाया है?

इन हाथों ने कितना ग़लत लिया और दिया, कितना ग़लत लिखा है कभी अल्लाह तआला ने हाथ तोड़ा है?

यह पाँव कितनी ग़लत महफ़िलों में उठे हैं कभी अल्लाह तआला ने पाँव काटा है?

इस दिमाग़ ने कितना ग़लत सोचा है कभी अल्लाह ने दिमाग़ को ख़राब किया है?

इस दिल ने कितना ग़ैर को चाहा कितनी मख़्लूक़ की मुहब्बत इस दिल में आई कभी अल्लाह पाक ने इस दिल को अंधा किया?

शैख़ अब्दुन क़ादिर जिलानी रह० का अनोखा वाक़िआ

शैख़ अब्दुन क़ादिर जिलानी रह० के पास एक औरत आई कहा शैख़ अगर अल्लाह पर्दे का हुक्म न दिया होता तो मैं अपने चेहरे से नक़ाब उठाकर तुझे दिखाती कि अल्लाह तआला ने मुझे

क्या जमाल बख़्शा है लेकिन इसके बावजूद मेरा शौहर दूसरी शादी करना चाहता है। यह सुनकर शेख़ अब्दुन क़ादिर जिलानी रह० पर ग़शी तारी हो गई। लोग बड़े हैरान हुए कि यह किस बात पर बेहोशी है? जब होश आया तो फ़रमाया यह एक मख़्लूक़ है जो अपनी मुहब्बत में शरीक को बर्दाश्त नहीं कर रही है वह दो ज़हाँ का बादशाह अपनी मुहब्बत मे शरीक कैसे बर्दाश्त करेगा?

ख़ून के आँसू

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम नुक़सान की भरपाई नहीं हो सकती चाहे हम ख़ून के आँसू रोंए जो आज तक हम कर चुके हैं। चालीस साल में एक सज्दा भी ऐसा नसीब नहीं हुआ जिसमें अल्लाह ही का ध्यान हो किसी और का ध्यान न हो तो ऐसे आदमी को कहाँ गुंजाइश है कि वह अपनी फैक्टरी को देखे, कारख़ानों को देखे, जिसे दिल का दौरा पड़ता है वह कहता है मुझे यहाँ से ले चलो, मेरी फैक्टरी जाने दो, मिल जाने दो, कारोबार जाने दो, मुझे शादी की ज़रूरत नहीं, मैं किसी फंक्शन में नहीं जाना चाहता। पहले मेरे दिल को संभालो, ज़िन्दगी है तो सब कुछ है।

होश में आ जाओ ऐसा न हो कि!

वह दिल जो अल्लाह की मुहब्बत से ख़ाली हो चुका है,
वह दिल जो गुनाहों की लज़्ज़त का आदी हो चुका है
और वह आँख जो गुनाहों की लज़्ज़त से आशना हो चुकी है,
वह कान जो गुनाहों की लज़्ज़त सुनने के आदी हो चुके हैं,

वह वजूद जिसका एक एक बाल गुनाहों में जकड़ा हुआ हो, उसे होश नहीं कि मैंने कल अल्लाह के सामने हाज़िर होना है। एक झटका दिल को लगे तो सारे कारोबार छूट जाते हैं। यहाँ सारे वजूद को झटका लग चुका है कि

नाखुन तक अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है,
बाल बाल अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है,
इस ज़बान ने कितने ग़लत बोल बोले हैं,
इन आँखों ने कितना ग़लत देखा है,
इन कानों ने कितना ग़लत सुना है,
इन हाथों ने कितने ज़ुल्म किए हैं,
ये पाँव कैसी कैसी ग़लत महफ़िलों की तरफ़ उठे हैं,
और इसी वजूद के साथ अल्लाह के सामने जाना है।

मेरे भाईयो! हम थोड़ी देर के लिए तो होश में आने की कोशिश करें, शराब में ग़र्क़ होने वाले को भी होश आ जाता है। यह कैसा नशा चढ़ा हुआ है कि पचास साल गुज़र चुके हैं कोई होश में नहीं आ रहा कि हम किस तरफ़ को जा रहे हैं और किसके साथ हमारा मामला पेश आने वाला है जहाँ खरे खोटे को अलग किया जाएगा।

फ़क़ीर वह है जिसे अल्लाह न मिला

यह हमारी बदक़िस्मती है कि चालीस साल में कोई एक रकअत भी ऐसी नसीब नहीं हुई जिसमें मैंने अल्लाह से प्यार व

मुहब्बत से बात की हो और मैं अपने अल्लाह को याद करके अल्लाहु अकबर से शुरू हुआ और सज्दे तक अल्लाह के इश्क़ में चला गया। यह कैसा फ़कीरों का देस है, यह कैसी फ़कीरों की दुनिया है। लोग फ़कीर कहते हैं उनको जो झुग्गियों में रहते हैं

फ़कीर वह है जिसे अल्लाह न मिला, फ़कीर वह है जो अल्लाह के घर में आकर भी अल्लाह को न पा सका, जिसे अल्लाह के नाम की मुहब्बत का ज़ाएक़ा न मिला, जो अल्लाह के नाम की हलावत न देख सका, जो तन्हाईयों में अल्लाह के सामने बैठकर रो न सका, जो अल्लाह को दुखड़े न सुना सका, जो अल्लाह की मुहब्बत में न तड़पा न रोया और न मचला।

यह फ़कीर है मेरे भाईयो वह फ़कीर नहीं जो इस्लामाबाद की गलियों में भीख मांगता फिर रहा है।

क़ारून से अल्लाह की मुहब्बत

जिससे अल्लाह का तअल्लुक़, मुहब्बत, मअरफ़त निकल गई ﴿من سم الخياط﴾ सूई के नाके से भी तंग है। तो मरने से पहले अपने अल्लाह से जी लगा लें।

—क़ारून ने मूसा अलैहिस्सलाम पर इलज़ाम लगाया तो मूसा अलैहिस्सलाम रो पड़े, सज्दे में गिर गए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ज़मीन तेरे ताबे है जो कहेगा वह करेगी तो मूसा अलैहिस्सलाम खड़े हुए ज़मीन से फ़रमाया, क़ारून को पकड़ लो। ज़मीन ने पकड़ा तो अन्दर चला गया। कहने लगा हाय मूसा! माफ़ कर दे। आपने फ़रमाया और पकड़ो तो और अन्दर गया ऐ

मूसा! माफ़ कर दे। आपने कहा और पकड़ो। वह कहता रहा ऐ मूसा माफ़ कर दे वह कहते रहे और पकड़ो। यहाँ तक कि पूरा अन्दर ग़र्क़ हो गया।

अब अल्लाह की भी सुनो, अल्लाह ने फ़रमाया,

ऐ मूसा तुझसे माफ़ियाँ मांगता रहा मुझसे एक दफ़ा मांगता तो मैं माफ़ कर देता।

आप अन्दाज़ा फ़रमाएं ऐसे रहीम अल्लाह की हम नाफ़रमानी करें कि जो क़ारून जैसे को माफ़ करने के लिए तैयार बैठा है कि तौबा तो करे। जब फ़िरऔन ग़र्क़ हुआ तो उसने कलिमा पढ़ा तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने मिट्टी उसके मुँह में डाल दी कि अल्लाह तआला इसकी तौबा कबूल न कर लें।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु वसल्लम जब फ़िरऔन ने कलिमा पढ़ा तो मुझे डर लगा कि उसकी रहमत इतनी वसीअ है कि कहीं इसकी तौबा क़ुबूल न हो जाए और उसके ज़ुल्म को देखकर दिल में यह था कि यह ख़बीस कहीं तौबा करके न मर जाए। मैंने उसका मुँह बंद कर दिया कि तौबा न कर सके।

जिस रब की रहमत इतनी वसीअ हो उसके सामने झुकना तो इन्सानियत की मेराज है न यह कि उल्टा फ़लसफ़ा क्योंकि अल्लाह मेहरबान है लिहाज़ा जो मर्ज़ी करते फिरो। यह भी कोई फ़लसफ़ा है। कुत्ता आपकी रोटी खाए तो गर्दन झुका दे और मैं अपने रब का रिज़्क़ खाऊँ तो गर्दन उठाऊँ तो क्या मेरा अख़्लाक़ कुत्ते से भी नीचे चला जाए, घोड़े को चारा डालो तो वह सिर

झुकाकर सारी मंज़िलें तय करने को तैयार हो जाए और अल्लाह तआला मुझे दे और मैं गर्दन अकड़ा लूँ यह भी कोई तरीक़ा है।

मेरे गुनाहगार बन्दे तू पुकार मैं हाज़िर हूँ

एक आदमी सत्तर साल या सनम या सनम पुकारता रहा, एक दिन ग़लती से या समद कह दिया। अल्लाह ने फ़ौरन कहा लब्बैक लब्बैक लब्बैक मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ।

फ़रिश्ते पुकारे या अल्लाह! ग़लती से बोल बैठा उसे तो तेरा पता ही नहीं।

इर्शाद फ़रमाया मैं सत्तर साल से इन्तिज़ार कर रहा था कि कभी तो मुझे बुलाएगा। आज बुलाया तो है चाहे भूल के बुलाया। जब उससे ऐसा प्यार है तो जो मानने वाला होगा उससे कैसा प्यार होगा।

अल्लाह के नबी की मुबारक ज़िन्दगी हमने अपने अन्दर ज़िन्दा करनी है और सारी दुनिया के मुसलामनों में ज़िन्दा करनी है। यह हमारी मेहनत है, यही हमारा काम है। ख़त्मे नबुव्वत को हर मर्द व औरत मानने वाला है। आप आख़िरी नबी हैं। ख़त्मे नबुव्वत के सदक़े में यह काम हमारे ज़िम्मे है कि सारी दुनिया के मर्द व औरत से तौबा करवाएं।

कोई है ऐसा मेहरबान ज़रा दिखाओ तो सही

हश्र के मैदान में दो आदमियों को अल्लाह दोज़ख़ से निकालेगा फिर फ़रमाएगा वापस चले जाओ। एक भागेगा और छलांग लगा देगा, दूसरा चलेगा पीछे मुड़ मुड़कर देखेगा। अल्लाह

दोनों को बुलाएगा अरे भाई तूने क्यों छलांग लगाई? कहेगा या अल्लाह सारी ज़िन्दगी तेरी नाफ़रमानी की जिसकी वजह आग देखी। मैंने सोचा यह हुक्म मान लूँ शायद इसी पर काम बन जाए।

दूसरे से पूछा अरे तू क्यों पीछे मुड़ मुड़ कर देखता था? वह कहेगा या अल्लाह! जब एक दफ़ा निकाल लिया तो फिर तेरी सख़ावत की कहानियाँ आसमानों में मशहूर हैं। अब मैं इन्तिज़ार में था कि कब तेरी सख़ावत मुतवज्जेह हो और मेरी बख़्शिश का फ़ैसला हो। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे चलो तुम दोनों जन्नत में चल जाओ।

शीशे के सामने अपने आपको न तौला करें। शीशा बड़ा धोका देता है। बैतुलख़ला में बैठकर अपनी अवक़ात तौला करें कि मेरी क्या अवक़ात है? शीशा धोका देता है, दफ़्तर धोका देता है, गाड़ी धोका देती है, ज़ेवर धोका देता है, माथे का झूमर धोका देता है, पचास हज़ार का जोड़ा धोका देता है। बैतुलख़ला में बैठकर अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर करें कि मैं क्या हूँ फिर इतना बड़ा बादशाह कहे कि मुझसे यारी लगा अगर दुनिया के गंदे बादशाहों से दोस्ती लगानी पड़े तो हज़ारों पापड़ बेलने पड़ते हैं और वह ऐसा मेहरबान कि एक पल में यारी लगाने को तैयार है। सारे गुनाह माफ़ करने को तैयार है।

फ़िक्रे आख़िरत हो तो ऐसी हो

हज़रत मआज़ा अदविया रह० यह जब रात आती तो कहतीं कि ऐ मआज़ा! तेरी आख़िरी रात है। कल का सूरज तू नहीं

देखेगी। कुछ करना है तो कर ले और यह कहकर सारी रात जागती रहतीं, मुसल्ले पर बैठे बैठे सो जातीं। फिर अगली रात आती, मआज़ा! यह आख़िरी रात है कल का सूरज नहीं आएगा कुछ करना है तो कर ले फिर सारी रात बन्दगी में लगी रहतीं। जब इनका इन्तिक़ाल होने लगा तो रोने लगीं फिर हँसने लगीं तो औरतों ने कहा रोती किस बात पर हो? कहा रोती इस बात पर हूँ कि आज के बाद नमाज़ से महरूमी हो जाएगी और नमाज़ रोज़ा आज के बाद छूट गया इस बात पर रोना आया और हँसी किस बात पर हो? उनके ख़ाविन्द सलता बिन अलअशीम तुर्कीस्तान के जिहाद में पहले शहीद हो गए थे। वह बहुत बड़े ताबईन में से थे तो फ़रमाने लगीं हँसी इस बात पर हूँ कि सामने मेरे ख़ाविन्द खड़े हुए कह रहे हैं कि तुझे लेने के लिए आया हूँ तो इस बात पर हँस रही हूँ कि अल्लाह ने मिलाप कर दिया सामने वह खड़े हैं सहन में और कह रहे हैं कि तुझे लेने आया हूँ और इसके साथ ही इन्तिक़ाल हो गया, तो हम अल्लाह की ज़ात को सामने रखकर चलने वाले बनें।

बाँदी की अल्लाह से मुहब्बत का वाक़िआ

मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी बाज़ार गए एक कनीज़ लौंडी बिक रही थी उसको ख़रीद कर ले आए। लोगों ने कहा पागल सी है। उन्होंने कहा कोई बात नहीं। रात को आधी रात के बाद आँख खुली तो देखा कि वह लौंडी मुसल्ले पर बैठी थी और अल्लाह से लौ लगा रही थी, आँसू बह रहे थे, सीना घुट रहा और

अल्लाह को कह रही है ऐ अल्लाह! वह मुहब्बत जो तुझे मुझसे है, उलटा कह रही है। कहना तो यह चाहिए था कि वह मुहब्बत जो मुझे तुझसे है। उलटा कह रही थी वह मुहब्बत जो तुझे मुझसे है मैं उसके वास्ते से तुझसे सवाल करती हूँ तो उन्होंने टोका कि ऐ लड़की क्या कहती है यूँ कह कि वह मुहब्बत जो मुझे तुझसे है। कहने लगी चुप करो अगर उसे मुझसे मुहब्बत न होती तो मुझे यहाँ न बिठाता तुझे वहाँ न सुलाता। मुझसे मुहब्बत है तो मेरी नींद से मुझे उठाकर खड़ा कर दिया फिर कहने लगी ऐ अल्लाह! अब तो तेरी मेरी मुहब्बत का राज़ फ़ाश हो गया, लोगों को पता चल गया कि हम मुहिब और महबूब हैं। ऐ अल्लाह! अब मुझे अपना विसाल दे दे। मुझे अपना मिलाप दे दे, मुझे अपने पास बुला ले, यह कहकर चीख़ मारी और जान निकल गई।

फ़रमाते हैं मुझे बड़ा ग़म हुआ। मैं सुबह उठा। उसका कफ़न लेकर आया तो देखा कि हरा कफ़न चढ़ा हुआ है और उस पर नूरानी सतरें लिखी हुई थीं,

﴿الا ان اولیاء لا خوف علیھم ولا ھم یحزنون﴾

कि सुन लो! अल्लाह के दोस्तों को न दुनिया में ग़म है न आख़िरत में ख़ौफ़ है।

ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा की पुकार! तू नहीं सुनता तो अल्लाह को सुनाती हूँ

हज़रत ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया हैं। उनके शौहर ने उनको तलाक़ दे दी। जाहिलियत की तलाक़।

वह तलाक़ क्या होती थी कि कोई आदमी यूँ कहता तू मेरी माँ की तरह है तो वह औरत इस पर हराम हो जाती और ऐसी हराम होती कि फिर कभी निकाह भी नहीं हो सकता था। यह ज़माना जाहिलियत में होता था।

अभी इस्लाम में इस बारे में कोई हुक्म नहीं आया था तो ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा को उनके शौहर औस बिन सामत ने यह कह दिया कि तू मेरी माँ की तरह है और वह परेशान हो गई कि छोटे छोट बच्चे हैं, उम्र मेरी ढल गई, दूसरी शादी के क़ाबिल नहीं अब मैं कहाँ ज़िन्दगी गुज़ारूँ? तो वह भागी हुई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा कंघी कर रही थीं। हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा या रसूलल्लाह! मुसीबत, मुश्किल आ गई। क्या हुआ? कहा मेरे शौहर ने मुझको कहा तू मेरी माँ की तरह है। यह तो जाहिलियत की तलाक़ है आप इस तलाक़ को कैंसिल कर दें, ख़त्म कर दें तो अभी क्योंकि शरिअत का कोई हुक्म आया नहीं था तो आपने रिवाज के मुताबिक़ फ़तवा दे दिया कि ﴿حرمت عليه﴾ तू उस पर हराम हो गई।

उसने कहा या रसूलल्लाह! ﴿ان ابو ولدى﴾ वह मेरे बच्चों को बाप है ﴿تفرق اهلى﴾ माँ-बाप मेरे मर गए, पैसा मेरा ख़त्म, ﴿فنى شبابى﴾ जवानी मेरी ख़त्म तो मैं और किस दर पर ज़िन्दगी गुज़ारूँगी? अगर आपने तलाक़ बरक़रार रखी तो फिर मेरी बाक़ी ज़िन्दगी कहाँ गुज़रेगी?

आपने फिर कहा, ﴿حرمت عليه﴾ तो हराम हो गई। उसने फिर दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह! नज़रे सानी फ़रमाएं। आपने

देखा नहीं मानती तो आपने सिर झुका लिया बोले नहीं ख़ामोश हो गए।

जब देखा कि आपने ऐराज़ कर लिया, आप नहीं देख रहे हैं तो उसने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई। कहने लगी आप नहीं सुनते, मैं अपने रब से गिला करती हूँ, बात को नहीं सुना (यह कलाम बीच में छिपा हुआ है) ﴿وتشتكى الى الله﴾ फिर उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ अल्लाह! तेरा नबी तो नहीं बोलता तू तो सुन ﴿والله يسمع تحاوركما﴾ अल्लाह उन दोनों का मुनाज़रा सुन रहा था। आप इंकार कर रहे थे वह इक़रार करवाना चाहती थी। ﴿ان الله سميع بصير﴾ आपका रब सुनता भी है देखता भी है। आज के बाद इस तलाक़ को बातिल करता हूँ, ख़त्म करता हूँ और अपना फ़ैसला ख़ौला के हक़ में देता हूँ अलबत्ता इसका जुर्माना आइद करता हूँ। एक ग़ुलाम आज़ाद करे, बीवी हलाल या साठ मिस्कीनों को खाना खिलाए बीवी हलाल। यह तलाक़ आज के बाद हम ख़त्म करते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में मर्द व औरत इतना ऊँचा उड़ सकता है।

ज़ालिम तुझे पता है यह कौन है?

हज़रत उमर अमीरुल मुमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु तश्रीफ़ ले जा रहे थे। एक औरत ने रोक लिया। अमीरुल मुमिनीन! वह ठहर गए। वह औरत कहने लगी एक ज़माना था तू उमरी उमरी कहलाता था फिर तू उमर बना फिर तू अमीरुल मुमिनीन बना। इसी तरह कुछ और बातें कहीं। लोग खड़े हो गए।

जब वह चली गई तो एक आदमी ने कहा अमीरुल मुमिनीन

आप एक बुढ़िया की ख़ातिर रुक गए। कहा ऐ ज़ालिम पता भी है यह कौन बुढ़िया है? यह वह बुढ़िया है जिसकी पुकार को अल्लाह ने अर्श पर सुना तो उमर फ़र्श पर कैसे न सुने। यह ख़ौला बिन्ते सालबा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं जिसके लिए क़ुरआन उतारा गया,

रब को सुनाती हूँ या अल्लाह मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं, मेरे पास रहेंगे तो कहाँ से खिलाऊँगी और अगर इसके पास भेजूँ तो वह कहीं और शादी कर ले, मेरे बच्चे रुल जाएं या अल्लाह अपने नबी की ज़बान पर मेरे हक़ में फ़ैसला दे।

हालाँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तलाक़ का फ़ैसला दे चुके हैं और यह क्या कह रही या अल्लाह मेरे हक़ में फ़ैसला दे।

अगर अल्लाह तआला वैसे ही इर्शाद फ़रमा देते तो कोई इस बात को झुठलाता, कोई इसकी तसदीक़ करता। अल्लाह तआला ने क़ुरआन उतारा ताकि क़यामत तक पता चले कि मेरी मानकर एक औरत कितना ऊँचा परवाज़ कर सकती है।

﴿قد سمع الله قول التی تجادلك فی زوجها﴾

अठ्ठाइसवें पारा शुरू हो रहा है, हमने यक़ीनन सुन लिया जो अपने शौहर के बारे में झगड़ा लेकर आपके की बारगाह में पहुँची।

दिल की उजड़ी हुई दुनिया की भलाई

अल्लाह पाक हमारी ज़िंदगी का मक़सूद है। अल्लाह को राज़ी करना, अल्लाह पर मर मिटना, अल्लाह के हुक्मों पर चलना और उसके नबी के तरीक़ों को अपनाना यही हमारी ज़िन्दगी है। दुनिया

की ज़ेब व ज़ीनत आज बहुत ज़्यादा हो चुकी है, आँखें चुंधया गयीं हैं, रौशनियाँ बढ़ चुकी हैं, दिल अंधे हैं, आज दुनिया से इन्सानियत मिट चुकी है, इन्सान फिर रहे हैं सिफ़ात मिट चुकी हैं और इन्सान फिर रहे हैं, घर रौशन हैं और दिल काली रात से ज़्यादा तारीक हैं, शहर सारी रात दमकते हैं, सड़कें रौशन हैं, घर रौशन हैं लेकिन मेरे आपके दिल की दुनिया उजड़े हुए ज़माना गुज़र गया, दिल अंधेरों में पड़ा है, इसके हर कोने में अंधेरा है, इसके हर गोशे में अंधेरा है, आज ज़मीनें हरी भरी हो चुकी हैं लहलहा रही हैं, सब्ज़ा ही सब्ज़ा है लेकिन दिलों की ज़मीन सहरा से ज़्यादा बंजर है, सहरा से ज़्यादा वीरान है, शिकस्ता खंडर बन चुकी है जिस दिल में अल्लाह की मुहब्बत नहीं जो दिल अल्लाह के लिए तड़पता नहीं, जो दिल रातों को बिस्तर से मुसल्ले पर नहीं पहुँचता जो दिल जबीनों को ज़मीन पर नहीं टिकाता, जो दिल आँखों से आँसुओं को जारी नहीं करता, वह दिल नहीं है बल्कि पत्थर है जो सख़्त हो चुका है। आज बीवी ने शौहर की मुहब्बत का ज़ाएक़ा चखा है, माँ-बाप ने औलाद की मुहब्बत का ज़ाएक़ा चखा है और हम सब ने दिरहम व दीनार, सोने चाँदी और रुपए पैसे की मुहब्बत का ज़ाएक़ा चखा है लेकिन चखा नहीं तो रब की मुहब्बत का ज़ाएक़ा नहीं चखा, अल्लाह की मुहब्बत में रोना अल्लाह की मुहब्बत में परेशान होना अल्लाह की मुहब्बत में तकलीफ़ उठाना यह आज उम्मत में से निकल गया, यह उम्मत बांझ हो गई। सबके दिल की दुनिया उजड़ गई, दिल अंधे, आँखें रौशन, दिल काले घर सफ़ेद हैं।

अंबिया अलैहिमुस्सलाम का काम यह है कि आकर अपनी जान व माल और सिर धड़ की बाज़ी लगाकर इन्सानों के अन्दर

ईमान की शमा रौशन करते हैं। ईमान का चिराग़ जलाते हैं, दिलों को अल्लाह की मुहब्बत में पेवस्त करते हैं। यह तबलीग़ है।

चिल्ले चार महीने पर तो रेढ़ी का कारोबार नहीं होता, चिल्ले चार महीने में काएनात की हिदायत के फ़ैसले कहाँ से होंगे। जैसे वे पिस गए, फ़ना हो गए और भूखे प्यासे निकले।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लश्कर रवाना किया। क़हते का ज़माना था। सबको थोड़ा थोड़ा तोशा खुद दिया। हदीर रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं उनको देना भूल गए। उन्होंने आकर कहा नहीं कि मुझे नहीं दिया मुझे भी तो दें। चुप करके चल पड़े। जब जरफ़ पार कर गए तो कहने लगे,

ऐ मेरे मौला तेरे नबी ने दिया नहीं मैंने मांगा नहीं तू तो जानता है। न मेरे पास खाना है न दाना अब तू ही मेरा काम करेगा। मेरी भूख का सामान तू बन जा,

﴿سبحان الله الحمد لله، الله اكبر لا اله الا الله﴾

यही मेरा खाना है यही मेरा तोशा है यही मेरा सामाने सफ़र है। यह कहते जा रहे हैं और चलते जा रहे हैं। जिसके लिए किया है वह तो देख रहा है कि यह हदीर क्या कह रहा है? अर्शों पर हरकत हुई जिब्राईल अलैहिस्सलाम भागे हुए आए,

या रसूलल्लाह! वह हदीर तो अल्लाह को पुकार रहा है, इसकी पुकार ने तो अर्श को हिला दिया है, उसको तो आपने तोशा नहीं दिया। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक आदमी पीछे दौड़ाया कहा भागो और यह उसको दो और माज़रत भी करो क्या कहता है?

सुनना! अल्लाह के रसूल भूल गए थे अब आपको पेश किया

है। फिर मुझे बताना क्या कहता है। वह गए ऊँटनी को दौड़ाया। उनको जा मिले। भाई अल्लाह के रसूल भूल गए अब आपको पेश किया है। लिया और आसमान की तरफ़ निगाह उठाई,

﴿الحمد الله الذى ذكرنى فوق عرش ومن فوق سبع سموت.﴾

मेरे मौला! तेरे क़ुर्बान जाऊँ तूने मुझ अर्श पर याद रखा तूने मुझे अर्शों पर याद रखा ﴿رحم بى وجوعى﴾ तूने मेरी भूख पर रहम किया,

﴿اللهم كما لم تنس هدير ليجعل هدير لا ينساك.﴾

ऐ मेरे मौला! जैसे तूने हदीर को नहीं भूला हदीर को भी तौफ़ीक़ दे कि तुझे न भूले।

यूँ चली तबलीग़, यूँ जिहाद का झंडा उठा है। जान पर गुज़र गई, माल लुट गए, घर छुट गए, आरों से चीरे गए, सूलियों पर चढ़ गए बोटी बोटी हो गई जब जाकर अल्लाह का कलिमा दुनिया में गूँजा।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

कुरआन नमाज़ की बरकत

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله.اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो और दोस्तो! हम अल्लाह को मक़सूद बनाकर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे हैं। हम अपने मक़सद से भटके नहीं बल्कि बड़े दूर चले गए हैं। राह से ऐसे भटके कि न राह रही न राही रहा, रहबर रहा न मंज़िल रही, सामान भी लुटा, क़ाफ़िले से भी बिछड़े न आगे का पता न पीछे का पता। हम उस मुसाफ़िर की तरह हैं जो माल व मता भी गुम कर चुका और क़ाफ़िले से भी बिछड़ चुका है, आगे रात तारीक है, सफ़र लम्बा है, मंज़िल

का पता नहीं कटी पतंग की तरह उसे नहीं पता कि किस तार में फँसना है, किस झाड़ में उलझना है, किस पेड़ में अटकना है, कौन से काँटे ने चीरना है।

इस अंधी इन्सानियत को अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह करना तबलीग़ की मेहनत का मक़सद है। हमारे मर्दों और औरतों का नशा उतरे और वह अल्लाह की ज़ात को मक़सद बनाकर ज़िन्दगी बनाकर गुज़ारना सीखें।

अल्लाह पर मरना सीखें, अल्लाह पर मरना मिटना सीखें, अल्लाह के लिए जीना सीखें, ख़ुशी वह हो जो अल्लाह को पसन्द हो, ग़म वह जो अल्लाह को पसन्द हो, इज़्हार भी वह हो जो अल्लाह को पसन्द हो, छिपाना भी वह हो जो अल्लाह को पसन्द हो।

अहमक़ों की दुनिया

हम लोगों की नज़र में जंच जाएं इससे हमारा मस्अला हल नहीं होगा, याद रखना अल्लाह की नज़र में जंचेंगे तब मस्अला हल होगा।

एक लड़की दुल्हन बनाई जा रही, सजाई जा रही। सहेलियाँ कहने लगीं कि बहुत ख़ूबसूरत लग रही हो, वह रोने लगी उसने कहा तुम्हारी नज़रों में जंचने से मेरा काम नहीं बनेगा मैं जिसके यहाँ जा रही हूँ जब तक उसकी नज़रों में न जंच जाऊँ उस वक़्त तक मेरा मस्अला हल नहीं होगा।

मेरे भाईयो और बहनो! यह अंधी दुनिया है, यह दीवानों की दुनिया है, यह बेवक़ूफ़ों की दुनिया है, यह जाहिलों की दुनिया है। इनकी नज़रों में जंच जाने से किसी मर्द का काम बनेगा न किसी

औरत का काम बनेगा। बस अल्लाह की नज़र में जंच जाने से हमारे काम बनेंगे फिर चाहे कोई हमें जाने या न जाने, कोई हमें माने या न माने, कोई हमें देखे या न देखे, कोई हमें पूछे या न पूछे, कोई हमें चाहे या न चाहे, कोई हमें क़रीब करे या दूर करे, कोई हम से मुहब्बत करे या नफ़रत करे, कोई हमें सलाम करे या ठुकरा दे।

दिल व दिमाग़ से गंदगी निकाल फेंको

हमारा मस्अला ऊपर से हल हो चुका, हमारा काम बन गया, हम अल्लाह को राज़ी कर चुके। यह मक़सूद है, यह मतलूब है। हर फ़ैक्टरी वाले को, हर मिल वाले को, हर रेढ़ी चलाने वाले को, हर ग़रीब को, हर अमीर को, हर बूढ़े को, हर जवान को, हर मर्द को, हर औरत को यह जान लेना चाहिए कि ज़िन्दगी का मक़सद यह है कि उसके दिल व दिमाग़ में अल्लाह और उसका रसूल रच जाए। कीड़े की तरह गुनाह ही गुनाह हैं, गंदगी ही गंदगी है क्या दिखाएंगे अल्लाह तआला को यह क़ाफ़िला कैसा है? जो राह में भटक चुका है, मंज़िल भी भटक चुका है, मता भी लुटा चुका है, फिर भी मस्त है। यह कैसा कारवाँ है?

अल्लाह के वास्ते भाईयो! मेरी बात समझो मैं कोई मुक़र्रिर नहीं हूँ, मैं खुद दर्दमंद हूँ, मैं खुद इस मंज़िल तक पहुँचना चाहता हूँ, शोर मचा रहा हूँ शायदा कोई और भी साथ चलने वाला मिल जाए अकेले सफ़र करना मुश्किल होता है, मंज़िल भटकी हुई, इन्सानियत भटकी हुई है।

तौबा करो भाईयो इस ज़िन्दगी से जिस पर हम चल पड़े हैं।

यह भी कोई ज़िन्दगी है गाना, नाचना, खाना, पीना, पहनना, पिरोना यह भी कोई ज़िन्दगी है और मरकर जाकर क़ब्रों में सो जाना और भूली बिसरी दास्तान बनकर सफ़हे हस्ती से मिट जाना यह भी कोई ज़िन्दगी है।

ऐ मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना

मेरे भाईयो! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो अपनी उम्मत पर एहसान कर गए और कोई नबी नहीं कर सकता। मौत के वक़्त हर कोई अपनी औलाद को बुलाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत के वक़्त भी खिड़की खोलकर उम्मत को देखा और आख़िरी वक़्त में आप अपनी उम्मत को पुकार रहे हैं।

﴿الصلوة وما ملكت ايمانكم﴾ ऐ मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना, नमाज़ पढ़ते रहना, ग़ुलामों के साथ अच्छा सलूक करना, आख़िरी वक़्त बीवियों को कहते और कुछ हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को कहते, हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को कहते लेकिन उन्हें पूरी उम्मत की फ़िक्र है फिर आवाज़ कमज़ोर हो गइ ﴿الصلوة، الصلوة، الصلوة﴾ यही कहते कहते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया, नमाज़ नमाज़ कहते हुए दुनिया से चले गए।

नमाज़ बन्दे और अल्लाह के बीच बातचीत का ज़रिया है। अल्लाह तआला हदीसे क़ुदसी में फ़रमाते हैं नमाज़ मेरे और बन्दे के बीच आपस में बातचीत है।

मेरा बन्दा कहता है ﴿الحمد لله رب العالمين.﴾

मैं जवाब देता हूँ ﴿حمدني عبدى﴾ मेरा बन्दा मेरी तारीफ़ कर

रहा है,

मेरा बन्दा कहता है ﴿الرحمن الرحيم﴾,

मैं कहता हूँ ﴿اثنى عبدى﴾ मेरा बन्दा मेरी सना कर रहा है,

बन्दा कहता है ﴿مالك يوم الدين﴾

मैं कहता हूँ ﴿مجدنى عبدى﴾ मेरा बन्दा मेरी बुज़ुर्गी बयान कर रहा है.

मेरा बन्दा कहता है ﴿اياك نعبد واياك نستعين﴾ तुझ ही से मांगते हैं और तेरी ही इबादत करते हैं,

मैं कहता हूँ ﴿هذا بينى وبين عبدى﴾ यह मेरे और मेरे बन्दे के दर्मियान है,

इबादत मेरे लिए और मांगना मेरे बन्दे के लिए है। ऐ बन्दे! मांग अब मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जेह हूँ अब जो तू मांगेगा तुझे दूँगा।

नमाज़ की पाबन्दी करो और कराओ

अज़ान हो जाए तो सारे बाज़ार बन्द हो जाएं। कैसी अजीब बात है कि हड़ताल हो जाए तो ज़बर्दस्ती बन्द करवाने पड़ते हैं। अज़ान हो तो सारे बाज़ार खुले पड़े हैं। अज़ान के बाद नमाज़ के लिए बाज़ार बन्द करवाएं फिर देखो कैसा सोना बरसता है आपकी दुकानों में।

बाज़ार सुनसान हो जाएं, क्या हुआ? कहा नमाज़ हो रही है। इधर नमाज़ों को भी दुकानों के ताबे कर देते हैं। कहीं एक बजे, कहीं डेढ़ बजे, कहीं दो बजे। एक भाई इधर पढ़ लें, एक भाई उधर पढ़ लें, दुकानें चलती रहें दुकानें बंद न हों। बंद कर दो दुकानों को अज़ान के बाद।

जो काम अज़ान से पहले बन रहा था अभी वही काम दुकान बंद करने से बनेगा। अल्लाह के सामने सिर झुकाओ कि नमाज़ से इश्क़ हो जाए।

हदीस में आता है ﴿جعلت عيني في الصلوة﴾ मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।

जो सही तरीके से नमाज़ पढ़ता है अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला मुसल्ले पर बैठे बैठे उसका मस्अला हल कर देगा। फिर थानेदार या किसी वज़ीर के पास जाना नहीं पड़ेगा। इसका जाएनमाज़ काफी है। कौन सी नमाज़? जब कहे अल्लाहु अकबर तो सलाम फेरने तक और कोई न आने पाए निगहबान बिठा दें ख़बरदार! अब कोई न आए। यह नमाज़ आप सीख लें। अल्लाहु अकबर अल्लाह के सिवा कोई न आए सलाम फेरने तक आप हों और अल्लाह हो। फिर देखो कि इस नामज़ से क्या होता है।

नमाज़ों को सीखो

मेरे भाईयो! यह सीखना पड़ेगा। नमाज़ पढ़िए। यह नमाज़ ऐसे नहीं आएगी। मेहनत करने से यह नमाज़ पैदा होगी। इतनी जाज़्बियत है नमाज़ में कि एक आदमी कहता है कि मैं हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए जूता हाथ में, वुज़ू का पानी टपक रहा है। जूते को रखा नमाज़ की नियत बाँधी, कहता है कि मैं देखता रहा कि कहाँ रुकू करते हैं जो गाड़ी चली चलती रही यहाँ तक कि ﴿والناس﴾ पर जाकर रुकू किया। एक रकूअत में पूरा क़ुरआन हमें तो क़ुल हुवल्लाहु अहद लम्बी नज़र आती है।

तो नमाज़ सीखो भाई! लोग चारों रक्अतों में क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ रहे हैं। चार सूरतें तो याद कर लें ताकि हर रक्अत में अलग अलग सूरत पढ़ ली जाए। एक ही सूरत को चारों रक्अतों में पढ़ना मकरुह है। नमाज़ तो हो जाएगी लेकिन कम से कम चार सूरतें याद कर लें।

दुआए क़ुनूत नहीं आती तो वहाँ भी क़ुल हुवल्लाहु अहद। अब भाई "क़ुल हुवल्लाहु अहद" से दुआए क़ुनूत कैसे अदा होगी अगर "रब्बना आतिना फ़िद्दुनिया" पढ़ लें तो ज़िक्र हो जाएगा लेकिन दुआए क़ुनूत की जगह क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ लें तो लौटाना पड़ेगी अगर दुआए क़ुनूत नहीं आती तो "रब्बिज अलनी मुक़ीमिस्सलाति" पढ़ लें या "रब्बा आतिना फ़िद्दुनिया" पढ़ लें तो नमाज़ हो जाएगी दुआए क़नूत याद होने तक। वितर "क़ुल हुवल्लाहु अहद" पढ़ने से अदा नहीं होती। मेरे भाईयो नमाज़ को सीखें। ऐसी नमाज़ कि अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम तक किसी का ध्यान न आए।

अल्लाह की मुहब्बत में रोने की लज़्ज़त

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम हम लुटे हुए मुसाफ़िर हैं, हम लुटे हुए राही हैं, हमें पता नहीं लज़्ज़त किसे कहते हैं, ज़िन्दगी किसे कहते हैं। जो रोटी खाने की लज़्ज़त उठाता हो तो उसे क्या ख़बर कि ज़िक्र की लज़्ज़त क्या है? जो नज़र उठाने की लज़्ज़त जानता हो तो उसे क्या ख़बर कि नज़र झुकाने की लज़्ज़त क्या है। जिस आदमी को नमाज़ की लज़्ज़त महसूस नहीं होती उससे बड़ा कोई महरूम नहीं होगा। हाय हाय करोड़ों की आबादी में कोई ऐसा नज़र आए जिसको नमाज़ की लज़्ज़त नसीब हो।

यह तो हम नमाज़ पढ़ने वालों पर रोते हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते हैं उन पर तो ख़ून के आँसू रोएं तो भी कम है। जो नमाज़ पढ़ते हैं उन्होंने कभी बैठकर सोचा कि ऐ मौला तेरी मुहब्बत का सज्दा तुझे नहीं दे सका, तेरे तअल्लुक़ की एक रक्अत भी नहीं पढ़ सका। ऐ अल्लाह अब तो आजा

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़िलवत हो गई

नमाज़ के हैरतअंगेज़ फ़ज़ाईल

जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आसमान सजाए जा चुके हैं, अल्लाह तआला अर्श पर आपका इन्तिज़ार कर रहे हैं। फिर बैतुअल्लाह से बैतुलमुक़द्दस पहुँचे। नमाज़ का तोहफ़ा अर्श पर मिला है। यह इतनी अज़ीमुश्शान चीज़ है। जहाँ वक़्त हो अज़ान देकर नमाज़ पढ़िए। जब आप अज़ान देंगे तो जहाँ तक आवाज़ जाएगी क़यामत के दिन हर हर पत्थर आपकी गवाही देगा। हर पेड़ और पत्ता आपकी गवाही देगा, जहाँ आप सज्दे में सिर रखेंगे तो तहतुस्सरा तक ज़मीन पाक हो जाती है। हदीस में आता है कि जब आदमी ज़मीन पर सिर रखता है तो अल्लाह तआला के क़दमों पर सिर रखता है। जब अल्लाहु अकबर कहता है तो ज़मीन व आसमान का ख़ला नूर से भर जाता है। अर्श के पर्दे उठ जाते हैं, जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और जन्नत की हूरें जन्नत के दरवाज़े खोलकर नमाज़ी को देखती हैं। जितना लम्बा क़याम करेगा उसकी मौत की सख़्ती आसान होती चली जाएगी। लम्बी नमाज़ मौत की सख़्ती को तोड़ देती हैं। जब रुकू से खड़ा होता है तो अल्लाह

तआला मुहब्बत की निगाह से देखते हैं। सज्दे में जाता है तो सारे गुनाह इसके धुल जाते हैं। जब अत्तहियात पढ़ता है तो साबिरीन को अज्र मिलता है, जब नमाज़ में दरूद पढ़ता है तो अल्लाह पाक दस दफ़ा दरूद भेजता है। जब सलाम फेरता है तो गुनाहों से पाक हो जाता है।

नमाज़ियों के पाँच दर्जों की तफ़सील

इब्ने क़य्यिम रह० ने नमाज़ियों के पाँच दर्जे बताए हैं:—

1. पहला दर्जा सुस्त कभी पढ़ी कभी छोड़ दी यह जहन्नम में जाएगा।
2. दूसर दर्जा है बेक़ायदा पढ़ने वाला, अपने ध्यान में पढ़ता है अल्लाह का ध्यान नहीं आया। इसकी डांट डपट होगी।
3. ﴿معانه مغفور عنه﴾ तीसरा यह है कि कोशिश करता है लेकिन ध्यान नहीं जमता कभी ध्यान आता है कभी निकल जाता है। यह रियायती नम्बरों से पास हो जाएगा कि पैंतीस नम्बर तो दे दो कि इसने कोशिश तो की।
4. चौथा महजूर है। अल्लाहु अकबर कहता है तो दुनिया से कट जाता है। अल्लाह से जुड़ जाता है। यह जो सलाम फेरते हैं इसकी हिकमत यह है जब आदमी अल्लाहु अकबर कहता है तो वह ज़मीन से उठ जाता है और आसमानों में दाख़िल हो जाता है। अब वह ज़मीन पर नहीं बल्कि गया हुआ है। जब नमाज़ ख़त्म हुई तो वापस आया तो इधर वालों को भी सलाम करता है और उधर वालों को भी सलाम करता है। यह दर्जा चौथा यहाँ से नमाज़ का अज्र शुरू होता है। इस

नमाज़ी की ज़िन्दगी कभी ख़राब नहीं होगी।

5. पाँचवा दर्जा नमाज़ का वह है जो मुक़र्रिबीन की नमाज़ अंबिया, सिद्दीक़ीन की नमाज़, उनकी आँखों की ठंडक नमाज़ बन जाती है।

(सिर्फ़) जुमा की नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तंबीह

इनके क़दम पाँचों नमाज़ों में क्यों नहीं उठते? ये कहाँ चले जाते हैं? क्या ये ज़मीन पर आठ नहीं रहते? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन अल्लाह की हवा टनों टन अपने अन्दर ले जाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन अल्लाह के दिए हुए नूर से देखते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन कानों से सुनते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन अपने जिस्म की नेमतों से फ़ायदा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन सूरज की रौशनी से फ़ायदा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन तारों की झिलमिलाहट से नफ़ा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन बीवी बच्चों के पास बैठते हैं? इस पत्थर दिल को क्या हुआ? क्यों नहीं इसके दरवाज़े पर दस्तक पहुँचती? यह क्यों वीरान हो गया? ऐसे तो पत्थर भी सख़्त नहीं।

पत्थर दिल इन्सान

अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० कहा करते थे ऐ हिन्दुस्तान वालो! तुम्हें इतना क़ुरआन सुनाया कि हरम को सुनाता तो साबुन बन जाती, मैं पत्थरों को सुनाता तो मोम हो जाते, मैं दरियाओं को सुनाता तो तूफ़ान थम जाते और मैं मौजों को सुनाता तो उनकी

तुग़यानी रुक जाती। पता नहीं तुम किस चीज़ के बने हो? किस ख़मीर से बने हो? तुम्हारे सीनों में दिल नहीं हैं पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हैं।

﴿او اشد قسوة من الحجارة﴾ पत्थर भी अल्लाह की हैबत से लरज़ता है, काँपता है पर तुम कौन से इन्सान हो कैसे सीनों में दिल लिए फिरते हो?

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की कैफ़ियते नमाज़

यह उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आ रहे हैं, मस्जिद में आ रहे हैं, अपनी इन्फ़िरादी नमाज़ को आ रहे हैं। जूता इधर रखा अल्लाहु अकबर की नियत बाँधी और "अलिफ़-लाम-मीम" से नमाज़ शुरू की। अब्दुर्रहमान बिन तैमी रज़ियल्लाहु अन्हु इनके पास बैठे वह सुनने लग गए कि यह "अलिफ़-लाम-मीम" से शुरू हो गए। उनको ख़्याल हुआ कि देखूँ तो सही भला कहाँ रुकू करते हैं?

बक़रा गुज़र गई, आले इमरान गुज़र गई, माएदा गुज़र गई, इनआम गुज़र गई, ऐराफ़ गुज़र गई, दस पारे गुज़र गए, बीस पारे गुज़र गए, तीस पारे गुज़र गए "वन्नास" पर जाकर रुकू किया ﴿ورحمة منتظرة﴾ इन्फ़िरादी आमाल का हलक़ा लगा हुआ है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा का नमाज़ का एहतिमाम

यह अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए हैं कह रहे

हैं भाई आज की रात क़याम की है अल्लाहु अकबर फ़ज्र की अज़ान पर जाकर रुकू होता है, कहते हैं आज की रात मेरी रुकू की है। सारी रात रुकू में खड़े हैं, फ़ज्र की अज़ान पर जाकर रुकू ख़त्म होता है, आज मेरी रात सज्दे की है। सारी रात सज्दे में हैं, फ़ज्र की अज़ान पर जाकर सज्दे से सिर उठाया जाता है।

यह इन्फ़िरादी आमाल का हल्क़ा है तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि अगर सिर्फ़ नमाज़ ज़िन्दा हो जाएग पूरे सिन्ध में कोई बे नमाज़ी न रहे तो यह सिन्ध की ज़मीन जो हम सारे रास्ते देखते हुए आए हैं कि बंजर पड़ी हुई है। यही ज़मीन सोना उगलने लग जाएगी।

तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई! अब तो आजा

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का नौकर आया। कहा जी बाग़ सूख रहा है अगर पानी न मिला तो सूख जाएगा तो उस वक़्त नहरें तो थीं नहीं, ट्युबवैल भी नहीं थे, कहने लगे अच्छा मुसल्ला लाओ, बिछाया अल्लाहु अकबर फिर नफ़ल शुरू कर दिए, लम्बी रकूअतें पढ़ीं, फिर सलाम फेरा देखो भाई नीचे कुछ नज़र आया कहा जी कुछ भी नहीं, कहा अच्छा! फिर अल्लाहु अकबर फिर नफ़ल शुरू कर दिए। दो नफ़ल पढ़े बोले भाई कुछ नज़र आया। कहा वह दूर से एक परिन्दे के पर के बराबर बादल नज़र आया है। अच्छा अल्लाहु अकबर फिर नफ़ल शुरू कर दिए। सलाम फेरने से पहले बारिश झमाझम बादल आया और बाग़ के ऊपर झा गया। जब सलाम फेरा बारिश हो गई। पानी भर गया। नौकर से कहा कि जाओ देखो कि बारिश कहाँ कहाँ हुई है? जब

जाकर देखा तो बाग़ की चार दिवारी के अन्दर अन्दर थी, बाहर एक बूँद भी न था।

सिर्फ़ नमाज़ सिन्ध में ज़िन्दा हो जाए, कोई बेनमाज़ी न हो और अन्दर के ज़ौक़ से भागें इसलिए नहीं कि हमें दुनिया मिले, इसलिए कि मेरा अल्लाह मुझे मिल जाए।

भुलाता हूँ फिर भी वे याद आते हैं

अबू रैहाना रज़ियल्लाहु अन्हु जिहाद के सफ़र से आए। घर में पहुँचे तो रात को इशा की नमाज़ के बाद बीवी से कहने लगे दो नफ़ल पढ़ लूँ फिर बैठकर बातें करते हैं। दो नफ़ल अल्लाहु अकबर, अब बीवी बैठी हुई कि "क़ुल हुवल्लाह" से रुकू कर देगा, लम्बे सफ़र से आया तो कोई बैठकर बातचीत होगी वह "क़ुल हुवल्लाह" क्या वह तो "अलिफ़-लाम-मीम" चलते चलते फ़ज्र की अज़ान हुई और अबू रैहाना ने सलाम फेरा तो बीवी ग़ुस्से से बिफर गई,

﴿اما لى منك نصيب﴾ मेरा हक़ कहाँ गया? ﴿تعبت واتعبتنى﴾ मुझे भी थका दिया ख़ुद भी थका। एक जुदाई का सदमा एक क़रीब आकर तड़पाया, मेरा हक़ कहाँ गया?

कहने लगे माफ़ करना भूल गया। कहा तेरा अल्लाह भला करे कैसे भूल गया? यहाँ तो चिल्ले में दो सौ मील दूर भी नहीं भूली जाती यह एक कमरे में भूल गया कैसे भूल गया? कहा जब अल्लाहु अकबर कहा तो जन्नत सामने आ गई तो सब भूल गया।

मुर्दा गधे को ज़िन्दगी मिल गई

मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते हम इस ज़िन्दगी की तरफ़ लौट जाएं जिसमें दुनिया और आख़िरत की कामयाबी छिपी हुई है। वह अल्लाह उसके रसूल की पसन्दीदा ज़िन्दगी है।

नबाता बिन यज़ीद नख़ई अल्लाह के रास्ते में निकले। गधा मर गया। साथियों ने कहा सामान हमें दे दो। कहा नहीं चलो मैं आ रहा हूँ। एक तरफ़ गए अल्लाहु अकबर नमाज़ की नियत बाँधी दो रकअत पढ़ी सलाम फेरा,

ऐ अल्लाह! ﴿عبدك في سبيلك﴾ ऐ मौला! तेरा बन्दा तेरे रास्ते में है, ﴿يحيى العظام﴾ ऐ वह ज़ात! जो हड्डियों को ज़िन्दा कर देता है। मुझे सवारी की ज़रूरत है तू ग़नी है और मैं मुहताज हूँ तो मैं इस सवारी के बग़ैर सफ़र कैसे करूँ? उठा दे इस गधे को फिर उठे और छड़ी ली और मुर्दा गधे को मारी कहा उठ! और वह कान हिलाता हुआ उठ खड़ा हो गया। एक छड़ी से जो नमाज़ मर्दों में रूह फूंक दे वह दुनिया के मसाइल हल नहीं करवा सकती मगर नमाज़ तो हो।

अल्लाह के हबीब की पक्की ख़बर है नमाज़ सीख लो। जो काम बड़े बड़े बादशाहों से और जहाँ सारे रास्ते टूट जाते हैं आपकी नमाज़ वहाँ भी पार ले जाएगी।

समुंद्र में घोड़ों की दौड़

हज़रत अली बिन हिज्र रह० समुंद्र के किनारे आए। बेहरीन पर हमला करना था। दर्मियान में समुंद्र था, किश्तियाँ भी नहीं

थीं, किश्तियों का इन्तेज़ाम करते तो आगे दुश्मन चौकन्ना हो जाता फिर सफ़र भी चौबीस घंटे का तो वहीं खड़े हुए लश्कर मौजूद है नीचे उतरे दो रकअत नफ़्ल पढ़े हाथ उठाए,

ऐ अल्लाह! तेरे रास्ते में, तेरे दीन की दावत में, तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं, कश्तियाँ हमारे पास नहीं, मुश्किल तेरे लिए नहीं हमारे लिए रास्ता मुहैय्या फ़रमा दे।

यह दुआ मांगी और खड़े हुए और सामने समुंद्र है और फ़ौज से फ़रमाया,

"बिस्मिल्लाह पढ़ो और घोड़े डाल दो।"

कोई नहीं बोला कि अमीर साहब दिमाग़ तो ठीक है तेरा?

समुंद्र में घोड़े डालेंगे तो डूब ज़ाएंगे, यह क्या कह रहे हो? कोई अक़्ल ठिकाने है? उन्होंने कहा ठीक है हमारे अमीर ने दो रकअत पढ़ ली हैं और अल्लाह से मांग लिया है, घोड़े डालना हमारा काम है, पार करना अल्लाह का काम।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं ﴿فسمعنا فتحمنا﴾, सारे लश्कर ने कहा बिस्मिल्लाह और सबने डाल दिए ऊँट और घोड़े तो हज़रत अबू हुरैरहा रज़ियल्लाहु फ़रमाते हैं ﴿وقتحمنا﴾ हम ने छलांगे लगाई ﴿فلما عبرنا وما يبلل ماء اسفل خفاف ابلنا﴾ हमने पानी के ऊपर पड़े और पानी ने हमारे ऊँटों के पैर भी तर नहीं किए

यह नमाज़ की ताक़त है पानी के ऊपर चल भाई सारी दुनिया की साइंस फेल है मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साइंस कामयाब है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी, आपकी ख़बर सारी ख़बरों से ऊपर है। सारी साइंस यहाँ फेल हो जाए।

यहाँ अल्लाह के नबी की ख़बर कामयाब करवा दे। दो रकअत पढ़ चल पानी के ऊपर।

ऐ समुंद्र मेरे लोटे को वापस कर दे वरना!

हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० यह ताबई हैं तो शाम में पहाड़ी दरिया था। पहाड़ी दरिया तो बड़ा तेज़ होता है ना। आप ऊपर चले जाएं देखिए कि कितना तेज़ होता है तो तीन हज़ार का लश्कर पार करना था। आगे कोई किश्ती वहाँ चल नहीं सकती पार होना तो दूर की बात है।

दो रक्अत नफ्ल पढ़े और दुआ की कि ऐ अल्लाह! तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती हैं तूने बनी इसराईल को पार किया था। हमें दरिया पार करवा दे।

और फिर ऐलान किया कि मैं घोड़ा डाल रहा हूँ मेरे पीछे घोड़े डाल दो। जिसका कोई सामान गुम हो जाए उसका मैं ज़िम्मेदार हूँ जान तो बड़ी बात है। सामान भी गुम हो जाए तो मैं ज़िम्मेदार हूँ।

घोड़े डाले पानी के ऊपर चला दिए, बीच में एक आदमी ने अपना लोटा खुद फेंक दिया। खुद ही आज़माने के लिए फेंक दिया। जब किनारे पहुँचे तो पूछा भाई किसी का कोई सामान! हाँ जी मेरा लोटा गिर गया। लोटा तो मामूली सा है उसे कहाँ जाना चाहिए। वहाँ तो पत्थर भी बह रहे हैं। कहने लगे अच्छा तेरा लोटा गुम हो गया आओ मेरे साथ वापस आए फिर दरिया के किनारे पर आए तो लोटा दरिया के किनारे पर पड़ा हुआ था। लो भाई संभाल लो।

मसनून अज़्कार के लिए वक़्त निकालें

यह नमाज़ की ताक़त है तो नमाज़ सीख लें। सारे मस्अले हल हो जाएंगे तो भाई जहाँ जहाँ अपनी औरतों को नमाज़, अपने बच्चों को नमाज़, अपनी बच्चियों को नमाज़ सिखाओ, नमाज़ याद करवाएं, ख़ुद नहीं आती तो याद करें। क़ुरआन की तिलावत के लिए वक़्त निकालें, अल्लाह के ज़िक्र के लिए वक़्त निकालें, दरूद शरीफ़ के लिए वक्त निकालें, इस्तिग़फ़ार, दरूद शरीफ़ चलते फिरते उठते बैठते हर वक़्त इसकी आदत डालें। क़ुरआन पाक पढ़ने की आदत डालें। अल्लाह का कलाम है पढ़ना चाहिए, महबूब का कलाम दुनिया और आख़िरत की कामयाबियों का इल्म है। निजात के सारे असबाब इसमें बताएं गए हैं, ठीक है भाई?

महीने में तीन दिन की जमाअत जिन्नाह सुपर मार्केट से निकलनी चाहिए। जहाँ जहाँ से आप आएं हैं। अपने-अपने महल्लों की तीन तीन दिन की जमाअतें बना बनाकर निकालें। इसका इन्तेज़ार न करो कि हमें कुछ नहीं आता औरों को क्या कहें? तुम निकलो दावत देना शुरू करो। यह बोलना इतना ताक़तवर है कि आप उठते चले जाएंगे और आपके ज़रिए और आते चले जाएंगे।

बेनमाज़ी से बड़ा कोई मुजरिम नहीं

जिस ज़मीन पर सज्दा अदा न हो। इससे बड़ा भी कोई जुर्म है? ज़िना करने को गुनाह समझते हैं, नमाज़ को छोड़ना ज़िना से बड़ा जुर्म है, रिश्वत खाने को जुर्म समझते हैं नमाज़ को छोड़ना

रिश्वत से बड़ा जुर्म है, क़त्ल करना बड़ा जुर्म समझते हैं नमाज़ का छोड़ देना क़त्ल से बड़ा जुर्म है। सज्दे ही का इंकार किया था शैतान ने।

शैतान ने कोई ज़िना नहीं किया था, कोई क़त्ल नहीं किया था, कोई शराब नहीं पी थी, कोई जुवा नहीं खेला था, कोई शिर्क नहीं किया था।

शैतान सज्दे से इंकारी हुआ, एक सज्दा का इंकार करके हमेशा के लिए मरदूद हो गया। इस मुसलमान को होश नहीं जो रोज़ाना पाँच दफ़ा बीसियों सज्दों का इंकार किए बैठा हुआ है और फिर आराम से रोटी खाता है, आराम से चाय पीता है, आराम से कहक़हे लगाता है, आराम से अख़बार पढ़ता है, आराम से बीवी के पहलू में लेटता है।

एक सज्दे का इंकारी होकर शैतान हमेशा के लिए मरदूद हुआ जिसने फ़ज्र के सज्दों का इंकार किया फिर ज़ोहर के सज्दों का मज़ाक उड़ाया, फिर अस्र का मज़ाक़ उड़ाया, फिर मग़रिब और इशा का मज़ाक उड़ाया। घर में पढ़ लेना भी चलो न पढ़ने से तो बेहतर है पर यह भी नमाज़ के साथ मज़ाक ही है और आठवें दिन सिर पर टोपी रखकर आया, आठ दिन जिसने इतने सज्दों का इंकार किया वह इस बात से नहीं डरता कि कहीं अल्लाह मरदूद न कर दे।

अल्लाह के रसूल क़यामत के दिन जब देखेंगे हमारी नाफ़रमानियाँ तो कहेगा!

﴿يارب ان قومي اتخذوا هذا القرآن مهجورا.﴾

ऐ मेरे मौला! यह ही मेरी वह उम्मत है जिसने मेरे क़ुरआन

को छोड़ दिया मेरे क़ुरआन ने पुकारा, मस्जिद में आओ, इन्होंने मस्जिद की राहें छोड़ दीं।

जुमा जुमा नमाज़ पढ़ने वालों के लिए तंबीह

मुझे बताओ! यह इतना मजमा कहाँ से आ गया? ये इसमें से एक तिहाई बाहर से आया होगा यह दो तिहाई तो सारा गुलिस्तान कालोनी का है। इनके क़दम पाँच नमाज़ों में क्यों नहीं उठते?

ये कहाँ चले जाते हैं? क्या ये ज़मीन पर आठ दिन नहीं रहते? क्या ये सिर्फ़ आठवे दिन अल्लाह की हवा टनों टन अपने अन्दर ले जाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन अल्लाह के दिए हुए नूर से देखते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन कानों से सुनते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन अपने जिस्म की नेमतों से फ़ायदा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन सूरज की रौशनी से फ़ायदा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन तारों की झिलमिलाहट से नफ़ा उठाते हैं? क्या ये सिर्फ़ आठवें दिन बीवी बच्चों के पास बैठते हैं? इस पत्थर दिल को क्या हुआ? क्यों नहीं इसके दरवाज़े पर दस्तक पहुँचती? यह क्यों वीरान हो गया? ऐसे तो पत्थर भी सख़्त नहीं।

नमाज़ अल्लाह के ध्यान से पढ़ो वरना!

यह कितनी बेवक़ूफ़ी है कि पाँच वक़्त की नमाज़ पर आख़िरत को समझा हुआ है कि आख़िरत बन गई। हम पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ते हैं और जहाँ हमेशा रहना है वहाँ की मेहनत सिर्फ़ दो घंटे। अब तो दो घंटे भी नहीं लगे, दस मिनट में इशा की नमाज़ पढ़कर फ़ारिग़ हो जाते हैं जो सबसे लम्बी नमाज़ है।

परसों मैंने एक आदमी को मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हुए देखा। मैं अन्दर ही अन्दर ख़ून के आँसू रो रहा था कि यह तो नमाज़ियों का हाल है। वह कोई डेढ़ मिनट में चार रकअत पढ़कर फ़ारिग़ हो गया और कहा बस अब जन्नत हमारी हो गई और जहाँ रहना नहीं है वहाँ सारा दिल, दिमाग़ भी लग रहा है दिल भी लग रहा है और जहाँ हमेशा रहना है वहाँ पाँच वक़्त की नमाज़ और वह भी 95 फ़ीसद छूट चुकी है।

कितने हैं जिन्होंने आज तक सुबह का सवेरा नहीं देखा, सूरज की किरनों से उठते हैं, कभी उन्हें सुबह सज्दे की तौफ़ीक़ नसीब नहीं हुई, कितने घर ऐसे हैं कि एक ज़बान से भी क़ुरआन के अल्फ़ाज़ अदा नहीं होते, कितने घर हैं जो क़ुरआन की तिलावलत से महरूम हैं, कितने घर हैं जो नमाज़ के सज्दे से महरूम हैं।

अल्लाह वालों के नज़दीक बादशाहों की अहमियत

न बच्ची न बच्चा न मर्द न औरत न बूढ़ा न बूढ़ी किसी एक को भी सज्दे की तौफ़ीक़ नसीब नहीं, कितनी बड़ी गिरावट है, कितनी बड़ी हलाकत है तो हर मुसलमान मर्द व औरत उसे अल्लाह के पास जाना है वह उसकी तैयारी करके अल्लाह की बारगाह में हाज़िर हो।

मियाँ मीर लाहौर वाले बैठे हुए थे उनका एक मुरीद बाहर से अन्दर आया हज़रत हज़रत कहता हुआ। उन्होंने पूछा क्या हुआ? बताया शाहजहां आ रहा है। उन्होंने कहा तेरा भला हो जाए मैं समझा तूने जूँ मारी है जो कह रहा है हज़रत मैं ने जूँऐं मारी हैं।

शाहजहाँ उनको जुओं से भी कम नज़र आ रहा था।

जिसको नमाज़ पढ़नी आ गई उसके सारे काम मुसल्ले से हो जाएंगे। नमाज़ सीख लें। नमाज़ सीखना क्या है? अल्फ़ाज़ सीखें, उसका इल्म हो और फिर अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फेरने तक अल्लाह के सिवा कोई और न आए। यह नमाज़ घर बैठे नहीं आएगी नहीं आ सकती। अल्लाहु अकबर अब किसी को मत आने दो, दरवाज़े बन्द कर दो दिल के। इसके लिए घर छोड़ना पड़ेगा। घर बैठे नहीं होगा, नहीं हो सकता है। यह मुफ़्त सौदा नहीं कि अल्लाह तआला घर में बैठे बैठे दे दें। धक्के खाने पड़ेंगे तब जाकर अल्लाह नसीब फ़रमाएगा।

तो वह करो जो अल्लाह चाहता है। अल्लाह की चाहत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाहत हैं और उस पर आने का रास्ता नमाज़ है कि नमाज़ को ढंग से पढ़ना सीखिए। पैसे के बग़ैर काम दुआओं से होंगे। वे काम होंगे जो काएनात में किसी से नहीं हो सकते, दुआओं से वे काम होंगे।

मैंने तुम्हें मुफ़्ती नहीं बनाया

मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन मुहतमिम दारुल उलूम फ़ैसलाबाद कहते हैं कि मैं रेल गाड़ी में सफ़र कर रहा था। मग़रिब का वक़्त हो गया तो मैं उठा क़िबले का रुख़ देखने के लिए बाहर जाने लाग एक आदमी कहने लगा सूफ़ी जी! हर जगह नमाज़ हो जाती है। सीट पर बैठकर पढ़ लो जैसे आपने देखा होगा की रेलगाड़ी में सीट पर बैठे बैठे पढ़ रहे हैं। न क़िबले रुख़ न क़याम यह दोनों फ़र्ज़ हैं। लोग कहते हैं हो जाती है। नापाक सीट पर बैठकर

नामज़ पढ़ रहे होते हैं। उनको कहो नमाज़ नहीं होती तो कहते हैं कि तुम्हें क्या ख़बर हो जाती है। उनको क्या पता मुफ़्ती साबह से बात कर रहा हूँ। मुफ़्ती साहब कहने लगे भाई मैंने अभी फ़तवे का काम तुम्हारे सुपुर्द नहीं किया। वह क़िबला देखकर नमाज़ पढ़ने लगे तो उसने किसी से पूछा कि यह कौन है? तो कहा मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन हैं फ़ैसलाबाद के। वह आदमी भी फ़ैसलाबाद का था। वह उनका नाम जानता था लेकिन शक्ल से नहीं जानता था। तो जब वह नमाज़ पढ़कर आए तो कहने लगे माफ़ कर देना मुझे पता नहीं था कि आप हैं। उन्होंने कहा आप का क़ुसूर नहीं है आज सारी उम्मत ही मुफ़्ती है। लोग क्या क्या बातें बनाते हैं। इसको देखो यह कहाँ की तबलीग़ है? बूढ़े माँ-बाप छोड़कर जाओ माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है उनकी ख़िदमत करो। यही जन्नत है हलाल खाओ यह भी जन्नत है, नमाज़ पढ़ो यह भी जन्नत है। यह ख़त्मे नुबुव्वत का बिला वजह का झगड़ा डाला हुआ है। फिर ख़त्मे नुबुव्वत की भी छुट्टी छः अरब इन्सानों पर ज़ुल्म हो रहा है। वह जहन्नम में जा रहे हैं।

हम कहते हैं हमारे ज़िम्मे नहीं है। अच्छा हमारे ज़िम्मे नहीं है तो किसके ज़िम्मे है? कौन जाए? उन्होंने कहा किताब भेज दो। किताब तो मुर्दा चीज़ है उससे ज़िन्दगी कैसे समझ में आएगी? किताब तो नुक़ूश हैं उससे क्या पता चलेगा कि अख़्लाक़ किसे कहते हैं।

चार कामों का एहतिमाम करो

पहला काम ज़िक्र की कसरत

पहला काम जो कसरत से करने का है उसकी तफ़सील मैंने

आपको बतला दी है। बस नमाज़ को अल्लाह के क़ुर्ब का ज़रिया समझकर पढ़ें।

दूसरा काम क़ुरआन मजीद की तिलावत करो

क़ुरआन मजीद की कसरत से तिलावत करें कि यह मेरे महबूब का कलाम है। महबूबा का ख़त तो बड़े शौक़ से तवज्जोह से पढ़ते हैं मगर ख़ालिक़ का कलाम बेतवज्जोही से पढ़ते हैं। आपको और हमें इस कलाम की ताक़त का अन्दाज़ा नहीं।

हम क़ुरआन के नग़मे को नहीं जानते कि यह किस तरह रूह के तारों को चीरता है। वह काफ़िर होकर क़ुरआन को जानते थे। क़ुरआन उनको हिला देता था गर्मा देता था तड़पा देता था। अबू जहल ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा था कि वाक़ई तू ही मक्का में ऐसा है जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़त्ल कर सकता है और कोई ऐसा नहीं। नफ़रत और दुश्मनी में इतना आगे थे। जिसके बारे में उम्मे लैला के शौहर ने कहा था—

ख़त्ताब का दादा तो मुसलमान हो जाएगा लेकिन ख़त्ताब का बेटा मुसलमान नहीं होगा।

क़ुरआन ने पत्थर दिल को मोम कर दिया

वह उमर बिन ख़त्ताब पर्दे के पीछे छिपकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ुरआन सुनते थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को हरम में आकर नफ़्लों में क़ुरआन पढ़ते थे तो कुछ इधर छिपकर और कुछ उधर छिपकर क़ुरआन सुनते थे। इसके अन्दर माईनों का जो चढ़ाव है वह उनको हिला देता

था। उमर पीछे छिपकर क़ुरआन सुन रहे हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तिलावत की,

بسم الله الرحمٰن الرحيم٥

الحاقة ٥ ما الحاقة٥ وما ادراك ما الحاقة ٥ كذبت ثمود وعاد بالقارعة٥ فاما ثمود فاهلكوا بالطاغية٥ واما عاد فاهلكوا بريح صرصر عاتية ٥ سخرها عليهم سبع ليال وثمنية ايام حسوما فترى القوم فيها صرعى كانهم اعجاز نخل خاوية٥ فهل ترى لهم من باقية٥ وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكت بالخاطئه٥ فعصوا رسول ربهم فاخذهم اخذة رابية ٥ انا لما طغا المآء حملنكم في الجارية٥ لنجعلها لكم تذكرة وتعيها اذن واعية ٥ فاذا نفخ في الصور نفخة واحدة ٥ وحملت الارض والجبال فد كتا دكة واحدة٥ فيومئذ وقعت الواقعة٥ ﴿سورة الحاقة﴾

इनको सुनकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु झूम रहे हैं एक दम ज़बान से निकला ﴿ماشعاه﴾ क्या ही ज़बरदस्त शायर है।

इधर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से ये बोल निकले, उधर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तिलावत फ़रमाई,

فلا اقسم بما تبصرون وما لا تبصرون انه
لقول رسول كريم وما هو بقول شاعر.

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु एकदम काँप गए। (नऊज़ुबिल्लाह) दिल में आया कितना बड़ा जादूगर है इतनी दूर की बात को सुन लिया। फ़ौरन अगली आयत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी ﴿ولا بقول كاهن﴾ यह जादू नहीं है। ﴿تنزيل من رب العالمين﴾ वह रब्बुल आलमीन का उतारा हुआ कलाम है। अब क्या करें? हम तो क़ुरआन के नग़मे को भूल गए। एक बद्दू ने यह आयत सुनी—

﴿فاصدع بما تؤمروا عرض عن المشركين انا كفينك المستهزئين.﴾

बद्दू ने कलाम (क़ुरआन) को माना नहीं लेकिन समझकर ज़मीन पर जा गिरा। अपने ऊपर क़ाबू नहीं पा सका। हमें लौंडी का गाना तड़पाता है। अल्लाह का कलाम नहीं तड़पाता अगर हमें क़ुरआन का पता होता तो हम बेक़रार होकर दूसरों के पीछे फिरते। क़ुरआन सुनने के लिए क़ुरआन ने सारी काएनात को आजिज़ कर दिया। सिर्फ़ अल्फ़ाज़ में इतनी ताक़त है। यह वह कलाम है मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाल में बोलता है। उससे कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता।

यह ऐसा कलाम है जो पहाड़ को भी रेज़ा रेज़ा कर दे

जो क़ुरैश मक्का थे वह हर दिन हर वक़्त गालियाँ निकालते थे। जब रात को तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ते तो यह चुपके से आकर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ुरआन सुनते। ऐसी कशिश अल्लाह तआला ने क़ुरआन में रखी है। अबू सुफ़ियान, अबू जहल, अहनस बिन शरीह क़ुरआन ने ऐसा खींचा ज़िन्दगियों को और दिलों के ताले तोड़ दिए।

और एक सहाबी हैं एमाद रज़ियल्लाहु अन्हु उनको लोगों ने कहा हमारा एक क़ुरैशी नौजवान है उसका ज़रा दिमाग़ ठीक नहीं। इससे बचकर रहना। वह कहने लगे कि मेरे दिल में आया कि मैं बड़ा इलाज करता हूँ ऐसे जिन्नात का। मैं इसका जिन्न निकाल दूँगा। ऐसी कोई बात नहीं। वह कहता है कि मैं मस्जिद में आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे हुए हैं मैंने कहा यह कौन है?

उन्होंने कहा यह वही तो है जिसके बारे में हम तुम्हें कहते हैं। मैंने देखा ऐसा हुस्न ऐसा जमाल ऐसा वक़ार। इसका तो इलाज करना चाहिए। मैं उनके पास गया और कहा कि बेटा ग़म न कर मैंने बड़े बड़े जिन्न निकाल दिए हैं और तेरा जिन्न भी निकाल दूँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि सललम ने उसको ग़ौर से देखा। क़ुरआन नहीं पढ़ा सिर्फ़ खुत्बा पढ़ा,

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك لـه ونشهد ان محمدا عبده ورسوله

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पढ़ते पढ़ते यहाँ तक पहुँचे तो कहता है कि मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हो गया। अल्लाह की क़सम! ऐसा कलाम मैंने ज़िन्दगी में अभी तक नहीं सुना था। इसे दुबारा कहो आपने दोबारा पढ़ा तो कलिमा पढ़ लिया।

तो मेरे अज़ीज़ो! अल्लाह ने हमें ऐसी अज़ीम किताब अता फ़रमाई है। दुनिया में ऐसी किताब किसी को नहीं मिली। आसमान से सूरहः इनआम उतरी उसको सत्तर हज़ार फ़रिश्ते लेकर ज़मीन पर आए। यह कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है।

यह किसी इन्सान का कलाम नहीं हो सकता

एक ईरानी आलिम गुज़रा है। उसको इसाईयों ने बहुत पैसे दिए कि तुम क़ुरआन के मुक़ाबले में एक किताब लिखो। उसने कहा तुम एक साल की रोज़ी मेरे बच्चे को दो फिर मैं लिखता हूँ। एक साल की खुराक उन्होंने अच्छी मिक़दार में दे दी। घर भी दे

दिया और किताबों के ढेर लगाए और छः महीने के बाद उससे जाकर पूछा तो उसने एक लाइन भी नहीं लिखी। जब सूरहः कौसर उतरी तो अरब में एक बड़ा शायर था। उसके मुँह से एकदम निकला ﴿وما هذا قول البشر﴾ यह किसी इन्सान का कलाम नहीं। ऐसा अज़ीमुश्शान क़ुरआन अल्लाह तआला ने उतारा है। हमारे अपने घरों के अन्दर दौलत पड़ी हुई है।

فاصدع بما تؤمر واعرض عن المشركين انا
كفينك المستهزئين.

इस आयत को एक बद्दू ने सुना तो सज्दे में गिर गया तो कहा किसको सज्दा कर रहे हो? कहने लगा इस कलाम को सज्दा कर रहा हूँ। क्या ख़ूबसूरत कलाम है। मुसलमान नहीं है लेकिन कलाम की ताक़त ने सज्दे में गिरा दिया और हमारी बदक़िस्मती है कि हम क़ुरआन का नग़मा नहीं समझते कि यह कैसे रूह के तार हिला देता है और दिल की गहराईयों में उतर जाता है।

क़ुरआन की तासीर

जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं मैं मदीने पहुँचा और मस्जिद में दाख़िल हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह आयत पढ़ रहे थे मग़रिब की नमाज़ में,

ام خلقوا من غير شيء ام هم الخلقون ام خلقوا السموت والارض
بل لا يوقنون. ام عندهم خزائن ربك ام هم المصيطرون.

तो हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कलाम की ताक़त से क़रीब था कि मेरे दिल के टुकड़े टुकड़े हो जाते। वहीं कलिमा पढ़ लिया। आजिज़ कर दिया क़ुरआन ने, घुटने टेक दिए।

उमैया बिन सल्लत एक बहुत बड़ा शायर गुज़रा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसके शे'र इस क़द्र पसन्द थे आहा आहा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे इसकी ज़बान ईमान लाई और दिल काफ़िर रहा। कलाम उसका ऐसा था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके शे'र सुना करते थे। एक बार आपने एक मजलिस में उसके शे'र सुने। और सुनाओ और सुनाओ, और सुनाओ यह कहते रहे। यह कहते कहते सौ शे'र सुने।

एक दिन वह मक्के में कहने लगा, क्या तूने अपनी नबुव्वत का ढोंग रचाया है? आओ मेरे साथ मुक़ाबला करो। मैं भी कलाम कहता हूँ तू भी कलाम पेश कर। कहा आओ। हरम शरीफ़ में इकठ्ठे हो गए।

इधर अब्दुल्लाह बिन मसऊद और बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हुम। बस दो आदमी और उधर सारे क़ुरैशे मक्का तो उसने आकर नज़्म व नस्र में कमाल दिखाया। जब वह सारे जौहर दिखा चुका तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अब मेरा भी सुनो,

بسم الله الرحمن الرحيم

يٰس ٥ والقران الحكيم ٥ انك لمن المرسلين ٥ على صراط
مستقيم ٥ تنزيل العزيز الرحيم ٥

चल भाई यासीन शुरू हो गई और मजमे को जैसे साँप सूंघ गया। अरब सुन रहे थे ना। दुनिया कमाने के लिए अंग्रेज़ी सीख ली है। अल्लाह से तअल्लुक़ जोड़ने के लिए इस कलाम को ही न सीखा। ख़ाली तर्जुमा ही नहीं पढ़ते कि क़ुरआन क्या कहता है।

जब इस आयत पर पहुँचे,

اولم یرا لاتسان انا خلقنه من نطفة فاذا هو خصیم مبین وضرب
لنا مثلا ونسی خلقه من یحی العظام وهی رمیم.

कहा देखो! देखो! देखो! देखो! बनाया मैंन अपने हाथों से। मेरे हाथ का बना हुआ मुझसे मुनाज़िरे करता है कि कौन मुर्दा हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? कौन बोसीदा, बालिदा और बिखरी हुई हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? यह है क़ुरआन की ताक़त इसको सीने से लगा लो उसकी रस्सी को मज़बूत पकड़ लो।

तीसरा काम दुआ कसरत से करो

कसरत से दुआ करें। मैंने एक बार मौलाना एहसानुल हक़ साहब जो कि मेरे उस्ताद हैं उनसे सबक़ के कुछ इश्कालात का तज़्किरा किया तो उन्होंने कहा रोज़ाना बीस मिनट दुआ का मामूल बना लो। इसमें ख़ूब अल्लाह से मांगो। (आज हम दुआ मांगते नहीं पढ़ते हैं जैसे तोता रटे रटाए जुमले बोलता है इसी तरह हमारी दुआ का हाल है। अल्लाह के बन्दो! दुआ तो दिल की गहराई से निलकी हुई आह होती है जो कि सीधी अर्श को चीरकर अल्लाह तक जाती है।)

तेरी हाय मुझे बड़ी पसन्द है

एक आदमी दुआ मांगता है या अल्लाह! अल्लाह तआला कहते हैं जल्दी जल्दी दे दो, जल्दी दे दो सुनना नहीं चाहता है। नाफ़रमान है इसलिए जल्दी दे दो।

एक आदमी रो रहा है या अल्लाह! या अल्लाह! या अल्लाह! फिर दूसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! फिर तीसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! कभी महीनों गुज़र गए कभी साल गुज़र गए और उसकी या अल्लाह! या अल्लाह! यहाँ तक कि फ़रिश्ते सिफ़ारिश करते हैं या अल्लाह! यह तेरा फ़रमांबरदार है तू देता क्यों नहीं? तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, ﴿انی احب ان اسمع عنه﴾ इसकी हाय! हाय! मुझे अच्छी लग रही है। ज़रा रोने तो दो अगर दे दिया तो फिर कब रोएगा, दे दिया तो फिर कब रोएगा?

अच्छा लग रहा है। रोने दो इसका रोना मुझे पसन्द आ रहा है क्योंकि हमें दीन से गहरी जानकारी नहीं है इसलिए हम हालात से परेशान होकर अल्लाह ही के नाशुक्रे बन बैठते हैं और कोई मिला ही नहीं अल्लाह को आज़माने के लिए, हम ही रह गए थे।

अमानत में ख़्यानत की सज़ा

मेरे भाईयो! अपने अल्लाह को राज़ी करें। जिन दुकानों के पीछे नमाज़ छूट गयीं जिन दुकानों के पीछे सच को तलाक़ हुई, जिन दुकानों के पीछे दयानत चली गई, ख़्यानत आ गई, बद दियानती आ गई।

अल्लाह तआला कयामत के दिन बद दियानत से कहेगा वह तूने जो अमानत खाई लेकर आ। कहेगा या अल्लाह कहाँ से लाऊँ? वह तो दुनिया में रह गई। अल्लाह तआला फ़रमाएगा जहन्नम में पड़ी हुई है।

अब यह जहन्नम में कैसे जाए तो फ़रिश्ते मारेंगे चल और वह

उसको लेकर चलेंगे और चलते चलते दोज़ख़ का बड़ा ख़तरनाक हिस्सा "हाविया" वहाँ लेकर उसको जाएंगे जहाँ मुनाफ़िक़ रहते हैं। ईमान होने के बावजूद अमानत खाने वाले लोग "हाविया" में चले जाएंगे जो मुनाफ़िक़ीन की आग है।

वहाँ देखेगा कि वह जिस का माल दुनिया में दबाया था वह वहाँ पड़ा है। अच्छा यहाँ पड़ा है। इतने में वह तबाह हो जाएगा। उसको उठाएगा, कन्धे पर रखेगा फिर ऊपर चढ़ना शुरू करेगा। जब दोज़ख़ के किनारे पर आ जाएगा तो वह इसके हाथ से छूट जाएगा और फिर "हाविया" में जा गिरेगा। इसको फ़रिश्ते मारका फिर कहेंगे जा वापस लेकर आ। अब यह कभी इसमें से नहीं निकल सकता। इस कमाई से तौबा करें यह कमाना जहन्नम में ले जाएगा।

एक अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है कि अल्लाह तआला कहें कि बद दियानती और ख़्यानत हराम हैं और फिर ख़ुद फ़ैसला करें कि इसके मुक़द्दर में बद दियानती का रिज़्क़ लिख दूँ या नामुमकिन है। ख़ुद अल्लाह तआला कहें रिश्वत हराम है और फिर उसके मुक़द्दर में रिश्वत लिख दें तो यह तो नहीं हो सकता, यह नामुमकिन है। यह तो दुनिया का कोई आदिल बादशाह नहीं कर सकता कि एक चीज़ से लोगों को रोक दे फिर ख़ुद ही लोगों को स्पलाई कर दे। फिर उसकी पिटाई भी करे तो ज़मीन व आसमान का बादशाह कैसे कर सकता है। रिज़्क़ हलाल लिखा जाता है। यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है—

अल्लाह किसी के लिए सूदी रिज़्क नहीं लिखता, किसी के

लिए रिश्वत नहीं लिखता। यह फ़ैसला अल्लाह नहीं करता। वह खुद कहता है कि मैं ज़ालिम नहीं हूँ मैं आदिल हूँ मैं रहीम हूँ लेकिन बन्दा बेसब्रा होकर इनको अपना लेता है।

चौथा काम हलाल कमाओ

तो मेरे भाईयो! हलाल थोड़ा लो इसमें बरकत भी है। हमने तक़दीर को नहीं समझा। अपनी कमाइयों में हलाल को लाने की कोशिश करें। थोड़ा हो हलाल हो, हराम न हो अल्लाह उसी में बरकत देगा। उसी में ज़्यादा करेगा। यह बातें घर में बैठकर कर सकते हैं ना झूठ बोलने के लिए तबलीग़ में जाने की ज़रूरत नहीं आज ही से हम छोड़ सकते हैं नमाज़ पढ़ने के लिए तबलीग़ में जाने की ज़रूरत नहीं आज ही से पढ़ सकते हैं। आज ही से शुरू कर दें फिर निकलने के लिए कोशिश करें।

हमारे पहले दौर की हुकूमतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिया थीं, उनकी तिजारतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिया थीं। हमारी तिजारतें इस्लाम के मिटाने का ज़रिया हैं।

यमन में हमारी जमाअत गश्त कर रही थी तो कराची के साथी थे। अब्दुर्रशीद वह गश्त में बात कर रहे थे। एक बड़ी दुकान थी ताजिर की। उसने कहा भाई हम आपके भाई हैं। पाकिस्तान से आएं। उसने एक दम गिरेबान पकड़ लिया और कहा तुम पाकिस्तानी हो और फिर ज़ोर से झटका दिया तो सारे घबरा गए पता नहीं क्या चक्कर है? उसको घसीटता हुआ पीछे स्टोर में ले गया। पीछे बहुत बड़ा स्टोर था। उसमें घी के कनस्तर लगे हुए थे। कहने लगा यह सारा घी पाकिस्तान से आया है।

उसने एक खोला ओर उल्टा दिया। इतना थोड़ा सा घी बाक़ी सारी मिट्टी भरी हुई थी। उस पाकिस्तानी ने पैसा तो कमाया लेकिन यह नहीं सोचा कि उसके साथ कितने जहन्नम के बिच्छू क़ब्र में आ गए।

खट्टे और मीठे की पहचान

तो भाई पहले दयानत का दौर दौरा था कि मुबारक एक ग़ुलाम है। उनके आक़ा बाग़ में आते हैं अनार का बाग़ था एक अनार तो लाओ। लाए तो खट्टा। कहा अजीब आदमी हो दस साल हो गए तुम्हें बाग़ में काम करते हुए इतना नहीं पता खट्टा कौन सा और मीठा कौन सा। कहा आपने मुझे इजाज़त कौन सी दी है चखने की। दस साल से काम कर रहा हूँ और मुझ पर हराम है एक दाना भी चखा हो। मुझे क्या पता है खट्टा कौन सा है और मीठा कौन सा है? तो उसकी आँखें फट गयीं। यह दयानत थी नीचे से लेकर ऊपर तक।

किसी की रोज़ी छीन कर अपनी रोज़ी बनाना

एक बार फ़ैसलाबाद जा रहा था। सुबह सुबह नमाज़ पढ़कर निकला। एक रेढ़ी वाला, सफ़ेद दाढ़ी, सफ़ेद पगड़ी, रेढ़ी लगाकर खड़ा है और रोए जा रहा है। मैं खड़ा हो गया। बड़े मियाँ नूरानी चेहरा और मज़दूरी कर रहे हैं। इससे बड़ा वली कौन होगा वह क्यों रो रहा है। मैंने कहा बाबा जी! क्यों रो रहे हो तो सेब की पेटी उसके सामने पड़ी थी। वह मेरे सामने उलट दी तो उसकी

ऊपर की सतह पर दस बारह सेब थे वह ठीक थे बाक़ी सारे नीचे गले हुए थे। वह कहने लगा बेटा मैं ग़रीब आदमी हूँ। एक पेटी लाता हूँ। गयारह बारह बजे तक बिक जाती है। जितने पैसे बचते हैं उसमें से रोटी लेकर घर चला जाता हूँ। आज किसी ज़ालिम ने मेरे बच्चों की रोज़ी छीन ली है। इसने भी तिजारत की लेकिन किसी के बच्चों के मुँह से निवाला छीन लिया है, किसी की ज़रूरतों पर छुरी चलाकर तिजारत की।

यह शैतान का ताजिर है यह रहमान का ताजिर नहीं है। तो हम वह तिजारत सीखें जिससे हमारी दुनिया भी बनती चली जाए और आख़िरत भी बनती जाए और जन्नत भी बनती जाए और दुनिया में इस्लाम भी फैलता चला जाए। हमने तो सीखा ही नहीं सीखने को कहते हैं कि वक़्त लगाओ।

एक सहाबी के बेटे ने कपड़ा बेचा। जाएज़ नफ़ा दो सौ रुपए था लेकिन बेटे ने चार सौ रुपए मुनाफ़े से बेचा जो कि ज़्यादती है। दो सौ में भी बचत थी। डाँटा वापस कराया लेकिन आज के दौर में कोई इस तरह करता है तो बाप बेटे को शाबाशी देता है और इसको हुनर मंदी क़रार देता है। क़ुसूर वालो! अपनी तिजारत को जाएज़ तरीक़े से रखो।

लाखों रियाल अल्लाह की राह में क़ुर्बान कर दिए

पन्द्रह साल पहले की बात है। मदीने मुनव्वरा से एक शेख़ आए थे, सालिम क़रज़ी वह पूरा जो मदीने का सूबा है उसका वह बैंक का सबसे बड़ा अफ़सर था। आज से पन्द्रह सोलह साल पहले वह एक लाख रियाल तंख़्वाह लेता था। यहाँ आकर बीस दिन

लगाए सिर्फ़ बीस दिन। मदीने में रहने वालों को पता नहीं कि सूद और सूद का काम हराम है। सब पता है जो मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ता है लेकिन वह अहद कमज़ोर पड़ चुका है। लिहाज़ा गाड़ी चल रही है और चार महीने भी मेरे ख़्याल से उसने अभी तक नहीं लगाए। चिल्ला चिल्ला लगाता है। पहली बार आया तो बीस दिन लगाए। बीस दिन लगाने के बाद चला गया और जाते ही उसने बैंक छोड़ दिया, इस्तीफ़ा दे दिया।

कोई उनके क़ानून की कन्डीशन ऐसी ही थी जिसके वह छोड़ नहीं सकता था या जुर्माना देता। उसने वह जुर्माना भरा जिसमें उसकी सारी जाएदाद बिक गई लेकिन उसने जुर्माना भर दिया। जाएदाद सारी बेच दी। बैंक को दे दी सारी और अपने आपको आज़ाद कर लिया और मदीने से बाहर उसका एक कच्चा घर था वहाँ शिफ़्ट हो गया। सन् 1989 ई० में हज पर गया तो उसके घर में जाकर खाना खाया। पुराना घर मदीने से कोई छः सात किलोमीटर बाहर मुज़ाफ़ात में है।

अब उसने सहरा में काम शुरू किया। सहरा से बकरियाँ लाया और आकर मदीने की बकरा मंडी में आकर उनको बेचा। एक लाख सऊदी रियाल कमाने वाला पाँच सौ रियाल लेकर घर जा रहा है और घर में जाकर बीवी के हाथ में रखा और दोनों रो पड़े कि आज पहली हलाल रोज़ी हमारे घर में दाख़िल हुई। खुशी में रो रहे हैं और पाँच सौ कहाँ और एक लाख रियाल कहाँ? और दोनों खुशी में रो रहे हैं कि आज पहला हलाल रिज़्क़ है जो हमारे घर में आया।

इसी साल हम चले गए हज पर तो उसने वहाँ बुलाकर हमें खाना खिलाया। वह तो पहले भी जानता था कि यह हराम है फिर

उस वक़्त क्यों नहीं छोड़ा। हिजरत घर का छोड़ना ईमान में लहर उठती है हर चीज़ को तिनकों की तरह बहाकर ले जाती है लेनिक शर्त यह कि वक़्त सही लगे।

जब तक हराम पेट में रहेगा परेशानी बढ़ती रहेगी

तो आप सारे भाईयों की ख़िमत में गुज़ारिश है इस रास्ते में वक़्त ज़रूर लगाएं। नियत तो इसकी फ़रमा लें। डर लगता है तो कम से कम तीन तीन दिन से शुरू करें। अपनी मस्जिद से आप अलग अलग जगहों से तशरीफ़ लाए बैठें हैं। अपनी अपनी मस्जिदों से तीन तीन दिन के लिए निकलना शुरू कर दें। यह तीन दिन का निकलना एक दिन आपकी ज़िन्दगी के बदलने का ज़रिया बन जाएगा।

नमाज़ ज़िन्दा करो। अल्लाह के वास्ते मस्जिदों को आबाद करो। अगर कमाई कम पड़ेगी ज़रूर पड़ेगी तो परेशान न होना नमाज़ पढ़कर अल्लाह से मांगो फिर देखो अल्लाह कैसी कैसी राहें खोलता है।

तेरे रोने ने रिज़्क़ के दरवाज़े खुलवा दिए

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० ने सारे शहर से चोरों को ख़त्म कर दिया था। सूलियों पर लटका दिया था। एक सऊदी ने मुझे बताया सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ जब मक्का आता तो बैतुल्लाह की दीवार के साथ टेक लगाकर बैठ जाता और उसके हाथ में तलवार होती और रोता जाता, रोता जाता। अब्दुल अज़ीज़ के उस्ताद ने पूछा क्यों इतना रोता है? कहने लगा मैंने सबको चोरी से रोक

दिया। अब इन्हें रोज़ी कहाँ से खिलाऊँ? तो अल्लाह के सामने आकर रो रहा हूँ कि या अल्लाह तेरा हुक्म तो मैंने ज़िन्दा कर दिया। देखो फिर अल्लाह ने बिठाकर खिलाना शुरू कर दिया। सात समुंद्र पार से मख़्लूक़ आई और उनकी ज़मीन से तेल के चश्मे निकाल दिए। यह हराम छोड़ने और हलाल पर आने की बरकत है। आज उनको समझ में नहीं आ रहा है कि हम पैसे को कैसे संभालें। अब कोई कहेगा कहाँ से खाएंगे?

हराम कमाई से कलिमा नसीब नहीं हुआ

अल्लामा क़ुरतबी रह० ने एक वाक़िआ लिखा है। एक दुकानदार सुबह सुबह आया। अपनी दुकान की तराज़ू को तोड़ दिया। पड़ोसी दुकानदार ने पूछा क्यों तोड़ा है? कहने लगा हमारा आज पड़ोसी मर रहा था हम ने कहा "ला इलाह इल्लल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाह" यानी कलिमा पढ़ ले। वह कहने लगा मुझसे नहीं पढ़ा जाता। हमने कहा क्यों नहीं पढ़ा जाता? वह कहने लगा मेरी दुकान का तराज़ू, उसका जो काँटा होता है वह मेरे हलक़ में चुभ गया, मुझसे कलिमा नहीं पढ़ा जा रहा है। एक दुकानदार जब ग़लत तोलता है तो वह कहता है सौ रुपया कमा लिया। दस रुपए बचा लिए, पचास रुपए बचा लिए। मरते वक़्त यह हाल हो गया कि कलिमा नसीब नहीं हुआ तो क्या मिला?

तो भाईयो! लोगों का मामला बड़ा सख़्त है। इसलिए अपने आपको बचाओ कि अपने दामन पर किसी मुसलमान का हक़ न पड़ा हुआ हो। अल्लाह अपने हक़ के मामले में बहुत सख़ी है, बहुत सख़ी है। इसकी कोई इन्तिहा नहीं।

अमानतदार हवलदार की दर्दनाक कहानी

एक हवलदार मुझे मिला बहावल नगर में तबलीग़ में वक़्त लगाया। हलाल पर आ गया। मुश्किल पेश आ गई। बड़ी तंगी हुई। कहने लगा एक दिन अफ़सर मुझसे कहा अब गुज़ारा कैसे करते हो? मैंने कहा जब आदमी तय कर लेता है तो गुज़ारे हो जाते हैं। कहा बताओ तो सही गुज़ारा कैसे करते हो? कहा बात यह है कि एक साल पूरा हो चुका है कि मेरे घर में सालन नहीं पका। यह वह अल्लाह का वली है कि बड़े बड़े औलिया इसके धूल को क़यामत के दिन नहीं पहुँच सकेंगे।

पाँचवा काम जो मारे उसे फूल दो

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया—

﴿صل من قطع﴾ जो तोड़े उसे जोड़,

﴿واعط من حرمك﴾ जो न दे उसको दो,

﴿وعف عمن ظلم﴾ जो ज़ुल्म करे उसको माफ़ कर दो।

﴿بعث لا تمم مكارم الاخلاق بعث لا تمم محاسن الاخلاق.﴾

मैं अख़्लाक़ की तकमील के लिए भेजा गया हूँ। मुझे अख़्लाक़ की ख़ूबियों की तकमील के लिए भेजा गया है। हुस्ने अख़्लाक़ के लिए मुझे भेजा गया है।

इबादत में सबसे अफ़ज़ल इबादत अख़्लाक़ है

मेरे भाईयो! नमाज़ पढ़नी आसान है। अख़्लाक़ बनाना

दुश्मनों को दोस्त बनाने का नुस्ख़ा

मुहब्बत से चलना इख़्तिलाफ़ के साथ भी हो सकता है। अगरचे राय एक न हो लेकिन वह छः बातें हैं जो दिलों को तोड़ देती हैं और वे चार बातें हैं जो दिलों को जोड़ देती हैं। ये चार बातें दुश्मनों को भी अपना बना देंगी और ये छः बातें दोस्तों को और अपनों को भी तोड़कर रख देंगी। भाई भाई टूट जाएगा, दोस्त दोस्त का दुश्मन बन जाएगा, यह कलिमा पढ़ने वाले एक दूसरे के गले काटेंगे। ये चार बातें आपस में ज़िन्दा कर दें तो काफ़िर भी झुकते चले जाएंगे।

मैंने अख़्लाक़ को देखकर इस्लाम क़ुबूल किया

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो रहे थे। एक बद्दू ने तलवार उठाई और आप की आँखें खुल गयीं।

उस बद्दू ने कहा अब आपको कौन बचाएगा?

आपने फ़रमाया अल्लाह बचाएगा और कौन बचाएगा?

फिर इतने में जिब्राईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और उसके सीने पर एक मुक्का मारा तो वह दूर जाकर गिर पड़ा और तलवार भी गिर गई। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार उठा ली और फ़रमाया कि,

अब तुझे कौन बचाएगा? उसको अल्लाह का पता नहीं तो कहने लगा,

मुझे और कौन बचाएगा तू बचाएगा तू बचाएगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया चला जा। तू मुझे नबी नहीं मानता? कहा नहीं मानता। क़ौम के पास गया और उनको बतलाकर आया फिर मुसलमान हुआ।

मेरे भाईयों हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ सीखो।

अख़्लाक़ की वजह से दुश्मन क़दमों में गिर गया

एक आदमी ने अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा को गालियाँ दीं तो वह उसके पीछे गए दरवाज़े पर दस्तक दी। भाई जो कुछ आपने कहा अगर सच है तो मेरे लिए मुसीबत है वरना अगर तूने ग़लत कहा तो अल्लाह तुझे माफ़ कर दे। तो वह क़दमों में गिर गया नहीं नहीं मैंने बकवास की। आप मुझे माफ़ करें। ये हैं अख़्लाक़े नबुव्वत।

एक सहाबी आए या रसूलल्लाह! हमारे पड़ोस में एक औरत है जो दिन को रोज़ा रखती है, रात को तहज्जुद पढ़ती है लेकिन दूसरे पड़ोसियों को तंग करती है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई भलाई नहीं यह दोज़ख़ में जाएगी। कोई ख़ैर नहीं।

कामिल ईमान मगर कैसे?

एक सहाबी ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मैं चाहता हूँ कि मेरा ईमान कामिल हो जाए। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अख़्लाक़ अच्छे बना लो तेरा ईमान कामिल हो जाएगा, तू अपने अख़्लाक़ ठीक कर ले। अब पूरी

दुनिया में दावत देने के लिए ये आमाल हैं अख़्लाक़ बनाना, दावत देना, तालीम करना, ख़िदमत करना।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० को एक आदमी गाली देने लगा तो दूसरी तरफ़ मुँह करके बैठ गए। वह समझ रहा था कि उनको पता नहीं कि मैं उनको गालियाँ दे रहा हूँ। वह सामने आकर कहने लगा तुझे गालियाँ दे रहा हूँ तुझे। इमाम साहब ने कहा मैं भी तुम्हें माफ़ कर रहा हूँ।

छठा काम अल्लाह की मख़्लूक़ की ख़िदमत करो

मेरे भाईयो! इबादत से जन्नत मिलती है और ख़िमदत से ख़ुदा मिलता है। अल्लाह की मख़्लूक़ की ज़रूरत पूरी करना कितना बड़ा अमल है आप सोच भी नहीं सकते। क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएंगे,

﴿يا ابن آدم استطعمتك فلم تستطعمني.﴾

ऐ मेरे बन्दे! मुझे रोटी की ज़रूरत थी तूने मुझे रोटी न खिलाई।

वह कहेगा या अल्लाह! आप तो हर ऐब से पाक हैं। फ़रमाया हाँ फ़लाँ बन्दा जो तुम्हारे पास आया था अगर तुम उसको रोटी खिला देते तो उसका अज्र तुम मुझ से ले लेते। ऐसा था जैसे मेरे ख़ज़ाने में जमा करा दिया।

﴿يا ابن آدم استقيتك فلم تسقني.﴾

ऐ मेरे बन्दे! मैंने तुम से पानी मांगा था तूने पानी नहीं पिलाया।

बन्दा कहेगा या अल्लाह आप तो रब्बुल आलमीन हैं फ़रमाया

दुनिया में दावत देने के लिए ये आमाल हैं अख़्लाक़ बनाना, दावत देना, तालीम करना, ख़िदमत करना।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० को एक आदमी गाली देने लगा तो दूसरी तरफ़ मुँह करके बैठ गए। वह समझ रहा था कि उनको पता नहीं कि मैं उनको गालियाँ दे रहा हूँ। वह सामने आकर कहने लगा तुझे गालियाँ दे रहा हूँ तुझे। इमाम साहब ने कहा मैं भी तुम्हें माफ़ कर रहा हूँ।

छठा काम अल्लाह की मख़्लूक़ की ख़िदमत करो

मेरे भाईयो! इबादत से जन्नत मिलती है और ख़िमदत से ख़ुदा मिलता है। अल्लाह की मख़्लूक़ की ज़रूरत पूरी करना कितना बड़ा अमल है आप सोच भी नहीं सकते। क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमाएंगे,

﴿يا ابن آدم استطعمك فلم تستطعمني.﴾

ऐ मेरे बन्दे! मुझे रोटी की ज़रूरत थी तूने मुझे रोटी न खिलाई।

वह कहेगा या अल्लाह! आप तो हर ऐब से पाक हैं। फ़रमाया हाँ फ़लाँ बन्दा जो तुम्हारे पास आया था अगर तुम उसको रोटी खिला देते तो उसका अज्र तुम मुझ से ले लेते। ऐसा था जैसे मेरे ख़ज़ाने में जमा करा दिया।

﴿يا ابن آدم استقيتك فلم تسقني.﴾

ऐ मेरे बन्दे! मैंने तुम से पानी मांगा था तूने पानी नहीं पिलाया।

बन्दा कहेगा या अल्लाह आप तो रब्बुल आलमीन हैं फ़रमाया

मेरा बन्दा जो प्यासा आया था उसको पानी पिलाता तो ऐसा था जैसे तूने मुझे पानी पिलाया।

﴿يا ابن آدم مرضت فلم تعدنى..... الله اكبر.﴾

मुसलमान का हाल पूछना कितनी बड़ी बात है। वह कहेगा या अल्लाह आप तो हर ऐब से पाक हैं। अल्लाह फ़रमाएगा मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार था अगर तू उसका हाल पूछ लेता तो ऐसा था जैसे तूने मेरा हाल पूछा। यह वक़्ती ज़रूरतें पूरी करने पर अल्लाह तआला इतने ख़ुश हो रहे हैं।

अच्छे माहौल की अहमियत

हम कोई तबलीग़ी जमाअत में शामिल करने की दावत नहीं दे रहे हैं। न हम ख़ुद कोई तबलीग़ी जमाअत से मुआवज़ा ले रहे हैं, न हमें कोई सेक्रेटरी बनना, वहाँ तो कोई मेम्बर नहीं तो सेक्रेटरी कहाँ से आए? सदर कहाँ से आए? प्रेज़िडेंट कहाँ से आए? मैं अल्लाह और उसके रसूल के सामने जवाब देह हूँ, मुझे इसके लिए तैयारी करनी है। आज की ग़लत फ़िज़ाओं ने हमारा माहौल ख़राब कर दिया। आज घरों में किताब तो मिल जाएगी माहौल कहाँ से लाऊँ?

मैं ज़ोह्द तो पढ़ूँगा मगर ज़ाहिद कहाँ से लाऊँ?

मैं तक़्वा तो पढ़ूँगा मगर मुत्तक़ी कहाँ ढूंढूं?

मैं हया पढ़ूंगा, मैं हया वाला कहाँ से देखूँगा?

मैं पाकदामनी तो पढ़ूंगा पाकदामनों की सोहबत कहाँ से लाऊँ?

मैं सख़ावत तो पढ़ूँगा, मैं सख़ी कहाँ से लाऊँ?

मेरे भाईयो ऐसे ही तैरना तो पढ़े, पानी न देखे तैरेगा कहाँ से। तैरना तो पढ़ लिया पानी कोई नहीं, तैरे कहाँ से। ईमानी सिफ़ात पढ़ने से नहीं आतीं। अल्लाह के रास्ते में निकलने से आती हैं।

गुमराही के माहौल में ईमान की हिफ़ाज़त करने वाले का वाक़िआ

सन् 1994 ई० में इंगलैंड में इज्तिमा था। तो मैं रात को फ़ारिग़ होकर बाहर निकला तो एक नौजवान लड़का पहरा दे रहा था ब्रेडफ़ोर्ड का। थोड़ा सा तआरुफ़ हुआ तो वह बड़ा खुश होकर कहने लगा मुझे तो आपसे मिलने का बड़ा शौक़ था। मैंने कहा तुम इधर कैसे? कहने लगा मैंने तीन दिल लगाए थे। अल्लाह ने मेरी सारी ज़िन्दगी बदल दी। तो उसने बात की बड़ी ख़ूबसूरत जो मुझे आज तक याद है।

कहा जी आज इनके पास हमें गुमराह करने के लिए और नहीं है। जो कुछ उनके पास है गुमराही के जितने असबाब हैं। फ़हहाशी, नंगापन के, मर्द व औरत के मिलाप के यह हद है। इसके आगे कुछ नहीं। हम इसमें से तौबा करके बाहर आ रहे हैं। अब कोई और शक्ल नहीं है उनके पास हमें गुमराह करने के लिए और हम अल्लाह के फ़ज़ल से उसे ठोकर मारकर आ रहे हैं और इस बसीरत के साथ आ रहे हैं कि वह बातिल है और यह हक़ है। वहाँ कुछ नहीं यहाँ सब कुछ है।

अमरीकी डाकू और सुन्नत की इत्तिबा

अमरीका हमारी जमाअत गई। शिकागो में एक मस्जिद में हम

गए तो देखा मस्जिद में ख़ेमा लगा हुआ है। मैं बड़ा हैरान हुआ कि यह ख़ेमा क्यों लगा हुआ है? तो पता चला यहाँ इस इलाक़े का बहुत बड़ा बदमाश था। सारा इलाक़े का वह मुसलमान हो गया और फिर पाकिस्तान आकर तीन चिल्ले लगाए तो वापस गया तो उसने ख़ेमा लगाया हुआ है और रोज़ाना इसमें आकर दो घंटे बैठता है कि मेरा नबी भी ख़ेमे में रहा करता था। तो अब मैं मुस्तक़िल तो नहीं रह सकता कुछ देर तो रहूँ ताकि मेरे नबी की सुन्नत तो अदा हो जाए। यक़ीन मानें कि मुझे इतनी शर्म आई कि देखो नए इस्लाम के क़ुबूल करने वाले का यह जज़्बा। छोटा सा ख़ेमा इतना सा था। नाम भी उसने अबूबक्र रखा हुआ था।

यह दर्द ग़म निकल गया कि हाय मैं कैसे अपने अल्लाह को राज़ी करूँ, मेरी औलाद कैसे अल्लाह को राज़ी करे? यह मेहतन ख़त्म हो गई है। नमाज़ पढ़ी तो भी ठीक है नहीं पढ़ी तो भी ठीक है, न पढ़ने की ख़ुशी न छूटने का ग़म। क़ुरआन की तिलावत हो जाए तो ख़ुशी कोई नहीं रह जाए तो ग़म कोई नहीं। यह क्या मुर्दा दिली है।

अल्लाह की नाफ़रमानी करके ग़म न होना कैसी बेवफ़ाई है

दस रुपए का नफ़ा हो तो सब ख़ुश हो रहे हैं, दस रुपए का घाटा पड़ जाए तो सब ग़मगीन हो रहे हैं। घर में बच्चा बीमार पड़ जाए तो सारा घर परेशान हो रहा है, कोई ख़ुशी की बात हो जाए तो सारा घर ख़ुश हो रहा है।

मेरे भाईयो! यह भी कोई ख़ुशी और ग़म की चीज़ें हैं। एक

नमाज़ छूट जाए तो हम तड़प जाते, हम मचल जाते, हाय अल्लाह मेरी नमाज़ गई, यहाँ तो महीनों गुज़र जाएं फ़र्ज़ नमाज़ें छूटी पड़ी हैं। दर्द व ग़म व बेचैनी, बेक़रारी जो अल्लाह के लिए होती है वह पैसे पर चल पड़ी। अल्लाह की ज़ात को मक्सद बनाएं।

मौलवी साहब का तबलीग़ी शख़्स से शिकवा

हमारे मर्दों व औरतों को अल्लाह ने रास्ता दिया है कि ऐ मेरे बन्दो और बन्दियों मुझे सामने रखकर चलो। मैं हूँ तुम्हारा ख़ालिक़ और मालिक, मैं हूँ तुम्हारा माबूद, मुझे राज़ी करो। अल्लाह पर फ़िदा होना ही हमारी ज़िन्दगी है। एक अल्लाह को राज़ी करना हमारी ज़िन्दगी है। मंडी बहाउद्दीन एक जमाअत गई हुई थी तो वहाँ के एक मौलवी साहब कहने लगे निकल जाओ तुम सब मदरसों के मुख़ालिफ़ हो।

मैंने कहा वह कैसे?

कहने लगे हमारा ताजिर पहले हमें हज़ार रुपए देता था। जब से चिल्ला लगाकर आया सौ रुपए देता है। अच्छा बुलाते हैं जी उसको। बुलाया कहा यह क्या किया तूने? कहा जी पहले झूठ पर कारोबार था, सूद पर कारोबार था। जब से सुनकर आया हूँ झूठ भी हराम है सूद भी हराम है। अब सच पर कारोबार करता हूँ रोटी भी मुश्किल से पूरी होती है। इसमें सौ रुपए इन्हें देता हूँ अगर यह कहते हैं तो फिर वही शुरू कर देता हूँ। इनको भी दूँगा खुद भी खाऊँगा।

﴿واخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین﴾

○ ○ ○

सुकून की तलाश

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

दुनिया मच्छर का पर है

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस जहाँ का बनाने वाला अल्लाह तआला है और किसी चीज़ को बनाने वाले को पता होता है कि इसको बनाने में सरमाया कितना लगा है? मेहनत कितनी लगी है? इसकी क़ीमत कितनी होनी चाहिए? अल्लाह ने यह जहान बनाया है और उसने हमें यह ख़बर दी है कि इसकी क़ीमत एक मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है।

﴿لو كانت الدنيا عند الله جناح بعوضة ما سقى منها كافرا شربة.﴾

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर यह दुनिया मेरे नज़दीक एक मच्छर के बराबर भी क़ीमत रखती तो मैं काफ़िर को एक घूंट पानी के बराबर भी न देता।

यहाँ उनको ज़्यादा दिया हुआ है। अल्लाह तआला ने एक अजीब बात भी कही,

﴿ولولا ان لا يكون الناس امة واحدة﴾ और तुम्हारा ख़्याल न होता कि तुम भी दीन छोड़ जाओगे,

لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج
عليها يظهرون ولبيوتهم ابوابا وسررا عليها يتكؤن وزخرفا.

मैं क्या करता कि काफ़िरों के दरवाज़े और सीढ़ियाँ सोने और चाँदी की बना देता। उनकी चारपाईयाँ उनकी कुर्सियाँ उनकी छतें, उनके घर, उनकी दीवारें सोने और चाँदी की होतीं। हदीस में आता है कि उनके जिस्म लोहे के बना देता। लोहे का मतलब यह है कि न बीमार होते न बूढ़े होते।

यह सारा कुछ क्यों नहीं किया? इसलिए कि फिर कहीं कहीं मुसलमान रह जाते। अकसर फिसल जाते। अब भी इतने फिसल रहे हैं कि इनको इतना दे दिया हमें कुछ न दिया। अल्लाह ने कुछ हमें भी दे दिया और कुछ उनको भी दे दिया। कुछ उन पर हालात डाल दिए और कुछ हम पर हालात डाल दिए। उनकी मुसीबतें अलग कर दीं और हमारी मुसीबतें अलग कर दी। उन्नीस बीस का फ़र्क़ रख दिया।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह दुनिया मेरे नज़दीक इतनी गई गुज़री चीज़ है कि सारी इनको देता तुम्हें कुछ न देता।

﴿يا موسى ان لي عبادا لو سئلني الجنة لا عطيتهم بجميعها.﴾

ऐ मूसा! मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जन्नत मांगे तो सारी दे दूँ।

जन्नत का क़ीमती दुपट्टा

मेरे भाईयो! एक हदीस पाक में आता है कि जन्नत की एक औरत का दुपट्टा सातों ज़मीनों के ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है। सिर्फ़ एक दुपट्टा जो ख़ज़ाने इस वक़्त हैं और जो इस्तेमाल हो चुके हैं जो आइन्दा इस्तेमाल होंगे। इसके बाद जो बाक़ी रहेंगे और क़यामत आएगी तो ज़मीन के ख़ज़ानों में से फिर भी थोड़ा ही हिस्सा इस्तेमाल हुआ होगा। बाक़ी हिस्सा फिर भी पड़ा होगा। उसको निकाल दिया जाए जो निकल चुका है उसको भी वापस लाया जाए। इन सबको जमा किया जाए तो एक दुपट्टे की क़ीमत ज़्यादा है तो सारी जन्नत कैसी होगी?

अल्लाह कहता है कि जन्नत मांगे तो सारी दे दूँ और दुनिया के बारे में कहा कपड़ा लटकाने के लिए लकड़ी चाहिए तो वह भी नहीं दूँगा। ऐ अल्लाह! लकड़ी दे दे ताकि उससे कपड़े लटका दूँ तो वह कहता है वह भी नहीं दूँगा।

﴿ليس ذالك لا هون له علي﴾ इसलिए नहीं कि वह मेरी नज़रों में छोटा है,

﴿لا عطيه من كرامة يوم القيامة﴾ इसलिए कि क़यामत के दिन की इज़्ज़त देना चाहता हूँ,

कामयाबी का एक ही रास्ता है

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह ने हमें अदम से वजूद बख़्शा है। हम कुछ नहीं थे,

هل اتى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا.

ऐ इन्सान! तू वह दिन याद कर जब तू कुछ भी न था।

फिर क्या हुआ? अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को बनाया। ज़मीन व आसमान भी न था। अल्लाह ऐसा बनाने वाला है जो बग़ैर चीज़ के चीज़ बनाता है। हम तो ख़्याल से चीज़ें बनाते हैं।

अल्लाह ख़ालिक़ है जो हक़ीक़ी ख़ालिक़ है बग़ैर चीज़ के बनाता है। ज़मीन का ख़्याल कोई नहीं था उसको बग़ैर ख़्याल के बना दी। आसमान का ख़्याल कोई नहीं था उसको बग़ैर ख़्याल के बना दिया। सूरज चाँद सितारों का ख़्याल कोई न था उनको बग़ैर ख़्याल के बना दिया। कोई पेड़ नहीं था। हर चीज़ बग़ैर ख़्याल के बना दी।

हम उसके तरीक़े को छोड़कर इज़्ज़त कहाँ से पा सकते हैं? साइंस औ टैक्नालोजी से ग़ैर क़ौम इज़्ज़त पा सकती है। ख़ुदा की क़सम मुसलमान इज़्ज़त नहीं पा सकता। जब तक अल्लाह के हबीब के दामन को न पकड़ ले। फ़ैसला तो ऊपर से आता है। जिसे चाहे इज़्ज़त दे और हुक्म ऊपर से आता है कि इसको ज़लील कर दो और ऊपर का फ़ैसला बन्दों और रब के बीच हक़ नापने का ज़रिया है।

अल्लाह की चाहत को अपनी चाहत बना लो

मेरे भाईयो और दोस्तो! हम सब अपने इरादे में अल्लाह के मुहताज हैं और अल्लाह पाक अपने इरादे को वजूद देने में किसी का मुहताज नहीं। हम हर चीज़ में क़दम क़दम पर अल्लाह के मुहताज हैं।

﴿ياايها الناس انتم الفقرآء﴾ ऐ लोगो! तुम फ़क़ीर हो,

﴿والله هو الغنى﴾ अल्लाह ग़नी है किसी का मुहताज नहीं है। हम जो चाहेंगे वह अल्लाह के बग़ैर नहीं हो सकता। अल्लाह जो चाहेगा वह हम सबके बग़ैर कर देगा। हदीसे क़ुदसी में आता है,

﴿يا عبدى انت تريد وانا اريد﴾ ऐ मेरे बन्दे! एक इरादा तू करता है और एक इरादा मैं करता हूँ ﴿ولا يكون الا ما اريد﴾ जो तुम चाहते हो वह मेरे बग़ैर होता नहीं और जो मैं चाहता हूँ वह तुम सबके बग़ैर कर लेता हूँ। हम क्या करें? ﴿اين المفر﴾ कहाँ जाएं? ﴿وان سلمتى فيما اريد، كفيتك فيما تريد﴾ तू एक काम कर ले मैं तेरे सारे काम बना दूँगा जो मैं चाहता हूँ वह तू कर दे नफ़े नुक़सान को न देखो।

रुपए पैसे के ग़ुलाम न बनो

ख़्वाहिश के ग़ुलाम न बनो, ﴿عبد اهواء﴾ न बनो, ﴿عبد الدرهم﴾ न बनो, ﴿عبد الدينار﴾ न बनो ﴿عبد القطيفة﴾ न बनो ﴿عبد الحطيئة﴾ न बनो क्यों?

﴿ان اعطى رضى ان لم يعط سخط او كما قال﴾

ख़्वाहिश का ग़ुलाम न बनना, हालात ख़राब हो गए तो ख़्वाहिश का ग़ुलाम, हालात ख़राब हो गए तो दिरहम का ग़ुलाम, डॉलर का ग़ुलाम बन गया और मर गया जिसने इसको यानी डॉलर को आक़ा बना लिया।

﴿افرئيت من اتخذ الهه هوٰه﴾ देखते नहीं जिसने ख़्वाहिशात को ख़ुदा बना लिया। वह उसकी पूजा कर रहा है। जिसने इसके सामने सिर झुका दिया वह तबाह व बर्बाद हो गया।

इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं इनमें से किसी को ख़ुदा न बनाओ, किसी के ग़ुलाम न बनो, मेरी ही एक काम करो ﴿كفيك فيما تريد﴾ जिसको मैं चाहता हूँ उसको तुम कर लो जो चाहेगा उस सारे को मैं कर दूँगा।

सुकूने दिल! मगर कैसे?

थोड़ा सा यहाँ क़ुरआन का असलूब सुनो, ﴿من عمل صالحا من ذكر وانثى﴾ जिसने नेक अमल किया कोई भी हो अरबी हो, अजमी हो, मर्द हो या औरत हो और वह मोमिन कामिल ईमान वाला हो तो क्या होगा ﴿فلنحيينه حياة طيبة﴾ दुनिया में सकून की ज़िन्दगी, इसका मतलब यह नहीं कि पैसे ज़्यादा हो जाएंगे दुनिया में अल्लाह पाक इतमिनान देगा, ﴿جعل غناه في القلب﴾ उसके दिल को अल्लाह बादशाह कर देगा, ﴿واتته الدنيا وهي راغمة﴾ उसके मुक़द्दर की दुनिया उसके पाँव में पड़कर आएगी सिर पर नहीं आएगी ﴿من كان همه طلب الاخرة﴾ या अल्लाह! मैं तो आख़िरत को सामने रखकर चलूँगा।

मेरे भाईयो! हम अल्लाह के बन जाएं फिर सारे मसाइल का हल अल्लाह के हाथ में है। हमारे मसाई तिजारत से हल नहीं होते, एटमी ताक़त से हल नहीं होते।

जंगे हुनैन में बड़ाई का इज़्हार और उसका अंजाम

हुनैन का दिन याद करो मेरे भाईयो! जब बारह हज़ार मुसलमानों ने कहा आज हमें कोई नहीं हरा सकता और यह बारह हज़ार हमारे जैसे नहीं थे। ये सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम थे। सहाबा जिनके जैसा धरती ने न देखा न देखेगी, ﴿خير الخلائق بعد الانبياء﴾

शहरी कुत्ता मोटा ताज़ा, वह जंगली कुत्ता दुबला पतला सूखा सढ़ा, तो उसने पूछा कि भाई तू कहाँ से आया है? तो उसने कहा शहर से आया हूँ। अच्छा! तू क्या खाता है? कहा मैं पराठे खाता हूँ, अंडे खाता हूँ, गोश्त खाता हूँ, दूध पीता हूँ।

तो जंगली कुत्ते ने कहा अरे भाई! मैं जंगल में रहता हूँ मुझे तो पराठे को छोड़ो, अंडे को छोड़ मुझे तो सूखी हड्डी भी नहीं मिलती। तू भाई मुझे भी कराची ले चल ताकि मैं भी पराठे, अंडे खा लूँ। शहरी कुत्ते ने कहा चलो तुम्हें ले चलता हूँ, तुम्हें भी खिलाऊँगा।

अभी वहाँ से निकले थे कि जंगली कुत्ते ने देखा कि शहरी कुत्ते के गर्दन में एक ज़ंजीर पड़ी हुई है। कहने लगा भाई यह क्या है? उसने कहा ज़ंजीर है। तो उसने कहा ज़ंजीर क्या होती है?

कहा यह गुलामी की ज़ंजीर है और जंगल का कुत्ता क्या जाने गुलामी क्या होती है। कहने लगा कि गुलामी क्या होती है? उसने कहा मैं नौकरी करता हूँ एक आदमी की। उसका पहरा देता हूँ, रात को जागता हूँ, उसके कोठे के साथ बंधा होता हूँ फिर वह मुझे अंडे और गोश्त खिलाता है और दूध भी पिलाता है।

जंगली कुत्ता कहने लगा कि मैं अपनी आज़ादी में भूखा रहूँ तो यह मुझे ज़्यादा पसन्द है इससे कि किसी का गुलाम बन जाऊँ। मियाँ तुझे तेरे पराठे मुबारक और मुझे मेरे जंगल की हवा मुबारक। आप शहर जाएं मैं इधर ही ठीक हूँ।

तो आज हमने आज़ादी को समझा हुआ है कि गाड़ियाँ मिल गयीं, बंगले मिल गए बस इज़्ज़त का मफ़हूम ही बदल गया। हम ज़िल्लत की पस्ती में हैं और समझते नहीं कि हम ज़लील हो चुके हैं। जिस कौम का इल्म ग़लत हो जाए तो उसको ऐटम बम कहाँ

नफ़ा देगा। जिसका सिवाए कमाने के और कोई काम न रहे।

तो इस सिलसिले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ज़माना आएगा कि लोगों को सिवाए पेट भरने के और शहवत पूरी करने के और कोई काम नहीं होगा। बस रंगा रंग के खाने कैसे खाऊँ और अय्याशी कैसे करूँ, बदमाशी कैसे करूँ?

अल्लाह की नाराज़गी की निशानियाँ

मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि या अल्लाह तेरे नाराज़ होने की निशानी क्या है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरी नाराज़गी की निशानी यह है कि उनकी खेतियाँ शुरू हो जाएं और पक जाएं तो बारिशें शुरू कर दूँगा, खड़ी-खड़ी फ़सलें बर्बाद कर दूँगा और जब उनकी खेती बारिश मांगेगी तो बारिश को रोक दूँगा ﴿واجعل الملك الى سفهائهم﴾ और नादान, नासमझ, ना अहल इन्सानों को हुकूमत दे दूँगा ﴿والمال الى بخلائهم﴾ माल व दौलत उनके बख़ील आदमियों को दे दूँगा न अपने ऊपर लगाएं न ग़रीबों पर लगाएं और हुकूमत ऐसे बेवक़ूफ़ इन्सानों को दे दूँगा कि वह सारी ज़मीन ज़ुल्म व सितम से भर दें। वह ठीक भी करना चाहें तो ग़लत हो जाए। इसीलिए तो कहा कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा है।

अच्छा या अल्लाह! तेरे राज़ी होने की क्या निशानी है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿امطر بزرعهم زرعهم﴾ खेती पानी मांगती है तो मैं बारिश कर देता हूँ।

जब बादल से आवाज़ आई

एक रिवायत में आता है कि एक आदमी जा रहा था कि

बादल से आवाज़ आई कि जाओ फ़लाँ की खेती को पानी दो तो वह आदमी बादल के साथ हो लिया तो बादल एक पहाड़ी पर बरसा। वहाँ से एक दर्रे में से एक नाला सा था उसमें आया। आगे जाकर ढाल था उसमें गया तो पानी के साथ साथ एक आदमी आगे इन्तिज़ार में है, पानी आया तो उसने पानी को बाग़ में कर दिया। वह कहने लगा भाई क्या करता है और तेरा नाम क्या है? उसने नाम बताया तो उसने कहा मैंने बादल से आवाज़ सुनी कि फ़लाँ की खेती को पानी पिलाओ। कहा अगर यह क़िस्सा न होता तो मैं तुम्हें कभी न बताता। असल बात यह है कि अल्लाह ने मुझे बाग़ दिया है। जब यह तैयार हो जाता है तो मैं इसके तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा फ़क़ीरों को देता हूँ, एक हिस्सा अपने घर में अपने ख़र्चा करने के लिए रखता हूँ और एक हिस्सा फिर इसमें लगा देता हूँ इसकी तैयार के लिए।

इस हदीस से यह मालूम हुआ कि ज़मींदार जो फ़सल आए तो उसका एक हिस्सा आगे फ़सल पर लगाना चाहिए। जब जाकर फ़सल का हक़ अदा होगा। माद्दी लिहाज़ से कैसा ख़ूबसूरत तरीक़ा अल्लाह के नबी ने बताया कि तीन हिस्से तीसरा हिस्सा लागाओ इस पर तब जाकर सही फ़सल होगी।

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴾امطرهم بحصادهم﴿ जब उनकी फ़सल तैयार होती है तो बारिश को रोक लेता हूँ और हुकूमत उनके अक़लमंद लोगों को देता हूँ, दर्दमंद लोगों को देता हूँ, बुर्दबार लोगों को देता हूँ, चश्मपोशी करने वालों को देता हूँ, माफ़ करने वालों को देता हूँ और ख़ुश अख़्लाक़ लोगों को देता हूँ। ये सारे माईने अलीम के हैं और पैसा सख़ियों को देता हूँ और यह मेरे राज़ी होने की निशानी है।

अल्लाह से ग़फ़लत क्यों?

तो इस हदीस पाक को आप सामने रखकर सोचें अल्लाह कितना नाराज़ हो गया है? हम से यह समुंद्र का पानी क्या वैसे ही रूठकर दाख़िल हो गया है? सिंध और बदीन में बिला वजह बारिशें हो गयीं? खड़े गन्ने बहाकर ले गयीं, कपास को उठाकर ले गयीं ऐसे कि जैसे चाहें बरस जाएं? समुंद्र का पानी क्या आज़ाद है कि जिधर को चाहें निकल जाएं? हवाएं क्या इतनी बेलगाम हो गयीं हैं कि पीछे उनको कोई क़ाबू करने वाला नहीं है? नहीं।

इन हवाओं का रब है जो इनको चलाता है, इन पानियों का रब है जो इनको बहाता है और इन बादलों का रब है जो इनको बरसाता है।

मेरे भाईयो! हम फिर पिछली बात अर्ज़ कर रहे हैं। बात पुरानी है, ज़बान नई है। क़िस्सा तो पुराना है। नया तो कोई क़िस्सा नहीं है कि हम अल्लाह को साथ लें और अल्लाह को साथ लिए बग़ैर कोई मस्अला हल नहीं होगा। अच्छा मान लो कोई मस्अला हल भी हो गया तो वह कुत्ते की तरह अंडा पराठा मिल भी गया तो क्या मौत नहीं आएगी? क्या यह दुनिया नहीं छूटेगी? क्या क़यामत नहीं होगी? क्या हिसाब व किताब का तराज़ू नहीं आएगा? क्या जन्नत और जहन्नम को नहीं देखेगा? क्या अल्लाह नहीं पूछेगा कि क्या किया था?

तो वहाँ क्या जवाब दोगे? रोटी भी मिल गई तो मस्अला तो फिर भी हल नहीं हुआ।

नेक बन्दों पर मसाएब में हिकमत

मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लिया जाए। अल्लाह को साथ लिए बग़ैर कोई मस्अला हल नहीं होगा। जब अल्लाह साथ हो जाएगा तो ﴿لفتحنا عليهم بركات من السماء والارض.﴾ तुम्हारी ज़मीन से बरकतें निकलेंगी। ज़मीन सोना उगलेगी जब तक़्वा आएगा। अल्लाह तआला हम सबको गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। एक हदीस ज़माने बाद याद आई,

﴿يقول البلاء كل يوم اين اتوجه يارب.﴾

मुसीबत सुबह उठते ही पूछती है या अल्लाह मैं आज कहाँ जाऊँ? तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿الى احباءى والى اهل طاعتى﴾ जा देख ले जो मेरे दोस्त हैं, मेरे फ़रमांबरदार हैं उनके घर चली जा। मुसीबत को अल्लाह तआला कह रहे हैं क्यों कहा,

﴿ابلوابك اخبارهم﴾ देखूँगा कि कच्चे हैं कि पक्के, ﴿اختبريك صبرهم﴾ उनके सब्र का इम्तिहान लूँगा, ﴿امحص بك ذنوبهم﴾ उनको गुनाहों से पाक कर दूँगा थोड़ी तकलीफ़ देकर, ﴿ارفع بك درجتهم﴾ उनके दर्जे में बुलन्द कर दूँगा,

﴿يقول الرخاء كل يوم﴾ माल व दौलत पूछती है या अल्लाह मैं कहाँ जाऊँ।

अल्लाह के दुश्मनों पर माल की कसरत क्यों?

रोज़ाना सुबह अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿الى اعدائى واولى معصيتى﴾ कि जा मेरे दुश्मनों के घर चली जा दुश्मनों के घर क्यों कहा,

﴿ازید بذالك طغیانهم﴾ उनकी बदमाशी और बढ़ेगी, ﴿اضاعف بذالك عذابهم﴾ उनका अज़ाब भी दुगना होता चला जाएगा, ﴿اخریك علی غفلتهم﴾ उनकी ग़फ़लत बढ़ती जाएगी, ﴿وعجل لك بهم﴾ और उनकी अगर कोई नेकी है तो उसका बदला उन्हें दुनिया में दिया जाएगा और आगे ख़त्म हो जाएगा।

﴿ليس لهم فی الاخرة الا نار﴾ दोज़ख़ की आग के सिवा उनके लिए कुछ नहीं है। लोग यह समझ रहे हैं कि जितना पैसा आ रहा है यह अल्लाह का फ़ज़ल आ रहा है और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहे हैं,

اذا رایت الله عزوجل یعطی العبد علی معاصیة من الدنیا علی
ما یحب فانما هو استدراج ثم تلا رسول الله صلی الله علیه
وسلم فلما نسو ما ذکروا به فتحنا علیهم ابواب کل شئی
حتی اذا فرحو ابما اوتو آق اخذنهم بغتة فاذا هم مبلسون.

जब तुम देखो कि एक आदमी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाफ़रमान है फिर भी दुनिया उसके पास आ रही है तो याद रखो यह अल्लाह के दर्दनाक अज़ाब का शिकार हो चुका है। यह बग़ैर तौबा के दुनिया से जाएगा। यह सबसे बड़ा अज़ाब है याद रखना।

सबसे बड़ी हलाकत तौबा किए बग़ैर दुनिया से चले जाना

मेरे भाईयो! माल का चला जाना, फ़क़ीरी का आ जाना, मुसीबतों का आ जाना अल्लाह ज़ुलजलाल की क़सम! यह कोई आज़माइश

नहीं है। बग़ैर तौबा के दुनिया से चले जाना यह सबसे बड़ी हलाकत और बर्बादी है कि अभी से क़ब्र में साँप और बिच्छू ऐसा पकड़ेंगे कि उसकी चीख़ पूरब व पश्चिम में सुनाई देगी लेकिन कोई इस चीख़ पुकार को सुनने वाला नहीं होगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर जमना ही असल कामयाबी है जिसको दौलत मिल गई। उम्मत से निकला हुआ है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की इस रुख़ पर तर्बियत हुई कि मरना तो क़बूल कर लिया लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को न छोड़ा।

दुनिया बेसुकूनी की दलदल है

मेरे भाईयो! जब इन्सान की सोच, फ़िक्र और ग़म दुनिया बनेगी और माल दिल में उतरेगा, नमाज़ में दुनिया ही को सोचेगा और नमाज़ों में दुनिया का ही ख़्याल आएगा। आज दुनिया की दौड़ ने हमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले दौर से ग़ाफ़िल कर दिया हाँलाकि अल्लाह की क़सम! अगर हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले ग़म को अपना ग़म बना लें और आप वाले दर्द को अपना दर्द बना लें तो आपको महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुशख़बरी दे रहे हैं कि जो मेरे ग़म को अपना ग़म बनाएगा अल्लाह पाक उसकी दुनिया में बरकत देगा और उसके कामों को जमा कर देगा और अल्लाह तआला उसको दिल का बादशाह बना देगा और दुनिया नाक रगड़कर उसके क़दमों में आएगी।

और जो मेरे ग़म को अपना ग़म नहीं बनाएगा वह दुनिया के ग़म में फँस जाएगा और माल की दौड़ लग जाएगी और अल्लाह उसके दिल को परेशान कर देगा और अल्लाह तआला उसको फ़क़्र व फ़ाके में मुब्तला कर देगा और दुनिया मुक़द्दर (यानी जो उसके मुक़द्दर में है) के सिवा हासिल नहीं कर सकेगा।

सबसे ज़्यादा खुशी का दिन तबाही का दिन कैसे बना?

यज़ीद बिन मालिक अमवी ख़लीफ़ा गुज़रे हैं। यह नए ख़लीफ़ा थे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के बाद आए थे। एक दिन कहने लगे कि कौन कहता है कि बादशाहों को खुशियाँ नसीब नहीं होतीं। मैं आज का दिन खुशी के साथ गुज़ार कर दिखाऊँगा। अब मैं देखता हूँ कि कौन मुझे रोकता है।

कहा आजकल बग़ावत हो रही है यह हो रहा है वह हो रहा है तो मुसीबत बनेगी। कहने लगा मुझे आज कोई बग़ावत की, कोई मुल्की ख़बर न सुनाई जाए चाहे बड़ी से बड़ी बग़ावत हो जाए मैं कोई ख़बर सुनना नहीं चाहता। आज का दिन खुशी के साथ गुज़ारना चाहता हूँ।

उसकी बड़ी ख़ूबसूरत लौंडी थी। उसके हुस्न व जमाल का कोई मिस्ल नहीं था। उसका नाम हबाबा था। बीवियों से ज़्यादा उससे प्यार करता था। उसको लेकर महल में दाख़िल हो गया। फल आए, चीज़ें आ गयीं, मशरूबात आ गए। आज का दिन अमीरुल मोमिनीन खुशी में गुज़ारना चाहते हैं।

आधे दिन से भी कम गुज़रा है। हबाबा को गोद में लिए हुए है उसके साथ हँसी मज़ाक़ कर रहा है और उसे अंगूर खिला रहा है अपने हाथों से तोड़ तोड़कर उसको खिला रहा है एक अंगूर का दाना लिया और उसके मुँह में डाल दिया। वह किसी बात पर हँस पड़ी तो वह अंगूर का दाना सीधा उसकी साँस की नाली में जाकर अटका और एक झटके के साथ ही उसकी जान निकल गई।

जिस दिन को वह सबसे ज़्यादा ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता था उसकी ज़िन्दगी का ऐसा बदतरीन दिन बना कि दीवाना हो गया, पागल हो गया। तीन दिन तक उसे दफ़न नहीं करने दिया तो उसका जिस्म गल गया तो बनू उमैय्या के सरदारों ने मैय्यत को छीना और दफ़न किया और दो हफ़्ते के बाद ख़ुद दीवानगी में मर गया।

ख़ुशी इन्सान लेता है? ख़ुशी इन्सान अपनी ताक़त से ख़रीद सकता है? सब कुछ अल्लाह के ख़ज़ानों में है तो मेरे भाईयो यह है "ला इलाह इल्लल्लाह" सब कुछ अल्लाह करता है मख़्लूक़ क्या कर सकती है?

अल्लाह के बग़ैर तो यह सब कुछ असबाब हैं। इनसे अल्लाह का इरादा होगा तो काम बनेगा। दुनिया में कितने करोड़पति इन्सान हैं उनको कोई जानता नहीं और दुनिया में कितने फ़क़ीर हैं जिनके पीछे दुनिया दौड़ती है। दुनिया में कितने हुक्मरान हैं जिनके लिए दिलों में नफ़रत के दाग़ उबलते हैं कितने झोंपड़ी में रहने वाले हैं जिनके लिए दिल क़ुर्बान होते हैं। यह कौन है जो इस निज़ाम को चला रहा है? दुनिया में कितने मालदार हैं जिनका हिर्स ख़त्म नहीं होता। वह भूले बैठे हैं और दुनिया में कितने

फ़क़ीर हैं जो बादशाहों से भी ज़्यादा ग़नी हैं जिनकी नज़र में दुनिया एक कौड़ी के बराबर भी नहीं है।

दोज़ख़ का एक झोंका ज़िन्दगी भर की खुशियों को ख़ाक में मिला देगा

मूसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला की बात हुई तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! ﴿انك توسع على الكافر﴾ या अल्लाह! आप काफ़िर को बहुत ज़्यादा देते हैं तो अल्लाह तआला ने जवाब दिया कि इसकी वजह यह है, अल्लाह तआला ने दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया कि ज़रा देखो मैंने काफ़िर के लिए क्या तैयार कर रखा है।

जब मूसा अलैहिस्सलाम ने दोज़ख़ देखी तो कहने लगे या अल्लाह! तेरी इज़्ज़त व शहंशाही की क़सम! अगर काफ़िर सारी दुनिया के बादशाह बन जाए और क़यामत तक बिला किसी दूसरी के साझे के हुकूमत करे और मरकर यहाँ चला जाए तो उसने कुछ नहीं देखा और उसको कुछ फ़ायदा नहीं हुआ।

काफ़िरों के पास दुनिया की कसरत की वजह

फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने दूसरा सवाल किया या अल्लाह! ﴿انك تقدر على المؤمن﴾ या अल्लाह! एक मोमिन पर बड़ी तंगी डालते हैं। एक रिवायत में आता है कि एक वक़्त में एक काफ़िर मर रहा था इधर ही एक मुसलमान मर रहा था एक ही जगह

पर। वक़्त क़रीब है काफ़िर कहता है मुझे मछली चाहिए, मुझे मछली चाहिए तो वह मछली दरिया में है लेकिन मंडी में मौजूद नहीं। अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हरकत में आया। उस मछली को पकड़वाया उसको बाज़ार में भिजवाया, इधर से उस आदमी को भिजवाया और मछली ख़रीदी गई, बिकवाई गई, पकवाई, खिलवाई गई उसके बाद वह मर गया।

मुसलमान मर रहा है उसकी सुराही का पानी पास पड़ा था, प्यास की शिद्दत थी। उसने जो यूँ पकड़ना चाहा सुराही उंगलियों से टकरायी, सुराही उलटकर गिरी प्यासा ही मर गया।

तो फ़रिश्ता कहने लगा या अल्लाह इसकी जान निकाली तो मछली वहाँ से लाकर खिलाई, अपने की जान निकाली तो पानी भी पीने के लिए नहीं दिया, प्यासा ही उठा लिया तो मूसा अलैहिस्सलाम का सवाल और यह सवाल बराबर हो रहा है। एक सवाल इकठ्ठा कर दूँ ताकि तीनों का एक ही जवाब हो जाए।

एक वाक़िआः एक मूसा अलैहिस्सलाम का सवाल और एक हदीस,

एक मुसलमान मछियारा और एक काफ़िर दोनों मछली की के शिकार पर आए, मुसलमान ने जाल डाला ﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾ “बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम” वापस खींचा तो ख़ाली, काफ़िर ने जाल डाला “बिस्मिल्लात व उज़्ज़ा” लात व उज़्ज़ा के नाम की बरकत से ये जो पत्थर थे पत्थर के बुत। जाल मछलियों से भरा हुआ बाहर आया।

फिर मुसलमान ने कहा "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" जाल ख़ाली, काफ़िर ने कहा "बिस्मिल्लात व उज़्ज़ा" तो जाल भरा हुआ।

शाम तक शिकार होता रहा। काफ़िर की मछलियाँ और किश्ती भरती रही, मुसलमान हर बार ख़ाली, ख़ाली। आख़िरी बार जाल डाला काफ़िर ने और आख़िरी बार मुसलमान ने काफ़िर का जाल दुगना भरकर आया और मुसलमान के जाल में एक मछली आई। उसने कहा या अल्लाह! तेरा शुक्र है एक पर भी तेरा शुक्र है। उसने जो निकाला जाल खोला और पकड़ा तो फिसल के पानी में। उसने कहा या अल्लाह! यह भी तेरा शुक्र है तो वह फ़रिश्ता जो मुसलमान का था वह बेचारा रह न सघा।

मुसलमान पर तंगी

तो अब तीन बातें इकठ्ठी हो गयीं। तीनों का एक ही सवाल या अल्लाह! अपने को यूँ तड़पा के दिया तरसा के दिया दुश्मन को यूँ भर दिया, वह फ़रिश्ता या अल्लाह! उसे प्यासा मारा, उसे दरिया से मछली निकालकर खिलाई, तीसरा मूसा अलैहिस्सलाम का सवाल या अल्लाह आप मुसलमान को बड़ी तंगी देते हैं।

तीनों का जवाब अल्लाह ने एक ही दिया। ये तीन वाक़िआत अलग अलग हैं, अलग अलग ज़मानों के हैं जवाब क्योंकि एक ही है इसलिए मैंने सबको जमा कर दिया एक जवाब बना दिया।

अल्लाह ने यूँ जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया मूसा देखो! ज़रा मुसलमान का घर तो देखो ठिकाना तो देखो जगह तो देखो। मेरे फ़रिश्तों ज़रा मेरी जन्नत तो देखो, देखो, देखो।

तो मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह ﴿بعزتك وجلالك﴾

या अल्लाह! तेरी इज़्ज़त और शहंशाही की क़सम! अगर मुसलमान के हाथ कटे हुए हों ﴿ولو كان مقطوع اليدين والرجلين﴾ और पाँव भी कटे हुए हों सिर्फ़ इतना नहीं कि हाथ पाँव कटे हुए हों ﴿منكب على وجهه﴾ नाक रगड़ता फिर रहा हो।

मूसा अलैहिस्सलाम कह रहे हैं या अल्लाह! ऐसा हो मुसलमान लेकिन उसकी ख़बरगिरी करने वाला कोई न हो वह नाक रगड़ता फिरता हो। ऐसा तो एक घंटा भी अज़ाब बन जाता है, मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! ज़िन्दगी भी क़यामत तक की गुज़रे। उसके लिए तो हर पल क़यामत है लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम कह रहे हैं कि क़यामत तक ज़िन्दा रहे हाथ पाँव कटे हुए हों नाक रगड़ता फिरता हुआ ज़मीन पर चले लेकिन अगर मरकर यहाँ पहुँच जाए या अल्लाह तो उसने कोई दुख नहीं देखा, मज़े ही मज़े हैं।

सबसे ज़्यादा मुसीबतों में रहने वाले की जन्नत में ख़ुशी

एक और हदीस बताऊँ अल्लाह तआला आख़िरत में अपने एक बन्दे को बुलाएगा जिसको उसने दुनिया में सबसे दुखी रखा होगा अल्लाह तआला फ़रमाएगा इसको ज़रा जन्नत का एक फेरा लगवाकर लाओ और बस फेरा। तो उसको फ़रिश्ते ले जाएंगे और यूँ फेरा दिलाकर वापस जैसे पंघोड़ा ऊपर जाता है और एक दम नीचे बस। ऐसे ही एक फेरा आएगा और बाहर।

जब वह अल्लाह के सामने आएगा तो अल्लाह फ़रमाऐगा क्यों मेरे बन्दे तूने दुनिया में बड़े दुख देखे। भाई एक पल का झोंका,

एक नज़र का असर कहेगा या अल्लाह तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैंने तो दुनिया में कभी दुख देखा ही नहीं था। अभी तो रहना बाक़ी है, अभी तो जन्नत की बादशाही बाक़ी है, अभी तो हूरों के साथ शादियाँ हैं और अभी तो हमेशा की इज़्ज़तें के ताज हैं।

फिर अल्लाह तआला एक आदमी को बुलाएगा जिसको दुनिया में सबसे ज़्यादा सुखी रखा होगा। सबसे ज़्यादा सुखी नाफ़रमान काफ़िर अल्लाह तआला फ़रमाएगा दोज़ख़ का एक फेरा दिलवा दो। तो उसको फ़रिश्ते यूँ करके बाहर निकाल लेंगे। अल्लाह के सामने लाएंगे अल्लाह फ़रमाएगा क्यों मेरे बन्दे! दुनिया में बड़ी मौज की, बड़े मज़े किए। कहेगा या अल्लाह! तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैंने दुनिया में कोई सुख देखा ही नहीं।

अब अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एक जुमला साथ जोड़ दें। अबूबक्र राज़ियल्लाहु अन्हु अपने ख़ुत्बे में फ़रमाते हैं ﴾لا خیر فی بعده النار ولا شرفی بعده الجنة﴿ वह मुसीबत कोई मुसीबत नहीं जिसके बाद जन्नत हो और वह ख़ैर और सुख कोई सुख नहीं जिसके बाद जहन्नम हो।

ज़िन्दगी भर अय्याशी की मगर सुकून नहीं मिला, वाक़िआ

मैं बंगलादेश से आ रहा था। एक गोरा बैठा हुआ था। एक घंटे तक तो मैं बोला नहीं। मैंने समझा कि अंग्रेज़ी तो मुझे भूल गई होगी। पच्चीस साल हो गए अंग्रेज़ी बोले हुए तो अब कहाँ याद होगी। फिर मुझे ख़्याल आया इसे दावत दूँ। फिर ख़्याल आया बोला नहीं जाएगा। एक घंटा इसी कशमकश में गुज़र

गया। खाना हो गया आख़िर मुझ से रहा न गया। मैंने कहा या अल्लाह! बहुत बोली है याद करवा दे।

तो मैंने उससे बात शुरू की। कोई पन्द्रह मिनट मैंने देखा कि चालीस फ़ीसद अल्फ़ाज़ आना शुरू हो गए। मैं जो कहना चाहता था उसको सुना दिया। मैंने उससे एक सवाल किया, मैंने यह कहा बताओ तुम्हारी सारी ज़िन्दीगी है नाचना, शराब पीना, डिस्को, क्लब, जुवा। सारी ज़िन्दगी इसी के आसपास घूमती है तुम अपने ज़मीर से पूछो क्या इतनी बड़ी काएनात का और क्या इतने बड़े वजूद का यही मक़सद है कि नाचा जाए, गाया जाए, अपने दोस्त बदले जाएं, रात को शराब पी जाए और फिर वेसुध होकर पड़ जाए, हफ़्ते इतवार को सब कुछ लुटा दिया जाए अगले दिन फिर बैल की तरह काम शुरू कर दिया जाए।

मैंने कहा अपने दिल से सवाल करके मुझे जवाब दो क्या ज़िन्दगी का यही मक़सद है? वह ख़ामोश हो गया। कहने लगा यह बात तो मुझसे किसी ने कभी पूछी ही नहीं। मैंने कहा तू बता क्या इसीलिए हम दुनिया में आए हैं? कुछ सोचकर क़हने लगा नहीं। मैंने कहा अगर ज़िन्दगी का मक़सद यही है तो हमेशा मक़सद पाने के बाद इन्सान इतमिनान महसूस करता है चैन महसूस करता है तुम अपने दिल से सवाल करो कभी ज़िन्दगी में चैन महसूस किया? कहने लगा नहीं।

तो फिर ज़िन्दगी में कहीं झोल है। हम वह इस्लाम लाए हैं जिसमें यह ज़िन्दगी मुकम्मल है लेकिन हम क्या करें हमने तो अपने पाँव पर खुद कुल्हाड़ी मारी हुई है। अब मैंने उसको इस्लाम की बात बतानी शुरू की कि इस्लाम एक पाकीज़ा मज़हब है।

गया। खाना हो गया आख़िर मुझ से रहा न गया। मैंने कहा या अल्लाह! बहुत बोली है याद करवा दे।

तो मैंने उससे बात शुरू की। कोई पन्द्रह मिनट मैंने देखा कि चालीस फ़ीसद अल्फ़ाज़ आना शुरू हो गए। मैं जो कहना चाहता था उसको सुना दिया। मैंने उससे एक सवाल किया, मैंने यह कहा बताओ तुम्हारी सारी ज़िन्दीगी है नाचना, शराब पीना, डिस्को, क्लब, जुवा। सारी ज़िन्दगी इसी के आसपास घूमती है तुम अपने ज़मीर से पूछो क्या इतनी बड़ी काएनात का और क्या इतने बड़े वजूद का यही मक़सद है कि नाचा जाए, गाया जाए, अपने दोस्त बदले जाएं, रात को शराब पी जाए और फिर बेसुध होकर पड़ जाए, हफ़्ते इतवार को सब कुछ लुटा दिया जाए अगले दिन फिर बैल की तरह काम शुरू कर दिया जाए।

मैंने कहा अपने दिल से सवाल करके मुझे जवाब दो क्या ज़िन्दगी का यही मक़सद है? वह ख़ामोश हो गया। कहने लगा यह बात तो मुझसे किसी ने कभी पूछी ही नहीं। मैंने कहा तू बता क्या इसीलिए हम दुनिया में आए हैं? कुछ सोचकर कहने लगा नहीं। मैंने कहा अगर ज़िन्दगी का मक़सद यही है तो हमेशा मक़सद पाने के बाद इन्सान इतमिनान महसूस करता है चैन महसूस करता है तुम अपने दिल से सवाल करो कभी ज़िन्दगी में चैन महसूस किया? कहने लगा नहीं।

तो फिर ज़िन्दगी में कहीं झोल है। हम वह इस्लाम लाए हैं जिसमें यह ज़िन्दगी मुकम्मल है लेकिन हम क्या करें हमने तो अपने पाँव पर खुद कुल्हाड़ी मारी हुई है। अब मैंने उसको इस्लाम की बात बतानी शुरू की कि इस्लाम एक पाकीज़ा मज़हब है।

इसकी ये ख़ूबियाँ हैं, मेरे मुँह से निकल गया कि शराब हराम है। यह आदमी को पागल कर देती है।

कहने लगा हैं तुम्हारे यहाँ शराब हराम है? मैंने कहा हाँ।

कहा मैं सारी दुनिया में फिरता हूँ सबसे बेहतरीन शराब कराची में जाकर पीता हूँ। बस इसके बाद मैं चुप हो गया। मैंने कहा अब मैं उसे क्या कहूँ? मेरा दिल पारा पारा हो गया। आज मुसलमान काफ़िर के लिए रुकावट बना हुआ है। ख़ैर फिर भी मैंने उसे कहा हमें न देखो हमारी किताब को पढ़ो। हम तो कमज़ोर हैं किताब हमारी सच्ची है। वही पढ़ लो।

अल्लाह को मनाए बग़ैर हम कटी हुई पतंग हैं

क़ुरआन ने यह दस्तूर दिया है कि अल्लाह को ले लो। अल्लाह को लिए बग़ैर न दुनिया बनेगी न आख़िरत बनेगी। न अन्दर का सुख है न बाहर का सुख है अगर इन्सान सारी दुनिया का माल व मता इकट्ठा कर ले, सारी दुनिया का हुस्न अपने पहलु में बिठा ले, सारी दुनिया के तख़्त उसके सामने ताराज हो जाएं, सारी दुनिया के ख़ज़ाने सिमटकर उसके क़दमों में आ जाएं अगर वह अल्लाह पाक से दूर है तो इनमें से कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसके अन्दर के अंधेरों को भर सके, कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी रूह की तड़प का इलाज बन सके, कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो उसके अन्दर के अंधेरों को रौशन कर सके।

दिल का मरहम अल्लाह ही है, रूह के अंधेरों की नूरानियत अल्लाह ही है, अन्दर की परेशानियों का इलाज अल्लाह ही है, बाहर के दुख दर्द की दवा करने वाला भी अल्लाह ही है और

ज़मीन को इकठ्ठा करने वाला भी अल्लाह ही है और काएनात को इकठ्ठा करने वाला भी अल्लाह ही है और अपने दिल की दुनिया को चैन देने वाला भी अल्लाह ही है।

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम! अल्लाह के बग़ैर हम कुछ नहीं वह राज़ी न हुआ तो कुछ न हुआ और वह राज़ी हो गया तो सब कुछ हो गया अगर वह नाराज़ है तो हम दोनों जहान में बाज़ी हार गए और अगर वह राज़ी है तो हम दोनों जहान में बाज़ी जीत गए चाहे हम सूलियों पर लटक जाएं, चाहे आरों से चीर दिए जाएं, चाहे दो टुकड़े कर दिए जाएं, चाहे जिस्म से गोश्त उधेड़ दिया जाए।

﴿يا ابن آدم تفرغ لعبادتي املاء قلبك غنى واصد فاقرك﴾

ऐ मेरे बन्दे तू मेरे ताबे हो जा मैं तेरे दिल को सारे ग़मों से निजात दे दूँगा और तेरे दिल को ग़नी करके मैं तेरे फ़क़्र व फ़ाक़े को दूर कर दूँगा।

﴿وان لا تفعل﴾ और अगर तू मेरी तरफ़ न आया मेरे साथ तूने जोड़ न बिठाया तो फिर याद रख ले ﴿املا قلبك املابك شغلا﴾ मैं तेरे अन्दर मुसीबतें भर दूँगा और तुझे मसरूफ़ियत में फँसा दूँगा और तेरे ऊपर मशग़ूली के अज़ाब को मुसल्लत करा दूँगा।

दुनिया और आख़िरत के मसाईल का हल

इस वक़्त मेरा आपका सारी दुनिया के इन्सानों का ज़ेहन यह है कि पैसा आएगा तो हमारा मुल्क ख़ुशहाल हो जाएगा, ख़ुशहाल होगा तो हमारे मसाइल हल हो जाएंगे। इस वक़्त पूरी दुनिया के मुसलमानों का यहूदियों का इसाइयों का, हिन्दुओं का और सिक्खों

का तमाम दुनिया के इन्सानों का यह ज़ेहन है कि पैसा आएगा तो हम ख़ुशहाल हो जाएंगे और मस्अले हल हो जाएंगे। यूरोप अमरीका से सारी दुनिया के बातिल से हमारा ज़ेहन बना है,लेकिन यह ग़लत है।

अल्लह तआला कहता है कि मैं राज़ी हूँगा तो तुम ख़ुशहाल या बदहाल हो। तुम्हारे हाल बन जाएंगे अगर मैं राज़ी हूँ तो तुम्हारे दुनिया व आख़िरत के मसाइल हल हो जाएंगे और अगर मैं नाराज़ हूँ तो तुम्हारी दुनिया बनेगी न आख़िरत बनेगी। यह अल्लाह तआला का हुक्म है जो आसमान से आया है। हदीस क़ुदसी है—

﴿انی اذا اطعت رضیت﴾ जब मेरी इताअत होती है तो मैं ख़ुश हो जाता हूँ,

﴿واذ رضیت بارکت﴾ और जब मैं राज़ी होता हूँ तो बरकत देता हूँ,

﴿ولیس لی بر کتی نهایه﴾ फिर मेरी बकरत के दरवाज़े खुल जाते हैं जिनकी कोई हद नहीं,

من کان همه طلب الاخرة جمع الله شمله
وجعل غناه قلبه واتته الدنیا وهی راغة

जो आख़िरत को ग़म बनाता है अल्लाह तआला उनके दिल में ग़िना को डाल देता है और दुनिया उसके ताबे बन जाती है। अल्लाह उसके सारे ग़म दूर कर देता है। अल्लाह तआला उसकी सारी परेशानियाँ दूर कर देता है।

सुकूने दिल का रास्ता

मेरे भाईयो! मुसलमान कहता है मैं परेशान हूँ। सुकून नहीं है।

अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं अगर तू मेरे दीन की तरफ़ आए, मैं तेरे सारे ग़म दूर कर दूँगा, मैं तेरी सारी परेशानियाँ दूर कर दूँगा, मैं तेरे फ़क़्र को दूर कर दूँगा, ग़िना को तेरे दिल में डाल दूँगा, दुनिया तेरे पास नाक रगड़कर आएगी।

﴿من كان همه طلب الدنيا﴾ जो दुनिया को ग़म बना लेता है अल्लाह तआला उसके दिल को परेशान कर देता है,

﴿وجعل الفقر بين عينيه﴾ और उसके सामने फ़क़्र को तारी कर देता है,

﴿ولا نصيب من الدنيا الا ما كتب له﴾ और मुक़द्दर से ज़्यादा दुनिया उठा नहीं सकता।

जो सुकून चाहता है अपनी ज़िन्दगी को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर ढाल ले क्योंकि अल्लाह को अपने नबी का एक एक अमल इतना पसन्द है जो आदमी जिस वक़्त किसी सुन्नत पर अमल करता है अल्लाह उसको मुहब्बत की निगाह से देखते हैं और जिसको अल्लाह मुहब्बत की निगाह से देखें तो उस पर रहमत की बारिशें उतरती हैं और सुकून का दूसरा नाम रहमते इलाही है।

अगर मेरी मानोगे तो दुनिया बारिश की तरह तुम पर बरसेगी

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे ऐ क़ुरैश! मेरी मानोगे तो किसरा की बेटियाँ तुम्हारे बिस्तर में आएंगी और कैसर और किसरा के ख़ज़ाने लौटकर तुम्हारे क़दमों में आएंगे।

आज भी अल्लाह क़सम! जिसने आसमान को खड़ा किया और ज़मीन को क़ायम किया और जिसने चाँद व सूरज की गर्दिश को चलाया और जिसके क़ब्ज़े में मेरी और आपकी गर्दनें हैं और जिसके क़ब्ज़े में आज की हुकूमतें हैं और जिसकी क़ुदरत आज से पहले भी वैसी थी और आज भी वैसी है और आज के बाद भी वैसी ही रहेगी और जिसकी क़ुदरत हमेशा के लिए क़ाहिर है, ग़ालिब है, दिल का सुकून सिर्फ़ अल्लाह ही के हाथ में है। यह बादशाह भी सुकून के लिए उसके आगे हाथ फैलाते हैं तो हम क्यों न बादशाहों के बादशाह से मांगे।

तेरा गुलाम तेरे दर पर हाज़िर है! वाक़िआ

भाईयो! अल्लाह की मान लो मस्अला हल हो जाएगा। देखो न आप कहते हैं कि एम०पी० से मिलो मस्अला हल होगा। अल्लाह कहता है मुझ से मिलो मस्अला हल हो जाएगा। अब अल्लाह से कैसे मिलें? किसी एस०पी० से मिलने के लिए वक़्त लेना पड़ता है। अल्लाह कितने करीम हैं कि उनसे मिलने के लिए कोई वक़्त नहीं लेना पड़ता। या अल्लाह कहो, लब्बैक। इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० जब रात को उठते तो मुसल्ले पर मुनाजात करते थे—

﴿اللهم غابت النجوم﴾ या अल्लाह सितारे भी सो गए,
﴿وعادت العيون﴾ और लोगों की आँखे बोझिल हो गयीं,
﴿ونام الملوك﴾ दुनिया के बादशाह सब सो गए,
﴿وقامت الحراس﴾ और पहरेदार खड़े हो गए,

يا الله انت الحى القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم وبابك مفتوح للسائلين.

तेरा दरवाज़ा दिन को भी खुला है और रात को भी खुला हुआ है,

﴿وعبدك ببابك﴾ या अल्लाह तेरा ग़ुलाम तेरे दर पर आया हुआ है।

तुम एक बार पुकारोगे मैं दस बार जवाब दूँगा

भाईयो! किसी वक़्त भी आप या अल्लाह कहते हैं तो दो जहान का बादशाह कई दफ़ा कहता है लब्बैक लब्बैक लब्बैक बोल बोल मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ तो अल्लाह के दरबार तक पहुँचने के लिए एक तो तौबा की ज़रूरत है कि सबसे तौबा करवाई जाए और ख़ुद भी तौबा करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी परेशान होते तो नमाज़ पढ़कर अल्लाह से मांगते थे।

नमाज़ से बीमारी दूर होगी (वाक़िआ)

हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु आए कहने लगे ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पेट में दर्द है। आपने फ़रमाया नमाज़ पढ़। (इसमें शिफ़ा है।)

अल्लाह का फ़रमान मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है?

मेरे भाईयो! जब आदमी नमाज़ ही में अल्लाह से ग़ाफ़िल होता है और बाहर की दुनिया में फिर रहा होता है तो ग़ैब से आवाज़ आती है, मेरे बन्दे! मुझसे ख़ूबसूरत कौन है? जिसकी तरफ़ तू

मुतवज्जोह होता है। ऐसे नमाज़ी को अल्लाह तआला यह कहते हैं लेकिन फिर भी वह अपने चक्करों में घूमता रहता है तो अल्लाह तआला फिर पुकारते हैं ऐ मेरे बन्दे! किधर को मुतवज्जोह हो रहा है? क्या मुझ से अच्छा तुझे मिला जिसको तू सोचता है। फिर भी यह अपने ख़्यालों में गुम रहता है तो फिर तीसरी बार अल्लाह की तरफ़ से पुकार आती है मेरे बन्दे! मुझ से बेहतर तुझे कौन मिला है जिसे तू नमाज़ में भी खड़ा सोचता है। जब तीसरी दफ़ा भी उसे ख़्याल नहीं आता तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि इसको नमाज़ की कोई परवाह नहीं और अल्लाह ऐराज़ फ़रमा लेते हैं।

सदक़ा मुसीबतों को दूर कर देता है

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शादे गिरामी है सदक़ा मुसीबतों और बलाओं को टालता है। यह किसी ऐरा ग़ैरा की बात नहीं है। यह अल्लाह के हबीब का कलाम है। बादशाह की बात झूठी हो सकती है पर अल्लाह के नबी की बात ग़लत नहीं हो सकती। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है जो ज़मीन वालों पर रहम करेगा आसमान वाला उस पर रहम करता है। इसी वजह से सहाबा कसरत से लोगों की मदद करते थे।

सख़ावत के पहाड़

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु दूसरे सहाबी के पास जाते हैं कि जनाब आपने मुझे दस लाख रुपए दिए हैं। यही सहाबी कहने लगे दूसरे सहाबी से कि जब चाहें आकर ले जाना। मेरे भाई मोहतरम सहाबी घर आए और अपना हिसाब देखा तो लेने नहीं थे देने थे।

अब इनका ज़र्फ़ देखें कि उनको भी पता है कि लेने हैं देने नहीं हैं और पैसे भी कोई थोड़े नहीं दस लाख रुपए और वह भी आज से चौदह सौ साल पहले के। जब उनको पता चला कि लेने नहीं देने हैं तो भाग भागकर आए और कहा अब्दुल्लाह बिन जाफ़र जो हुआ भाई माफ़ करना वह रुपए तो मैंने तुम्हारे देने थे। फ़रमाया चलो वह मैंने तुम्हें हदिया कर दिए, माफ़ कर दिए। अब अल्लाह ने इतना दे दिया कि हिसाब नहीं।

यह उसका बेटा है जो हब्शा की तरफ़ हिजरत करके गए थे। भूखों पर भूख गुज़ारी, वतन से दूर वक़्त गुज़ारा और मौता के मैदान में भूखे प्यासे जान दे दी। आज उन्हीं को अल्लाह तआला इतना रिज़्क़ दे रहा है कि दस लाख रुपए लेने थे और ग़लती से कह रहा है तू दे। सिर्फ़ इस बात पर कि मुसलमान का ख़्याल रखते हुए कि मैंने माफ़ कर दिया अल्लाह ने दुनिया भी बनाई।

सुकून तो सिर्फ़ मुझसे दोस्ती करने में है

आप यक़ीन करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ लेकर आएं हैं लेकिन हम इसके लिए उठते ही नहीं। अल्लाह ऐलान कर रहा है ﴿ألا﴾ ऐ लोगो! सुनो अपने रब की अल्लाह क्या फ़रमा रहा है ﴿بذكر الله تطمئن القلوب﴾ जाओ जिनके दिल की दुनिया वीरान है उन्हें बता दो जाओ जो सुकून की तलाश में हैं जाओ जो चैन की तलाश में हैं कभी शराब में डूबे, कभी मौसिक़ी में डूबे, कभी शक्लों में डूबे, कभी महल में डूबे, कभी सियासत के पीछे दौड़े, कभी गाड़ियाँ बदलीं, कभी शहर बदले, कभी मुल्क बदले, कभी लिबास बदले

पर उनके दिल की दुनिया आबाद न हुई। न हो सकेगी उन्हें बता दो।

﴿بذكر الله تطمئن القلوب﴾ मुझे याद करो दिल की दुनिया आबाद हो जाएगी। अन्दर की शमा रौशन करनी है तो अल्लाह अल्लाह करनी पड़ेगा, अन्दर की शमा जलानी है तो अल्लाह की मानकर चलना पड़ेगा, एक आदमी मानेगा तो वह आबाद होगा, एक क़ौम मानेगी तो वह आबाद होगी, एक मुल्क मानेगा तो वह आबाद होगा।

अगर अल्लाह को याद न किया और उसको साथ न लिया तो ये अन्दर के अंधेरे काएनता की रौशनियों से दूर नहीं होते, ये अंधेरे बढ़ते ही जाएंगे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

फ़ज़ाइल दावत व तलबीग़

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो! और दोस्तो! अल्लाह तआला ने इस जहान को बेकार पैदा नहीं फ़रमाया,

﴿ما خلقنا السموات والارض وما بينهما باطلا.﴾

यह सारा जहान बेकार नहीं है और फिर कहा,

﴿ما خلقنا السموات والارض وما بينهما لا عبين.﴾

जो कुछ बनाया है वह कोई खेल तमाशा भी नहीं है, बेकार

भी नहीं है, खेल तमाशा भी नहीं है। यह हमारे आसपास के माहौल के बारे में फ़रमाया।

फिर हमारे बारे में फ़रमाया ﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا﴾ तुम्हारा क्या ख़्याल है कि तुम बेकार पैदा हुए हो, कोई मक़सद सामने नहीं है, खाना पीना और बस मर जाना यही ज़िन्दगी है फिर दूसरी जगह फ़रमाया ﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल करता है इन्सान कि उसको कोई नहीं पूछेगा ﴿يترك سدى﴾ ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा, कोई नहीं पूछने वाला ﴿ايحسب الانسان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल है कोई पूछेगा नहीं मरकर मिट्टी हो जाएगा।

अल्लाह और उसके रसूल की तारीफ़ करना सीखो

अल्लाह और उसके रसूल की तारीफ़ करना सीखें। आवाज़ लगाने में बड़ी ताक़त है। गले सड़े फल बिक जाते हैं फेरी लगाने वाले के जो फेरी लगाते हैं उनके पास कोई अच्छा सौदा नहीं होता। ऐसे ही गन्दा माल मंदा माल होता है लेकिन वे जो फेरी लगाते हैं और आवाज़ लगाते हैं और जो यह आवाज़ लगाना है यह उसका सारा सौदा बिकवा देता है।

आपसे खरा सौदा काएनात में किसी के पास नहीं है। आप सदा लगाने वाले तो बनो, फेरी तो लगाओ। अल्लाह और उसके नाम की सदा तो लगाओ और जिसका सौदा नहीं बिकता वह साइकल पर बाँधकर घर घर फिरता है। यह घर घर फिरना उसका सौदा बिकवा देता है। आपसे सच्चा सौदा तो काएनात में किसी के पास है ही नहीं। आप निकलकर आवाज़ तो लगाओ। अल्लाह

की क़सम! दुनिया मक़सद से ख़ाली है। किसी को नहीं पता क्या करना है और कहाँ जाना है?

कोई सुनाने वाला तो हो, कोई अल्लाह और उसके रसूल का तआ़रुफ करवाने वाला तो हो।

जूते का तआ़रुफ हो रहा है, जहाज़ों का तआ़रुफ हो रहा है, कपड़े का तआ़रुफ हो रहा है, मिठाई का तआ़रुफ हो रहा है, पलेटों का तआ़रुफ हो रहा है, कपास का तआ़रुफ हो रहा है, गेंहूँ का तआ़रुफ हो रहा है।

तुम जन्नत का तआ़रुफ कराओ, अल्लाह का तआ़रुफ करवाओ, अल्लाह के हबीब का तआ़रुफ करवाओ। फिर देखो दुनिया कैसे गिरती है।

झूठी तारीफ़ पर ईनाम का वाक़िआ

पहले ज़माने के लोग बादशाहों से कुछ मांगते न थे बल्कि बादशाहों की तारीफ़ करते थे तो ईनाम मिल जाता था। जरीर ने अब्दुल मलिक बिन मरवान की तारीफ़ की,

السنم خير من ركب المطايا وانت العلمين بطون راعى

तो वज्द में आकर अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया और कहने लगा इसको एक सौ ऊँट दे दो। एक ग़ुलाम दे दो वग़ैरह वग़ैरह। इतना दिया कि सारी नस्लों से ख़त्म न हुआ। एक शे'र सुनकर हॉलाकि यह शे'र उस पर फिट ही नहीं, यह शे'र सिर्फ़ अल्लाह पर फिट आता है। अपनी झूठी तारीफ़ सुनकर बादशाह वज्द में आया।

तो जो अल्लाह है जो है ही तारीफ़ के क़ाबिल, जिसने क़ुरआन शुरू किया तो अपनी तारीफ़ से ﴿الحمد لله رب العلمين﴾ यह दुनिया और आख़िरत के सारे मसअले हल होने का सबब है। यह हमारी मेहनत, हमारा काम है। अल्लाह अल्लाह पुकारो पागलों की तरह, अल्लाह भी आपसे प्यार करेगा, अल्लाह भी आपको चाह लेगा।

अल्लाह को बन्दे का सब से पसन्दीदा अमल

सबसे ज़्यादा पसंदीदा अल्लाह को अपनी तारीफ़ है। क़ुरआन की शुरूआत की ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ करो।

काअब बिन ज़ुहैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में शे'र कहे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको अपनी चादर इनायत फ़रमाई और दुआ दी ﴾﴿ ﴿فص فوق﴾ इससे मुराद है, अल्लाह तेरी फ़साहत को सलमात रखे। तू बड़ा फ़सीह आदमी है लेकिन इसका लफ़्ज़ी तर्जुमा है:

तेरे दाँत न टूटें। यह लफ़्ज भी अल्लाह ने ऐसा क़ुबूल किए कि सौ बरस उम्र दाँत सलामत थे। जैसे बीस साल के नौजवान के होते हैं। चेहरे पर बुढ़ापा नहीं आया। उनका चेहरा जवान रहा। जिस्म ढल गया, चेहरा जवान रहा। जो पाँच मिनट अल्लाह की बड़ाई को बयान न कर सके वह कैसा मुहिब है।

इंसानियत को अल्लाह का तआरुफ़ कराओ

मेरे भाईयो! हम तो आए थे अल्लाह का तआरुफ करने और उसकी इबादत करने के लिए। हम पाँच मिनट अल्लाह की

अज़्मत को बयान न कर सके। यह कितने अफ़सोस की बात है। किसी औरत से पूछो तेरा बेटा कैसा है? तो एक घंटा समझा सकती है फिर पूछा जाए कि घर में क्या होता है? तो एक घंटा इसको भी बयान कर सकती है और जब पूछा जाता है अरी बहन तेरा अल्लाह कैसा है? तो पता नहीं कैसा है।

बस मेरा अल्लाह एक है और क्या तो मुझे इसका कोई पता नहीं। जिस मुसलमान मर्द को और जिस मुसलमान औरत को सारी दुनिया में अल्लाह का तआरुफ करना है और अल्लाह की मानने पर दुनिया को तैयार करना है। उसे यह भी पता नहीं कि हमारा रब कैसा है? ज़मीन व आसमान में एक ही तो ज़ात है जो क़ाबिले तारीफ़ है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन कहाँ से शुरू किया ﴿الحمد لله﴾ से शुरू किया। क़ुरआन की शुरूआत "अल्हम्दु" से हो रही है। यह छोटा सा जुमला है। हक़ीक़त यह है कि अरबी ज़बान तर्जुमे से समझ में नहीं आती। अरबी में "अल्हम्दु" का तर्जुमा हम करते हैं सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। इससे ज़्यादा उर्दू में कोई लफ़्ज़ नहीं है। अल्लाह तआला ने "अल्हम्दु" में क्या भर दिया है। चारों आसमानी किताबें और सारी दुनिया के ख़ज़ाने भर दिए। ऐ मुसलमान मर्द व औरतो! यह तुम्हारा काम कि सारी ज़िन्दगी मेरी तारीफ़ करना कि हमारा अल्लाह ऐसा है, ऐसा है।

अल्लाह की अज़्मत दिल में उतार देने का वाक़िआ

अब्दुल ख़ालिक़ साहब एस०पी० हैं फ़ैसलाबाद में थे। हमने

उनको तीन दिन के लिए निकाला, फिर उनका ट्रांसफ़र हो गया। उन्होंने चार महीने लगाए। दाढ़ी आ गई। वह चिल्ले के लिए फ़ैसलाबाद आ गए तो उस वक़्त जो एस०पी० था ज़फ़र वह मेरा क्लास फ़ैलो था लाहौर में हम इकठ्ठे पढ़ते थे। हम दोनों मैं और अब्दुल ख़ालिक़ उससे मिलने गए।

वह जो पुलिस का बड़ा थाना है उसका एक दरवाज़ा बन्द रहता है और एक दरवाज़ा खुला रहता है अवाम के लिए। हमें वह क़रीब था। हम वहाँ से अन्दर जाने लगे। सामने सिपाही खड़ा था तो अब्दुल ख़ालिक़ ने कहा भाई दरवाज़ा खोलना। उसने दोनों को देखा सूफ़ी साहब नज़र आए।

उसने कहा उत्तो आओ। उन्होंने कहा भाई तेरी बड़ी मेहरबानी होगी खोल दे दरवाज़ा। उसने कहा सुनिया नहीं ऐ, बन्द है उत्तो आओ। पहले तो तबलीग़ी उसूल अपनाया भाई बड़ी मेहरबानी खोल दे दरवाज़ा। जब वह न माना तो कहा मैं अब्दुल ख़ालिक़ एस०पी०। फिर उसने ज़ोरदार सैल्युट मारा। चाबी भी निकल आई और ताला भी खुल गया, दरवाज़ा भी खुल गया। कभी वह सिपाही आगे चले कभी पीछे चले और सर सर करने लगा। मैंने अब्दुल ख़ालिक़ को कहा मुझे एक बड़ी बात समझ में आई तेरी बरकत से। कहने लगा क्या? मैंने कहा जब तक हाकिम की अज़मत नहीं होगी, हुक्म की अज़मत भी दिल में नहीं आ सकती। इसने आपको पहले कह दिया कि उत्तो आओ फिर सैल्यूट मार दिया फिर ताला खोल दिया फिर दरवाज़ा खोल दिया फिर आगे पीछे भाग रहा है क्यों?

पहले तुम्हें सूफ़ी समझ रहा था। फिर तुम्हें एस०पी० समझा

कि यह एस०पी० तो मेरा बहुत कुछ कर सकता है लिहाज़ा उसका सारा वजूद ख़ुशामद में ढल गया तो हम भी अल्लाह की अज़्मत दिल में उतार लें।

अल्लाह की इम्तियाज़ी सिफ़त रब्बुल आलमीन

अल्लाह रब्बुल आलमीन है जो सारे जहानों का रब है। रब में मुहब्बत है माँ को भी रब कहते हैं क्योंकि माँ बच्चे को पालती है। इसलिए उसे मजाज़ी तौर पर रब कहा जाता है, ﴿رب ارحمهما كما ربيني صغيرا﴾ उन पर रहम कर जैसा कि उन्होंने मुझे पाला। माँ-बाप मजाज़ी तौर पर पालने का ज़रिया बनते हैं वैसे तो हक़ीक़त में पालने वाला अल्लाह ही है।

तो रब होना अल्लह की सबसे इम्तियाज़ी सिफ़त है जो बन्दे को अपनी तरफ़ खींचती है कि पालने वाला वह है। बच्चे को कोई तकलीफ़ होती है तो पहले माँ को बुलाता है फिर बाप का आवाज़ देता है क्योंकि माँ हर वक़्त साथ रहती है। अल्लाह तआला सारे आलम का रब है सारी काएनात के ज़र्रे ज़र्रे का रब है। आप ज़रा ग़ौर तो फ़रमाएं,

अल्लाह साँप को भी रिज़्क़ पहुँचाता है, ख़िंज़ीर को भी रिज़्क़ पहुँचाता है, कुत्ते को भी रिज़्क़ पहुँचाता है। कुत्ते को हाथ लगाने से हाथ नापाक नहीं होता उसका झूठा नापाक होता है और ख़िंज़ीर ऐसा नापाक जानवर है कि उसको हाथ लगाने से हाथ नापाक हो जाता है। ऐसे नापाक जानवर को भी अल्लाह तआला रिज़्क़ पहुँचाता है तो सारी काएनात में तुम्हें मेरी तारीफ़ करनी है और मेरा नग़मा गाना है, मेरा पैग़ाम काएनात को पहुँचाना है और

खुद भी मेरे हुक्मों पर आना है और दूसरों को भी मेरे हुक्मों पर लाना है। जब यह करेंगे तो क्या अल्लाह हमारा रिज़्क़ देना बंद कर देगा? हर्गिज़ नहीं फिर तो वह हमें ऐसे पालेगा जैसे नबियों को पाल कर दिखा दिया।

हर मुसलमान से तौबा करवाओ, इसी को ओढ़ना और बिछौना बना लो

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिना की वादी में ऐलान फ़रमाया था ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ ऐ मेरी उम्मत अब ग़ाएबीन तक मेरा पैग़ाम पहुँचाना तुम्हारा ज़िम्मे है।

हर कलिमा पढ़ने वाला शाहिद है जिस तक नहीं पहुँचा वह ग़ाएब है। चार अरब काफ़िर ग़ाएब हैं, एक अरब मुसलमान शाहिद हैं। इन एक अरब मुसलमानों के ज़िम्मे है चार अरब काफ़िरों को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना और हमारे ज़िम्मे है कि एक अरब मुसलमानों से तौबा करवाना। खुद तौबा पर आना और एक अरब मुसलमानों से तौबा करवाना। यह अल्लाह तआला ने हमारे ज़िम्मे किया है। यह ज़िम्मेदारी तबलीग़ी जमाअत की वजह से नहीं यह ज़िममेदारी ख़त्मे नुबुव्वत की वजह से है।

ख़त्मे नुबुव्वत का क्या मतलब है? हम अपने नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं। हमारा अक़ीदा यह है कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं आपके बाद कोई नबी नहीं। इसको कहते हैं ख़त्मे नुबुव्वत। इस ख़त्मे नुबुव्वत की वजह से दुनिया में इस्लाम फैलाना मुसलमानों में बिगाड़ पैदा हो

तो मुसलमानों को तौबा करवाना यह हमारे ज़िम्मे है। यह हमारा काम है।

हमने आज तक तिजारत करना अपने फ़राईज़ में से समझा, बीवी बच्चों का पालना अपना फ़रीज़ा समझा, माँ-बाप की ख़िदमत करना अपना फ़रीज़ा समझा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन के लिए, अल्लाह के पैग़ाम के लिए अपने घर को छोड़ना और उस पर जान व माल लुटाना यह अपना फ़रीज़ा नहीं समझा। दूसरी बात हम यह कह रहे हैं कि हर मुसलमान चाहे इस्लामाबाद में रहता हो, अरबोंपति हो या रोज़ाना ताज़ी रोटी खाता हो चाहे थार पार करके सहरा में रहता हो या अमरीका, आस्ट्रेलिया में रहता हो जो यह दावा करता है कि मेरा नबी आख़िरी नबी है उसके ज़िम्मे तबलीग़ का काम है। यह तबलीग़ वाले ज़िम्मे नहीं लगा रहे हैं। हर बात में तुम्हें नबी का पैग़ाम सुना रहा हूँ।

﴾الا فليبلغ الشاهد الغائب﴿ यह पैग़ाम मिना की वादी से है। दूसरी हदीस में यह है ﴾بلغوا عني ولو آية﴿ एक मस्अला मालूम हो तो उसे आगे पहुँचाओ। इस बात में वज़ाहत नहीं है कि पहुँचाने वाले कैसे हों? कौन लोग हों? बहुत से लोग कहते हैं कि पहले आलिम बनो फिर तबलीग़ करो। अल्लाह के नबी के क़ुर्बान जाएं। उन्होंने ऐलान किया ﴾بلغوا عني ولو آية﴿ एक बात भी पता हो तो उसे आगे पहुँचाओ। मेरा उम्मती जो एक बात भी जानता हो वह भी मेरा पैग़ाम आगे सुनाए। इस उम्मत का हर मर्द व औरत पैदाइशी तौर पर इस्लाम की तबलीग़ करने वाला है पैदाईशी। इसके अन्दर अल्लाह तआला ने सिफ़त पैदा की है अगर मैं और आप पहली उम्मतों में पैदा होते तो हमारे अन्दर यह इस्तेदाद न होती।

हम तो पैदाईशी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाएब हैं

हमारा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में पैदा होना अपने आप इस बात की दलील है कि सारे के सारे हम और हमारे घरों की औरतें सारी दुनिया में इस्लाम फैलाने की ताक़त इसके अन्दर मौजूद है। हर बच्चा लिखने पढ़ने की ताक़त लेकर आता है। जिनको सिखाया जाता है उसकी ज़बान खुल जाती है जिसको नहीं सिखाया जाता वह वैसे ही जाहिल मर जाता है।

इस उम्मत का हर आदमी पैदाईशी तौर पर मुबल्लिग़े इस्लाम है। वह दुनिया में इस्लाम फैलाने की ताक़त रखता है। कोई इसको उभारकर उजागर करके इस्तेमाल करे। आलिम होना शर्त नहीं है बल्कि इस हदीस पाक की वजह से हर मुसलमान अल्लाह के पैग़ाम को फैलाने वाला है।

फिर तीसरी हदीस पाक यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿ان الله بعثنی کافة للناس رحمة.﴾

ऐ मेरी उम्मत मुझे अल्लाह सारे आलम के लिए रहमत बनाया है। ﴿فاعدو عنی﴾ मेरा पैग़ाम मुझसे लेकर आगे पहुँचा दो। आपको ख़िताब हो रहा है मुझे ख़िताब हो रहा है। सिर्फ़ तबलीग़ी जमाअत को ख़िताब नहीं हो रहा, यह लफ़्ज़ ग़लत है तबलीग़ी जमाअत। नमाज़ियों की भी कोई जमाअत होती है? हर मुसलमान नमाज़ी है, रोज़ेदारों की कोई जमाअत होती है? हर मुसलमान रोज़ेदार है।

तबलीग़ कोई जमाअत नहीं, तबलीग़ ख़त्मे नुबुव्वत का काम है। कोई करता है कोई नहीं करता, कोई समझता है कोई नहीं समझता। आप अन्दाज़ा करें बच्चा जब पैदा होता है तो एक कान में अज़ान देते हैं क्या यह समझ रहा है अज़ान को? एक कान में तकबीर कहते हैं जो नमाज़ से पहले कही जाती है।

अज़ान के ज़रिए तबलीग़ पर अल्लाह का ईनाम

एक कान में अज़ान, दूसरे कान में इक़ामत। अज़ान तबलीग़ है, मुवज़्ज़िन मुबल्लिग़ होता है। मुवज़्ज़िन दा'ई होता है, मुवज़्ज़िन मुबल्लिग़ होता है कि नमाज़ की तबलीग़ कर रहा है कि आओ नमाज़ के लिए। हम अपने बच्चे के कान में अज़ान देते हैं इक़ामत कहते हैं लड़का हो या लड़की, बच्चा हो या बच्ची हम उसकी रूह को यह पैग़ाम सुनाते हैं—

ऐ बेटे, ऐ बेटी तू मुबल्लिग़े इस्लाम है, तेरे ज़िम्मे तबलीग़ का काम है।

अब सुनो अज़ान देने वाला सिर्फ़ एक हुक्म की तबलीग़ कर रहा है। सिर्फ़ नमाज़ की तो इस मुवज़्ज़िन को जो क़ब्र में रखा जाएगा तो क़ब्र की मिट्टी उसको खा नहीं सकती। क़ब्र का कीड़ा उसको खा नहीं सकता और क़यामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सबसे पहले अल्लाह तआला इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कपड़े पहनाएंगे और क़यामत के दिन मुवज़्ज़िन सबसे ऊँची जगह खड़ा होंगे ताकि पता चले यह हैं अल्लाह के पैग़ाम को सुनाने वाले।

अल्लाह के रास्ते का अज्र

एक आदमी आया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ﴿كيف لى ان انفق من مالى﴾ आप बताएं मैं अपना पैसा ख़र्च करना चाहता हूँ और जो आदमी अल्लाह के रास्ते में निकला हुआ है उसके बराबर अज्र हासिल करना चाहता हूँ। आपने फ़रमाया तेरे पास कितने पैसे हैं? उसने कहा ﴿عندى ستة الاف﴾ मेरे पास छः हज़ार हैं। आपने फ़रमाया तू सारा ख़र्च कर दे तो अल्लाह के रास्ते में जो सो रहा है उसकी नींद के अज्र को भी हासिल नहीं कर सकता। सोने वाले के अज्र के बराबर भी नहीं मिल सकता। आमाल का तो क्या पूछते हो।

जन्नत की हूर से शादी करने का रास्ता

एक हदीस में मैंने पढ़ा जन्नत की लाखों हूरें इसके आसपास इकठ्ठी होंगी। एक को जो देखेगा वह कहेगी ﴿اتذكر يوم كذا دعوت فلانا﴾ आपको याद है फ़लाँ दिन आपने फ़लाँ आदमी को दावत दी थी। उस दावत के बदले में अल्लाह ने मेरी आपसे शादी कर दी।

फिर उधर देखेगा तो एक और खड़ी नज़र आएगी ﴿اتذكر يوم كذا﴾ आपको याद है फ़लाँ आदमी को दावत दी थी उसके बदले में अल्लाह तआला ने मेरी आपसे शादी कर दी।

इधर देखेगा तो एक और खड़ी होगी ﴿اتذكر يوم كذا﴾ आपको फ़लाँ दिन याद है एक आदमी को आपने बुराई से रोका था और

उसे हटाया था हुस्ने सुलूक के साथ, यूँ नहीं रोकना, अरे मत करो। यह हिमाक़त है और ज़ुल्म है। अल्लाह की तरफ़ बुलाने के लिए हिकमते अमली फ़र्ज़ है, ﴿ادع سبيل ربك بالحكمة الله﴾ हिकमत से बुलाओ वरना लोगों को काफ़िर बना दोगे और यह हिकमत अल्लाह के रास्ते में निकलकर सीखनी पड़ेगी। तबलीग़ हिकमत के बग़ैर नहीं। वह हूर कहेगी तुम्हें याद है कि तुम ने फ़लाँ वक़्त में फ़लाँ को दावत दी थी। इसके बदले में अल्लाह ने मेरी आपसे शादी कर दी।

तुम्हें ख़बर भी है वह तुम्हें किन हाथों से गले लगाएंगी

﴿وان فی الجنة حورا﴾ और जन्नत में एक हूर है, ﴿اسمها عيناء﴾ इसका नाम ऐना है,

﴿عن يمينها سبعون الف وصيف وعن يسارها سبعون الف وصيف.﴾

उसके दाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम और उसके बाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम, एक लाख चालीस हज़ार ख़ुद्दाम में वह पुकार के कहती है

﴿اين الامرون بالمعروف والناهون عن المنكر﴾

कहाँ हैं भलाईयों को फैलाने वाले बुराईयों क़ो मिटाने वाले? ऐसी ऐसी बीवियाँ अल्लाह तआला ने हमारे लिए तैयार करके रखी हैं।

﴿باى بنان تعطيه﴾ किन हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी? वे औरतें ऐसे हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी कि उनकी उंगली का एक पोर सूरज को ग़ाएब कर सकता है।

दस करोड़ महीने की इबादत का सवाब

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿موقف ساعته سبيل الله﴾ थोड़ी देर के लिए आदमी अल्लाह के रास्ते में खड़ा हो जाए

﴿خير من قيام ليلة القدر عند الحجر الاسود﴾

एक आदमी हज्रे अस्वद में बैतुल्लाह के सामने खड़ा हो और लैलतुल क़द्र हो, लैलतुलक़द्र में हज्र अस्वद के सामने सारी रात नफ़ल पढ़े।

बैतुल्लाह में एक रात एक लाख के बराबर वह एक रात हज़ार महीने से ज़्यादा बेहतर तो एक लाख को एक हज़ार से ज़रब दी जाए तो दस करोड़ महीने की इबादत से ज़्यादा बेहतर है। एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़े हो जाना है।

दूसरी रिवायत में आता है ﴿لموقف فى سبيل الله خير من قيامه عمره﴾ एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़ा हो जाना सारी ज़िन्दगी की इबादत से बेहतर है।

सत्तर साल की इबादत से अफ़ज़ल अमल

तीसरी रिवायत में आता है,

﴿لموقف ساعته فى سبيل الله خير من قيامه سبعين عاما.﴾

एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़े हो जाए तो सत्तर साल की इबादत से बेहतर है।

यह इतनी रिवायतें हैं एक घड़ी की जब इतनी क़ीमत है तो साल की कितनी होगी? चार महीने की कितनी होगी? चिल्ले की कितनी होगी? तीन चिल्ले की कितनी होगी?

एक घड़ी की जब इतनी होगी तो कितनी घड़ियाँ बनती है? एक घड़ी बीस मिनट को कहते हैं। लोगा बीस मिनट को एक घड़ी कहते हैं। बीस मिनट का इतना अज्र तो साल लगाने का चार महीने, चिल्ले का, सारी ज़िन्दगी देने का हर साल तीन चिल्ले देने का कितना अज्र अल्लाह नसीब फ़रमाएगा।

तीस ग़ुलाम आज़ाद करने से अफ़ज़ल अमल

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। उन्होंने तीस ग़ुलाम आज़ाद किए। एक ग़ुलमा आज़ाद करे तो आदमी दोज़ख़ से निजात पा जाता है। एक आदमी उनको हैरान होकर देखने लगा तो आपने उसको देखकर कहा ﴿اولا اخبرك بافضل مما صنعت﴾ मैं तुम्हें और बड़ा अमल बताऊँ जो मैंने अभी ग़ुलाम आज़ाद किए हैं, इनसे अड़ा अमल बताऊँ? कहा ज़रूर बताएं ﴿بينما رجل على دابته يسير في سبيل الله﴾ आपने कहा एक आदमी अल्लाह के रास्ते में जा रहा है। वह अपनी सवारी पर है, घोड़ा है, ऊँट है, गधा है किसी सवारी पर जा रहा है और एक लकड़ी उसके हाथ में है तो चलते चलते उसको नींद आ गई और नींद आने पर हाथ नरम हो गया और लकड़ी गिर गई। लकड़ी के गिरने पर जो तकलीफ़ हुई उस पर जो अल्लाह तआला सवाब देगा वह मुझे तीस ग़ुलाम आज़ाद करने पर नहीं देगा।

मच्छर के पर के बराबर भी गुनाहों की माफ़ी

एक हदीस में आता है कि जब आदमी अल्लाह के रास्ते में

निकलता है तो सारे गुनाह ऊपर खड़े हो जाते हैं। जब वह घर से निकलता है तो सारे गुनाह नीचे गिर जाते हैं, ﴿حتى لا يبقى عليه مثل جناح بعوض﴾ उसके जिस्म पर एक मच्छर के पर के बराबर भी गुनाह बाक़ी नहीं रहता। सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

﴿وتكفل الله له باربع﴾ और अल्लाह तआला कहता है जा मैं चार बातों में तेरी ज़मानत देता हूँ। अल्लाह ज़मानत देता है कि मैं चार बातों में तेरी हिफ़ाज़त करूँगा।

﴿يحفظه اهله وماله﴾ तू मेरे रास्ते में जा! मैं तेरे घर की हिफ़ाज़त तेरी जान की हिफ़ाज़त, तेरे माल की, तेरे औलाद की सबकी हिफ़ाज़त करूँगा।

बाप बेटी के आँसू का वाक़िआ

मेरी भाईयो! इस्लाम वह नबी वाला दर्द है जो आज इस उम्मत के अन्दर से मिटा हुआ है कि मेरा कोई उम्मती दोज़ख़ में जाने न पाए और मेरा हर हर उम्मती जन्नत में जाने वाला बने और मेरी उम्मत मेरे दीन को लेकर सारी दुनिया में फैल जाऐ और कलिमे को बुलन्द करे।

अल्लाह के नबी ने अपनी ज़ात को थकाया और अपने आपको भूख में डाला और अपने आपको ग़ारों में डाला आप जब सफ़र से वापस आए चेहरे का रंग भी बदला हुआ था। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में तशरीफ़ लाए। हज़रत फ़ातिमा रो रही थीं और आपके माथे को चूम रही थीं।

अल्लाह के नबी ने फ़रमाया बेटी! तू किस बात पर रो रही

है? अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपका रंग पीला पड़ गया है, आपके कपड़े पुराने हो गए हैं, फट गए हैं हाँलाकि आप तो इतने बड़े रुत्बे वाले हैं। यह आपका क्या हाल हुआ है?

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा! ऐ मेरी बेटी आँसू मत बहा, ऐ मेरी बेटी! तेरे बाप को उस रब ने वह कलिमा देकर भेजा है कि इस दुनिया में न कोई पक्का घर बचेगा न कोई कच्चा घर बचेगा, हर ख़ेमे, हर घर में, हर कच्चे पक्के मकान में हर खाल व बाल के बने हुए ख़ेमे में अल्लाह तआला अपने दीन को दाख़िल करेगा।

दीन को गले लगाना इज़्ज़त का ज़रिया है

और ऐ फ़ातिम! जो मेरे दीन को गले लगाएगा इज़्ज़त पाएगा और जो ठुकराएगा अल्लाह उसको ज़लील व ख़्वार फ़रमाएगा और सुन ले मेरा कलिमा वहाँ तक जाएगा और मेरी बात वहाँ वहाँ पहुँचेगी जहाँ जहाँ तक रात जाती है।

मेरे भाईयो! हैरत की बात है आपको तेईस साल में अल्लाह तआला ने वापस बुला लिया लेकिन कहा यूँ कि मेरा कलिमा वहाँ तक जाएगा जहाँ तक रात जाती है। ख़ुद तेईस बरस में अल्लाह के पास चले गए तो सवाल पैदा होता है कि वह कौन सा इन्तिज़ाम करके गए हैं कि यह कलिमा हर कच्चे पक्के घर में पहुँचेगा और इस बात को लेकर चलने वाला ऐसा चले कि काएनात का कोई घर न बचे? जहाँ जहाँ तक रात जाती है वहाँ वहाँ तक यह कलिमा पहुँचे आपने इसका क्या इन्तेज़ाम किया?

दीन के लिए इतना फिरो की मौत आ जाए

मेरे भाईयो! आपने अपना ग़म उम्मत के अन्दर मुन्तक़िल किया अपने सहाबा के दिलों से दुनिया की मुहब्बत निकालकर और माल की मुहब्बत निकालकर और चीज़ों की मुहब्बत निकालकर, अपनी मुहब्बत को भरा और अल्लाह की मुहब्बत को भरा और उनके दिलों में यह बिठा दिया कि तुम माल कमाने नहीं आए और तुम दुनिया बनाने नहीं आए, तुम मेरे कलिमे को फैलाने के लिए आए हो, तुम मेरे दीन को फैलाते फैलाते मर जाओ और हौज़े कौसर पर आकर मेरे गले लग जाना।

नबी वाला दर्द पैदा करो

मेरे भाईयो! आज इस दर्द वाला कोई नहीं है। आज हम मुसलमान कहलाते हैं लेकिन दिल में दुनिया तड़पती है। अल्लाह ने घर से उठाया, अल्लाह ने दुकान से उठाया, अल्लाह पाक ने दफ़्तर से उठाया, कपड़े पाक करवाए, जिस्म पाक करवाए और फिर अपनी बारगाह में खड़ा फ़रमाय और फिर यूँ फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दे! अब तू मेरे पास आया है, अब मुझ से बात कर ताकि मैं तुझसे बात करूँ। नमाज़ मेरा और तेरा आपस में मुकालमा है तू मुझसे बोल मैं तुझसे बोलूँ। नमाज़ तुझे मुझे जोड़ने वाली है लेकिन जब नबी वाला दर्द मिटा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला ग़म मिटा तो मुसलमान नमाज़ में भी अपनी दुकान को सोचता है और नमाज़ में भी अपने कारोबार को सोचता है। अल्लाह तआला ने तो घर से उठाकर यहाँ खड़ा किया है कि मेरे

पास आ लेकिन दिल व दिमाग़ अल्लाह को और अल्लाह के रसूल को नहीं दिया। अब खड़ा है और दुनिया के मंसूबे सोच रहा है।

मेरे नबी ने इस दीन के लिए कैसी ज़िल्लत बर्दाश्त की

मेरे भाईयो! बजरा बिन कैस कैसरी ने कहा (नअऊज़ुबिल्लाह) कि इस पूरे बाज़ार में सबसे बदतर चीज़ कोई है तो तू है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा चला जा, खड़ा हो जा यहाँ से अगर मेरी कौम तुझे यहाँ न बिठाती तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान मुबारक से तो एक भी बोल नहीं निकला।

आपने चादर उठाई, ग़मगीन परेशान उठे और ऊँटनी पर सवार होने लगे और ऊँटनी जब खड़ी हुई तो उस ख़बीस ने नीचे से नेज़ा मारा और ऊँटनी उछली। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उलटकर ज़मीन पर गिरे फिर भी ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली। अबू जहल ने मारा लेकिन आपकी ज़बान मुबारक से बद्दुआ के अल्फ़ाज़ नहीं निकले।

एक ने थूका दूसरे ने गिरेबान फाड़ा (वाक़िआ)

एक सहाबी कहते हैं कि मैंने देखा कि एक नौजवान है बहुत ख़ूबसूरत है लोगों को दावत देता फिरता है सुबह से चल रहा है और कलिमे की तरफ़ बुला रहा है। मैंने पूछा कि यह कौन है? लोगों ने कहा यह क़ुरैश का एक नौजवान है जो बेदीन हो गया है

और लोगों को एक नए दीन की तरफ़ बुलाता है। इतने में एक आदमी ने आकर उसके मुँह पर थूका और दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सिर पर मिट्टी डाली और एक ने आकर थप्पड़ मारा।

लेकिन नबी के ज़र्फ़ को देखो कि ज़बान से एक बोल भी बद्दुआ का नहीं निकला। इतने में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो वह ज़ारो ब क़तार रोते हुए प्याले में पानी लेकर आ रही हैं। जब बेटी को रोते हुए देखा तो आँखें ज़रा नम हो गयीं कि हाय बेटी अपने बाप पर ग़म न कर कि तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है। वह सहाबी कहते हैं जो बाद में मुसलमान हो गए थे उस वक़्त तक काफ़िर थे मैंने पूछा यह लड़की कौन है? कहा यह इसकी बेटी है।

मेरे भाईयो! रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है, पान सिगरेट वाला आवाज़ लगा रहा है तुम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती होकर उसके कलिमे की आवाज़ न लगाओ तो भाई हम क्या कहें अगर आप अपनी मस्जिदों में बैठ गए तो हम समझेंगे कि हमारा आना वसूल हो गया और अगर नहीं बैठोगे तो हम यह समझेंगे कि भाई हम से ही क़ुसूर हुआ कि हम आपको समझा नहीं सके।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यहूदी के इस्लाम लाने पर खुशी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यहूदी बच्चे का हाल पूछने गए। बीमार हो गया था। आपने कहा एक यहूदी बच्चा

हमारे पास आया करता था वह कहाँ है? बताया गया जी वह बीमार है। कहा चलो उसका हाल पूछें। तो उसकी बीमार पुर्सी को गए। वही उसको रास आ गई। वह आख़िर दमों पर था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा बेटा कलिमा पढ़ ले तो उसने बाप की तरफ़ देखा कह ﴿اطع ابا القاسم﴾ कहा मान ले जो अबुल क़ासिम कह रहे हैं। इधर कलिमा पढ़ा उधर उसकी जान निकल गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुशी के मारे पाँव उठ गए, ऐसे पंजों पर हो गए। अल्लाह तेरा शुक्र है तूने इसे दोज़ख़ से बचा लिया। मेरे ज़रिए से इसे दोज़ख़ से बचा लिया।

जिस्म के टुकड़े कर दिए मगर दीन पर आँच न आने दी

हमारी जमाअत उर्दुन गई थी। वहाँ लोग सहाबा की क़ब्रों पर ले गए। मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु पहाड़ की चोटी पर अकेले हैं। अब्दुर्रहमान बिन मआद और हज़रत मआद दोनों बाप बेटे शहीद हुए दोनों की क़ब्रें है, इब्ने अज़वर की क़ब्र एक टीले पर है, अबु उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु की रास्ते के एक किनारे पर क़ब्र थी। आगे पहाड़ों में गए मौत्ता एक मक़ाम है जहाँ जंगे मौत्ता लड़ी गई। यहाँ पर तीन बड़े सहाबा ज़ैद, जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हुम की क़ब्रें मौजूद हैं। जब हम जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर गए तो यक़ीन मानिए हमारी सारी जमाअत रो रही थी। हम आँसुओं को रोक रहे थे लेनिक आँसू नहीं थमते थे।

हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु का सारा वाक़िआ आँखों के सामने घूम गया। उनकी नौजवान बीवी थी, छोटे छोटे चार बच्चे थे। जब अल्लाह के रास्ते में निकले और झंडा उठाया तो शैतान सामने आया और कहा जाफ़र तेरे चार छोटे छोटे बच्चे तेरी जवान बीवी क्या बनेगा उनका?

हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अब तो अल्लाह के नाम पर जान देने का वक़्त आया है। आगे बढ़े, एक हाथ कटा, दूसरा हाथ कटा और फिर दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देख लिया कि हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर। असमा उनकी बीवी का नाम था। कहती हैं कि मैं बच्चों का नहला चुकी थी कपड़े पहना चुकी थी और खुद आटा गूंध रही थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। मैं घबराकर खड़ी हो गई मैं पूछा या रसूलल्लाह! क्या हुआ? फ़रमाया कि मैं तेरे लिए कोई अच्छी ख़बर नहीं लाया और आपके आँसू निकल पड़े। हज़रत अमसा ने सुना और बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ीं। छोटे छोटे बच्चों को छोड़कर जवान बीवी को छोड़कर पहाड़ों पर सो हुए हैं। कमाल है आज से चौदह सौ साल पहले वह क़ब्र बनी जबकि वहाँ किसी इन्सान का गुज़र न होता था।

आँसू थे कि थमते ही न थे

हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर गए तो उनकी क़ब्र पर एक हदीस लिखी हुई थी। मैंने साथियों को उसका तर्जुमा

करके बताया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की ख़बर हुई तो दूसरों को बताया तो हज़रत ज़ैद की छोटी बच्ची हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में आकर रोने लगी। आप भी रोने लगे। एक सहाबी हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलल्लाह! आप किस लिए रो रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ साद यह हबीब का शौक़ है। हबीब इसलिए के ज़ैद को बेटा बनाया हुआ था। सारी जमाअत वहाँ रो रही थी कि ऊपर पहाड़ पर क़ब्र दूर दूर तक आबादियाँ नहीं वीराने में क़ब्र बनीं, सन्नाटे में क़ब्रें बनीं और फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र पर गए।

उनकी क़ब्र पर अजीब नूर था। आदमी अपने आँसू नहीं रोक सकता था। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में रिवायत है कि आगे बढ़े तो बीवी बच्चे याद आ गए तो एकदम अपने आपको झटका दिया, "ऐ नफ़्स मुझे क़सम है अपने रब की मैं जान उस पर क़ुर्बान करूंगा तू चाहे या न चाहे, तू माने या न माने, तुझे अरसा हो गया बीवी बच्चों में रहते हुए, अब जन्नत का शौक़ कर, लोग इस्लाम को मिटाने के दर पे हैं तू बीवी बच्चों को रखने के दर पे है। ऐसे न क़त्ल हुआ तो मौत तो बहरहाल आकर रहेगी। इसलिए वह काम कर जो तेरे साथियों ने किया।" आपने आगे बढ़कर छलांग लगाई और उनके जिस्म के टुकड़े टुकड़े हो गए। वह मक़ाम आज भी महफ़ूज़ है जहाँ तीनों शहीद हुए और फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ हाँ मैं देखता हूँ कि तीनों के तीनों जन्नत की नहरों में ग़ोते खाते फिर रहे हैं, जन्नत के फल खा रहे हैं।

अल्लाह के लिए नई दुल्हन को भी छोड़ दिया

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु की रात को शादी हुई। सुबह को उठे सिर पानी डाला। अचानक आवाज़ लगी कि मुसलमानों की हार हो गई तो बग़ैर नहाए मैदान की तरफ़ भाग गए। सिर्फ़ एक रात की शादी थी और अल्लाह के रास्ते में जाकर शहीद हो गए तो उनकी लाश हवा में उठ गई। आसमान के बीच फ़रिश्ते आ गए और जन्नत के पानी से गुस्ल दिया। आपने देखा कि हंज़ला को गुस्ल दिया जा रहा है। आपने फ़रमाया अरे क्या हो गया शहीद को गुस्ल नहीं दिया जाता तो फिर लाश नीचे आ गई। सहाबा ने देखा कि सर के ऊपर से पानी टपक रहा है। बाद में पूछताछ करने से पता चल गया कि जनाबत की हालत में शहीद हुए थे तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए गुस्ल का इन्तिज़ाम फ़रमाया। उनकी बीवी के हक़ूक़ का क्या हुआ? क्या उनके घर उजड़ गए या नहीं, उनके घर वीरान हो गए? और हमारा ज़ेहन कहता है कि बीवी बच्चों को छोड़कर चले जाना कहाँ का इस्लाम है। इससे आप हज़रात खुद अन्दाज़ा लगाएं और फ़ैसला फ़रमा लें।

जिस रब के एहसानत शुमार नहीं किए जा सकते उसको खुश करने का आसान और अफ़ज़लतरीन काम

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस्लाम को फैलाना और उस पर चलना भी हमारे ज़िम्मे है। इसको सीखने के लिए हमें अपने घरों से निकलना पड़ता है और उस ज़माने में माँ-बाप ने अपने हक़ूक़

माफ़ कर दिए थे कि जाओ दुनिया में दीन का पैग़ाम पहुँचाओ, जन्नत में इकठ्ठे रहेंगे। दुनिया रहने की जगह थोड़े ही है। यहाँ पर आख़िरकार जुदाई है कितना ज़िन्दा रहेंगे आख़िर मरेंगे।

﴾عش ما شئتم انكم ميتون﴿

हम में से कितने हैं जिन्होंने अपने बच्चों को तैयार कर दिया है कि जाओ दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। हम तैयार कर रहे हैं डाक्टर बन जाओ, इन्जीनियर बन जाओ और ताजिर बन जाओ। कारोबार संभाल लो और वे तैयार कर रहे थे कि जाओ दुनिया में अल्लाह का दीन पहुँचाओ। ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाओ।

"ऐ यमन वालो! मैं अल्लाह के रसूल का सफ़ीर हूँ तुम्हारे पास।"

मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का बोल सारी उम्मत पर सादिक़ आता है और रबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु का अल्लाह भला करे जिन्होंने हर चीज़ को वाज़ेह करके उम्मत को ज़िन्दगी का काम सिखाया।

﴾ان الله ابتعثنا.﴿ रुस्तम के दरबार में यह कलिमात अदा किए और तारीख़ ने उन्हें अपने सफ़हात में महफ़ूज़ किया और क़यामत तक आने वाली कलिमा गो उम्मत के लिए हुज्जत बनाकर बाक़ी रखा ताकि किसी को यह न हो कि हमें पता नहीं था कि हम क्यों आए? तो वह कह रहे हैं हमें अल्लाह तआला ने भेजा है,

﴾لنخرج العباد من عبادة العباد الىٰ عبادة رب العباد.﴿

हम सारी दुनिया के इन्सानों को लोगों की ग़ुलामी से निकालकर अल्लाह का ग़ुलाम बनाना चाहते हैं,

﴾من جور الاديان الى عدل الاسلام.﴿

हम सारी दुनिया को ज़ुल्म से निकालकर इस्लाम के अदल में लाना चाहते हैं,

﴿وارسلنا بدينه الیٰ خلقه.﴾

अल्लाह तआला ने हमें अपना दीन दिया और हमें हुक्म दिया कि जाओ मेरे पैग़ाम को सारी दुनिया के इन्सानों में आम कर दो।

दीन के लिए सूली पर लटकने का वाक़िआ

जब हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु को सूली पर लटाकने लेग तो अबू सुफ़ियान ने कहा अब भी मान जा तो निजात है। सूली पर लटके लटके शे'र पढ़ रहे हैं,

وقد خيرو للكفرو الموت دونه　　وقد حملت عيناى من غير مجزعى
ومهوى حضار الموت انى لميت　　ولكن حضارى جحم نار ملفعى
فلست بمبد للعدو تخشعا　　ولا جذعا انى الى الله مرجعى

अरे अबू सुफ़ियान! किस धोके में पड़ गए मेरा सब कुछ दीन पर क़ुर्बान हो सकता है, पर मैं अपने महबूब का कलिमा नहीं छोड़ सकता हूँ लटका दो मुझे सूली पर और मेरे आँसुओं से धोका न खाना, मैं मौत के डर से नहीं दोज़ख़ के डर से रो रहा हूँ। जान क़ुर्बान कर दी जाएगी लेकिन अल्लाह और उसके रसूल को नहीं छोड़ा जाएगा।

जब अबू सुफ़ियान ने नेज़े उठाए मारने के लिए तो कहा ऐ अल्लाह! अपने हबीब को मेरा सलाम कहना। उसी वक़्त जिब्राईल अलैहिस्सलाम मस्जिदे नबवी में उतर गए कि या रसूलल्लाह! ख़ुबैब आपको सलाम पेश कर रहे हैं उनको क़ुरैश ने क़त्ल कर दिया है।

दीन के लिए गोश्त को हड्डियों से जुदा कर दिया गया

हज़रत उम्मे अम्मारा रज़ियल्लाहु अन्हा के बेटे को मुसैलमा कज़्ज़ाब ने पकड़ा और हाथ काटे, पाँव काटे, नाक कान फिर गोश्त को हड्डियों से उधेड़ दिया। इस दर्दनाक मौत से उनको मारा। जब यह पैग़ाम उनकी माँ को मिला कि तेरे बेटे को यूँ शहीद कर दिया गया। कहा—

﴿لهذا ليوم ارضعيه﴾ यही दिन देखने के लिए मैंने उसको दूध पिलाया था। हम बिकने वाली क़ौम नहीं हैं कि पैसे पर बिक जाएं, सियासत पर बिक जाएं, दुकानों पर बिक जाएं, ज़मींदारी पर बिक जाएं। हम तो अपनी जान के सौदे करते हैं। हम अपने आपको फ़िदा करते हैं। हम अपने को फ़िदा करते हैं ताकि दीन पर आँच न आए।

ख़ूबसूरत शाएरा भी अल्लाह के लिए छोड़ दी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा की आतका से शादी हुई। वह ऐसी ख़ूबसूरत, ऐसी शायरा और ऐसी फ़ाज़िला थी कि मुहब्बत इतनी बढ़ गई कि अल्लाह के रास्ते में जाना ही छोड़ दिया। बाप ने समझाया बेटा तू अल्लाह के रास्ते में नहीं जाता? बीवी की मुहब्बत ज़ंजीर बन गई। आख़िर अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उसे तलाक़ दे दो। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा बाप है फिर तो तलाक़ देना पड़ती है। तलाक़ तो दे दी

मगर सीने पर ऐसा ज़ख़्म लगा कि याद करते। एक बार लेटे हुए थे कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु वहाँ से गुज़रे उनको नहीं पता कि अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु गुज़रें हैं। शे'र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह है—

ऐ आतका जब तक सूरज निकलता रहेगा तेरी याद भी मेरे दिल में ऐसे ही तुलू और गुरूब होती रहेगी।

तो हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को तरस आया। कहा बेटा दोबारा निकाह कर ले। दोबारा रुजु कर लिया लेकिन फिर जान कहाँ दी है? ताएफ़ की पहाड़ियों में सीने पर तीर लगा और वही ज़ख़्म रिस्ते रिस्ते मौत का सबब बना। पहले अब्दुल्लाह के शे'र थे अब आतका बेक़रार हुई

اعليت لا تنفك عينى حزينة   ولا ينفك جلدى او برا

मैं भी क़सम खाती हूँ कि मेरी आँख का पानी कभी ख़ुश्क न होगा और मेरा जिस्म भी कभी नरम कपड़ा नहीं पहनेगा। तीस बरस की उम्र में वह गए।

यूँ यह तबलीग़ चली, यूँ यह जिहाद का झंडा उठा है। जान पर गुज़र गई, माल पर गुज़र गई, घर छुट गए, आरों से चिर गए, सूलियों पर चढ़ गए, बोटी बोटी हो गई तब जाकर अल्लाह का कलिमा दुनिया में गूँजा है।

दीन के लिए भाई की लाश घोड़ों तले रौंद डाली

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर थे और रोमियों के क़दम उखड़े और मुसलमान आगे बढ़े तो हिश्शाम बिन अबिल

आस रज़ियल्लाहु अन्हु उनके बड़े भाई, बड़े सहाबा में हैं वह शहीद होकर रास्ते में गिर पड़े, गुज़रने का जहाँ रास्ता था वहाँ उनकी लाश पड़ी तो सबके क़दम रुक गए कि हिश्शाम रज़ियल्लाहु अन्हु सहाबी भी बड़े हैं और अमीर के भाई हैं तो अम्र बिन आस ने फ़रमाया,

अरे मेरे भाई की लाश तुम्हें आगे बढ़ने से रोक न दे यह अल्लाह के पास पहुँच गया है।

और खुद उनकी लाश पर घोड़े को दौड़ाया और पीछे सबको दौड़ाया।

मेरे पीछे आओ और मेरे भाई को मत देखो इस वक़्त अल्लाह के दीन को देखो। जब इस मुहिम से फ़ारिग़ हुए तो फिर लौटकर आए और एक एक बोटी अपने भाई की उठाते थे और बोरी में डालते थे। यह इस्लाम यहाँ ऐसे नहीं आया। भाई की लाश पर घोड़ों को दौड़ाना कोई आसान काम है?

अरे चिल्ला देकर हम मुबल्लिग़ हो गए, साल के चार महीने देकर हम मुबल्लिग़ हो गए, हम हैं ही इसी काम के लिए, आए ही हैं इसी के लिए। कोई और नबी आने वाला हो तो हम बैठ जाते। हम भी न करें तो किससे गिला करें?

तेरे दीन के लिए घोड़े समुंद्र में भी ले जाने को तैयार हूँ

हज़रत उक़्बा बिन नाफ़े रज़ियल्लाहु अन्हु अफ़्रीका में दाख़िल हुए, त्यूनिस के किनारे पर उतरे। वहाँ बरबर क़ौम आबाद थी।

उनसे जिहाद किया। उनको इस्लाम की दावत दी फिर उनसे पूछते हैं आगे कोई है तो वे बताते भी नहीं फिर उनसे आगे चले, फिर आगे चले, फिर आगे चले, फिर आगे चले यहाँ तक कि समुंद्र आ गया। बहरे औक़ियानूस आ गया। उन्दलुस से चले और त्यूनिस से चले और मराकश तक पहुँच गए। यह हज़ारों किलोमीटर का सफ़र इस बड़े रेगिस्तान में आता है उसको भी पार किया और समुंद्र जब सामने आया तो एक ठंडी आह निकली और कहने लगे,

"इस समुंद्र ने मेरा रास्ता रोक दिया अगर मुझे पता होता कि इससे आगे भी अल्लाह के बन्दे हैं तो मैं उनको भी जाकर अल्लाह का पैग़ाम सुनाता।"

और वहाँ से वापसी पर शहीद हुए। वहीं क़ब्र बनी। आज भी अलजज़ाइर में अल्लाह के बन्दे की क़ब्र बता रही है कि कहाँ मक्का और कहाँ मदीना कहाँ हिजाज़ वहाँ से निकलकर अपनी क़ब्र यहाँ बनवाई अल्लाह के बन्दों को दीन में दाख़िल करने के लिए।

दीन की ख़िदमत पर अल्लाह की मदद का वायदा

त्यूनिस में उन्होंने छावनी बनाई। जब यह अल्लाह के काम में थे तो अल्लाह उनके साथ था। त्यूनुस में छावनी बनाई। वहाँ जंगल था ग्यारह किलोमीटर फैला हुआ तो वहाँ छावनी बनाई तो इस बारह हज़ार के लश्कर में उन्नीस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भी थे। उनको लिया और ऊँची जगह पर खड़े हो गए और ऐलान

किया,

"ऐ जंगल के जानवरो! हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलाम हैं तीन दिन की मोहलत है जंगल से निकल जाओ, उसके बाद जो जानवर मिलेगा हम उसको क़त्ल कर देंगे।"

तीन दिन में सारे अफ़्रीक़ा ने देखा कि शेर भाग रहे हैं, चीते भाग रहे हैं, साँप भाग रहे हैं, अज़्दहे भाग रहे हैं, भेड़िये भाग रहे हैं, हाथी भाग रहे हैं, ज़ेबरे भाग रहे हैं, ज़िर्राफ़े भाग रहे हैं, पूरा जंगल ख़ाली हो गया।

कितने हज़ार बरबर इस मंज़र को देखकर मुसलमान हो गए कि इसकी तो जानवर भी सुनते हैं हम क्यों न सुनें।

अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने का ईनाम

आसिम बिन उमरा अन्सारी को साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेजा मसान की तरफ़ और यह भी कहा रास्ते में लश्कर के लिए ग़ल्ला भी लेकर आओ, खाने का सामान भी लेकर आओ।

ईरानियों को पता चला तो उन्होंने अपने गाय के रेवड़, बकरियाँ सब जंगल में छिपा दीं। जब मसान पहुँचे तो कुछ भी नहीं तो ईरानियों से कहने लगे कि भाई यहाँ हमें कुछ जानवर मिल जाएंगे? उन्होंने कहा यहाँ कुछ नहीं मिलता तो जंगल से आवाज़ आई जानवरों की ﴿ها نحن ها نحن ها نحن﴾ आओ हमें पकड़ लो, हम जंगल में खड़े हुए हैं तो ईरानी भी हैरान हुए जब गए तो सब जानवर खड़े हुए थे।

जब हज्जाज बिन यूसुफ को यह वाक़िआ बयान किया गया तो उसने कहा कि मैं नहीं मानता कि ऐसा हो सकता है। उसने कहा एक आदमी उस लश्कर का अभी ज़िन्दा है उसको बुलाकर पूछो तो उस आदमी को बुलावाया गया। बड़ी दूर रहते थे। उनको बुलवाया। उसने कहा सुनाएं क़िस्सा कैसे हुआ? उन्होंने सार क़िस्सा सुनाया तो इस पर हिज्जाज कहने लगा यह उस वक़्त मुमकिन है जब पूरे लश्कर में कोई अल्लाह का नाफ़रमान न हो तो सब कुछ हो सकता है। तो वह हज्जाज से कहने लगे उनके अन्दर का हाल तो मैं नहीं जानता लेकिन उनके ज़ाहिर हाल मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनसे ज़्यादा रातों को उठकर रोने वाला कोई नहीं था और उनसे ज़्यादा दुनिया से बेज़ार कोई न था।

उस लश्कर में तीन आदमियों पर शक किया गया कि उनकी नियत ठीक नहीं है। ये वे लोग थे जो पहले मुसलमान थे फिर मुरतिद हो गए फिर दोबारा मुसलमान हो गए। कैस बिन मकसूअ, अम्र बिन मादी करब, तल्हा बिन ख़ुलैद रज़ियल्लाहु अन्हुम। ये तीनों बड़े लोग थे तो जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इन्तिक़ाल हुआ तो ये मुरतिद हो गए फिर दोबारा अल्लाह तआला ने तौफ़ीक दी फिर मुसलामन हो गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था इन पर निगाह रखना और इनको इमारत न देना तो उनके हालात मालूम करने के लिए हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तो तहक़ीक़ करवाई तो वह रावी कहते हैं वे तीन जिनके बारे में शक था उनका हाल यह था कि उन जैसा रात को कोई नहीं रोता था और उन जैसा दुनिया से कोई बेज़ार नहीं था। जिन पर शक था उनका यह हाल है। जो शुरू से पक्के चले आ रहे थे वह कहाँ पहुँचे होंगे?

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की तरह अपनी क़ब्र अल्लाह के रास्ते में बना लो

अल्लाह ने दीन मुकम्मल किया। उसकी हिफ़ाज़त की, फिर एक पाकीज़ा जमाअत तैयार की जिन्होंने इसको अल्लाह के महबूब से मिना की वादी में ले लिया और आपकी वफ़ात के बाद नव्वें हिजरी में इस्लाम की आवाज़ देबल पूर तक पहुँची, कश्मीर तक पहुँची।

सन् 50 हिजरी में मुहम्मद बिन अबी सफ़रा काबुल के रास्ते पेशावर से निकलते हुए लाहौर से निकलते हुए क़ल्लात तक पहुँचे। क़ल्लात में आज भी सात सहाबा, ताबईन, शोहदा आज भी पहाड़ के दामन में सोए हुए हैं और मुहम्मद बिन क़ासिम रह० सन् 90 हिजरी में वह देबल के रास्ते सिन्ध आए और मुलतान तक पहुँचे। दबेल पूर तक पहुँचे और इधर क़ुतीबा बिन मुस्लिम अलबाहली काशग़र तक पहुँचे और अब्दुर्रहमान जबलुस्सिराज तक पहुँचे, अबू अय्यूब अंसारी इस्तंबूल तक पहुँचे और अब्दुर्रहमान बिन अब्बास, उक़्बा बिन नाफ़े, अबू जमआ अन्सारी, अबू लबाबा अन्सारी, रवैफ़ा अन्सारी ये वे सहाबा हैं जो शुमाली अफ़्रीक़ा, लीबिया, मराकश, अलजज़ाएर और त्यूनिस तक पहुँचे। इन सब मक़ामात के अन्दर इनकी क़ब्रें फैलीं।

उक़्बा बिन नाफ़े अलजज़ाइर में दफ़न हुए,

अबू ज़मआ त्यूनिस में दफ़न हुए,

अब्दुर्रहमान बिन अब्बास, माअबद बिन अब्बास ये शुमाली

अफ़्रीका में दफ़न हुए,

हज़रत अब्दुर्रहमान जुनूबी फ़्रांस, पैरिस से जुनूब की तरफ़ दो ढाई सो किलोमीटर दूर उनकी क़ब्र बनी,

असद बिन सिराज इटली के नीचे जज़ीरा है सिसली वहाँ उनकी क़ब्र बनी,

कशम बिन अब्बास की मसरक़न्द में क़ब्र बनी,

रबी बिन ज़ैद हारसी की सजिस्तान में क़ब्र बनी,

अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु की स्तंबूल में क़ब्र बनी,

अबू तल्हा अन्सारी की बुहैरा रोम में क़ब्र बनी,

बरा बिन मालिक की तुस्तुर में क़ब्र बनी,

नौमान बिन मक़रन की नहामद में क़ब्र बनी,

अमर बिन मादी यकरब की नहामद में क़ब्र बनी,

अबू राफ़े ग़फ़्फ़ारी की ख़ुरासान में क़ब्र बनी,

अब्दुर्रहमान बिन समरा की ख़ुरासान में क़ब्र बनी। उस वक़्त यह अफ़ग़ानिस्तान का हिस्सा था।

यह देखो इनकी क़ब्रों का नेटवर्क, ये किस तरह अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होते हुए दुनिया में ज़मीन में छिप गए और अल्लाह के कलिमे को बुलन्द किया।

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की क़ुर्बानी

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० सत्रह साल की उम्र में घर से निकले हैं और इस हिन्दुस्तान में हमारे ज़िले मुल्तान तक वह आए। क्या उनका घर नहीं छुटा था, क्या उनके माँ-बाप नहीं छूटे

थे? सिर्फ़ चार महीने मियाँ बीवी साथ रहे। हज्जाज बिन यूसुफ़ के भतीजा थे। हज्जाज ने अपनी बेटी निकाह में दी थी। चार महीने बाद सिन्ध में जिहाद की ज़रूरत पड़ी तो उठाकर भेज दिया और सवा दो साल यहाँ रहे और फिर घर देखने की नौबत नहीं आई। शहीद कर दिए गए।

सिर्फ़ चार महीने घर आबाद हुआ और फिर उजड़ गया और इस घर के उजड़ने की बरकत से सिन्ध मे इस्लाम फैला। हर कलिमा पढ़ने वाला मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के खाते में जा रहा है। सौदा करके गए घर तो एक उजड़ा लेकिन कितने घर आबाद हो गए। नव्वे हिजूरी से लेकर आज तक सिन्ध में जो मुल्तान तक नस्लें चली आ रही हैं वह मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के खाते में जा रही हैं। जब वह अपने लोगों के हाथों क़त्ल किए गए तो उन्होंने यह शे'र पढ़ा—

اضاعونی وای فتی اضاعو   لیوم کریھة وسلاة سفر

अगर वह क़ुर्बानी न देते तो यहाँ तक इस्लाम कैसे पहुँचता? उनकी क़ुबानियों ने नस्लों की नस्लों को इस्लाम में दाख़िल कर दिया, उनके बीवी बच्चे भी थे उनके जज़्बात भी थे।

दीन के लिए इमाम अहमद बिन हंबल रह० की क़ुर्बानी

दो आदमी हैं जिनके बारे में तारीख़ ने गवाही दी, ये न होते तो इस्लाम न होता,

﴿لو لا ابوبکر لما عبد الله﴾ अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु न होते तो इस्लाम न होता,

﴿لو لا احمد لما عبد الله﴾ अहमद इब्ने हंबल न होते तो इस्लाम न होता।

क़ुरआन के बारे में एक बहुत बड़ा फ़ितना उठा था। सारे उलमा चुप हो गए, जानें बचा गए, कई भाग गए, कई जिला वतन हो गए, अहमद बिन हंबल डट गए। कहा मुझे मार दो, मेरी ज़बान से हक़ के सिवा नहीं निकलेगा। आख़िर पकड़े गए और तीन दिन मुनाज़रा होता रहा। मुनाज़रे में तीनों दफ़ा मोतज़िला (एक बातिल फ़िरक़ा था) हारते रहे।

चौथा दिन है आज अहमद बिन हंबल रह० को पता है या तो मेरी जान जाएगी या मार मारकर मुझे तबाह कर देंगे। जेल से निकलकर आ रहे हैं और दिल में ख़्याल आ रहा है मैं बूढ़ा हूँ और बनू अब्बास के कोड़े बर्दाश्त नहीं कर सकता तो अपनी जान बचाने के लिए अगर मैंने कलिमा कुफ़्र कह भी दिया तो अल्लाह ने इजाज़त दी है कि मैं अपनी जान बचाऊँ।

यह ख़्याल आ रहा था अचानक एक आदमी मजमे को हटाता हुआ तेज़ी से आया और क़रीब आ गया। कहा अहमद! कहा क्या है? कहा मुझे पहचानते हो? कहा मेरा नाम अबू हैशम है मैं बग़दाद का नामी गरामी चोर हूँ। देखो मैंने बनू अब्बास के कोड़े खाए मैंने चोरी नहीं छोड़ी, कहीं तुम बनू अब्बास के कोड़ों के डर से हक़ न छोड़ देना अगर तुम ने हक़ छोड़ दिया तो सारी उम्मत भटक जाएगी।

तो अहमद बिन हंबल रह० जब कभी याद करते थे ﴿رحم الله ابو الهيثم﴾ ऐ अल्लाह अबू हैशम पर रहम कर दे कि उस चोर की नसीहत ने मुझे जमा दिया, मैंने कहा टुकड़े टुकड़े कर दे अब मैं हक़ नहीं छोड़ूंगा।

और साठ कोड़े पड़े महल में बोटियाँ उतरकर गिरने लगीं और ख़ून से तर-ब-तर हो गए और उधर जो मुनाज़िर था उसका नाम भी अहमद था जब ख़ून ख़ून हो गए तो नीचे आया और उनके क़रीब आकर कहने लगा,

"अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है मख़्लूक़ नहीं है तो अब भी मैं तुझे ख़लीफ़ा के अज़ाब से बचा लूँगा।"

जिस गिरजे में बैतुल मुक़द्दस पर क़ब्ज़े की मीटिंग हुई आह!

मेडागास्कर से एक जमाअत सफ़र करके आई है। दस हज़ार आदमी एक सफ़र में मुसलमान हुए। क़बीलों के क़बीले अफ़्रीक़ा में मुसलमान हो रहे हैं। पैदल जमाअतों ने लाखों इन्सानों को इस्लाम में दाख़िल कर दिया। तीन हज़ार मस्जिदें फ़्रांस में बनी हैं।

जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी रह० ने फ़लस्तीन जीता बैतुल मुक़द्दस को जीता तो सारे यूरोपियन शहज़ादे फ़्रांस में जमा हुए और एक गिरजे में जमा होकर कसम उठाई कि मुसलमानों से बैतुल मुक़द्दस वापस लेंगे। जिस गिरजे में उन्होंने कसम उठाई थी वह गिरजा इस वक़्त मस्जिद बना हुआ है। अब बताएं कितना बड़ा इन्क़लाब है। गश्त हो रहे हैं, तालीम हो रही हैं, जमाअतें निकल रही हैं तो सब पर मेहनत करते हुए सारे आलम में फिरना यह सीखने के लिए चार महीने हैं चालीस दिन हैं। यह तो सीखने के लिए है। यह कोई हत्मी चीज़ नहीं है सीखने की है।

चिल्ला कहाँ से लाए हो? (सवाल व जवाब)

एक अरब कहने लगा चिल्ला कहाँ से लाए हो?

मैंने कहा तुम पैंतालिस दिन दे दो, न लड़ो यह कोई झगड़े की चीज़ है भाई?

तर्बियत के लिए वक़्त चाहिए। वक़्त का एक निज़ाम बनाया है। तर्बियत के बग़ैर तो कुछ नहीं होता। तर्बियत के लिए वक़्त चाहिए। वक़्त के लिए निज़ाम है और कोई ऐसा बे अक़्ल भी नहीं पता नहीं चिल्ले में क्या ख़ुसूसियत है?

आदम अलैहिस्सलाम का पुतला पड़ा रहा चालीस साल फिर रूह डाली,

फिर उनको रुलाया तौबा के लिए चालीस साल फिर तौबा क़ुबूल की,

उनके दो चिल्ले तो चालीस चालीस साल के लगे,

आगे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग के ढेर पर बिठाया चालीस दिन,

मूसा अलैहिस्सलाम को कोहे तूर पर बिठाया ﴿فتم ميقات ربه اربعين ليلة﴾ चालीस दिन बिठाया, चालीस दिन तूर पर रखा और साथ रोज़े का चिल्ला, मसलन आज सहरी खाई चालीस दिन के बाद जाकर इफ़्तारी की और चिल्ले के बाद तौरात अता की,

यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट में रखा तो चालीस दिन रखा,

तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग का चिल्ला, मूसा अलैहिस्सलाम का कोहे तूर पर चिल्ला, यूनुस अलैहिस्सलाम का

मछली का चिल्ला। हमने तीन इकठ्ठे करके कह दिया दे दो तीन चिल्ले और ख़ुद हदीस पाक में आता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो चालीस दिन तकबीर ऊला से नमाज़ पढ़े जहन्नम से निजात, निफ़ाक़ से बरी हो जाएगा।

यह चिल्ला क्यों कहा। जो चालीस नमाज़ें मेरी मस्जिद में पढ़े मेरी शिफ़ाअत उसके लिए वाजिब हो जाएगी। चालीस नमाज़ कहीं पचास क्यों नहीं कहीं तो कोई तो ख़ुसूसियत है?

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक आदमी जिहाद के रास्ते से वापस आया। आपने फ़रमाया कितने दिन बाद आए हो? कहा एक महीने के बाद।

फ़रमाने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चिल्ला लगा लो (फ़ायदा रहेगा)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ﴿هلا اتممت اربعين﴾ अल्लाह के बन्दे चिल्ला पूरा कर ही लेते। तो कोई ऐसा बेअसल भी नहीं।

फिर एक हदीस है ﴿من اخلص لله اربعين صباحا﴾ जो एक चिल्ला अल्लाह को दे दे,

﴿انبت الله ينابيع الحكمة من قلبه على لسانه﴾

अल्लाह उसके दिल को हिकमत से भर देता है और इतना भरता है कि वह चश्मे बनकर उसकी ज़बान पर जारी हो जाती है। यह भी चिल्ला ही है।

भाई हमने कोई नई चीज़ तो नहीं मांगी अगर सारे आलम में फिरना है तो उसके लिए भाई साल साल की जमाअतें बनकर जाएं।

गुनाहों की दलदल से रहमत के समुंद्र तक

एक सूडानी नौजवान मुझे मिला राईविन्ड में। मैंने कहा कैसे हिदायत पर आया? कहा पाकिस्तान से एक जमाअत आई हुई थी और दो आदमी साहिल के साथ साथ वह किसी को ढूढने के लिए निकले तो मैं वहाँ नंगधड़ंग लेटा हुआ था। वहाँ जो अवबाश नौजवान अमरीकन थे उन्होंने उनका मज़ाक़ उड़ाया शोर हुआ तो मैंने जो उठकर देखा (मुसलमान तो छिपता नहीं दस करोड़ में पता लग जाएगा कि मुसलमान बैठा है हमें तो बताना पड़ता है जी मैं मुसलमान हूँ मुसलमान की तो एक पहचान है।)

मैंने कहा अरे यह तो मुसलमान हैं मैं वैसे ही नंगधड़ंग उनके पीछे पहुँचा। मैंने कहा अस्सलामु अलैकुम। मैं मुसलमान हूँ मेरी ग़ैरत को जोश आया है आपकी बेइज़्ज़ती की गई आप कहाँ ठहरे हैं? मैं आपके पास आऊँगा। उन्होंने कहा फ़लाँ जगह एक मस्जिद है हम वहाँ ठहरे हुए हैं। घर गया कपड़े बदले सीधा उनके पास पहुँचा। पहली मजलिस में ऐसी तौबा की कि पूरी ज़िन्दगी बदल गई।

बीस लाख रुपए के ज़ेवर पहनने वाले की तौबा

मान्चेस्टर में एक आदमी से मिले सैय्याद हाशमी हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद। उनका बेटा ईसाइ बेटा भी ईसाई,

दो बेटियाँ भी ईसाई, बीवी भी ईसाई। सारा शजरा नसब घर में लटका हुआ था। शेख अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० का बीच में नसब नामा आता था। उसके बेटे से पूछा तुम मुसलमान हो? कहा नहीं मैं कैथोलिक हूँ। मैंने कहा क्यों तेरा बाप तो मुसलमान है? कहा मेरी माँ कैथोलिक है, मैं भी कैथोलिक हूँ।

यह उसका हाल था। हम मिलने के लिए गए तो उसने ऐसी चढ़ाई की कि अच्छा पाकिस्तान में इस्लाम फैल गया कि इंगलिस्तान में तबलीग़ करने आ गए। वहाँ रिश्वत है, ज़िना है, यह है वह है जाओ वहाँ तबलीग़ करो, हमारा वक़्त ज़ाए न करो अगर तुम्हारे पास ज़्यादा पैसा है तो हमें दे दो। यहाँ भी अब बेरोज़गारी बढ़ रही है। हम यहाँ लोगों में बांट देंगे। इतनी बेइज़्ज़ती की रब का नाम। इतने में उसकी बीवी आ गई। उसने हैलो हैलो करने के लिए हाथ बढ़ाया तो हमने सलाम नहीं किया।

हमने कहा भाई हम तो ग़ैर औरतों से हाथ नहीं मिलाते तो इतना गुस्सा आया कि तुमने मेरी बीवी की तौहीन कर दी। हमारे सामने ही खड़े होकर उसके गले लगकर चूमने लगा कि यह बड़े जाहिल लोग हैं इनको आदाब का पता ही नहीं। मैंने कहा हम ऐसे ही जाहिल रहें अल्लाह करे। यह मैं उससे पहली मुलाक़ात बता रहा हूँ। दो दिन के बाद मैंने उसको फोन किया। मैंने कहा हज़रत आप हमारा खाना खाना पसन्द फ़रमाएंगे? सिर्फ़ आपको खाने के लिए बुलाना है। पन्द्रह मिनट मैंने उसकी मिन्नत की कि आप खाना आकर खा जाएं। आख़िर वह तैयार हो गया कि अच्छा ठीक है लेकिन मुझे आकर लेकर जाओ।

हम गए उसको लेकर आए। कोई पन्द्रह बीस लाख रुपए का

उसने ज़ेवर पहना हुआ होगा सोने का, जवाहरात का, हीरों का और पता नहीं क्या क्या। यह कम से कम बता रहा हूँ मुमकिन है इससे ज़्यादा का हो। हमने उसे मस्जिद में बिठाया।

उसने बयान सुना। जब हम उसे छोड़ने के लिए गए तो कहने लगा सत्ताईस साल के बाद पहली दफ़ा मस्जिद में आया हूँ, सत्ताईस साल के बाद। एक ईद क्या, जुमा क्या, नमाज़ क्या मैं तो यहाँ आना ही भूल गया था। सत्ताईस साल के बाद आज मस्जिद में आया हूँ। मैंने कहा काम बन गया जो कह रहा है सत्ताईस साल बाद मस्जिद में आया हूँ तो मालूम होता है वह पुराना ईमान जाग रहा है। फिर दो दिन के बाद दोबारा मिलने के लिए गए फिर उसको मस्जिद में लाए खाना खिलाया बात सुनाई। फिर दो दिन छोड़कर फिर उसको लाए। तीसरे दिन खड़ा हो गया कहा मेरा नाम लिखो तीन दिन। मुझे सुबह सुबह टेलीफ़ोन आया तुमने मस्जिद में क्या जादू कर दिया? मैंने कहा क्या हुआ? कहा मेरी ज़बान से ज़ोर ज़ोर से कलिमा निकल रहा है। मैं अपने आपको रोक रहा हूँ मुश्किल से मुझे क्या हो गया है? मैंने कहा ईमान ज़िन्दा हो गया है और कुछ नहीं हुआ। हाँ फिर जो उसने हमारे साथ जो वक़्त लगाया, वह जो रोता रहा, उसका रोना देखकर हम रोते थे।

फिर बाद में उसका ख़त आया (अभी तक उसके ख़त आते रहते हैं) कहा वह दिन है और आज का दिन है उसकी तहज्जुद कज़ा नहीं हुई उस दिन से न उसकी नमाज़ कज़ा हुई, न रोज़ा कज़ा हुआ। सत्ताईस साल की ज़कात यहाँ पाकिस्तान में देकर गया पूरे सत्ताईस साल की ज़कात और पहले कहा था मैं कोई

फ़ालतू हूँ कि यहाँ आया हूँ वक़्त ज़ाए करने फिर जो उसका ख़त आया उसमें लिखा था—

> **आप इंगलिस्तान आ जाएं, सारा ख़र्चा मेरे ज़िम्मे रिहाईश मेरे ज़िम्मे और यहाँ की शहरियत लेकर देना मेरे ज़िम्मे है। यहाँ आकर तबलीग़ करो, यहाँ के मुसलमानों में भी तबलीग़ की ज़रूरत है। ऐसे लाखों करोड़ों हीरे बिखरे पड़े हैं।**

अमरीका जाना हमारी हिदायत का ज़रिया बन गया

एक अरब जद्दा (सऊदी अरब) से आया बहुत बड़ा आलिम था। कहने लगा जानते हो मैं क्यों आया हूँ? मैंने कहा फ़रमाइए। कहने लगा मैं जद्दा में हूँ और हमारे सऊदी नौजवान अमरीका पढ़ने के लिए जाते थे लेकिन साथ उनके बड़े गंदे इरादे होते थे। शराब, ज़िना में डूबे रहते थे लेकिन कुछ अर्से से मैं देख रहा हूँ कि उनमें बहुत से लड़के आते हैं उन्होंने दाढ़ियाँ रखी हुई होती हैं, पगड़ियाँ बाँधी हुई होती हैं और अल्लाह रसूल की बातें करते हैं, रात को खड़े होकर रोते हैं।

मैं हैरान हूँ कि ये जब हिजाज़ में थे तो बेदीन थे अमरीका में गए तो और बेदीन होना था। वहाँ नबी की सुन्नत को लेकर आ रहे हैं। यह क्या बात है? तो मैंने पूछा कि क्या चक्कर है? तो उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन को ज़िन्दा करने की एक मेहनत हो रही है। वहाँ से जमाअतें अमरीका आती हैं। हम उनके साथ वक़्त लगाते हैं। मैं भी वक़्त लगाने आया हूँ। मेरी उसकी इकठ्ठी तश्कील हुई।

फ्रांस की जमाअत का सच्चा वाक़िआ

फ्रांस में पाकिस्तान की एक जमाअत पैदल चल रही थी। एक गाड़ी रुकी और उसमें से दो लड़कियाँ निकलीं। उन्होंने जल्दी से पैसे निकाले कहा जी आप नेक लोग लगते हैं यह पैसे हैं आप लोग सवार हो जाएं, सर्दी बहुत ज़्यादा है। वे पैदल चल रहे थे। पैदल चलती हैं यूरोप में जमाअतें। उन्होंने कहा बहन! हमारे पास पैसे तो हैं कहा फिर पैदल क्यों चल रहे हो इतनी ज़्यादा सर्दी में?

कहा हम लोगों की भलाई में और अल्लाह को राज़ी करने के लिए कि अल्लाह अपने बन्दों से राज़ी हो जाए और उसके बन्दे अल्लाह की मानने वाले बन जाएं। इसलिए हम चले रहे हैं और हम उनके लिए दुआ करते हैं तो लड़की ने कहा आप हमारे लिए भी दुआ करते हो? कहा आपके लिए भी करते हैं। उस लड़की ने कहा मैं बताऊँ आप कौन हैं? कहा बताओ। कहने लगी आप नबी हैं। तो उन्होंने कहा आपको कैसे पता चला हम नबी हैं? कहा हमारी किताबों में लिखा है कि यह काम नबी किया करते हैं। तो उन्होंने समझाया कि बहन हम नबी नहीं हैं उस नबी के उम्मती हैं जो हमारे ज़िम्मे नुबुव्वत वाली ज़िम्मेदारी लगा गया था। ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मैं जा रहा हूँ मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है, तो हम उसकी अदाएगी के लिए निकले हुए हैं तो दोनों लड़कियाँ मुसलमान हो गयीं। एक ने उनसे रूट पूछा कि फ़लाँ दिन कहाँ रहोगे। एक हफ़्ते के बाद आठ लड़कियों को लेकर आयी और उनको भी मुसलमान किया।

दुआ की कसरत हिदायत का ज़रिया कैसे बनी?

हमारा एक दोस्त सलमान है। अमरीका में नौकरी करता है। दुबई में रहता है। दुबई से जा रहा था अमरीका। पैरिस में जहाज़ उतरा। वहाँ से एक पादरी चढ़ा। दोनों एक सीट पर हो गए। रास्ते में तआरुफ़ हुआ आप कहाँ से आप कहाँ से?

कहा मैं पादरी हूँ अमरीका से अफ़्रीक़ा गया था फ़लाँ मुल्क में फ़लाँ बस्ती में। किस लिए गए थे? अपने मज़हब का प्रचार करने के लिए। कहा चार साल रहा सब ईसाई हो गए।

चार साल घर गए? कहा नहीं गया। चार साल घर नहीं गया बातिल फैलाने वाले ऐसी क़ुर्बानी कर रहे हों और हक़ फैलाने वाले पूछते फिर रहे हों कहाँ लिखा है? बच्चे छोड़कर जाना, माँ-बाप छोड़कर चले जाना। जहाँ लिखा है पढ़ो तो सही सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िन्दगी पढ़ें?

सलमान ने उसे दावत दी। आख़िर में उसने कहा अच्छा आख़िरी फ़ैसला यह है कि मैं कहता हूँ कि मैं हक़ पर हूँ। आप आज से दुआ मांगनी शुरू करें कि ऐ अल्लाह मुझे पर हक़ वाज़ेह कर दे। यह दुआ मांगनी शुरू करो और यह मेरा पता है जब कोई बात समझ में आए तो इस पते पर ख़त लिख देना। साल के बाद उस पादरी का ख़त आया तेरी बताई हुई दुआ रोज़ाना मांगता रहा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मुझ पर हक़ खोल दिया, मैं मुसलमान हो चुका हूँ और अब मैं दोबारा उस बस्ती में जाऊँगा, दोबारा मुसलमान बनाऊँगा जिनको में ईसाई बना चुका हूँ।

आशिक़ का जनाज़ा बड़ी धूम-धाम से निकला (वाक़िआ)

हमारे गूजरांवाला का एक बहुत बड़ा ताजिर है अल्लाह ने उसे तबलीग़ में लगाया। उसने अपने बेटे को स्कूल से उठा लिया और राईविन्ड में उसको दाख़िल करवा दिया। हमारे साथ वह पढ़ता था। एक साल हम से पीछे था बड़ा ख़ूबसूरत जवान था हाफ़िज़ क़ुरआन भी था और बीस बरस की उम्र में उसकी शादी भी कर दी थी, एक बच्ची थी। उसका आख़िरी साल था। मैं तबलीग़ में साल लगा रहा था। मस्जिद में उसकी और मेरी आख़िरी मुलाक़ात हुई। मैं जमाअत में चला गया वह अचानक बीमार हुआ और बेहोश हुआ, तीन दिन बेहोशी में रहा, उठाकर हस्पताल ले गए जहाँ उसका इन्तिक़ाल हो गया।

उसका बाप ऐसा अजीब आदमी था कि उसका एक आँसू नहीं निकला। वहीं हस्पताल से बेटे को उठाया और सीधा राइविन्ड लेकर आया और कहने लगा यह तुम्हारी अमानत है तुम संभालो न बहनों को पहुँचने दिया न फूफियों को पहुँचने दिया। जब उसे क़ब्र में उतार चुके थे तो उसकी बहनें पहुँची और उसकी फूफियाँ पहुँची। उन्होंने फ़रियाद की अल्लाह के वास्ते हमें सिर्फ़ एक नज़र देखने दो चुनाँचे उनके रोने पर फट्टे हटाकर उनको दिखाया गया और राइविन्ड के क़ब्रिस्तान में उसको दफ़न कर दिया।

हम इकठ्ठे रहते थे। मेरा उसके साथ बड़ा तअल्लुक़ था। रात को तहज्जुद में जब उठता बड़ी मज़ेदार चाय बनाता मुझे भी

पिलाता ख़ुद भी पीता और ऐसा ख़ूबसूरत क़ुरआन पढ़ता था कि जी चाहता पढ़ता चला जाए, झूम झूमकर क़ुरआन पढ़ता था।

मेरा दिल चाहता था कि अल्लाह करे ख़्वाब में मिल जाए ताकि मुझे पता चले कि उसके साथ क्या हुआ। अल्लाह की शान कोई वक़्त क़ुबूलियत का होता है। मेरी ख़्वाब में उसके साथ मुलाक़ात हो गई। ऐसी क़द व क़ामत, सफ़ेद लिबास पहने हुए हँस रहा था। मेरे पास आया। मैंने कहा अरे अब्दुल्लाह तुम मर गए हो? कहने लगा हाँ। मैंने कहा तुम्हारा क्या हाल है? कहने लगा—

ان اصحٰب الجنة اليوم فى شغل فكهون هم وازواجهم فى ضلل على الا
رائك متكون . لهم فيها فاكهة ولهم يدعون سلم قولا من رب الرحيم.

अरे तारिक़! क्या पूछते हो जन्नत में हम तख़्तों पर अपनी जन्नत की औरतों के पहलु में लेटे हुए हैं और कभी तख़्तों पर बैठकर जन्नत के फल खाते हैं और अल्लाह तबारक व तआला जो हम चाहते हैं वह हमें देता है और जो तमन्ना करते हैं वह पूरी करता है और इससे बढ़कर ﴿سلم قولا من رب الرحيم﴾ और हमें सलाम भी कहता है।

मैंने कहा यार तुझे मौत की कोई तकलीफ़ भी हुई थी? तीन दिन तक वह सकते में रहा। कहने लगा अल्लाह की कसम! मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई। बस एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और उसने मेरे अंगूठे को हिलाया और कहने लगा अब्दुल्लाह! चलो अल्लाह तुम्हें बुलाता है। मैं उसके पास चला गया। मैंने पूछा तुम्हारी रूह कैसे निकली। कहने लगा बस चुटकी बजाते ही निकल गई।

उसका बाप जानता था कि मेरा उसका तअल्लुक़ था। वह मेरे पास आ जाता, मौलवी तारिक़ साहब बतओ अब्दुल्लाह कैसे ज़िन्दगी गुज़ारता था? ऐसे बाप अल्लह हर जगह पैदा कर दे। मुझ से पूछता मेरा बेटा कैसे वक़्त गुज़ारता था? मुत्तकी था? वक़्त ज़ाए तो नहीं करता था? कहीं उसको क़ब्र का अज़ाब तो नहीं हो रहा देखो कैसा दर्द है?

आज के बाप को देखो उसका दर्द क्या है? हराम हलाल इकठ्ठा खिलाता है। जब औलाद जवान होती है तो फिर बाप के सिर पर भी जूते मारती है और माँ के सिर पर भी जूते मारती है। जब अपनी औलाद को हराम खिलाओगे तो तुम उम्मीद न रखो कि यह तुम्हारे फ़रमांबरदार बनेंगे। ये जवान होकर तुम्हारे सिर पर जूते मारेगी। जिस औलाद की ख़ातिर बाप अपने सारे जज़्बे मिटाकर उमर बर्बाद कर देते हैं वही औलाद जवान होकर तुम्हारे हाथ तोड़ती है। कहती है तू तो बूढ़ी हो गई है, क्या बकती है? बाप से कहता हैं तूने हमारे लिए बनाया ही क्या है? ये आज रोज़ाना के वाकिआत हैं।

उसका बाप जब भी राइविन्ड में आए। कहता एक बात बता दो मेरा बेटा कैसे वक़्त गुज़ारता था। जब मैंने ख़्वाब देखा तो मैंने कहा भाई आप खुश हो जाओ अल्लाह तआला ने मुझे तो यह दिखाया है। अब आप धबराया न करो फिर भी परेशान होता रहा। एक दिन खुशी में मेरे पास आया कहने लगा?

मौलवी फारूक़ साहब का ख़्वाब

मौलवी साहब मैंने अभी अपने बेटे को ख़्वाब में देखा है मैंने

कहा माई आपने कैसे देखा है? कहने लगा मैंने देखा कि वह बिस्तर उठाए हुए जा रहा है। उसकी मुझे कमर नज़र आ रही थी, चेहरा नज़र नहीं आ रहा था। चलते चलते एक दीवार आई। उस दीवार के अन्दर वह ग़ाएब हो गया। उस दीवार के ऊपर बड़े नूर से लिखा हुआ था ﴿رضی اللہ عنہ﴾ अल्लाह उससे राज़ी हो गया।।

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद में

इस वक़्त न हमें बाप ऐसे नज़र आते हैं जिनके ये जज़्बे हों न माँएं ऐसी नज़र आती हैं जिनके ये जज़्बे हों। हम यह कह रहे हैं कि तबलीग़ में निकलकर जान व माल य वक़्त लगाकर अन्दर की दुनिया को खुरच फेंका जाए और अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत के सिवा सब जज़्बात मिट जाएं।

﴿يا ربك لك الحمد ينبغى لجلال وجهك وعظيم سلطانك﴾

इस बार मैं हज पर गया तो इटली से एक नौजवान आया हुआ था। अरब हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की औलाद में से मराकश का रहने वाला, मजबूरी की वजह से इटली में रहना पड़ गया। बाईस साल की उम्र और उस अकेले लड़के ने पूरे इटली के मुसलमानों को हरकत दे दी।

वहाँ तीन सौ मस्जिदें बन गयीं। जब कि एक मस्जिद भी नहीं थी और हज पर सत्तर नौजवानों को लेकर आया। इतनी ताक़त अल्लाह तआला ने मुसलमान में रखी है। वह आलिम नहीं कोई दुनियवी डिग्री थी, एक्नामिक्स या फिजिक्स की मुझे अच्छी तरह याद नहीं है लेकिन उसने वहाँ तो मेहनत को ज़िन्दा किया तो पूरे

इटली में तीन सौ मस्जिदों का ज़रिया बन गया। हज़ारों नौजवानों की तौबा का ज़रिया बन गया।

तो आपका का काम है, आपकी ज़िम्मेदरी है। मैं यह नहीं कहता कि तबलीग़ी जमाअत के मेम्बर बन जाओ न किसी जमाअत की दावत दे रह हूँ। मैं और आप हम सब अल्लाह और उसके रसूल के गुलाम बन जाएं और उसकी गुलामी को आगे लोगों मैं फैलाने वाले बनें। इस फैलाने में जो तकलीफ़ आए उसे अल्लाह की रज़ा के लिए बर्दाश्त करें तो अल्लाह का हबीब हौज़े कौसर पर अपने हाथ से एक प्याला पिलाएगा, सारे दुख दर्द निकल जाएंगे। वहाँ ऐलान होगा कहाँ हैं कहाँ हैं, मेरी आख़िरी उम्मती।

जब दीन मिट रहा था तो उन्होंने मेरे दीन को गले लगाकर मेरे पैग़ाम को पहँचाया था, फैलाया था। अल्लाह का हबीब अपने हाथ से जामे कौसर पिलाएगा।

अल्लाह के फ़ज़ल से पिछले साल हमारा सफ़र हुआ श्रीलंका से लेकर फिजी तक थाईलैंड आस्ट्रेलिया और सिंगापूर आप अन्दाज़ा फ़रमाएं तबलीग़ का काम यहाँ से थाईलैंड गया वहाँ से सोमालिया जिसकी अस्सी फ़ीसद आबादी मुसलमान है। वहाँ यह हाल है कि कोई मुसलमान बे नमाज़ी नहीं रहा, कोई औरत बेपर्दा नहीं रही, चोरी ख़त्म हो गई, ज़िना ख़त्म हो गया, शराब ख़त्म हो गई, लड़ाईयाँ ख़त्म हो गयीं, नमाज़ पर खुली दुकानें छोड़कर मस्जिद में चले जाते हैं बन्द नहीं करते।

सऊदी अरब में तो बन्द करके चले जाते हैं और बीस साल से

वहाँ तबलीग़ का काम हो रहा है। श्रीलंका में हम पहुँचे दस लाख से ज़्यादा आबादी मुसलमान, चार लाख बालिग़ मुसलामन हैं तीन लाख इज्तिमा में मौजूद थे। छः सौ जमाअतें निकलीं सारी दुनिया की फ़िज़ा अल्लाह तआला ने बदल दी है। हवाई जहाज़ों में अज़ानें हो रही हैं, नमाज़ें पढ़ी जा रही हैं। पहाड़ की चोटियों पर अज़ाने हो रही हैं, नमाज़ें पढ़ी जा रही हैं।

गूंगों की जमाअत

हमारे इलाक़े में गूंगों की एक जमाअत आई। एक गूंगा दूसरे गूंगे को तैयार कर रहा था। मैं उसका देख रहा था। वह कहता तू चल दूसरा चरसी था वह कहता नहीं जाता। अब जब सारे हरबे बेकार हो गए तो उसने कहा तू मर जाएगा। उसने कंधे का इशारा किया फिर कहा तेरी क़ब्र खोद रहें हैं। अब वह इसको देख रहा है फिर कहा तुझे डाल रहे हैं। फिर ऊपर मिट्टी आ गई, फिर आगे साँप का इशारा किया। तबलीग़ हो रही है। क़ुर्बान जाएं अल्लाह के रसूल पर ﴿الشاهد﴾ ने गूंगे भी खिंच लिए और अल्लाह ज़िन्दा करके दिखा दिया, काम करके दिखा दिया कि लफ़्ज़ ﴿الشاهد﴾ ही यहाँ फिट था। अब वह साँप की आवाज़ निकाल रहा है। अपने हाथ के इशारे से उसको एक डंक इधर मारा, एक उधर मारा फिर उसने तीली जलाई फिर कहा आग तेरी क़ब्र में जल रही है। अब उसका एक रंग आ रहा है एक जा रहा है। फिर कहने लगा तू बिस्तर उठा और हमारे साथ चल फिर उसने इशारा किया जन्नत का वह तो मुझे याद नहीं रहा लेकिन अगला इशारा याद रहा हूर का इशारा किया हूर और बड़ी

ख़ूबसूरत हूर तुझे मिलेगी मेरे सामने वह तीन दिन के लिए तैयार हो गया।

और एसी तौबा उसने की चरस भी छोड़ी हर चीज़ छोड़ी फिर वहाँ मदरसे में पड़ा रहता था और नमाज़ सीखी, मसाइल सीखे तहारत सीखी सब कुछ सीखा और नौ महीने बाद अल्लाह को राज़ी करता हुआ मरकर चला गया। सारी ज़िन्दगी के गुनाह धुलवाकर वह जन्नत में गया, सस्ता सौदा कर गया जिसको कोई आलिम न तैयार कर सके कोई मुक़र्रर न तैयार कर सके उसे एक गूंगे ने तैयार करके उठा दिया।

तबलीग़ की मेहनत न करने के नुक़सान

मरे भाईयो! सारी दुनिया की नियत करके चार चार महीने लगाकर सीख लें फिर सारे आलम में फिर कर इस दावत को दो अफ़्रीक़ा, अमरीका में बड़ी दुनिया पड़ी है जहाँ आज तक कोई नहीं गया और जाना हमारे ज़िम्मे है।

एक जज़ीरा था आस्ट्रेलिया का वहाँ पाकिस्तान की नहीं जुनूबी अफ़्रीक़ा की एक जमाअत गई। वहाँ दस हज़ार की अरब आबादी थी लेकिन ये सब ईसाई हो चुके थे। उन्होंने एक जगह अज़ान देकर नमाज़ पढ़ी जब सलाम फेरा तो एक बूढ़ी औरत ने उनसे बात की कि यह जो तुमने काम किया है मेर बाप दादा किया करते थे। हम अरब हैं लेकिन हम भूल चुके हैं सब कुछ। तो उन्होंने कहा तुम हमारे पास आओ। हम इसलिए आएं हैं कि अपने भाईयों को भूला हुआ सबक़ याद दिलाएं तो बूढ़ी औरत गई। वह मकानों से निकाल निकालकर नौजवान लड़कों और

लड़कियों, बड़े छोटे सबको लेकर आई और सारा ग्राउन्ड उन्होंने भर दिया। आगे उन्होंने उनको दावत दे देकर सबको कलिमा दोबारा पढ़ा दिया।

क़बीले के क़बीले मुसलमान हो गए

पिछले साल हम अमरीका गए तो शिकागो से एक जमाअत टैक्सी ड्राइवरों की जो टैक्सी चलाते हैं वह भी तबलीग़ में वक़्त देते हैं एक चिल्ले के लिए ब्राज़ील गए। आठ सौ आदमी उनके हाथ पर मुसलमान हुए आठ सौ। पूरा क़बीला था आठ सौ लोगों का। जो कबीले का सरदार था उसको दावत दी। वह मुसलमान हुआ। सारे क़बीले वालों को इकठ्ठे करके दावत दी तो सब मुसलमान हो गए तो थोड़े थोड़े काम की बरकत हैं। जब हर मुसलमान तबलीग़ का काम करने लगे तो सारी दुनिया में इस्लाम फैल जाएगा।

इस्लाम से मुझे प्यार है मगर

सन् 1982 ई० में जब इंगलिस्तान गए तो हमारे साथ डाक्टर अमजद साहब थे। उनकी आदत ऐसी थी कि गोरों को भी दावत देना शुरू कर देते हैं तो एक गोरे को दावत दी तो उसने कहा कि इस्लाम से तो मुझे प्यार है लेकिन मुसलामनों से नफ़रत है। इस्लाम अच्छा मज़हब है और मुसलमान बुरा है। दूसरे साहब ने कहा कि पहले आप अमली तौर से मुसलामन हो जाइए तो फिर हम सब मुसलमान हो जाएंगे।

इस तबलीग़ की मेहनत के ज़रिए तो पूरा दीन सीखने की

दावत दी जा रही है कि हम पहले पूरे दीन को सीखें और अगली बात के लिए ज़ेहन बनाया जा रहा है कि सारी दुनिया के इन्सानों के पास अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाना है तो हमें जाना है। यह अल्लाह की तरफ़ दावत देना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसी पर तो ये सारे मर्तबे और फ़ज़ाइल हैं। इस वक़्त इस्लाम में जो देर हो रही है हमारी वजह से हो रही है।

नमाज़ का पढ़ना हिदायत का ज़रिया बन गया

हम दो साल पहले कनाडा गए। हमारे साथ यह वाक़िआ पेश आया। वहाँ पूरी दुनिया की सबसे बड़ी आबशार गिरती है (जिसको न्यागरा आबशार कहते हैं।) लाखों इन्सान वहाँ पर देखने के लिए आए हुए होते हैं। हम उसके क़रीब से गुज़र रहे थे तो नमाज़ का वक़्त हो गया तो हमने यहीं नमाज़ पढ़ने का इरादा कर लिया।

हमने एक तरफ़ होकर अज़ान दी और चादरें बिछायीं तो एक अमरीकन कुर्सी पर बैठकर देखता रहा। हमने उसी आबशार की नहर से वुज़ू किया और नमाज़ की तैयारी करने लगे तो वह कहने लगा आप मुसलमान हैं? हमने कहा हाँ हम मुसलमान हैं तो उसने कहा मेरे पीछे कुछ दोस्त मुसलमान हैं। जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो वह हमारे क़रीब हो गया तो कुछ साथियों ने कहा कि आप मुसलमान क्यों नहीं हो जाते? तो कहने लगा मेरा दिल चाहता है शायद मेरी बीवी न माने तो मैंने कहा कि कोई और बीवी अल्लाह दे देगा, इसकी क्या बात है? तो कलिमा पढ़कर मुसलमान हो गया। तो हमने उसको एक इस्लामिक सैंटर का पता

दिया कि आप वहाँ तशरीफ़ ले जाइए इन्शाल्लाह और ज़्यादा रहनुमाई मिल जाएगी।

सुन्नत का एहतिमाम मुझे मुसलमान कर गया

कैलीफ़ोरनिया में एक अरब लड़का खड़ा था। पगड़ी, कुर्ता पायजामा पहना था। एक लड़की आ गई और कहने लगी तुम कौन हो? कहने लगा मैं मुसलमान हूँ। उस लड़की ने पूछा कि यह लिबास कैसा है? उसने कहा कि मेरे नबी का है तो उसने कहा यह तो बहुत ख़ूबसूरत लिबास है, दूसरे मुसलमान यह क्यों नहीं पहनते? अरब बोला उनकी ग़फ़लत है और ग़लती है। उसने कहा इस्लाम क्या है मुझे बातओ तो सही?

पाँच मिनट बात की तो मुसलमान हो गई। इस वक़्त जो देर हो रही है यह हमारी तरफ़ से हो रही है कि हम तबलीग़ को अपना काम बनाकर दीन सीखकर पूरी दुनिया में फैल जाएं तो मुल्कों के मुल्क इस्लाम में आऐंगे अब आप बालिए और बताइए कौन कौन तैयार है इसके लिए अब आपकी बारी है। हमने अपनी बात अर्ज़ कर दी। अब आप फ़रमाइए कि कौन भाई चार चार महीने के लिए तैयार है।

सोलह लाख का नुक़सान कैसे हुआ

एक साथी रूस की जमाअत में गया। पीछे उसको सोलह लाख का नुक़सान हुआ। अब वह वापस आया तो उसके सारे रिश्तेदारों ने उसका जीना हराम कर दिया। तबलीग़ करता रह

और भी कर सारा घर लुटा दियां, इसी क़ा नाम इस्लाम है कि अपने बच्चे दर-ब-दर भीख मांगते रहें। वह नीम पागल हो गया। एक दफ़ा हम गश्त कर रहे थे बाज़ार में सोकड़ मंडी में तो वह वहाँ भी बैठा हुआ था और जो मंडी का ताजिर था वह कहने लगा कि मौलवी साहब यह कोई तबलीग़ है इस बेचारे का सारा घर लुट, गया। सोलह लाख रुपए का नुक़सान हुआ। मैंने कहा तुझे मुबारक हो। वह हैरान हो गए। उन्होंने कहा मौलवी यह क्या कह रहे हो? मैंने कहा इजमाली बात तो यह है कि यह नुकसान इसके मुक़द्दर में था,

ما اصابت لم يكن ليخطئك وما اخطئت لم يكن
ليصيبك رفعت الا قلام وجفت الصحف.

नबी का फ़रमान है जो तकलीफ़ आने वाली है उसे कोई हटा नहीं सकता जो राहत आने वाली है उसको कोई रोक नहीं सकता।

यह तकलीफ़ आनी थी कारोबार में घाटा आना था। तुम्हारी इस मंडी में रोज़ाना घाटे पड़ते हैं। तुमने कभी शोर मचाया? तुमने कभी कहा कि उसके बच्चे भूखे मर रहे हैं, सूदी कारोबार करते करते जब बुरा वक़्त आता है दिवालिए निकल जाते हैं। यह तबलीग़ में गया था उसका नुक़सान हुआ इसलिए शोर मचा रहे हैं। इसका नुक़सान होना था लेकिन मुबारक शख़्स है कि इसका नुकसान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के नुकसान से मुशाबेह हो गया।

सौ साल बाद अज़ान गूँजी है

वहाँ राइविन्ड में एक जमाअत ने बलुचिस्तान से ख़त लिखा

कि जब उन्होंने अज़ान दी तो बस्ती के लोगों ने कहा कि आज यहाँ कोई सौ साल बाद अज़ान दी गई है। यूरोप की बात नहीं बता रहा हूँ पाकिस्तान की बता रहा हूँ, बलूचिस्तान में जो पाकिस्तान का हिस्सा है। साथ ही पाक लगा हुआ है सारी नापाकियाँ यहाँ हो रही हैं तो नाम रखने से क्या। गुलाम रसूल नाम रखने से कोई गुलाम रसूल तो नहीं बनता गुलामी से गुलाम रसूल बनता है, नाम रखने से गुलाम रसूल नहीं बनता गुलाम मुहम्मद से गुलाम नहीं बनता वजूद को गुलामी में डालने से गुलाम बनता है।

उम्मत का दर्द पैदा करो

एक अरबों की जमाअत गई तजाकिस्तान तो जब वे निकलने लगे तो कहने लगे आज से सात सौ साल पहले हमारे पास अरब आए थे वह हमें कलिमा दे गए थे आज सात सौ साल बाद तुम्हें देखा है। अल्लाह के वास्ते अब सात सौ साल बाद मत आना बल्कि बार बार आते रहना।

सारे रास्ते आज़ाद हैं। मुसलमान कलिमे को नहीं जानते। कोई पता नहीं कलिमा का। सौ सौ दफ़ा विर्द करते हैं लेकिन ज़बान पर नहीं चढ़ता और रोते हैं और दीवारों पर टक्कर मारते हैं कि हमें कलिमा क्यों नहीं आता। इनको किसने सिखाना है? कौन यह ज़िम्मेदारी लेगा? आपके ज़िम्मे नहीं मेरे ज़िम्मे नहीं तो फिर किसके ज़िम्मे है इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी?

सबसे बड़ा अज़ीमुश्शान इन्सान जो इस काएनात का सरदार है वह मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और आप

इस फ़िक्र के लिए पत्थर खाते फिर रहे हैं और दाँत तुड़वाते फिर रहे हैं, घर छोड़ रहे हैं, पेट पर पत्थर बाँध रहे है, काफ़िरों की गालियाँ सुन रहे हैं, कमर पर ओजड़ी लादी जा रही है, गर्दन पर चादर डालकर मरोड़ा जा रहा है, पत्थर पड़ रहे हैं, गालियाँ पड़ रही हैं, ज़ख़्म लग रहे हैं सिर्फ़ तबलीग़ के लिए और अब इस उम्मत को समझाना पड़ रहा है कि तबलीग़ तुम्हारा काम है। तबलीग़ी जमाअत किसी एक की जमाअत नहीं बल्कि हर मुसलमान मुबल्लिग़े इस्लाम है।

तबलीग़ फ़र्ज़ या सुन्नत?

मेरे दोस्तो और भाईयो! जब मुस्तहब मिट रहा होता है तो तबलीग़ का काम मुस्तहब होता है अगर फ़राईज़ मिट रहे हों तो तलबीग़ फ़र्ज़ होती है। बाज़ार में कितने लोग आते हैं और नमाज़ी कितने होते हैं?

﴿لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله الخ﴾

होना तो यह चाहिए कि इधर अल्लाहु अकबर की आवाज़ आए और उधर दुकानें बन्द होना शुरू हो जाएं। क्यों? कि भाई बड़े ने बुलाया है, जिसने दुकान दी है उसने बुलाया है, जिसने रिज़्क़ दिया है उसने कहा आ जाओ शुक्र अदा करो मेरा, मेरे शुक्र के लिए मस्जिद में आ जाओ।

ये मुसलमानों के बाज़ार हैं। इसमें अज़ान के साथ यह आवाज़ होती है कि चलो अल्लाह की तरफ़ चलो अल्लाह की तरफ़ सारे कारोबारी ज़िन्दगी कट जाती है अल्लाहु अकबर की पुकरा आ गई।

कितने हमारे भाई हैं जिनको हफ़्ते में एक सज्दा नसीब नहीं सिवाए जुमा के और कितने ऐसे हैं जिनको जुमा भी नसीब नहीं सिवाए ईद के कितने ऐसे होंगे जिनको ईद की नमाज़ नसीब नहीं।

अल्लाह के घर में पहली बार जाना हुआ

फ़ैसलाबदा में गश्त करके हम दो आदमियों को मस्जिद में लाए। वह हमारी दावत से बड़े मुतास्सिर हुए और कहने लगे कि हम ज़िन्दगी में पहली बार मस्जिद में आए हैं। हमने कहा इस मस्जिद में पहली दफ़ा? उन्होंने कहा नहीं नहीं मस्जिद ही में पहली दफ़ा आए हैं।

हमने कहा पहले कभी नमाज़ नहीं पढ़ी है? उन्होंने कहा नहीं पढ़ी। चालीस साल के बीच उनकी उमरें थीं। जुमा और ईद की नमाज़? उन्होंने कहा न जुमा की न ईद की पढ़ीं।

इससे ज़्यादा अजीब बात बताऊँ कि एक दिन बैतुल्लाह से बाहर निकला। सामने सड़क पार की टैक्सी खड़ी थी। उससे कहा फ़लाँ जगह जाना है। जब उसके साथ बैठा तो वह हर सामने से गुज़रने वाले को गालियाँ दे रहा था तो मैंने सोचा इसको दावत देनी चाहिए। जब दावत देना शुरू की तो उसने कहा मैं दस साल से बैतुल्लाह नहीं देखा तेरी क्या सुनूँ?

बैतुल्लाह का पड़ौस होते हुए भी दूरी है

बैतुल्लाह से सड़क पार करके टैक्सी स्टैंड है बीच में एक फ़र्लांग का फ़ासला है। उसका दिल इतना सख़्त हो चुका है कि

जिस बैतुल्लाह को देखने के लिए सात बर्रे आज़म से लोग खिंच खिंचकर आते हों और वह दस साल से बैतुल्लाह की ज़ियारत नहीं करता। उसकी बात सुनकर मेरा चेहरा बदल गया तो उसने कहा क्यों परेशान होते हो मेरे जैसे यहाँ सैकड़ों हैं।

लब पर मेरे ज़िक्र हो या रब तेरा हर घड़ी

मेरे भाईयो! दीन इस्लाम की क़द्र करो। शीशे में थोड़ा सा दाग़ पड़ जाए तो नौकर से कहते हैं शीशे को साफ़ करो। दिल पर कितने बड़े बड़े दाग़ पड़े हुए हैं उनको साफ़ नहीं करना? कपड़ा मैला हो जाए तो उतारकर फेंक देते हैं और दिल को इतना गंदा किया हुआ है कि जिसमें गंदगियों की गटर है। दिल तो अल्लाह के लिए था। ﴿لا انى فى الارض ولا فى السماء﴾ न मैं आसमान पर आता हूँ और न मैं ज़मीन पर बल्कि अपने बन्दे के दिल में आता हूँ। मुसलमान का दिल अल्लाह का अर्श है जिसमें अल्लाह अपनी मुहब्बत को उतारता है अगर हम अपने लिए गंदा कपड़ा पसन्द नहीं करते तो अल्लाह के लिए गंदा दिल क्यों पसन्द किया हुआ है? अपने दिल को बदलना होगा।

तबलीग़ में मौक़ा शनासी की अहमियत का वाक़िआ

मैं आपको एक वाक़िआ सुनाऊँ। हम एक जगह तबलीग़ के लिए गए तो ज़मींदार आदमी घोड़े की बच्ची को मक्खन का पेड़ा खिला रहा था। हम लोग गए वह अल्लाह और उसके रसूल की

बात सुनने से इंकार नहीं कर सकता था। हम बात करते तो कभी इधर मुतवज्जेह होता कभी उधर। उसे न हदीस समझ आ रही थी न क़ुरआन। मेरे एक सीनियर साथी थे जो बीस साल से तबलीग़ का तजरिबा रखते थे। अब उन्होंने बात शुरू की, कहने लगे ओ चौधरी मेहर फ़ाज़िल! तेरे घोड़े के बच्चे के पाँव छोटे हैं। वह एक दम मुतवज्जेह हो गया और सीधा हो गया, ﴿بلسان قومه﴾ उस सांचे में बात करो कि मुख़ातिब ले ले।

फिर उसने कहा इस घोड़े की गर्दन भी छोटी है। अब वह इस क़द्र मुतवज्जेह हो गया था कि क्या कहने। वह इस घोड़े के ऐब बताते बताते और उसका इलाज बताते आहिस्ता आहिस्ता उसको असल बात की तरफ़ लेकर आया जिस तरह रेलगाड़ी आहिस्ता आहिस्ता काँटा बदतलती है। फिर उसको क़ब्र हश्र की बातें बतायीं। यहाँ तक वही मेहर फ़ाज़िल इसी बात को समझकर तैयार हुआ और नक़द हमारे साथ तबलीग़ में निकल खड़ा हुआ।

तबलीग़ के फ़ज़ाइल व अहमियत

तो मेरे भाईयो! यह तरीक़ा सीखें। सिर्फ़ तक़रीर करने से क्या होगा? अल्लाह तआला का इर्शाद है,

﴿تامرون بالمعروف﴾ तुम भलाईयों की तरफ़ बुलाते हो,

﴿وتنهون عن المنكر﴾ बुराईयों से रोकते हो,

﴿تؤمنون بالله﴾ अल्लाह के इश्क़ व मुहब्बत में सब कुछ करते हो। तुम्हारा मक़सद अल्लाह होता है। अल्लाह पर ईमान लाते हो। क्या मतलब? यह सारी भाग दौड़ अल्लाह ही के इर्दगिर्द घूमती है और तुम्हारा कोई मक़सूद व मतलूब नहीं होता न आह न वाह।

तुम्हारी आह वाह ने शाह जी को हिलाकर रख दिया

मौलाना अताउल्लाह शाह बुख़ारी रह० फ़रमाते थे

बयान करता हूँ तो कहते हो वाह! शाह जी,
जेल जाता हूँ तो कहते हो आह! शाह जी,
वोट मांगता हूँ तो कहते हो ना! शाह जी,
इसी आह, वाह में हो गए तबाह! शाह जी

अब आप क्या करते हैं? आप तक़रीर याद करते हैं। मुसन्निफ़ों को अल्लाह हिदायत दे जिन्होंने ख़ुत्बात जुमा लिख दिए। ख़ुत्बात जुमा और पता नहीं कितनी किताबें लिखीं हैं। अब जुमा को इससे तक़रीर करनी है ख़तीब ने। वह देखता है कि आज जुमा को कौन सी तक़रीर लिखी हुई है।

वह तक़रीर पढ़ता है। उसमें कोई शे'र है, कोई क़ाफ़िया है, कोई रदीफ़ है, कोई उल्टी सीधी फ़साहत है बलाग़त है, तुकबंदी को फ़साहत व बलाग़त के साथ ताबीर किया हुआ है। फिर वह आकर मिम्बर पर नौजवान बैठता है और तक़रीर शुरू कर देता है। उसे पता नहीं कि इस मजमे को रोटी की ज़रूरत है या पानी की। वह अपने ज़ेहन से ख़ुद सोचता है कि मैंने यह ख़ुत्बा देना है। मैंने जुमा पर यह तक़रीर करनी है, यह मजमे की ज़रूरत है या नहीं? गुज़र गई ऊपर से गुज़र गई। लोगों के माहौल को नहीं समझा, उनके मिज़ाज को नहीं समझा, उनकी फ़ितरत को नहीं समझा। बात शुरू कर दी।

उम्मत के ग़म में रोना सीखो

मेरे भाईयो! यह जो उम्मत टूटी पड़ी है। इस हालत पर मर गए तो कहाँ जाएंगे? कोई इस पर भी तो हाय करने वाला हो, एक दूसरे के गले काट रहे हैं, एक दूसरे के गिरेबान नोच रहे हैं। क्या इसीलिए अल्लाह का नबी आया था? यही सबक़ सिखाने अया था? क्या यह कलिमा इतना आसान है? क्या दीन इतना सस्ता है कि सिर्फ़ अपने मसलक के इख़्तिलाफ़ की वजह से एक दूसरे के एहतिराम और इज़्ज़त को पामाल कर दो। इस चमन को आग लग गई कि पिछले पचास साल से कोई एक झोंका भी बहार का नज़र नहीं आता। कोई फूल खिलता नज़र नहीं आता। उजड़े चमन के माली से जाकर पूछो कि उसके दिल पर क्या गुज़रती है? जिस ज़मींदार की फ़सल को आग लग जाए या मौसम खा जाए उससे जाकर पूछो कि उस पर क्या बीतती है?

अपने ही हाथों इस्लाम पर कुल्हाड़ी मत चलाओ

बार्डर पर मुसलमानों से पूछो जो बेचारे घर से बे घर हो रहे हैं कि उन पर क्या बीत रही है? जिनका आगे सिर छिपाने का दर कोई नहीं, छोट छोटे मासूम बच्चे दर दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनकी आह सुनो, पत्थर भी मोम हो जाते हैं। हम कैसे मुसलमान हैं कि अपने ही हाथों अपने इस्लाम के चमन को कुल्हाड़ा लेकर तबाह कर रहे हैं। जिस शाख़ पर बैठे हैं उसी शाख़ को काट रहे हैं।

यह कौन सा इक़रारे रिसालत है? यह कौन सी तौहीद है? यह

कौन सा इश्के मुस्तुफ़ा है?

यह जो कम्पनियों के ऐजेंट होते हैं यह कम्पनियों का तआरुफ करवाते हैं, उनकी दवाएं बेचते हैं, उनको पूरी कम्पनी स्पोंट करती है, पैसे भी देती है? तंख़्वाह भी देती है, एलाउंस भी देती है, घर भी देती है, गाड़ी भी देती है। हम अल्लाह और उसके रसूल का तआरुफ करवाते हैं यह हमारा काम है।

हमारे नौजवान का भी, हमारे बूढ़े का भी, पढ़े लिखे का भी, अनपढ़ का भी, डाक्टर का भी, इन्जीनियर का भी, औरत का भी, मर्द का भी, अमीर का भी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती होने के नाते हमें बड़ी इज़्ज़त वाला काम मिला है। हमें अल्लाह ने सफ़ीर बना दिया। हर सफ़ीर की ताकत उसकी हुकूमत की ताक़त के बक़द्र होती है। हम अल्लाह के सफ़ीर हैं हमारे पीछे अल्लाह की ताक़त है। आप जहाँ भी हैं अल्लाह ने आपको सफ़ीर बना दिया है। आप में से कोई हुकूमत का सफ़ीर बन जाए तो कैसा ख़ुश होता है?

देगे चढ़ाएगा, लोग भी मुबारकबाद देने आएंगे। अरे भाई हमें अल्लाह ने अपना और अपने हबीब का सफ़ीर बना दिया है कि मेरा और मेरे हबीब का पैग़ाम भी फैलाएंगे, पूरी दुनिया के इन्सानों को यह बात समझाना है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। यह हमारा काम है। हम आप हज़रात की ख़िदमत में एक ग़म और एक दर्द और एक फ़िक्र को लेकर आएं हैं और हमारी यह तड़प व तमन्ना है कि हर उम्मती इस दर्द व ग़म वाला बन जाए।

हुज़ूर वाले ग़म को अपना ग़म बना लें

मेरे भाईयो! आज दुनिा में फिर कर देखो सारी काएनात में मुसलामन के हर घर और हर बाज़ार में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला ग़म मिटा हुआ है। हम यह अर्ज़ कर रहे हैं और हर एक की मिन्नत कर रहे हैं और हर एक के दरवाज़े पर जाकर और हर एक की दुकान पर जाकर एक बात अर्ज़ कर रहे है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हें अपना वारिस बनाकर गए हैं।

यह उम्मत अपने नबी की वारिस है। पहले किसी उम्मत को नबी का वारिस नहीं बनाया गया लेकिन इस उम्मत को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वारिस बनाया गया है जिसकी वजह से इस उम्मत के दर्जे को इतना ऊँचा किया गया।

इस उम्मत का अन्दर बड़ा नरम है। बाहर बिगड़ा हुआ है। जिसके दिल में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कलिमा है उसको कभी बुरा नहीं समझना। आज जो औरत तुम्हें बड़ी फ़ाहिशा नज़र आती है एक क़दम इस्लाम की तरफ़ बढ़ा ले तो उसी पर फ़रिश्ते क़ुर्बान हो जाएं।

आज जो नौजवान हमें नाचता हुआ नज़र आता है, शराब के जाम लुटाता हुआ नज़र आता है यही एक क़दम नबवी ज़िन्दगी में आगे बढ़ जाए तो फ़रिश्ते उसके सामने ज़ेर हो जाएं। उसके पीछे बहुत बड़ी ताक़त है। मुहम्मद मुस्तुफ़ा की अरफ़ात की दुआ है। इसलिए किसी मुसलमान मर्द व औरत को बुरा नहीं समझना चाहिए। यह बड़ी अज़ीम उम्मत है। ऐसी उम्मत कभी नहीं आई।

इसकी रगों में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर है। यह कितना ही गिर जाए मगर एक दफ़ा आँख खुल जाए तो ऐसी सही होगी कि फ़रिश्ते भी पीछे रह जाएंगे।

यही तबलीग़ की मेहनत हमारे ज़िम्मे लगी है कि इस दीन को आगे पहुँचा दिया जाए और सारी दुनिया अल्लाह के कलिमा से आबाद हो जाए, मामूर हो जाए। कोई नया काम नहीं शुरू हुआ, पुराना काम था भूल गए थे–

मुद्दत हुई सैय्याद ने छोड़ा भी तो क्या
ताबे परवाज़ नहीं राहे चमन याद नहीं

एक ज़माना हुआ कि पिंजरे में क़ैद था। अब वह परिन्दा उड़ने की ताक़त भी ख़त्म कर चुका है और अगर उड़े भी तो उसे पता नहीं कि किस बाग़ से पकड़कर लाया गया था? यह उम्मत दुनिया की कमाई में ऐसी ग़र्क़ हुई कि आज इनमें परवाज़ की ताक़त ही ख़त्म हो गई और परवाज़ करना भी चाहें तो उन्हें पता नहीं कि किस बाग़ के हम फूल थे? और अल्लाह के रास्ते में इतनी जमाअतें चल रही हैं और इतने लाखों करोड़ों रुपए ख़र्च हो रहे हैं।

तीन अरब रुपए कहाँ से आए?

अभी इज्तिमा हुआ। तीन सौ जमाअतें बाहर मुल्कों में जाने के लिए तैयार हुयीं। तीन सौ जमाअतों का मतलब है तक़रीबन तीन हज़ार आदमी और बाहर जमाअत वाले कुछ ज़्यादा ख़र्च करते हैं कुछ कम ख़र्च करते हैं मगर आज एक लाख रुपया आसानी से ख़र्च होता है तो कुछ तीन सौ जमाअतों ने जाना है। एक लाख

रुपया तक़रीब हर साथी का ख़र्च है तो ये तीन सौ जमाअतों का ख़र्च तक़रीबन तीन अरब रुपया बन जाता है।

और राइविन्ड से इनको तीन पैसे भी नहीं मिले। यह सारा क्यों ख़र्च किया जा रहा है? वे तबलीग़ को राइविन्ड से नहीं जोड़ रहे हैं, तबलीग़ी जमाअत से नहीं जोड़ रहे हैं। वे तबलीग़ के काम को ईमान से जोड़ते हैं, हम ख़त्मे नुबुव्वत से जोड़ते हैं कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं, आपके बाद कोई नबी नहीं फिर इसके लिए आलिम होना शर्त नहीं। एक बात भी तुम्हें आती हो तो उसकी तबलीग़ करनी शुरू करो। इतना तो पता है कि अल्लाह की मानने में निजात है। इसकी दावत दो।

सीखे बग़ैर गाड़ी आगे नहीं चलती तो सीखने के लिए कहते हैं। निकलो तो सही, सीखो तो सही, कहो भी और सिखाओ भी और पहुँचाओ भी तो सारे काम एक ही वक़्त में होते हैं यह नहीं कि सीख लो फिर करो। जो आदमी तैरना सीखता है क्या वह भी यह कहता है कि पहले तैरना सीख लूँ फिर तैरूंगा। वह तैरना और सीखना एक ही वक़्त में करता है। पानी में सीख भी रहा है तैर भी रहा है। कोई कहे गाड़ी चलाना सीख लूँ फिर चलाऊँगा। वह तो कभी भी कर सकता। गाड़ी को चलाता भी है सीखता भी है। सीखने वाले की टक्कर भी माफ़ होती है। ऊपर "एल" लगा हुआ है। हम तो भाई सीखने वाले हैं माफ़। हुकूमत पाकिस्तान माफ़ कर रही है जो ज़ालिम इतनी है तो अल्लाह तो रहीम है। इसलिए भाईयों अल्लाह के रास्ते में निकलो और खुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब कांधलवी रह० और फ़िक्रे उम्मत

मौलाना इलयास रह० ने इस दुनिया से रुख़सत होने से पहले मौलान यूसुफ़ रह० को अमीरे तबलीग़ मुन्तख़ब फ़रमाया। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब कांधलवी रह० को उम्मत का कितना दर्द व ग़म था उसे बन्दा तहरीर के सांचे में लाने से क़ासिर है अलबत्ता इख़्तिसार की ग़र्ज़ से यह वाक़िआ पेशे ख़िदमत है। बन्दा ने यह वाक़िआ फ़ैसलाबाद की शूरा के भाई अब्दुल क़य्यूम साहब से सुना कि मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने ख़्वाब में देखा कि एक दरिया के किनारे दो क़ब्रें फटीं उसमें से दो नूरानी शक्लें ज़ाहिर हुयीं लेकिन कपड़े जगह जगह से फटे हुए थे और जिस्म से ख़ून रिस रहा था और बाल बिखरे हुए थे। उन्होंने कहा हम वे हैं जिन्होंने इन आँखों से अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा फिर कहा अरे मौलवी यूसुफ़ अगर अल्लाह हमें इस दुनिया में दोबारा भेज दे तो हम तुम्हें बतलाएं कि तबलीग़ करना किसे कहते हैं और फिर मज़ीद फ़रमाया हम ने तो आग पर लेटकर भी दीन की दावत दी। अहक़र मौअल्लिफ़ अर्ज़ करता है कि इस ख़्वाब का मक़सद मौलाना की फ़िक्र में इज़ाफ़ा करना है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहिव वसल्लम वाला ग़म

मेरे दोस्तो! इस दुनिया मे 16 अरब के क़रीब इन्सान हैं जिसमें से एक चौथाई मुसलमान हैं। पौने पाँच अरब काफ़िर हैं। इस सवा अरब मुसलमानों के बारे में अहले इल्म ने तहक़ीक़ की तो पता चला इनमें 15, 20 फ़ीसद नमाज़ पढ़ते हैं। बक़िया 85 फ़ीसद से ज़्यादा बेनमाज़ी हैं। उन नमाज़ियों में कितने सही सुन्नत के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ते हैं। उनका अंदाज़ा आप ख़ुद लगा लें।

मेरे अज़ीज़ो! अब यह कितनी फ़िक्र की बात है। अरबों इन्सान कुफ़्र पर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। इनका आख़िरत में क्या बनेगा? एक बात तो तयशुदा है वह यह कि अगर तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी मिलकर किसी काफ़िर को जहन्नम की आग से बचाना चाहें तो बचा नहीं सकते। आज हमें उम्मत की वह फ़िक्र नहीं जो होनी चाहिए। किसी के जवान बेटे की लाश घर में रखी हुई हो तो क्या वह कारोबार पर जाएगी? क्योंकि उसको एक ग़म लगा हुआ है। ऐसे ही हमें भी उम्मत का ग़म लग जाए कि रोज़ाना हज़ारों आदमी बग़ैर कलिमा पढ़े दुनिया से जा रहे हैं। उनको जहन्नम की आग से बचाना हमारे ज़िम्मे है। हम कारोबार की नफ़ी नहीं करते बल्कि कारोबार को मक़सद बनाने की नफ़ी करते हैं। बक़ौल एक अल्लाह वाले के फ़रमाया कि–

ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर
सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है

फ़रमाया यह शे'र भी हमें तबलीग़ में निकलकर समझ में आया। क्या मतलब दुनिया के किसी भी कोने में अगर कोई शख़्स कुफ़्र पर मर रहा हो या नमाज़ न पढ़ता हो तो हमारे सीने में एक दर्द उठे। इसलिए कहा गया कि अल्लाह का सबसे महबूब बंदा वह है कि किसी को कांटा भी चुभे तो उसको दर्द फ़िक्र महसूस हुआ कि मेरे भाई को तकलीफ़ हुई।

क़ब्र की अंधेरी रात

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله.اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

अल्लाह का पैग़ाम

इस काएनात का एक रब है। ﴿ليس معه اله يخشى﴾ और कोई नहीं जिससे डरा जाए, ﴿ولا رب يرجى﴾ और कोई रब नहीं जिससे उम्मीद लगाई जाए, ﴿ولا حاجب يرشى﴾ उसके दर्मियान कोई वास्ता नहीं जिससे सिफ़ारिश देकर काम निकाला जाए, ﴿ولا وزير يوتنى﴾ उसका कोई वज़ीर नहीं ज़िसे रिश्वत देकर कोई काम निकाला जाए, ﴿قاهر بلا معين﴾ वह सारी काएनता पर क़ाहिर है मददगार उसका कोई नहीं, ﴿مدبر بلا مشير﴾ वह इस सारी काएनात का निज़ाम

चलता है मुशीर उसका कोई नहीं, ﴿ولا يؤده حفظهما﴾ वह इस निज़ाम को चलाते हुए थकता नहीं, ﴿لا تاخذه سنة﴾ ऊँघता नहीं, ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं, ﴿وما مسنا من لغوب﴾ वह थकता नहीं, ﴿وما كان ربك نسيا﴾ वह भूलता नहीं ﴿وما هم بمعجزين﴾ वह आजिज़ नहीं, ﴿لا يضل ربي ينسى﴾ न भूलता है, वह अपनी क़ुव्वत के साथ है,

﴿الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما في السموات وما في الارض.﴾

वह ऐसा ज़िन्दा है जिसको ज़िन्दगी की ज़रूरत नहीं, वह ऐसा क़ायम है जिसको क़ायम रहने के लिए असबाब की ज़रूरत नहीं, वह ऐसा अलीम है जिसको इल्म कहीं से मिला नहीं, उसके पीछे जिहालत नहीं।

﴿هو الاول ليس قبله شيء﴾ वह ऐसा अव्वल है कि जिसके पीछे उसकी कोई शुरूआत नहीं, ﴿قديم بلا ابتداء﴾ वह ऐसा क़दीम है जिसकी इब्तिदा नही ﴿ودائم بلا انتهاء﴾ वह ऐसा दाइम है कि उसका इन्तिहा कोई नहीं, उसके साथ उसका शरीक कोई नहीं, ﴿الاول ليس قبله شيء﴾ उससे पहले कोई नहीं, ﴿والآخر ليس بعده شيء﴾ उसके बाद कुछ नहीं, ﴿والظاهر ليس فوقه شيء﴾ उससे ऊपर कोई नहीं, ﴿والباطن ليس دونه شيء﴾ उससे नीचे कोई नहीं, ﴿لا تراه العيون﴾ जो आँख की रसाई से आगे, ﴿ولا تخالطه الظنون﴾ ख़्यालात की बड़ी से बड़ी उड़ान से भी आगे, ﴿كل شيء هالك الا وجهه﴾ हर चीज़ को फ़ना है सिर्फ़ उसी एक को बक़ा है।

क़यामत की तैयारी कब करोगे?

अल्लाह जल्लजलालुहू ने एक दिन हमें खड़ा करना है। वह ग़ाफ़िल नहीं है, आजिज़ नहीं है, पकड़ सकता है, मार सकता है,

तोड़ मरोड़ सकता है लेकिन अल्लाह की एक सिफ़त है क्यों नहीं मारता भाई, क्यों नहीं पकड़ता? दो वजहें हैं।

दो वजहों से नहीं पकड़ता। एक तो इस वजह से कि अल्लाह ने फ़ैसले का दिन दुनिया में रखा ही नहीं। फ़ैसला आख़िरत में है। फ़ैसला दुनिया में नहीं है। उसका अल्लाह ने एक दिन रखा है।

﴿ان يوم الفصل كان ميقاتا. ان يوم الفصل ميقاتهم اجمعين﴾

वह फ़ैसले का दिन है। उस दिन खरा खोटा अलग करेगा। दुनिया में नहीं क़यामत के दिन ऐलान होगा—

﴿وامتازو اليوم ايها المجرمون﴾ आहो दुनिया में बड़े नेकोकार, पारसा थे। कल क़यामत के दिन मुजरिमों की सफ़ में खड़े होंगे। अन्दर तो अल्लाह ही जानता है ना! अन्दर तो अल्लाह ही जानता है कि अन्दर क्या है? मैं हूँ या मेरा ग़ैर है, मुजरीमों को अलग, मुत्तक़ियों को अलग। वह एक दिन आगे आ रहा है।

मौत से पाक, उसी ने असबाबे काएनात बनाए, ख़ुद एक ज़र्रे का मुहताज नहीं। सारी काएनात को काबू में किया हुआ है, ख़ुद क़ाबू होने का मुहताज नहीं।

गुलशन तेरी यादों का महकता ही रहेगा

अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं—

﴿يا ابن آدم يا عبادى انى لم اخلقكم لا كثر كم من قلة﴾

मेरे बन्दो! तुम्हें इसलिए नहीं पैदा किया कि तुम्हारी वजह से मेरे ख़ज़ाने पूरे हो जाएंगे, ﴿ولا ستانس بكم وحشة﴾ तुम्हें इसलिए नहीं पैदा किया कि तुम्हारी वजह से दिल लगाऊँगा? ﴿ولا لا ستعينكم على امر قد عجزت عنه﴾ तुम्हें इसलिए पैदा नहीं किया था कि तुम्हारी

वजह से मेरे काम बन्द पड़े थे, तुम आकर मेरे काम करोगे? नहीं नहीं।

انما خلقتکم لتعبدونی فضیلا وتذکرونی
کثیرا وتسبحونی بکرۃ واصیلا۔

मैंने इसलिए पैदा किया ताकि सुबह शाम मेरे बनकर ज़िन्दगी गुज़ारो, मेरी इत्तिबा में ज़िन्दगी गुज़ारो।

आज कौन बादशाह है?

मेरे मोहतरम भाईयो! सब को फ़ना एक को बक़ा। फिर ज़मीन को पकड़ेगा, आसमान को पकड़ेगा, सातों ज़मीन व आसमान को लपेटेगा फिर एक झटका देगा जैसे कोई धोबी कपड़ों को झटका देता है। अल्लाह पाक एक झटका देगा फिर इर्शाद फ़रमाएगा:

﴾انا الملك﴿ मैं बादशाह हूँ, फिर दूसरा झटका देगा फिर कहेगा ﴾انا القدوس السلام المومن﴿ मैं सलामती वाला, फिर अल्लाह तआला तीसरा झटका देगा फिर कहेगा ﴾انا المهيمن العزيز الجبار المتكبر﴿ मैं मुहैमिन, मैं जब्बार, मैं मुतकब्बिर फिर अल्लाह तआला पूछेगा ﴾اين الملوك﴿ बादशाह कहाँ हैं? ﴾اين الجبار﴿ दुनिया में ज़ुल्म करने वाले कहाँ हैं ﴾لمن الملك اليوم﴿ आज कौन बादशाह है? कोई हो तो जवाब दे, कोई हो तो बोले। अकेला जवाब देगा। खुद अपने सवाल का जवाब दे रहा है—

अल्लाह अल्लाह अकेला अल्लाह है जो वाहिद, क़ाहिर, जो ग़ालिब है। जिससे कोई लड़ नहीं सकता, टक्कर नहीं ले सकता, भाग नहीं सकता, छिप नहीं सकता, ﴾اين المفر﴿ भागो कहाँ भागोगे ﴾لا تخفى منكم خافية﴿ छिपोगे ﴾لا تنفذ الا بسلطان﴿ लड़ो कैसे लड़ोगे।

अल्लाह मुझे बचा! औलाद को जहन्नम में डाल दे

ऐसे ताक़तवर बादशाह के सामने हम एक दिन पेश होने वाले हैं। मैंने शुरू में ही कहा था इतनी बड़ी हस्ती के साथ हमारा वास्ता है जो कल खड़ा करने वाला है ﴿ولقد جئتمونا فردا﴾ अकेले अकेले ﴿كما خلقنكم اول مرة﴾ जैसे अकेले आए अकेले जा रहे हैं। अल्लाह की बारगाह में माँ बेगानी बन गई। बीवी अंजान बन गई। औलाद ने साथ छोड़ा। दोस्तों ने आँखें फेर लीं। दुश्मन भी पराए अपने भी पराए। अपनी जान भी पराई कि यह हाथ बोलेगा मैंने यह ज़ुल्म किया, ये पाँव बोलेगा मैं वहाँ तेरी नाफ़रमानी में चला। यह पेट बोलेगा मैंने फ़लां लुक़्मा हराम खाया। यह पूरा जिस्म मेरा मुख़ालिफ़ होगा। मेरे बाल-बच्चे मेरे मुख़ालिफ़ होंगे। इस दिन फिर मुजरिम पुकारेगा—

﴿يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه﴾

मेरी औलाद को डाल दे दोज़ख़ में ﴿وصاحبته واخيه﴾ मेरी बीवी, मेरे भाईयों को डाल दे दोज़ख़ में मुझे बचा ले और अगर यह भी तुझे क़ुबूल नहीं ﴿ومن فى الارض جميعا﴾ सारे इन्सानों को दोज़ख़ में डाल दे पर मुझे बचा ले ﴿كلا﴾ नहीं नहीं यह नहीं हो सकता।

मरकर मर जाते तो मस्अला आसान था

मेरे भाईयो! मरकर मर जाते तो मस्अला आसान था। मरकर न उठते तो भी मस्अला आसान था। मुसीबत यह है कि मरकर मरना नहीं मरकर फिर ज़िन्दा हो जाना है अगर यहाँ ग़फ़लत में

मर गए तो वहाँ बहुत ख़ौफ़नाक अंजाम का सामना करना पड़ेगा अगर कुछ लेकर चले गए तो बड़ी ख़ूबसूरत ज़िन्दगी है। उसकी शुरूआत तो है लेकिन अंजाम नहीं, उसकी इब्तिदा तो है उसकी इन्तिहा कोई नहीं। यह काएनात बड़ी तेज़ी के साथ अपने अंजाम की तरफ़ चल रही है।

﴿من مات فقد قامت قيامته﴾ जो मरता है उसकी क़यामत आ ही जाती है। एक क़यामत इस काएनात की भी आने वाली है। अन्क़रीब ख़त्म होने वाली है और इसको मौत का झटका तोड़ने वाला है और हमें बिल्कुल बेबस कर दिया जाएगा, क़ब्र की चारदीवारी में फेंक दिया जाएगा जहाँ इन्सान चीख़ना चाहे तो चीख़ नहीं सकता, बताना चाहे तो बता नहीं सकता। कहीं मैय्यत होती है तो कहती है–

﴿لا تقدموني﴾ मुझे न ले जाओ। पूरी काएनात उसका विलाप सुनती है। ﴿لا تقدموني﴾ मुझे क़ब्र में न ले जाओ। इसका इख़्तियार ख़त्म हो चुका है।

क़ब्र में कीड़ों की चादर

पूरी दुनिया ख़ौफ़नाक अंजाम की तरफ़ बढ़ रही है। हम छोटे छोटे मसाइल को मस्अला बनाकर बैठे हैं। मर जाना यह भी तो बड़ा मस्अला है। हम तो पुरानी चादर उतारकर बिस्तर पर नई चादर बिछवाते हैं और जिस वक़्त मिट्टी का बिस्तर होगा तो उस वक़्त क्या बात बनेगी और मिट्टी की चादर होगी तो उस वक़्त क्या होगा?

जब बल्ब फ़्यूज़ हो जाए तो फ़ौरन बल्ब लगाओ, वह क्या दिन होगा जब अंधेरे घर में जा पड़ेंगे। यहाँ घंटी लगी हुई है

जाओ फ़ौरन आ जाता है वह क्या दिन होगा कोई न सुन सकेगा न कोई सुना सकेगा तो कितना ख़ौफ़नाक अंजाम है।

कपड़े पर दाग़ लगा हो तो उतारो, आज बदन पर कीड़े रेंग रहे हैं, घंटों चेहरे को सजाया, कितने साबुन कितने शैम्पू, कितनी ख़ुशबुएं और वह क्या दिन होगा इन आँखों को कीड़े खा रहे होंगे और इसी पर चल रहे होंगे। पूरा वजूद कीड़ों की ग़िज़ा बन चुका होगा। इन कीड़ों को दूसरे कीड़े खा रहे होंगे ﴿افحسبتم انما خلقناكم عبثا﴾ मेरे बन्दो! तुम्हें क्या हो गया है? कैसे ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो के जैसे तुम्हें आज़ाद पैदा किया गया है। तुम पर कोई निगहबान नहीं। तुम्हें ख़बर नहीं कि—

﴿وما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد﴾ तुम्हारी ज़बान का हर बोल मैं लिख रहा हूँ, ﴿بلى ورسلنا لديهم يكتبون﴾ मेरे फ़रिश्ते तुम्हारे हर बोल को लिख रहे हैं। तो अल्लाह तआला की खुली किताब हमें बता रही है तुम्हारा हर बोल लिखा जाता है।

﴿يعلم خائنة الاعين﴾ तुम्हारी आँख ग़लत देखती है वह भी लिखा जाता है, ﴿وما تخفى الصدور﴾ तुम्हारे अन्दर में ग़लत जज़्बात पैदा होते हैं वह भी लिखा जाता है,

﴿وما خلقنا السماء والارض وما بينهما لعبين.﴾

ज़मीन व आसमान और जो कुछ इसमें है मैंने खेलकूद के लिए तो नहीं पैदा किया।

﴿لو اردنا ان نتخذ لهوا لا تخذنه من لدنا.﴾

अगर मुझे खेल का कोई तमाशा बनाना ही होता तो अपने पास बनाता। तुम्हें मैंने इसलिए पैदा थोड़े ही किया है? तो जब तुम ख़ुद नहीं बने और ख़ुद जाना भी नहीं है और फिर मरकर मर

जाते तो मस्अला बड़ा आसान था अगर मरकर मिट्टी हो जाना है लेकिन मस्अला यह है कि मरकर मरना नहीं है। मरकर नई ज़िन्दगी में दाख़िल होना है।

दुनिया एक ख़्वाब है

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है ﴿الناس نيام﴾ लोग सोए हुए हैं ﴿اذا ماتو انتبه﴾ जब मौत आएगी तो आँख खुल जाएगी और यह दुनिया एक ख़्वाब है।

एक आदमी ख़्वाब देख रहा है बड़े ख़ूबसूरत घर में बैठा हुआ है, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है झोपड़ी में बैठा हुआ हूँ, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है मैं मिल चला रहा हूँ, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है में रेढ़ी चला रहा हूँ। मौत दोनों को क़ब्र के गढ़े में पहुँचाकर क़ब्र की मिट्टी सबके लिए बराबर कर देती है। ऐसे घर में रहने वाले के लिए घर में टाजमाअतइलें नहीं लगायी जातीं और झोपड़ी में रहने वाले के लिए वही सादा मिट्टी नहीं होती। यह भी उसी मिट्टी में वह भी उसी मिट्टी में।

फ़क़ीर, बादशाह मगर क़ब्र एक ही

हमारी जमाअत क़तर में गई थी। वापस आ रहे थे एयरपोर्ट पर तो रास्ते में एक महल देखा बहुत लम्बा चौड़ा। मैंने सोचा शायद शाही ख़ानदान में से किसी का है तो मैंने पूछा यह किस अमीर का है? तो वह हमारे साथी बताने लगे यह शाही ख़ानदान का तो नहीं है लेकिन यह क़तर का सबसे बड़ा ताजिर था। क़तर

में सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे बड़ा ताजिर और यह महल उसका है। बनाया पाँच साल रहने की नौबत आई फिर मर गया और जहाँ उसकी क़ब्र है वहाँ क़तर का सबसे फ़क़ीर बद्दू दफ़न है। एक तरफ़ क़तर का अमीर तरीन ताजिर और उसके पहलू में क़तर का ग़रीबतरीन बद्दू जो सारा दिन भीख मांगकर काम चलाता था। इन दोनों की क़ब्रें साथ साथ हैं कि क़ब्र में दोनों को बराबर कर दिया गया। मरकर मर जाते तो मज़े हो जाते, मरकर मरना नहीं, ﴾يا ايها الناس ان وعد الله حقا﴿ ऐ लोगो! ख़ूब सुन लो मेरा वायदा सच्चा है, वह क्या वायदा है?

﴾منها خلقناكم﴿ इस मिट्टी से बनाया ﴾فيها نعيدكم﴿ यानी वापस पहुँचा दूँगा ﴾ومنها نخرجكم تارة اخرى﴿ इसी से तुम्हें दोबारा ज़िन्दा कर दूँगा।

दुनिया जन्नत से ग़ाफ़िल न कर दे

ऐ लोगो! दो अज़ीम चीज़ों को मत भूलना फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोए, इतना रोए कि दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾الجنة والنار﴿ ऐ लोगो! जन्नत को न भूलना, ऐ लोगो! दोज़ख़ को न भूलना। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया—

﴾طلب الجنة جهدكم﴿ जितना जन्नत का ज़ोर लगा सकते हो लगाओ, ﴾واهرب من النار جهدكم﴿ जितना दोज़ख़ से भाग सकते हो भागो, ﴾فان الجنة لا ينام طالبها﴿ जन्नत का चाहने वाला सोता नहीं, ﴾والنار لا ينام غالبها﴿ और दोज़ख़ से डरने वाला ग़ाफ़िल नहीं होता, ﴾فان الجنة اليوم محفوفة بالمكاره﴿ जन्नत आज ढांपी हुई है मुशक़्क़तों

में परेशानियों में, ﴿وان الدنيا محفوفة بالشهوات واللذات﴾ और दुनिया और दोज़ख़ ढांपी हुई है लज़्ज़तों में ख़्वाहिशात में,

तुम्हें जन्नत से दुनिया की चीज़ें ग़ाफ़िल न कर दें। इनसे तुम्हें रास्ता भुलाना नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत का तलब करने वाला ग़ाफ़िल नहीं होता। ﴿فان الجنة لا خطرلها﴾ जन्नत कोई ख़तरे की जगह नहीं।

तीन भाईयों की कहानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक आदमी के तीन भाई हैं और वह मरने लगे तो एक को बुलाया कहा मेरा क्या करोगे, मैं मर रहा हूँ? वह कहेगा तू मर जाएगा मैं पराया हो जाऊँगा, तो दूसरे से पूछा भाई तू क्या करेगा? कहा मौत तक तेरा इलाज करूंगा, मर जाएगा तो क़ब्र में दफ़न करके वापस आ जाऊँगा। तीसरे से पूछा भाई तू क्या करेगा? उन्होंने कहा तेरा साथ दूँगा, तेरी क़ब्र में तेरे हश्र में, तेरे तराज़ू में, जन्नत तक तेरा साथ दूँगा। तो आपने फ़रमाया बताओ इन तीनों में से कौन सा भाई बेहतर है? तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा कि वह जो आगे तक साथ देगा। वह सबसे बेहतर है तो आपने फ़रमाया पहला भाई माल है जो मौत पर पराया हो गया। दूसरा भाई औलाद, रिश्तेदार हैं जो क़ब्र पर जाकर पराए हो गए। जब मैय्यत को क़ब्र में डाला जाता है तो एक फ़रिश्ता क़ब्र की मिट्टी को उठाकर

मजमे के ऊपर फेंकता है और कहता है जाओ इसे तुमने भुला दिया। यह तुम्हें भुला देगा। तीन दिन के बाद सारे मातम ख़ुशियों में बदल जाते हैं। हर कोई भूल भुलैया कर जाता है कोई आया था चला भी गया नाम भी मिट गया। और तीसरे आपने फ़रमाया वह तुम्हारा अमल है जो तुम्हारे साथ जाएगा।

एक सहाबी बैठे थे अब्दुल्लाह बिन कर्ज़। या रसूलल्लाह! मैं कोई शे'र कहूँ? इजाज़त हो तो मैं शे'र कहूँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहो। अच्छा मुझे थोड़ी इजाज़त दें, इजाज़त हुई। अगले दिन तशरीफ़ लाए आपने सारे सहाबा के मजमे को जमा किया। कहा भाई सुनो अब्दुल्लाह क्या कहता है? तो खड़े हुए कहा जिसका तर्जुमा यह है—

मैं मेरे माँ-बाप, मेरे बीवी बच्चे, मेरे रिश्तेदार, मेरा पैसा और मेरा अमल इसकी मिसाल उस आदमी की जो मर रहा है और वह तीनों को बुलाता है। भाई अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो, जुदाई की तवील घड़ियाँ शुरू होने वाली हैं, तन्हाई का लम्बा सफ़र शुरू होने वाला है, अल्लाह के वास्ते मेरी मदद करो।

पहले भाई की आह व फ़ुगां

तो पहला भाई बोला यह पैसा बोला कि भाई मैं तेरा बड़ा गहरा दोस्त हूँ, पक्का यार जिसे हमारे सराइकी में कहते हैं, मैं तेरा गहरा दोस्त हूँ लेनिक सिर्फ़ मौत तक हूँ जैसे मौत आएगी तो फिर तेरे कफ़न दफ़न से पहले मेरे ऊपर लड़ाई शुरू हो जाएगी ﴿بسـلك بي في مهيل مهائل﴾ अभी तेरे कफ़न के लिए बाद में तदबीरें सोची जाएंगी पर मेरे ऊपर लोग पहले टूट पड़ेंगे लिहाज़ा अगर

मुझसे नफ़ा उठाना है ﴿فان تبقني لا تبق﴾ अगर मेरा दोस्त मुझसे नफ़ा उठाना है तो मेरे ऊपर रहम न खा ﴿فاستنفدني﴾ मुझे ख़र्च कर दे ﴿وعجل فلاحا قبل حتف معاجل﴾ और इस मौत से पहले कुछ नेकी आगे भेज दे, मैं मौत के बाद तेरा नहीं हूँ, तेरी क़ब्र में तेरे दफ़न से पहले ही मेरे ऊपर लड़ाईयाँ शुरू हो जाएंगी और ये तो आँखों देखे वाक़िआत हैं।

दूसरे भाई की आह व फ़ुगां

अब दूसरा भाई बोला अच्छा भाई तू तो किसी काम का नहीं,

﴿فقال امرء من هم قد كنت جدا احبه واوثره من بينهم في التفاضل.﴾

फिर मेरा वह भाई बोला जिसके लिए मैंने बड़े पापड़ बेले, जिसके लिए मैंने बड़े दुख झेले और जिसे मैं सब पर तरजीह देता था, जिसके लिए मैंने कितने कितने मुशक़्क़त के रास्ते तय किए, वह क्या बोला? वह कहने लगा जो अपने रिश्तेदार हैं कि मैं मौत तक आपका साथी हूँ, मैं आपके दवादारू का भी साथी हूँ, क्या हूँ ﴿غناء اني جاهد لك ناصح﴾ यानी मैं आपका इलाज करूंगा, आपके लिए बेहतर डाक्टर मुहैया करूंगा। आपके लिए सारे सहूलत के असबाब पैदा करूंगा, ﴿اذا جد جدا الكرب غير مقاتلي﴾ लेकिन मौत के दर्द में नहीं लड़ सकता, मौत से मैं नहीं लड़ सकता ﴿ولكنني باك عليك ومعول﴾ जब आप मर जाएंगे तो मैं गिरेबान चाक कर दूँगा और बाल खोल दूँगा और ज़ोर ज़ोर से शोर मचाऊँगा और वावेला करूंगा, विलाप करूंगा ﴿ومن يخير عند من هو سائلي﴾ जो लोग ताज़ियत करने आएंगे मैं कहूंगा ऐसा था मेरा बाप, ऐसी थी मेरी माँ, ऐसा

या मेरा ख़ाविन्द, ऐसी थी मेरी बीवी, ऐसा था मेरा बच्चा। मैं सिर्फ़ तेरी तारीफ़ें कर सकता हूँ और क्या करूंगा?

तीसरे भाई की आह व फ़ुगां

फिर तीसरा भाई बोला ﴾فان الاخ لا تر ا اعالك معلى عند كرب الزلازل﴿ मैं नहीं ऐसा जैसे कि ये कि मौत पर चला जाऊँ। तो तू कैसा है? जनाज़े के साथ भी चलूँगा, कन्धा भी दूँगा, अब तो बड़े शहरों में यह रिवाज भी है मोटर में डाला चल सीधा क़ब्रिस्तान में, कहा मैं तुझे कंधा भी दूँगा और तेरे साथ चलूँगा, कहा हाँ फिर क्या होगा, क़ब्र में ले जाऊँगा जो आपका ठिकाना है जहाँ आपने रहना है और वहाँ आप पर मिट्टी डालकर मैं वापस आ जाऊँगा ﴾وارجع مقرونا بما هو شاغل﴿ क्यों कि मुझे और भी बड़े काम हैं सिर्फ़ आपका दफ़न करना ही नहीं आपकी ज़िन्दगी का तो तार कट गया, मुझे तो और भी काम हैं लिहाज़ा ﴾وارجع مقرونا بما هو شاغل﴿ फिर मैं वापस आ जाऊँगा मुझे और काफ़ी डयुटियाँ देनी हैं फिर एक दिन ऐसा आएगा ﴾كان لم يكن بيني وبينك خلة﴿ तू एक भूली बिसरी दास्तान बन जाए। हरफ़े ग़लत की तरह मिटा दिया जाएगा, तेरी क़ब्र की निशान भी मिट जाएगा, ﴾ولا حسن وحسرة في البلابل﴿ फिर ऐसा वक़्त आएगा कि कभी लगा ही नहीं कि हम भी कभी मिल बैठे थे। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई का इन्तिक़ाल हुआ। अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा का तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने दो शे'र पढ़े।

दो बादशाहों की जुदाई का वाक़िआ

जज़ीमा में एक बादशाह गुज़रा है। उसके दो वज़ीर थे। बड़े

लम्बे अरसे उनकी वज़ारत चली। तीस चालीस बरस तो ऐसा हो गया था कि जैसे जुदा ही नहीं होंगे फिर उनमें से एक मर गया तो इस पर उसके दूसरे ने शे'र कहे थे तो उसने इन दो शे'रों को पढ़ा,

كنا كندماني جزيمة حقبة   من الدهر حتى قيل لن يتصدعا

فلما تفرقنا كاني ومالك   لطول اجتماع لم نبت ليلة معا

मैं और मेरा भाई अब्दुर्रहमान ऐसे थे जैसे जज़ीमा बादशाह के दो वज़ीर कि जिन्हें कहा जाता था कि कभी जुदा ही न होंगे लेकिन जब मैं और वह जुदा हुए तो ऐसा लगा जैसे कभी मिल बैठे ही न थे।

﴿ولا حسن ودمرة في التابذل﴾ ऐसा होगा जैसे कभी आया ही नहीं था। जिसने रातों को जागकर अपनी औलाद के लिए क्या कुछ नहीं किया और अपनी ख़्वाहिशात को ख़त्म कर दिया, अपनी ख़्वाहिशात के जनाज़े निकालकर औलाद के लिए क्या क्या जमा करके गया, उन्हें यह भी पता नहीं होगा कि हमारे बाप की क़ब्र कहाँ है?

तो तीसरा भाई बोला ﴿فقال امرء منهم انا الاخ لا ترا﴾ ऐ मेरे भाई मैं उन दो जैसा नहीं हूँ कि पैसा तो मौत पर साथ छोड़ जाए और रिश्तेदार क़ब्र तक जाएं और वापस आ जाएं। नहीं मैं ऐसा नहीं हूँ ﴿اخالك مثلي عند كرب الزلازل﴾ जब तेरी मौत के ज़लज़ले शुरू होंगे तो मैं उन ज़लज़लों को कम करने में तेरी मदद करूंगा, जब तू क़ब्र में आएगा तो तेरा इस्तिक़बाल करूँगा हाँ और जब मुन्कर नकीर आएंगे तो मैं बीच में आड़े आ जाऊँगा और तेरी तरफ़ से तेरा दिफ़ा करूंगा, मुन्कर नकीर को तेरे क़रीब नहीं आने दूँगा जो

ज़मीन को चीरते हुए आते हैं और उनकी आँखों से शरारे निकलते हैं, हाथों में गुंज़ होता है जिसे सारी दुनिया मिलकर नहीं उठा सकती। तब मैं तेरा साथी बनूँगा ﴿اجادل عنك القول رجع السجادل﴾ मैं झगड़ा करके तेरी तरफ़ से जवाब दूँगा।

हदीस में आता है कि जब हाफ़िज़ क़ुरआन को क़ब्र में रखा जाता है जो अमल वाला हो हाफ़िज़ क़ुरआन तो जब मन्कर नकीर आते हैं तो एकदम ख़ूबसूरत जवान नमूदार होता है मुन्कर नकीर और उस हाफ़िज़ के बीच में हाएल हो जाता है और उनको आगे बढ़ने नहीं देता तो ये हैरान होता है कि भाई यह कौन हैं? तो कहता है घबराओ मत मैं तेरा क़ुरआन हूँ जो तेरे सीने में महफ़ूज़ था। हाँ डाक्टर की डिग्री ख़त्म, इन्जीनियर की डिग्री ख़त्म, ताजिर ख़त्म। हाफ़िज़ जी यहाँ भी काम दे रहे हैं। अब मैं तेरा साथी हूँ वह मुन्कर-नकीर कहते हैं तुम्हें किसने भेजा है हमें इससे सवाल करने दो।

वह कहता है जिसने तुम्हें भेजा है उसी ने मुझे भेजा है। मैं वह क़ुरआन हूँ जिसे यह कभी रात को पढ़ता था कभी दिन को पढ़ता। मैं इसकी तरफ़ से जवाब दूँगा।

जब आप ने शे'र ख़त्म किए तो आपकी दाढ़ी मुबारक आँसुओं से तर हो चुकी थी और सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की चीख़ें निकल रही थीं और सब रो रोकर बुरे हाल में थे। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत तशरीफ़ लाए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं—

﴿عش ما شئت فانك ميت﴾ ऐ मेरे नबी जितनी ज़िन्दगी चाहे ले

लीजिए मगर मौत आप पर भी आएगी, ﴿واحبب من شئت فانك مفارقه﴾ और आप जिस चीज़ से मुहब्बत करते हैं, जिससे भी मुहब्बत कर लीजिए यक़ीनन एक दिन आपको जुदा होना पड़ेगा, जुदाई यक़ीनी है, दुनिया में विसाल नहीं है दुनिया में फ़िराक़ है।

उमैया बिन ख़लफ़ के ऐतिराज़ पर अल्लाह पाक का जवाब

उमैया बिन ख़लफ़ आया या आस बिन वाइल या वलीद बिन मुग़ीरा आया तीनों क़ौल हैं। हाथ में पुरानी हड्डी थी। उसने आप सल्लल्लाहु अैहि वसल्लम को दिखाई फिर उसे मसला फिर हवा में उड़ा दिया कहने लगा ﴿اتزعم ان ربك يحى هذه وهى رميم.﴾ क्या कहता है ऐ मुहम्मद तेरा रब इसे भी ज़िन्दा करेगा हाँलाकि यह बिखर गई। अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को उतारा,

وضرب لنا مثلا ونسى خلقه قال من يحى العظام وهى رميم
قل يحييها الذى انشاها اول مرة وهو بكل خلق عليم.

मेरे हाथ से पैदा हुआ, मुझे मिसालें देता है और कहता है इस हड्डी को कौन ज़िन्दा करेगा? ऐ मेरे नबी इसे कहो तू वह वक़्त याद कर जब तो कुछ भी नहीं था,

﴿هل اتى على الانسان حين من الدهر لم يكن شيئا مذكورا﴾

वह दिन याद कर जब तू कुछ भी नहीं था और मैंने तुम्हें अदम से वजूद बख़्शा। ﴿من نطفة﴾ एक नुत्फ़े से ﴿من ماء مهين﴾ नापाक पानी से ﴿من نطفة امشاج﴾ मर्द व औरत के पानी से ﴿من سلالة من طين﴾ खनकती हुई मिट्टी से। जब मैंने तुम्हें अदम से

वजूद दिया तो मैं तेरे ज़र्रात को भी जमा कर सकता हूँ और तुझे जमा कर दूँगा और खड़ा करूंगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सुन ले ऐ आस अल्लाह इस हड्डी को भी जमा करेगा और उसे भी ज़िन्दा करेगा और तुझे भी ज़िन्दा करेगा और तुझे जहन्नम का अज़ाब चखाएगा।

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का विसाल

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का जब इन्तिकाल होने लगा तो आप बीमार थीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु किसी काम से बाहर गए हुए थे। अपनी ख़ादिमा को बुलाकर फ़रमाया मेरे लिए पानी तैयार कर, पानी तैयार किया फ़रमाया मुझे गुस्ल करवा। गुस्ल करवाया फिर उसके बाद कपड़े पहने। फिर फ़रमाया मेरी चारपाई दर्मियान में कर दे। उन्होंने चारपाई को बीच में कर दिया, फिर लेट गयीं और क़िबले की तरफ़ मुँह कर लिया फिर फ़रमाया अब मैं मर रही हूँ, मेरा गुस्ल हो चुका है। ख़बरदार! मेरे जिस्म को कोई न देखे बस यही मेरा गुस्ल है और यह कहकर इन्तिकाल फ़रमा गयीं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दर्द भरे शे'र

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो देखा कहानी ख़त्म हो चुकी है। चौबीस साल की उम्र में इन्तिक़ाल फ़रमाया तो उनकी ख़ादिमा ने किस्सा सुनाया तो फ़रमाया अल्लाह की क़सम! ऐसी ही होगा जैसा फ़ातिमा कह गयीं। जब क़ब्र में दफ़न कर दिया।

लोग भी खड़े हुए हैं। अब एक मंज़र क़ाएम किया। आवाज़ दी फ़ातिमा दो तीन मर्तबा आवाज़ दी कोई जवाब नहीं आया फिर शे'र पढ़े (जिनका तर्जुमा यह है)।

यह फ़ातिमा को क्या हुआ? यह तो मेरी एक पुकार पर तड़पकर उठ जाती थी। आज मेरी आवाज़ सदा-ए-बाज़गश्त बन चुकी है ओर जवाब नहीं आ रहा। यह जवाब क्यों नहीं आ रहा है। अरे महबूब! क़ब्र में जाते ही सारी मुहब्बतें भूल गए। हाँ कोई कब तक साथ रहता है, आख़िर साथ टूट ही जाते हैं। मैंने इन्हीं हाथों से अपने महबूब नबी को दफ़न किया, आज इन्हीं हाथों से फ़ातिमा को गुम कर दिया, मिट्टी में खो दिया, मुझ पर यह बात खुल गई कि यहाँ किसी की दोस्ती सलामत नहीं रह सकती और एक दिन मुझ पर भी यह रात आने वाली है जिस दिन मेरा भी जनाज़ा उठाया जाएगा तो रोने वालों का रोना मेरे किस काम का?

हमें क्या जो तुर्बत पे मेले लगेंगे

तहे ख़ाक हम तो अकेले रहेंगे

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तशरीफ़ ले जा रहे थे। तो एक क़ब्र देखी फ़रमाया यह नूह अलैहिस्सलाम के बेटे साम की क़ब्र है। जब तूफ़ान आया सारे मर गए। तीन बेटों से नस्ल चली। साम, हाम और याफ़्स। हम सारे साम की औलाद हैं, सारे याफ़्स की औलाद हैं, सारे अफ़्रीका हाम की औलाद हैं तो उन्होंने कहा यह साम की क़ब्र है। तो उन्होंने कहा या नबी अल्लाह इसको ज़िन्दा तो करें क्योंकि उनके कहने से अल्लाह ज़िन्दा फ़रमा देते थे।

उन्हें हुक्म दिया वह ज़िन्दा होकर क़ब्र से बाहर आ गए। कोई बातचीत फ़रमाई। कहा वापस चला जा कि इस शर्त पर दोबारा वापस जाता हूँ कि दोबारा मौत की तकलीफ़ न हो कि मौत का

दर्द आज भी मेरी हड्डियों में मौजूद है। इसलिए कोई पेन किलर (दर्द मिटाने वाली गोली) नहीं है। सिवाए तक़्वे व तवक्कुल के, सिवाए अल्लाह पाक की बन्दगी के। कितना बड़ा हादसा है जो हर मर्द व औरत पर आने वाला है और कितनी बड़ी ग़फ़लत है कि सबसे बड़े हादसे को हमने कभी तज़्किरा नहीं किया कि मौत के लिए क्या किया जाए, क़ब्र के लिए क्या किया जाए।

इस छोटे से घर को सजाने के लिए सारा दिन मंसूबे बनाते हैं जहाँ रहना है और वहीं से उठना है उसको भी तो सजाने के लिए कुछ सोचा जाता कि वह घर भी हमारा है और वह दिन भी आने वाला है, ﴿بيت الوحشة، بيت الغربة، بيت الوحدة، بيت الدود﴾ जो ख़ुद कहती है क़ब्र कि मैं कीड़ों का घर, मैं वहशत का घर, मैं तन्हाई का घर, मैं ज़ुलमत का घर। जब वह मारने पर आता है तो बन्द कमरों में मौत आकर ले जाती है। ख़्वाब गाहों से मौत उठाकर ले जाती है और हिफ़ाज़ती पहरों में मौत उचक लेती है। कभी मौत का भी किसी ने रास्ता रोका है।

हज्जाज बिन यूसफ़ ने कहा सईद बिन जुबैर रह० से अभी तेरा सिर उड़ाने लगा हूँ कहने लगे तुझे अगर मौत का मालिक समझता तो तुझे ही माबूद बना लेता। मेरा फ़ैसला करके फ़ारिग़ हो चुका है कि मुझे कब मरना है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बस्ती पर गुज़र

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बस्ती से गुज़र हुआ। देखा तो सब बर्बाद हुए पड़े थे। आपने फ़रमाया कि उन पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा है

﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب ان ربك لبا لمرصاد﴾

तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा है।

मेरे भाईयो! आज के कुफ़्र पर अल्लाह तआला के अज़ाब का कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा है कि आज खरा इस्लाम दुनिया में कोई नहीं है। आज खरे कलिमे वाला कोई नहीं है। जिस ज़माने में जिस वक़्त में, माज़ी में, मुस्तक़बिल में, हाल में जब भी ये कलिमे वाले हक़ीक़त वाला कलिमा सीख लेंगे तो अल्लाह अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसाएगा, चाहे वह ऐटम की ताक़त हो, चाहे तलवार की ताक़त हो, चाहे हुकूमत की ताक़त हो, अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसेगा अगर कलिमे वाले वजूद में आएंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे यह सब अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से हलाक हुए हैं और आपको पता है कि ईसा अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर मुर्दे ज़िन्दा होते थे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का मुर्दों से सवाल व जवाब

आपने आवाज़ लगाई ﴿يا اهل القرية﴾ ऐ बस्ती वालो। जवाब आया ﴿لبيك وماذا سبب هلاككم﴾ तुम्हारा गुनाह क्या था और तुम्हें कि सबब से हलाक किया गया? आवाज़ आई ﴿حب الدنيا وصحبة تواغيب﴾ हमारे दो काम थे जिसकी वजह से हम हलाक हुए एक तो दुनिया से मुहब्बत थी एक तवाग़ीब के साथ मुहब्बत थी। हज़रत ईसा अलैहिसल्लाम ने फ़रमाया तवाग़ीब की मुहब्बत से

क्या मतलब है? आवाज़ आई बुरे लोगों का साथ देते थे, बुरों की सोहबत में बैठते थे। पूछा दुनिया की मुहब्बत से क्या मतलब है? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी ﴿كلام لولدها﴾ जैसे माँ अपने बच्चे से मुहब्बत करती है। जब दुनिया आती थी तो खुश होते थे, जब दुनिया हाथ से निकल जाती थी तो हम ग़मगीन हो जाते थे। हलाल हराम का ख़्याल किए बग़ैर दुनिया कमाते थे और जाएज़ व नाजाएज़ की परवाह किए बग़ैर दुनिया में ख़र्च करते थे। कमाई में हलाल हराम को नहीं देखते थे और ख़र्च करने में भी जाएज़ व नाजाएज़ को नहीं देखते थे। इस पर हमारी पकड़ हो हुई।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया फिर तुम्हारे साथ क्या हुआ? आवाज़ आई,

﴿بتنا بالعافية واصبحنا فى الهاويه﴾

रात को अपने घरों में सोए लेकिन जब सुबह हुई तो हम सब हाविया में पहुँच चुके थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ﴿وما هاويه﴾ यह हाविया क्या है? आवाज़ आई ﴿سجين﴾ यह सिज्जीन है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ﴿وما سجين﴾ यह सिज्जीन क्या है? आवाज़ आई,

﴿كل جمرة منها مثل اطباق الدنيا كلها ودفنت ارواحنا فيها.﴾

ऐ अल्लाह के नबी सिज्जीन वह कैदख़ाना हैं जिसका एक एक अंगारा सातों ज़मीनों के बराबर बड़ा है और हमारी रूहों को उसमें दफ़न कर दिया गया है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम ही एक बोल रहे हो दूसरे क्यों नहीं बोलते? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी!

तमाम लोगों को आग की लगामें चढ़ी हुई हैं। वे नहीं बोल सकते। मेरे मुँह में लगाम नहीं है मैं इसलिए बोल रहा हूँ। फ़रमाया तू क्यों बचा हुआ है?

कहने लगा मैं हाविया के किनारे पर बैठा हुआ हूँ और मेरे मुँह पर लगाम नहीं लगी हुई है। वजह इसकी यह कि मैं उनके साथ तो रहता था लेकिन उन जैसे काम नहीं करता था। उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया। अब मैं किनारे पर बैठा हुआ हूँ लेकिन लगाम नहीं चढ़ी हुई है। पता नहीं नीचे गिरता हूँ या अल्लाह अपने करम से मुझे बचाता है। मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

क्या मौत को भूल गए, जहन्न को भूल गए?

अल्लाह के वास्ते मेरी फ़रियाद सुनो कहाँ जा रहे हो? क्या कर रहे हो? इधर मंज़िल नहीं है। यह रास्ता ख़ौफ़नाक सहरा की तरफ़ जाता है। ख़ौफ़नाक ग़ारों की तरफ़ जाता है। भाईयो! अपने आपको अन्धों के हवाले मत करो, अपने आपको आँख वालों के हवाले करो जो ज़मीन पर बैठकर अर्श की तहरीर पढ़ता है, जन्नत को देखता है। उसका दर्द देखो, उसका रोना देखो।

महमूद ग़ज़नवी रह०, "वीरान खंडरों से इबरत पकड़ो"

महमूद ग़ज़नवी रह० दुनिया के नम्बर दो फ़ातेह हैं। फ़ातेह अव्वल चंगेज़ ख़ान है जिसने सबसे ज़्यादा दुनिया को जीता उसके बाद महमूद गज़नवी है जिसने दुनिया में सबसे ज्यादा फ़तूहात

कीं। उसके बाद तैमूर है। महमूद ग़ज़नवी ने बड़ा आलीशान महल बनाया। इस शहर का ताजिर कुछ करोड़, चन्द अरब के दायरे में ही घूम रहा होगा। वह महमूद ग़ज़नवी है जिसके सामने दुनिया के ख़ज़ाने सिमट चुके हैं। महल बनाया बड़ा ख़ूबसूरत, बड़ा आलीशान। अभी शहज़ादा था, बाप ज़िन्दा था तो बाप को कहा अब्बा जान मैंने घर बनाया है। ज़रा आप मुआइना फ़रमाएं। उसका वालिद सुबकतगीन बहुत नेक सिपाही था। अल्लाह ने बादशाह बना दिया। अवक़ात याद थी आया महल में हसीन, हुस्न व जमाल नक़्श नगार का नमूना लेकिन एक बोल नहीं कहा कि क्या ख़ूबसूरत है, कैसे आलीशान है। महमूद ग़ज़नवी दिल ही दिल में बड़े ग़ुस्से में था, मेरा बाप कैसा बेज़ौक़ है एक बोल से भी तारीफ़ नहीं की कि हाँ भाई बड़ा अच्छा है। ख़ामोश जब बाहर निकलने लगे तो अपने ख़ंजर को निकाला, दीवार पर ऐसे ज़ोर से मारा कि दीवार पर नक़्श व नगार थे वे सारे टूट गए। कहने लगे बेटे तूने ऐसी चीज़ पर मेहनत की है जो एक ख़ंजर की नोक बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुझे मिट्टी और गारे के ख़ूबसूरत बनाने के लिए अल्लाह नहीं पैदा किया। इस दिल को बनाने के लिए अल्लाह ने पैदा किया है।

सोने चाँदी के महल में रहने वालों को भी मौत का प्याला पीना पड़ा

चंगेज़ ख़ान ने सारी दुनिया को फ़तेह किया। दुनिया का सबसे बड़ा फ़ातेह है चंगेज़ ख़ान, दूसरे नम्बर पर महमूद ग़ज़नवी, तीसरे नम्बर पर तैमूर लंग, चौथे नम्बर पर सिकन्दर यूनानी। सारी

दुनिया फ़तेह कर ली और सत्तर बरस ख़बीस को गुज़र गए लड़ाइयाँ लड़ते लड़ते तो अब उसको ख़्याल आया कि उम्र तो गुज़ारी लड़ाई लड़ते लड़ते जब हुकूमत का दौर आया तो ज़िन्दगी की डोल लिपट चुकी थी तो सारी दुनिया के हकीमों को बुलाया, सारी दुनिया के डाक्टरों को जमा किए, मुझे बताओ मेरी ज़िन्दगी कैसे बढ़ जाए। हुकूमत तो मैंने अब करनी है। मुझे बताओ मेरी ज़िन्दगी बढ़ जाए।

उन्होंने ने कहा ख़ाक़ाने आज़म ज़िन्दगी को हम एक पल के लिए नहीं बढ़ा सकते जो है वह सेहत के साथ गुज़र जाए इसके असबाब बता सकते हैं। चौहत्तर साल की उम्र में मर गया सिर्फ़ चार साल उस लाअनती को अल्लाह ने मोहलत दी। खोपड़ियों का ढेर लगा दिए, लाखों इन्सानों को तलवार से काट दिया और खुद चार बरस भी हुकूमत नसीब नहीं हुई तो कोई चाहता है ऐसे घर में मैं मर जाऊँ। झोपड़ी वाला भी नहीं चाहता मैं मर जाऊँ तो यहाँ रहने वाला कैसे चाहेगा कि मर जाऊँ लेकिन,

كل نفس ذائقة الموت، ايم ما تكونوا
يكدركم الموت ولو كنتم فى بروج مشيدة.

भागो कहाँ तक भागोगे। यक़ीनन तुम्हें मौत का सामना करना पड़ेगा। यह कितना बड़ा हादसा है कि एक हँसती खेलती ज़िन्दगी एक दम मिट्टी के ढेर में तब्दील हो जाती है और फिर ज़मीन के नीचे रेज़ा रेज़ा हो जाती है, हड्डियाँ बिखर जाती हैं। ऐसे ख़ूबसूरत चेहरे जिन्हें कीड़े खा जाते हैं, वह आँखें जिन्हें चश्मे आहू से ताबीर किया जाता था वह कीड़ों की गिज़ा बन चुकी होती है और वह जिस्म जो हज़ारों लाखों क़ीमती कपड़ों से सजाया जाता था आज उससे ऐसी बदबू फैल रही है कि क़ब्र में थोड़ा सा

सुराख़ कर दिया जाए तो सारे क़ब्रिस्तान में बदबू फैल जाती है।

बारह मुल्कों का बादशाह मगर मौत ने उसे भी नहीं छोड़ा

वासिक़बिल्लाह ऐसा जाबिर बादशाह था कि उसकी आँखों में आँखें डालकर कोई बात नहीं कर सकता था। ऐसा क़हर बरसता था उसकी आँखों से। और मौत ने झटका दिया। सकरात का झटका लगा तो एकदम हाथ आसमान को उठे,

﴿يا من لا يزال ملكه ارحم من زال ملكه﴾

ऐ वह ज़ात! जिसके मुल्क को ज़वाल नहीं, उस पर रहम खा जिसका मुल्क ज़ाएल हो गया। और हाँ जिन आँखों में कोई आँखें डालकर नहीं देख सकता था। मरने के बाद जो उन्होंने सिर पर चादर डाल दी थी तो थोड़ी देर बाद उसकी हरकत महसूस हुई। चादर के नीचे चेहरे के मक़ाम पर। यह क्या? कैसी हरकत? चादर उठाकर देखा तो एक मोटा सा चूहा उसकी दोनों आँखें खा चुका था। अब्बासी महल में चूहे आ जाएं। जिसके महल में अड़तिस हज़ार पर्दे लटके हुए थे। जिनमें सोने का पानी चढ़ा हुआ था और हीरे वहाँ ऐसे लटकाए जाते थे जैसे अंगूर के गुच्छे लटकाए जाते थे। वहाँ तो च्यूँटी का गुज़र भी मुश्किल से होता था। यह चूहा कहाँ से आ गया और उसकी ख़्वाबगाह में यह कहाँ से आया है? यह अल्लाह का भेजा हुआ है जो यह बताने आया है कि जिन आँखों से यह क़हर बरसाता था तुम सब यह देख लो कि सबसे पहले इन्हीं आँखों को चूहे के सुपुर्द कर दिया और आगे

जो क़ब्र में होने वाला है वह अगली कहानी है, इसके अलावा है कि आगे इसके साथ क्या होने वाला है।

दिलों की सख़्ता कब दूर होगी?

कोई नहीं जाना चाहता, एक दम, एक दम इधर से मौत शिकार करती है, इधर से उठाकर ले जाती है उधर से उठाकर ले जाती है। अब तो हमारा जी लग चुका है। अब हम जाना नहीं चाहते। पहले हम आना नहीं चाहते थे। चाहते क्या? पहले हम थे ही नहीं। हम आए, अब हम जाना नहीं चाहते और फिर दाएं बाएं चारों तरफ़ से है,

﴿تروعنی الجنائز کل یوم ویحزننی بکاھن احاطی﴾

चारों तरफ़ से रोने वालियों की आवाज़ें, वे दिल को हिलाती हैं। कभी रुलाया करती थीं अब तो घर में मौत हो तो किसी का दिल नहीं हिलता, ऐसे पत्थर हो गए। क़ब्रिस्तान में टेलीफ़ोन पर सौदे कर रहे होते हैं क़ब्रिस्तान में। क़ब्रिस्तान के अन्दर टेलीफ़ोन पर सौदे कर रहे हैं। ऐसी दिलों पर आ गई सख़्ती और साथी को दफ़न होता हुआ देखकर भी मौत याद नहीं।

जितनी अय्याशी कर लो मगर मौत ज़रूर आएगी,

सुलमान बिन अब्दुल मलिक बड़ा ख़ूबसूरत था। वह एक वक़्त में चार निकाह करता था। चार दिन के बाद चारों को तलाक़ देकर चार और करता था। फिर उनको तलाक़ देकर चार और करता था। बाँदिया अलग थीं लेकिन पैंतिस साल की उम्र में मर

गया। चालीस साल भी पूरे नहीं किए। दुनिया में कितनी अय्याशी की इसके मुक़ाबले में उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हैं इक्तालिस साल उनके भी पूर नहीं हुए लेकिन उसने अल्लाह को राज़ी करना शुरू कर दिया। अब देखिए कि जब सुलेमान को क़ब्र में रखने लगे तो उसका जिस्म हिलने लगा तो उसके बेटे अय्यूब ने कहा मेरा बाप ज़िन्दा है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने कहा ﴾عجل الله بالعقوب﴿ बेटा तेरा बाप ज़िन्दा नहीं है, अज़ाब जल्दी शुरू हो गया है। जल्दी दफ़न करो हाँलाकि ज़ाहिरी तौर सुलेमान बिन अब्दुलमलिक बनू उमैय्या के ख़ूबसूरत शहज़ादों में से था। अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उसको क़ब्र में उतारा और चेहरे से कपड़े को हटाकर देखा तो चेहरा क़िबले से हटकर दूसरी तरफ़ पड़ा था और रंग स्याह हो गया था।

क़ब्र के कोड़ों ने जो छोड़ा तो क़ब्र की गर्मी ने हड्डियों को भी गला दिया, उसकी राख बना दी। वह ख़ूबसूरत चेहरा वह हसीन आँखें, एक हदीस में आता है मेरे बन्दे दुनिया को हवस की नज़र से मत देख सबसे पहले क़ब्र में कीड़ा जिस चीज़ को खाता है वह तेरी आँख है। आँख झुका ले, नज़र को अपनी आँख को बेहया न बना। ये आँखें इसलिए नहीं हैं कि तू औरों की बेटियों और बीवियों को देखे और नादानों के बनाए हुए महल देखकर कुछ साँस, कुछ घंटे, कुछ हफ़्तों के लिए करोड़ों के घर बनाकर बैठा हुआ है, करोड़ों के बंगले बनाकर बैठा हुआ है। इनसे बड़ा नादान भी कोई है जो गिरती हुई शाख़ पर आशियाना बनाए, जो टूटी हुई दीवारों पर घर की बुनियाद रखे। ﴾على سرف حار﴿ जो गिरती हुई दीवार से टेक लगाने की कोशिश करे जो ऐसे जहाँ से दिल लगाने की कोशिश करे जो मछर का पर और धोके का घर

और मिट्टी वाला घर है, मकड़ी का जाला है और जिसके पल का भी भरोसा न हो। इसी दुनिया ने हर एक से बग़ावत की, यह ग़द्दार दुनिया, यह बे वफ़ा दुनिया न मेरे बाप के पास रही न मेरे पास रहेगी। आज हम उस टूट जाने वाले घर पर सब कुछ लगाकर बैठे हुए हैं। जब जनाज़ा क़ब्र में डलेगा, कीड़े खाएंगे, क़ब्र की तपिश उसके गोश्त को गलाएगी, उसकी हड्डियों को चूरा करेगी फिर एक दिन आएगा ज़मीन अंगड़ाई लेगी नीचे का ऊपर और ऊपर का नीचे और ऊपर से ज़ालिम हवा आएगी। इस शहज़ादे की हड्डियों की राख को उड़ाकर गुम कर देगी जैसे यह पहले कुछ न था। आज फिर कुछ न रहा।

यह मेरा यह तेरा यह कर लिया, यह कर रहा हूँ मेरे भाईयो यह सारी ज़िन्दगी की मेहनत जब मौत से ज़रब खाएगी तो नतीजा सिफ़र हो जाएगा तो उसकी तैयारी करो जिधर हर लम्हे हमारा सफ़र जारी है। ﴾من مات فقد قامت قيامة﴿ जो मरता है उसकी क़यामत तो आ जाती है। एक क़यामत तो सारी काएनात की भी है। अल्लाह तआला एतदाल से चलने की दावत देता है। हमारा मज़हब रहबानियत नहीं सिखाता कि दुनिया को छोड़कर बैठ जाओ।

बद आमाल आदमी और अज़ाबे क़ब्र

मेरे अपने क़रीबी गाँव का वाक़िआ है। वहाँ एक ज़मींदार मर गया। उसके लिए क़ब्र खोदी गई तो क़ब्र काले बिच्छुओं से भर गई। उसे बन्द करके दूसरी क़ब्र खोदी गई, लहद बनाई गई तो वहाँ पर भी काले बिच्छुओं से क़ब्र भर गई। तीन क़ब्रें बनीं तो

तीनों क़ब्रों का यही हाल हुआ। यह ज़मीन के बिछ्छू नहीं हैं बल्कि यह उसकी बदआमालियों के बिछ्छू हैं। यह अल्लाह तआला कभी कभी पर्दा उठाकर दिखलाता है। इस तरह हम सब से अल्लाह कहता है कि ज़रा संभल के चल। सबसे बड़ा मोहसिन दुनिया का इस वक़्त कौन है जो इनको दोज़ख़ से बचा ले। वह मोहसिन नहीं है कि रोटी पर लड़ा दे, ज़मीन पर लड़ा दे, कपड़े पर लड़ा दे। मोहसिन वह है जो दुनिया वालों को दोज़ख़ से बचा ले। तलबीग़ दुनिया को जहन्नम से बचाने की मेहनत का नाम है। यह हमारे नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं, ख़त्मे नुबुव्वत का अक़ीदा दिल में पकड़ा तो साथ ही तबलीग़ ज़िम्मे हो गई अगर हमारे ज़िम्मे नहीं मुसलमान के ज़िम्मे नहीं तो फिर आप बता दो किसके ज़िम्मे है?

रुस्तम-ए-हिन्द की क़ब्र

मैं मियानी शरीफ़ कब्रिस्तान गया था एक साथी की क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ने के लिए। एक क़ब्र ने मुझे रोक लिया। ऐसी शिकस्ता और ऐसे बुरे हाल में मैंने कहा शायद इसको सबने ही भुला दिया, कोई यहाँ आता ही नहीं हाँलाकि मेरा उससे क्या वास्ता लेकिन ईमानी रिश्ता है जो हर मुसलमान का एक दूसरे से है तो मेरे क़दम रुक गए और मैं क़ब्र को देखने लगा कि या अल्लाह इस तरह भी इन्सान मिट जाते हैं फिर मैंने क़रीब होकर उसके कुतबे को पढ़ा तो लिखा हुआ था "रुस्तमे हिन्द" मेरे आँसू निकल पड़े कि यह रुस्तमे हिन्द की क़ब्र है तारीख़ पैदाईश सन् 1844–1908 ई० तारीख़ वफ़ात लिखी हुई थी। मुझे अपने साथी

की फ़ातिहा भूल गई और मैंने उस क़ब्र पर फ़ातिहा शुरू कर दी कि इसकी क़ब्र पर कोई आता ही नहीं होगा। यह बेचारा किस हाल में पड़ा होगा।

यह बेवफ़ाई कब तक करते रहोगे शराब का नशा भी एक दिन ख़त्म हो जाता है

मेरे भाईयो और बहनो! हम कब तक अपने जिस्म व जान के साथ वफ़ा करेंगे? तो अल्लाह तआला से वफ़ा कर लें। वफ़ा करना इन्सान की आदत है, बेवफ़ाई करना भी इन्सान की आदत है। इन्सान बे वफ़ा भी है और वफ़ादार भी है अगर अल्लाह तआला से वफ़ा हो जाए तो नफ़्स व शैतान बे वफ़ा बन जाएंगे फिर मज़े ही मज़े होंगे और अगर अल्लाह के बे वफ़ा हो गए तो फिर नफ़्स व शैतान के वफ़ादार बनेंगे फिर मुसीबत ही मुसीबत है। आज हर घर बिजली के क़ुमक़ुमों से रौशन है लेकिन दिल काली रात से ज़्यादा तारीक है। बनावटी क़हक़हे गूँजते हैं मगर दिल उनके ख़ून के आँसू रोते हैं चेहरे उनके चमकते हैं पर उनके अन्दर वीरानी है। लिबास उनके क़ीमती हैं पर अन्दर उनके ख़ाक आलूदगी हैं। कोई अन्दरर उतरकर नहीं देख सकता।

जिस ज़िन्दगी को मौत खा जाए वह भी कोई ज़िन्दगी है

आज की दुनिया और आज की इन्सानियत कितनी दुखी

इन्सानियत है क्योंकि अल्लाह के बेवफ़ा हो गए तो अल्लाह क्या कह रहा है?

अरे मिट जाने वाले की भी कोई सलतनत होती है, डूब जाने वाला भी कोई उगता है, जिस ज़िन्दगी को मौत खा जाए वह भी कोई ज़िन्दगी है, जिस जवानी को बुढ़ापा खा ले वह भी कोई जवानी है? जिन ख़ुशियों को ग़म निगल जाएं वह भी कोई ख़ुशियाँ हैं? जिस माल पर फ़क़्र का डर हो वह कोई माल है? जिस सेहत के पीछे बीमारियाँ हों वह भी कोई सेहत है? जिस मुहब्बत के पीछे नफ़रतें हों वह भी कोई मुहब्बत है? और जिन घरों ने उजड़ना है, जहाँ मिट्टी के ढेर बन जाने हों, जहाँ मकड़ियों के जाले तन जाने हों,

﴿وكل بيت وان قالت سلامتها يوم ستدركه النكباء والحرب﴾

बड़े बड़े महल ज़रा जाकर देखो तो सही! आज वहाँ मकड़ियों के जाले हैं, मेंढकों का घर है, चूहों का घर है, मकड़ियों का राज है और इस पर राज करने वालों को आज कीड़े खा गए और उनके कीड़ों को अगले कीड़े खा गए और वे कीड़े भी मरकर मिट्टी हो गए और उनकी क़ब्रें भी उखेड़ दी गयीं। दुनिया का फ़ातेह आज़म चंगेज़ ख़ान है कोई उसकी क़ब्र तो बता दे। दुनिया हमारी मेहनत का मैदान नहीं हम तो अल्लाह का गीत गाते हैं।

गोदू पहलवान की कहानी

यह था न गोदू पहलवान मरहूम। यह राइविन्ड आया मैं राइविन्ड में पढ़ता था। यह वह आदमी था जिसने सारे आलम को

चैलेंज किया और कोई उसको गिरा न सका तो मैंने जब उसको देखा तो यह न खड़ा हो सकता था न बैठ सकता था। उसे सहारे से उठाया गया, सहारे से बिठाया गया। तो यह काएनात ने अखाड़े में ऐलान किया जिसे कोई हरा न सका उसे वक़्त के बेरहम पहिए ने, रात व दिन के चक्कर ने ऐसा चित किया कि उठने के क़ाबिल नहीं रहा। यहाँ मौत का नाच जारी है, यहाँ हर क़दम पर ज़िन्दगी हार रही है और लगातार हार खा रही है। हर क़दम पर मौत जीत रही है,

فلو لا اذا بلغت الحلقوم وانتم حينئذ تنظرون ونحن اقرب اليه منكم ولكن لا تبصرون فلولا ان كنتم غير مدينين. ترجعونها ان كنتم صدقين.

जब मौत पंजे गाड़ती है। वह सिकन्दर था या चंगेज़ ख़ान था वह दारा था या हलाकू था, तैमूर था या महमूद था, वह ज़ुलक़रनैन था या दानियाल था सब इसको हाथों हारें है, ख़ाक में ख़ाक हो गए।

डिप्टी कमिश्नर की मौत

मुस्तफ़ा ज़ैदी एक डिप्टी कमिश्नर मर गया तो उसका पोस्ट मार्टम किया गया। मैं उस वक़्त लाहौर में पढ़ता था। उस वक़्त की बात है तो अख़बार वालों ने लिखा वह मुस्तफ़ा ज़ैदी जो जहाँ से गुज़रता था तो ख़ुशबुओं के हाले साथ लेकर गुज़रता था आज जब उसकी क़ब्र को खोला गया तो सारे क़ब्रिस्तान में उसके जिस्म की बदबू से खड़ा होना मुश्किल हो रहा था। जिस इन्सान का अंजाम ऐसा होने वाला हो कुछ तो सोचना चाहिए न। हमारे

दिन व रात के मसाइल हैं बच्चों की पढ़ाई, घर की रोटी सालन, कपड़े ज़ेवर और मौत तक उनकी ज़रूरियात। सारी ताक़त इस पर लग रही है। हाँ ये तो बड़े आसान मस्अले हैं माँ-बाप साथी हैं, मियाँ-बीवी साथी हैं और औलाद माँ-बाप की साथी है, माँ-बाप औलाद के साथी हैं, बीवी शौहर का साथ दे रही है, शौहर बीवी का साथ दे रहा है लेकिन उस वक़्त जब मेरी औलाद मुझे बचा नहीं सकती, डाक्टर खड़े हुए हैं और कह रहे हैं कि अब तो अल्लाह ही करेगा और साँस उखड़ रहे हैं और जान निकल रही है और जो नज़र आता है वह ग़ायब हो गया और जो ग़ायब है नज़र आ गया। फ़रिश्ते नज़र आने लगे और घर बार ग़ायब होने लगे। यह वक़्त है जब मुझे ज़रूरत है कि कोई मेरी मदद करे। यहाँ जो चीज़ काम देगी वह असल वफ़ा की चीज़ है। उठते जनाज़े देखो जो पुकार पुकारकर कहते हैं कि यह दुनिया आबाद होने के लिए नहीं, बर्बाद होने के लिए है, हँसने का मक़ाम नहीं रोने का मक़ाम है, यह टूट जाने का घर है, यह मिट जाने का घर है, लुट जाने वाली दौलत है, मिट जाने वाले सरमाया हैं। इससे जिसने जी लगाया और जिसने इसके पीछे अपनी आख़िरत को ठुकरा दिया वह बाज़ी हार गया, हार गया बाज़ी। आज किसी पर रोने वाला कोई नहीं रहा, आज किसी को दफ़न करने वाला कोई नहीं रहा, आज किसी को कफ़न पहनाने वाला कोई न रहा, आज मरने वालों पर मातम करने वाला कोई न रहा, आज जायदादों के छिन जाने पर कोई केस करने वाला नहीं, आज दरबार मौजूद हैं दरबारी कोई नहीं, तख़्त मौजूद हैं तख़्त नशीन कोई नहीं, कासा गदाई मौजूद हैं गदागर कोई नहीं है।

क्या क़ब्र का अंधेरा भूल गए

तो क्या होगा उस दिन जिन बच्चों की ख़ातिर या जिस नफ़्स की ख़ातिर अल्लाह से बग़ावत की कि उठा नहीं जाता, आया नहीं जाता, गर्मी बड़ी है सर्दी बड़ी है, अंधेरा बहुत है, क्या क़ब्र के अंधेरे याद नहीं हैं? क्या क़ब्र की गर्मी याद नहीं है? क्या जहन्नम की आग भूल गए? क्या जहन्नम के अज़ाब भूल गए? क्या जन्नत की नेमतें भूल गए? वह अल्लाह का कलाम भूल गए? वह अल्लाह का दीदार भूल गए? वह अल्लाह से मुलाक़ात भूल गए? वह महबूबे ख़ुदा की महफ़िल भूल गए? यह कैसा इस्लाम है? यह कैसे पत्थर दिल हैं जो कमाने में तो ऐस मस्त हुए कि होश नहीं और जब अल्लाह बुलाए तो ऐसे ग़ाफ़िल हो जाएं न बूढ़े और जवान को होश है न किसी औरत को होश आए न किसी मर्द को होश आए न बाज़ार बंद हों।

मेरे बन्दो तू मुझे क्यों ग़ुस्सा दिलाता है?

अल्लाह को राज़ी करना अपनी ज़िन्दगी का काम बनाओ। अल्लाह राज़ी हो गया तो सारे काम बन गए, अल्लाह नाराज़ हो गया तो इस जहान में अल्लाह तआला कुछ दिन दे देता है। कुछ वक़्त के लिए मिल जाता है अल्लाह काफ़िर को भी देता है लेकिन मौत के बाद तबाही आने वाली है। जिसको इन्सान बर्दाश्त नहीं कर सकता।

﴿یا ابن آدم لا تتحمل سخطی ولا تطیق عذابی فتعصینی﴾

मेरे बन्दे! मेरी नाफ़रमानी करने से पहले सोच लेना कि तुम में ताक़त नहीं कि तुम्हारा जिस्म आग को बर्दाश्त कर सके। तुम में ताक़त नहीं कि मेरे गुस्से को बर्दाश्त कर सके।

गाने सुनने से पहले सोच लेना इसमें दोज़ख़ का पिघला हुआ सीसा डाला जाएगा। किसी की बेटी पर नज़र उठाने से पहले सोच लेना इसमें आग के कील उतार दिए जाएंगे।

सूद खाने से पहले सोच लेना कि पेट के अन्दर साँप और बिच्छू डाल दिए जाएंगे, पेट के अन्दर साँप चले जाएंगे, अन्दर बिच्छू चले जाएंगे जो सूद खाने वाले को अन्दर से काटेंगे। वह बाहर के काटता है तो चालीस साल तड़पता है और जिसके पेट के अन्दर साँप चला जाएगा, बिच्छू चला जाएगा और उसका पेट होगा जैसे यह पहाड़ है इतना बड़ा पेट होगा। वह साँपों से भरा होगा, वह बिच्छुओं से भरा हुआ होगा। वह उसको काटेंगे और उसको बचाने वाला कोई नहीं होगा।

मैं तुझसे ग़ाफ़िल नहीं हूँ

तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरी नाराज़गी, मेरी नाफ़रमानी करने से पहले सोच लेना कि तुमने आना तो मेरे पास ही है,

﴿ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظلمون﴾

उनसे कह दो कि मैं ग़ाफ़िल नहीं हूँ? किनसे नाफ़रमानों से तो अल्लाह पकड़ता क्यों नहीं? कहा,

﴿انما يوخرهم ليوم تشخص فيه الابصار.﴾

मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूँ जिस दिन आँखें फट जाएंगी। उस दिन तक के लिए मोहलत है।

बंगले बनाने वालों से अल्लाह की नाराज़गी

आज के लोग कमाते कमाते जब बाल सफ़ेद हो जाते हैं तो वह ऊँचे ऊँचे बंगले खड़े करके अपनी सारी दौलत को बर्बाद करके दिखाते हैं और अल्लाह तआला जिसके माल को मरदूद करने का इरादा करता है तो उसके माल से बंगले बनवाता है और उसके माल से बड़े बड़े महल बनवाता है और हदीस में आया है कि अल्लाह जिसके माल को ठुकराता है उसे गारे मिट्टी गारे में लगाकर महल्लात बनवाता है।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने महल्लात नहीं बनवाए, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का घर कोई नहीं था, अली रज़ियल्लाहु अन्हु का घर कोई नहीं था, उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का घर कोई नहीं था, आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का घर कोई नहीं था लेकिन उनकी मेहनत से सारे आलम में ईमान फैल रहा था और सारे आलम में दीन फैल रहा था और सारे आलम में दीन वजूद में आ रहा था और उनका यह जज़्बा बन गया था कि हमें तो बस अल्लाह के नाम पर मरना है और अल्लाह के दीन को दुनिया में ज़िन्दा करना है। हमारा कोई और काम नहीं है। बाप बेटों को कहते थे जाओ बेटा अल्लाह के नाम पर मरो। हम तुम्हारे साथ जन्नत में जाएंगे, माँएं कहती थीं जा बेटा क़ुर्बान हो जा। आज किसी माँ का यह जज़्बा है कि उसका बेटा उसके सामने मरे? हर माँ चाहे कितनी गई गुज़री क्यों न हो वह यह कहती है कि मेरा

जनाज़ा मेरा बेटा उठाए, मेरे सामने मेरा बेटा न मरे लेकिन सहाबा की औरतें वे माँए थीं जिनका जज़्बा यह था कि हमारे बेटे क़ुर्बान हो जाएं।

बुख़ारी में है। सहाबी बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। मैं अपनी माँ के साथ हिजरत करके आया। वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया। अकेला मासूम बच्चा है। बाप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक ग़ज़्वे में चले गए। वहाँ शहीद हो गए। जब लश्कर वापस आया तो फ़रमाते हैं मैं अपने बाप के इस्तिक़बाल के लिए मदीने से बाहर एक चट्टान पर बैठ गया कि यहाँ से लश्कर गुज़रेगा तो बाहर निकलकर अपने बाप का इस्तिक़बाल करूंगा। उसे क्या ख़बर बाप के साथ क्या हो चुका है। जब सारा लश्कर गुज़र गया और बाप क़ो नहीं देखा तो वह तो शहीद हो गए थे।

तो चट्टान से उतरे दौड़ते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने खड़े हो गए। आप भी खड़े हो गए। पूछा या रसूलल्लाह! मेरे बाप ने क्या किया? हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया मैं रोया और सामने आया तो मैंने फिर कहा, या रसूलल्लाह! मेरे बाप का क्या बना? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में पानी भर आया। आप रोने लगे। मैं आपकी टाँगों में लिपटा और रोया और मैंने कहा या रसूलअल्लाह! मेरी न माँ रही न बाप रहा।

यह हक़ूक़ुल इबाद ज़ाय हो गए। आज की हमारी सोच के मुताबिक़। यहाँ से साहिबे शरिअत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु को उठा लिया और सीने से लगा लिया और इर्शाद फ़रमाया,

﴿يا بشير اما ترضى ان يكون عائشه امك وانا ابوك. او كما قال.﴾

बशीर क्या तू इस पर राज़ी है कि अल्लाह का रसूल तेरा बाप बन जाए और आएशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) तेरी माँ बन जाए। तो हज़रत बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे या रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं राज़ी हूँ। मेरी मुराद पूरी हो गई।

जवानी की इबादत

सदियाँ गुज़र गयीं हमने ख़त्मे नुबुव्वत का काम छोड़ दिया। भूल गए और फिर यह भी भूल गए। आज इस उम्मत का आदमी बूढ़ा हो जाए अल्लाह को उसकी अदा पसन्द है, इस उम्मत का आदमी जवान हो इताअत में हो अल्लाह को अदा पसन्द, वह जो ज़वान जो जवानी को पाकदामनी से गुज़ारे, इबादत में गुज़ारे तो अर्श के साए तले हो जाए और बूढ़ा हो जाए दाढ़ी सफ़ेद हो जाए तो अल्लाह उसको अज़ाब देते हुए शर्माते हैं। कैसे अल्लाह ने इस उम्मत के लाड बर्दाश्त किए हैं।

यहया बिन अकसम रह० की क़ाबिले रश्क मौत

यहया बिन अकसम रह० मुहद्दिस हैं। ख़्वाब में मिले पूछा क्या हुआ? कहा अल्लाह ने पूछा ओ बदकार बूढ़े तूने यह क्या किया? तूने यह क्या किया। आगे मैंने कहा ऐ अल्लाह मैंने तेरे बारे में यह हदीस नहीं सुनी। इल्म की शान देखो अल्लाह के सामने भी हदीस बयान हो रही है।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया, उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया, उन्हें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया, जिब्राईल को या अल्लाह आपने बताया कि कोई मुसलमान बूढ़ा हो जाता है तो अज़ाब देते हुए शर्माता हूँ और मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ। तो अल्लाह तआला ने मुझे माफ़ कर दिया। इस उम्मत को इज़्ज़त बख़्शी है क्यों ये घरों को छोड़कर निकलते हैं।

सहाबा की क़ब्रें बनती गयीं और दीन फैलता गया

एक सहाबी की क़ब्र पर हमारी जमाअत गई। उनकी क़ब्र के ऊपर हदीस लिखी हुई थी कि जब उनकी शहादत की ख़बर मदीने मुनव्वरा पहुँची तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके घर तशरीफ़ ले गए तो उनकी छोटी बच्ची आपसे लिपटकर रोने लगी तो आप भी रोने लगे। साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कैसा रोना है? तो आपने फ़रमाया यह रोना एक हबीब का हबीब के लिए है। आपने ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को बेटा बनाया हुआ था। फरमाया अल्लाह के रास्ते में निकलते हुए वह एक छोटा बच्चा छोड़कर गए थे।

आज तौबा करके उठो। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी को सीने से लगाकर उठो। उसको सीखने के लिए वक़्त दो। उसको सीखने के लिए फिरो।

इक्कीस आदमियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम ही मालूम न था

और हमारा नबी आख़िरी नबी है। उसके बाद कोई नबी नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम सारी दुनिया के इन्सानों तक पहुँचाना हम पर फ़र्ज़ है। जब फ़राइज़ मिट जाएं तो तलबीग़ फ़र्ज़ हो जाती है। जब फ़राइज़ मिट रहे हों तो तबलीग़ फ़र्ज़ हो जाती है।

अरे मैं तुम्हें क्या बताऊँ किसी गाँव का क़िस्सा नहीं सुना रहा हूँ, मुल्तान अपने ज़िले का क़िस्सा सुना रहा हूँ। नवें शहर की भरपूर आबादी में फुटपाथ पर खड़े होकर हमारे एक साथी ने इक्कीस आदमियों से पूछा भाई हमारे नबी का क्या नाम है? उन्नीस ने कहा सांई मैं कूँ पता कोई नीं (मुझे पता नहीं)। सिर्फ़ दो आदमियों ने बताया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

जो जानते हैं उनका घर में बैठना बड़ा जुर्म है। इसकी माफ़ी नहीं है। मैंने ख़ुद एक गाँव में बीस लड़कों से पूछा हमारे नबी का नाम क्या है? कही जी पता कोई नहीं।

मेरे भाईयो अल्लाह के वास्ते इस पैग़ामे हक़ को लेकर फिरो।

﴾واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴿

○ ○ ○

अल्लाह के नाफ़रमानों का इबरतनाक अंजाम

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا لله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने इस जहाँ को बेकार नहीं बनाया न बातिल बनाया है न खेलकूद के लिए बनाया है फिर हमें भी न बेकार बनाया न हमें छोड़ दिया कि जो मर्ज़ी करो न बिल्कुल आज़ादाना इख़्तियार दिया है। ख़बर दी है,

﴿ولا تحسبن الله عما يعمل الظالمون.﴾

तुम्हारे ज़ुल्म से तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं। ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, कोई पकड़ता नहीं। क्या इस अंधेरे में कोई है? नहीं!

नहीं! इस अंधेरे में कोई नहीं है। दुनिया और आख़िरत सुनसान हो रहा है लेकिन देखने वाला देख रहा है। एक दिन तेरी गर्दन को मरोड़ देगा। सारे बल निकल जाएंगे फिर इन्सान जो कुछ आमाल करता है उन सबकी ख़बर अल्लाह तआला दे रहा है।

अल्लाह तआला से कोई चीज़ भी छिपी हुई नहीं

कमरे में बन्द हो गये, कुन्डियाँ लगा दीं, पर्दे लगा दिए कि अब कोई नहीं देख रहा है। ऐसे तो कोई नहीं देख रहा है। अब इसकी अल्लाह तआला ने ख़बर दी है, ﴿ما يكون من النجوى ثلثة الا هو رابعهم﴾ तुम तीन बैठे हुए हो तो चौथा अल्लाह है, ﴿ولا خمسة الا هو سادسهم﴾ तुम पाँच हो तो छठा अल्लाह है, ﴿ولا ادنى من ذالك﴾ इससे थोड़े हों पाँच, चार, तीन, दो, एक, ﴿ولا اكثر﴾ पाँच हज़ार हों ﴿الا هو معهم اين كا ما كانو﴾ तुम्हारा रब तुम्हारे साथ है। ﴿ثم ينبئهم بما عملوا﴾ फिर जो तुमने किया एक दिन तुम्हें दिखा देगा कि यह किया था तुमने। फिर अल्लाह तआला कह रहे हैं ﴿واسروا قولكم﴾ आहिस्ता बोलो और ﴿او اجهروا به﴾ ज़ोर से बोलो ﴿عليم بذات الصدور﴾ वह तुम्हारे दिल के अन्दर को भी जानता है ﴿ونعلم ما توسوس به نفسه﴾ कुछ बातें ऐसी हैं जो आदमी अपने दिल ही दिल में करता है जिसको वह खुद भ नहीं सुनता। इसको हदीसुन्नफ़्स कहते हैं और इसको इख़्फ़ा कहते हैं तो अल्लाह तआला कह रहे हैं कि यह जो तुम अपने आप से बातें करते हो मैं उसको भी सुनता हूँ। अब अल्लाह तआला से कोई बात कैसे छिपे। ख़्याल में भी नज़र यूँ उठी या यूँ उठी कि फरिश्तों को भी नहीं पता चलता कि यह बदनज़र है या अच्छी नज़र है या बुराई की नज़र से देखा

या नेक नज़र से देखा, किसी को इज़्ज़त की नज़र से देखा, किसी भी चीज़ को देखा फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता। ज़ेहन में जो बातें घूम जाती हैं। अल्लाह तआला इसको अलग समझ रहा है।

अल्लाह काएनात का एक ज़र्रा भी नहीं छिपा हुआ

﴿يعلم خائنة الاعين﴾ कि तुम्हारी नज़र ग़लत हुई। तेरे रब ने उसको भी देख लिया ﴿وما تخفى الصدور﴾ नज़र के ग़लत होने से दिल में ग़लत ख़्याल आया उसको भी अल्लाह ने देख लिया और पकड़ लिया जो कुछ इन्सान कर रहा है। ﴿ويعلم ما جرحتم بالنهار﴾ दिन में जो कुछ तुम करते हो अल्लाह जानता है सिर्फ़ दिन में करने को? रात को नहीं,

سواء منكم من اسر القول ومن جهر به ومن هو مستخف باليل وسارب بالنهارة له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه من امر الله.

यह नहीं कि रौशनी होगी तो अल्लाह को पता चलेगा या लाउड़ स्पीकर का ऐलान होगा तो अल्लाह तआला को पता चलेगा। अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि तुम ज़ोर से बोलो तुम आहिस्ता बोलो बल्कि अल्लाह ने वह सब कुछ सुना जो तुमने दिन में कहा अल्लाह ने वह सब कुछ देखा जो तुमने रात को किया अल्लाह ने देखा ﴿مستخف باليل﴾ रात तो छिपी हुई है ﴿وسارب بالنهار﴾ दिन में कर रहा है अल्लाह पाक के लिए रात का अंधेरा और दिन की रौशनी बराबर है। अल्लाह तआला के लिए अन्दर कमरे में अकेला आदमी और एक लाख का मजमा बराबर है।

अल्लाह के लिए समुंद्र के नीचे की दुनिया और अर्श की दुनिया बराबर है। जैसे वह जिब्राईल को देख रहा है। इसी तरह इस ज़मीन पर चलने वाली च्युँटी को भी देख रहा है और जिब्राईल, इसराफ़ील, मीकाईल की भी सुनता है और समुंद्र में तैरने वाली मछलियों की भी सुनता है और वह अपनी जन्नत को अपने सामने देख रहा है। उसके सामने दूर और पास बराबर है बल्कि दूर क़रीब कुछ नहीं। सारा क़रीब है। वह अपनी ज़ात में इतना दूर है कि ﴿لا يراه العيون﴾ कि आँखें नहीं देख सकतीं फिर आँख तो बस यहाँ तक देखती है ﴿لا تخالطه الظنون﴾ कि आदमी ख़्याल करे या तसव्वुर करे फिर उसको भगाए दौड़ाए अल्लाह तआला यही कहता है कि तुम्हारा ख़्याल भी अल्लाह तक नहीं पहुँच सकता। भाई जब अल्लाह इतना दूर हो गया तो काम कैसे बनेगा तो यूँ इर्शाद फ़रमाया कि उसका ऊपर होना उसको दूर नहीं करता।

﴿نحن اقرب اليه من حبل الوريد﴾ वह तुम्हारी रगे जान से ज़्यादा तुम्हारे क़रीब है तो सारा जहान उसके लिए बराबर है। ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, मज़लूम ज़ुल्म सह रहा है, आदिल अदल कर रहा है और ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है दयानतदार दयानत से चल रहा है, बद दयानत बद दयानती कर रहा है, सच्चा सच बोल रहा है, झूठा झूठ बोल रहा है, ज़ानी ज़िना कर रहा है, पाकदामन अपनी पाकदामनी से चल रहा है, हराम खाने वाला हराम में चल रहा है, हलाल खाने वाला अपनी ज़रूरतों में पिस रहा है।

मेरे भाईयो! अपने आमाल सही कर लो। वरना अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जगह जगह पिछली क़ौमों का ज़िक्र किया है। इसका मक़सद क़िस्सा कहानियाँ बयान करना नहीं है बल्कि हमें तंबीह करता है कि अपनी हरकतों को सही कर लो

वरना तुम्हारा भी ऐसा ही अंजाम हो जाएगा।

अल्लाह तआला का इर्शाद है एक कौम तुम से पहले आई नूह अलैहिस्सलाम की जिन्होंने ज़मीन को कुफ़्र से भर दिया। वह मेरे नबी से कहने लगे,

﴿فاتنا بما تعدنا ان كنت من الصادقين.﴾

वह अज़ाब लाओ जिससे तुम हमें डराते थे। वह अज़ाब लाओ जिसका तुमने वायदा किया हुआ है। फिर हमारा दिन आया,

ففتحنا ابواب السماء بماء وفجنا الارض عيونا فالتقى الماء على
امر قد قرد فجرنا الارض عيونا.

हमने पूरी ज़मीन को चश्मा बना दिया, रूए रूए से पानी उबलने लगा और आसमान से पानी गिरा, ज़मीन से पानी निकला और सारी काएनात में वह पानी फैला।

अपने ही पेशाब में डूब गए

एक तफ़सीर में मैंने पढ़ा कि अल्लाह तआला अगर उस दिन किसी पर रहम करता तो एक औरत पर रहम करता जो बच्चे को लेकर भाग रही थी कोइ पनाह की जगह मिले और मैं बच जाऊँ और वह भागते भागते एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ी जिससे ऊँचा पहाड़ कोई और नहीं था। पीछे से पानी आया उसने पहाड़ को जो डुबोया फिर उसके पाँव पर चढ़ा फिर उसके सीने पर आया फिर उसने बच्चे को ऊपर किया फिर उसकी गर्दन तक आया तो उसने यूँ अपने सिर बच्चे को ऊपर कर लिया शायद बच्चा बच जाए पर पानी की मौज ने न बच्चे छोड़े न बड़े छोड़े सबको बराबर कर दिया। यहाँ तक कि नूह अलैहिस्सलाम के अपने बेटे को अल्लाह

तआला ने उंनके सामने ग़र्क़ कर दिया ﴿وحال بينهم الموج فكان من المغرقين﴾ तीन आदमी एक गुफ़ा में छिप गए और ऊपर से पत्थर रख लिया कि यहाँ पानी नहीं आएगा। चारों तरफ़ जो पानी का तमाशा देखा तो अन्दर बैठ गए। थोड़ी देर में तीनों को तेज़ पेशाब आया और बेक़रार होकर पेशाब करने बैठे। अल्लाह ने पेशाब को जारी कर दिया और वे पेशाब करते करते अपने ही पेशाब में ग़र्क़ हो कर मर गए। जो काम नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम करती थी वह काम आज हो रहे हैं, सारी दुनिया में हो रहे हैं।

क़ौमे आद की हलाकत

क़ौमे आद से बड़ी ताक़तवर क़ौम नहीं आयी। यहाँ तक कि ललकारने लगे ﴿من اشد منا قوة﴾ कोई है हमसे बड़ा ताक़तवर तो लाओ न हमें किससें डराते हो? ﴿ان نقول الااعتراك بعض الهتنا بسوء﴾ हमारे ख़ुदा ने तेरी अक्ल ख़राब कर दी है। हमसे बड़ा कोई ताक़तवर नहीं है तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴿اولم يروا ان لا ذى خلقهم هو اشد منهم قوة﴾

ऐ हूद! इन्हें बताओ जिसने तुम्हें पैदा किया वह ज़्यादा ताक़तवर है तो जब अल्लाह तआला की तरफ़ से वह हुज्जत पूरी हुई और वे अपने तकब्बुर में बढ़ते रहे नाफ़रमानी में बढ़ते रहे तो अल्लाह तआला ने अज़ाब का दरवाज़ा खोला, क़हत आ गया। इन्सान ऐसे भूखे, और वह इन्सान हमारी तरह तो नहीं थे बल्कि चालीस हाथ क़द होता था, तीस हाथ क़द होता था, आठ सौ साल, नौ सौ साल तो उम्र होती थी, न बूढ़े होते थे न बीमार होते

थे, न दाँत टूटते थे न कमज़ोर होते जवान तंदरुस्त व तवाना सिर्फ़ मौत आती थी। उसके अलावा उन्हें कुछ नहीं होता था।

अब उनको भूख भी ज़्यादा लगी और ये अपनी ज़रूरतों का ग़ल्ला भी खा गए, हलाल भी खा गए हराम भी खा गए फिर कुत्ते भी खा गए, बिल्ले भी खा गए, चूहे भी खा गए जो चीज़ हाथ में आई साँप भी खा गए। हर चीज़ खा गए। पर न बारिश का क़तरा गिरा न ज़मीन का दाना फूटा। यहाँ तक कि पेड़ तोड़ तोड़कर उनके पत्ते भी चबा गए। क़हत दूर न हुआ।

तो फिर उन्होंने एक वफ़्द बैतुल्लाह भेजा कि हमें बारिश दो। जब मुसीबत आती है तो ऊपर वाले को पुकारते हैं। जब वह काम कर देता है फिर सरकश हो जाते हैं फिर उन्हीं पत्थरों को पूजते थे। अल्लाह तआला ने तीन बादल सामने किए आवाज़ आई इनमें से एक को चुन लो। एक सफ़ेद एक लाल एक काला।

तो आपस में कहने लगे सफ़दे तो ख़ाली होता है, लाल में हवा होती है काले में पानी होता है तो उन्होंने कहा यह काला बादल चाहिए।

आवाज़ आई पहुँचेगा। यह वापस पहुँचे। उन्होंने कहा बारिश हो गई तो फिर जब सारी क़ौम इकठ्ठी हो गई तो अल्लाह तआला ने वह बादल भेजा ﴾فلما رأوه عارضا مستقبل أوديتهم﴿ वह बादल आया काला। कहने लगे ﴾هذا عارض ممطرنا﴿ वह देखो आई बारिश। अल्लाह तआला ने कहा ﴾بل هو ما استعجلتم به﴿ यह बारिश नहीं है यह वह अज़ाब है जो तुम हूद से कहते थे। कौन है हम से बड़ा? हमसे बड़ा जो हमें कुछ करे? अब तैयार हो जाओ।

﴾ريح فيها عذاب اليم تدمر كل شئ بامر ربها.﴿

अब देखो कैसे तुम्हारा रब उड़ाता है। उनके घरों को हवा में उड़ा दिया, उनको हवा में उड़ा दिया। साठ साठ हाथ ऊँचे लोग तिनके की तरह हवा में उड़ रहे थे। उनके सिरों को हवा आपस में टकरा रही थी। वह घूमते थे सिर टकराते थे, घूमते थे सिर टकराते थे। कुछ लोग भागकर ग़ारों में छिप गए तो हवा का बिगोला ऐसे ज़ोरदार तरीक़े के साथ ग़ार के अन्दर जाता और फिर धमाके के साथ उनको बाहर निकालता फिर उनको हवा में उछाल देता गेंद की तरह फिर उनके सिर आपस में टकराते। उनकी खोपड़ियाँ फट गयीं और उनके भेजे उनके चेहरों पर निकल आए और अल्लाह तआला ने उल्टाकर उनको ज़मीन पर मारा। सिर अलग हो गया धड़ अलग हो गया।

फिर अल्लाह तआला ने ललकारकर पूछा ﴿فهل ترى لهم من باقيه﴾ कोई है बाक़ी तो दिखाओ कि उसका भी सफ़ाया कर दूँ। कोई नज़र न आया सबको अल्लाह ने मिटाया जो काम क़ौमे आद करती थी वे काम आज फ़ैसलाबाद में हो रहे हैं।

क़ौमे समूद की नाफ़रमानी और अज़ाब

फिर एक क़ौम समूद आई। उन्होंने सुना था कि क़ौम आद को हवा में उड़ाया था तो उन्होंने पहाड़ के अन्दर घर बनाए कि अन्दर कौन हमें कुछ कहेगा? अन्दर तो हवा जा ही नहीं सकती। जाएगी तो भी कहाँ तक अन्दर जाएगी। नाफ़रमानी नहीं छोड़ी अकेले काम को चल पड़े। तो अल्लाह तआला ने हवा नहीं भेजी एक फ़रिश्ता आया ﴿ومكروا مكرا﴾ उन्होंने मकर किया ﴿ومكرنا مكرا﴾ हमने उनका मकर तोड़ दिया ﴿فانظر كيف كان عاقبه مكرهم﴾

आज उनका अंजाम देखो,

انی دمرنهم وقومهم اجمعین فتلك بيوتهم خاويه بما ظلموا. ان في
ذالك لاية لقوم يعلمون وانجينا الذين امنو وكانوا يتقون.

अल्लाह तआला ने कहा कि यह देखो एक फ़रिश्ता आया उसने चीख़ मारी और उनके कलेजे फट गए, चेहरे नीले और काले हो गए और सारी क़ौम को अल्लाह ने आन के आन में हलाक कर दिया।

क़ौमे शुएब का दहशतनाक अंजाम

फिर इस पर क़ौमे शुएब का अल्लाह ने क़िस्सा सुनाया। यह ताजिर क़ौम थी। फ़ैसलाबाद के बाज़ारों में जो नाप तोल की कमी है वह वहाँ हो रही थी। जो झूठ है वह वहाँ चल रहा था, दिखाना और देना और यह वहाँ चल रहा था। वह वहाँ बढ़ता गया और सारी दुनिया की तिजारत उन्होंने अपने क़ब्ज़े में कर ली और शुएब अलैहिस्सलाम ने कहा कि भाई इससे बाज़ आ जाओ ﴿اوفو الكيل وزنوا بالقسطاس المستقيم﴾ सही तोलो, सही नाप तोल में कमी न करो। जवाब आया,

ऐ शुऐब तू मस्जिद में बैठ जा, हमारे कारोबार में दख़ल न दे। यह तेरी नमाज़ें हमें कहती हैं कि हम बाप दादा का तरीक़ा छोड़ दें और हम अपने कारोबार तेरे तरीक़े पर करें तो हम तो तेरे हो जाएंगे।

अगर किसी से आप कहें भाई दयानत से तिजारत करो तो कहेगा मुझसे तो बिजली का बिल भी अदा नहीं हो सकता। मैं रोटी कहाँ से खाऊँगा। मैंने एक तेल वाले से कहा तुम मिलावट

क्यों करते हो? उसने कहा अगर मिलावट करें तो एक ड्रम पर पाँच सौ रुपए बचते हैं और पाँच सौ रुपए में कितने दिन गुज़र जाते हैं तो क़ौमे शुएब ने कहा,

اصلاتك تامرك ان نترك ما يعبد اباؤنا او ان نفعل

في اموالنا ما نشاء.

ऐ शुएब अपने घर बैठ जा हमें तेरी तबलीग़ नहीं चाहिए, हमें अपना कारोबार करने दे।

अल्लाह के तीन अज़ाब

तो अल्लाह तआला ने इस क़ौम पर तीन अज़ाब मारे जो पहली काफ़िर क़ौमें थीं उन पर एक अज़ाब आया, यह काफ़िर के साथ धोकेबाज़ थे लोगों का हक़ भी लूटते थे। अल्लाह तआला ने उन पर तीन अज़ाब मारे ﴿اخذتهم الرجفة﴾ ज़लज़ला, ﴿اخذ الذين ظلمو الصيحة﴾ चीख़, ﴿اخذاهم عذاب يوم الظلة﴾ अंगारों की बारिश।

हमारी जमाअत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम के इलाक़े में गई। वह इतना ठंडा इलाक़ा है कि जब हम वहाँ से गुज़रे तो वहाँ तक़रीबन तीन तीन फिट बर्फ़ पड़ी हुई थी। ऐसा ठंडा इलाक़ा है।

अल्लाह तआला ने एक गर्म हवा भेजी। वह झुलस गए, तड़प गए, आबले पड़ गए तो उसके बाद एकदम हवा ठंडी हुई तो सारे भागकर बाहर आए कि शुक्र है कि ठंडी हवा आई, ऊपर से बादल आया। कहा शुक्र है बादल आया। इसके साथ ही ज़मीन में ज़लज़ला आना शुरू हुआ और उसके ऊपर फ़रिश्ते की चीख़ आई और ऊपर काला बादल एक दम सुर्ख़ हो गया फिर उसमें से

एकदम बड़े बड़े अंगारे बरसे और सारी शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम को और मदयन को अल्लह तआला ने जलाकर राख कर दिया अगर ये बाज़ारों वाले तौबा नहीं करेंगे तो मुझे डर है कि कहीं इन मंडियों पर भी अंगारे न बरस जाएं जो मदयन की क़ौम पर बरसे थे। अल्लाह तआला की किसी से रिश्तेदारी कोई रिश्तेदारी नहीं है।

मेरे बन्दे तेरी एक एक हरकत मेरे सामने है

मेरे भाईयो और बहनो यहाँ हम आज़ाद नहीं हैं ﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا﴾ मेरे बन्दो! तुम्हें क्या हो गया है? कैसे ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो कि जैसे तुम्हें आज़ाद पैदा किया गया है? तुम पर कोई निगहबान नहीं है। तुम्हें ख़बर नहीं है कि:

﴿وما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد.﴾ तुम्हारी ज़बान का हर बोल लिख रहा हूँ। ﴿بلى ورسلنا لديهم يكتبون﴾ मेरे फ़रिश्ते तुम्हारे हर बोल को लिख रहे हैं। और अल्लाह तआला की खुली किताब हमें बता रही है कि तुम्हारा हर बोल लिखा जाता है। ﴿يعلم خائنة الاعين﴾ तुम्हारी आँख ग़लत देखती है। वह भी लिखा जाता है, ﴿وما تخفى الصدور﴾। तुम्हारे अन्दर ग़लत जज़्बात पैदा होते हैं वह भी लिखा जाता है।

﴿وما خلقنا السماء والارض وما بينهما لعبين.﴾

ज़ीमन व आसमान और जो कुछ इसमें है मैंने कोई खेलकूद के लि तो पैदा नहीं किया।

﴿لو اردنا ان نتخذ لهوا لاتخذنه من لدنا.﴾

अगर मुझे खेल कोई तमाशा बनाना होता तो अपने पास बनाता। तुम्हें मैंने इसलिए थोड़े पैदा किया है।

दिल को तोड़ने वाले बुरे आमाल

हदीस पाक में आता है–

﴿ولا تجسسوا ولا تحاسدوا ولا تدابروا ولا تباغضوا﴾

यह पाँच आमाल हैं जो दिलों को तोड़ते हैं और छठा ﴿ولا يغتب بعضكم بعضا﴾ यह छः हुए अगर ये छः चीज़ें न हों तो एक न्यूयार्क में दस दीन हो जाएं तो कुछ भी न होगा। मुहब्बते ही मुहब्बत होंगी अगर यह छः हों तो सारे के सारे एक ही मुसल्ले पर आकर खड़े हो जाएं फिर भी बुग़्ज़ व नफ़रतों से भरे हुए होंगे।

﴿ولا تجسسوا﴾ किसी के ऐब तलाश न किया करो। किसी की बुराईयों की ताक झांक न किया करो कि यह क्या करता है।

﴿ولا تحاسدوا﴾ हसद न किया करो।

﴿ولا تدابروا﴾ किसी को आगे बढ़ते हुए देखकर उसकी टाँगे न खींचा करो। उस पर रश्क करें कि अल्लाह और दे अल्लाह और दें या अल्लाह मुझे भी दे और इसको भी दे। हसद मत करो, तजस्सुस मत करो।

﴿ولا يغتب﴾ ग़ीबत मत करो। बुग़्ज़ मत रखो। यह छः काम हैं जब होंगे तो उम्मत मुहब्बत से महरूम हो जाएगी। सारी उम्मत आपस में टूट पड़ेगी। चाहे सब के सब एक ही मुसल्ले पर नमाज़ क्यों न पढ़ रहे हों।

मेरे बेटे याद रख अल्लाह देख रहा है

يا بني انها ان تك مثقال حبة من خردل فتكن في صخرة او في
السموت اوفي الارض يات بها الله.(سورة لقمان)

ऐ मेरे बेटे! याद रखना गुनाह करोगे या बुराई करोगे या अच्छाई करोगे, पहाड़ के अन्दर छिपकर करोगे तो अल्लाह को पता चल रहा है और वह राई के बराबर बुराई या अच्छाई है या ज़मीन के अन्दर घुस जाओ वहाँ बैठकर करो कि किसी को पता न चले या आसमान पर चढ़कर करो फिर भी तेरा रब तुझे देख रहा है।

﴿يات بها الله﴾ अल्लाह उसे ज़ाहिर कर देगा।

लिहाज़ा अल्लाह की ज़ात को हर वक़्त सामने रखकर उससे डरते रहो।

हम बेकार पैदा नहीं हुए

जनैद बग़दादी रह० के पास एक आदमी आता है कि नसीहत फ़रमाइए। तो जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया बेटा गुनाह करना है तो वहाँ चला जा जहाँ अल्लाह न देखता हो। कहा अल्लाह तो हर जगह देखता है तो फ़रमाया फिर गुनाह करना ही छोड़ दे। जब अल्लाह हर जगह देखता है तो तौबा कर ले।

मेरे भाईयो और बहनो! अल्लाह तआला ने इंसान को बेकार पैदा नहीं किया न बेमक़दस पैदा किया है।

﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا وانكم الينا لا ترجعون.﴾

तुम्हारा क्या ख़्याल है कि तुम बेकार हो और मेरे पास आने

वाले नहीं हो। अल्लाह तआला का ज़र्बदस्त निज़ाम मेरे और आपके गिर्द है।

ज़बान की हरकत, आँखों की हरकत, कानों का सुनना, दिल में आने वाले जज़्बात, एहसासात सब पर अल्लह तआला का ज़र्बदस्त पहरा है।

﴿ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد﴾ बोलते हो तो लिखा जाता है ﴿انا عليكم لحافظين﴾ किरामन कातिबीन। सो रहे होंगे, जाग रहे होंगे, कारोबार में हो, तन्हाई में हों दो निगहबान दाएं बाएं बैठे हैं। जिन्हें न खाने की ज़रूरत है न सोने की ज़रूरत न आराम की ज़रूरत। हमारी हर हर हरकत पर कड़ी निगाह है।

आज जो करना है कर ले मगर कल!!!

﴿ان السمع والبصر والفواد كل اولئك كان عنه مسئولا.﴾

और अल्लाह पाक ऐलान फ़रमा रहे हैं कि मेरे पास संभलकर आना। तुम्हारी आँखों से पूछँगा कि क्या जज़्बात ले आए हो और उस दिन पर तेरा ज़ोर नहीं चलेगा बल्कि ये मेरे हुक्म से बोलेंगे और जिस्म का एक एक अज़ू बोलेगा और यह कहेगा तुम्हें क्या हुआ मेरे ही ख़िलाफ़ तुम गवाही देने लग गए? वे जवाब में कहेंगे ﴿انطقنا الله الذى انطق كل شيء﴾ हम क्या करें हमें वह बुलवा रहा है जिसने हर चीज़ को बोलने की क़ुव्वत अता फ़रमाई है। कहेगा ﴿سقلكن ان كنت انا بل﴾ तुम्हारा बेड़ागर्क़ हो तुम्हारी वजह से तो मैं अल्लाह की नाफ़रमानी करता रहा। आज तुम ही मेरे ख़िलाफ़ हो गए।

اليوم نختم على افواههم وتكلمنا ايديهم وتشهد

ارجلهم بما كانوا يكسبون.

आज हम तुम्हारी ज़बानों बन्दे कर देंगे। तुम्हारे पाँव तुम्हारे किए कराए का खुला सुबूत अपनी ज़बान से पेश करेंगे।

इस वक़्त सारी दुनिया के मर्द व औरत इस ऐतबार से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं कि उन पर कोई निगहबान नहीं है जो उन्हें देख रहा है। दिन रात उनकी हरकतों पर उसकी निगह है और इस सारे किए कराए को वह सामने रखकर पेश करेगा। इस ऐतबार से हमारी ज़िन्दगी नहीं गुज़र रही है,

يعلمون ظاهرا من الحيوة الدنيا وهم عن الاخرة هم غفلون.

हम इस दुनिया ही की चार रोज़ा ज़िन्दगी के झमेलों में इतना फँस गए हैं कि आख़िरत की ज़िन्दगी से ही ग़ाफ़िल हो गए, आने वाली घाटियों से ग़ाफ़िल हो गए, आने वाले अज़ाब से ग़ाफ़िल,

﴿ولا تحسبن الله غافلا عما يعملوا الظلمون﴾

बता दो मेरे बन्दों को, मेरी बन्दियों को, औरतों मर्दों को बता दो जो कुछ तुम करते हो मैं ग़ाफ़िल नहीं हूँ। पकड़ते क्यों नहीं, क्यों नहीं पकड़ते?

﴿انما يؤخرهم ليوم تشخص فيه الابصار.﴾

पकड़ का एक दिन रखा है। उस वक़्त तक मोहलत दी हुई है। पकड़ने पर पूरी ताक़त है,

﴿افامن الذين مكروا العيات ان يخسفا الله بهم الارض﴾

ऐ मेरे हबीब! इन्हें बताइए कि मैं ज़मीन को हुक्म दूँ तो तुम सबको अन्दर ले जाए, धंसा दे तुम्हें, एक को ज़िन्दा न छोड़े।

﴿يصيبهم العذاب من حيث لا يشعرون.﴾

या वहाँ से अज़ाब का कोड़ा बरसाऊँ कि तुम्हें वहम व गुमान भी न हो।

क़यामत की निशानियाँ

यह तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है ﴿اذا تخذ الفئی دولاً﴾ जब हुकूमत के माल हुकूमत के कारिन्दे ख़्यानत करेंगे या जब माल कुछ हाथों में आ जाएगा, जब लोग दौलत समेट लेंगे, सूद के निज़ाम से, सट्टेबाज़ी के निज़ाम से, जुए के निज़ाम से, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी के निज़ाम से जब दौलत कुछ हाथों में होगी ﴿والامانة مغنما﴾ अमानत खाएंगे कोई अमानत वाला नहीं रहेगा ﴿والزكوة مغرما﴾ कोई ज़कात देने वाला नहीं होगा, ज़कात को टैक्स कहेंगे, ज़मींदार कहेंगे हमारे ख़र्चे पूरे नहीं होते, हम अश्र कहाँ से दें? ताजिर कहेंगे हमने ख़ुद कमाया है हम क्यों ग़रीब को दें? हमारी ज़ाती मेहनत की कमाई है।

﴿وتعلم لغير الدين﴾ और जब यह उम्मत इल्मेदीन को दुनिया कमाने के लिए पढ़ेगी अल्लाह के लिए नहीं पढ़ेगी, ﴿واطاع الرجل زوجته﴾ लोग अपनी बीवियों के फ़रमांबरदारी करेंगे, ﴿وعق امه﴾ और माँओं की नाफ़रमानी करेंगे, ﴿وادنى صديقه﴾ अपने दोस्त को गले लगाकर मिलेंगे, ﴿واقصى اباه﴾ बाप को देखकर राह बदल जाएंगे कहीं बाप से बात न करनी पड़े, ﴿وساد القبيلة فاسقهم﴾ क़बीले का सरदार शराबी होगा, नाफ़रमान होगा, ﴿وكان زعيم القوم ارذلهم﴾ हुकूमत नाअहल और ज़लील इन्सानों के हाथ में होगी,

﴿واكرم الرجل مخافة شره﴾ एक दूसरे को सलाम करेंगे मगर अल्लाह के लिए नहीं उसके शर से बचने के लिए, ﴿وارتفعت

الاصوات فی المساجد﴾ मस्जिदों में लड़ाईयाँ होंगी, ऊँची आवाज़ें होंगी, ﴿وظهرت القيات﴾ गाने वालियाँ मुअज़्ज़िज़ और मोहतरम हो जाएंगी और गाने वालियों को शोहरत मिल जाएंगी ﴿المعازف﴾ और गाना बजाना आम हो जाएगा, ﴿وشربت الخمور﴾ और शराब पी जाएगी और उसको गुनाह नहीं समझा जाएगा, ﴿ولبس الحرير﴾ और मर्द रेशम पहनेंगे, ﴿ولعن آخر هذه الامة اولها﴾ और आज के लोग पहले लोगों को बुरा कहेंगे, वैसे ही अनपढ़ ज़माना था। आज तरक़्क़ी का ज़माना है, वह ऊँटों को ज़माना था, आज राकेट का दौर है।

जब ये पन्द्रह काम ये उम्मत करेगी हाँलाकि इससे सख़्त गुनाह काफ़िर कर रहे हैं मगर उनको छुट्टी है। ये उनके मुक़ाबले में छोटे काम हैं।

जब ये काम मेरी उम्मत करेगी तो उन पर मौसम बदल जाएंगे और हवाओं के तूफ़ान आएंगे और ज़मीन में ज़लज़ले होंगे, आसमान से पत्थर बरसेंगे, उनके चेहरे मसख़ हो जाएंगे और वे एक के बाद एक अज़ाब में मुब्तला होंगे।

लोगों से तौबा करवाओ

हमने कारोबार नहीं छोड़ा, दुकान को नहीं छोड़ा, ज़मीन को नहीं छोड़ा, बीवी बच्चों को नहीं छोड़ा, घर को नहीं छोड़ा। अगर छोटी मोटी आग लग जाए तो फायर ब्रिगेड का इन्तेज़ार होता है अगर पूरे महल्ले में आग लग जाए तो हर आदमी बाल्टी लेकर भागता है, हर आदमी समझता है कि फ़ायर ब्रिगेड का इन्तिज़ार किया तो पूरा शहर जलकर राख़ हो जाएगा। अब जबकि पूरी

दुनिया में नाफ़रमानी की आग लग चुकी है तो हर एक को भागना होगा, हर एक से मिन्नत करना होगा तब जाकर लोगों में अल्लाह की तरफ़ रुजु नसीब होगा वरना सारे आमाल ऐसे हैं जो अल्लाह के अज़ाब को दावत दे रहे हैं।

लोग कहते हैं महंगाई हो गई। हम कहते हैं कि शुक्र करो कि हम ज़िन्दा हैं वरना हमारे आमाल ऐसे हैं कि ज़मीन फटकर हमें अपने अन्दर ले जा चुकी होती जो हम कर रहे हैं, कब से आसमान की बिजलियाँ कड़क जाएं जो कुछ हो रहा है कब का आसमान के फ़रिश्ते आकर ज़मीन को पटख़ देते जो हो रहा है। यह अल्लह का शुक्र है कि हम ज़िन्दा हैं। इसलिए हम कहते हैं हुकूमतों की पीछे मत भागो। हड़तालें न करो मस्जिदों में आ आजो, तौबा कर लो।

आज पाकिस्तान ही में कितने मुसलमान शराब पीते मर गए, चोरी करते मर गए, ज़िना करते मर गए, डाके डालते हुए मर गए, सूद खाते हुए मर गए। आप बताओ ये कहाँ चले गए?

जो दुनिया में शराब पीता हुआ मर गया जो जहन्नम में बदकार औरतों की शर्मगाह से पीप निकलेगा उसको अल्लाह तआला जमा करके शराब पीने वालों को पिलाएगा। जो इस हालत में मर गया बताओ तो उसका कितना बड़ा नुक़सान हुआ जो तकब्बुर के साथ मर गया उसको जन्नत की हवा नहीं लगेगी अगर उससे हम तौबा करवा लेते तो कितने बड़े नुक़सान से बच जाता।

अल्लाह की ढील का नाजाएज़ फ़ायदा न उठाओ

उसका हमारी गर्दनों पर क़ब्ज़ा है, दिल पर क़ब्ज़ा है, दिमाग़

पर कब्ज़ा है, सोच पर कब्ज़ा है। जिस्म के एक एक रोएं पर कब्ज़ा है, एक एक रग पर कब्ज़ा है, जिस्म की एक एक बोटी पर कब्ज़ा है तो वह अल्लाह इन्सानों को सीधा नहीं कर सकता? ज्यों ही आँख से ग़लत देखा एक थप्पड़ पड़ा और आँख निकलकर वह गिर गई, कानों से गाना सुना तो अल्लाह का तीर आया और कानों से पार हो गया, सुनने की ताक़त गई। छोड़ देगा ये गाने बजाने। ज्यों ही हाथ से ज़ुल्म होने लगा हाथ शल हो गया, पाँव ग़लत चला तो शल हो गया, शहवत ग़लत राह पर चली तो अल्लाह ने ज़मीन पर पटककर दिखाया, ज़बानें झूठ बोले तो फ़ालिज गिरा दे। क्या अल्लह को क़ुदरत नहीं है? पूरी तरह क़ादिर है।

दो अरब सरदार आए आपस में मशवरा करके कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नउज़ुबिल्लाह क़त्ल करेंगे। एक ने कहा मैं उनको बातों में लगाऊँगा और तू क़त्ल कर देना। एक बातें करने लगा तो दूसरे ने तलवार पर हाथ रखा। हाथ शल हो गया। वह हटाना चाहता है मगर हाथ तलवार के दस्ते से हटता ही नहीं।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी सारा को बादशाह ज़ालिम ने पकड़ लिया ग़लत इरादे से तो अल्लाह तआला ने सारा मंज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तसल्ली के लिए खोलकर दिखा दिया। इब्राहीम अलैहिस्सलाम देख रहे हैं कि वह हाथ बढ़ाता है तो हाथ शल होकर गिर पड़ता है, थोड़ी देर के बाद फिर हाथ बढ़ाता है तो हाथ शल होकर नीचे गिर पड़ता है। (सारे ज़ानियों को अल्लाह नहीं पकड़ सकता?) ताक़तवर है।

ग़ाफ़िल बहुत बड़ा ज़ालिम है

﴿ولا تحسبن الله غافلا عما يعمل الظلمون﴾ ज़ालिमो अल्लाह को ग़ाफ़िल मत समझो। ये सारे काम जो मैंने बताए हैं गाना सुनना भी कोई ज़ुल्म है? अरे अल्लाह के बन्दो इससे बड़ा ज़ुल्म क्या होगा कि इतने बड़े अल्लाह के हुक्म को तोड़ दिया है?

﴿الجفاء ما الجفاء من سمع النداء فلم يجبه﴾ ज़ालिम है सबसे बड़ा ज़ालिम है। सबकी नज़रें उठीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कौन? फ़रमाया जिसने अज़ान की आवाज़ सुनी और मस्जिद को नहीं गया। देखो ये सारी मार्केट, बाज़ार ज़ालिमों से भरी पड़ी है कि जिस अल्लाह ने उनको मिट्टी से वजूद दिया है उस अल्लाह के हुक्म को मानने से इंकारी हुई पड़ी है। दो हज़ार का मुलाज़िम रखा तो अपनी बात मनवाओगे उससे कि नहीं?

मौसीक़ी ज़वाल का बड़ा सबब

यह मौसीक़ी जिस क़ौम में आई वह क़ौम तबाह हुई। दुनिया की तारीख़ पढ़ो। जिस क़ौम ने राग व रंग छेड़ा जिस क़ौम की नस्ल के हाथों में बांसुरियाँ आयीं और उनके क़दम उसकी आवाज़ पर थिरकने लगे और रंडियों के गाने आम हो गए उस क़ौम को ज़मीन आसमान ने देखा और ये गवाह हैं, यह हवा गवाह है, यह फ़िज़ा गवाह है कि वे क़ौमें बर्बाद हुईं। वे क़ौमें तबाह हुईं, वे क़ौमें हलाक हुईं। उन क़ौमों को ऐटमी ताक़त न भा सकी, उन क़ौमों को माद्दी ताक़त न बचा सकी। उन क़ौमों को सक़ाफ़ती ताक़त न बचा सकी। उन क़ौमों को उनके सियासी निज़ाम न

बचा सके। काफ़िर होकर भी मुशरिक होकर भी जिन क़ौमों में मौसिक़ी फैले और ज़िना और सूद फैला अल्लाह ने उनको सफ़े हस्ती से मिटाया और उन पर रन्दा फेर दिया। अपने अज़ाब का कोड़ा बरसाया। वे दुनिया में ज़िन्दा रहने के क़ाबिल रहते हैं न आख़िरत में कोई क़ाबिले ज़िक्र क़ौम है।

हराम छोड़ा हर जगह इज़्ज़त मिल गई

मेरे भाईयो! इन कानों को हराम सुनने से बचा लो तो काएनात का ज़र्रा ज़र्रा अल्लाह की तस्बीह पढ़ता है आपको सुनाई देगा, एक-एक चप्पा, एक-एक पत्थर, एक-एक तिनका, एक-एक पहाड़, एक-एक गली, एक-एक ईंट तुम्हें अल्लाह अल्लाह करती सुनाई देगी। इन कानों को हराम सुनने से जो बचाएगा, इन आँखों को हराम देखने से जो बचाएगा, इस ज़बान को हराम बोलने से जो बचाएगा अल्लाह काएनात में अपने आप उसे दिखा देगा।

दुनिया जाने वाला घर है

इस काएनात की हर चीज़ उसके ज़वाल का, उसकी हलाकत और तबाही का ख़ुद पता बताती है। यह दुनिया मिट जाने का घर है। आई हुई बहार देखकर यूँ लगता है कि यह कभी नहीं जाएगी। हवा का झोंका जब उसे ख़िज़ां में बदलता है तो लोग भूल ही जाते हैं कि कभी बहार भी थी। जवानी की तरंग में जब आदमी मचलता है, उछलता है,

﴿فلما ترعرع وكبرت واشتدا عبدك﴾

उसके अन्दर जवानी की लहरें दौड़ती हैं। वह समझता है कि यह जवानी सदा रहेगी। घंटों अपने चेहरे को देखता है। कभी एक साइड से कभी दूसरी साइड से। बड़े बड़े शीशे लगे हुए हैं। आगे से भी देखता है पीछे से भी, कैसा नज़र आता हूँ। अपने ऊपर खुद इतराता है, अपने ऊपर खुद उसे गुमान होता है, मान होता है अपनी ज़ात से प्यार होता है कि मैं कैसा लग रहा हूँ।

कुछ सुबहें गुज़रती हैं, कुछ शामें गुज़रती हैं वही आदमी है वही मर्द है वही औरत है वही आइने का सामना करते हुए घबराता है। नहीं नहीं यह वह चेहरा नहीं है जो कभी तर व ताज़ा था जो कभी गुलाब से तश्बीह दिया जाता था जो कभी सुबह सादिक़ से तश्बीह दिया जाता था। नहीं नहीं! यह वह नहीं है। इस पर तो मकड़ी के जाले की तरह बुढ़ापे ने ताना बाना बुन दिया है। वह चश्मे ग़ज़ाल, इसकी तो हिरनी जैसी आँख है उन आँखों को बुढ़ापे ने ज़बर्दस्त और ज़ालिम हाथों ने उसके पपोटों को उसकी आँखों पर गिरा दिया। वह आँखें उठने को नहीं, देखने को नहीं चश्में चढ़ गए। फिर उन्होंने भी देखने से इंकार कर दिया।

अल्लाह का खाकर उसकी नाफ़रमानी करना अच्छा नहीं है

मेरे भाईयो! बग़ैर तौबा के न रहें। यह ज़ुल्म न करें, यह ज़ुल्म न करें अल्लाह के वास्ते। उसी का खाकर उसी को गुर्राना यह तो कुत्ता भी नहीं करता, यह तो बिल्ली भी नहीं करती, यह तो शेर भी नहीं करता। वह चिड़ियाघर में हो या सर्कस वाले होते हैं

उसको जो गोश्त खिलाता है उसके सामने वह भी बकरी बन जाता है। हम अल्लाह की ज़मीन पर और अल्लाह की ज़मीन को गुनाहों से जला दें, अल्लाह की फ़िज़ा को इस्तेमाल करें और सारी फ़िज़ाओं में गुनाहों का धुआं भर दें, आँखों की शमा उसने जलाई और औरों की इज़्ज़तों को देखें, कानों के टेलीफ़ोन उसने दिए और हम रंडियों के गाने सुनें। दिल व दिमाग़ उसने दिया और हम नाफ़रमानी में इस्तेमाल करें। शहवत उसने रखी और वह ज़िना में इस्तेमाल हो, जिस्म उसने दिया और नाफ़रमानी में इस्तेमाल हो यह तो कोई अक़्ल की बात नहीं है। कुत्ता एक रोटी खाकर सारी ज़िन्दगी के लिए वफ़ादार बन जाता है। आप सोते हैं वह जागता है, सारी रात पहरा देता है तो मैं कुत्ते से नीचे तो न जाऊँ कि जो एक रोटी पर वफ़ा कर जाए और मैं सारे जहान की नेमतें खाकर उसी से टकरा जाऊँ। कोई इन्सानियत नहीं है। वैसे तो आख़िरी साँस में भी तौबा कर लें तो वह भी क़ुबूल है लेकिन मौत का पता नहीं कब आ जाए तो आज ही करनी चाहिए।

मन चाही छोड़ दो

जब पर्दे के हुक्म की आयत उतरी,

﴿قل لازواجك وبناتك ونسآء المؤمنين يدنين عليهن من جلابيبهن﴾

ऐ मेरे हबीब! बता दो अपनी बेटियों को, अपनी बीवियों को सारी मुसलमान औरतों को कि अब पर्दे का हुक्म आ गया है। सारी रात बैठकर अपने लिए बुर्क़े तैयार किए। फ़ज्र की नमाज़ में जब आयीं तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं ﴿كانهن غراب﴾ यूँ लगा जैसे मस्जिद में कव्वे आ गए। काली चादरों

में ढकी हुई, छिपी हुई। इधर हुक्म आया उधर इताअत आई कि अपनी मनचाही को क़ुर्बान करने का जज़्बा पैदा हो गया था।

अपनी चाहतें अल्लाह पर क़ुर्बान करने के जज़्बे आ गए। बस वह करेंगे जो अल्लाह कहेगा। अब्दुल्लाह बिन मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु नाबीना घर में आए। हज़रत आएशा और हज़रत हफ़्सा बैठी थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अन्दर चली जाओ। उन्होंने कहा जी अन्धा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तुम तो अन्धी नहीं हो ﴿فعميا وان انتما﴾ वह तो अन्धा है तुम तो अन्धी नहीं हो। ये कौन औरतें हैं? नबी की बीवियाँ जिनकी पाकीज़गी क़ुरआन बताए और अब्दुल्लाह बिन मकतूम कौन हैं जिनके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को डांट पड़ गई। यह वह हस्ती है सवा लाख सहाबा में यह शख़्स ऐसा है कि जिसके बारे में क़ुरआन में ऐसे हैरत अंगेज़ तरीक़े से आया है कि किसी के बारे में नहीं आया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं और क़ुरैशे मक्का को, मक्का के सरदारों को दावत दे रहे हैं। यह आ गए। इन्हें क्या पता है कि ये कौन बैठे हुए है? आकर कहा या रसूलल्लाह! कुछ मुझे तो बताएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अच्छा नहीं लगा कि ये सरदार बैठे हुए हैं। ये नफ़रत खा जाएंगे कि यह इस वक़्त न आता तो अच्छा था तो आपने उनकी सुनी को अनसुनी करते हुए उन्हीं से बात करते रहे। अभी वहीं बैठे ही थे कि “वही” आ गई,

عبس وتولى ان جاءه الاعمى وما يدريك
لعله يزكى او يذكر فتنفعه الذكرى.

ऐ मेरे हबीब! आपने इससे मुँह फेर लिया और इससे आपके माथे पर बल पड़ गए। क्यों आपके माथे पर बल पड़े? यह वह शख़्स है। उसके बाद जब कभी अब्दुल्लाह बिन मक्तूम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में आते तो आप फ़रमातेः

﴿مرحبا لمن عاتبنی فیہ ربی مرحبا مرحبا.﴾

जिसकी वजह से मेरे रब ने मुझे तंबीह फ़रमाई। और यह वह शख़्स है कि क़ुरआन में आयत आईः

﴿لا یستوی قاعدون من المؤمنین والمجاھدون فی سبیل اللّٰہ.﴾

यह आयत आई कि अल्लाह की राह में निकलने वाले जिहाद करने वाले घर बैठने वाले बराबर नहीं हो सकते। यह आयत आई तो अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु नाबीना थे। कहने लगे या अल्लाह मैं क्या करूं? तू तो जानता है मैं अन्धा हूँ। मेरे लिए तो गुंजाइश निकाल। मैं कैसे तेरी रहा में निकलू? आयत उतर चुकी है। जिब्राईल अलैहिस्सलाम फिर एक लफ़्ज़ लेकर दोबारा आए। एक लफ़्ज़ जिसके लिए क़ुरआन दोबारा उतारा गया और आयत को बदला गया। या रसूलुल्लाह! अब इस आयत को यूँ पढ़िएः

﴿لا یستوی القاعدون من المؤمنین غیر اولی الضرر.﴾

यह लफ़्ज़ बढ़ा दिया गयाः

﴿غیر اولی الضرر والمجاھدون فی سبیل اللّٰہ﴾

वह मुसलमान जिन्हें कोई उज़्र नहीं है और घर में बैठे हुए हैं वह और अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले बराबर नहीं हो सकते। हाँ जो उज़्र वाले हैं उनके लिए माफ़ी है।

﴿غير اولى الضرر﴾ एक लफ़्ज़ के लिए जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भगाया गया।

ये वह अब्दुल्लाह बिन मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी फ़रिश्तों से पाकीज़ा बेगमात को फ़रमा रहे हैं कि अन्दर चली जाओ, अन्दर चली जाओ। या रसूलल्लाह! अन्धा है। अरे यह उनकी वजह से नहीं हो रहा है। उस महबूब को पता था मेरी उम्मत आगे आकर क्या करने वाले हैं। यह उनके लिए उसूल बनाए जा रहे हैं।

क़ुरआन पन्नों से निकलकर ज़िन्दगी में आए, किताबों से निकलकर अन्दर आ जाए, पूरे तीस पारे इन्सान के पाँच फ़िट के जिस्म में आ जाएं। फिर इस मुसलमान पर जिसका हाथ उठेगा अल्लाह उस हाथ को तोड़ देगा, जो पाँव उठेगा अल्लाह उस पाँव को काटेगा, जो आँख उठेगी अल्लाह उस आँख को फोड़ेगा। जब मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली किताब को लेकर खड़ा हो जाएगा।

नर्स की मरीज़ से इल्तिजा आप मुझसे शादी कर लें

ग्लास्को में हमारा एक साथी था। बीमार हो गया। हस्पताल में दाख़िल हुआ। तीन दिन तक दाख़िल रहा। चौथे दिन नर्स उससे कहने लगी जो अटैन्डेंट थी आप मुझसे शादी कर लें। उसने कहा क्यों? मैं मुसलमान हूँ तेरा मेरा साथ नहीं हो सकता। कहने लगी मैं मुसलमान हो जाऊँगी। क्या वजह है? कहा मेरी जितनी सर्विस हस्पताल में हुई मैंने आज तक किसी मर्द को किसी औरत

के सामने नज़रें झुकाते नहीं देखा सिवाए तेरे। तुम मेरी ज़िन्दगी में पहले शख़्स हो जो औरत को देखकर नज़रें झुका लेते हैं। मैं आती हूँ तो तुम आँखें बन्द कर लेते हो। इतनी बड़ी हया सच्चे दीन के सिवा कोई नहीं सिखा सकता। आँखों की हिफ़ाज़त ने उसके अन्दर इस्लाम को दाख़िल कर दिया। मुसलमान हो गई। दोनों की शादी हो गई। वह लड़की अब तक कितनी ही लड़कियों के इस्लाम लाने का ज़रिया बन चुकी है। कितनी वहाँ की ब्रिटिश औरतें मुसलमान हो गयी हैं।

अल्लाह के लिए ख़ूबसूरत को ठुकरा दिया!

हुस्न को छोड़ा तमग़ा यूसुफ़ मिल गया

हज़रत अरबीअ बिन ख़ुफ़्फ़ीन रह० एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। कुछ लोग उनसे हसद करने लगे। एक फ़ाहिशा औरत थी। बड़ी ख़ूबसूरत और हुस्न व जमाल वाली। उसे उन्होंने हज़ार दिरहम देकर कहा कि तू रबीअ को गुमराही पर ले आ। और सबसे बड़ा फ़ितना उसी वक़्त शुरू होता है जब मर्द व औरत का आज़ादाना मेल मिलाप होता है। हज़ार दिरहम माल आदमी को अन्धा कर देता है। जैसे आज हम अंधे हो चुके हैं। उस औरत ने ﴿لبست باحسن ما عندها ماقدرت﴾ जो सबसे उम्दा लिबास था वह पहना और सबसे उम्दा खुशबू लगाई और सबसे आला बनाव सिंगार के साथ अपने आपको सजाया।

वह रात को नमाज़ पढ़कर जब मस्जिद से निकले ﴿فبرزت له وهي سافرة﴾ एकदम उनके सामने चेहरा खोले बड़े अन्दाज़ से चलती

हुई आई। जब हज़रत रबीअ रह० की नज़र पड़ी तो फ़ौरन चेहरा झुका लिया और फ़रमाया ऐ बहन जिस हुस्न पर तुझे नाज़ है और जिस हुस्न पर तू मुझे बहकाने आई है तू उस दिन को याद कर ﴿كيف بك لو حلت بك الحمة﴾ वह दिन याद कर जब अल्लाह तुझे कोई बीमारी में डाल दे और तेरे चेहरे की रौनक़ को छीन ले और तू हड्डियों का ढांचा रह जाए तो तेरा हुस्न व जमाल कहाँ जाएगा?

﴿كيف بك لو حلت بك الحمة﴾ तेरा क्या हाल होगा जब तुझे क़ब्र के गढ़े में डाला जाएगा और तेरे इसी ख़ूबसूरत और चमकते दमकते चेहरे पर जिस पर तुझे आज नाज़ है इस पर क़ब्र के कीड़े चल रहे होंगे और वे तेरी आँखों को खाएंगे और वह तेरे बालों को नोच लेंगे और तेरी हड्डियों को तेरे गोश्त से अलग कर देंगे और तू एक ढांचा पड़ी होगी। और तू वह दिन याद कर जब तुझे मुन्कर नकीर उठा के बिठाएंगे और तुझसे सवाल करेंगे तो बता आज तू किस हुस्न पर नाज़ करती है? जो कल को कीड़ों का शिकार होने वाला है? उन्होंने ऐसे दर्द से उस औरत से बात की कि वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गई।

जब उसे होश आया तो उसने ऐसी तौबा की कि अपने वक़्त की बहुत बड़ी वलिया और आबिदा और ज़ाहिदा बनी। उसके पास दुआएं करवाने के लिए लोग आते थे।

मैं कैसा लग रहा हूँ?

इन्सान में अल्लाह ने एक माद्दा रखा है। यह नुमायां होना चाहता है। अपनी तारीफ़ चाहता है और बहुत छोटी उम्र से यह चीज़ होती है।

मेरे दो भतीजे खड़े थे। दोनों छोटे छोटे। कोई डेढ़ साल का फ़र्क़ दोनों में है। तो वह जो छोटा था उसने भी नए कपड़े पहने थे और जो बड़ा था उसने नहीं बदले थे। तो मैंने छोटे से कहा माशाअल्लाह बड़े प्यारे लग रहे हो। वह जो साथ में उसका भाई खड़ा था उसको यह बात पसन्द नहीं आई कि मेरी तो तारीफ़ की नहीं चाचा ने इसकी की की। तो जल्दी से बोला जूते उसने मेरे पहने हुए हैं यानी मुझे भी तारीफ़ में शामिल करें। मुझे आपने क्यों नीचा कर दिया। ये जूते इसने मेरे पहने हुए हैं। मैंने कहा अच्छा बाबा! आप भी बड़े अच्छे लग रहे हैं। इतनी उम्र में यह एहसास पैदा हो जाता है।

तो एक फ़ितरी चीज़ है। इसको हम रोक नहीं सकते। यही जज़्बा इन्सान को दौड़ लगवाता है। इस जज़्बे को अगर सही रुख़ पर मोड़ दिया जाए तो फिर यह रौशन रास्ता है जिसके आख़िर में जन्नत है यह जज़्बा अगर ग़लत मुड़ जाए तो इसके आगे ख़ौफ़नाम घाटियाँ हैं जिसकी कोई इन्तिहा नहीं।

नहीं ख़ुश करेंगे नफ़्स को ऐ दिल तेरे कहने से

अरे मेरे भाईयो! नाच व सरूर की महफ़िलों के मज़े तो चखे हुए हैं कभी रात अल्लाह के सामने रोने का मज़ा भी चख के देखो। नज़रें उठाने का मज़ा तो चखे हुए हो कभी नज़र झुकाने का मज़ा भी चखकर देखो। मेरे रब की क़सम! अगर दिल में लहर न दौड़ जाए तो मेरा गिरेबान पकड़ लेना। रातों को नाचने कूदने की लज़्ज़तें देखीं हैं रात को मुसल्ले पर खड़ा होने की लज़्ज़त को भी चखो औरों को भी रुलाते फिरोगे ख़ुद तो रोओगे ही।

यह वह लज़्ज़त है कि जिसके सामने सारी लज़्ज़तें ख़त्म हो जाती हैं। नज़र झुकाने की जो लज़्ज़त है नज़र उठाने की लज़्ज़त उसके सामने कुछ भी नहीं। बेहयाई की लज़्ज़त को देखा है पाकदामनी की लज़्ज़त भी चख कर देखो।

इन क़दमों को ग़लत महफ़िलों में लेकर चले हैं वह लज़्ज़त देखी हैं। इन क़दमों को मस्जिद में आने का आदी बनाओ यह लज़्ज़त भी चख कर देखो। बड़े लोगों के सामने सिर झुकाना, चापलूसी करना सीखा है कभी अपने मालिकुल मुल्क की ख़ुशामद में सिर को ज़मीन पर टिकाकर यह लज़्ज़त भी देखो कि कैसी लज़्ज़तों के कैसे मुहब्बत के दरवाज़े खुलते हैं। जब आपका सिर ज़मीन पर हो, ज़बान पर अल्लाह का नाम हो, अर्श तक दरवाज़े खुल चुके हों और अल्लाह अपने बन्दे को देख रहे हों कि सारा इस्लामाबाद सोया हुआ है या शराब की महफ़िल है या नाच की महफ़िल है।

अरे फ़रिश्तों आ जाओ आ जाओ! देखो यह मेरा बन्दा जब लोग नाचने गाने में मशग़ूल हैं यह मेरे सामने सिर रखे हुए तड़प रहा है, मचल रहा है, रो रहा है। देखो इसी वजह से मैंने तुम्हें कहा था कि मेरा इन्सान ख़लीफ़ा हो सकता है। तुम मेरे ख़लीफ़ा नहीं बन सकते। तुम में लज़्ज़त का एहसास ही नहीं। तुम्हारे अन्दर दुख दर्द का एहसास न ख़ुशी का एहसास न लज़्ज़त का एहसास न तकलीफ़ का एहसास इसे देखो जो सारी हराम लज़्ज़तें छोड़कर मेरे सामने पड़ा हुआ रो रहा है अल्लाहु अकबर।

सारे आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं। जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और जब जन्नत की हूरें जन्नत के दरवाज़ों पर

आकर खड़ी होकर उस नौजवान को मुबारक बाद देती हैं कि अल्लाह तुझे इसी हाल पर पक्का रखे जब तू आएगा तो देखेगा कि क्या तेरे इस्तिक़बाल होते हैं।

और मेरे भाईयो! कभी इस वादी में भी तो चलकर देखो कब तक इन क़दमों को फिराओगे ग़लत रास्तों पर, कब तक इन नज़रों से ग़लत देखोगे, कब तक इन कानों से ग़लत सुनोगे? सही सुनने की लज़्ज़त चखो। कभी नज़र झुकाने की लज़्ज़त भी चखो। कभी पाकदामनी की लज़्ज़त भी चखो। ये वह लज़्ज़त है जो सारी लज़्ज़तों को तोड़कर रख देती है।

क्या अल्लाह यह नहीं कर सकता कि सबको सीधा कर दे कि हो जाओ सीधे। ज्यों ही नज़र ने ग़लत देखा वह हमें थप्पड़ मारा आँख निकल कर बह गई, ज्यों ही कानों ने गाना सुना वहीं तीर आया अल्लाह का और कानों के पार होकर निकल गया, छोड़ दे तू शैतानी गाने सुनता है, ज्यों ही हाथ से ज़ुल्म होने लगे हाथ शल हो गया, पाँव ग़लत महफ़िल को उठा पाँव शल हो गए, शहवत ज़िना को चली तो अल्लाह पाक ने ज़मीन पर गिराकर पछाड़कर दिखा दिया, क्या अल्लाह को क़ुदरत नहीं है? ज़बान झूठ बोले तो फ़ालिज गिरा दे, हाथ ग़लत तोलें तो हाथ शल कराकर दिखा दे? पूरी तरह क़ादिर है।

अल्लाह की मदद

दो अरब सरदार आए एक ने कहा मैं अल्लाह के रसूल से बात करूंगा तू क़त्ल कर देना। (यह दोनों ने प्लान बनाया फिर आपके पास आए।)

अब एक ने बातों में लगाया और दूसरे ने तलवार पर हाथ रखा निकालने के लिए, हाथ वहीं शल हो गया। वह हटाना चाहता है हटता नहीं। वह समझा कि हाथ की ताकत मेरी अपनी है।

शाहे मुल्क ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बीवी सारा को पकड़ लिया। उनसे ज़्यादती करने लगा तो अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तसल्ली देने के लिए कि कहीं उन्हें शक न पड़ जाए सारा मंज़र इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खोलकर दिखा दिया। इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी आँखों से देख रहे हैं वह यूँ हाथ बढ़ाता तो हाथ शल होकर नीचे गिर जाता फिर वह हाथ बढ़ाता तो हाथ शल होकर नीचे गिर जाता। सारे ज़ानियों को अल्लाह नहीं रोक सकता? जो ज़िना को चले अल्लाह पकड़कर दिखा दे, जो औरत फ़हहाशी को चले उसको रुसवा करके दिखा दे, यह ताकत नहीं है?

ख़ालिक़ की नाफ़रमानी से मर जाना बेहतर है

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

﴿الا ميتة فى طاعة الله خير من حيوة فى معصية الخالق.﴾

याद रखना फ़रमांबरदारी में मर जाना यह नाफ़रमान बनकर ज़िन्दा रहने से बेहतर है।

यह हदीस बता रही है कि हुकूमतों की दौड़ में अगर अल्लाह नाराज़ हो रहा है तो हुकूमत छोड़ दो, एक ज़ेहन तो यह है कि काएनात में आए जैसे मर्ज़ी आए ज़िन्दगी गुज़ारें वह एक बहुत बड़ा तब्क़ा इस तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। इस चीज़ से

मुतास्सिर होकर मुसलमानों का एक बहुत बड़ा तब्क़ा है जो अपनी चाहत की मनचाही ज़िन्दगी गुज़ार रहा है।

सुन लो मैं देख रहा हूँ

लेकिन मेरे भाईयो! अल्लाह तआला अपनी किताब में ﴿ولا تحسبن الله غافلا﴾ ऐ मेरे बन्दो मुझे ग़ाफ़िल न समझो मैं देख रहा हूँ। शराब पी रहे हो यह भी देख रहा हूँ, नाच रहे हो यह भी देख रहा हूँ, सज्दा कर रहे हो यह भी देख रहा हूँ, हलाल कमा रहे हो यह भी देख रहा हूँ, हराम कमा रहे हो यह भी देख रहा हूँ।

﴿لا تاخذه سنة﴾ तेरा रब ऊँघता नहीं ﴿ولا نوم﴾ सोता नहीं, ﴿لايؤده حفظهما﴾ थकता नहीं ﴿ولا تحسبن الله غافلا﴾ ग़ाफ़िल नहीं होता, ﴿وما كان ربك نسيا﴾ वह भूलता नहीं,

﴿وما هم بمعجزين، وما كان الله ليعجزه من شئ﴾

काएनात में कोई चीज़ तुम्हारे रब को आजिज़ नहीं कर सकती, उसकी ताक़त को नहीं रोक सकती, किसी चीज़ को छिपा नहीं सकती। वह काएनात की तह तक चला जाता है,

﴿انها من خردل فتكن فى صخرة اوفى السمآء اوفى الارض ياتى بها الله.﴾

एक राई के दाने के बराबर अच्छाई करो बुराई पहाड़ के अन्दर छिपकर करो, ज़मीन के नीचे जाकर करो, आँखों में दिया जलाकर करो, जहाँ भी करोगे अल्लाह की आँख वहाँ चल रही है,

﴿الم ترا ان الله يعلم ما فى السموت وما فى الارض.﴾

बताओ उन ज़ालिमों को तुम्हारा रब देख रहा है, शर्म खाओ। ﴿ما يكون من نجوى ثلثة الا هو رابعهم﴾ तुम तीन आदमी छिपकर अपने

दरवाज़े बन्द करके बुराई करो तो चौथा अल्लाह है तुमको देखने वाला।

तौबा कर लो अल्लाह के महबूब की ज़िन्दगी को अपनी ज़ीनत बनाओ। अपनी आँखों में हया का काजल लगाओ, अपने कानों को क़ुरआन के नग़मों से आशना करो, अपने चेहरों को सुन्नत से सजाओ, अपने लिबास को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला लिबास बनाओ, अपने पाँव में अल्लाह की मुहब्बत की बेड़ियाँ डालो, अपने हाथों में उसके इश्क़ की हथकड़ियाँ डालो, अपने गले में उसकी इताअत के गुलबन्द डालो, अपने माथे पर उसके सज्दों का झूमर सजाओ फिर देखो अल्लाह को कैसे प्यारे लगोगे।

हम तो कुत्तों से ज़्यादा बेवफ़ा हैं

जब इन्सान दुनिया में आया और उसमें जवानी की लहरें दौड़ीं, वह बदन और क़द्दावर हो गया, उसके बाज़ू ताक़तवर हो गए, जवानी की ताक़त पैदा हो गई तो अब चाहिए तो यह था कि सारी पिछली ज़िन्दगी को देखकर मेरे सामने झुक जाता।

जैसे कुत्ता तुम्हारी रोटी खाता है और सिर झुका देता है। उसको खाना खाते बुलाओ, रोटी छोड़कर आ जाता है। उसको लात मारो, छुरी मारो सिर नहीं उठाता, घर का बच्चा भी उसकी पिटाई कर दे तो सिर नहीं उठाता, बाहर से कोई छः फिट का आदमी भी आ जाए तो उसकी टांगों को पड़ जाता है। जान की परवाह नहीं करता। दो रोटी वफ़ा करता है। बुलाओ तो खाना खाता छोड़कर आ जाता है। एक हमारा हाल है कि जिस मालिक की खाते हैं उसी की नाफ़रमानी करते हैं।

हम से तो अच्छा कुत्ता है जो मालिक से वफ़ा तो करता है। हम कुत्ते से गए गुज़रे न बनें। कुछ तो सोचें कब तक अल्लाह की नाफ़रमानी करते रहेंगे, आख़िर यह कल हमारी कब ख़त्म होगी। ऐसा न हो अल्लाह को धोखा देते उम्र ही न तमाम हो जाए।

अल्लाह की रहमत के झोंके

इस उम्मत का नौजवान ऐसा क़ीमती है कि अगर यह अल्लाह पाक की इताअत पर आ जाता है तो मेरे भाईयो! इसके निकले हुए ख़ौफ़ के आँसू अल्लाह के अज़ाब को उड़ा देते हैं और इस उम्मत का बूढ़ा इतना क़ीमती है अगर यह झुकी हुई कमर के साथ क़दम उठाता है तो अल्लाह का अर्श भी हिलता है और आए हुए अज़ाब भी उठ जाते हैं। इस उम्मत के साथ अल्लह का ख़ास मामला था,

﴿اذا بلغ عبدی خمسین سنة حاسبة حسابا یسیرا.﴾

जब यह मेरा बन्दा पचास बरस का हो जाए मेरे नबी का कलिमा पढ़ा हुआ तो मैं इसका हिसाब आसान कर देता हूँ,

﴿واذا بلغ ستین حببت الیهم الانابا.﴾

और जब यह साठ बरस को हो जाए तो मैं इसे अपनी मुहब्बत देना शुरू कर देता हूँ कि अब तो मेरे पास आने के क़रीब हो गया है। अब तू दुनिया से निकल, दुकान में बैठना जाएज़ नहीं है अब तू निकल ﴿حببت الیهم الانابا﴾ अब तू साठ बरस का हो गया है मेरी तरफ़ को आ मैं अपनी तरफ़ रुजू देता हूँ।

﴿واذا بلغ سبعین سنة احب اواهل السماء.﴾

जब सत्तर साल का हो जाता है तो अल्लाह तआला कहते हैं फिर मैं भी और मेरे फ़रिश्ते भी मुहब्बत करते हैं कि सत्तर बरस का बूढ़ा हो गया है। दाढ़ी सफ़ेद हो गई।

﴿واذا بلغ ثمانين سنة.﴾

जब अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿ابناء الثمانين استحى ان اعذبهم بالنار.﴾

अस्सी बरस के बूढ़े को दोज़ख़ का अज़ाब देते हुए मुझे ही शर्म आती है, अल्लाहु अकबर! मैं कैसे अज़ाब दूँ कि यह बूढ़ा हो गया है? हाँ,

﴿كتبت حسناته والقيت سيأته﴾

अल्लाह तआला कहता है कि अब इसकी नेकियाँ ही लिखते रहो बस सठिया गया है, बूढ़ा हो गया है।

अल्लाह से यारी लगा लो

मेरे दोस्तो भाईयो! अल्लाह से यारी कर लो। तबलीग़ का काम किसी जमाअत का काम नहीं है। तबलीग़ का काम अल्लाह से यारी लगाने और दोस्ती जोड़ने का काम है। अल्लाह से दोस्ती जोड़ो, बुतों से दोस्ती तोड़ो। आज दुकान बुत बन गई है, कारोबार बुत बन गया है, तिजारत बुत बन गई है, खेती बुत बन गई, हुकूमत बुत बन गई, क़ौम भी बुत बन गई, पेशा भी बुत बन गया, सोना चाँदी भी बुत बन चुके हैं। इन सबसे हटकर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) वाला ऐलान करो,

﴿انى وجهت وجهى للذى فطر السموات والارض حنيفا وما انا من المشركين.﴾

(अलैहिस्सलाम) वाला ऐलान करो,

﴿انی وجهت وجهی للذی فطر السموات والارض حنیفا وما انا من المشرکین.﴾

मैं सबसे हट गया। सब को छोड़ दिया, सबसे मुँह मोड़ा अल्लाह की तरफ़ रुख़ कर दिया। सब पर थूक दिये अल्लाह की तरफ़ चला। अल्लाह की तरफ़ कोई चले तो अल्लाह कहता है, ﴿من تقرب الی فلقیته من بعید.﴾ जो मेरी तरफ़ चलकर आएगा मैं आगे बढ़कर तुम्हारा इस्तिक़बाल करूंगा,

من تقرب الی شبرا تقربت الیه ذراعا، من تقرب الی ذراعا
تقربت الیه باعا من اتینی یمشی اتیه هرولة.

तुम मेरी तरफ़ एक बालिश्त आओ मैं एक हाथ आऊँगा, तुम एक हाथ आओ मैं दो हाथ आऊँगा, तुम चलकर आओ मैं दौड़कर आऊँगा। तुम आओ तो सही मैं इन्तिज़ार कर रहा हूँ।

तुम्हारी नाफ़रमानियों के बावजूद तुम्हें मोहलत दे रहा हूँ। मेरे फ़रिश्ते गुस्से में हैं, ज़मीन व आसमान गुस्से में है कि इजाज़त हो तो सिर क़लम कर दें, ज़मीन फट जाए, बादल गिर पड़ें, हवाएं चल पड़ें कि उड़ा दें, पहाड़ भी चल पड़ें कि रेज़ा रेज़ा कर दें लेकिन वह रहीम करीम ज़ात इन्तिज़ार में है कि मेरा बन्दा कभी भी तौबा कर लेगा तो मैं इसकी तौबा क़ुबूल कर लूँगा।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمین.﴾

○ ○ ○

नदामत के आँसू

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

काएनात की वुसअत

यह काएनात इतनी लम्बी चौड़ी है कि इसकी जो कहकहशाएं हैं, इसमें जो सय्यारे गर्दिश कर रहे हैं उनका अगर कोई फ़र्ज़ी नाम रखा जाए तो जैसे हमने सूरज, चाँद, आतरुद इसी तरह हर सितारे का कोई नाम रख दिया जाए तो इन सितारों को सिर्फ़ गिनने के लिए तीन सौ खरब साल चाहिए और इतनी लम्बी फैली हुई काएनात में हमारी ज़मीन एक छोटी सी गेंद है। इसमें तीन हिस्से पानी और एक हिस्से खुश्की है। इस खुश्क हिस्से में दो हिस्से

जंगल हैं, दरिया हैं, पहाड़ हैं, सहरा हैं सिर्फ़ एक हिस्सा आबाद है।

सारी काएनात में सिर्फ़ ज़मीन का तीसरा हिस्सा आबाद है। एक हिस्से में एक छोटा सा पाकिस्तान है। इसमें एक छोटा सा हैदराबाद है और इसमें एक छोटा सा डाक्टर है और प्रोफ़ेसर है और वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो उससे बड़ा बेवक़ूफ़ कौन होगा। अक़्ल भी इसको तसलीम नहीं करती कि हम सब कुछ जानते हैं। पहले आमतौर पर यह होता था कि अरे जी कोई नई बात बताओ बाक़ी हम जानते हैं। अल्हम्दुलिल्लाह आजकल यह कम हो गया है।

﴿واسرو قولكم او اجهروا به انه عليم بذات الصدور.﴾

तुम आहिस्ता बोलो, ज़ोर से बोलो मैं तो दिल के भेद को भी जानता हूँ। वे भागेगें कहाँ, वे छिपेंगे कहाँ, ﴿يعلم ما يلج في الارض﴾ ज़मीन के अन्दर छिपी हुई चीज़ों को जानता है, ﴿وما يخرج فيها﴾ ज़मीन से निकलने वाली हर चीज़ को जानता है, ﴿ما ينزل من السماء﴾ आसमान पर चढ़ने वाली हर चीज़ को जानता हूँ, ﴿يعلم عدد ورق الاشجار﴾ दुनिया में पेड़ों को कोई नहीं गिन सकता, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मैं सारी दुनिया के पेड़ों की तादाद को भी जानता हूँ फिर उनमें कितने पत्ते होंगे, इसको भी जानता हूँ आज कितने गिरे हैं ﴿وما تسقط من ورقة الا يعلمها﴾ आज कितने पत्ते गिर गए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मुझे तो यह भी पता है। हम अपने घर के पेड़ के गिरने वाले पत्तों को नहीं गिन सकते। अल्लाह तआला काएनात में फैले हुए लम्बे लम्बे सैकड़ों मील के जंगलात और कहीं किनारे पर कहीं पहाड़ी पर, कहीं दामन में, कहीं वादी में, कहीं सहरा में कितने पेड़ हैं उन तमाम के अदद को जानता है,

उनके पत्तों को भी जानता है, सब्ज़ को जानता है, गिरे हुए को जानता है, जो गिरने वाला है उसको जानता है, जिस पर कली बनी है उसको जानता है, जो ख़ोशा बनेगा उसे जानता है, उस ख़ोशे पर कितने फल लगेंगे उसे जानता है, फल कब पकेगा उस वक़्त का पता है, कब कटेगा उस वक़्त का पता है, तोता खाएगा, कव्वा खाएगा, गिलहरी खाएगी इसका भी पता है। कौन सी मंडी में बिकेगा इसका भी पता है, कौन इसे ख़रीदेगा इसका भी पता है, यह गुठली कहाँ फेंकी जाएगी इसका भी इल्म है, वह गुठली आगे कहाँ पेड़ बनेगी इसका भी इल्म है। इससे आगे कितने पेड़ बनेंगे इसका भी इल्म है। एक गुठली से कितने पेड़ बनने वाले हैं इसका भी इल्म है। हर एक पर कितने फल लगने वाले हैं, उन फलों को कौन कौन खाने वाला है। अल्लाह का इल्म इतना कामिल है इतना कामिल है कि ﴿وعدد مثاقيل الجبال﴾ पहाड़ों के वज़न को जानता है, उनमें कितने ख़ज़ाने घुसे हैं उसे जानता है, उसमें हीरा कहाँ पर, याक़ूत कहाँ पर है, ज़मर्रुद कहाँ पर उसे जानता है। समुंद्र में कितना पानी है इसका पता है, कितनी मछलियाँ इसका पता, छोटी कितनी बड़ी कितनी इसका पता, कितनी इसमें आज पैदा हुईं, कितनों को आज बड़ी मछलियों ने खाया, यह मछली कौन सी मछली खाएगी, उसे कौन सी मछली खाएगी फिर इस मछली को कौन सी मछली ने खाया फिर यह मछली कौन से शिकारी के जाल में फँसेगी, यूरोप का शिकारी ले जाएगा या ऐशिया का शिकारी ले जाएगा फिर वह किस किश्ती में सफ़र करेगी, किस मंडी में बिकेगी, किस मुल्क में बिकेगी, उसके दस टुकड़े होंगे कि आठ होंगे, उसे कौन कौन खाएगा,

उसके पिंजरे को कौन सी बिल्ली खाएगी, कौन सा कुत्ता खाएगा।

अल्लाह का इल्म इतना कामिल है उससे हम कैसे छिप सकते हैं। वह अल्लाह जिसने आसमान उठा दिए, वह अल्लाह जिसने ज़मीन बिछा दी, वह जिसने सूरज चमका दिया, वह अल्लाह जिसने चाँद को घटा दिया, बढ़ा दिया, वह अल्लाह जिसने रात को अंधेरा दिया, वह अल्लाह जिसने दिन को रौशनी दी, वह अल्लाह जिसने सितारों को जगमगाहट दी, वह अल्लाह जिसने इन्सानों में रूह डाल दी, वह अल्लाह जो हवाओं का मालिक, वह अल्लाह जो फ़िज़ाओं का मालिक, वह अल्लाह जो ज़मीन व पानी का मालिक।

﴿امن خلق السموت والارض﴾ किसने ज़मीन व आसमान बनाए? अल्लाह ख़ुद सवाल करता है। ﴿وانزل لكم من السماء ماء﴾ पानी किसने उतारा? ﴿انبتنا به حدائق ذات بهجه﴾ यह ख़ूबसूरत सरसब्ज़ पेड़, किसने उगाए? ﴿ما كان لكم ان تنبتوا شجرها﴾ तुम सारे इन्सान इकठ्ठे होकर एक पेड़ अल्लाह के बग़ैर पैदा करके दिखा दो। ﴿ء اله مع الله﴾ है कोई मेरे अलावा? ﴿بل هم قوم يعدلون﴾ मैं तुम्हारा क्या करूं फिर भी तुम मुझे छोड़कर मेरे ग़ैर के पास चले जाते हो। ﴿امن جعل الارض قرارا﴾ यह ज़मीन में ठहराव किसने रखा? ﴿وجعل خلها انهارا﴾ उसमें नहरें किसने चलायीं? ﴿وجعل لها رواسى﴾ पहाड़ किसने गाड़े? ﴿وجعل بين البحرين حاجزا﴾ कढ़वे मीठे पानी को किसने जुदा किया? ﴿ء اله مع الله﴾ है कोई अल्लाह के सिवा? ﴿بل اكثرهم لا يعلمون﴾ तो मैं क्या करूं तुममें से अक्सर को समझ नहीं।

पानी अल्लाह की क़ुदरत की निशानी

﴿السحاب المسخر بين السماء والارض﴾ ज़मीन व आसमान के

बीच बादलों का मुसख़्ख़र हो जाना, ऐसे पानी के टैंकर जिनमें न कोई टंकी है न कोई टोंटी है न कोई छत है न कोई गेट है न कोई वाल पम्प है और न उस पर कोई वाल लगा हुआ है न कोई प्रेशर पम्प लगा हुआ है। धुआँ है धुआँ अन्दर जाओ तो धुआँ बरसने लगे तो सारी दुनिया को डुबो दे फिर भी उसका पानी ख़त्म न हो। पानी को ऊपर पहुँचाने के लिए अल्लाह तआला ने क्या ग़ैबी निज़ाम चलाया और टनों टन पानी अल्लाह तआला ने फ़िज़ा में खड़ा कर दिया। इतना बेवज़न है कि अगर आप अन्दर जाएं तो धुएं की तरह बिखरता हुआ नज़र आए। और उसके बादलों में एक क़तरा पानी की कमी नहीं आएगी।

वह मानसून का मुहताज नहीं, उसके अम्र ही सब कुछ है। जब अम्र होता है तो मानसून हो या न हो अल्लाह तआला दूसरी हवाओं को ही मानसून बना देता है और उसी फ़िज़ा को अल्लाह तआला पानी में बदल देता है।

कहा ﴿الآيات﴾ कहा मेरी निशानियाँ हैं लेकिन किस के लिए? फ़रमाया ﴿لقوم يعقلون﴾ जो थोड़ी अक़्ल रखते हैं उनके लिए इन सबमें निशानियाँ हैं।

छिपकली के उल्टे चलने पर ग़ौर करो

एक दफ़ा मैं लेटा हुआ था। छिपकली ऊपर जा रही थी। मैंने कहा या अल्लाह! तेरी कैसी क़ुदरत है यह उल्टी चल रही है। थोड़ी देर के बाद मुझे ख़्याल आया कि हम भी तो उल्टे बैठे हुए हैं। यह ज़मीन है और यह पाँव और सिर फ़िज़ा में है। हम सारे के सारे उल्टे ज़मीन के साथ चिपके हुए हैं। कभी महसूस हुआ

कि हम उल्टे चल रहे हैं? छिपकली को उल्टा देखते हैं तो भाई क्या अल्लाह की क़ुदरत है देखो भाई उल्टी चल रही है, गिरी भी नहीं। आप भी तो पचास साल से उल्टे चल रहे हैं कभी गिरे?

आम की जगह तरबूज़ लटके होते तो?

एक आदमी जा रहा था। तरबूज़ देखा इतना बड़ा, आम देखा छोटा सा। कहने लगा इतना बड़ा तरबूज़ ज़मीन पर रख दिया छोटे छोटे आम ऊपर लटका दिए। इसी सोच में था कि एक आम सिर पर गिरा कहा ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है तरबूज़ होता तो सिर ही टूट जाता। अब समझ में आया कि तरबूज़ ज़मीन पर क्यों है। यह अल्लाह का निज़ाम बिल्कुल ठीक है।

बिल्ली की तर्बियत कौन कर रहा है?

बिल्ली हामला होती है तो वह कोना तलाश करने लगती है बच्चे देने के लिए। उसको उसकी माँ ने नहीं बताया कि तुझे बच्चा देना है तू किसी कोने में छिपने की जगह देख। किसी टीचिंग सेंटर से नहीं सीखा, किसी नर्सिंग हाउस से ट्रेनिंग नहीं ली। इसका ऊपर से इल्हाम है कि मैं एक ऐसी जगह बच्चा दूँ कि वह ज़ाए न हो जाए। इसका कोई टीचर या उस्ताद नहीं, अल्लाह का ऊपर से निज़ाम है। इसको भी हिदायत देता चला आ रहा है। बिल्ली कोने में जाकर बच्चा देती है तो बच्चे को नहीं पता कि मेरी माँ की छाती कहाँ है और इसमें मेरी गिज़ा है। इसको माँ ने नहीं बताया।

हम तो खुद अपने बच्चे को सीने से लगाते हैं और उसके मुँह में छाती देते हैं। वह चूसता है बिल्ली तो ऐसा नहीं करती। उसके बच्चे की आँखें बन्द होती हैं। खुद सरकता है उधर को चल रहा है। तक़दीर और अल्लाह की रबूबियत उसको इस तरफ़ ले जा रही है। उसको चूसने का तरीक़ा बता रही है। हम तो अपने बच्चे के मुँह में चुसनी दे देते हैं तो उसको चूसने का तरीक़ा आ जाता है और उसकी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से तर्बियत करते हैं तो वह सीखता है।

बिल्ली का बच्चा जिसने कभी देखा नहीं सुना नहीं वह अपने आप छाती की तरफ़ लपकता है और दूध पीता है। यह सारे का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ग़ैब के पर्दों से चला रहा है।

इस बच्चे को किसने सिखाया

एक मादा वह अंडे देती है। अंडे देने के बाद वह कीड़े को डंग मारती है। ऐसे डंक मारती है कि वह मरे नहीं बेहोश हो जाए, मर जाएगा तो सढ़ जाएगा तो इतना डंक मारती है कि बेहोश हो जाए मरे नहीं।

वह इन कीड़ों को अपने अंडों के पास रख देती है और उनकी बेहोशी इतनी होती है कि जब तक वह बच्चे अंडे से बाहर नहीं आते तो उनको होश नहीं आता। जब वे बच्चे अंडे के अन्दर से निकलता है तो पहले से उसके लिए गोश्त का इन्तिज़ाम किया जा चुका होता है।

वह माँ चली जाती है। अंडे से निकलने वाला बच्चा जब

देखता है कि मेरे लिए खाना तैयार है तो फिर इसको खाता है, परवान चढ़ता है फिर उसके पर लगते हैं। फिर पूरे गाँव मे बिखर जाते हैं। यह बच्चा जब बड़ा होकर अंडे देने पर आता है तो इसी काम को करता है जो उसकी माँ ने किया था। वह न अपनी माँ को देखता है न अपनी माँ से सुनता है न अपनी माँ से सीखता है।

क़ुर्बान जाऊँ मैं तेरी क़ुदरत पर

صبنا الماء ثم شققنا الارض شقا فانبتنا فيها حبا و عنبا وقضبا و
زيتونا ونخلا و حدآئق غلبا وفاكهة وابا متاعا لكم ولا نعامكم.

हवाएं चलीं, बादल उठे, फ़र्श से अर्श से क़तरा क़तरा बनकर ज़मीन पर फैली, दाना पानी अन्दर गया। बुलबुल ज़रख़ेज़ हुई फिर हम ने दाना डाला, उसकी एक शाख़ ऊपर गई उसकी जड़ नीचे गई। उसको ग़िज़ा पहुँचाई। ज़मीन की रगों से समेटकर जड़ तक ग़िज़ा को पहुँचाया। फिर उनको उठाया है जो ऊपर उठाया है कहीं शाख़ निकली, कहीं डाली निकली, कहीं फूल निकला, कहीं शगूफ़ा निकला, कहीं फल लगा, उसमें मिठास डाली, उसमें ज़ाएके भरे, हर रंग अलग, मिठास अलग, ज़ाएक़ा अलग, ख़ुशबू अलग हर एक पर टाईम लिखा हुआ है फ़रिश्तों को मुकर्रर किया कि जब तक यह आम मेरे बन्दे के मुँ में न चला जाए मेरे पास वापस लौटकर मत आना।

इतने बड़े रहीम व करीम निज़ाम चलाने वाले के सामने सिर झुकाने के बजाए शैतान के सामने सिर झुकाएंगे तो कहाँ जाएंगे।

बूट पालिश करने वाला आईन्सटाईन से अक़्लमंद

एक छोटा सा सेल है इन्सान के जिस्म में वह हमें नज़र नहीं आता। सिवाए दूरबीन के कि उसके साथ देखने से नज़र आता है। एक फैट्स से जो इन्सोलिन बनाता है। उसके बिगड़ने पर इन्सान को शूगर हो जाता है। फिर शूगर की वजह से खाना हज़्म नहीं होता। इसलिए सारा काम ख़राब हो जाता है। इस एक सेल को जो दूरबीन से नज़र आता है बग़ैर उसके नज़र नहीं आता इस वक़्त तक लाखों इन्सान पी०एच०डी० कर चुके हैं। अरबों डालर इस पर ख़र्च हो चुके हैं तो इस एक सेल के फंक्शन का पूरा हाल मालूम नहीं हो सका तो इन्सानी जिस्म पच्चीस खरब सैल्स पर मुशतमिल है! ये सारे अन्दाज़े हैं पच्चीस छब्बीस खरब सैल्स से बना हुआ इन्सान है। तो एक सेल में इतने जहान का दिमाग़ लगा इतने पैसे लगे और नतीजा यही है कि अभी तक पूरे फंक्शन मालूम नहीं हुए।

अल्लाह कौन है?

जो बंजर ज़मीन में फल और फूल और तनावर पेड़ उगाता है। जो (ज़मीन के) दिल को फाड़ता है गुठली को तोड़ता है ज़मीन के रगों से ग़िज़ा को खींचकर जड़ों तक पहुँचाता है। ज़मीन के रगों से उसके लिए पानी आ रहा है, ग़िज़ा आ रही है फिर अल्लाह तआला ने जड़ों में छलनियाँ लगा दीं। ज़रूरत की ग़िज़ा को ऊपर ला रहा है और ग़ैर ज़रूरी ग़िज़ा को वहीं छोड़ देता है। ये तमाम काम हम तो नहीं कर रहे बल्कि यह रब्बुलआलमीन कर रहा है।

फिर अल्लाह तआला पेड़ की शाख़ को हुक्म देता है तो यह मोटी होती है फिर उसको हुक्म देता है तो यह तना बनता है फिर उसको हुक्म देता है तो शाखें निकलती हैं फिर ये शाखें उसके हुक्म से पत्ते बनते हैं फिर उनको हुक्म देता है तो उसमे फूल आते हैं फिर अल्लाह के हुक्म से वे गुच्छे बनते हैं फिर उसके हुक्म से उनमें फल बनता है ﴿وما تخرج من ثمرات من اكمامها﴾ तेरा रब ही है कि पेड़ की शाख़ों से फूल और फूल से फल पैदा करता है यह कौन कर रहा है? रब्बुलआलमीन।

फीके पानी से मीठे आम पैदा होना

फिर इसको अलग कर दिया, फिर उसमें मिठास भर दी, ख़ुशबू भर दी। हमने तो ज़मीन के नीचे चीनी को दफ़न नहीं किया लेकिन ज़मीन के अन्दर अल्लाह पाक गन्ने को चीनी से भरकर मिठास पैदा करके ऊपर लाता है। यह आम के पेड़ नीचे दो बोरी शक्कर डाल दो। आम का पेड़ यहाँ की शूगर लेकर मीठा हो जाएगा? सुब्हानअल्लाह फीकी ज़मीन और फीके पानी से आम में मीठा पानी पैदा कर रहा है। हवाओं का चलना, सूरज की किरणें और चाँद की चाँदनी यह अल्लाह का निज़ाम है।

छः महीने के बाद ख़ूबसूरत आम और सेब हमारे लिए तैयार होकर आता है। यह तमाम काम किसने अंजाम दिए? यह ख़ूबसूरत रंग वाले सेब कहाँ से लेकर आया? सेब कैसा ख़ूबसूरत रंग पकड़ता है। एक सेब रखा हुआ हो तो यह सारे कमरे को महका देता है। यह ख़ुशबू सेब के अन्दर कहाँ से आई? रब्बुलआलमीन की तरफ़ से।

बादल अल्लाह तआला की क़ुदरत का नमूना

यह पानी बादल की सूरत में समुंद्र पर बरसा। शहरों पर बरसा, बियाबानों में बरसा, सहराओं में बरसा। एक पानी से अल्लाह तआला अपनी रबूबियत का रंगारंग निज़ाम दिखा रहा है।

इस पानी को गाय पी रही है तो दूध बन रहा है, साँप और बिच्छू पी रहे हैं तो ज़हर बन रहा है, इन्सान पी रहा है तो ज़िन्दगी के सामान बन रहा है, पेड़ पी रहे हैं तो फल मेवे बन रहे हैं, फूल पी रहे हैं तो कलियाँ बन रही हैं, ख़ुशबू फैल रही है।

हम ऊपर टंकी में पानी पहुँचाने के लिए प्रेशर मोटर लगाते हैं जो पानी को पम्प करके पानी ऊपर पहुँचाती है अल्लाह तआला के पेड़ हैं जो सौ दो सौ फिट ऊँचे होते हैं। अल्लाह तआला पानी ज़मीन की रग से उठाता है और जड़ में पहुँचाता है और बग़ैर किसी प्रेशर मोटर के पेड़ के आख़िरी पत्ते तक ज़मीन का पानी पहुँचाता है।

फिर अल्लाह तआला इस पानी का बराबर तक़सीम करता है तने में पहुँचाता है, डालियों में पहुँचाता है, पत्तों और शाख़ों में पहुँचाता है। फिर पानी गुच्छों और फलों तक पहुँचाता है, फिर पानी को रस में बदलता है, फिर रस में मिठास पैदा फ़रमाता है, फिर इसको रंग में तब्दील करता है, फिर इसको ज़ाएक़ा देता है, यह सारे काम अल्लाह तआला की रबूबियत का निज़ाम है जो फ़िरऔन के लिए भी चल रहा है और मूसा अलैहिस्सलाम के लिए भी चल रहा है।

इतने अज़ीमुश्शान रब का दरबार है जो दुश्मनों के लिए भी

खुला है और दोस्तों के लिए भी खुला रहता है। अपनों को भी देता है और परायों को भी देता है, मानने वालों को भी देता है न मानने वालों को भी देता है, हराम खाने वालों को भी, हलाल खाने वाले को भी देता है। झूठ बोलकर कमाने वाले को भी देता है और सच बोलकर कमाने वाले को भी देता है, रिश्वत देने वाले को भी देता है और हलाल पर गुज़ारा करने वाले को भी। निज़ाम उसका सारा चलता है।

अल्लाह को नाराज़ करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है

मेरे भाईयो! ऐसे रब को न मानना और उसकी इताअत न करना बहुत बड़ी ज़्यादती है। बहुत बड़ी हलाकत है और बहुत बड़ा ज़ुल्म है। मेरे दोस्तो अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता हम ही अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं। अल्लाह की रबूबियत का यह निज़ाम हमेशा से चल रहा है और आइन्दा भी चलेगा।

तो भाईयो! हम खुद भी तौबा करें कि अल्लाह से कट गए। बच्चा माँ से बिछड़कर इतना नहीं तड़पता है जितना अल्लाह से बिछड़ने के बाद इन्सानियत तड़पती है और एक बात बताऊँ माँ से बिछड़कर माँ को बच्चे के लौटने का इतना इन्तिज़ार नहीं होता जितना अल्लाह को अपने नाफ़रमान बन्दे के लौटने का इन्तिज़ार रहता है। माँ रात को कुंडी नहीं लगाती, ज़रा खुला रखती है शायद रात को किसी वक़्त आ जाए। वह हवा के झोंके को भी बेटे के क़दम की आहट समझकर उठ बैठती है।

वह हर दस्तक को अपने बेटे की आवाज़ सुनती है। इससे ज़्यादा अल्लाह को इन्तिज़ार होता है नाफ़रमान बन्दे का कि आ

जा मेरे बन्दे आजा तेरे लिए मेरी राहें खुली हैं। बाज़ू फैले हैं दामन कुशादा है तू आ तो सही तौबा तो कर फिर देख तेरा मेरा ताल्लुक़ कैसे बनता है?

सबसे बनाकर देखी है अब मौला से भी बनाकर देख ले। सारे घाट का पानी पी लिया है अब नबवी घाट का भी पानी पीकर देख ले, नज़र उठाने के मज़े चख लिए नज़र झुकाने का भी मज़ा चख ले।

तू तौबा कर फिर देख मेरी रहमत

﴿ومن اقبل الی﴾ जो मेरी तरफ़ चल पड़ता है चाहे सारा दामन उसका गुनाहों से आलूदा हो और रुआं रुआं उसका गुनाहों से जकड़ा हुआ हो मेरी तरफ़ चल पड़े ﴿تلقیۃ من بعید﴾ मैं आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल करूंगा, अल्लाहु अकबर! जिससे आपको ताअल्लुक़ होता है ना आप उसे देखकर उठ पड़ते हैं और आगे बढ़कर उसको मिलते हैं। नहीं मिलते? अल्लाह तआला कह रहे हैं जो मेरी तरफ़ आ जाए मैं आगे बढ़कर उसको मिलूंगा फिर यही नहीं जो हम से मुँह मोड़े हम दस दफ़ा मुँह मोड़ते हैं। अल्लाह क्या कह रहे हैं ﴿ومن اعرض عنی﴾ और जो मुझसे मुँह मोड़ लेता है ﴿نادیتہ عن قریب﴾ मैं उसके क़रीब जाकर उसे कंधे से पकड़कर यूँ बुलाता हूँ ऐ मेरे बन्दे कहाँ जा रहा है, मसूअला तो इधर हल होगा। मुझे छोड़कर कहाँ चल दिया और इसको क़ुरआन में यूँ अल्लाह तआला ने बयान किया है—

﴿یاایھا الناس ما غرك بربك الکریم.﴾

ऐ मेरे प्यारे बन्दे तुझे किसने धोका दे दिया अपने रब की

खुला दरबार है ﴿لا اله الا الله﴾ ला इलाह इल्लल्लाह।

शैतान ने कहा ﴿ولا ابرح اغفا عبادك﴾ तेरे बन्दों को मुसलसल गुमराह करूंगा। अल्लाह तआला ने फरमाया ﴿ولا ابرح اغفرلهم استغفرلي﴾ और मैं भी उन्हें मुसलसल माफ़ करूंगा जब तक वे तौबा करते रहेंगे। शैतान ने गुमराही का दरवाज़ा खोला और अल्लाह तआला ने माफ़ी का दरवाज़ा खोला। उसने गुमराही के असबाब बनाए, अल्लाह ने तौबा के असबाब बनाए।

कहा चल तौबा कर लाख बरस के हों या हज़ार बरस के हों तेरे एक बोल पर सब माफ़ कर दूँगा। कहाँ तक होंगे? आसमान की छत तक गुनाह चले जाएं, इतने करेगा कौन और कौन कर सकता है? और कैसे कर सकता है? और कैसे हो सकते हैं?

ज़मीन व आसमान के बराबर गुनाह और अल्लाह की माफ़ी

अल्लाह कहता है कि तू इतने कर और सारे दिल के अरमान निकाल ले और काएनात को अपने गुनाहों से भरकर आसमान की छत तक अपने गुनाहों को पहुँचा दे तो तेरे एक बोल पर कि या अल्लाह! माफ़ कर दे। मैं सारे माफ़ कर दूँगा और मुझे कोई परवाह न होगी। ﴿لا ابالی﴾ कहा मुझे परवाह ही नहीं क्या हुआ ﴿ان استطالي اقلت له﴾ अगर तू फिर तौबा तोड़ दे और फिर मुँह मार ले गुनाहों में फिर आजा फिर तौबा कर ले हम फिर माफ़ कर दें। फिर टूट गई फिर तौबा कर ले हम फिर माफ़ कर देंगे क्यों?

﴿لا تضره الذنوب ولا تنقصه المغفره﴾

हमारे गुनाहों से उसको कुछ नुक़सान नहीं और माफ़ करने से वह कम नहीं पड़ता लिहाज़ा वह इन्तिज़ार में रहता है कि कब तौबा करें और हमारी माफ़ी का परवाना दिया जाए।

माथों को सज्दों से सजा लो

मेरे भाईयो! अल्लाह के वास्ते अल्लाह के घरों को आबाद कर लें। इन माथों को सज्दों से सजा लें। इस ज़बान को सच से मुज़य्यन कर लें, इस दामन को पाक कर लें, पाकीज़ा कर लें, और अल्लाह के यहाँ कोई देर नहीं इधर हम तौबा करें उधर सारी ज़िन्दगी के गुनाह धोकर अल्लाह तआला बाहर निकाल देगा और एक दफ़ा भी ताना नहीं देगा देर से क्यों आए हो? माँ ताने देगी, बाप ताना देगा, बच्चे ताना देते हैं, दोस्त ताना देते हैं पहले कहाँ थे? अल्लाह तआला ताने नहीं देगा। पचास साल के बाद तौबा करने आ गए हो पहले कहाँ थे? यह तो ज्यों ही हम कहेंगे या अल्लाह मैं आ गया। अल्लाह कहेगा मरहबा! मैं तो पचास साल से तेरे इन्तिज़ार में बैठा था, मरहबा आ जाओ, मैं सत्तर साल से तेरे इन्तिज़ार में बैठा था, मरहबा! मैं तो बीस साल से देख रहा था कि कब तेरी ज़िन्दगी मेरी तरफ़ मुड़ जाए।

आ जाओ! आ जाओ! आ जाओ! मेरे रास्ते खुले हैं, मेरी बांहें खुली हैं, मेरा दर खुला है, मेरा दरबार खुला है। तेरी तौबा हुई और सातों आसमानों में डंका बजा, सातों आसमानों में चिराग़ां होता है सातों आसमानों में रौशनियाँ जैसे शादी वाले घर में रौशनी पता चला शादी हो रही है। सातों आसमान में रौशनी फ़रिश्ते कहते हैं यह रौशनी कैसी रौशनी है?

अल्लाह का पसन्दीदा बोल अल्लाह मेरी तौबा!

मेरे भाईयो! अल्लाह पाक की ज़ात मुनफ़इल है। मुनफ़इल अरबी ज़बान का लफ़्ज़ है। इसका मतलब है किसी वाक़िए से दिल पर असर न लेना। अल्लाह पाक की ज़ात मुनफ़इल ज़ात है असर से पाक है। यह नहीं कहता अच्छा अब आए हो जब मुँह में दाँत नहीं रहे और नज़र आता नहीं, अब आए हो तौबा करने नहीं नहीं ज़िन्दगी के आख़िरी साँस में भी तौबा करे तो क़ुबूल है। पर तौबा करे ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर। यह जुमला अल्लाह को ऐसा पसन्द है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अगर सारे फ़रमांबरदार बन जाओ और तुममें कोई गुनाह न करे तो अल्लाह तआला तुम सबको मौत देकर ऐसी क़ौम लाए जो गुनाह करे फिर तौबा करे फिर अल्लाह उनको माफ़ करे ﴿لو وجد الله توابا رحيما﴾ कहा तुम मुझे मेहरबान पाओगे। तौबा करो। मेरी तौबा हो गई। मेरी दुनिया और आख़िरत की मुसीबतें अब टल जाएंगी। ख़ुशी अल्लाह तआला मना रहे हैं। जिसको हमारी तौबा की परवाह नहीं। हम तौबा करें तो वह ग़नी, हम नमाज़ पढ़ें तो वह ग़नी न पढ़ें तो वह ग़नी।

हमारी इताअत उसको ऊँचा नहीं करती, हमारी नाफ़रमानी उसको नीचा नहीं करती, हमारी फ़रमांबरदारी से उसकी इज़्ज़त ज़्यादा नहीं होती, हमारी नाफ़रमानी से उसकी इज़्ज़त कम नहीं होती लेकिन फिर भी वह चिराग़ां करता है। चलो भाई मेरा बन्दा मेरे पास आ गया। और जो मुझ से रूठ जाता है तो मैं उसके पीछे जाता हूँ उसे कंधे से पकड़ता हूँ इधर आ जा इधर आ जा

जैसे माँ शफ़क़त से बच्चे को पकड़ती है इधर आ जा मेरा बच्चा। इसी तरह अल्लाह अपने बन्दे और बन्दी के कंधे पर हाथ रखता और कहता है इधर आ जा, इधर आ जा, उधर तेरे लिए हलाकत के सिवा कुछ न होगा। मैं तेरा इन्तिज़ार कर रहा हूँ।

मैं तेरे इन्तिज़ार में हूँ तू आ तो सही!

﴿ان ذکرتنی ذکرتك﴾ तू मुझे याद करते हो मैं तुझे याद करता हूँ, ﴿ان نسیتنی ذکرتك﴾ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद करता हूँ, ﴿طوالینی واولیق﴾ तू मुझसे दोस्ती लगाता है मैं तुझसे बढ़कर दोस्ती लगाता हूँ। अल्लाह क़ह रहा है ﴿نحن اقرب الیه من حبل الورید﴾ मैं तेरी रगे जान से ज़्यादा तेरे क़रीब हूँ और अल्लाह मिल गया सब कुछ मिल गया, माल नहीं मिला कोई बात नहीं। मिल गया *"अल्हम्दुलिल्लाह"* न मिला फ़िर भी *"अल्हम्दुलिल्लाह"* अल्लाह मिल गया सब कुछ मिल गया।

तू मिल गया तो सब मिल गया

﴿لیتك تحلو ولا یام مریرة لیتك ترضی ولا نام غطاب.﴾

तेरा मेरा तार जुड़ गया मगर सारे जहान से मेरा तार कट गया तो कोई परवाह नहीं।

﴿فاذا التح منك الود فلكل هین وكل الذی فوق التراب التراب.﴾

ऐ मेरे मौला! तेरे मेरे तअल्लुक़ में कोई हर्फ़ न आए कोई फ़र्क़ न आए और सारा जहान छिन छिन जाए और मिट्टी हो जाए चाहे मैं भी मिट्टी हो जाऊँ पर कोई परवाह नहीं कि मेरी तेरी मुहब्बत बाक़ी रहेगी और इसी पर तू मुझे उठाएगा।

इधर तौबा उधर मग़फ़िरत का परवाना

मेरे भाईयो! जब अल्लाह इतना करीम है तो आज नियत तो कर लो या अल्लाह मेरी तौबा! अरे बोलो तो सही। भाई हम आज तौबा कर लें। अब ख़ुशख़बरी सुनो। मुझे नहीं पता कि किसने सच्ची की किस ने मुँह ज़बानी की लेकिन जिसने सच्ची तौबा की है मुझे उस रब की क़सम जिसने आसमान की छत को ताना है, ज़मीन के फ़र्श को बिछाया, चाँद को घटाया और बढ़ाया, रात को अंधेरा बख़्शा, दिन को उजाला बख़्शा, मुझे उस ज़ुलजलालि-वल-इकराम की क़सम! जो इस मजमे में सच्ची तौबा कर चुके हैं उन्हें मुबारक हो आज इस वक़्त वे ऐसे बैठे हैं कि अभी अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हों। मौज करो, तुम्हारे उल्टे हाथ वाली फ़ाईल अल्लाह ने फाड़ दी, फेंक दी, फ़रिश्ते की तीस साल मेहनत ज़ाए हो चुकी है, बीस साला, पचास साला, सत्तर साला, अस्सी साला, पच्चीस साला, चालीस साला उसकी मेहनत ज़ाए हो गई। सारी फ़ाईल अल्लाह ने फाड़ दी, जला दी और फ़रमाया नई लगा दो।

मुबारक हो उनको जिन्होंने सच्ची तौबा की। अब जिन्होंने झूठमूठ की है वह अब सच्ची तौबा कर लें। मामला पाक हो जाए, साफ़ हो जाए। अब क्या हुआ। हुक़ूक़ बाक़ी सौ रुपए दबा लिए सौ रुपए चोरी माफ़ हो गई सौ रुपए अदा करना बाक़ी है, नमाज़ छोड़ी नमाज़ का छोड़ना यह जुर्म माफ़ हो गया नमाज़ की अदाएगी बाक़ी। इसलिए कह रहा हूँ सारे माफ़ हो गए। हाँ हुक़ूक़ हैं उनकी अदाएगी रह गई, जुर्म माफ़ हो गया तो भाई यह काम तो कर लिया सबने?

आज शैतान भी अल्लाह से उम्मीद लगाए बैठा है

अल्लाह इस दर्जे का रहीम है। एक हदीस में आता है कि अगर शैतान को भी अल्लाह की रहमत का पता चल जाए तो वह भी जन्नत का उम्मीदवार बन जाए हाँलाकि उसको अल्लाह ने कह दिया है कि तेरे लिए जहन्नम है। अल्लाह के यहाँ शिद्दत नहीं है। मरीज़ का आप्रेशन हो तो क्या डाक्टर ज़ुल्म करता है? मुसलमानों के पास वसाईल नहीं हैं तो क्या मतलब अल्लाह ग़ाफ़िल हैं? नहीं ऐन रहमत है कि उनको दुनिया में ही गुनाहों से धोना चाहता है। आगे पकड़े तो बर्बाद हो जाएं। हमारी गाड़ी का पहिया पंक्चर है वरना सड़क तो बहुत अच्छी है। जब हमारी गाड़ी का टायर पंक्चर हो तो सड़क पर कैसे चलें?

नाफ़रमानी के बावजूद अल्लाह की करम नवाज़ी तो देखिए

अल्लाह फ़रमाते हैं मेरे बन्दे जब तुम में जवानी की लहर उठी और तू बड़ा हुआ, तेरे बाज़ू मज़बूत हुए तूने क्या किया? ऐ बुरे इन्सान तू मेरा ही नाफ़रमान बन गया, तूने मुझे कैसे ललकारा, मेरा नाफ़रमान हो गया। मेरे हुक्मों को तोड़ दिया।

﴿بالمعاصی﴾ नाफ़रमानी के साथ मुझसे टक्कर ली ﴿وما ذالك﴾ इसके बावजूद कि तू मेरा नाफ़रमान है ﴿وما ذالك ان سالتنی اعطیتك﴾ तू मांगता है मैं देता हूँ ﴿استغفرتنی غفرة لك﴾ तू तौबा करता है मैं तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿استغلتنی اغلت لك﴾ तू फिर तौबा

तोड़ता है फिर आकर तौबा करता है मैं तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿هكذا جزاء من احسن اليك﴾ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं फ़ैसला कर कि एहसान करने वाले के साथ यही मामला किया जाता है जो तू मेरे साथ कर रहा है? ﴿هكذا جزاء من احسن اليك﴾ यही किया जाता है जो तुम कर रहे हो?

माँ-बाप क्यों दुखी होते हैं औलाद पर। औलाद नाफ़रमान होती है, एहसान याद आते हैं हम ने क्या किया, यह किया। अल्लाह का एहसान तो देख कि उसने गंदे पानी से ख़ूबसूरत इन्सान बनाया फिर उसका कितना बड़ा एहसान है कि उसने इस्लाम की दौलत बख़्शी, कितना बड़ा ज़ुल्म, कितनी बड़ी हलाकत है कुफ़्र पर मर जाना। कभी भी तो जहन्नम से नहीं निकलेंगे ﴿وما هم بخارجين من النار﴾ कोई दिन तो आता कि ये जहन्नम से निकलते कोई दिन नहीं आता कितना बड़ा अल्लाह ने एहसान किया कि ईमान की दौलत दी।

मैं तेरे इन्तिज़ार में बैठा हूँ

अर्श के ऊपर एक बड़ी तख़्ती है जिसकी लम्बाई चौड़ाई को अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। अल्लाह ने खुद लिखवाया है मेरी रहमत मेरे गुस्से से आगे चली गई। अल्लाह फ़रमाते हैं ऐ मेरे बन्दे! मैं तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है, मैं तेरे गुनाहों पर पर्दा डालता हूँ तू फिर भी मुझसे नहीं डरता, मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ, तू नाराज़ होकर मुँह फेर जाता है मैं नहीं मुँह फेरता मैं तेरे इन्तिज़ार में रहता हूँ।

घोड़े से वफ़ादारी सीखो

मेरे भाईयो! अल्लाह की रहमत का मतलब यह थोड़े है कि अल्लाह मेहरबान है उसकी नाफ़रमानी करो। अल्लाह तआला ने सूरहः "आदियात" में कैसा गिला किया है।

अल्लाह तआला ने घोड़े की क्यों क़समें खायीं? ऐ मेरे बन्दे तूने घोड़ा बनाया है? तूने उसे पाला है? मैंने तेरी मिलकियत में दे दिया। कुछ दिन तूने दाना खिलाया, पानी पिलाया। अब तू उस पर ज़ीन रखता है। उसको ऐड़ लगाता है वह तेरी मानकर चलता है। दुश्मन पर हमला करता है सीने पर तीर खाता है, थका हारा आता है फिर तू सुबह को उसकी पीठ पर ज़ीन रखता है फिर ऐड़ लगाता है वह नहीं कहता मैं थका हुआ हूँ छोड़ दो, मुझे आराम करने दो नहीं तेरी लगाम के इशारे को समझता है। थाप मारता है, चिंगारी उड़ाता है, दौड़ता जाता है, गुबार उड़ाता है, दुश्मन के बीच घुसता है।

ऐ मेरे बन्दे! घोड़े ने तो तेरी फ़रमांबरदारी की पर तू मेरा नाफ़रमान निकला, मेरा नाशुक्रा निकला। कैसा गिला अल्लाह ने किया है तुझे किसने धोके में डाल दिया मुझसे जिसकी रहमत की इन्तिहा नहीं। पूरी दुनिया मिल जाए तो इतने गुनाह नहीं कर सकती कि ज़मीन भर जाए, आसमान व ख़ला भर जाए पूरी दुनिया मिल जाए तो इतने गुनाह नहीं कर सकती लेकिन उसकी रहमत के क़ुर्बान जाएं एक आदमी को अल्लाह को बुलाएगा क़यामत के दिन जो तौबा कर चुका है। मेरे बन्दे तूने यह गुनाह किया? जी हाँ। यह गुनाह किया है? अल्लाह तआला गुनाह

गिनता जाएगा और काँपता जाएगा कि अब मर गया। तो जब उसकी हालत ग़ैर होगी तो अल्लाह फ़रमाएगा अच्छा सुनो तूने जितने गुनाह किए मैंने सबका नेकियों से बदल दिया तो वह जल्दी से कहेगा या अल्लाह! वह मेरे गुनाह तो तूने गिनवाए ही नहीं जो पिछले किए हुए हैं ताकि और नेकियाँ मिल जाएं। यह अल्लाह तआला की रहमत इतनी आगे है कि उनके गुनाहों को भी अल्लाह तआला नेकियों से बदल देगा।

किसी ने बेशुमार गुनाह किए हों और हज़ारों साल के बाद एक दफ़ा कह दे या अल्लाह! माफ़ कर दे। अल्लाह वहीं कहता है आ जा! आ जा! मैंने माफ़ कर दिया।

लाख बार गुनाह! लाख बार तौबा

माँ को मनाना पड़ता है, मिन्नतें करनी पड़ती हैं। अल्लाह की मिन्नत नहीं करनी पड़ती। इतना कहना पड़ता है या अल्लाह माफ़ कर दे। अल्लह कहता है मैं तो कब से इन्तिज़ार में था तू एक दफ़ा तो कह माफ़ कर दे। जा मैंने माफ़ कर दिया, जा मैंने माफ़ कर दिया और देख सुन ले अगर यह तौबा टूट जाएगी तो घबराना नहीं फिर आ जाना फिर माफ़ कर दूँगा फिर टूट जाए फिर आ जाना मैं फिर माफ़ कर दूँगा। मैं दुनिया का बादशाह नहीं हूँ कि तंग पड़ जाऊँ। तेरी तौबा लाख दफ़ा टूट जाए तू लाख दफ़ा जोड़े और हो तो सच्चा, सच्चे दिल के साथ तो मैं लाखवीं दफ़ा भी उसी मुहब्बत के साथ तेरी तौबा को जोड़ दूँगा जैसे तेरी पहली तौबा को क़ुबूल करके जोड़ा था। इसी से बग़ावत करनी है।

जब आदमी तौबा करता है तो सारे आसमान में चिराग़ां किया जाता है। अरे भाई यह क्या हो रहा है? तो एक फ़रिश्ता ऐलान करता है कि आज एक बन्दे ने अपने अल्लाह से सुलह कर ली और तौबा कर ली है। उसकी ख़ुशी में चिराग़ां है। चिराग़ां तो वह करे जिसने तौबा की, चिराग़ां वह कर रहा है जिसको हमारी तौबा की ज़रूरत ही नहीं अल्लाहु अकबर।

गुनाहगार की तौबा पर अल्लाह की ख़ुशी

जब आदमी तौबा करता है तो आसमान पर ऐसे चिराग़ां होती है जैसे ये आपने लाइटे जलायीं हुई हैं। तो फ़रिश्ते कहते हैं क्या हुआ भाई, ये रौशनियाँ क्यों हैं? तो फ़रिश्ता ऐलान करता है ﴿اصلح العبد على مولاہ﴾ भाई आज एक बन्दे ने अपने मौला से सुलह कर ली है तौबा कर ली है। अल्लाह तआला ने कहा कि इस ख़ुशी में चिराग़ां करो कि मेरे बन्दा आ गया। तो भाई हम चाहे पुलिस वाले हों, चाहे ज़मींदार हों, चाहे ताजिर हों, मस्अला तो हम सबका अल्लाह ही से जुड़ा हुआ है लिहाज़ा भाई हम अपने अल्लाह को मनाने के लिए अल्लाह की तरफ़ रुजु करें और तौबा करें। मज़े हो गए भाई क्या करें? भाई तौबा कर लें।

शैतान की स्कीम

शैतान क्या कहता है। अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर्रहीम है लिहाज़ा सब काम करो। झूठ भी बोलो शराब भी पियो, रिश्वत भी लो, यह तमाम काम क्यों करो कि अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर्रहीम है। यह अजीब

फ़लसफ़ा चल पड़ा है कि अल्लाह बड़ा मेहरबान है जी। लिहाज़ा सब झूठ, रिश्वत, बददियानती, ख़्यानत तमाम काम करो क्योंकि अल्लाह बड़ा मेहरबान है। हाँ भाई कुत्ते से सबक़ लो कि एक रोटी के साथ वफ़ा करता है, काटता नहीं, आपके सामने लेट जाता है और पिटने को तैयार हो जाता है। दो दिन रोटी न डालो आपका दर छोड़कर किसी दूसरे के दर पर नहीं जाता। अल्लाह थोड़ा सा झटका दे दे तो सब की हाय हाय। हम ही मिले थे अल्लाह को और कोई मिला ही नहीं।

तो भाई अल्लाह करीम है तो हम क्या करें कि हम तौबा करें जो मेरे ऊपर इतना एहसान कर रहा है तो मैं भी तो इस एहसान का बदल दूँ जिसने हवाओं को हुक्म दिया चलो मेरे बन्दे के लिए कभी बादलों के टोले के टोले लेकर, कभी किश्तियों को लेकर, जिसने ज़मीन को हुक्म दिया कि निकालो अपने ख़ज़ाने, कभी सोने की शक्ल में कभी चाँदी की शक्ल में कभी पीतल की शक्ल में, कभी लोहे की शक्ल में, कभी तांबे की शक्ल में, कभी खोट की शक्ल में, कभी तलवारों की शक्ल में जिस तरह बादलों को हुक्म दिया कि बरसो मेरे बन्दों पर क़तरे क़तरे बनकर।

मैं तुझे अज़ाब देकर क्या करूंगा

और एक वजह न पकड़ने की यह है कि अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, रहीम है, करीम है, उनसे तौबा चाहता है।

﴿ما يفعل الله بعذابكم ان شكرتم وامنتم وكان الله شاكرا عليما.﴾

मैं तुम्हें अज़ाब देकर क्या करूंगा अगर तुम ईमान ले आओ

और मेरे फ़रमांबरदार बन जाओ तो मैं तुम्हें अज़ाब देकर खुश नहीं हूँ।

अल्लाह तआला अपने अज़ाब को टालता है। बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता है। सुब्हानअल्लाह क़ुर्बान जाएं उसकी रहमत पर मैं इस ज़ालिम की तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूँ, ﴿ان اعطانی ليلا قبله﴾ शायद किसी रात में तौबा कर ले, ﴿ان اعطانی نهاراً قبله﴾ शायद किसी दिन में तौबा कर ले।

कोई तो वक़्त आएगा इस पर, किसी रात तो ख़्याल आएगा कि अब तौबा कर लूँ, अब अल्लाह की तरफ़ लौटूँ और जब तौबा करता है ﴿السبحان الخالق﴾ सारे मुत्तक़ी हो जाएं उसे परवाह नहीं, सारे मुजरिम हो जाएं उसे परवाह नहीं। इसके बावजूद वह अल्लाह वह रहीम वह करीम, हन्नान, मन्नान मेहरबान है।

आँसुओं की करामत

जब कोई मर्द या औरत अपनी पिछली ज़िन्दगी से तौबा करता है और अल्लाह की तरफ़ झुकता है और उसकी आँखों से आँसुओं के दो क़तरे निकलते हैं तो अल्लाह तआला इस खुशी में सारे आसमान पर चिराग़ां कर देते हैं। पूरे आसमान पर रौशनियाँ ही रौशनियाँ होती हैं।

फ़रिश्ते कहते हैं यह रौशनियाँ क्यों हो रही हैं? तो ऊपर से एक फ़रिश्ता ऐलान करता है ﴿اصلح العبد على مولاه﴾ आज एक रूठा हुआ बन्दा अपने मौला के पास पहुँच गया है और अपने रब से सुलह कर ली।

हमें ज़रूरत है चिरागां करने की या अल्लाह को ज़रूरत है। तौबा की हमें ज़रूरत है या अल्लाह को ज़रूरत है और मैं ज़रूरतमंद, मुहताज हूँ। क़दम क़दम पर हर साँस हर आन, हर घड़ी में अल्लाह का मुहताज हूँ बजाए इसके कि हम खुश हों अल्लाह खुश हो रहा है। अल्लाह तआला फ़रिश्तों में ऐलान कर रहा है जाओ जाओ ऐलान करो आज मेरा एक बन्दा जो मुझ से रूठा हुआ था आज मुझ से मिल गया और उसने तौबा कर ली।

मैं तो माँ से भी ज़्यादा मेहरबान हूँ

आज मेरी एक बाँदी ने आज मेरी एक बन्दी ने जो मुझसे रूठी हुई थी, आज उसने तौबा कर ली है और मेरे दर पर आ गई है। अल्लाह तआला खुश हो रहे हैं। इसलिए नहीं पकड़ता बल्कि अल्लाह मोहलत देता है ऐ मेरे बन्दे तौबा कर ले तौबा कर ले, तौबा कर ले, तौबा। जो ऐसा रहीम व करीम है कि जब तक आदमी तौबा करता है माफ़ी होती रहती है। माँ-बाप से आदमी एक दफ़ा नाफ़रमानी करके माफ़ी मांगे वह कर देंगे, दूसरी दफ़ा, तीसरी दफ़ा करेंगे तो फिर वह कहेंगे तूने तो वतीरा बना रखा है। हमारा मज़ाक़ उड़ाता है। तू हमारी नाफ़रमानी करता है फिर कहता है माफ़ कर दो।

अल्लाह पाक की ज़ात के क़ुर्बान जाएं सारी ज़िन्दगी तौबा तोड़ता रहे और सारी ज़िन्दगी कहता है ऐ अल्लाह माफ़ कर दे, पर हो सच्ची तौबा अल्लाह कहता है ﴿وان تستغفرني غفرت لك﴾ ऐ बन्दे तो कहता है कि माफ कर दे तो मैं माफ करता हूँ तू फिर

तोड़ता है और फिर कहता है ﴿يا اللّٰه ان استقالني﴾ पिछला मामला तो ख़राब हो गया अब मैं नया मुआहिदा करता हूँ फिर नए सिरे से तौबा करता हूँ मेरे पिछले जुर्म माफ़ कर दे। तो अल्लाह तआला कहता है ﴿استقالني عفوته﴾ बन्दा कहता है कि पिछली छोड़ दो तो मैं कहता हूँ कि अच्छा छोड़ दिए, ख़त्म कर दिए।

﴿ان استعاذني اعذبته﴾ बन्दा कहता है ऐ अल्लाह पनाह दे दे तो मैं दोबारा पनाह देने के लिए तैयार हो जाता हूँ।

﴿لو بلغت ذنوبك عنان السماء﴾ तुम इतने गुनाह करो कि ज़मीन भर जाएं, सय्यारे भर जाएं फिर तुम्हारे गुनाह मेरे आसमान को लग जाएं मेरा आसमान तेरे गुनाहों से काला हो जाए लेकिन फिर तुझे ख़्याल आए तौबा का और तू कहे ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला कहते हैं ﴿غفرت لك ولا ابالي﴾।

माँ से ज़्यादा प्यार करने वाला कौन?

मैं सारे ही माफ़ कर देता हूँ, मुझसे कोई पूछने वाला नहीं, ऐसा कोई नहीं मिलेगा कि जब हम कहते हैं या अल्लाह वह आगे से कई दफ़ा कहता है ﴿لبيك لبيك يا عبدي﴾ जो माँ का इकलौता बेटा जिगर का टुकड़ा, आँखों का तारा जब कहता है माँ! वह कहती है जी वह कहता है अम्मा! वह कहती है जी फिर वह कहता है अम्मा! वह कहती है चुप कर सिर न खा। बाप भी यही कहता है। वह कहता है अब्बा! तो वह कहता है जी, वह कहता है अब्बा! वह कहता है हूँ, वह कहता है अब्बा! वह कहता है बकवास न कर।

उस मालिक के क़ुर्बान जाएं पूरा जिस्म नाफ़रमानी में नुमायां है, रुंआ, रुंआ अल्लाह की नाफ़रमानी से दाग़दार है, सारा दामन तार तार है, इस ज़िन्दगी का कोई गोशा ख़ैर का नहीं, कोई अमल भलाई का नहीं। इस सारी गन्दगियों के बावजूद अगर हाथ उठाकर कहता है या अल्लाह! तो कहता है ﴿لبيك لبيك يا عبدى﴾ ओ मेरे बन्दे बोल तो सही क्या कहता है? हम अल्लाह अल्लाह पुकारते हैं वह लब्बैक लब्बैक कहता रहेगा। हम पुकारते पुकारते थक जाएंगे, वह जवाब देता नहीं थकेगा।

एक गुलूकार की तौबा का मुहब्बत भरा वाक़िआ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में एक गवैया था। छिप छिपकर गाता था। गाना बजाना तो हराम है। छिप छिपकर गाकर वह अपन शौक़ पूरा करता था। लोग कुछ पैसे उसको दे देते थे। एक दफ़ा जब वह बूढ़ा हो गया, आवाज़ ख़त्म हो गई तो आया फ़ाक़ा, आई भूख। अब गया जन्नतुलबक़ी में एक झाड़ी के पीछे बैठ गया और कहने लगा या अल्लाह जब आवाज़ थी तो लोग सुनते थे। अब आवाज़ न रही तो सुनना छोड़ गए। तू सबकी सुनता है, तुझे पता है मैं कमज़ोर हूँ, बेशक तेरा नाफ़रमान हूँ पर ऐ अल्लाह मेरी ज़रूरत को पूरी फ़रमा।

ऐसी आवाज़ लगाई, ऐसी सदा बुलन्द की कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में लेटे हुए थे, आवाज़ आई कि मेरा बन्दा मुझे पुकार रहा है। उसकी मदद को पहुँचो। बक़ी में फ़रियादी है उसकी फ़रियाद रसी करो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु नंगे पाँव दौड़े, देखा तो बड़े

मियाँ झाड़ी के पीछे अपना क़िस्सा सुना रहे हैं। जब उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा तो उठकर दौड़ने लगे। कहा बैठो बैठो, ठहरो ठहरो मैं आया नहीं बल्कि भेजा गया हूँ। कहा किसने भेजा है?

कहा जिसे तुम बुला रहे हो उसने भेजा है, जिसे तुम पुकार रहे हो उसी ने भेजा है। तो उसने आसमान पर निगाह डाली ऐ अल्लाह! सत्तर साल तेरी नाफ़रमानी में गुज़री तुझे कभी याद नहीं किया। जब याद किया तो अपने पेट की ख़ातिर याद किया। तूने फिर भी मेरी आवाज़ पर लब्बैक कहा, ऐ अल्लाह मुझ नाफ़रमान को माफ़ कर दे और ऐसा रोया कि जान निकल गई। मौत आ गई।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद उसका जनाज़ा पढ़ाया। तो मेरे भाईयो अल्लाह पकड़ते इसलिए नहीं कि अल्लाह जल्लजलालुहू रहीम है, करीम है और अपने बन्दे पर रहम चाहते हैं, अपने बंदे पर फ़ज़्ल चाहते हैं, अपने बन्दे को जहन्नम में नहीं डालना चाहते। तो मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने दरवाज़े खोल दिए हैं मौत तक के लिए तौबा के दरवाज़े खुल हुए हैं ﴿باب التوبة مفتوح مالكم يغرغر﴾ तौबा का दरवाज़ा खुला है जब आदमी की जान हलक़ में न आ जाए। ग़रग़रा शुरू होने से पहले पहले तक तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है। मर्दों के लिए भी औरतों के लिए भी।

गुनाहगार बन्दे की तौबा का हैरतअंगेज़ वाक़िआ

बनी इसराईल में एक नौजवान था। बड़ा नाफ़रमान था। शहर वालों ने बाइकाट कर दिया, उसको शहर से बाहर निकाल दिया। वह वीराने में चला गया। किसी को सीधे रास्ते पर लाने का यह

तरीक़ा नहीं होता कि उसका बाइकाट कर दिया जाए बल्कि उससे मुहब्बत की जाए। उसके लिए दुआ की जाए, उसको समझाया जाए तो उन्होंने निकाल दिया। वह वीराने में चला गया, वहाँ कोई आने वाला नहीं, जाने वाला नहीं, पीने को कुछ नहीं। मौत के आसार शुरू हुए। मरते दम तक तौबा नहीं की, अकड़ता रहा, जब मौत के आसार नज़र आए तो अब कहने लगा—

ऐ अल्लाह! सारी ज़िन्दगी कट गई तेरी नाफ़रमानी में। अब मौत देख रहा हूँ सामने है लेकिन मुझे बता मुझे अज़ाब देकर तेरा मुल्क ज़्यादा हो जाएगा? और माफ़ करने से तेरा मुल्क थोड़ा हो जाएगा। ऐ मेरे रब! अगर मुझे यह पता होता कि मुझे अज़ाब देगा और तेरा मुल्क बढ़ जाएगा और माफ कर देगा तो तेरा मुल्क घट जाएगा तो मैं तुझसे कभी बख़्शिश न मांगता, मुझे पता है कि मुझे माफ़ करके तेरे मुल्क में ज़्यादती नहीं, मुझे माफ करे तो तेरे मुल्क में कमी नहीं, यह देख ले मैं नाफ़रमान तो हूँ और बड़ी ज़िल्लत में मर रहा हूँ, कोई मेरा संगी नहीं कोई मेरा साथी नहीं, सबने मुझे छोड़ दिया, मेरे सारे सहारे टूट गए हैं। अब तू मुझे न छोड़, मुझे माफ़ कर दे, मुझे माफ़ कर दे और इतने में जान निकल गई।

मूसा अलैहिस्सलाम पर "वही" आई कि ऐ मूसा! मेरा एक दोस्त वहाँ खंडरात में मर गया है। उसका जाकर ग़ुस्ल का इन्तिज़ाम करो, उसका जनाज़ा पढ़ो और शहर के सारे नाफ़रमानों में ऐलान कर दो आज जो बख़्शिश चाहता है उसका जनाज़ा पढ़ ले। उसकी भी बख़्शिश हो जाएगी।

जब मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया तो लोग भागे हुए गए

देखा तो वही जुवारी, शराबी, ज़ानी तो उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा आप क्या कहते हैं। यह तो वह है जिसको हमने निकाल दिया था और आपका रब कह रहा है कि जिसको बख़्शिश चाहिए इसका जनाज़ा पढ़ ले। अल्लाह तआला की बारगाह में जब अर्ज़ की तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया यह भी सच है मैं भी सच्चा हूँ यह ऐसा ही था जैसे बता रहे हैं लेकिन मरने लगा,

﴾فرايت نفسه حقيرة وسعيرة وذليلة﴿

मैंने उसको देखा कि ज़लील होकर मर रहा है, तन्हाई में मर रहा है, ﴾ولا كريما ولا قريبا﴿ कोई दोस्त नहीं, कोई रिश्तेदार नहीं ऐसी बेबसी में जब उसने कहा—

ऐ अल्लाह! सबने छोड़ा तू न छोड़ना तो मेरी रहमत को और मेरी मुहब्बत को जोश आया, मेरी ग़ैरत को जोश आया कि जब सब छोड़ चुके हैं मैं अपने बन्दे को नहीं छोड़ूंगा। ऐ मूसा! मेरी इज़्ज़त की क़सम वह कम ज़र्फ़ निकला सिर्फ़ अपनी बख़्शिश मांगी मेरी इज़्ज़त की क़सम अगर आज पूरी दुनिया के इन्सानों की बख़्शिश मांगता तो सबको माफ़ कर देता।

हम सिर्फ़ कहते हैं कि उस रब से सुलह कर लें और हम कुछ नहीं कह रहे हैं। हम कहते हैं अल्लाह से जुड़ जाओ। भाईयो! और कुछ नहीं कह रहे हैं। क्योंकि हमारा वास्ता अल्लाह की ज़ात से पड़ने वाला है। यह जहान छूट जाएगा और फिर मसअला आसान है कि अल्लाह पाक को राज़ी करने के लिए हमें ये घर नहीं छोड़ने, इन घरों के तरीक़े छोड़ने हैं, हमें इस शहर को नहीं छोड़ना इसके ग़लत तरीक़ों को छोड़ना और अल्लाह के महबूब मुस्तुफ़ा सैय्यदुल कौनैन ताजदारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का तरीक़ा दाख़िल करना है बस और कुछ नहीं करना। बस हम वह करें जो अल्लाह का हबीब हमें बता गया है।

जादूगरी छोड़ी तमग़ा-ए-शहादत मिल गया

भाई समझ में नहीं आ रहा है। एक डाक्टर था। वह एक मिनट की एक हज़ार रुपए फ़ीस लिया करता था। दुनिया के बड़े बड़े होटलों में उसके प्रोग्राम होते थे और उसने मुसख़्ख़र किए हुए थे शैतान और पता नहीं वह क्या अजीब चीज़ था। हमें भी उसने बहुत सी चीज़ें दिखायीं। तो एक दिन जुमे की नमाज़ के बाद मुझसे कहने लगा मेरा शैतान आया था मेरे पास और आकर बैठकर रोने लगा और कहने लगा डाक्टर राकी, राकी उसने अपना नाम रखा हुआ था, वैसे नाम अब्दुल क़ादिर था, अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की नस्ल में था। नस्ल अरबी, हस्नी, क़ादरी और काम यह कर रहा था। तो कहने लगा आज मेरा शैतान मेरे पास आया था और कह रहा था कि डाक्टर राकी तुमने बीस साल की दोस्ती को पाँच मिनट में तोड़ दिया।

तो मैंने उससे कहा बीस साल तक मैंने झूठ को आज़माया है अब कुछ दिन सच को भी आज़माने दो तो आगे वह मुझसे कहता है बात तुम्हारी ठीक है कि सच में नजात है लेकिन फिर भी जल्दी क्या है बाद में तौबा कर लेना। यहाँ आकर मार देता है कि अभी जल्दी क्या है फिर तौबा कर लेना। इसमें बहुत से बग़ैर तौबा के मर जाते हैं। दूसरा क्या कहता है तौबा का क्या फ़ायदा इधर करूंगा उधर टूट जाएगी। ऐसी तौबा का क्या फ़ायदा।

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० इल्म हासिल करने के लिए क़ाफ़िले में जा रहे थे। चौदह साल की उम्र थी। रास्ते में डाका पड़ गया, लूट लिया उन्होंने। यह बच्चे थे किसी को ख़्याल नहीं आया कि इनके पास कुछ होगा। एक डाकू ने ऐसे ही सरसरी पूछा बेटा तेरे पास कुछ है। कहा हाँ है। क्या है? कहा चालीस दीनार है। चालीस दीनार का मतलब था कि पूरे एक साल का राशन है। तो बड़ी दौलत थी चालीस दीनार। तो वह हैरान हो गया कहने लगा कहाँ हैं? कहा ये मेरे अन्दर सिए हुए हैं, अन्दर की आस्तीन में। उसने कहा बच्चे अगर तू न बताता तो मुझे ख़बर न होती कि तेरे पास क्या है? तो तूने क्यों बता दिया? कहा मुझे मेरी माँ ने कहा था कि बेटा सच बोलना चाहे जान चली जाए। अब यह माँ का सबक़ है ना?

और जब माँ को ही न पता हो कि सच बोलने में नजात है तो वह बच्चे को क्या बताएगी तो वह डाकू उसको पकड़कर डाकुओं के सरदार के पास ले गया कि सरदार इस बच्चे की बात सुनो। तो सारी कहानी सुनाई। तो सरदार ने कहा बेटा तूने क्यों बता दिया? न बताता तो हमें तो कोई पता न चलता। कहा मेरी माँ ने मुझे कहा था झूठ न बोलना, सच बोलना चाहे जान चली जाए। इस पर वह जो रोया डाकुओं का सरदार और उसकी दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई।

ऐ अल्लाह! यह मासूम बच्चा अपनी माँ का इतना फ़रमांबरदार मैं पूरा मर्द जवान होकर तेरा नाफ़रमान मुझे माफ़ कर दे, सारे डाकुओं से तौबा करवाई और इसका ज़रिया वह माँ बनी जो जिलान में बैठी हुई है जिसको पता भी नहीं कि उसका बच्चा कहाँ से कहाँ तक पहुँच गया।

इधर तौबा इधर मग़फ़िरत का परवाना मिल गया

बनी इसराईल में क़हत आया। जो बड़ा ज़र्बदस्त क़हत था। बनी इसराईल ने कहा ऐ मूसा! दुआ करो अल्लाह क़हत दूर कर दे। मूसा अलैहिस्सलाम ने सत्तर हज़ार लोगों को लेकर नमाज़ पढ़ी और दुआ मांगी ऐ अल्लाह! बारिश बरसा। ﴾فما زادت الشمس الاتقشعا﴿ सूरज की आग और बढ़ गई। वह कहें या अल्लाह हम बारिश की दुआ कर रहे हैं आप सूरज की तपिश को बढ़ा रहे हैं तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴾ان فيكم رجلا يبارزنى بالمعاصى منذ اربعين عام﴿

तुम में एक आदमी है जिसने पिछले चालीस साल में एक भी नेकी नहीं की और चालीस बरस हो गए मुझे ललकार रहा है और मेरी नाफ़रमानी पर तुला हुआ है उसकी वजह से बारिश रुकी हुई है। उसे कहो कि बाहर आकर अपने को ज़ाहिर करे तब बारिश होगी।

मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴾يا من عصى الله اربعين سنة﴿ अरे ओ बदबख़्त इन्सान! जिसे चालीस साल गुज़र गए कोई अच्छा काम नहीं किया, बाहर आ तेरी वजह से हम अज़ाब में हैं। उसे तो पता है कि मैं कौन हूँ लेकिन किसी को नहीं पता कि कौन है? न अल्लाह ने बताया कि फलां आदमी है। अब लोगों ने इधर उधर देखा कोई भी बाहर नहीं निकला। वह अपने दिल में कहने लगा मैं अगर बाहर निकलकर आऊँ तो अपने आपको ज़लील व रुसवा करूं और अगर खड़ा रहूं तो मेरी वजह से बारिश रुके, सारी मख़्लूक़ परेशान होगी।

इधर तौबा इधर मग़फ़िरत का परवाना मिल गया

बनी इसराईल में क़हत आया। जो बड़ा ज़बर्दस्त क़हत था। बनी इसराईल ने कहा ऐ मूसा! दुआ करो अल्लाह क़हत दूर कर दे। मूसा अलैहिस्सलाम ने सत्तर हज़ार लोगों को लेकर नमाज़ पढ़ी और दुआ मांगी ऐ अल्लाह! बारिश बरसा। ﴿فما زادت الشمس الا تقشعا﴾ सूरज की आग और बढ़ गई। वह कहें या अल्लाह हम बारिश की दुआ कर रहे हैं आप सूरज की तपिश को बढ़ा रहे हैं तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴿ان فيكم رجلا يبارزنى بالمعاصى منذ اربعين عام﴾

तुम में एक आदमी है जिसने पिछले चालीस साल में एक भी नेकी नहीं की और चालीस बरस हो गए मुझे ललकार रहा है और मेरी नाफ़रमानी पर तुला हुआ है उसकी वजह से बारिश रुकी हुई है। उसे कहो कि बाहर आकर अपने को ज़ाहिर करे तब बारिश होगी।

मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ﴿يا من عصى الله اربعين سنة﴾ अरे ओ बदबख़्त इन्सान! जिसे चालीस साल गुज़र गए कोई अच्छा काम नहीं किया, बाहर आ तेरी वजह से हम अज़ाब में हैं। उसे तो पता है कि मैं कौन हूँ लेकिन किसी को नहीं पता कि कौन है? न अल्लाह ने बताया कि फ़लां आदमी है। अब लोगों ने इधर उधर देखा कोई भी बाहर नहीं निकला। वह अपने दिल में कहने लगा मैं अगर बाहर निकलकर आऊँ तो अपने आपको ज़लील व रुसवा करूं और अगर खड़ा रहूं तो मेरी वजह से बारिश रुके, सारी मख़्लूक़ परेशान होगी।

उसने अपनी चादर से अपने मुँह को छिपा लिया कि कोई देखे नहीं कि मेरे आँसू निकल पड़े हैं। सिर झुकाया और सिर पर चादर डालकर आँसुओं के दो कतरे निकाले और कहने लगा—

﴿يا الله عصيتك اربعين سنة فامهلتى﴾

या अल्लाह! चालीस साल नाफ़रमानी करता रहा और तू मुझे मोहलत देता रहा, तूने किसी को नहीं बताया कि मेरी रात कैसे गुज़रती है, तूने किसी को नहीं बताया कि मेरा दिन कैसे गुज़रता है ﴿فجئتك تائبا فاقبلنى﴾ अब मैं तेरे सामने तौबा करता हूँ, तो किसी को न बता मेरी तौबा क़ुबूल कर ले।

अभी उसकी दुआ पूरी नहीं हुई थी कि काली घटा उठी और छमाछम बारिश हुई। मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह! निकला तो कोई भी नहीं तो बारिश कैसे हो गई? इर्शाद फ़रमाया जिसकी वजह से रुकी थी उसकी वजह से कर दी। वह ताएब हो गया है। ऐसा बड़ा ज़मीन व आसमान का बादशाह और मेहरबान ऐसा कि चालीस साल की नाफ़रमानियों को दो आँसुओं से धो दिया। मूसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे या अल्लाह अब बता तो दे वह कौन है? इर्शाद फ़रमाया जब मेरा नाफ़रमान था तो मैंने किसी को न बताया जब मेरा फ़रमांबरदार हो गया है तो अब मैं किसी को कैसे बताऊँ?

तू रूठता रहेगा मैं मनाता रहूँगा

﴿تعرض عنى وانا مقبل اليك﴾ तू मुझसे रूठ जाता है मैं फिर भी तेरा पीछा करता हूँ कि मेरी तरफ़ आ जा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मेहमान आया। काफ़िर था। उन्होंने पूछा मुसलमान हो? कहा नहीं। कहा मैं काफ़िर को रोटी नहीं खिलाता। वह उठकर चला गया। अल्लाह तआला ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा किस लिए? एक काफ़िर के लिए। फ़रमाया ऐ इब्राहीम! नाफ़रमान तो मेरा था। सत्तर साल से मैंने तो रोटी बंद नहीं की एक वक़्त तुझे खिलानी पड़ी तो तूने क्यों बन्द कर दी? जाओ उसको वापस बुलाओ और उसको रोटी खिलाओ।

जो रब काफ़िर पर ऐसा मेहरबान हो तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत पर कैसे मेहरबान न होगा मगर हम तौबा तो करें। मुसलमानो! हम अपनी ज़िन्दगी से बहुत दूर निकल गए हैं। आइए वापसी की राह अपनाएं और पिछली ज़िन्दगी से तौबा कर लें। अल्लाह का फ़रमान है—

﴿وتوبوا الى الله جميعا ايها المؤمنين﴾

ऐ ईमान वालो! इकठ्ठे मिलकर अल्लाह के दरबार में तौबा करो।

याद रखो इधर तुम तौबा करोगे उधर अल्लाह पाक एक एक का नाम लेकर ऐलान करेगा कि फ़लां बिन फ़लां ने तौबा कर ली है फ़रिश्तो! तुम गवाह बन जाओ मैंने उनको बख़्श दिया। अल्लाह की क़सम नौ सौ नहीं नौ सौ करोड़ चूहे खाए हों फिर भी तौबा कर लो।

आज का तो काफ़िर भी क़ारून से बेहतर है। हम तो सारे अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती बैठे हैं। एक आँसू नदामत का या अल्लाह के ख़ौफ़ का जो चेहरे पर

ढुलके सिर्फ़ एक आँख के कटोरे को तर कर दे, यह एक आँसू अल्लाह सत्तर साल के गुनाह धो देगा। एक कुर्ता धोना हो तो दो बाल्टी पानी की ज़रूरत है। इधर सत्तर साल के गुनाहों को धोने के लिए सिर्फ़ एक क़तरा पानी अल्लाह को दे दे अगर आँसू न निकले तो हाय कर दो। अल्लाह हाय को बरसात बना देगा और गुनाह धो देगा। इधर आप तौबा करेंगे इधर आसमान पर नक़्क़ारा बज जाएगा।

ज़िक्र मेरा मुझसे बेहतर है कि इस महफ़िल में हो।

ऐ अल्लाह! बस अब इन राहों पर न लौटूंगा। ऐ अल्लाह! बस अब मैंने तुझे राज़ी करना है, मेरी जान चली जाए, माल चला जाए, मैं बिक जाऊँ मगर तेरे नाम को नहीं छोडूंगा, सूद नहीं खाऊँगा, झूठ नहीं बोलूंगा, गाने नहीं सुनूंगा। वह जुनैद जमशैद गाने व नाचने वाला अल्लाह की क़सम चार महीने में चल रहा है। मुझे फ़ैसलाबाद में मिला कहता फिरता है लोगों को कि गंदी ज़िन्दगी से तौबा कर ली, अब मैं अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सीख रहा हूँ। गाना गाने वाले तौबा कर रहे हैं। गाना सुनने वालों तुम भी तौबा कर लो, डरो नहीं।

अगर तौबा टूट गई तो फिर कर लेना, हाँ वह दुनिया के हुक्मुरानों की तरह नहीं कि दिल में कदूरत रख लेगा बल्कि वह तो करीम है इधर हाय होती है उसकी बाहें खुल जाती हैं आ मेरे बन्दे आ जा।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

दुनिया से मुहब्बत का इबरतनाक अंजाम

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो! अल्लाह की बादशाही बेमिस्ल उसके इरादे अटल, उसके फ़ैसले बदलते नहीं ﴿لا راد لما قضيت﴾ जो फ़ैसला कर ले वह बदलता नहीं ﴿لا مانع لما اعطيت﴾ जिसको दे कोई रोक नहीं सकता ﴿لا معطى لما منعت﴾ और जिसको न दे उसको कोई दे नहीं सकता। ﴿ان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ वह पकड़े तो कोई छुड़ा नहीं सकता ﴿ان يردك بخير فلا راد لفضله﴾ वह देना चाहे तो सारा जहान मिलकर उसे रोक नहीं सकता। ﴿ما يفتح الله للناس من الرحمة فلا ممسك

﴾لها﴿ जब वह रहमत के दर खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता ﴾وما يمسك فلا مرسل له من بعده﴿ और जब वह बन्द करता है तो कोई उससे खुलवा नहीं सकता।

अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है?

इन सारी आयतों से अल्लाह तआला हम से क्या चाहता है वह हम से अपनी बादशाही मनवाना चाहता है कि मैं बड़ा बादशा हूँ लिहाज़ा ऐ लोगों!

जैसे तुम दुनिया के छोटे बादशाहों के ताबे होते हो, उनकी खुशामद करते हो, उनके पीछे दौड़ते हो, उनके पीछे दौड़ना छोड़ दो, मेरे बनो, मेरी मानकर चलो,

﴾لا نذلك لا مثل لك انت الغنى لا ظهير لك العلى لا سميا له.﴿

उसका शरीक कोई नहीं ऐसा ग़नी है जिसका मुशीर कोई नहीं, वह बुलन्द व बाला है उसके बराबर कोई नहीं।

كل شیء هالك الا وجهك كل ملك ذائل الا
ملك كل ظل خالس الا ظلك.

हर चीज़ को फ़ना है सिवा तेरे, तेरे लिए बक़ा है, हर मुल्क को ज़वाल है सिवाए तेरी बादशाही के, हर साया ढलता है उसका साया न ढलता है न चढ़ता है। यह अल्लाह की ज़ात है

﴾مبدی﴿ "मुब्दी" वह कुछ न हो वह सब कुछ बना दे।

﴾البـــــاری﴿ "अलबारी" जो कुछ न हो और सब कुछ बना दे उसको बारी कहते हैं।

﴾معيط﴿ "मुईत" जो सब कुछ मिटाकर फिर बना दे,

﴾مبـــدی﴿ "मुब्दी" कोई नमूना सामने नहीं, सैम्पल कोई नहीं,

बग़ैर सैम्पल के बना दिया, आम का कोई सैम्पल नहीं था तो उसको हुक्म दिया बन जा बन गया।

जानवर, पेड़, पौधे, परिन्दे, चरिन्दे, फूल, पत्तियाँ, फल सबका रंग ख़ुशबू और शक्ल अपने ग़ैब ख़ज़ाने देकर हुक्म दिया बन जा क्यों?

जिसकी इज़्ज़त की हद नहीं, जिसके कमाल की हद नहीं, जिसके मुल्क की हद नहीं, जिसकी ताक़त की हद नहीं, जिसकी क़ुदरत की हद नहीं, जिसकी हैबत की कोई हद नहीं, जिसकी अता की कोई हद नहीं है, जिसकी पकड़ की कोई हद नहीं, जिसकी रहमत की कोई हद नहीं है, जिसके जमाल की कोई हद नहीं है, जिसके ख़ज़ानों की कोई हद नहीं। अपनी ज़ात में जिसकी कोई हद नहीं। जब उसका मक़ाम नहीं दिया जाता।

अल्लाह जो चाहता है वही होता है

मेरे भाईयो! यहाँ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की चलती है किसी और की नहीं चलती। बादशाह भी अल्लाह, मालिक भी अल्लाह, ख़ालिक़ भी अल्लाह और होता यहाँ वह जो अल्लाह चाहता है।

﴿يفعل ما يشآء﴾ जो चाहे तेरा अल्लाह करे, ﴿وربك يخلق ما يشآء ويختار﴾ तेरा अल्लाह जो चाहे कर दे, ﴿فعال لما يريد﴾ जो चाहता है कर देता है, ﴿يهدى من يشاء﴾ जिसे चाहे हिदायत दे, ﴿يضل من يشاء﴾ जिसे चाहे गुमराह कर दे, ﴿يعذب من يشاء﴾ जिसको चाहे अज़ाब दे, ﴿يغفر لمن يشاء﴾ जिसको चाहे माफ़ कर दे, ﴿يبسط الرزق لمن يشاء﴾ जिसकी चाहे रोज़ी खोल दे, ﴿تؤتى الملك من تشاء﴾ जिसको चाहे बादशाही दे दे।

वह अल्लाह जिसने दिन को बनाया, रात को बनाया। यह सब अनोखी बात है, ﴿لتسكنوا فيه﴾ रात को अराम करो, ﴿ولتبتغوا من فضله﴾ और दिन को काम करके रिज़्क़ की तलाश करो, ﴿ولعلكم تشكرون﴾ शायद के अल्लाह का शुक्र अदा कर सको। अल्लाह का ख़ालिक़ होना इन आयतों से समझ आ रहा है। ﴿الجبال﴾ कि अल्लाह का पहाड़ का गाड़ना ﴿والارض كيف سطحت﴾ ज़मीन पर ग़ौर करके देखो तो सही, ﴿افلا ينظرون الى الابل﴾ ऊँट में ग़ौर क्यों नहीं करते हो। क्या ग़ौर करें?

﴿كيف خلقت﴾ बनाने वाले ने बनाया कैसे, ﴿والى السماء كيف رفعت﴾ आसमान की तरफ़ निगाहें उठाकर ग़ौर क्यों नहीं करते हो कि इसके बनाने वाले ने इसको कैसे बनाया?

मेरे भाईयो और दोस्तो! बात दरअसल करने की इस वक़्त यह है कि हम सबके सब अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लें। सारी दुनिया और आसमान की हुकूमत अल्लाह के हाथ में है। उसका शरीक कोई नहीं है।

मूसा अलैहिस्सलाम से बनी इसराईल कहने लगे कि तेरा रब सोता है? मूसा अलैहिस्सलाम को ग़ुस्सा आ गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ठहरो। मैं इनको समझाता हूँ। तुम रात को प्याला लेकर खड़े हो जाओ। वह प्याला लिए हुए खड़े हुए। जब आधी रात हो गई तो उनको ऊँघ आने लगी, अरे प्याला टूट जाएगा सोते हो? जब रात का आख़िरी वक़्त आया तो सो गए, वह प्याला गिरकर टूट गया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तेरा रब रात या दिन को किसी वक़्त सो जाए तो आसमान व ज़मीन सूरज और चाँद के प्याले गिरकर टूट जाएंगे और तबाह हो जाएंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहत

मेरे भाईयो! ईमान का तक़ाज़ा है कि दुनिया बेचनी पड़े, बेच दो आख़िरत को न बेचो। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नसीहत सुनो जो उन्होंने अपने बेटे इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाई। एक जुमला है इसमें जो सुनाना चाहता हूँ वरना सारी आपको पढ़कर सुनाता। ऐ बेटे! जब ख़ंजर लग चुका है तलवार लग चुकी है जाने का वक़्त क़रीब आ चुका है तो आख़िरी वक़्त की नसीहत है ﴿احي قلبك موعظة﴾ मेरे बेटे दिल को ज़िन्दा रखना। किससे? अल्लाह की बातें सुन सुनकर। अभी आधा घंटा पहले आए तो कैफ़ियत और अल्लाह की आधा घंटे बात सुनी तो कैफ़ियत और। यह किस लिए बदल गई? ईमान को थोड़ा सा पानी मिला है तो कैफ़ियत बदल गई।

तो यह फ़रमा रहे हैं मेरे बेटे हर वक़्त अल्लाह की बातें सुनते रहना। इससे दिल ज़िन्दा रहेगा ﴿نوره بالحكمة﴾ और उसे हिकमत से नूरानी बनाना। हिकमत क्या है? अल्लाह के नबी की बातों से उसको नूरानी बनाना। ﴿وقوة بالقلب﴾ और अपने दिल को ताक़तवर बनाना दुनिया को लात मारकर, दुनिया को पैरों में डालकर, दुनिया को ठोकर मारकर, दुनिया से बेरग़बत हो जाना, तेरा दिल मज़बूत बन जाएगा ﴿فروه بالفنا﴾ और दिल को रोज़ाना समझाना कि तूने मरना है, तूने मरना है ﴿وصللها لموت﴾ और मौत याद दिलाकर उसकी लगाम अपने हाथ में रखना। लगाम दिल का न छोड़ना वरना बेक़ाबू हो जाएगा। लगाम हाथ में रखना किस तरह? मौत याद दिलाकर ﴿وحظره وسورة الدهر ونسخ الليالي والايام﴾ और अपने आपको

सुनाते रहना पिछली क़ौमों के क़िस्से जिनको अल्लाह ने पटख़ दिया, ज़मीन में धंसाया, पत्थर बरसाकर मारा, पानी के तूफ़ान से उड़ाया, हवाओं के तूफ़ान से ख़त्म किया।

इन टूटी हुई इमारतों से इबरत लो

उन क़ौमों के वाक़िआत सुनाओ। उनके खंडरों में जाओ ﴿والنظر فی اثارھم﴾ उनकी टूटी हुई दीवारों में ग़ौर करो। जाओ टैक्सला में, हड़प्पा में क्या शाही क़िला लाहौर में जाओ जाओ उन दीवारों से पूछो मुग़ल कहते थे हमेशा आबाद रहेंगे, मुग़ल कहते थे इन क़िलों को कोई हिला नहीं सकता। जाओ उससे पूछो इब्ने हलवा तुम्हारे बनाने वाले कहाँ चले गए? तो तुम्हें एक एक दीवार पुकार कर कहेगी,

﴿قد اغفلوا من دار الغرونزل فی دار الغرابة﴾

वह हमें छोड़ गए, हम धोके का घर थे, जाकर सो गए अंधेरी कोठरी में, वीरान घर में, वहशत और तन्हाई के घर में जाकर सो गए ﴿ولك لسرت کاحدھم﴾ मेरे बेटे एक दिन तू भी क़ब्र में जाकर सो जाएगा। आख़िरी जुमला सुनो जो मैं बताना चाहता था। मैंने सारा क़ौल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का आपको सुनाया,

﴿فلا بع آخر لك بالدنياك بل بع دنياك الخ﴾

मेरे बच्चे जब कभी दुनिया और आख़िरत में टक्कर हो दुनिया बेच देना आख़िरत न बेचना, दुनिया छोड़ देना आख़िरत न छोड़ना कि दुनिया फिर भी छूट जाएगी तो तुम दुनिया को छोड़ना आख़िरत को न छोड़ना, अपने को बेच दे आख़िरत को ख़रीद ले,

झूठ बोलकर सौदा न करना, सूद पर मिल न चलाना। दुनिया को ख़रीदने के लिए आख़िरत को बेचा है। यह दुनिया को ख़रीदा है और जन्नत को बेचा है क्या नादान ताजिर हैं जो बेच गये।

यह चार दिन की चाँदनी है

यह क्या मक़सदे ज़िन्दगी है जो चार क़दम पर चलकर साथ छोड़ जाए। यह क्या ख़ुशियाँ हैं जो चार दिन भी साथ न दे सकें और आगे जाकर मौत के ख़ौफ़नाक गढ़े में जाकर फेंक दिया जाए। यह इक़्तिदार कौन सा इक़्तिदार है जो आकर बैठे भी न थे कि निकाले गए। यह हुस्न कैसा हुस्न है जो चन्द साल बाद लम्बे चौड़े मैकअप का मुहताज हुआ, फिर कुछ साल के बाद मैकअप ने भी साथ छोड़ दिया। लाख झुर्रियों को छिपाया, लाख होंटों की स्याही को सुर्ख़ी से छिपाया, लाख चेहरे की पीलाहट को मसनवी सुर्ख़ियों से सजाया लेकिन क्या करें इन ज़ालिम झुर्रियों का जिन्होंने आकर मकड़ी की तरह चेहरे पर ताना-बाना बुन दिया। अब सारे मैकअप धरे रह गए और बुढ़ापे ने पुकार पुकार कर कहा चल आगे का सामान कर वक़्त जा चुका है। यह हुस्न व जमाल की जगह नहीं है।

यही तुझ को धुन है रहूँ सबसे आला
हो ज़ीनत निराली हो फ़ैशन निराला

जिया करता है क्या यूँ ही मरने वाला
तुझे हुस्न ज़ाहिर ने धोके में डाला

तुझे पहले बचपन ने बरसों खिलाया
जवानी ने फिर तुझको मजनूं बनाया

बुढ़ापे ने फिर आके क्या क्या सताया
अजल कर देगी तेरा बिल्कुल सफ़ाया
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

हमारे एक रिश्तेदार थे। बड़ी दौलत इकठ्ठी की। जितने आप बाहर जाकर कमाते हैं। उससे भी ज़्यादा उस बन्दे ने इकठ्ठे किए। वह कहता था कि मैंने अपनी बेटी को इतना दे दिया है कि मरते दम तक किसी की मुहताज नहीं होगी। उसे किसी की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और उसकी बेटी को सिसक सिसककर मरते हमने खुद देखा है कि वह कैसी मुहताज हो गई।

कोई पैसा काम नहीं देता। माँ-बाप औलाद का मुक़द्दर नहीं बनाते। वह अपना मुक़द्दर लेकर खुद आती हैं अगर हम फ़र्ज़ करें उनके लिए सब कुछ इकठ्ठा कर लिया है तो उनके पास भी टाइम कितना थोड़ा है सिर्फ़ साठ सत्तर साल फिर वे भी मर जाएंगे, साठ सत्तर साल क्या ज़िन्दगी है?

यह ज़िन्दगी चन्द गिने चुने साँसों का नाम है

हम सब फ़कीर हैं कि हमारे पास वक़्त बहुत थोड़ा है। पैसे तो बहुत हैं लेकिन ज़िन्दगी थोड़ी है। कुछ साँस हैं, कुछ घड़ियाँ हैं पता नहीं चलता कि कैसे वक़्त गुज़र रहा है। जिसके पास पैसे थोड़े होते हैं वह सोच समझकर ख़र्च करता है जैसे महीने के पन्द्रह सौ रुपए मिलें वह तो बग़ैर सोचे समझे पैसे ख़र्च नहीं करेगा। वह तो बजट बनाएगा। एक एक रुपया सोचेगा कि लगाऊँ या न लगाऊँ। महीना गुज़ारना है। वह पूरा हिसाब रखेगा

ताकि ग़ैर ज़रूरी चीज़ में ख़र्च न हो। जिसके पास ज़्यादा पैसे होते हैं वह नहीं सोचता कि कैसे ख़र्च करना है। हमारे पास ज़िन्दगी के गिने चुने साँस हैं। आज की इन्सानियत ने मुख़्तसर ज़िन्दगी को माल व दौलत की दौड़ में ज़ाए कर दिया तो बहुत बड़ा नुक़सान होगा।

ज़िन्दगी रोटी का नाम नहीं, कपड़े पहनने का नाम नहीं, ऐश परस्ती करने का नाम नहीं, ख़ूबसूरत घर बनाने का नाम नहीं, बड़े बड़े कारख़ाने चलाने का नाम नहीं।

अगर यही ज़िन्दगी का मक़सद है तो फिर मौत पर सब कुछ छिन क्यों जाता है?

ज़मीन का एक झटका दुनिया के नशे को ख़त्म कर सकता है

कौन है जो हमारे अरमानों को पूरा होने से पहले ही उनका ख़ून करके उन्हें तहे ख़ाक सुला देता है? और सारी मेहनत की कमाई औरों के हवाले कर देता है। मैं तो कमाते कमाते मर गया, मेरी हड्डियों का गूदा भी ख़ुश्क हो गया और मेरी ज़िन्दगी की सारी ख़ुशियाँ बर्बाद हो गयीं कि मेरा काम चमक जाए, मेरी तिजारत चमक जाए, मेरा घर अच्छा हो, कैसी फैक्टरियों के महल खड़े हुए हैं लेकिन बहुत से बनाने वाले ज़मीने के नीचे जा चुके हैं। आज उनकी हड्डियाँ भी ख़त्म हो चुकी होंगी, जिन कीड़ों ने उनके गोश्त खाए होंगे उन कीड़ों को अगले कीड़ों ने दबा दिया होगा और फिर वे कीड़े अपने ही मोटापे से फूल कर मर चुके

होंगे, क़ब्र की तपिश उनकी हड्डियों को गला दिया, उनके गोश्त को उड़ा दिया, उनकी खाल बाल बराबर कर दिए, फिर ज़मीन ने पहलू बदला, करवट बदली, थक गई एक तर्ज़ पर लेटे लेटे जैसे मैं पहलू बदलता हूँ जैसे मर्द व औरत सोए हुए हों।

दुनिया को हवस की नज़र से मत देख सबसे पहले कीड़ा क़ब्र में तेरी आँख को!!!

एक हदीस में आता है मेरे बन्दे दुनिया को हवस की नज़र से मत देख। सबसे पहले क़ब्र में जिस चीज़ को कीड़ा खाता है वह तेरी आँख है। आँख झुका ले। अपनी नज़र को बेहया न बना। यह इसलिए नहीं कि तू औरों की बीवियाँ और बेटियाँ देखे। यह इसलिए नहीं है कि तू नादानों के खड़े महल देखे।

इनसे बड़ा भी कोई नादान है? जो चन्द साँस, कुछ घड़ियों, कुछ घंटों, कुछ हफ़्तों के लिए करोड़ों के घर बनाकर बैठा हो, करोड़ों के बग़ीचे बनाकर बैठा हुआ हो, आबशारे लगाए बैठा हुआ हो। इनसे बड़ा भी कोई नादान है जो गिर हुई शाख़ा पर आशियाना बनाए। जो टूटे हुए किनारे पर घर बनाए, जो गिरती हुई दीवार के नीचे सहारा ले, जो गिरती हुई दीवार से टेक लगाए, जो मिटते हुए जहान से जी लगाए, जो उड़ते हुए आशियाने में बचे रहने की कोशिश करे।

दुनिया की मक्कारी से इबरत लो

जो मच्छर का पर और धोखे का घर और मकड़ी का जाला हो

और पल का भरोसा न हो जिसका, इसने हर एक से दग़ा की, हर एक से ग़द्दारी की, हर एक से मक्कारी की, यह ग़द्दार दुनिया, यह मक्कार दुनिया, यह बेवफ़ा दुनिया न पहलों के पास रही न मेरे पास रहेगी न आपके पास रहेगी,

मिटाए मौत ने निशां कैसे कैसे
मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे

अजल ने छोड़ा न किसरा न दारा
पड़ा रह गया यह ठाट सारा

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

यही तुझको धुन है रहूँ सबसे आला
हो ज़ीनत निराली वह फ़ैशन निराला

जिया करता है क्या यूँहीं मरने वाला
तुझे हुस्ने ज़ाहिर ने धोका में डाला

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

दुनियावी ज़िन्दगी की मौत

दुनिया तीन दिन की ज़िन्दगी है ﴿يوم الامس مضى﴾ कल चला गया ﴿يوم غد﴾ कल जो आ रही है, ﴿لا تدری قدر که ام لا یقین﴾ कोई पता नहीं कि कल का दिन मेरा होगा या नहीं।

﴿الله يتوفى الانفس حين موتها والتى لم تمت﴾

सोते को उठाकर ले जाए तो फिर सोया और गया। ﴿يوم انت فيه﴾ एक दिन तेरी ज़िन्दगी है। इसलिए अल्लाह ने इसको मताए

क़लील कहा है।

जब जेब ख़ाली होती है तब अल्लाह के पास आते हैं। जब तक जेब भरी होती है तो अल्लाह से मांगने की ज़रूरत ही नहीं,

﴿يا عبادی انکم جائعون الا من اطعمته فتطعمونی اطعمکم﴾

ऐ मेरे बन्दो! तुम सबके सब भूखे हो मैं तुमको खिलाता हूँ। तुम्हारा डालर तुमको नहीं खिलाता। मुझसे मांगो मैं तुमको खिलाऊँगा ﴿ان الله هو الرزاق ذو القوة المتین﴾ शरिअत में अल्लाह तआला ने आफ़ियत रखी है

﴿الا بذکر الله تطمئن القلوب وجعل الغناء فی قلبه﴾

और उसके दिल को बादशाह कर देगा ﴿جعل الله شمله﴾ अल्लाह उसके बिखरे हुए कामों को इकठ्ठा करेगा और दुनिया नाक रगड़कर उसके पाँव में आएगी।

दुनिया का आशिक़ कौन?

ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में देखा एक गाय थी उसका माथा फटा हुआ और दुम कटी हुई थी। ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम कौन हो? कहा कि दुनिया। ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तेरा यह हाल क्या है? तो कहा जो मेरे आशिक़ हैं मेरे पीछे भागते हैं उन्होंने दुम काट दी है लेकिन मुझे क़ाबू नहीं कर सके। फिर कहा माथा क्यो फटा हुआ है? कहा जो लोग मुझे छोड़कर भागते हैं मैं उनके पीछे भागती हूँ। उन्होंने मुझे ठोकरें मारीं। मार मारकर ज़ख़्मी कर दिया। मैं उनको क़ाबू नहीं कर सकी।

दुनिया की मज़म्मत पर इमाम शाफ़ई रह० का क़ौल

इमाम शाफ़ई रह० ने कहा,

﴿ان هذه الدنيا تخادعني كامراة لست اعرف حالها-﴾

यह इसी का तर्जुमा है। पचास, सत्तर साल की औरत सुर्ख़ी पाउडर लगाकर किसी को धोका दे सकती है? हाँ जिसकी आँखें ख़राब हों वह उसे धोके में डाले तो दूसरी बात है। यह दुनिया मुझे धोका दे रही है। मैं इसकी सुर्ख़ी के पीछे इसकी स्याही को जानता हूँ, मैं इसके हुस्न के पीछे इसकी बदसूरती को जानता हूँ, मैं इसकी ख़ुशियों के पीछे इसके ग़मों की बारिश को जानता हूँ ﴿مدنا لی یمینها﴾ इसने मुझे हाथ दिया कि आजा ﴿وقطعتها وشمالها﴾ मैंने वह हाथ काट लिया और उसका उल्टा हाथ भी काट लिया ﴿منع الی حرامها واتبت حلالها﴾ अल्लाह ने कहा था हराम न खाना मैंने हराम को भी छोड़ दिया यानी मैंने हलाल को भी फूंक फूंककर इस्तेमाल किया ﴿فرايتها محتاجة﴾ ग़ौर किया तो बेचारी ख़ुद ही मुहताज थी।

जगह जी लगाने की यह दुनिया नहीं है

और जिसे आख़िरत का ग़म लगेगा अल्लाह उसके दिल से दुनिया का ग़म निकाल देगा। जो दुनिया में ऐश व इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारेगा अल्लाह आख़िरत के ऐश व इशरत से महरूम कर देगा और जो आख़िरत के ऐश व आराम को सामने रखेगा

वह दुनिया के ऐश व आराम से जुदा होकर चलेगा। मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को मक़सद बनाता है अल्लाह उसको दुनिया के बारे में परेशान कर देता है। उसके रिज़्क़ को बिखेर देता है और आख़िरत उससे दूर चली जाती है। दुनिया में मुक़द्दर के अलावा कुछ मिलता नहीं। जो आख़िरत के लिए रोता है उसके आँसू दुनिया की चीज़ों के पीछे नहीं निकलते, अपनी आख़िरत को याद करता है, बेचैन होकर बिस्तर से उठ जाता है, ऐश व आराम में क़ब्र की अंधेरी कोठरी याद आती है और रातों को उठ उठकर क़ब्र की तन्हाईयों का सोचता है, अपनी हड्डियों के शिकस्ता होने को सोचता है और अपने जिस्म में कीड़ों के चलने को सोचता है और हश्र के दिन अल्लाह तआला के सामने खड़े होने को सोचता है, यह ग़म उसकी नींद उड़ा देता है, यह ग़म उसे दुनिया से ग़ाफ़िल कर देता है, यह ग़म उसके मुक़द्दर की रोज़ी नहीं छीनता, मुक़द्दर का रिज़्क़ जो मेरी क़िस्मत में है उसे दुनिया की कोई ताक़त छीन नहीं सकती।

दुनिया से मुहब्बत और मौत की दस्तक

तो मेरी बहनो! यह सुन्नत है कि आख़िरत का ग़म लगेगा तो अल्लाह तआला दुनिया में चैन नसीब फ़रमाएगा और अगर दुनिया का ग़म लगेगा तो आख़िरत का ग़म निलक जाएगा । जो अल्लाह से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआला दुनिया की मुहब्बत उसके दिल से निकाल देगा और अगर दुनिया की मुहब्बत करेगा तो अल्लाह अपनी मुहब्बत उससे छीन लेगा। जिसके सामने आख़िरत

होती है, जिसे जन्नत की फ़िक्र होती है वह नेकियों की दौड़ लगाता है, जिसे जहन्नम का ख़ौफ़ लग जाता है वह दुनिया के ऐश व इशरत से हटकर चलता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ मुआज़! ऐश परस्त न बनना। अल्लाह के बन्दे ऐश परस्त नहीं बनते। यह दुनिया गुज़रगाह है, गुज़रकर जाना है, कोई आज गया, कोई कल गया। यह हिंस व हवस का सामान सब यहीं रह जाना है। यह दुनिया का साज़ व सामान बनाते बनाते हम थक जाते हैं। जब नफ़ा उठाने का वक़्त आता है तो मौत दरवाज़े पर दस्तक देने लगती है। ज़िन्दगी समेटने वाला आकर समेट जाता है और सब सामान धरा रह जाता है। यह दुनिया दिल गलाने की जगह नहीं है। यह तो अपनी आख़िरत को बनाने का वक़्त है। हश्र को याद किया जाए।

जब तुझे क़ब्र के गढ़े में डाला जाएगा, चेहरे पर क़ब्र के कीड़े चल रहे होंगे, वे तेरी आँखों को खाएंगे। तेरे गालों को नोचेंगे और तेरी हड्डियों को गोश्त से अलग कर देंगे। तू क़ब्र में हड्डियों का ढांचा बनी पड़ी होगी और वह दिन याद कर जब ज़मीन करवट बदलेगी जैसे हम करवट बदलते हैं। इसी तरह कभी कभी अल्लाह तआला ज़मीन को करवट देता है तो शेख़ साहब, मियाँ साहब, चौधरी साहब, सरदार साहब, बादशाह साहब, वज़ीर साहब, अमीरन साहेबा, ग़रीबन साहेबा व बेगम साहिबा सबको ज़मीन ने पहलू बदलकर ऊपर से नीचे कर दिया, नीचे का ऊपर कर दिया। वह हुस्न व जमाल का पैकर जो क़ब्र में चूरा चूरा बना पड़ा था। उसे भी हवाओं ने सलामत न छोड़ा। ज़ालिम हवा का एक झोंका

आया और इस हुस्न के वजूद को उसने इसी तरह फ़िज़ा में बिखेर दिया जैसे कभी वह माँ के पेट में आने से पहले था। और इसी तरह मिट गया, ऐसे नामलूम हो गया, उसी तरह काएनात में खो गया जैसे वजूद में आने से पहले वह खोया हुआ था। उसका कहीं नाम व निशान न था। एक ज़माना आया क़ब्र भी मिट गई, हड्डियाँ भी रल गयीं, निशान भी मिट गए, फ़िज़ाओं में गुम हो गए। कुछ साथ न रहा सारा किया हुआ और ले गए और यह खुद जाकर अपने किए की सज़ा भुगतने के लिए क़ब्र में पहुँच गया।

जहन्नम के शोले

तो मेरी बहनो! हम तो दुनिया के सामने ऐसे फंसे कि मौत भूली, अल्लाह के सामने खड़ा होना भूला। क्या वहशतनाक मंज़र है कि जहाँ सब बहन भाई पीछे हट जाएंगे। उस दिन माँ, बेटी, बहन, भाई, ख़ाविन्द, बीवी जुदा जुदा एक दूसरे के क़रीब भी न होंगे। हर आदमी की पुकार होगी या अल्लाह मुझे बचा ले। जहन्नम के शोले लपक लपककर इन्सानों को ललकार रहे होंगे, मुझसे और आपसे जवाब तलबी हो रही होगी और औरत का दिल तो वैसे भी कमज़ारे होता है। बता कहाँ गया जो तुझे दिया था, कहाँ [illegible] जो तुझे पहनाया था, जो तुझे माल दिया, रिज़्क दिया, अक़्ल दी उसका क्या करके आए हो। हर मर्द व औरत को नाप रहा है। बड़ों बड़ों की पित्ते पानी हो जाएंगे। दाएं तरफ़ देखेगा आमाल अपने नज़र आएंगे, बाएं तरफ़ देखेगा आमाल अपने नज़र आएंगे सामने देखेगा जहन्नम की चीख़ पुकार होगी। ऐ काश मैं आज के लिए कुछ कर लेता। मैं लोगों की न मानता,

अपने हाथ दबाएगा, उस दिन अपने हाथ चबाएगा लेकिन कुछ भी काम नहीं आएगा। (दुनिया में) निकले हुए आँसू जहन्नम की आग को ठंडा कर देते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैंने एक मोमिन को देखा है जो जहन्नम में गिर रहा था और जहन्नम से निकालकर एक तरफ़ खड़ा कर दिया गया। इन्सान कहेगा कहाँ छिपूँ, कोई रास्ता नहीं है, कोई छिपना चाहे तो छिप नहीं सकता, भागना चाहे तो भाग नहीं सकता, कहाँ भागूं। अल्लाह फ़रमाएंगे आज तेरे पाँव बाँध दिए जाएंगे। आज मैं तुझे बताऊँगा कि तूने कौन से गुनाह किए हैं। दुनिया में अल्लाह कितना रहीम है पर्दा डालता है, छिपाता है, दरगुज़र करता है। हमारी आँख ग़लत देखती है, फरिश्ता आकर थप्पड़ नहीं मारता, मेरे पाँव ग़लत चलते हैं फ़रिश्ते की लाठी मेरे पाँव नहीं तोड़ती। अल्लाह मोहलत देता है।

दुनिया से मुहब्बत का अंजाम

क़यामत के दिन दुनिया आएगी बूढ़ी शक्ल में काली शक्ल में। अल्लाह कहेगा जानते हो यह कौन है? कहेंगे नहीं। कहेगा यह दुनिया है जिसके इश्क़ में तुमने मुझे भुला दिया। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ले जाओ इसको दोज़ख में। उसको दोज़ख़ में ले चलेंगे। वह कहेगी मेरे बच्चे तो मेरे साथ कर दो। मैं बेटों के बग़ैर, बेटियों के बग़ैर कैसे जाऊँ। तो अल्लाह तआला कहेंगे जिसने तुझसे इश्क़ किया उनको भी लेकर चली जा। सब जा रहे हैं। सब खिंचे जा रहे है। हम दुनिया के ग़ुलाम नहीं हैं। हम अल्लाह के ग़ुलाम हैं।

मौजों में घिरी हुई किश्ती मल्लाह जो अपने घाट को खो देता है। जैसे वह इज़्तिराब से कभी उफ़क़ को देखता है। कभी पानी पर निगाहें दौड़ाता है, निशानियाँ गुम कर बैठा है, घाट का पता नहीं? मंज़िल सामने नहीं? बेचैन है अन्दर ही अन्दर।

मेरे भाईयो! उनकी सबकी बेचैनी थोड़ी है और वह इन्सान जिसने अल्लाह को मक़सद न बनाया और अल्लाह को राज़ी करने को अपनी ज़िन्दगी का महवर न बनाया जितना यह इन्सान बेचैन ज़िन्दगी गुज़ारता है उतना कोई भटका हुआ मुसाफ़िर कोई बिछड़ा हुआ मुसाफ़िर, कोई भी भटका हुआ ऐसा नहीं भटका जितना अल्लाह से भटककर इंसान इस काएनात में भटकता है।

अहमक़ कौन?

मेरे भाईयो और दोस्तो! कोई बसीरत वाला ऐसा नहीं जो इससे दिल लगा सके। इस पर फ़रेफ़्ता हो सके, इसको दिल दे सके बल्कि जो देखेगा, ग़ौर से देखेगा, बसीरत से देखेगा तो पुकार उठेगा कि यह धोके का घर है, यह कुछ नहीं, यह फ़रेब है, मुझे छोड़कर जाना है, मुझे इससे दिल नहीं लगाना। जब बनाने वाले ने बेक़ीमत होने का ऐलान कर दिया और इसकी क़ीमत बताई तो कौन अहमक़ ऐसा है जो इससे दिल लगा बैठेगा। नहीं! नहीं! नहीं।

हम तो परदेसी हैं, हम तो राही हैं, मुसाफ़िर हैं। हम आप कराची आए हुए हैं। काम पर आए हुए हैं। हमें इससे कोई दिलचस्पी नहीं। क्यों? क्योंकि हमें चले जाना है। आप कराची में हैं। मैं मुल्तान में हूँ। जो जहाँ है वह परदेसी है, वह मौत का राही

है, वह जन्नत का मुसाफ़िर है, वह दोज़ख़ का मुसाफ़िर है या जन्नत का घर है या दोज़ख़ का घर है। अल्लाह की बात मान गया तो जन्नत का रास्ता खुल गया, शैतान की बात मान गया तो जहन्नम का रास्ता खुल गया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ईमान लाने पर सहाबा की ख़ुशी

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जिनके इस्लाम लाने की तमन्ना की गई यानी मुराद है मुराद,

﴿يا الله اعز الاسلام باحد العمرين وبعمر بن الخطاب خاصة.﴾

या अल्लाह इन दो उमरों में से एक दे दे बाक़ी मुझसे पूछे तो उम्र बिन ख़त्ताब को चाहता हूँ ﴿وبعمر بن الخطاب﴾ मांगे गए बुध और जुमेरात की दर्मियानी रात को यह दुआ मांगी गई और जुमेरात को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम में दाख़िल हो गए।

जब यह मुसलमान हुए तो सहाबा ने नारा-ए-तकबीर बुलन्द किया। जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ गए। या रसूलल्लाह! आप बड़े ख़ुश हो रहे हैं उमर के इस्लाम पर? फ़रमाया बहुत ज़्यादा। तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम बोले कि आसमान के फ़रिश्ते भी ख़ुश हो रहे हैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम पर।

अरफ़ात के मैदान में आप तशरीफ़ फ़रमा हैं। सवा लाख सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का मजमा सामने है। आप फ़रमा रहे हैं अल्लाह तआला मेरे सहाबा पर फ़ख़्र कर रहा है, उमर पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र हो रहा है।

यह वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनके दौर में बाईस लाख मुरब्बअ (वर्ग) मील में कलिमा-ए-हक़ बुलन्द हुआ।

यह वह उमर हैं जिधर से गुज़रते थे तो शैतान रास्ता छोड़ जाता। मेरे बाद कोई नबी होता आपने फ़रमाया तो उमर होते। मैं थोड़ा सा मक़ाम इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको पता चले वह किस हाल में दुनिया से जा रहे हैं।

मिट जाने वाले घर से दिल लगाना

अरे मिट जाने वाली भी कोई सलतनत होती है, डूब जाने वाले का भी कोई उरूज होता है, जिस ज़िन्दगी को मौत खा जाए वह कोई ज़िन्दगी है, जिस जवानी को बुढ़ापा खा ले वह भी कोई जवानी है, जिन ख़ुशियों को ग़म निगल जाए वह कोई ख़ुशियाँ हैं, जिस माल पर फ़क़्र का डर हो वह कोई माल है, जिस मुहब्बत के पीछे नफ़रतें हों वह भी कोई मुहब्बतें हैं और जिन घरों ने उजड़ जाना हो, जहाँ मिट्टी का ढेर बन जाने हो, जहाँ मकड़ियों के जाले तन जाने हों,

﴿كل بيت وان طالت سلامتها يوم ستدركه النقباء والحب﴾

बड़े बड़े महल ज़रा जाकर देखो तो सही आज वहाँ मकड़ियों के जाले हैं, मेंढकों का घर है, चूहों का घर है, मकड़ियों का राज है और उस पर राज करने वालों को आज कीड़े भी खा गए, उन कीड़ों को अगले कीड़े खा गए और वे कीड़े भी मरकर मिट्टी हो गए। उनकी क़ब्रें उखेड़ दी गयीं।

दुनिया का फ़ातेह आज़म चंगेज़ ख़ां है कोई उसकी क़ब्र तो

बता दे? फ़ातेह आज़म चंगेज़ खां की आज क़ब्र नहीं है। दुनिया हमारी मेहनत का मैदान नहीं। हम तो अल्लाह का गीत गाते हैं।

हमारे मसाइल का हल

हम आपस में लड़ने के बजाए अल्लाह से क्यों न लड़ें। और यह कितना आसान है कि हम अल्लाह के बन जाएं। अल्लाह हमारे मसाइल को हल कर देगा। लोगों से मांगना लोगों से छीनना, दुनिया से लड़ना, कभी मुसलमान भी दुनिया के लिए लड़ते हैं? दुनिया भी ऐसी चीज़ है? अल्लाह ने उसकी क़ीमत बताई, बनाने वाले ने उसकी क़ीमत बताई है।

﴿جناح بعوضة﴾ मच्छर का पर, मकड़ी का जाला ﴿بيت العنكبوت﴾ धोके का घर ﴿كسراب بقيعة يحسب الظمان ماء﴾ बनाने वाले से पूछो जिसके सामने दुनिया का नक़्शा है। यह जहान, यह दुनिया इसकी क़ीमत धोखे का घर है, यह मच्छर का पर है, यह मकड़ी का जाला है, यह मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है। यह जो नज़र आ रहा है, यह भी थोड़ा है और यह भी धोका है, मताए गुरूर है। अल्लाह तआला इसकी तारीफ़ यह कर रहे हैं। यह सब कुछ नज़र आ रहा है यह कुछ भी नहीं है और इन्सान कहता है कि यह हक़ीक़त है, ये लम्बी इमारतें, ये बिल्डिगें, ये गाड़ियाँ, ये साज़ व सामान। अल्लाह तआला दूसरी ताबीर फरमाता है कि तुम इसे हक़ीक़त कहते हो सुन लो मताए कलील बहुत छोटी सी हक़ीक़त है, बहुत थोड़ा सा सामन है। अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमाया,

لا يغرنك تقلب الذين كفروا في البلاد متاع قليل

ثم ما وهم جهنم وبئس المهاد.

ऐ मेरे हबीब यह काफ़िरों की चमक दमक आपको धोके में न डाल दे। कभी नबी को धोका लग सकता है?

दुनिया का नक़्शा थोड़ी देर का है

पूरी दुनिया क़ाबिले रहम है। जहाँ दवा है जिसने ज़ख़्म को भी भरना है और उस पर मरहम भी करना है और सेहत को लौटाना भी है उस तरफ़ इन्सानियत का रुख़ नहीं है और जहाँ से मर्ज़ और बढ़ना है, ज़ख़्म और गहरा होना है और जहाँ और ज़्यादा काँटें चुभेंगे, जहाँ ज़्यादा नश्तर लगेंगे उधर को भागे चले जा रहे हैं। ज़मीन व आसमान के बीच कोई चीज़ भी ऐसी नहीं है जिसको पाने के बाद इन्सान अपनी ज़िन्दगी कामयाब समझ सके या उसकी ज़िन्दगी में क़रार आ जाए या इसे चैन आ जाए। वह ऐसा ही है जैसे शराबी शराब पीकर कुछ घड़ियों के लिए बेख़बर हो जाता है और जब होश आता है तो ज़िन्दगी की कढ़वी हक़ीक़तें फिर उसके सामने मुँह खोलकर खड़ी हो जाती हैं। इसने तो कुछ घड़ियों के लिए अपने आपको मदहोश किया था। यही हाल पूरी दुनिया की इन्सानियत का है। इन्सानी इल्म ख़ता खा गया। वह ख़्वाहिशात को मक़सद समझ बैठा।

﴿يعلمون ظاهراً من الحيوة الدنيا وهم عن الاخرة هم غفلون.﴾

दुनिया को मंज़िल समझ बैठे, दुनिया को अपनी पनाहगाह समझ बैठे।

नहीं भाईयो! यह तो बनाने वाले ने कहा। यह तो धोके का घर है, मच्छर का पर है। आप अपनी परवाज़ तो सोचें। क्यों गारे मिट्टी के पीछे अपनी आक़बत को बर्बाद कर रहे हो। वह कपड़ा

जो फटकर पुराना हो जाए और कूड़े करकट के ढेर में जा गिरे, वह हुस्न जिस पर बुढ़ापा आ जाए, वह चेहरा जो मुर्झा जाए, वह ज़िन्दगी जो मौत से बदल जाए, वह ख़ुशी जो ग़म से बदल जाए, वह राहत जो बेचैनी से बदल जाए। वह भी कोई चीज़ है जिसके लिए आदमी अपनी आख़िरत को ख़राब करे। क्यों दीवाने बन गए हम?

टूट जाने वाले ज़हाँ से इबरत लो

आज का मुसलमान दुनिया पर मर रहा है। इंगलिस्तान से ताबूत आ रहा है कि जी फलां मर गया। अब उसका ताबूत आ रहा है। अजी यह क्यों इंगिलस्तान गया था? जी कमाई करने के लिए गया था। इमारात से ताबूत आ रहा है। सऊदी अरब से ताबूत आ रहे हैं। क्यों ताबूत आ रहे हैं? कमाई के लिए धक्के खाते फिरता है। मुसलमान ग़ैरत वाला था। अल्लाह के नाम पर मरता था। दौलत तो उसके पाँव की जूती थी। अरे टूट जाने वाले जहान से इबरत लो।

अल्लाह के वास्ते इस हिंस को छोड़ दो। इसकी तमा छोड़ दो। इसके दीवाने न बनो। इसके दीवानों के लिए ज़िल्लत के सिवा कुछ नहीं, साए के पीछे दौड़ने वाले के लिए दीवार के साथ टकराने के अलावा कुछ नहीं, रेत पर पानी तलाश करने वालों के लिए सिवाए प्यासे मरने के कुछ नहीं।

इस इज़्ज़त से धोका खाने वाले के लिए सिवाए ज़िल्लत के कुछ नहीं है, इसकी जवानी पर इतराने वाले के लिए बुढ़ापे की ख़ौफ़नाक आहें हैं, सिसकियाँ हैं। इन्तज़ार करो जब बुढ़ापा इसकी

जवानी को खा जाएगा। उस दिन का इन्तज़ार करो जब इसकी औलाद भी कहेगी मरती ही नहीं अम्मा, अब्बा मरता ही नहीं। तुझे क़ब्र में मुन्कर नकीर उठाकर बिठाएंगे और तुझसे सवाल करेंगे। आज किस हुस्न पर नाज़ है? जो क़ब्र में कीड़ों का शिकार होने वाला है।

बर्बाद बस्ती वालों का क़िस्सा

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक बस्ती पर गुज़र हुआ। देखा सब बर्बाद हुए पड़े हैं। आपने फ़रमाया इन पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा है,

﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب. ان ربك لبالمرصاد.﴾

तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा लेकिन आज के कुफ़्र पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा है? कि आज खरा इस्लाम दुनिया में कोई नहीं, आज खरे कलिमे वाले कोई नहीं हैं। जिस ज़माने में जिस वक़्त माज़ी में, मुस्तक़बिल में, हाल में जब भी कलिमे वाले हक़ीक़त वाला कलिमा सीख लेंगे तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसेगा। चाहे वह ऐटम बम की ताक़त हो, चाहे तलवार की ताक़त हो, चाहे वह हकूमत की ताक़त हो। अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसेगा। जब कलिमे वाले वजूद में आएंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे यह सब हलाक हुए हैं अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से। और आपको पता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर मुर्दे ज़िन्दा होते थे। आपने आवाज़ दी ﴿يا اهل القرية﴾ कि ऐ बस्ती वालो!

जवाब आया ﴿لبيك يا نبي الله لبيك﴾ हम हाज़िर हैं ऐ अल्लाह के नबी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿ماذا جنايتكم وماذا سبب هلاككم﴾ तुम्हारा गुनाह क्या था? और तुम्हें किस सबब से हलाक किया गया?

आवाज़ आई ﴿حب الدنيا وصحبة الطواغيت﴾ हमारे दो काम थे जिसकी वजह से हम हलाक हुए। एक तो हमें दुनिया की मुहब्बत थी दूसरा तवाग़ियत के साथ मुहब्बत थी।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा "तवाग़ियत" की मुहब्बत से क्या मतलब?

आवाज़ आई बुरे लोगों का साथ देते थे और बुरों की सोहबत में बैठते थे। पूछा दुनिया की मुहब्बत से क्या मतलब? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी ﴿كحب الام الولدها﴾ जैसे माँ अपने बच्चे से करती है। जब दुनिया आती थी तो हम ख़ुश होते थे और जब दुनिया हाथ से निकल जाती थी तो हम ग़मगीन होते थे। हलाल हराम का ख़्याल किए बग़ैर दुनिया कमाते थे और जाएज़ नाजाएज़ का ख़्याल किए बग़ैर दुनिया की दौलत ख़र्च करते थे। कमाई में हलाल हराम नहीं देखते थे और ख़र्च करने में जाएज़ नाजाएज़ को नहीं देखते थे। इस पर हमारी पकड़ हुई है।

जन्नत का यक़ीन होता तो अल्लाह की नाफ़रमानी न करते

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा ﴿وما سجين﴾ सिज्जीन क्या है?

आवाज़ आई—

﴿كل جمرة منها مثل اطواق الدنيا كلها ودفن ارواحنا فيها﴾

ऐ अल्लाह के नबी! सिज्जीन वह कैदख़ाना है जिसका एक एक अंगारा सातों ज़मीन से बड़ा है और हमारी रूहों को उसके अन्दर दफ़न कर दिया गया है और हम इस में दफ़न पड़े हैं।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम एक ही बोल रहे हो दूसरे क्यों नहीं बोलते? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी! तमाम लोगों को आग की लगामें चढ़ी हुई हैं। वह नहीं बोल सकते, मेरे मुँह में लगाम नहीं है इसलिए बोल रहा हूँ।

फ़रमाया तू क्यों बचा हुआ है? कहने लगा हाविया (जहन्नम) के किनारे पर बैठा हूँ और मेरे मुँह पर लगाम भी नहीं है। वजह इसकी यह है कि मैं इनके साथ तो रहता था लेकिन इन जैसे काम नहीं करता था। उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया। अब किनारे पर बैठा हूँ लेकिन लगाम नहीं चढ़ी, पता नहीं नीचे गिरता हूँ या अल्लाह अपने करम से मुझे बचाता है। मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

मेरे दोस्तो और भाईयो! अगर जन्नत का यक़ीन हो तो कोई किसी को न सताए और किसी के ख़ून के दर पे न हो और कोई किसी के ख़ून का प्यासा न हो, कोई झगड़ा न हो। यह लुट गया, वह लुट गया, यह खा गया, वह खा गया। जिसको जन्नत मिलने वाली हो तो उसके सामने दुनिया की क्या कीमत है और क्या हैसियत है? यह धोके का घर है, फ़ना होने वाला घर है, यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाली ज़िन्दगी है, यह मुसीबतों का घर है, परेशानियों का घर है, वहशतों का घर है, परदेस का घर है,

अजनबियत का घर है। यहाँ हर वक़्त मौत का पैग़ाम जारी व सारी है। दाएं बाएं जनाज़े, दाएं बाएं मातम।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल मुक़द्दस फ़तेह करने के लिए तशरीफ़ ले जा रहे हैं किस हाल में?

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैतुल मुक़द्दस पहुँचे तो तौरात में एक एक चीज़ लिखी हुई थी कि वह आएगा और ऊँट पर सवार होगा और उसके कुर्ते में चौदह पेवन्द होंगे और यह शक्ल होगी, यह हुलिया होगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो फिर उन्होंने किताब देखी कहा हाँ वही है यह वही है। फिर उन्होंने कुर्ते पर निगाह लगाई वह कहने लगे इस पर बारह पेवन्द हैं दो और नहीं हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बग़ल ऊँची कर दी, बाज़ू नीचे कर दिए। दो पेवन्द बग़लों में लगे हुए थे यहाँ एक यहाँ एक।

जैसे हम अपने ज़ाहिर को मुज़य्यन करने की फ़िक्र में रहते हैं अल्लाह तआला कहता है मेरे बन्दे दिल को मेरे लिए मुज़य्यन कर ले। टूटा हुआ दिल अल्लाह का अर्श है।

इस अर्श (दिल) पर मेरा जलवा उतरता है। दिल ख़ूबसूरत बना लो तो फिर मैं इसमें आ जाऊँगा जो न ज़मीन में आता है न आसमान में आता है। मैं इसे अपना मसकन बना लूंगा और तेरा दिल मेरे अर्श से ज़्यादा रौशन होगा, अर्श से ज़्यादा वसी होगा।

अर्श तो अल्लाह की एक तजल्ली नहीं सह सकता। जलकर राख़ हो जाए और यह दिल सारी तजल्लियाँ पी जाएगा। इसलिए

कहा ﴿ان عند المنكسرة قلوبهم﴾ टूटे दिल मेरे अर्श हैं, मैं इनमें रहता हूँ तो इस दिल को अल्लाह के लिए बना लें। यह दिल अल्लाह के लिए फ़ारिग़ हो जाए। वह ख़्वाजा मज्ज़ूब के शे'र—

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

सारी दुनिया ही से वहशत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

पूरी एक नज़्म है। उनकी इस वज़न पर। हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कहा मेरे पास लाख रुपए होते तो आपको इस शे'र पर ईनाम दे देता। तो दिल को फ़ारिग़ कर दो कि ऐ अल्लाह अपना तअल्लुक़ दे दे।

अपना आप दे दे अपनी मुहब्बत दे दे, रुपए का नशा

हश्शाम ने उन्नीस बरस हुकूमत की और उसके बेटे मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीख मांगा करते थे। अल्‌क़ाहिर बिल्लाह अब्बासी ख़लीफ़ा वह अपने आप एक ख़लीफ़-ए-वक़्त था जो मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीखे मांगा करता था। इसलिए यह धोका है। पैसे के नशे में कभी न रहना। तो एक तिजारत अल्लाह तआला हमें बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ में बता रहे हैं।

भोलू पहलवान का वाक़िआ

यह जो भोलू पहलवान था न यह राइविन्ड आया। मैं राइविन्ड

में पढ़ता था तो यह वह शख़्स था जिसने सारे आलम को चैलेंज किया और कोई दुनिया का पहलवान उसको गिरा न सका। तो मैंने जब उसको देखा तो यह बग़ैर सहारे के न बैठ सकता था न उठ सकता था तो जिसने पूरे आलम को चैलेंज किया और उसको कोई गिरा न सका। (उसका आख़िर यह है।) यहाँ मौत का नाच जारी है, यहाँ हर क़दम पर ज़िन्दगी हार खा रही है और लगातार हार रही है।

राबिया बसरिया रह० से फ़रिश्तों का सवाल तुम्हारा रब कौन है?

राबिया बसरिया रह० का इन्तिक़ाल हो गया तो ख़्वाब में ख़ादिमा को मिलीं। उन्होंने कहा अम्मा आपके साथ क्या हुआ? कहा कि मेरे पास मुन्कर नकीर आए। मुझसे कहने लगे ﴿من ربك﴾ तेरा रब कौन है? तो मैंने कहा कि सारी ज़िन्दगी जिस रब को न भूली चार हाथ नीचे ज़मीन में आकर उसको भूल जाऊँगी? यह नहीं कहा कि रब्बी अल्लाह। कहा जिस रब को सारी ज़िन्दगी नहीं भूली उसको चार हाथ ज़मीन के नीचे आकर भूल जाऊँगी। उन्होंने कहा छोड़ो इसका क्या हिसाब लें।

कहने लगी आपकी गुदड़ी का क्या हुई? गुदड़ी होती है एक लम्बा सा जुब्बा जो अरब पहनते हैं। हमारे यहाँ इसका दस्तूर नहीं है। तो हज़रत राबिया ने कहा था कि मुझको कफ़न मेरी गुदड़ी ही में दे देना। मेरे लिए नया कपड़ा न लाना।

लेकिन उनकी ख़ादिमा ने देखा कि बहुत आलीशान पोशाक

पहने हुए हैं। कहने लगी कि वह गुदड़ी क्या हुई? कहा अल्लाह तआला ने संभालकर रख दी है कि कयामत के दिन मेरी नेकियों में उसको भी तोलेगा। उसका भी वज़न करेगा।

तेरी सादगी पर रोने को जी चाहता है

अमारूल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुल्के शाम के गर्वनर हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने गए और ख़ेमे में मुलाक़ात की। मुलाक़ात के वक़्त फ़रमाया अबू उबैदा! तेरे ख़ेमे में चिराग़ कोई नहीं? फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन! दुनिया में गुज़ारा ही तो करना है, दुनिया कौन सी रहने की जगह है, गुज़ारा ही तो करना है। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अपना खाना तो खिलाओ। तो अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे मेरा खाना खाओगे? तो रोओगे। कहने लगे नहीं नहीं। हाँलाकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का खाना मशहूर था कि उनका खाना कोई नहीं खा सकता था। इतना सख़्त खाना होता था। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक कोने से प्याला उठाया जिसमें रोटी पानी में भिगोई पड़ी थी सूखी रोटी इस पर थोड़ा सा नमक डालकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने रखा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लुक़्मा उठाया बे इख़्तियार आँखों से आँसू निकले।

अरे अबू उबैदा! मुल्के शाम के ख़ज़ाने फ़तेह हुए और तू न बदला। उन्होंने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहद कर चुका था कि जिस हाल पर छोड़कर जा रहा हूँ उसी हाल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिलूंगा। जब आपने फरमाया था

जिस हाल पर छोड़कर जा रहा हूँ उसी हाल में तुमने मेरे पास आना है। दुनिया के चक्कर में न आना और दुनिया के धोके में न आना। मुसलमान के लिए इतना काफ़ी है कि गुज़ारे के लिए उसके पास रोटी खाने को मिल सके। दुनिया तो है जुदाई का घर। दुनिया के कारोबार, औलाद को माँ-बाप से जुदा कर देते हैं। हम अक्सर देखते हैं माँ-बाप अकेले हैं बच्चा कमाने के लिए किसी और जगह चला गया। बच्ची जवान हुई तो कोई हिन्दुस्तान में ब्याही गई, कोई और दूर चली गई। अब एक अजनबी की तरह कई सालों बाद मिलना होता है। दुनिया है ही सफ़र की जगह।

मौलाना तारिक़ जमील के वालिद का रोना

मेरे वालिद साहब कभी कभी रोया करते थे कि हमने तुम्हें जना किस काम आया? एक बेटी फ़ैसलाबाद में है, एक लाहौर में है तू हर वक़्त तबलीग़ में रहता है, चौथा डाक्टरी में कभी कहीं कभी कहीं रहता है। हम दोनों अकेले रह गए। मुझे भी कभी रोना आ जाता था। मैं उनसे कहता अब्बा जान! बस चन्द दिनों की बात है फिर अल्लाह तआला ऐसा इकठ्ठा करेगा कि जिसके बाद कोई जुदाई नहीं होगी। जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो हमारे साथी ने उनको ख़्वाब में देखा कि जन्नत में एक गुंबदनुमा बारादरी है जिसमें वह बैठे हुए हैं। उन्होंने कहा मियाँ साहब आप कहाँ चले गए? अचानक इन्तिक़ाल फ़रमाया था। उन्होंने कहा हम तो बहिश्त के तख़्तों पर हैं। आमने सामने बैठे हैं। उन्होंने कहा आप हमें छोड़कर चले गए। कहने लगे नहीं नहीं अंक़रीब हम सब इकठ्ठे हो जाएंगे। इकठ्ठे होने की जगह अल्लाह ने जन्नत बनाई है। दुनिया दुनिया तो कारोबार में जुदा कर देती है और अगर दीन

के लिए जुदाई हो गई तो फिर कौन सी बड़ी बात है। अल्लाह हमें हमेशा इकठ्ठा कर देगा।

मैंने तो दुनिया बनाने वाले से नहीं मांगी

हश्शाम बिन अब्दुल मलिक शामी ख़लीफ़ा तवाफ़ कर रहा था। उसके साथ सालिम बिन अब्दुल्लाह (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते) भी तवाफ़ कर रहे थे। तो हश्शाम ने कहा सालिम कोई ज़रूरत हो तो बतओ, मैं पूरी कर दूँ। सालिम ने कहा ﴿الـيـس الـلـه﴾। अल्लाह से डरता नहीं। मैं अल्लाह के घर में हूँ तू फिर भी मुझे अपनी तरफ़ मुतवज्जह करता है। तो हश्शाम चुप हो गया।

जब बाहर निकले तो कहा अब तो बताओ? कहने लगे दुनिया की बताऊँ या आख़िरत की बताऊँ? हश्शाम ने कहा दुनिया की बताओ आख़िरत की तो मैं पूरी नहीं कर सकता। तो फरमाने लगे ﴿ما سالت من يجعلها و كيف من يملكها﴾ दुनिया तो मैंने दुनिया बनाने वाले से नहीं मांगी तो तुझसे क्या मांगूगा।

हम ऐसे मुसाफ़िर हैं जिनकी कोई मंज़िल नहीं

बहुत से फ़कीर ऐसे हैं जो दिल के बादशाह हैं। बहुत से बादशाह ऐसे हैं जो दिल के फ़कीर हैं। आप ग़ौर तो कीजिए अज़ख़ुद दुनिया खुली हुई नज़र आएगी। और क्या पता है हर घड़ी में हज़ारों रंज व अलम की दास्तानें जन्म लेती हैं और ख़त्म होती हैं। ज़िन्दगी चारों तरफ़ से दुखों का ही नाम है। इनमें से कोई चीज़ भी इंसानी मंज़िल नहीं बन सकती। किसी एक चीज़

के पीछे दौड़ता है। वहाँ पहुँचता है तो पता चलता है कि यह तो मेरी मंज़िल नहीं थी फिर नए सिरे से कमर बाँधता फिर दौड़ लगाता है फिर एक जगह पहुँचता है पता चलता है कि यह भी मेरी मंज़िल नहीं।

मेरा एक क्लास का साथी था। स्कूल व कालेज में इकठ्ठे रहे फिर जुदा हो गए। पच्चीस साल के बाद मुलाक़ात हुई। मुझसे कहने लगा मैं यह समझता था कि इज़्ज़त, दौलत, शोहरत मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है। मैंने उसके लिए पच्चीस बरस मेहनत की। अब जब सब कुछ मिल चुका है। इस वक़्त मेरे पास दौलत भी है, इज़्ज़त भी है, शोहरत भी है लेकिन मुझे अब पता चला है कि मैंने मक़सद के चुनाव में ग़लती खाई है। मेरी ज़िन्दगी का मक़सद जो है उसका मुझे पता नहीं। जिसका चुनाव किया पच्चीस साल के बाद पता चला कि वह ग़लत है। यही पूरी ज़िन्दगी के इन्सानों का हाल है। इन्सान अपने इल्म में नाक़िस है। उसका इल्म थोड़ा है। यह अपने इल्म से अपने मक़सद तक पहुँच नहीं सकता था।

अल्लाह की तरफ़ दौड़ो

अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा जिन्होंने आकर बताया कि कहाँ भागे जा रहे हो? किधर की दौड़ लगा रहे हो ﴿ففروا الى الله﴾ अल्लाह की तरफ़ दौड़ लगाओ। जहाँ हर क़दम तुम्हारी प्यास को बुझाता चला जाएगा। तुम्हारी थकन को उतारता चला जाएगा। जब मंज़िल के आसार आ जाएं तो थकी सवारियों में क़ुव्वत दौड़ आती है और इन्सानों का शौक़ भी जवान हो जाता है।

पहला क़दम अल्लाह की तरफ़ उठेगा वह ज़िन्दगी के सारे दुख दर्दों को खींचता चला जाएगा, निकालता जाएगा। यह नबियों ने आकर ख़बर दी। हम तो जाहिल थे। हमें तो सिर्फ़ यह पता था कि खाना है, कमाना है, मरना है। इन्सानों के नज़रियात तो यह थे।

उमर रहमतुल्लाहि अलैहि और ख़ौफ़े ख़ुदा

हज़रत उमर रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िलाफ़त का ज़माना था। यह वह उमर हैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब गली से गुज़रता था तो उसकी ख़ुशबुओं के हल्ले की वजह से घरों में बैठे हुए लोगों को पता चल जाता था कि उमर गली से गुज़र रहा है। ऐसा हुस्न व जमाल था चेहरे पर आँखें नहीं टिकती थीं और ऐसी नख़रे वाली चाल थी। जो देखता था वह दंग रह जाता था। और लम्बी चादर होती थी जो घसिटती हुई जाती थी। एक दफ़ा एक बुज़ुर्ग ने रास्ते में टोक दिया ऐ उमर! देखो अपने टख़ने से कपड़ा ऊँचा करो। इन्होंने कहा अगर जान की ख़ैर है तो आइन्दा ऐसी बात मत कहना वरना गर्दन उड़ा दी जाएगी। एक वक़्त यह था।

और जब आए ख़िलाफ़त पर जो आदमी दुनिया की तलब करेगा और जो आदमी माल की तलब करेगा जब उसके हाथ माल आएगा तो फ़िरऔन बनेगा और जो आदमी इससे भागेगा और उससे जान छुड़ाएगा और उससे पल्ला बचाएगा फिर जब उसके पास माल आएगा तो वह उसके ज़रिए से जन्नत कमाएगा।

सुलेमान मरने लगा तो रजा बिन हयात ने कहा कोई ऐसा काम कर जिससे तेरी आख़िरत बन जाए। कहा क्या करूं? कहा ख़िलाफ़त के लिए किसी इन्सान का चुनाव कर।

सोच में पड़ गया। उसका इरादा था अपने बेटे को ख़लीफ़ा बनाने का। कहने लगा इन्शाअल्लाह ऐसा काम कर जाऊँगा जिसमें मेरे नफ़्स और शैतान का कोई हिस्सा नहीं होगा। कहा लिखो मैं उमर को ख़लीफ़ा बनाता हूँ और उसको लपेटा और माचिस की एक डिबिया में डाला कहा जाओ इस पर लोगों से बै'त लो। जब रजा ने बै'त ली। तो हज़रत उमर रह० दौड़ेकर आए ऐ रजा! तुझे अल्लाह का वास्ता अगर इसमें मेरा नाम है तो इसको मिटा दे। मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए। उसने कहा जाओ जाओ मेरा सिर न खाओ। मुझे नहीं पता किसका नाम है। आगे हिश्शाम इब्ने अब्दुल मलिक मिला। उसने कहा रजा! अगर इसमें मेरा नाम नहीं तो इसमें लिख दे। एक कहता है मेरा नाम मिटा दे, एक कहता है मेरा नाम लिख दे।

तीन बर्रे आज़म का बादशाह है मगर कपड़े फटे पुराने

जब डिबिया पर बै'त ली और खोला उसको। कहा आओ भाई उमर! उठो तुझे ख़लीफ़ा बनाया जाता है। तो उमर खड़े नहीं हो सके। दो आदमियों ने सहारा देकर उठाया और लड़खड़ाते हुए मिम्बर पर आए और कहा मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए। तुम अपने फ़ैसले से किसी और को बना दो। उन्होंने कहा नहीं अमीरूल मोमिनीन ने कह दिया है। हश्शाम की चीख़ निकली। एक शामी ने तलवार निकाली आइन्दा बात की तो तेरी गर्दन उड़ा दूंगा तू अमीरूल मोमिनीन के हुक्म के सामने आवाज़ निकालता है। जब आए तो यूँ कहा अब इससे आख़िरत कमाकर दिखाऊँगा ताकि

सारी दुनिया के इन्सानों को पता चल जाए कि बादशाहत से भी आख़िरत कमाई जा सकती है।

फिर वह वक़्त आया। ईद का दिन है। ईद से दो दिन पहले की बात है। बीवी ने कहा बच्चे कह रहे हैं हमारे दोस्तों ने कपड़े बनवाए हैं ईद के लिए और हमारा बाप तो अमीरूल मोमिनीन है। हमारे कपड़े फटे हुए हैं। हमें भी तो कपड़े लेकर दो। हज़रत उमर रह० ने फ़रमाया मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। मैं कहाँ से लेकर दूँ?

वज़ीफ़ा लेते थे बैतुलमाल से जो तमाम मुसलमानों का था। वह रोटी का ख़र्च बड़ी मुश्किल से पूरा होता था। तो बीवी ने कहा अब क्या करें? बच्चों को कैसे समझाएं? ख़ुद तो सब्र कर सकते हैं, बच्चे तो नहीं जानते। बच्चों पर आदमी ईमान बेचता है और जब बेचता है फिर वह औलाद बाप की ग़ुस्ताख़ बनती है। बाप से कहती है कि तूने हमारे लिए क्या किया है? क्या कमाया है हमारे लिए? क्योंकि उसकी जड़ों में हराम डाला गया होता है। इसलिए यह अब कभी माँ-बाप की फ़रमांबरदार बनकर नहीं चलेगी।

यह माँ को भी जूते मारते हैं और बाप को भी जूते मारेगा। हज़रत उमर रह० ने कहा मैं कहाँ से दूँ मेरे पास तो पैसे नहीं हैं? उसने कहा क्या करें? इनको कौन समझाए? उन्होंने कहा तो फिर मैं कैसे समझाऊँ? बीवी ने कहा मुझे एक तर्कीब समझ में आई है। आप अपना वज़ीफ़ा एक माह पेशगी ले लें। जो महीने का वज़ीफ़ा मिलता है। हमारे बच्चों के कपड़े बन जाएंगे, हम सब्र कर लेंगे। उन्होंने कहा यह ठीक है। अपना ख़ादिम नहीं ग़ुलाम, ज़र ख़रीद मज़ाहिम। उसे बुलाया ख़ज़ांची था। अरे मियाँ मज़ाहिम एक

महीने का वज़ीफ़ा पेशगी दे दो। और वह मज़ाहिम फ़रमाने लगे—

अमीरूल मोमिनीन एक बात अर्ज़ करूं? क्या आप मुझे ज़मानत देते हैं कि आप एक महीने ज़िन्दा रहेंगे जो आप मुसलमानों का माल लेना चाहते हैं? अगर आप एक महीने की ज़मानत दे सकते हैं कि मैं एक महीने ज़िन्दा रहूँगा तो आप बैतुलमाल में से मुझसे ले लीजिए और अगर ज़मानत नहीं दे सकते तो आपकी गर्दन क़यामत के दिन पकड़ ली जाएगी। हज़रत उमर रह० की चीख़ निकली नहीं नहीं,

﴿كم من مقبل مقبل يوما لا يكمله كم من مستقبل لغد لا يدركه.﴾

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं ﴿كم من مقبل يوما لا يكمله﴾ कितने हैं वही दिन देखने वाले जो सूरज का ग़ुरूब होना नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं ﴿وكم من مستقبل لغد لا يدركه﴾ और कितने ही हैं जो कल का इन्तिज़ार कर रहे हैं और कल का सूरज नहीं देख पाते और क़ब्र में चले जाते हैं। कहा ऐ बच्चो! सब्र कर लो। जन्नत में जाकर ले लेना। मेरे पास इस वक़्त कोई नहीं। अम्र को नहीं तोड़ा बच्चे की ख़्वाहिश को तोड़ दिया, अपने जज़्बात को तोड़ दिया, अल्लाह के अम्र को नहीं तोड़ा, ज़रूरत को क़ुर्बान कर दिया, अम्रे इलाही को नहीं क़ुर्बान किया।

घर आए, बेटियाँ मुँह पर कपड़ा रखकर बात करें। हज़रत उमर रह० कहने लगे बेटी क्या बात है? मुँह पर कपड़ा क्यों रखती हो? फ़ातिमा ने कहा अमीरूल मोमिनीन! आज तेरी बेटियों ने कच्चे प्याज़ से रोटी खाई है। इसलिए उनके मुँह से बदबू आ रही है।

अल्लाह की चाहत पर ज़िन्दगी गुज़ारने का ईनाम

हाँ वह अमीरूल मोमिनीन जिसका अम्र तीन बर्रे आज़म पर चलता हो और अरबों मख़्लूक़ात उसके सामने गर्दन झुकाए खड़ी हो। दमिश्क़ से लेकर मिस्र तक, दमिश्क़ से लेकर चाड तक, दमिश्क़ से लेकर उन्दुलुस तक, पुर्तगाल तक फ्रांस तक जिसका अम्र चलता रहा हो उसकी बेटी प्याज़ से रोटी खा रही है। आज हमारे तो छाबड़ी वाले की बेटी प्याज़ से रोटी नहीं खाती और इतने बड़े इक़्तिदार वाले की बेटियाँ प्याज़ से रोटी खाती हैं। हज़रत उमर रह० रोने लगे हाय मेरी बेटी! तुम्हें बड़े अच्छे खाने खिला सकता था लेकिन तेरा बाप दोज़ख़ की आग बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरे सामने दो रास्ते हैं। तुम्हें हलाल हराम इकठ्ठा करके खिलाता तो मैं ख़ुद दोज़ख़ में जाता। मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

मौत का वक़्त आया। मुस्लिमा ने कहा अमीरूल मोमिनीन का लिबास तो बदल दो, मैला हो गया है। अपनी बहन से कहा। हज़रत फ़ातिमा बीवी थीं उन्होंने कहा ऐ मेरे भाई! अल्लाह की क़सम! अमीरूल मोमिनीन के पास एक ही जोड़ा है तब्दील कहाँ से करूं? एक ही जोड़ा है। मुस्लिमा ने कहा अमीरूल मोमिनीन ये आपके बच्चे हैं फ़क़्र व फ़ाक़े की हालत में आप इन्हें छोड़कर जा रहे हैं।

मुझसे एक लाख रुपए ले लीजिए, अपने बच्चों को दे दीजिए। उन्होंने कहा तुम्हारे भांजे हैं। उसने कहा हाँ। तो फरमाया चलो! एक लाख वहाँ वापस करो जहाँ से तुमने ज़ुल्म और रिश्वत से

कमाया है। मेरे बच्चों को हराम नहीं चाहिए। फिर बेटियों को बुलाया और कहा मेरी बेटियों! जहन्नम तो सह नहीं सकता, मैंने तुम्हें अल्लाह से मांगना सिखा दिया, ज़रूरत पड़े तो उससे मांग लेना। वह तुम्हारा कफ़ील होगा। वह कहता है ﴿وهو يتولى الصالحين﴾ मैं हूँ नेक आदमियों का वाली।

जब मौत आई और जनाज़ा उठा, क़ब्रिस्तान की तरफ़ चला और क़ब्रों पर रखा तो आसमान से एक हवा चली। उसमें से एक काग़ज़ का पर्चा गिरा। उस काग़ज़ को उठाया गया। उस पर लिखा था—

بسم الله الرحمن الرحيم. براءة من الله لعمر ابن عبد العزيز من
النار بسم الرحمن الرحيم.

और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के लिए आग से नजात का परवाना है। हमने उमर को दोज़ख़ से नजात दे दी। सारी दुनिया को बता दिया कि सुन लो हम उमर को दोज़ख़ से नजात दे दी और इस परवाने समेत हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैहि को क़ब्र में उतारा गया।

मोमिन की मौत का मंज़र

रोम के इलाक़े में एक मुसलमान क़ैद हुआ और वहाँ से भाग निकलने में कामयाब हो गया और तीसरी रात है उनको रोम के इलाक़े में चलते हुए और उनके साथ के आठों साथी क़त्ल हो चुके थे। यह नवें बच गए थे। यह वहाँ से भागकर आ रहे थे तो

पीछे से घोड़ों के टापों की आवाज़ आई। समझने लगे कि बस अब मैं भी पकड़ा गया हूँ। पीछे आए पकड़ने वाले। पीछे जो मुड़कर देखा एक ने आवाज़ दी ऐ हबीब! अरे यह मेरा नाम कैसे जानते हैं? हबीब क़रीब आए तो देखा वह साथी जो क़त्ल हो गए थे घोड़ों पर सवार नज़र आए। हबीब ने कहा अरे ﴿اليس قد قتلتم﴾ अरे तुम तो सारे क़त्ल हो गए थे। फ़रमाया हाँ। तुम्हें ख़बर है क्या हुआ कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो चुका है और अल्लाह तआला ने तमाम शोहदा से कहा हुआ है कि जाकर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का जनाज़ा पढ़ो। हम सब वहाँ जा रहे हैं। तुमने घर जाना है। यह रोम है। कहते हैं हाँ तो उसने कहा ﴿ناولني﴾ हाथ पकड़वाओ। मेरा हाथ पकड़ा ﴿واردفني﴾ और मुझे घोड़े के पीछे बिठाया। उसका घोड़ा चन्द क़दम चला होगा ﴿خفقني خفقته﴾ उसने मुझे ज़ोर से कोहनी मारी और मैं उलटकर गिरा तो घर के दरवाज़े के सामने पड़ा था। रोम से इराक़ यह इस्तिक़बाल हो रहा है।

تتنزل عليهم الملائكة ان لا تخافوا ولا تحزنوا وابشروا بالجنة التي كنتم توعدون. نحن اولياء كم في الحيوة الدنيا في الاخرة ولكم فيها ما تشتهي انفسكم ولكم فيها ما تدعون. نزولا من غفور رحيم.

अल्लाह की तरफ़ से मेहमानी हो रही है। फ़रिश्ते आ रहे हैं। हज़रत जब विसाल होने लगा तो कहने लगे हट जाओ। कुछ लोग आ रहे हैं जो न इन्सान हैं न जिन्नात हैं और ज़बान पर यह आयत आ गई—

﴿تلك الدار الاخرة نجعلها للذين لا يريدون علوا في الارض ولا فسادا.﴾

यह वह जन्नत का घर हमने बनाया है अपने बन्दों के लिए

जो दुनिया में बड़ाई नहीं चाहते, फ़साद नहीं चाहते।

जो बड़ाई चाहते हैं उन्हें पस्त किया जाता है जो बड़ाई नहीं चाहते उन्हें उठाया जाता है। फ़रिश्ते आते हैं, हज़रत इज़राईल आते हैं और चार फ़रिश्ते आते हैं। दो फ़रिश्ते पाँव दबाते हैं, दो फ़रिश्ते हाथ दबाते हैं। हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम ख़ुशख़बरी देते हैं—

﴿يا ايتها النفس الحمدة كانت في الجسد الحميد.﴾

ऐ मुबारक रूह जो जिस्म के अन्दर थी ﴿اخرجی﴾ अब आओ बाहर अब आपके बाहर आने का वक़्त आ गया है।

﴿ابشری بروح وريحان وربك راض عنك غير غضبان.﴾

अब आप ख़ुश हो जाओ। जन्नत आपके लिए तैयार है और अल्लाह आपसे राज़ी हो चुका है और जन्नत का दरवाज़ा खोलता है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

जन्नत की परी चेहरा हूर

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

अल्लाह से यारी लगा लो

मेरे भाईयो! अपने अल्लाह को साथ ले लें। अल्लाह से बड़ा शफ़ीक़ कोई नहीं। अल्लाह से बड़ा मेहरबान कोई नहीं। अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत वाला कोई नहीं। माँ भी कितना कुछ सुनेगी। वह भी कहेगी बेटा बस कर मज़ीद सुनने की मुझ में ताक़त नहीं और अल्लाह तआला कहता है—

सुना! सुना! सारी ज़िन्दगी सुना! सारी ज़िन्दगी सुनूँगा, कभी न थकूंगा, मैं दूंगा और कभी न घबराउँगा। अल्लाह से यारी लगानी

है तो मांगो और अल्लाह से यारी तोड़नी है तो उनसे मांगना शुरू कर दो। वह आपकी गली छोड़ जाएगा और अल्लाह पाक से यारी लगानी है तो उससे सवाल करना शुरू कर दो वह आपका बन जाएगा। लोगों से जान छुड़ानी हो तो उनसे क़र्ज़ा मांगो। वह एक साल पूरा आपकी गली में नहीं आएगा और अल्लाह पाक से जी लगाना है तो उससे मांगना शुरू कर दो। वह देता जाएगा कि उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं है।

चूँकि यह ज़ख़्म रूह पर है और यह जो कुछ कर रखा है यह सिर्फ़ उसके जिस्म को नफ़ा पहुँचाने का सामान हैं।

रूह न औरत को जाने, न शराब को जाने, न मौसिक़ी को जाने, न पैसे को जाने, न हुकूमत को जाने, न सियासत का जाने, न सैर जाने, न सब्ज़पोश पहाड़ जाने, न बर्फ़ानी पहाड़ जाने, न सहरा जाने, न ख़ूबसूरत वादियाँ जाने।

जिसे अल्लाह न मिला उसे कुछ भी न मिला

वह तो अल्लाह को जाने अगर उसे अल्लाह न मिला तो उसे कुछ न मिला अगर उसे अल्लाह मिल गया तो सब कुछ मिल गया। जो इन्सान अल्लाह से अपनी रूह को तोड़ लेता है सारी काएनात सोना चाँदी बनकर उसके सामने ढेर कर दी जाए तो मैं अल्लाह की क़सम खाकर कर कहता हूँ कि यह नाकाम इन्सान है, यह दिल की दुनिया का वीरान इन्सान है।

ख़ुद अल्लाह तआला का ऐलान सुना ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾। सिवाए अल्लाह की याद के कोई चीज़ नहीं जो दिल की दुनिया को चैन दे सके।

भागकर देखो, दौड़कर देखो, अल्लाह से कटकर देखो अगर कहीं चैन मिल जाए तो आकर मेरा गिरेबान पकड़ना और अल्लाह पाक से मिलकर देख लो उसे अपना बनाकर देख लो फिर अगर रूह में कोई ख़ला रह जाए या सीने पर कोई दाग़ रह जाए या दिल में कोई हसरत रह जाए तो फिर मुझे आकर पकड़ना।

अल्लाह जिसे मिला, उसे सब कुछ मिला। जिसे अल्लाह न मिला उसे कुछ न मिला। अल्लाह इंसान की रगे जान से ज़्यादा करीब है और इन्सान के अन्दर अल्लाह की तलब ऐसी है जैसे रोटी और पानी की तलब होती है। जिसे रोटी न मिले तो बेक़रार हो जाता है, पानी न मिले तो बेक़रार होता है ऐसे ही जिस रूह को अल्लाह न मिले उसकी बेक़रारियों का अल्लाह मिलने के अलावा कोई इलाज नहीं।

अल्लाह से दोस्ती करने का ईनाम

मेरे भाईयो और दोस्तो! इस आइन्दा कल ने हक़ीक़ी ज़िन्दगी को छिपा रखा है। आदमी मुल्क चाहता है ﴿واذ رايت ثم رايت نعيما وملكا كبيرا﴾ मेरे बन्दे मुझसे सुलह करके आजा तुझे ऐसा मुल्क दूंगा जिसे कोई छीन न सकेगा। जिस को फिर ज़वाल कोई नहीं। यह मुल्क तो छूटने वाला है, उस मुल्क को ज़वाल कोई नहीं।

तुझे जवानी दूंगा, ऐसी जवानी कि ﴿ان لكم ان تشبو فلا تهرمو ابدا﴾ जिसमें बुढ़ापा हर्गिज़ नहीं, तुझे ज़िन्दगी दूंगा ऐसी ज़िन्दगी जिसमें मौत नहीं ﴿ان لكم ان تحيو فلا تموتوا ابدا﴾ हमेशा ही ज़िन्दा रहो कभी मौत नहीं।

तुम्हें ऐसा रिज़्क दूंगा जिसके पीछे फ़क़्र नहीं ﴿ان لكم ان تنعموا فلا تبأسوا ابدا﴾ तुम्हें ऐसी सेहत दूंगा जिसके पीछे बीमारी कोई नहीं ﴿ان لكم ان تصحوا فلا تسقموا ابدا﴾ यह ज़िन्दगी यहाँ नहीं बन सकती। यह ज़िन्दगी अल्लाह ने आगे छिपाकर रखी है। आदमी चाहता है मेरा सब कुछ यहीं दुनिया में पूरा हो जाए, हर जाएज़ नाजाएज़।

अल्लाह की मुहब्बत का ज़ेवर पहन लो

अल्लाह तआला फ़रमा रहा है ﴿يلبسون ثيابا خضرى من سندس استبرق﴾ मैं तुम्हें जन्नत का रेशमी लिबास पहनाऊँगा। यहाँ मर्दों को भी शौक़ चढ़ा हुआ है सोने की ज़ंजीरे पहनी हुई हैं, सोने के लाकेट पहने हुए हैं, सोने की अंगूठियाँ चढ़ाई हुई हैं।

यहाँ कहा औरत न बनो, मर्द बनो। तुम्हारा ज़ेवर तक़्वा है, तक़्वे का ज़ेवर पहनो। मेरी मुहब्बत का ज़ेवर पहनो, पाकदामनी का ज़ेवर पहनो, हया का ज़ेवर पहनो, सख़ावत का ज़ेवर पहनो। यह सोना औरत के लिए है, तू जन्नत में आ जा मैं पहनाऊँगा ﴿يحلون فيها من اساور من ذهب﴾ मैं तुम्हें सोने के कंगन पहनाऊँगा।

यह सारे के सारे ताजिरों से आप पूछें सारे का सारा ज़ेवर खोटा है। उस वक़्त तक सोना खरा हो ही नहीं सकता जब तक तांबा न मिले। अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है। वह बैठा हुआ ज़ेवर बना रहा है। जिस दिन मरेगा ज़ेवर बनाता मरेगा और ज़ेवर जन्नत वालों के लिए बना रहा है कि मेरे बन्दे आएंगे, उन्होंने मेरी इताअत का ज़ेवर पहना। आज मैं उन्हें जन्नत का ज़ेवर पहनाऊँगा।

बोसीदा होने वाली दुनिया भी कोई दुनिया है

जिस ज़िन्दगी को हम यहाँ तलाश करते हैं यह वहाँ है। भाई घर आलीशान हो तो अल्लाह तआला ने कहा कि यह क्या घर है जो कल मिट जाएगा, ख़त्म हो जाएगा।

किसरा ने महल बनाया था चालीस मुरब्ब'अ (वर्ग) मील में फैला हुआ था और उसमें दस साल भी रहना नसीब नहीं हुआ। उसकी आँखों के सामने अल्लाह तआला ने उसको टुकड़े टुकड़े कर दिया। आज के लोग क्या घर बनाएंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं तू मेरे पास आ तो वह दूंगा कि—

﴿لبنة من لؤلؤة بيضاء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सफ़ेद मोती की, ﴿ولبنة من ياقوتة حمراء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सुर्ख़ याक़ूत की, ﴿ولبنة من زمردة خضراء﴾ एक ईंट लगाई हुई है सब्ज़ ज़मुर्रद की, ﴿ملاطها المسك﴾ मुश्क का गारा, ﴿حشيشها الزعفران﴾ ज़ाफ़रान की घास, ﴿سقفها عرش الرحمن﴾ और अपने अर्श को मैंने उसकी छत बनाया है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा या अल्लाह! ﴿انك تقدر على المؤمن﴾ आप मुसलमान को बड़ी तंगी देते हैं? तो अल्लाह तआला ने जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया। जब जन्नत को देखा तो ﴿تجري من تحت الانهار﴾ बहती हुई नहरें, एक ईंट मोती की, एक ईंट याक़ूत की, एक ईंट ज़मुर्रद की, मश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और अल्लाह का अर्श उसकी छत है। यह जन्नत का मैटिरियल है और फिर दिन में पाँच दफ़ा अल्लाह जन्नत को मुज़य्यन करता है। उसका हुस्न व जमाल क्या होगा? ﴿زوجهم بحور عين﴾ हमने जन्नत में ख़ूबसूरत औरतों से निकाह कर दिया।

वह औरत जो थूक सात समुंद्र में डाल दे तो सातों समुंद्रों का पानी शहद से ज़्यादा मीठा हो जाए हाँलाकि उसमें थूक नहीं है, थूक तो एक ऐब है लेकिन वह अगर ऐसा करे तो सातों समुंद्र शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएंगे तो उसके बोल में क्या मिठास होगी? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कहाँ हैं वे बन्दे जिन्होंने दुनिया में गाना नहीं सुना, शैतानी नग़में नहीं सुने, शैतानी मौसीक़ी नहीं सुनी, आज वह जन्नत के राग सुनें, जन्नत का नग़मा सुनें। अल्लाह जन्नत की औरतों से फ़रमाएगा सुनाओ।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह! तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम! अगर काफ़िर को सारा जहान भी मिल जाए और मरकर दोज़ख़ में चला जाए तो उसने कुछ नहीं देखा अगर आख़िरत ख़राब हो तो दुनिया की कामयाबी भी इतनी बेमाइने है जितनी कि नाकामी बेमाइने है अगर आख़िरत ख़राब हो गई तो दुनिया की इज़्ज़त व ज़िल्लत एक चीज़ है, दुनिया की ख़ुशहाली व फ़क़्र एक ही चीज़ है और अगर आख़िरत बन गई तो दुनिया का फ़क़्र कोई फ़क़्र नहीं।

यह सब सुनकर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह! अगर मुसलमान के हाथ कटे हुए हों और पाँव कटे हुए हों ﴿مقطوع اليدين والرجلين﴾ दोनों हाथ कटे हुए हों और पाँव कटे हुए हों और नाक ज़मीन पर घसिट रही हो न कोई खिलाए न पिलाए और वह क़यामत तक ज़िन्दा रहे ﴿وعاش الدهر كله﴾ वह क़यामत तक ज़िन्दा रहे लेकिन मरकर यहाँ चला जाए जो मैंने देखा है तो या अल्लाह तेरी इज़्ज़त की क़सम! उसने कोई दुख नहीं देखा।

भंगी को क्या ख़बर की ख़ुशबू क्या है (वाक़िआ)

मुसलमान को यहाँ की मौसीक़ी ने ही हराम में डाल दिया। उसे क्या ख़बर है कि जन्नत की मौसीक़ी क्या है। जो गंदगी खाता रहता है उसे क्या ख़बर कि ज़ाफ़रान की ख़ुशबू क्या है?

एक भंगी इतर वाले की दुकान से गुज़रा तो ख़ुशबू का हल्ला चढ़ा। वह बेहोश होकर गिर गया। अब सारे इकट्ठे हुए क्या हुआ? उन्होंने कहा भाई बेहोश हो गया है कोई रूह केवड़ा लाओ, कोई गुलाब का अर्क़ लाओ, कोई ख़मीरा लाओ। एक भंगी और गुज़रा। उसने देखा कि यह तो मेरी बिरादरी का है। उसने कहा अरे अल्लाह के बन्दो! तुम्हें क्या ख़बर पीछे हटो। वह थोड़ी सी गंदगी उठाकर लाया। उसकी नाक पर जो लगाई तो फ़ौरन होश आकर बैठ गया।

अल्लाह के दीदार की नेमत को याद किया करो

आज सारे मुसलमानों का यह हाल है कि जन्नत के नग़मे भूल गया, क़ुरआन के नग़मे भूल गया। अपने आपको गंदगी में डुबो दिया, सिर हिला रहा है। अरे तेरा सिर क़ुरआन पर हिला करता था और कभी तेरे आँसू क़ुरआन सुनने पर निकला करते थे लेकिन आज तुझे शैतान ने बर्बाद कर दिया। जब तू यहाँ अपने आपको हराम से नहीं बचाएगा। अल्लाह तुझे अपनी ज़ाते आली का दीदार कैसे कराएगा? अल्लाह जन्नत वालों से पूछेगा ﴿يا اهل الجنة﴾ दोज़ख़ वालों से कहेगा ﴿يا اهل النار﴾ सिर उठाएंगे। अल्लाह जन्नत वालों से पूछेगा,

﴿كم لبثتم في الارض سنين﴾ दुनिया में कितने दिन रह कर आए, ﴿قالوا لبثنا يوما او بعض يوم﴾ या अल्लाह एक दिन या आधा दिन, साठ साल, सत्तर साल, हज़ार साल नहीं ऐ अल्लाह आधा दिन। अच्छा!

﴿ونعم ما اجرتم في يوم او بعض يوم﴾ भाई तुमने इस दिन या आधे दिन में खरा सौदा किया, ﴿ورحمتي وكرامتي وجنتي﴾ तुमने आधे दिन की तकलीफ़ बर्दाश्त करके मेरी जन्नत को ले लिया, मेरी रहमत को ले लिया, मेरी मेहमानी नवाज़ी को ले लिया।

चन्द दिन की अय्याशियों के लिए जहन्नम को ख़रीदने वालों की आवाज़

जाओ मज़े करो तेरे पीछे मौत आएगी न बुढ़ाप न ग़म आएगा न परेशानी न दुख आएगा। तुझे आज़ादी मिल गई है। कहते हैं अगर क़यामत के दिन मौत होती तो ये ख़ुशी से मर जाते। फिर जहन्नम वालों से पूछा जाएगा वह कहेंगे ﴿يوم بعض يوم﴾ ऐ अल्लाह एक दिन या आधा दिन। तो अल्लाह फ़रमाएंगे ﴿بئس ما اجرتم في يوم او بعض يوم﴾ ऐ बन्दो! ऐ औरतों! ऐ मर्दों! कितना खोटा सौदा तुम करके आए हो, कितना ग़लत सौदा करके आए हो, सिर्फ़ चार दिन के नाच कूद की ख़ातिर तुमने मेरे ग़ज़ब को मेरी आग को, मेरे जहन्नम को ख़रीदा। जाओ तुम्हें भी हमेशा ही रहना है। तुम ख़ुशियाँ भूल जाओ, जवानी भूल जाओ, राहत भूल जाओ, ﴿وهم يصطرخون فيها﴾ जाओ चले जाओ चीख़ो और चिल्लाओ, ﴿لهم فيها زفير وشهيق﴾ तुमने चीख़ना और चिल्लाना है,

﴿سواء علينا اجزعنا ام صبرنا﴾ अब चाहे सब्र करो चाहे वावेला करो। मेरे दरवाज़े तुम पर बन्द हैं। कहते हैं अगर उस दिन मौत होती तो ये ग़म से मर जाते।

जन्नत की दौड़

और ऊपर दर्जे की जन्नतुल फ़िरदौस है उसकी हूरों का हुस्न व जमाल और है नीचे का और है। एक खोखा लगाता है एक दुकान बनाता है, एक फैक्टरी बनाता है, एक कारख़ाना बनाता है। हर एक का नफ़ा अलग अलग है कि नहीं?

ऐसे ही जन्नत की दौड़ है। एक अपने रोज़े नमाज़ की जन्नत है। यह सबसे छोटी जन्नत है। एक उससे बड़ी जन्नत है कि अपना रोज़ा नमाज़ करो साथ में अपने पड़ौस को भी कभी कह लो। यह थोड़ी सी उससे बड़ी जन्नत है और एक है मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जन्नत, जन्नतुल फ़िरदौस कि जो सारी दुनिया में कलिमा फैलाने का ग़म खाएगा और सारी दुनिया में दीन फैलाने की नियत करेगा अल्लाह तआला कह रहा है मैं तुझे उस जन्नत में ले जाऊँगा जिसे मैंने अपने हाथ से बनाया है।

जन्नतुल फ़िरदौस के पुल

जन्नतुल फ़िरदौस को अल्लाह तआला ने अपने हाथ से बनाया है। किससे बनाया भाई? अपने हाथ से और ﴿خلق الفردوس بيده﴾ फ़िरदौस को हाथ से बनाया ﴿شق فيها انهارها﴾ नहरें चलायीं ﴿فيها اشجارها﴾ पेड़ लगाए। यह तूबा का पेड़ जन्नतुल फ़िरदौस में है

और इसमें महल्लात हैं। जो नीचे की जन्नतें हैं उनके महल्लात सोने चाँदी के हैं और जन्नतुल फ़िरदौस है उसके महल्लात भी सोने चाँदी के हैं लेकिन एक किस्म ख़ास उस फ़िरदौस में है जो पूरी जन्नत में नहीं है।

﴿لبنة من لؤلؤة بيضاء﴾ एक ईंट सफ़ेद मोती की है, ﴿لبنة من ياقوتة حمراء﴾ एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की है, ﴿لبنة من زمردة خضراء﴾ तीसरी ईंट सब्ज़ ज़मर्रद की है, ﴿حصبائها اللؤلؤ﴾ और उस पर मोती जड़े हुए हैं, ﴿حشيشها الزعفران﴾ ज़ाफ़रान की घास के प्लाट हैं, ﴿وسقفها عرش الرحمن﴾ अल्लाह का अर्श उसकी छत है।

कहाँ भाग गया मुसलमान? गारे मिट्टी के मकानों पर सारी ताक़त लगा दी। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने क्यों न बड़े बड़े नक़्शे खड़े किए? ये अल्लाह के अर्श वाले महल नज़र आ रहे थे।

जन्नत के ख़ूबसूरत लिबास

हदीस में आता है जन्नतुल फ़िरदौस में एक पेड़ है उसके नीचे से निकलता है। सुर्ख़ याक़ूत का घोड़ा और शाख़ों से निकलते हैं जोड़े। जब वहाँ जाएगा और उस सुर्ख़ याक़ूत के घोड़े पर सवार होकर और जोड़े पहनकर हवा में उड़ेगा तो उसके चेहरे का नूर सारी जन्नत में फैलता चला जाएगा और नीचे वाले उसकी शान को देखकर कहेंगे

﴿بم بلغ﴾ या अल्लाह इतना बड़ा दर्जा उसे क्यों दिया? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे,

﴿لانك تقعد عند اهلك في البيت وهو يجاهد في سبيل الله﴾

तू अपने घर में बीवी के पास बैठता था और यह मेरे रास्ते में दर-ब-दर फिरता था। इसलिए मैंने इसको यह दर्जा दिया है। बैठने वाले और फिरने वाले बराबर नहीं हो सकते।

जन्नत की दिलकश नहरें

जन्नत में एक और नहर है। ﴿واسمه هرول﴾ उसका नाम हरवल है। उसके दोनों किनारों पर जन्नत की ख़ूबसूरत लड़कियाँ खड़ी हैं। जो हर वक़्त जन्नत वालों के लिए गाती रहती हैं। अल्लाह की तस्बीह व तहमीद के मीठे बोल से सारी जन्नत गूंजती है। फिर एक नहर है उसका नाम रय्यान है। उस पर मरजान का शहर है। जिसकी सत्तर हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े हैं जो अल्लाह तआला हाफ़िज़ क़ुरआन को अता फ़रमाएगा।

फिर एक नहर और है उसका नाम बेदख़ है जो बन्द है मोतियों से उसके अन्दर मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर मिलता है, ऊपर अल्लाह के नूर की तजल्ली पड़ती है तो उसमें से एक हूर निकलकर बाहर आ जाती है। ऐसी जन्नत है जो नहरों से भरी हुई है फिर इन नहरों के साथ क्या है?

﴿عينان تجريان﴾ चश्मे बहते हुए, ﴿عينان نضاختان﴾ चश्मे ऊपर उठते हुए। कोई चश्मा ऊपर जाएगा फिर नीचे आएगा, कोई चश्मा बह रहा है, कोई ऊपर जा रहा है।

जन्नत के ख़ूबसूरत घर

अल्लाह तआला ने उन नहरों के किनारों पर ख़ूबसूरत ख़ेमे लगा दिए और ख़ेमा सात मील लम्बा चौड़ा एक एक, ख़ेमा कपड़े

का नहीं, ऊन का नहीं, खाल का नहीं, मोती का है जोड़ भी कोई नहीं। सात मील लम्बा चौड़ा ख़ेमा है जिनमें जन्नतियों की बीवियाँ बैठी हुई हैं। अगली बात क्या फ़रमा रहे हैं?

﴿ومساكن طيبة في جنت عدن﴾ तुम्हें ऐसी जन्नत में पहुँचाऊँगा जिसका नाम अद्न है और इसमें ऐसे घर अता फ़रमाऊँगा जो बड़े पाकीज़ा ख़ूबसूरत हैं।

एक आदमी ने अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा मसाकिने तैय्यबा क्या होते हैं? उन्होंने फ़रमाया जन्नत में एक घर है ﴿له سبعون دارا﴾ एक बड़ा जन्नत का महल है जिसके अन्दर ﴿سبعون دارا من ياقوته حمراء﴾ सत्तर हवेलियाँ हैं जो सुर्ख़ याक़ूत की ﴿في كل دار سبعون بيتا من زمردة﴾ फिर हर हवेली में सत्तर कमरे हैं सब्ज़ ज़मर्रद के ﴿في كل بيت سبعون سريرا﴾ फिर हर कमरे में सत्तर चारपाईयाँ हैं ﴿على كل سرير سبعون فراشا﴾ हर चारपाई इतनी लम्बी है कि उस पर सत्तर बिस्तर लगे हुए हैं ﴿على كل فرش جارية﴾ हर बिस्तर पर एक जन्नत की हूर बैठी हुई है। वह ऐसी ख़ूबसूरत है कि सूरज को उंगली दिखा दे तो सूरज नज़र न आए, समुंद्र में थूक डाले तो समुंद्र मीठे हो जाएं, मुर्दे से बात करे तो मुर्दा ज़िन्दा हो जाए, सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आता है, बीमार न हो, बुढ़ी न हो, ग़म न हो, परेशानी न आए, पेशाब नहीं, पाख़ाना नहीं, हैज़ नहीं और उसको अल्लाह तआला ने गारे मिट्टी से नहीं बनाया, मुश्क, ज़ाफ़रान से बनाया है। फिर हर कमरे में दस्तरख़्वान हैं। हर दस्तरख़्वान पर सत्तर क़िस्म के खाने हैं, हर कमरे में सत्तर नौकरानियाँ हैं इतना लम्बा चौड़ा एक घर है और अल्लाह तआला क्या ताक़त देगा ईमान वाले को दीन की मेहनत करने वाले को।

जन्नत में हाफ़िज़-ए-क़ुरआन के लिए बेमिस्ल नहर का ईनाम

ان فی الجنة نهرا، اسمه ریان، علیه مدینة من مرجان، له سبعون
الف باب من ذهب وفضة الحامل القرآن.

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम रय्यान है। जिस पर मरजान का शहर है। जिसके सत्तर हज़ार सोने चाँदी के दरवाज़े हैं जो हाफ़िज़ क़ुरआन को दिया जाएगा। लोग कहते हैं मुल्ला बनाएंगे तो हमारे बेटे को क्या मिलेगा? और आदमी ताजिर बने तो पता नहीं क्या कुछ कमाएगा। अगर नबी के क़ुरआन को सीने में लेगा तो इतना बड़ा महल मिलेगा।

﴿ان فی الجنة نهرا حافتاه الجنة﴾ जन्नत में एक नहर है जो जन्नतुल फ़िरदौस से चलते चलते आख़िरी जन्नत तक आ जाती है। उसके किनारों पर ख़ूबसूरत जन्नत की लड़कियाँ खड़ी हुई है। जिनके हाथों में जन्नत के साज़ हैं और वह कोई काम नहीं करतीं सिर्फ़ जन्नत वालों के लिए नग़में गाती रहती हैं। मद्धम मौसीक़ी जन्नत में चलती रहती है। यहाँ हराम है वहाँ बज रहा है। वहाँ अल्लाह तुझे ऐसी सुनाएगा कि कभी सुनी नहीं होगी।

जन्नत को किस का शौक़ है?

जहन्नम में लपक और भड़क है और जन्नत में ख़ूशबू और महक है। जन्नत कह रही है,

﴿یا اللہ تعبت الممری و ازدت انهاری و اشفقت الی اولیای فعجل الی باهلی.﴾

ऐ अल्लाह! मेरे फल पक गए, मेरी नहरों का पानी छलक पड़ा, मेरे जाम, मेरी शराब, मेरा दूध, मेरी नहरें, मेरा शहद, मेरा लिबास, मेरा ज़ेवर, मेरा सोना, मेरी चाँदी, मेरी मसहरियाँ, मेरे महल इन्तेज़ार में है मौला! अपने नेक बन्दे और बन्दियों को जल्दी भेज दे और इधर जहन्नम पुकार रही है,

﴿اللهم بعد قعرى وعظم جمرى واشتد حرى.﴾

ऐ अल्लाह! मेरे अंगारे बड़े बडे मोटे हो गए, मेरी ग़ारें बड़ी गहरी हो गयीं, मेरी आग बड़ी तेज़ हो गई, हाय हाय हम बड़ा धोका खा गए भाई। बहुत धोका खा गए।

दुनिया के धोके से निकल जाओ

इब्ने क़ीम रह० फ़रमाते हैं इससे भी बड़ा कोई होगा लुटा हुआ मुसाफ़िर जो जन्नत को बेच दे और दुनिया ख़रीद ले। इससे भी ज़्यादा कोई मज़लूम होगा।

उन्होंने तो लफ़्ज और बोला मैंने इसको बदल दिया ताकि आप नाराज़ न हो जाएं क्योंकि हम सारे ऐसे ही हैं जिन्होंने जन्नत को बेच दी और दुनिया ख़रीद ली।

तो इससे भी बड़ा कोई महरूम होगा कि जो जन्नत की हूरों का सौदा कर दे और दुनिया की बेवफ़ा औरतों को ख़रीद ले, उन पाकीज़ा औरतों को छोड़कर यहाँ की औरतों के पीछे भागा फिरे और कितना नादान है वह आदमी जो दुनिया के घरों के पीछे जन्नत के आलीशान घरों को छोड़कर इस दुनिया के चन्द घरों के सौदे कर ले। और वहाँ की सलतनतों को धक्का देकर यहाँ की

कुछ दिनों की हुकूमतों को ख़रीद ले। इससे बड़ा लुटा हुआ मुसाफ़िर कोई नहीं है।

जन्नत की हूरों के हुस्न का मंज़र

हम बड़ा धोका खा गए। तो अल्लाह तआला एक लड़की भेजेगा। यह इस तरह बैठा हुआ होगा तो उसके कंधे पर हाथ मारेगी तो उसको ऐसे देखेगा। जब उसको यूँ देखेगा। उसका ऐसा हुस्न होगा कि वह पूरा मुड़ जाएगा उसकी तरफ़ और उसे अपना चेहरा उसके चेहरे में नज़र आएगा। वह कहेगी ﴿يا ولي الله اما لك فينا من رغبة﴾ आपको मेरा शौक़ नहीं कोई नहीं? वह कहेगा क्यों नहीं लेकिन तू है कौन?

यह सवाल इस बात की अलामत है कि यह जो अल्लाह ने उसे पहले ही जन्नत की बीवियाँ अता कर दी हैं। इस पर ज़ाएद है और आ गया है तोहफ़ा, तू कौन है, मेरी जन्नत में तो नहीं थी। तो वह जवाब देगी। मैं उनमें से हूँ जिनके बारे में रब ने कहा ﴿ولدينا مزيد﴾ मेरे बन्दे तुझे मिलता ही रहेगा आ तो सही।

यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें बता रहा हूँ ﴿باى بنان تعانطه﴾ तुम्हें ख़बर है तुम्हें किन हाथों से गले लगे लगाएगीं? जन्नत की औरत की उंगली का एक पोर सूरज के सामने आ जाए तो सूरज ऐसे ग़ुरूब हो जाए-जैसे सूरज के सामने सितारे ग़ुरूब होते हैं अगर जन्नत की औरत ﴿بسقت بسقة في سبعة ابحر﴾ सात समुंद्र में थूक डाल दे ﴿لكانت اعلى من العسل﴾ तो वह शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं। एक जन्नत से नग़मा निकलेगा और जन्नत की औरतें दरवाज़े पर खड़े होकर इस्तिक़बाल करेंगी

और मिलकर एक गीत गाएंगी:

الا ونحن الخالدات فلا نموت ابدا
ونحن الراضيات فلا نسخط ابدا
ونحن الناعمات فلا نبئس بادا
ونحن المقيمات فلا نرحل بادا
طوبى لمن كان لنا وكنا به

हम हमेशा ज़िन्दा अब मौत नहीं
हम पर हमेशा जवानी अब बुढ़ापा नहीं
हम हमेशा सेहतमंद अब बीमार नहीं
हमारा हमेशा का मिलाप अब जुदाई नहीं
हमारी हमेशा की सुलह अब कभी लड़ाई नहीं

उनको सीने से लगाएंगी और जानो! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें किन हाथों से सीने से लगाएंगी?

जो मुश्क से बनी, अंबर से बनी, ज़ाफ़रान से बनी, काफ़ूर से बनी।

एक लाख अन्दाज़ से चलने वाली हूर

जिसकी उंगली का एक पोरा सूरज को दिखाएं तो सूरज बेनूर हो जाए, समुंद्र में थूक डालें तो सातों समंद्र शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं, मुर्दों से बात करें तो वे ज़िन्दा हो जाएं और ज़िन्दों से बात करें तो उनके कलेजे फट जाएं, दुपट्टे को हवा में लहराएं तो सारी काएनात में ख़ुशबू फैल जाए, एक बाल तोड़कर ज़मीन पर डाल दें तो सारा जहाँ रौशन हो जाए और जब वह बात करे तो पूरी जन्नत में घंटियाँ बजने लग जाएं और जब वह चलती है और एक क़दम उठाती है तो उसके पूरे वजूद में एक लाख क़िस्म के

नाज़ व अन्दाज़ ज़ाहिर होते हैं, नुमायां होते हैं। उसका ऐसा नख़रा, उसका नाज़, उसका अन्दाज़ ऐसा कि एक क़दम पर एक लाख़ क़िस्म के नाज़ व नख़रे दिखाती है। जब वह सामने आती है तो चेहरा सामने होता है। जब वह पीठ फेरती है तो फिर भी चेहरा सामने रहता है। उसका चेहरा नज़रों से ग़ायब नहीं होता चाहे सामने हो या पीठ फेरे।

और सत्तर जोड़े, सत्तर जोड़ों में चमकता जिस्म चाँदी की तरह नज़र आता है। अल्लाह ने कहा ज़िना न करो अगर कोई पाबन्दी लगाई है तो उस पाबन्दी के बदले यह देना चाहता है ﴿وزوجنهم بحور عين﴾ अब मैं तेरी उन लड़कियों से शादी करता हूँ जिनको देखने में तेरे चालीस साल गुज़र जाएंगे।

चालीस साल उसके हुस्न को देखता रहेगा

मेरे रब की क़सम! पहली नज़र पड़ेगी और चालीस साल देखता रहेगा और उसकी पलक झपक नहीं सकती, नज़र लौट नहीं सकती, दाएं बाएं देख नहीं सकता, चालीस साल देखने में गुम हो जाएगा, ऐसे हुस्न के नक़्शे और ऐसे शाहकार ﴿وكواعب اترابا﴾ याक़ूत व मर्जान की तरह ﴿لم يطمثهن انس قبلهم ولا جان﴾ न इन्सान ने छुआ न जिन्न ने छुआ। फिर अल्लाह तआला कहता है ﴿فبای الاء ربكما تكذبان﴾ अब भी मेरी नेमतों को झुठलाते हो? तो मैं तुम्हारा क्या इलाज करूं?

जन्नत में अल्लाह ऐसी ताक़त देगा कि नींद ख़त्म हो जाएगी। आँखे हर वक़्त देखती रहेंगी। दुनिया में हराम नहीं देखा। मर्दों से कहा नज़रें नीचे रखो, औरतों से कहा नज़रें नीचे रखो,

﴿قل للمؤمنين يغضوا من ابصارهم﴾ ऐ मेरे बन्दो! नज़रें झुकाया करो, ﴿وقل للمؤمنات يغضضن من ابصارهن﴾ ऐ मेरी बन्दियो। नज़रें झुकाकर चला करो। इसके बदले क्या मिलेगा? कहा इसके बदले तुझे जन्नत के नज़ारे दिखाऊँगा।

सत्तर बरस जन्नत को देखने में गुज़र जाएंगे

हदीस में आता है एक जन्नती जन्नत में बैठा होगा और हाथ को ठोड़ी के नीचे रखा होगा। अल्लाह तआला उसके सामने जन्नत का एक मंज़र खोलेगा। सत्तर बरस गुज़र जाएंगे। सत्तर साल में यहाँ क्या क्या इन्क़लाब आ जाते हैं और जन्नत का एक दिन हज़ार साल के बराबर होगा, एक हफ़्ता सात हज़ार साल के बराबर होगा लेकिन वहाँ वक़्त गुज़रना महसूस नहीं होगा चूँकि टाइम आफ़ होगा लेकिन अल्लाह के हिसाब में हज़ार बरस का दिन होगा और हमें लगेगा जैसे एक मिनट गुज़र गया। मियाँ बीवी एक दूसरे को देखेंगे। ख़ाविन्द का ऐसा हुस्न होगा कि बीवी ख़ाविन्द को देखेगी चालीस साल तक देखती रहेगी। उसके देखने का शौक़ पूरा नहीं होगा। मर्द अपनी बीवी को देखेगा चालीस साल तक देखता रहेगा उसके देखने का शौक़ पूरा नहीं होगा। कहा ये तो सारे झूठे शौक़ हैं फिर अल्लाह तआला अपने चेहरे से पर्दा हटाएगा। दीदार कराएगा।

वह हूर जिसके हुस्न पर जन्नत की हूरें आशिक़ हैं

यह फ़िरदौस का महल है और उसकी हूर है ﴿اسمها لاعبة﴾

जिसका नाम लाएबा है ﴿خلقت من اربعة اشياء﴾ चार चीज़ों से पैदा किया है मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर। उसमें आबे हयात डाला, आबे हयात डालकर कहा खड़ी हो जा। वह खड़ी हुई और उसका जमाल ऐसा और उसका हुस्न ऐसा है कि जन्नत वाला जब उसे देखेगा अगर मौत न मिट गई होती तो उसके हुस्न को देखकर मर जाता।

﴿لولا ان الله قضى لاهل الجنة ان لا يموتو الماتت من حسنها وجمالها.﴾

ऐसा जमाल कि देखकर मर जाता लेकिन अब मौत ख़त्म हो चुकी है और तो और जन्नत की हूरें उस पर आशिक़ हैं।

﴿جميع الحوور العين عشاق له﴾ यह मैं आपको अपनी तरफ़ से अरबी नहीं बता रहा हूँ यह मैं आपको हदीस के अलफ़ाज़ बता रहा हूँ।

﴿جميع الحوور العين عشاق له﴾ सारी जन्नत की हूरें भी उसकी आशिक़ हैं। उसके कंधे पर हाथ मारती हैं।

﴿يا لاعبه لو يعلم الطلبون لوجدوا فيك﴾ ऐ लाएबा अगर तेरे हुस्न व जमाल का लोगों को पता चल जाए तो तुझे हासिल करने के लिए सब कुछ लुटा दें।

﴿ومكتوب فى نحره﴾ यह एक रिवायत है उसकी गर्दन पर लिखा हुआ है, ﴿مكتوب من عينيه﴾ यह दूसरी रिवायत है कि उसकी आँखों के बीच लिखा हुआ है, ﴿من كان يريد ان يكون له مثلى﴾ जो यह चाहता है कि मुझे हासिल करे, ﴿فليعمل برضاء ربى﴾ मेरे रब को राज़ी करके आए, मेरे रब के हुक्म को पूरा करके आए। एक वक़्त आने वाला है कि पाकदामन जन्नत की ख़ूबसूरत हूरों के साथ होगा और अपनी जवानी को गंदा करने वाला ज़िना की

ग़िलाज़त से दाग़दार करने वाला जहन्नम के कढ़वे पानियों में ग़ोते लगा रहा होगा।

आँख से आँख न मिलाने का ईनाम

एक वक़्त आएगा कि आज का शराब पीने वाला जहन्नमियों की गंदगी को पी रहा होगा और आज का होंट बंद करने वाला उनका रब उन्हें खुद पिला रहा होगा, ﴿وسقهم ربهم شرابا طهورا﴾ एक वक़्त आएगा अपनी नज़रों को आवारा करने वाला अपनी आँख में लोहे की गड़ती मेंखे देखेगा और एक वक़्त आएगा अपनी नज़रों को झुकाने वाला अपने अल्लाह के दीदार में मशग़ूल होगा जो आँख बे हया हो उसे क्यों अल्लाह का दीदार नसीब हो?

हूर को देखना कौन सी बड़ी बात है, हूर क्या चीज़ है। मैं उससे आगे सुना रहा हूँ हूर को बनाने वाले को भी आँख देखेगी। क्या अंदाज़ से उसे देखेगी।

दावत व तबलीग़ करने वालों के लिए ख़ासुल-ख़ास हूर

﴿وان فى الجنة حور﴾ और जन्नत में एक हूर है ﴿اسماء عينا﴾ उसका नाम ऐना है,

﴿عن يمينها سبعون الف خادم وعن يسارها سبعون الف خادم﴾

उसके दाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम और उसके बाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम। एक लाख चालीस हज़ार ख़ुद्दाम में पुकार कर कहती है,

﴿اين الامرون بالمعروف والناهون عن المنكر۔﴾

कहाँ हैं भलाइयों को फैलाने वाले और बुराईयों को मिटाने वाले?

ऐसी ऐसी बीवियाँ अल्लाह तआला ने तैयार कर रखी हैं ﴿باى بنان تعاطيه﴾ किन हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी। वे औरतें ऐसे हाथों से तुम्हें गले लगाएंगी कि उनकी उंगली का एक पोरा सूरज को ग़ायब कर सकता है, सात समुंद्र में थूक डालें तो समुंद्र शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं, सूरज को उंगली दिखा दें तो सूरज नज़र न आए, मुर्दों से बात करें तो ज़िन्दा हो जाएं, ज़िन्दों को एक झलक दिखा दें तो कलेजे फट जाएं, एक क़दम रखे तो एक लाख क़िस्म के नाज़ व अन्दाज़ दिखाए, जब बोले तो पूरी जन्नत में घंटियाँ बजने लग जाएं, जब बाहर निकले तो यूँ लगे कि सूरज कमरे से निकल कर पूरी जन्नत में आ गया और छा गया और चमक गया।

خيرات حسان مقصورات فى الخيام. لم يطمثهن انس قبلهم ولا جان. فباى الاء ربكما تكذبان.

ये वे तुम्हारी बीवियाँ हैं जिन्हें इन्सान ने छुआ नहीं, जिन्न ने छुआ नहीं, देखा नहीं, क़रीब नहीं आया, फटकने नहीं पाया, कुँवारी हैं और तेरे क़रीब आने के बाद भी हमेशा कुँवारी रहेंगी। एक नज़र चालीस बरस की और एक बार गले मिलना सत्तर बरस का होगा और जितनी बार उसके क़रीब जाएगा ﴿انا انشانٰهن انشاء فجعلنهن ابكارا﴾ वे हमेशा कुँवारियाँ रहेंगी उनका कुँवारापन न टूटेगा।

तीन महीन बेहोश रहने की वजह

मरी में हमारे एक दोस्त ने ख़्वाब में एक हूर देखी तो तीन महीने तक बेहोश रहा। सारे डाक्टरों ने पूछा कि क्या हुआ तो कहा कि हूर देखी है और कुछ नहीं। सच्ची बात है। जब ख़्वाब में नशा तारी हो गया तो वैसे देख लें तो क्या होगा? इसीलिए उधार रखना पड़ा जिस हूर की उंगली को सूरज नहीं देख सकता उस हूर को हम कैसे देख सकते हैं।

हूर के हुस्न को देखकर जिब्राईल अलैहिस्सलाम भी धोके में आ गए

जिब्राईल अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने कहा जाकर मेरी जन्नत को देख लो। जब वह आए जन्नत देखने के लिए तो नूर की तजल्ली पड़ी तो कहा सुब्हानअल्लाह! आज तो अल्लाह का दीदार हो गया। सज्दे में चला गया। सिदरतुल मुन्तहा तक जिब्राईल अलैहिस्सलाम की पहुँच है। उसके आगे अल्लाह के अलावा किसी को नहीं पता वहाँ हर वक़्त अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तजल्ली पड़ती है लेकिन जन्नत की तजल्ली देखी तो कहा सुब्हानअल्लाह आज तो अल्लाह का दीदार हो गया और सज्दे में गिर गया और आवाज़ आई ऐ रूहुल अमीन! कहाँ गिर गया सिर उठाकर देख। जब सिर उठाया तो जन्नत की हूर मुस्कुरा रही है और उसके दाँतों से जो चमक फूट फूटकर निकल रही थी उसे जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने समझा कि अल्लाह का दीदार हो गया

तो अब बताएं दुनिया में जन्नत कैसे मिलेगी?

कहने लगे ﴿سبحان الذی خلقك﴾ क़ुर्बान जाएं उस पर जिसने तुझे पैदा किया। कहने लगी पता भी है कि मैं किसकी हूँ? कहा नहीं? ﴿لمن اثر مرضاة الله علی هوٰه﴾ मैं उसकी हूँ जो अपनी मर्ज़ी को छोड़कर अल्लाह की मर्ज़ी पर लग जाए।

दुनिया की औरत अफ़ज़ल है या जन्नत की हूर

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! दुनिया की औरत अच्छी है या जन्नत की हूर? आपने फ़रमाया ﴿بل نساء الدنيا يا ام سلمه﴾ ऐ उम्मे सलमा! जन्नत की औरत से दुनिया की औरत बहुत आला और ऊँची है। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! किस वजह से? यह सवाल क्यों किया कि जन्नत की हूर तो मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान और काफ़ूर से बनी है। हम किससे बने? आग, पानी, मिट्टी, हवा। हमारा माद्दा अदना है। उनका माद्दा आला है। तो कहा या रसूलल्लाह! वह अच्छी हैं या हम अच्छी? फ़रमाया ﴿بل نساء الدنيا﴾ बल्कि दुनिया की औरत। कहा ﴿بم﴾ क्यों या रसूअलल्लाह? आपने फ़रमाया ﴿بصلاتهن﴾ उनकी नमाज़ की वजह से, ﴿وعبادتهن﴾ और उनकी फ़रमांबरदारी की वजह से, ﴿وصيامهن﴾ और उनके रोज़ों की वजह से। नमाज़, रोज़ा और इबादात। इबादात एक बड़ा जामेअ लफ़्ज़ है। जिसका मतलब है चौबीस घंटे अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी में रहना।

﴿البس الله وجوههن النور﴾ अल्लाह उनके चेहरों को नूरानी बनाएगा,

﴾واجسادهن الحرير﴿ उनके जिस्म को रेशम पहनाएगा, सूरज की तरह चमकते चेहरे देगा ﴾صفر الحلى﴿ ख़ालिस साने के ज़ेवर पहनाएगा, ﴾خضر الحلل﴿ ख़ालिस रेशम के जोड़े पहनाएगा, ﴾مجامرهن العود﴿ उनकी अंगीठी में ऊद को खुशबू के लिए जलाया जाएगा, ﴾امشاتهن الذهب﴿ और उनके बालों में सोने की कंघी होगी। और जन्नत की हूर पर अल्लाह दुनिया की औरत को सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा हुस्न व जमाल अता फ़रमाएगा और वे कहेंगी,

﴾نحن بنات الذل والشكل والبهاء ومسكنافى الفردوس المخلد.﴿

जन्नत की हूर फ़ख्र कर रही हैं कि हम हुस्न वाली, जमाल वाली, जलाल वाली और जन्नत में रहने वाली, हम ने मौत कोई नहीं देखी ﴾انت التى انشئت﴿ औ तू क्या है जो मिट्टी से बनी ﴾وماواك مرقد﴿ और तू क्या जो क़ब्र की मिट्टी में मिट्टी होकर हम तक पहुँची, जन्नत की हूरों का यह फ़ख्र है कि—

हमने ज़िन्दगी देखी मौत नहीं देखी, जवानी देखी बुढ़ापा नहीं देखा, हुस्न देखा बदसूरती नहीं देखी और तुम मिट्टी से बनी, मिट्टी में गयीं, मिट्टी से निकलकर आयीं।

तो वे इसके जवाब में कहेंगी—

﴾نحن المصليات فما صلين.﴿ हमने नमाज़ पढ़ीं तुमने नमाज़ें नहीं पढ़ीं, ﴾نحن الصائمات فلا صمن.﴿ हमने रोज़े रखे तुमने रोज़े नहीं रखे, ﴾نحن المتصدقات فما تصدقن﴿ हमने अल्लाह के नाम पर ख़र्च किया तुमने ख़र्च नहीं किया, ﴾ونحن امتوضنا فما توضئن.﴿ हमने अल्लाह के लिए वुज़ू किया तुमने वुज़ू नहीं किया।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं ﴾فغلبهن﴿ ईमान

वाली औरतें जन्नत की औरतों पर इस बिना पर ग़ालिब आ जाएंगी।

हूरे-ए-ऐना के आशिक़ नौजवान का वाक़िआ

एक दफ़ा जमाअत अल्लाह के रास्ते में जाने के लिए तैयार हो रही थी। मुल्के शाम में एक बुज़ुर्ग अल्लाह के रास्ते में निकलने की तर्ग़ीब दे रहे थे और उनको तैयार कर रहे थे कि अल्लाह ने जन्नत दे दी और जान व माल ले लिया। बोलो कौन तैयार है? एक नौजवान खड़ा हो गया। उसने कहा इस मुहब्बत के बदले में मुझे जन्नत मिलेगी? कहा बिल्कुल मिलेगी। फिर मैं तैयार हूँ आपके साथ चलूँगा।

वह बड़ा ख़ूबसूरत सोलह सत्रह साल का जवान उनके साथ निकल गया। उस ज़माने में तो भाई एक सुनते थे खड़े हो जाते थे। अब तो तीन तीन घंटे बयान के बाद चिल्ला मुश्किल से देते हैं। उस वक़्त दस मिनट की बात हुई वह गए, जान भी क़ुर्बान कर दी।

अब चलते चलते अल्लाह के रास्ते में चलते फिरते वतन से हज़ारों किलोमीटर दूर निकल गए। वहाँ काफ़िरों के साथ जिहाद हो गया तो वह घोड़े पर सवार था। उसको नींद आई। उसकी आँख खुली तो नारा लगाया ﴿واشوقاه للعينا مرضيه﴾ कि मैं तो ऐना मरज़िया के पास जाना चाहता हूँ। लोगों ने कहा यह तो पागल हो गया। लड़के का दिमाग़ ख़राब हो गया। वह घोड़ा दौड़ाता हुआ लश्कर में बड़े बुज़ुर्ग थे शेख़ अब्दुल वाहिद उनके पास आया कि

मुझे ऐना का शौक़ लग गया है। अब मैं दुनिया में नहीं रहना चाहता। थोड़ी सी झलक अल्लाह तआला ने दिखा दी। उसने कहा बेटा मुझे बता तो यह क्या है?

उसने कहा मैं घोड़े पर सवार था तो मुझे नींद आ गई। नींद में मैंने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी कह रहा है कि चलो ऐना के पास ले चलूँ। मैंने कहा ले चलो। उसने मेरा हाथ पकड़ा और एक बाग़ में ले गया देखा तो जन्नत है पानी की नहर है, उसके किनारे पर ख़ूबसूरत लड़कियाँ हैं, वे ऐसी लड़कियाँ हैं कि जिनके हुस्न व जमाल को देखकर कोई तारीफ़ नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे देखा तो उन्होंने मुझसे यूँ कहा।

तुम में ऐना कौन है?

﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह लो भाई ऐना का ख़ाविन्द आ गया। तो मैंने उनको सलाम किया, मैंने उनसे पूछा ﴿ايتكن العيناء﴾ कि तुम में ऐना कौन है? तो उन्होंने कहा ﴿نحن خدم لها﴾ हम तो उसकी नौकरानियाँ हैं, हममें से कोई ऐना नहीं है। आप आगे जाएं।

मैं आगे गया तो वहाँ दूध की नहर चल रही थी और उस नहर पर ऐसी लड़कियाँ खड़ी थीं जो पहले वालियों से ज़्यादा ख़ूबसूरत थीं जिनको देखकर आदमी फ़ितने में पड़ जाए। ऐसा हुस्न था कि पिछलियों को भी भुला दिया। उन्होंने मुझे देखा तो फिर मुझे कहा—

﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह तो ऐना का घरवाला आ गया। मैंने उनको सलाम करके पूछा ﴿ايتكن العيناء﴾ तुम में ऐना कौन है? तो

उन्होंने कहाँ हम ऐना कहाँ हम तो उसकी नौकरानियाँ हैं। आप आगे चले जाएं।

आगे क्या देखा शराब की नहर चल रही है उस पर ऐसी लड़कियाँ थीं ﴿انسيتي من خلقت﴾ कि उन्हें देखकर पिछली सारी भूल गयीं। ऐसा ख़ूबसूरत अल्लाह ने उन्हें चेहरा अता फ़रमाया कि उनको देखकर सब कुछ भूल गया। उन्होंने मुझे कहा—

﴿مرحبا بزوج العيناء﴾ यह ऐना का घरवाला आ गया। मैंने उनसे पूछा ﴿ايتكن العيناء﴾ तुम में ऐना कौन है? तो उन्होंने कहा ﴿نحن خدم لها﴾ हम तो नौकरानियाँ हैं आप आगे चले जाएं।

आगे गए तो शहद की नहर चल रही थी। उसके किनारे पर बड़ी ख़ूबसूरत लड़कियाँ खड़ी हुई थीं। वह ऐसी लड़कियाँ थीं कि जिनके हुस्न व जमाल को कोई बयान नहीं कर सकता। यह चार नहरों पर नौकरानियाँ खड़ी हुई थीं। यह तो क़िस्सा है अब एक और हदीस इसके ज़मन में सुना दूँ। हदीस पाक में आता है—

﴿ان في الجنة الحور يقال لها العيناء﴾ जन्नम में एक हूर है, ﴿يقال لها العيناء﴾ जिसका नाम ऐना है जब वह चलती है, ﴿عن يمينها سبعون الف خادم.﴾ उसकी दाएं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम, ﴿عن يسارها مثل ذلك﴾ उसके बाएं तरफ़ सत्तर हज़ार, एक लाख चालीस हज़ार ख़ुद्दाम अन्दर खड़े होते हैं दर्मियान में, सत्तर हज़ार इधर सत्तर हज़ार उधर और वह कहती है ﴿اين الامرون بالمعروف والناهون عن المنكر﴾ भलाईयों को फैलाने वाले और बुराईयों को मिटाने वाले कहा हैं? ﴿انى لكل من امر بالمعروف ونهى عن المنكر﴾ अल्लाह ने मेरा उसके साथ निकाह कर दिया जो दुनिया में भलाई फैलाएगा और बुराई मिटाएगा। तबलीग़ का काम करेगा उसकी बीवी हूँ।

इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक ही ऐना है जितने तबलीग़ का काम करने वाले पैदा होते जाते हैं उतनी ही अल्लाह ऐना पैदा करता चला जाएगा।

तो कहा जब मैं चौथी नहर भी क्रास कर गया तो उन्होंने भी कहा हम तो नौकरानियाँ हैं। मैं आगे चला गया, आगे देखा तो सफ़ेद मोती का ख़ूबसूरत ख़ेमा जो जगमगा रहा था, रौशन चमकदार उसके दरवाज़े पर एक लड़की खड़ी है, सब्ज़ लिबास पहनकर उसने जब मुझे देखा तो उसने मुँह अन्दर किया और अन्दर करके कहा—

ऐना तुझे ख़ुशख़बरी हो तेरा ख़ाविन्द आ गया, ऐना तेरा ख़ाविन्द आ गया, तेरा घरवाला आ गया। तो मैं अन्दर गया तो सारा ख़ेमा नूर से रौशन और ख़ेमे के अन्दर बीच में तख़्त पड़ा हुआ था, तख़्त पर गाव तकिए लगे हुए, क़ालीन बिछे हुए और उसके ऊपर एक लड़की बैठी हुई थी। ऐसा हुस्न व जमाल कि देखकर कलेजा फट जाए न बर्दाश्त की ताक़त न देखने की ताक़त। जब मैंने उसे देखा तो मैंने कहा अच्छा यह है ऐना तो उसने मुझे कहा—

﴿مرحبا مرحبا قددنا لك القدوم على يا ولي الرحمن﴾

ऐ अल्लाह के वली तेरा मेरा मिलाप अब क़रीब है तेरे मिलने का वक़्त आ गया है।

कहा मैं तो उसको देखकर आगे बढ़ा कि उसके पास बैठूँ उसको गले लगाऊँ तो उसने मुझे कहा—

﴿مهلا مهلا﴾ सब्र करो, सब्र करो, ﴿فان فيك روح الحيوة﴾ अभी तू ज़िन्दा है लेकिन आज का रोज़ा तेरा मेरे पास इफ़्तार होगा।

कहा अब मेरी आँख खुल गई। अब मैं वापस नहीं जाना चाहता अगर आप भी एक नज़र ऐना को देख लें तो सारे ही वापस राइविन्ड चले जाओ। तो उन्होंने कहा बस अब तो मैं जान देता हूँ। टक्कर हुई सबसे पहले यह बच्चा शहीद हुआ।

अल्लाह ने मुझे ऐना से मिला दिया

वह अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने देखा वह हँस रहा था। मरकर भी हँस रहा था। जब वापस आए तो उस बच्चे की माँ आई। उसने कहा अब्दुल वाहिद मेरे हदिए का क्या बना? वह अपने बेटे को कह रही थी हदिया। अल्लाह को हदिया दिया था। अल्लाह के रास्ते में। उस वक़्त मांए ऐसी थीं कहा मेरा हदिये का क्या बना क़ुबूल हो गया यानी मर गया तो क़ुबूल हो गया। वापस आ गया तो मरदूद हो गया। कहा भाई ﴾مقبولة ام مردودة﴿ क़ुबूल है या मरदूद। तो उन्होंने कहा ﴾بل مقبول﴿ बल्कि मक़बूल है रात को माँ ने ख़्वाब में देखा तो उसका बेटा जन्नत में तख़्त पर बैठा है, ऐना उसके पास बैठी है। वह कह रहा है ऐ माँ अल्लाह ने तेरा हदिया क़ुबूल किया है और ऐना से मेरा निकाह कर दिया। उसे मेरी बीवी बना दिया। मुझे उसका घरवाला बना दिया है तो जो दावत की मेहनत में अपनी जान माल को खपाएगा ऐसे ऊँचे दर्जात पर चढ़ता जाएगा।

जहन्नम से निकलने वाले जन्नती का अनोखा वाक़िआ

क़यामत के दिन अल्लाह पाक नबियों से सिद्दीक़ीन से,

शहीदों से कहेगा जाओ जितने इंसान जहन्नम से निकालकर ला सकते हो निकालो। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत पर बेशुमार मख़्लूक़ निकलेगी। अब अल्लाह पाक फ़रमाएंगे अब मेरी बारी है। तुम सब फ़ारिग़ हो गए।

﴿كم يقبض الا ارحم الرحمين﴾ अब अल्लाह पाक अपने दोनों हाथों से जहन्नम के अन्दर से ईमान वालों को निकालेगा, इसी तरह तीन दफ़ा निकालेगा और जिसके दिल में ऐटम के करोड़वें हिस्से के बराबर भी ईमान होगा वह फिर भी रह जाएगा।

इसके बाद जहन्नम से जिब्राईल अलैहिस्सलाम को ﴿يا منان يا منان﴾ की आवाज़ आएगी। कहेंगे एक अभी बाक़ी है। उसकी बारी नहीं आई। तो अल्लाह पाक कहेंगे जाओ उसको निकालकर ले आओ। तो वह आएंगे और दारोग़ा जन्नत से कहेंगे अरे भाई एक अटका हुआ है आख़िरी क़ैदी उसको निकाल दो तो वह जहन्नम के अन्दर जाकर वापस आएंगे और कहेंगे कि दोज़ख़ ने अब करवट बदल ली है और हर चीज़ पलट दी है पता नहीं वह कहाँ है।

दोज़ख़ का एक पत्थर सातों बर्रे आज़मों के पहाड़ों पर रख दिया जाए तो सारे पहाड़ पिघलकर स्याह पानी में तब्दील हो जाएंगे और दोज़ख़ में अगर सूई के बराबर सुराख़ हो जाए तो उसकी आग सारे जहान को जलाकर राख कर देगी। दोज़ख़ में अगर एक लाख आदमियों को बिठा दिया जाए और एक साँस भी ले तो उसकी एक साँस की वजह से एक लाख आदमी मरकर ख़त्म हो जाएंगे।

यह क़ैदख़ाना है कोई मामूली चीज़ नहीं है कि दो चार थप्पड़

लगेंगे फिर उठाकर जन्नत में ले आएंगे। आसान मस्अला नहीं है। अगर धुलाई होगी तो बड़ी ज़बर्दस्त होगी। तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम आएंगे अल्लाह से अर्ज़ करेंगे कि पता नहीं चल रहा है वह कहाँ हैं? अल्लाह तआला बता देगा की जहन्नम की फ़लां चट्टान के नीचे पड़ा है। तो वह आएंगे। चट्टान का साँप डंग मारेगा तो चालीस साल तक तड़पता रहेगा। उसको झटका देकर निकालेंगे फिर साफ़ हो जाएगा। उसको नहरे हयात में डाला जाएगा। और पुलसिरात सिर्फ़ मुसलमानों के लिए है काफ़िरों के लिए नहीं। उनको सीधा जहन्नम के गेट से दाख़िल किया जाएगा।

﴿وسيق الذين كفروا الى جهنم زمرا حتى اذا جآؤها وفتحت ابوابها.﴾

यह काफ़िर के लिए क़ायदा है कि अंधे, गूंगे, बहरे बनाकर उनको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा ताकि उनके ईमान का पता चल जाए। कुछ ऐसे गुज़रेंगे कि जहन्नम की आग नीचे से पुकारेगी ﴿جز جز﴾ अरे अल्लाह के वास्ते जल्दी ﴿اطفا نورك لهبى﴾ तेरे ईमान ने मुझे टंडा कर दिया और कुछ ऐसे गुज़रेंगे मख़ूदश कि उनको दोनों तरफ़ आरियाँ लग जाएंगी। उनके काँटे उसके अन्दर फंसेंगे। उसको कहा जाएगा कि चल। वह कभी गिरेगा कभी चलेगा।

वह पुकारेगा या अल्लाह! पार लगा दे, या अल्लाह! पार लगा दे। अल्लाह तआला फ़रमाएगा एक वायदा करो तो पार लगा दूँगा। वह कहेगा क्या? तू बाहर आकर अपने सारे गुनाह मान ले तो पार लगा दूँगा। तो वह कहेगा पार लगा दे। मैं सारे गुनाह मान जाऊँगा। अब अल्लाह तआला पार लगा देंगे तो सामने

जन्नत नज़र आ रही होगी और पीछे दोज़ख़ नज़र आ रही होगी। अल्लाह तआला फ़रमाएगा अब बता क्या किया था दुनिया में? तो अब वह डरेगा कि अगर मान गया तो दोबारा फेंक देंगे तो वह कहेगा मैंने कुछ किया ही नहीं यानी आख़िर वक़्त तक दग़ाबाज़ी। अल्लाह तआला कहेगा गवाह लाओ। तो वह इधर उधर देखेगा तो कोई नज़र नहीं आएगा, जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में हैं वहाँ कोई भी नहीं होगा।

फिर अल्लाह पाक उसकी ज़बान को बंद कर देंगे और उसके जिस्म से कहेंगे तू बोल। फिर उसके हाथों से, उसकी रानों से, आवाज़ें आएंगी। तो वह कहेगा मेरा वजूद ही मेरा दुश्मन बन गया। वह कहेगा या अल्लाह बड़े बड़े गुनाह किए तू साफ़ कर दे। दोबारा न भेज। तो उससे कहा जाएगा कि जा जन्नत में चला जा। जब जाएगा तो अल्लाह पाक उसको ऐसी जन्नत दिखाएगा जैसे कि वह सारी की सारी जन्नतियों से भरी हुई है। तो वह देखकर वापस आ जाएगा। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अरे तू जाता क्यों नहीं? तो फिर जन्नत देखकर वापस आ जाएगा। फिर कहा जाएगा तू जाता क्यों नहीं? कहेगा आपने कोई जगह ही ख़ाली नहीं छोड़ी मैं कहाँ जाऊँ।

अदना जन्नती की जन्नत

अब अल्लाह तआला उसकी क़ीमत देगा। अच्छा तू राज़ी है कि मैंने जब से दुनिया बनाई थी और जिस वक़्त ख़त्म हुई उसका दस गुना करके तुम्हें दे दूं, तू राज़ी है? तो उसका मुँह खुल जाएगा ﴿استهزا بي وانت رب العالمين﴾ आप मेरे साथ मज़ाक़ कर

रहे हैं हाँलाकि आप तमाम जहान के रब हैं। उसको यक़ीन नहीं आएगा। अल्लाह फ़रमाएंगे ﴿بلى انا على ذالك قدير﴾ मुझे इस पर क़ुदरत है जा मैंने तुझे दुनिया और उसका दस गुना दे दिया।

कितनी बड़ी दौलत हे ईमान की जो अल्लाह ने हमें अता फ़रमाई। फ़र्ज़ नमाज़ का एक सज्दा ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती है।

यह अदना दर्जे का जन्नती जन्नत में जाएगा तो उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा जन्नत का ख़ादिम खोलेगा तो उसके हुस्न व जमाल को देखकर यह सिर झुकाएगा। और वह कहेगा तुम क्या कर रहे हो? तो यह कहेगा तुम फ़रिश्ते हो तो वह कहेगा मैं आपका ख़ादिम हूँ और नौकर हूँ।

और इसके लिए जन्नत में क़ालीन होंगे। इस पर चालीस साल चल सकता है और उसके दोनों तरफ़ अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और वह कहेंगे ऐ हमारे आक़ा आप इतनी देर से आए तो वह कहेगा कि शुक्र करो मैं आ गया। तुम्हें क्या ख़बर कि मैं कहाँ फँसा हुआ था। ऐसी धुलाई हो रही थी कि मत पूछो। अस्सी हज़ार नौकर कोई तंख़्वाह उनको नहीं देनी पड़ेगी। उनका सारा ख़र्चा अल्लाह के ज़िम्मे है।

अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने

फिर आगे जाएगा तो बड़ा चौड़ा मैदान है जिसके बीच में एक तख़्त बिछा हुआ है। उस पर उसको बिठाया जाएगा। हर नौकर एक खाने की क़िस्म पेश करेगा और एक पीने की चीज़ की क़िस्म पेश करेगा। अस्सी हज़ार खाने और अस्सी हज़ार क़िस्म

की पीने की चीज़ें। न पेट थके न आँत थके, न दाँत थके, न जबड़ा थके न ज़बान दाँतों के अन्दर अटके। यह सारा निज़ाम उसके लिए चल रहा है और हर लुक़्मे की लज़्ज़त उसके लिए बढ़ती जाएगी जैसे दुनिया का पहला निवाला ज़्यादा मज़ेदार फिर उससे कम फिर उससे कम फिर न पीने को जी चाहता है न खाने को लेकिन जन्नत में उसका उल्टा होगा। अल्लाह तआला ऐसी क़ुव्वत देगा कि खाता और पीता रहेगा। पेशाब कोई नहीं पाख़ाना कोई नहीं।

चालीस साल गुमसुम परी चेहरे का नज़ारा

फिर ख़ादिम कहेंगे अब इसको इसके घरवालों से मिला दो। वह सब वापस चले जाएंगे फिर सामने से पर्दा हटेगा ﴿فاذا يملك الاخرة﴾ एक और पूरा जहान नज़र आएगा। पूरी जन्नत जैसे यह तख़्त ऐसा ही आगे तख़्त, उस पर एक लड़की जन्नत की हूर बैठी होगी। उसके जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग होगा, ख़ुशबू अलग होगी, सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आएगा। उसके पसीने पर नज़र पड़ेगी तो उस पर भी अपना चेहरा नज़र आएगा। ऐसा शफ़्फ़ाफ़ जिस्म उसका होगा। चालीस साल उसको देखने में गुमसुम है। अभी अभी जहन्नम के काले काले फ़रिश्ते देखकर आया था। अभी एक हूर को देखकर अपने आपको भी भूल जाएगा। चालीस साल से देखने में लगा हुआ है फिर वह हूर उसकी बेहोशी तोड़ेगी ﴿امالك منى رغبة﴾ अरे वली क्या आपको मेरी ज़रूरत नहीं है? फिर उसको होश आएगा कि कहाँ बैठा है? पूछेगा तू कौन है? वह कहेगी कि मुझे अल्लाह ने तेरी आँखों की ठंडक के लिए बनाया है। तो भाई यह तो उस सेन्टी

मीटर के करोड़वाँ ईमान का हिस्सा है जो उसके अन्दर अटका हुआ है। यह जन्नत उसकी क़ीमत।

अल्लाह के दीदार की लज़्ज़त

एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला जन्नत में जन्नतियों को हफ़्ता में एक मर्तबा जमा करेगा। अल्लाह जन्नतियों को कहेगा अपने रब से मुलाक़ात के लिए आ जाओ। यह लुत्फ़ [illegible]ना अब अपने मौला का दीदार करके देखो कि तुम्हारा रब कैसे जमाल वाला, कैसे कमाल वाला, क्या उसमें कशिश है।

इधर दरबार में पहुँचे, इधर खाने सजे, उधर पानी पिलाये गए, लिबास पहनाए गए, सजाया गया, पहनाया गया, खिलाया गया, महकाया गया फिर अल्लाह तआला कहेगा जन्नत की हूरों से आओ ज़रा ये मेरे बन्दे हैं जो दुनिया में मौसीक़ी नहीं सुनते थे। इनको जन्नत की मौसीक़ी सुनाओ। सारी जन्नत साज़ में बदल जाएगी और हूर का सुर और जन्नत की साज़ और हूर की आवाज़।

वह आवाज़ जो मेरे भाईयो सारे इन्सानों को अपने दिलों से ग़ाफ़िल कर देगी, वह आवाज़ होगी। मिलकर गाएंगी और यह गाना अल्लाह की तारीफ़ का होगा, उसकी तहमीद और तहलील का होगा। अल्लाह फ़रमाएंगे बोलो कभी ऐसा सुना? नहीं सुना! क्या देखा?

मैंने दुनिया में रंडी का गाना हराम किया था क्योंकि तुम्हें यह सुनाना चाहता था। फ़रमाया इससे अच्छा सुनाऊँ? कहा इससे अच्छा क्या है? फ़रमाया दाऊद आजा मिम्बर पर बैठ तू मेरे बन्दे को सुना। दाऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ और जन्नत का साज़

क्या कहने उसे मंज़र के। बोलो कभी ऐसा सुना है? दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ऐसी आवाज़ दी थी जब वह ज़ब्बूर पढ़ते थे तो जंगलों से परिन्दे निकलकर पास आकर बैठ जाते थे।

ऐसी पुर कशिश आवाज़ अल्लाह ने दी थी ﴿يا جبال اوبی معه﴾ जब ज़ब्बूर पढ़ते थे तो पहाड़ भी उनकी तस्बीह पढ़ते थे। जन्नत में उनकी आवाज़ और आलीशान हो जाएगी। उनकी ज़ब्बूर सुनेंगे तो और भी लज़्ज़त आएगी। फिर अल्लाह फ़रमाएगा कि इससे अच्छा सुनाऊँ? तो जन्नत वाले कहेंगे इससे अच्छा कौन सा है?

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे इससे भी अच्छा है। फ़रमाएंगे या हबीब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप आ जाएं, मिम्बर पर बैठकर मेरी तारीफ़ इनको सुनाइए। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की तारीफ़ का नग़मा सुनाएंगे तो जन्न्त पर वज्द आ जाएगा। फिर अल्लाह फ़रमाएगा इससे भी अच्छा सुनाऊँ? वह कहेंगे इससे भी अच्छा? बादशाह का बादशाह का कलाम।

तुम्हारा रब तुमसे मुस्कुराता हुआ मिलेगा

﴿يا رضوان ارفع الحجاب بينی وبين عبادی وزواری.﴾

ऐ रिज़वान! मेरे और मेरे बन्दों के दर्मियान से पर्दे उठा दो। ये मुझे देखें। एक तो अल्लाह को देखना ही बहुत बड़ी दौलत है। दुनिया और आख़िरत की सबसे बड़ी दौलत अल्लाह का दीदार है। जब सारे पर्दे हटेंगे, अल्लाह तआला मुस्कुराते हुए सामने आएंगे

﴿سلام قولا من رب رحيم.﴾ तुम्हारा रब तुम्हें सलाम करता है। फिर अल्लाह तआला हर एक का नाम लेकर हाल पूछेगा ﴿ما منكم احد الا سيحاوره ربه محاضرة﴾ नाम लेकर हाल पूछने की लज़्ज़त का हम यूँ अन्दाज़ा लगाएं कि अय्यूब अलैहिस्सलाम जैसी बीमारी की हालत किसी पर नहीं आई, आज़माईश थी, इम्तिहान था, अठ्ठारह साल तक, जब सेहतयाब होने के बाद किसी ने पूछा कि बीमारी के दिन याद आते हैं?

तो फ़रमाने लगे कि आज के दिनों से वे दिन ज़्यादा मज़ेदार थे। पूछा वह कैसे? कहने लगे कि जब मैं बीमार था तो अल्लाह रोज़ पूछते थे कि अय्यूब क्या हाल है? उस एक बोल की लज़्ज़त में मेरे चौबीस घंटे ऐसे नशे में गुज़रते थे कि तुम उसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। अभी वह नशा नहीं उतरता था कि उस नशे में फिर अगले दिन दूसरी सदा आती थी कि अय्यूब क्या हाल है?

जब हम जन्नत में अल्लाह तआला को सामने देख रहे हों और निगाहें अल्लाह तआला के चेहरे पर पड़ रही हों और फिर अल्लाह तआला पूछ लें कि क्या हाल है? तो उसका अन्दाज़ा कौन लगा सकता है?

आज इबादत ख़त्म हो गई अब तुम्हारे मज़े के दिन हैं

फिर अल्लाह तआला अपना कलाम क़ुरआन मजीद सुनाएंगे। सूरहः ईन'आम सुनाएंगे। ये आँखें दीदार की लज़्ज़त पा रही होंगी, कान उस करीम आक़ा की आवाज़ से लज़्ज़त पा रहे होंगे, रूह

उसके क़ुर्ब से सरशार होगी, ऐसे मस्त होंगे कि जन्नत को भूल जाएंगे, महल भूल जाएंगे, खाना पीना भूल जाएंगे और बेख़ुद होकर कहेंगे ऐ मौला! तू ऐसे जमाल वाला हमें इजाज़त दे हम तुम्हें एक सज्दा करना चाहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे बस जो दुनिया में नमाज़ें पढ़ी थीं वही काफ़ी हैं। यहाँ सज्दा माफ़ है। यह नमाज़ ऐसी नहीं है कि छोड़ दी जाए।

फिर अल्लाह तआला एक एक का नाम लेकर कहेगा ﴿ما منكم احد الا سيحاور ربه محاذرة﴾ अल्लाह एक एक से पूछेगा तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? तेरा क्या हाल है? ठीक हो? ख़ुश हो? राज़ी हो?

अल्लाह का जन्नतियों से मज़ाक

और बाज़ों से अल्लाह तआला मज़ाक फ़रमाएगा

﴿اتذكر يوم كذا فعلت كذا﴾ ऐ मेरे बन्दे याद है वह दिन इशारा करेगा यह नहीं कि तूने यह किया था। ख़ाली वह दिन, वह किया था। जिसने किया था उसको तो समझ में आ गया कि मैंने क्या किया था। बाक़ियों को ख़बर नहीं। तो आगे से उसका भी पता है कि अब तो माफ़ी हो चुकी है। लिहाज़ा उल्टी सीधी भी चल जाएगी।

तो वह कहेगा फिर माफ़ करके दोबारा क़िस्सा क्यों छेड़ बैठे हो? ﴿اولم تغفرلي﴾ या अल्लाह यह माफ़ करके फिर फ़ाइल क्यों खोल ली। जाने दो यह दोबारा फ़ाइल क्यों खोल ली।

तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा बेशक! बेशक! बेशक! माफ़ किया तो यहाँ बैठा है।

आज जो मांगना है मांगो

एक रिवायत में आया है फिर अल्लाह तआला कहेगा कि आज तुम मेरे मेहमान हो, कुछ मांगो तो सही, आज तुम्हें देना चाहता हूँ। तुम्हारे अमलों की वजह से नहीं अपनी शान के मुताबिक़ देना चाहता हूँ ﴿رحمتی کرامتی رفعتی شانی علیہ مکانی﴾ मेरी जो शान है मैं ऐसा ही देना चाहता हूँ। मांगो क्या मांगते हो? जन्नती कहेंगे क्या मांगे सब कुछ तो मिल गया?

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कुछ तो मांगो, कुछ तो मांगो। जन्नती कहेंगे कि आप राज़ी हो जाएं। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मैं राज़ी हो गया हूँ इसीलिए तो यहाँ बिठा रखा है अगर नाराज़ होता तो जहन्नम में डाल देता। राज़ी न होता तो तुम यहाँ न बैठते। अल्लाह कहेगा कुछ और मांगो तो मांगना शुरू करेंगे। जन्नत में आदमी की अक़्ल करोड़ों गुना ज़्यादा हो जाएगी। मांग मांगकर जन्नती थक जाएंगे और कहेंगे या अल्लाह! बहुत कुछ मांग लिया कुछ समझ में नहीं आता। अब अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अपने ज़हनों पर ज़ोर दो, सोच समझकर मांगो। वे फिर मांगना शुरू करेंगे। यह दुनिया अल्लाह की शान के मुताबिक़ देने की जगह नहीं है।

दुनिया का बर्तन छोटा है यहाँ लज़्ज़तें कहाँ हैं?

एक आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आकर कहने लगा अल्लाह से कह दो फ़ाक़ों से मरता हूँ। मेरा भी तो हाथ खुला कर दें। मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जाकर बात की। अल्लाह

तआला ने कहा कि मैं अपनी शान का दूँ या उसकी शान का दूँ?

मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा देना है तो अपनी शान का दे। वापस आए तो देखा वह मरा पड़ा है। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! यह क्या देते देते जान ही ले ली। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुमने ही तो कहा था कि अपनी शान का दूँ। मेरी शान दुनिया में आ ही नहीं सकती। दुनिया का बर्तन छोटा है, इसमें आए कैसे? मेरी शान का तो जन्नत में मिलेगा।

बहरहाल जन्नती फिर मांगना शुरू करेंगे। आख़िर तलब ख़त्म हो जाएगी। अल्लाह तआला फिर फ़रमाएंगे मांगो कुछ तो मांगो, तुमने कुछ भी नहीं मांगा।

फिर आपस में सुलह मशवरे होंगे। कोई मुफ़स्सिरीन से, कोई मुहद्दिसीन से, कोई शोहदा से, कोई अंबिया से, कोई उलमा से मशवरा करेगा। मशवरे के बाद फिर मांगना शुरू करेंगे फिर उनकी मांग ख़त्म हो जाएगी। हर ख़्वाहिश ख़त्म होगी। फिर कहेंगे या अल्लाह बस और कुछ नहीं मांग सकते।

दुनिया से बग़ावत पर अल्लाह का ईनाम

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿فرضتم بدون ما يحق لكم﴾ तुम तो अपनी शान के मुताबिक़ नहीं मांग सकते मेरी शान के मुताबिक़ क्या मांगोगे? इसमें से जो सबसे थोड़ा मांगेगा उस थोड़े सवाल से अन्दाज़ा कर लो जो सबसे थोड़ा मांगेगा वह खड़ा होकर कहेगा हदीस में बताया है या अल्लाह तूने कहा था कि दुनिया को सिर पर न रखो, उसको पाँव के नीचे रखो, उसको आगे न रखो, पीछे रखो और उसको ज़लील बनाकर रखो, अज़ीज़ बनाकर न रखो।

मैंने दुनिया का अज़ीज़ नहीं रखा, ज़लील रखा, पाँव के नीचे रखा, पीछे रखा इसलिए आज आपसे सवाल करता हूँ कि जिस दिन से आपने दुनिया बनाई थी उस दिन से लेकर जिस दिन आपने उसको ख़त्म किया उस सब के बराबर मुझे अता फ़रमा।

इस उम्मत के लिए सवाब की हद

यह सबसे छोटा और थोड़ा सवाल है। इसको अल्लाह तआला कह रहे हैं कि तुमने कुछ मांगा ही नहीं।

मेरे भाईयो! दुनिया अय्याशी की जगह नहीं है। यह इम्तेहानगाह है लिहाज़ा आज से जन्नत के तालिब बन जाओ और सच्ची तौबा करो।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

तक़्वा क्या है?

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे मोहतरम भाईयो दोस्तो और बुज़ुर्गो!

अल्लाह ने इस इन्सान को बहुत बड़ी आज़माइश में डाला है। यह वह बोछ है जिसको उठाने से पहाड़ों ने इंकार कर दिया, ज़मीन ने इंकार कर दिया,

انا عرضنا الامانت على السموات والارض والجبال فابين ان
يحملها واشفقن منها حملها الانسان. انه كان ظلوما جهولا.

अल्लाह ने इस अमानत को ज़मीन व आसमान पर पेश किया तो उन्होंने अल्लाह के दरबार में माअज़रत की, हाथ जोड़ दिए, ऐ अल्लाह यह काम हमारी ताक़त से बाहर है।

फिर क्या हुआ?

﴿وحملها الانسان﴾ इस बोझ को इंसान ने उठा लिया, ﴿انه كان ظلوما جهولا﴾ यह नादानी में बोझ उठा बैठा।

अब बहुत बड़ा इम्तेहान हमारे सिर पर है। एक हमेशा की ज़िन्दगी है। जहाँ दो बड़े इम्तेहान हमारे सिर पर हैं ﴿فريق فى الجنة وفريق فى السعير﴾ एक तब्क़ा को हमेशा की आग में जलना है और एक तब्क़े को हमेशा की नेमतों में ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

यह जो कुछ दिन की ज़िन्दगी है इस पर आख़िरत की ज़िन्दगी का दारोमदार है। यह ज़िन्दगी कैसे गुज़रती है, ये साँस, यह वक़्त, ये घड़ियाँ, ये घंटे हम कैसे गुज़ारते हैं। इस पर उस ज़िन्दगी का फ़ैसला होगा। कामयाबी या नाकामी का इम्तिहान यूँ शक्ल अख़्तियार कर गया कि अल्लाह ने असली ज़िन्दगी छिपा दी और दुनिया की ज़ाहिर कामयाबी को वाज़ेह करके दिखा दिया।

शैतान ने हमें इज़्ज़त दुनिया की दिखाई, माल दुनिया का दिखाया, कामयाबी दुनिया की दिखाई मगर अल्लाह तआला ने आख़िरत को कामयाबी बताया।

अल्लाह का इल्म कामिल है, हमारा इल्म नाक़िस और थोड़ा है। अल्लाह कह रहा है—

قل هل عندكم علم فتخرجوه لنا ان تتبعون
الظن وانتم الا تخرصون.

अल्लाह तआला यूँ फ़रमाते रहे हैं तुम्हारे पास इल्म है ही कोई नहीं जिस पर तुम दावा करो। तुम्हारा इल्म तो अंधेरे का तीर है।

अल्लाह तआला ने कलामुल्लाह में सात क़समें खाकर हमें कामयाबी और नाकामी को बतलाया है। अल्लाह तआला अपने

कलाम मे सच्चा है उसे किसी किस्म की क़सम खाने की ज़रूरत नहीं है।

लेकिन उसने इस मज़मून को समझानें के लिए इतनी क़समें उठाई हैं कि पूरे क़ुरआन में किसी बात को समझाने के लिए इतनी क़समें नहीं खायीं हैं। मज़मून क्या है कि इस ज़िन्दगी के पर्चे में कौन कामयाब होगा नाकाम कौन होगा। यह वह मज़मून है जिसमें इन्सानियत फ़ेल होती चली जा रही है क्योंकि इस मज़मून में बहुत से लोग धोका खा चुके हैं तो अल्लाह तआला ने सात क़समें उठायीं न एक न दो न तीन चार इकठ्ठी सात क़समें खायीं और सारे क़ुरआन में किसी जगह भी सात क़समें कोई नहीं हैं।

क़सम उठाना अगले के शक को दूर करने के लिए होता है। सारी दुनिया का शक पड़ा हुआ है कि कामयाब कौन है, नाकाम कौन है? ये क़समें सूरहः अश्शम्स में खाई गयीं हैं और यह इतनी मुबारक सूरत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो आदमी इसकी तिलावत कर ले वह ऐसा है जैसा कि उसने पूरी दुनिया अल्लाह के नाम पर सदक़ा कर दी। सारी दुनिया सदक़ा करने का सवाब, सारी दुनिया में क्या कुछ है। हम तो जेब से एक रुपया नहीं देते।

بسم الله الرحمٰن الرحيم.

والشمس وضحٰها o والقمر اذا تلٰها o والنهار اذا جلّٰها o واليل اذا يغشٰها o والسمآء وما بنٰها o والارض وما طحٰها o ونفس وما سوّٰها o فالهمها فجورها وتقوٰها o قد افلح من زكّٰها o وقد خاب من دسّٰها o كذبت ثمود بطغوٰها o اذ انبعث اشقٰها o فقال لهم رسول الله ناقة الله وسقيٰها o فكذبوه فعقروها فدمدم عليهم ربهم بذنبهم فسوّٰها o ولا يخاف عقبٰها o

यह छोटी सी सूरत जो इसको पढ़ लेगा आपके फ़रमान के मुताबिक़ उसे सारी दुनिया सदक़ा करने का सवाब मिल गया। मैं करूंगा मुझे मिल जाएगा आप करेंगे आपको मिल जाएगा।

और इस सूरत जैसा मज़मून पूरे क़ुरआन में कहीं नहीं आया। अल्लाह तआला यूँ फ़रमाते हैं मुझे क़सम है सूरज की, मुझे क़सम है चाँद की, मुझे क़सम है दिन की, मुझे क़सम है रात की, मुझे क़सम है आसमान की, मुझे क़सम है ज़मीन की, मुझे क़सम है तुम्हारी जान की। सात क़समें खायीं हैं।

एक आदमी क़समों पर क़समें खाए और अगली बात न बतलाए तो सुनने वाला परेशान नहीं हो जाता कि यह क्यों क़समें खाता जा रहा है। इसको क्या हुआ। अल्लाह की क़सम! अल्लाह की क़सम! रब की क़सम! जब्बार की क़सम! रहमान की क़सम। अल्लाह के बन्दे बता तो सही यह क़समें किस बात पर खा रहा है तो अगला बन्दा परेशान हो जाता है कि बता तो सही क़समें क्यों खा रहा है? तो यही अल्लाह कह रहा है। अब इतनी क़समें खाकर अल्लाह ने क्या बतलाया उसको ग़ौर से सुनिएगा। अल्लाह कह रहा है

﴿قد افلح من زکها ٥ وقد خاب من دسٰها ٥﴾

सुन लो मेरे बन्दो! सुन लो मेरे बन्दो! मुझे सात बार क़सम है कि कामयाब वह है जिसने अपने आपको पाक कर लिया (गुनाहों से) और नाकाम है वह जिसने अपने आपको गंदा कर लिया।

पाक करने का क्या मतलब है? अल्लाह के नबी की दुआ सुनो:

﴿اللهم ات نفسی وتقوٰها وزکها.﴾

ऐ अल्लाह! मुझे तक़्वा नसीब फ़रमा, मेरा तज़किया फ़रमा, मुझे पाक फ़रमा।

अल्लाह तआला ने हमारे नबी के बारे में फ़रमाया,

﴿يتلو عليهم آياته ويزكيهم ويعلمهم الكتاب والحكمة.﴾

यह वह नबी है जो अल्लाह के कलाम की आयतें उनको पढ़ पढ़कर सुनाता है। उनको पाक करता है, उनको तालीम देता है, उनको हिकमत सिखाता है, उनको किताब सिखाता है। इस आयत में भी बतलाया कि अल्लाह के नबी उनको पाक करते हैं।

ऊपर सात क़समें खाकर पाकीज़गी की दावत दे रहे हैं। पाक करना क्या है? अपने नफ़्स को पाक करो अल्लाह की इताअत के साथ, तक़्वे के साथ। जिस्म साफ़ होता है साबुन से पानी से और नफ़्स पाक होता है अल्लाह की इताअत और तक़्वे से।

अल्लाह का इर्शाद है ﴿فالهمها فجورها وتقوها﴾ मुझे क़सम है कि मैंने तेरे नफ़्स में नेकी भी रखा है, तक़्वे को भी रखा। इस आयत में बुराई को पहले ज़िक्र किया है तक़्वे को बाद में ज़िक्र किया है।

﴿وقد خاب من دسها﴾ जो गंदगी में डूब गया वह नाकाम हो गया। मुराद जिसने अपने आपको गुनाहों में डुबो दिया वह नाकाम है। अरबी ज़बान में बड़ी फ़साहत है सिर्फ़ सवार के पाँच सौ नाम हैं, घोड़े के एक हज़ार के क़रीब नाम हैं।

मज़्कूरा सूरत में अल्लाह तआला ने सात क़समें खायीं फिर गवाही दिए कि अगर तुम्हें मेरी क़समों पर ऐतबार नहीं तो मैं गवाही देता हूँ। मेरी क़समों का ऐतबार नहीं तो गवाह देख लो।

एक क़ौम आई थी समूद उनको मैंने यही बात समझाई थी देखो अपने आपको पाक कर लो तो क़ौमे समूद ने सालेह अलैहिस्सलाम से कहा—

﴿كذبت ثمود بطغواها﴾ क़ौमे समूद ने सरकशी की ﴿اذانبعث اشقاها﴾ उनका बदबख़्त खड़ा हुआ। उस बदबख़्त का ज़िक्र अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में किया। जिनकी कहानी यह है। क़ौमे समूद ने सालेह से कहा तुम इस पहाड़ से ऊँटनी निकाल दो और वह हमारे सामने बच्चा जने, कसरत से दूध भी दे, तो सालेह अलैहिस्सलाम ने दुआ की।

तो ऊँटनी ने बच्चा जना। सालेह ने कहा इस ऊँटनी को अगर तुमने कुछ नुक़्सान पहुँचाया तो तुम सब बर्बाद हो जाओगे। एक आदमी ने जिसका नाम केदार था। उसने औरत के लालच में उसे क़त्ल कर दिया। औरत ऐसी चीज़ है कि बड़े बड़ों की आँखों पर पट्टी पड़ जाती है। एक औरत ने कहा जो इस ऊँटनी को क़त्ल करेगा अपनी बेटी को निकाह में दूंगी, बकरियाँ भी दूंगी। उस क़ातिल का ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला ने कहा—

﴿اذا نبعث اشقاها. فقال لهم رسول الله وسقياها.﴾

उन्होंने सालेह अलैहिस्सलाम की बात को झुठलाया ﴿فكذبوه فعقروها﴾ उन्होंने ऊँटनी को काटकर रख दिया।

﴿فدمدم عليهم الخ﴾ यह दमदमा का लफ़्त इतना ताक़तवर लफ़्ज़ है कि यह पूरे क़ुरआन में सिर्फ़ एक जगह आया है। हमने उनको पटख़कर दे मारा और शदीद अज़ाब में मुब्तिला किया और तेरे रब को किसी की परवाह नहीं है। यह पूरे क़ुरआन का ख़ुलासा है। ये कुछ आयतें हैं कि यह दुनिया इम्तिहान है। हम

इस अमानत को उठा चुके हैं। अब यह बोझ मौत तक उठाना पड़ेगा अगर हमने उठा लिया तो वह कुछ मिलने वाला है जिसका हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते।

अल्लाह वालों की सिफ्त

अल्लाह वालों की एक सिफत यह है कि ये अल्लाह के नाम पर लुटाते हैं चाहे तंगी हो या ख़ुशहाली हो। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आए सवाल किया। आपने फ़रमाया मेरे पास तो कुछ है नहीं फिर फ़रमाया अच्छा तू ऐसा कर फ़लां दुकानदार से मेरे नाम से कुछ ले लो। जब मेरे पास आएगा तो मैं दे दूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अगर अल्लाह ने आपको दिया है तो ज़रूर दें अगर नहीं दिया है तो औरों के लिए क़र्ज़ा उठाना ठीक नहीं है। पीछे अन्सारी कहने लगे उमर की न सुनना आप ख़र्च करते रहें और अर्श वाले से तंगी का डर न करें।

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्कुराने लेग और ﴿بذالك امرت﴾ फ़रमाया मुझे भी इसी का हुक्म दिया गया है। एक बार लगाओ तो सही अल्लाह के नाम पर फिर देखो अल्लाह कैसे देता है।

आज अल्लाह नाराज़ है

मेरे मोहतरम भाईयो, बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह तआला हम से एक सवाल करता है ﴿ام خلقوا من غير شيء﴾ मेरे बन्दो! बताओ तो सही तुम ख़ुद इत्तेफ़ाक़ से पैदा हो गए हो या ﴿ام هم الخالقون﴾

दूसरा सवाल या तुम ख़ुदु ही पैदा हो गए हो? तीसरा सवाल ﴿ام خلقوا السموات والارض﴾ क्या यह ज़मीन यह आसमान तुमने बनाया है? यह फ़र्श तुमने बिछाया है, हवाओं को तुमने चलाया?

चाँद तारों को गर्दिश तुम ने दी? यह सवाल क्यों किए गए हैं? इस सवाल का मक़सद था कि अगर तुम ख़ुद ही पैदा हो गए, यह ज़मीन का निज़ाम ख़ुद ही चल गया तो जाओ तुम्हारे ख़ालिक़ की तरफ़ से तुम्हारी छुट्टी है। अब जैसे मर्ज़ी ज़िन्दगी गुज़ारो जो चाहे करो फिर बेशर्म व बाहया बराबर फिर आबिद व फ़ासिक़ बराबर जाओ मज़े करो। लेकिन इन मज़ों से पहले तुम्हें यह साबित करना पड़ेगा कि तुम अपने आप पैदा हो गए।

आँख और कान के गुनाह

मेरे भाईयो! ज़मीन व आसमान की लगाम एक ताक़त के हाथ में है दो में नहीं। उसका मुल्क उसकी ताक़त उसकी बादशाहत लामहदूद है, वह ज़मीन व आसमान का अकेला मालिक है।

एक ख़ाँ साहब को डाक्टर ने कहा आप सुबह सुबह हवाख़ोरी किया करो। पठान उर्दू थोड़ी समझता है। वह एक दिन सुबह पार्क में गया और मुँह खोलकर हवा खाने लगा। कभी इधर मुँह मारे कभी उधर मुँह मारे। किसी ने देखा तो कहा ख़ां साहब क्या हुआ। कहा डाक्टर बोला था सुबह सुबह हवा खाओ, हम हवा खाता है।

मेरे भाईयो! अल्लाह को मना लो, अल्लाह से चिपट जाओ जैसे रूठा बच्चा माँ को लिपटता है तो उसको सुकून मिलता है, वह अपने आपको महफ़ूज़ समझता है, अपने आपको माँ के साए

तले महफ़ूज़ करता है। जब से हम ने अल्लाह को छोड़ा हम से हिफ़ाज़त का रहमत का साया उठ गया। इज़्ज़तें रूठ गयीं, बुलन्दियाँ अलविदा कह गयीं, ज़िल्लतें लिबास बन गयीं, मिसकीनी हमारा ओढ़ना बिछौना बन गया, हम दर दर की ठोकरें खाने वाले बन गए।

अल्लाह को छोड़कर हम भटके हुए राही बन गए। जैसे कटी पतंग की कोई मंज़िल नहीं आज इस उम्मत की कोई मंज़िल नहीं क्योंकि अल्लाह को छोड़ दिया।

मेरे भाईयो! किसी ज़मींदार की फ़सल उजड़ जाए तो हाय हाय करता है। कोई डाक्टर बेरोज़गार हो जाए तो ख़ून के आँसू रोता है, किसी ताजिर का सरमाया लुट जाए तो वह सिर पकड़कर बैठ जाता है। हमें तो ख़ून के आँसू रोना चाहिए। हमारा कितना बड़ा सरमाया डूब गया। चालीस पैंतालीस साल हो गए एक सज्दा भी अल्लाह की मुहब्बत का न कर सके। कितने साँस ग़फ़लत में डूब गए कितना नुक़सान हो गया कि अल्लाह को अपना न बनाया। अल्लाह से दोस्ती न की। माँ से पहले उसका हक़ था, बाप से पहले उसका हक़ था, दुनिया के एक एक मोहसनि से पहले उसका हक़ था। ज़मीन व आसमान का बादशाह हम से कह रहा है,

﴿هل اتی علی الانسان حین من الدهر لم یکن شیئا مذکورا.﴾

मेरे बन्दे कुछ याद भी है तुम कुछ थे (नहीं या अल्लाह हम कुछ न थे) कभी तन्हाइयों में सोचते तो सही, तेरी आँखों को देखना किस ने दिया, तेरी ज़बान को बोलना किसने दिया, देखो तो सही यह छोटी से आँख है। उसमें तेरह करोड़ बल्ब लगे हुए

दिए? बिल क्या मांगा। इस मस्जिद का भी बिल आप अदा न करे तो वापडा आकर बिजली काट देगी। छब्बीस करोड़ बल्ब का बिल क्या मांगा है?

يا ابن آدم جعلت لكم عينين جعل لكم غطا فنظر بعينين ما احللته
لك فان عضلك ما حرمته عليك الخ.

ऐ मेरे बन्दे तुझे दो आँखें दीं, उन पर दो पर्दे लगाए। जब तेरी नज़रें उठने लगे किसी की बहन बेटी की तरफ़ तो इस पर्दे को नीचे झुका लेना। (यह छब्बीस करोड़ बल्ब का बिल है।) कराची शहर में कितने हैं जो यह बिल दे रहे हैं और अल्लाह ने कितनों की बिजली काटी। सुबह से शाम तक इन आँखों से हराम देखते हैं मगर अल्लाह आँखों की बिजली बंद नहीं करता बल्कि तौबा का इन्तिज़ार करता है। कभी तो मेरा बन्दा मेरा बनेगा।

इन कानों में दो लाख टेलीफ़ोन लगाए। एक लाख पर्दे इस कान में, एक लाख पर्दे इस कान में दो लाख टेलीफ़ोनों की तारें लगायीं। इसका बिल मांगा है कि मेरे बन्दे इससे गाना न सुनना, मौसीक़ी न सुनना, इससे किसी की ग़ीबत न सुनना, किसी की बुराई न सुनना, इससे गंदा बोल न सुनना, जब तेरे सामने ऐसा कोई बोल आए तो अपने कानों पर हाथ रखकर बंद कर लेना। कितने इंसान कराची में इन कानों का बिल देने वाले हैं।

फिर अल्लाह ने कहा मैंने तुझे ज़बान दी, ज़बान पर दो ताले लगाए, एक दाँतों का ताला एक होंटों का ताला। इन दो तालों का मक़सद क्या है कि सोच समझकर बोलना तो बोलने में हम आज़ाद नहीं हैं। अगर तेरी ज़बान पर झूठ, गाली आने लगे, तकब्बुर का बोल आने लगे तो अपना दरवाज़ा बंद कर ले। यह

ज़बान इसलिए नहीं है कि तू औरों को दुख देता रहे।

मेरे भाईयो! मोहसिन के आगे कुत्ता भी सिर झुका देता है। सबसे बड़ा मोहसिन अल्लाह हम उसके एहसान के साए में हैं। हमारा एक एक लम्हा उस करीम आक़ा की नेमतों से फ़ायदा उठाता है फिर भी हम उसकी नाफ़रमानी करें।

अल्लाह की क़ुदरत

अल्लाह तआला करोड़ों माँओं के पेटों में कुछ क़तरों से एक गोश्त के इंसान को वजूद देता है। उनके पोरे अलग, उनकी उंगलियों के निशानात अलग अलग कर दिए। बच्चों के चहरों की बनावट और तरह की हो नाखुन और तरह के उंगलियाँ और तरह की, पाँव की बनावट और तरह की, जिस्म की बनावट और तरह की फिर यह तो बाहर की बनावट और तरह की है। हर आदमी का अन्दर का निज़ाम दूसरे से जुदा है। एक दूसरे से नहीं मिलता।

माँ-बाप की अज़्मत

मेरे भाईयो! अल्लाह के बाद बंदे पर सबसे ज़्यादा हक़ माँ-बाप का रखा है क्योंकि अपनी औलाद के लिए अपना पेट काटते हैं। उनकी परवरिश व तालीम के लिए अपना सरमाया लुटा देते हैं। अपने दिन को दिन नहीं देखते, अपनी रात को रात नहीं देखते। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿واخفض لهما جناح الذل﴾ अपने माँ-बाप के सामने ऐसे हो जाओ जैसे परिन्दे अपने पर फैलाकर बेबसी का इज़्हार करता है। जिस परिन्दे को छुरी लग जाए तो

वह गिरता है और गर्दन टेढ़ी करके बेबसी की हालत में पड़ा होता है।

इसी तरह अल्लाह यह तश्बीह माँ-बाप के लिए पेश करके कह रहा है कि माँ-बाप के सामने ऐसे गिर जाओ और उनके सामने बेजान हो जाओ जैसे परिन्दा शिकारी के सामने बेजान हो जाता है कि छुरी चला ले तेरे ही हाथ में हूँ अब तू जो मर्ज़ी चाहे कर।

अल्लाह ने हमें पैदा करके ऐसे ही नहीं छोड़ा। हमारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया, आसमान को छत बनाया फिर तेरे लिए पानी निकाला ﴿واخرج منها ماءها ومرعاها والجبال ارساها﴾ फिर ज़मीन को डोलने से बचाने के लिए पहाड़ों को कीलों की तरह गाड़ दिया। फिर इस ज़मीन को सरसब्ज़ करने के लिए बादलों का निज़ाम चलाया।

एक सेकंड में एक करोड़ साठ लाख टन पानी बुख़ारात बनकर हवा में उड़ जाता है फिर अल्लाह उनको बादल बनाता है ﴿الم تر ان الله تزجى سحابا﴾ फिर मैं इनको हाँकता हूँ उन्हें चलाता हूँ ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ मैं पानी को अनोखे अन्दाज़ से उतारता हूँ।

बारह सौ मीटर की बुलन्दी से बारिश होती है। बारह सौ मीटर की बुलन्दी से किसी चीज़ को गिराया जाए तो बादल के क़तरे के बराबर हो तो उसके ज़मीन पर आने की रफ़्तार होनी चाहिए पाँच सौ अठ्ठानवें किलोमीटर फ़ी घंटा, गोली की रफ़्तार है सत्रह सौ किलोमीटर फ़ी घंटा।

मेरा अल्लाह इस पानी के क़तरे के नीचे आने से पहले इतनी रुकावटें खड़ी कर देता है कि पानी उनसे टकराते टकराते जब आपके सिर पर या ज़मीन पर गिरता है तो उसकी रफ़्तार टोटल

आठ किलोमीटर फ़ी घंटा रह जाती है, पाँच सौ पचास किलोमीटर को अल्लाह बीच में ही ख़त्म कर देता है अगर इसी रफ़्तार पर पानी आता तो गंजे तो गंजे बाल वालों की भी ख़ैर नहीं होती। फिर हर वक़्त सड़कें बनाते रहते। जब बारिश आती सब घरों में दुबककर बैठ जाते। क़ुर्बान जाओ उस रब पर जिसने यह काएनात एक मुनज़्ज़म निज़ाम के तहत बनाई जिसमें ख़ास तौर पर बनी आदम का क़दम क़दम पर ख़्याल रखा गया ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ फिर मैंने ज़मीन को फाड़ा तेरे लिए। ज़रूरत का पानी इसमें रखा, बक़िया दरियाओं में डाल दिया। ज़मीन का निज़ाम भी एक अजीब अन्दाज़ से अल्लाह ने बनाया।

ऊपर की ज़मीन को नरम पानी ताकि पानी कुंए की शक्ल में जमा हो सके और नीचे की ज़मीन को सख़्त बना दिया कि यह पानी मज़ीद नीचे न जा सके। फिर पानी में भी एक निज़ाम बनाया। यह मीठे पानी की रग जारी है, यह कढ़वे पानी की रग जारी है। उन दोनों के बीच पर्दा डाल दिया कि कहीं यह दोनों मिक्स न हो जाएं। अगर अल्लाह अपनी क़ुदरत और निज़ाम को ख़त्म कर दे। इस पर्दे को ख़त्म कर दे तो सारी ज़मीन में एक क़तरा भी मीठे पानी का न मिलता।

पानी अल्लाह की निशानी

जब इंसान को पानी की ज़रूरत पड़ती तो अल्लाह बादलों को बारिश बरसाने के हुक्म देते हैं। फिर यही पानी पहाड़ों में बड़े बड़े ग्लेशियर की सूरत में स्टॉक हो जाता है। फिर अल्लाह का अम्र

होता है तो यही बर्फ़ पिघलकर झीलों में और दरियाओं की तरफ़ बह जाती है।

फिर दरिया भी अल्लाह की अजीब क़ुदरत हैं अगर ज़मीन का झुकाव जुनूब की तरफ़ न होता तो एक दरिया भी न चल सकता। अल्लाह ने कलाम मजीद में अपनी नेमतों को पे दर पे बतलाया। मैंने तुझ पर ये नेमतें बरसायीं मगर तूने मेरे साथ क्या किया?

﴿قتل الانسان ما اكفره﴾ ऐ मेरे बन्दे मैं तुझे क्या कहूँ? (जब आदमी किसी से तंग आ जाता है समझा समझाकर तो उससे कहता है कि मैं तुझे क्या कहूँ?) ﴿ما اكفره﴾ तू तो बड़ा ही नाशुक्रा निकला ﴿من شيء خلقه﴾ तुझे याद नहीं मैंने तुझे कहाँ से बनाया था, नहीं याद है? अच्छा मैं तुम्हें बताता हूँ ﴿من نطفة﴾ मैंने तुझे नुत्फ़े से बनाया था। मैंने तुम्हें गंदे पानी से पैदा किया। यह बादशाह कहाँ से बना ﴿من نطفة﴾ फिर भी ज़मीन पर अकड़कर चलता है?

सुकून की तलाश

अल्लाह की क़सम जो गुनाह करता है उसके दिल की दुनिया उजड़ गई।

जुनैद जमशेद ने सन् 1996 ई० में कहा एक पाकिस्तानी नौजवान लड़कों का जिन ख़ूबसूरतियों का ख़्वाब देखता है वह मुझे हक़ीक़त में इस दुनिया में हासिल है लेकिन इसके बावजूद मेरे सीने में अंधेरा है, मेरे अन्दर ख़ला है, बेचैनी है, मुझे लगता है मैं वह किश्ती हूँ जिसका कोई किनारा नहीं। इसकी क्या वजह है?

यही बात मुझसे सईद अनवर ने कही। मुझसे कहने लगा मै यह समझता था कि इज़्ज़त और दौलत मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है, मुझे सिर्फ़ बाइस साल की उम्र में सब कुछ मिल गया मगर अन्दर की ख़ुशी नहीं मिली। अन्दर की वीरानी और उदासी बाक़ी रही। दुनिया की रौनक़ मगर दिल की तन्हाई, इन सब के बावजूद बेक़रारी क्यों है? बहार् क्यों नहीं?

फिर इस नेक सोहबत की बरकत से मेरे दिल में बात उतर गई कि मेरी ज़िन्दगी का मक़सद कोई और है। यह नहीं जिसको समाने रखकर मैं चल रहा था।

मेरे भाईयो! अल्लाह ऐलान करता है सारी दुनिया की महफ़िलों में जाओ, हर घाट का पानी पियो, हर धुन, हर साज़, हर आवाज़ से दिल बहलाने की कोशिश करो, हसीन से हसीन परी चेहरे से दोस्ती कर लो, सोने चाँदी का ढेर लगा दे। दुनिया में भी अपना नाम चमका लो अगर इन चीज़ों में तुम्हें सुकून मिल जाए तो मुझे अपना रब ही न समझना।

﴿الا﴾ सुनो ﴿الا﴾ सुनो ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾ जब तक मुझे याद नहीं करोगे उस वक़्त तक चैन कभी नहीं पाओगे।

एक बात सुनो बहुत से लोग कहते हैं हम अल्लाह का ज़िक्र करते हैं मगर हमें सुकून नहीं तो ﴿بذكر الله﴾ बिज़िक्रिल्लाह का मतलब समझो। ज़िक्र अरबी ज़बान में याद को कहते हैं। याद आ रही है, याद आ रहा है। याद ज़बान का लफ़्ज़ नहीं है याद दिल का अमल है। सुकून का वायदा किसके लिए है ﴿بذكر الله﴾ बिज़िक्रिल्लाह।

इश्क़े इलाही की आग

जब दिल में अल्लाह की याद और उसकी मुहब्बत समा जाए। जब दिल अल्लाह का अर्श बनता है तो अल्लाह की मुहब्बत आती है। मूसा अलैहिस्सलाम से उनकी क़ौम ने पूछा तेरे रब का कोई घर है? तो अल्लाह ने फ़रमाया तेरा रब किसी मकान में नहीं उतरता ﴿ولا يشتمل وعلى الازمان﴾ न तेरा रब किसी ज़माने में उतरता है। एक जगह है जहाँ तेरा रब आ जाता है और वह मेरे बन्दे का पाक दिल है। फिर मैं उसमें आ जाता हूँ। अल्लाह की क़सम जिस दिल में अल्लाह आ जाता है उससे बड़ा बादशाह कोई नहीं है।

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई
एक तुझसे क्या मुहब्बत हो गई
सारी दुनिया से नफ़रत हो गई

शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० को मलिक संजर ने कहा था नीलम दोज़ (अफ़ग़ानिस्ता का सूबा) का सारा सूबा आपकी ख़िदमत में हदिया, इसकी सारी आमदनी आप उठाएं और अपने मुरीदों पर ख़र्च करें तो उन्होंने इर्शाद फ़रमायाः

जिस दिन से मेरे अल्लाह ने मुझे रातों की बादशाही अता की है मैं तेरी सलतनत को एक जूं के बदले में भी लेने के लिए तैयार नहीं हूँ।

इस दिल को अल्लाह का अर्श बनाओ फिर इस दिल की कैफ़ियत देखना फिर तुम्हें सदारत वालों पर अफ़सोस होगा, ये कैसे

बदनसीब लोग हैं जिन्हें अल्लाह की याद की लज़्ज़त ही नसीब नहीं। इस दिल में अल्लाह के अलावा किसी और को मत आने दो अगर यहाँ कोई और आ गया तो यह सबसे बड़ा ज़ुल्म है।

हमारे एक जानने वाले कहने लगे कि मैं हर साल गाड़ी बदलता हूँ और सैर व तफ़रीह के लिए हर साल जाता हूँ मगर दिल की बेचैनी दूर नहीं होती। मैंने कहा यह बेसुकूनी सिर्फ़ अल्लाह की याद से दूर होगी। उससे दिल लगाने से दूर होगी। उसको दिल में उतारने से दूर होगी।

सारी रात रोते रोते गुज़र गई

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह० सारी रात रोते थे। ज़िन्दगी इसमें गुज़ार दी। उनके ख़ादिम ने कहा आप सारी रात रोते क्यों हैं। उन्होंने कहा याक़ूब का यूसुफ़ जुदा था वह भी अल्लाह ने मिला दिया था तो उनके रोते रोते चालीस साल गुज़र गए। अरे मियाँ मैंने तो अपने सारे घर को अपनी आँखों के सामने कटते हुए देखा, मुझे नींद कहाँ से आएगी।

इब्ने ज़ियाद के सामने इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का कटा हुआ सिर लाया गया तो वह कहने लगा इससे हसीन चेहरा मैंने आज तक नहीं देखा। फिर वह हसद के मारे अपनी छड़ी को आपके मुँह पर लगा रहा था और उस चेहरे को हिला रहा था तो एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए कहने लगे बदबख़्त यह तू क्या कर रहा है? मैंने इन होंटों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बोसा लेते हुए देखा है।

एस०पी० की गुर्बत का हाल

मेरे भाईयो! अल्लाह गफ़ूरुर्रहीम है मगर ऐसा नहीं कि वह रात को रोने वाले और रात को नाचने वाले को बराबर कर दे। रात को तहज्जुद पढ़ने वाले और रात को ज़िना करने वाले को बराबर कर दे।

अल्लाह ग़फ़रूर्ररहीम है फिर इसका मतलब यह तो नहीं है एक अपने क़लम बेचकर फ़ैसला लिख रहा है, एक अपने पेट पर पत्थर बाँधकर फ़ैसला लिख रहा है और अल्लाह इन दोनों को एक तराज़ू में तोल दे।

मेरा एक दोस्त है एस०पी० कहने लगा पन्द्रह दिन मुझ पर ज़कात लगती है। पन्द्रह दिन बाद मेरे घर में एक पैसा नहीं होता कि बच्चों को रोटी खिला सकूं तो सिपाही क्या करे?

एक आदमी सारी ज़िन्दगी अल्लाह की नाफ़रमानी में गुज़र गई। जब वह अल्लाह को पुकारता है। अल्लाह कहता है लब्बैक लब्बैक लब्बैक ऐ मेरे बन्दे! मैं तेरे ही इन्तिज़ार में था, तू कभी तो मुझे याद करेगा। सत्तर साल का बूढ़ा गुनाहों का ढेर लेकर उठता है, कोई पूछने वाला पूछता है बाबा कहाँ जा रहे हो? कहा अल्लाह को मनाने जा रहा हूँ। ऐसे बूढ़े के बारे में जो गुनाहों से लदा हुआ हो मेरा अल्लाह क्या कहता है? वह कहता है ﴿من تقرب الى تلقيته من بعيد﴾ जो मेरी तरफ़ तौबा करके आता है तो मैं आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल करता हूँ। ज़मीन व आसमान का बादशाह कह रहा है ﴿يا ايتها النفس المطمئنة﴾ मेरे बन्दे आ जा! आ

जा! यह आयत तसव्वुर पेश करती है कि अल्लाह मुहब्बत की बाहं फैलाकर कहता है मेरे नाफ़रमान बन्दे तू मुझसे डर नहीं तू आ जा, तू आ तो सही।

मेरे भाईयो! अल्लाह से सुलह कर लो। अल्लाह को अपना बनाओ, अल्लाह हमारा मक़सदे ज़िन्दगी है। आज तक जो दामन आलूदा किया है, आज तौबा करो। कुत्ते भी अपने मालिक से बेवफ़ाई नहीं करते, कुत्ते से नीचे न रहो।

प्रोफ़ेसर के कुत्ते की कहानी

एक प्रोफ़ेसर अपने कुत्ते के साथ युनिर्वसटी जाता। उसका कुत्ता छोड़ने जाता। जब आने के वक़्त होता तो कुत्ता उसको स्टेशन लेने जाता। दोनों साथ वापस आते। एक दिन मालिक को युनिर्वसटी में हार्ट अटैक हुआ और वह मर गया। कुत्ते को पता नहीं है कि मेरा मालिक मर गया वह अपने वक़्त पर आया और बाहें फैलाकर बैठा रहा, शाम तक मालिक का इन्तिज़ार करता रहा। फिर बड़े उदास बोझिल क़दमों से वापस चल दिया। अगले दिन वह फिर आया, अगले दिन वह फिर आया। नौ बरस तक वह कुत्ता रोज़ाना आता रहा और हमें चिढ़ाकर इस दुनिया से चला गया, वहीं अपनी क़ब्र बना ली और हमें समझा गया कि तुम तो मुझ कुत्ते से भी गए गुज़रे हो। नौ बरस सिर्फ़ रोटी खिलाने वाले मालिक से वफ़ा निभा गया। मैं तो नुत्फ़ा था मेरे रब ने मुझे इंसान बनाया। हम जाहिल थे, हिन्दू थे अल्लाह ने मुसलमान बनाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और फ़िक्रे उम्मत

अब्दुल्लाह बिन उबई खुला मुनाफ़िक़ था। वह मर गया। उसका बेटा जो पक्का मुसलमान था वह कहने लगा अल्लाह के नबी मुझे मालूम है कि मेरे बाप ने आपको बड़ी तकलीफ़ें दी हैं। मैं चाहता हूँ आप मुझे हुक्म दें तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूं। आप किसी और को न कहें। आपने मना फ़रमा दिया। जब मर गया तो बेटा कहने लगा आप मेरे बाप का जनाज़ा पढ़ा दें। आपने फ़रमाया जनाज़ा तो क्या कफ़न भी दूंगा तो आपने अपना कुर्ता उतार कर दे दिया कि उसको कफ़न पहना दो शायद बख़्शा जाए। जब जनाज़ा पढ़ने लगे तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप किसका जनाज़ा पढ़ा रहे हैं आपको पता नहीं कि यह पक्का मुनाफ़िक़ है। आपने फ़रमाया कि पीछे हट जाओ अभी मेरे अल्लाह ने मुझे रोका नहीं अगर रोकेगा तो फिर नहीं पढ़ाऊँगा कि शायद बख़्शा जाए। जब क़ब्र में रखा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा निकलवाया और कहा इसे बाहर निकालो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके मुँह पर अपना लुआब डाला शायद बख़्शा जाए फिर अल्लाह ने कहा नहीं आप सत्तर बार भी जनाज़ा पढ़ें तो माफ़ नहीं करूंगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने लगे ऐ अल्लाह अगर आप सत्तर जनाज़ा पढ़ने पर माफ़ कर देंग तो मैं सत्तर बार भी इसका जनाज़ा पढूंगा।

ऐसा नबी जो उम्मत से इतनी मुहब्बत करता हो आज हम उसी की सुन्नतों के जनाज़े निकालते हैं।

हम अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत की बात करते हैं। एक आदमी घर बार, बीवी बच्चों को छोड़कर अल्लह और उसके रसूल की बात को घर घर पहुँचाने के लिए निकलता है। आप उसे मस्जिद से धक्के देकर निकालते हो। उनके बिस्तर उठाकर फेंकते हो, डंडे और कुल्हाड़ों से उन्हें धुतकारते हो, मारो ये वहाबी हैं, काफ़िर हैं।

क्या आशिक़े रसूल ऐसे ही होते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो अबूजहल जैसे काफ़िर को अपने घर बुलाकर रोटी खिलाते थे। जिस नबी के हम उम्मती हैं उसने अबू लहब की भी मिन्नतें कीं जिसके कुफ़्र और ख़बासत को अल्लाह तआला बयान कर रहा हो क़ुरआन में। मेरे नबी ने तो उसकी मिन्नतें कीं। हम तो मुसलमान हैं, हमें काफ़िर से भी गया गुज़रा न समझो।

न काली को देखे न गोरी को देखे
पिया जिसको चाहे सुहागन वही है

कर्बला का क़िस्सा गा गाकर मत सुनाया करो

कर्बला एक क़िस्सा नहीं पैग़ाम है। अल्लाह हमारे ख़तीबों और ज़ाकिरों को हिदायत दे वे कर्बला का क़िस्सा गा गाकर सुनाते हैं। अरे कोई ग़म भी गा गाकर सुनाता है।

मेरा बाप मरा था मुझे हँसने वाला भी बुरा लगता था। बजाए इसके के कोई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आल पर क़यामत टूटी और हम उस क़यामत को मज़े ले लेकर शोहरत

और पैसे के लिए गा गाकर सुनाएं। दर्द से हाय निकलती है या राग निकलता है?

मग़रिबी तहज़ीब

मेरे मोहतरम भाईयो दोस्तो! अल्लाह जो चाहता है कर लेता है। वह कैसे इंसानी तदबीरों को तोड़ देता है। हम जो चाहते हैं अल्लाह के बग़ैर नहीं हो सकता। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने इर्शाद फ़रमाया—

﴿عرفت ربی لفصل عزائم﴾ इरादों के टूट जाने से मैंने अल्लाह का पहचाना। अल्लाह जो फ़ैसला जिसके लिए कर देता है दुनिया की कोई ताक़त उस फ़ैसले को रोक नहीं सकती।

﴿وما يمسك﴾ अगर बन्द कर दे, ﴿فلا مرسل له من بعد﴾ कोई उससे वह दर खुलवा नहीं सकता,

﴿ان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو.﴾

तुम्हें मुसीबत में पकड़ लूँ तो कोई है जो अल्लाह के सिवा उसे दूर करके दिखा दे ﴿وان يردك بخير﴾ और अगर भलाई का इरादा कर लूँ ﴿فلا راد لفضله﴾ तो कोई नहीं मेरे फ़ज़ल को रोकने वाला। ज़मीन से लेकर आसमान तक चाहत अल्लाह की पूरी होती है।

वह मुहब्बतें तक़सीम करने पर आए तो भेड़िया और बकरी एक घाट पर पानी पीने लगते हैं। वह नफ़रतें तक़सीम करने पर आए तो सगे भाई एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो जाते हैं। वह हिफ़ाज़त करने पर आए तो मकड़ी के जाले से हिफ़ाज़त करके दिखाई, यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली के पेट में डालकर बचाकर

दिखाया, इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग के ढेर में बचाकर दिखाया, इस्माईल अलैहिस्सलाम को छुरी की तेज़ धार के नीचे बचाकर दिखाया। वह देने पर आता है तो सहरा में भी खाने के ढेर लगा सकता है।

बनी इसराईल को चालीस साल सहरा की जगह में मीठा और नमकीन खिलाया। काले पहाड़ में मासूम रो रहे हैं। उनके लिए चश्मे का ऐसा पानी जारी किया जो आज तक रवां दवां है। यह पानी कहाँ से आता है, यह आज तक मालूम नहीं हो सका।

क़ौमे आद और अल्लाह का अज़ाब

क़ौमे आद ने अल्लाह की नाफ़रमानी की और नारा लगाया ﴿من اشد منا قوة﴾ हमसे भी कोई ताक़तवर है। अभी कुछ अर्से पहले क़ौमे आद के ढांचे अरब के सहरा में पाए गए हैं। एक दोस्त ने क़ौमे आद के ढांचों की तस्वीर भेजी।

जिनके बारे में अल्लाह कहता है ﴿التي لم يخلق مثلها في البلاد﴾ हमने कोई उन जैसा बनाया ही नहीं। चालीस हाथ लम्बा क़द था। बड़े बड़े सिर होते थे। न बीमार न कमज़ोरी एक नौजवान पेड़ को दो उंगलियों में उखाड़कर फेंक देता था। ऐसी ताक़तवर क़ौम तीन सौ साल की उम्र तक उनकी जवानी चलती थी और जब अल्लाह की नाफ़रमानी की तो अल्लाह ने पटख़ पटख़कर मार दिया। पिछले कुछ हफ़्तों पहले खुदाई में उनके ढांचे मिले। मेरे दोस्त ने उनकी तस्वीर भेजी है। वह ढांचा पड़ा हुआ है। एक आदमी उसके सिर के क़रीब खुदाई कर रहा है तो उसका सिर उसके कान तक पहुँचा हुआ है। एक आदमी के क़द जितना लम्बा सिर्फ़ सिर है।

मेरे भाईयो! मग़रिब में सूरज डूबता है। मग़रिबी तहज़ीब के पीछे चलना अंधेरों में गुम हो जाना है। ये लोग तो हलाकत में पड़े हुए हैं। ये लोग अगर इस हालत में मर गए तो कभी जहन्नम से नहीं निकल सकेंगे।

मेरे भाईयो! गाली गलौज से बचो। आज चार पैसे किसी के पास हो आते हैं तो वह मुलाज़िमों के लिए ऐसी गालियाँ निकालता है कि ज़मीन व आसमान थरथरा जाते हैं, कपकपा जाते हैं। सुन लो मेरी बात बैतुल्लाह को तोड़ देना छोटा गुनाह है और किसी मुसलमान को माँ बहन की गाली देना बड़ा गुनाह है। बैतुल्लाह को आग लगा देना छोटा गुनाह है किसी मुसलमान को ज़लील करना बड़ा गुनाह है। याद रखो ज़बान की कमाई एक दिन ज़रूर भुगतोगे अगर किसी की अच्छाई नहीं बयान कर सकते तो उसके ऐब भी न उछालो।

अब्दुल्लाह बिन उबई जैसा मुनाफ़िक़, ज़ालिम, फ़ासिक़ जिसने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तोहमत लगाई। एक महीने तक दिन रात ऐसी मुसीबत रही कि हर आँख में आँसू थे और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परेशान। आख़िर इतना दुख उठाकर भी आपने कहा ऐ लोगो! क्या हुआ कुछ लोग मुझे मेरे घर वालों के बारे में तंग कर रहे हैं। यहाँ पर भी आपने अब्दुल्लाह बिन उबई जैसे मुनाफ़िक़ का नाम नहीं लिया। वह नबी जो अब्दुल्लाह बिन उबई पर भी पर्दा डालना चाहता हो उसकी उम्मत भाई को गाली दे, बीच बाज़ार में रुसवा कर दें, अख़बारों में नाम दे दें। जिनके बारे में अल्लाह हुक्म दे रहा है उनके कोड़े लगाओ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿قذف المؤمن يحبط عمل مائة سنة﴾ किसी नेक मुसलमान पर तोहमत लगाना सौ साल के नेक आमाल को बर्बाद कर देता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पानी पी रहे थे। अब्दुल्लाह बिन उबई का बेटा अब्दुल्लाह जो कि मुसलमान था आपके पास आया। कहने लगा या रसूलल्लाह! थोड़ा सा पानी बचा दें। क्या करोगे? बाप को पिला दूंगा शायद ईमान ले आए। आपने पानी बचाकर दे दिया। वह जाकर कहने लगा इसे पियो। वह कहने लगा क्या है? तो अब्दुल्लाह ने कहा अल्लाह के नबी का झूठा है। बाप कहने लगा इससे अच्छा तो यह था कि तू अपनी माँ का पेशाब लेकर आता। अस्तग़फ़िरुल्लाह बेटा होकर उसको इतना गुस्सा आया कि वापस जाकर कहने लगा या रसूलल्लाह! मुझे इजाज़त दें मैं इस काफ़िर की गर्दन उड़ा दूं, उसे क़त्ल कर दूं। आपने कहा ﴿انه ابك احسن اليك﴾ वह तेरा बाप है उसकी ख़िदमत कर, उसके साथ हुस्ने सुलूक कर।

अगर इस उम्मत पर नबी की दुआ की वजह से अज़ाब से हिफ़ाज़त न होती तो जो नाचने वाली की झंकार है उसकी नहूसत अगर यह दुनिया जज़ा व सज़ा का जहान होता तो एक औरत के नाचने पर उसके घुंघरू की जो झंकार होती है वह हिमालय पहाड़ में भी सुराख़ कर देती।

मेरे भाईयो! जिसको देखो हुकूमत को गालियाँ देता है। अरे कभी अपने आपको भी तो देखो इन आँखों ने कितना हराम देखा, इन कानों ने कितना हराम सुना, इस हाथ ने कितना ग़लत तोला, इस ज़बान ने कितनी गालियाँ दीं, ये क़दम कितनी ग़लत महफ़िलों

को उठे, सूद कौन ले रहा है? बे पर्दा किसकी बेटी फिर रही है? इंश्योरेंस कौन करवा रहा है? रिश्वत कौन दे रहा हे? यह बाज़ार में नाप तोल में कमी करने वाले कौन हैं? अज़ान की आवाज़ सुनकर न उठने वाले कौन हैं? यह दुकानदार ग्राहक को धोका देने वाला कौन है?

इमाम हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत

एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुत्बा दे रहे थे। इमाम हुसैन को मस्जिद के दरवाज़े पर देखा तो खुत्बा छोड़कर मिम्बर से उठे और मजमे को चीरकर इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु तक पहुँचे उनको उठाया फिर उनको अपने साथ लेकर खुत्बा दिया।

एक बार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बचपन में खेलते खेलते पहाड़ों में गुम हो गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पैग़ाम भिजवाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दोनों से बड़ी मुहब्बत थी। फ़रमाया कि हसन व हुसैन मेरी दो टहनियाँ हैं।

हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के गुम होने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को इधर उधर भगाया। उनको तलाश करो। खुद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी तलाश में निकले और बीच पहाड़ में देखा कि दोनों भाई एक पहाड़ के बीच चिमटकर बैठे हुए थे। ऊपर एक अज़्दहे ने साया किया हुआ है। ज्यूं ही अज़्दहे ने आपको देखा तो सिर

झुकाकर (सलाम करके) चुपके से वापस चला गया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल अलैहिस्सलाम से पूछा कि अल्लाह तआला ने मेरे बारे में कहा है कि मैं रहमतुल्लिलआलीमन हूँ तो आलम में तो आसमान भी आ गया। तुझे मेरी रहमत से क्या मिला? तो कहने लगे मुझे डर लगा रहता था कि कहीं अल्लाह दोज़ख में न डाल दे लेकिन आपके तुफ़ैल में अल्लाह ने मेरी तारीफ़ आप के क़ुरआन में की अब मुझे भी तसल्ली हो गई कि अल्लाह मुझे पकड़ से बचा ले। जिसकी रहमत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तक पहुँच जाए जो सिदरतुल मुन्तहा पर हैं फिर हम क्यों महरूम रहें।

मिम्बरे नबवी का आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाई में रोना

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा का ख़ुत्बा देते हुए एक पेड़ के तने पर टेक लगाया करते थे। फिर मजमे की ज़्यादती की वजह से लोगों ने कहा इस तने की वजह से आप हमें नज़र नहीं आते लिहाज़ा आप मिम्बर बनाएं ताकि आप बुलन्दी से नज़र आ सकें। आप जुमा का ख़ुत्बा देने के लिए खजूर के तने के आगे से गुज़रे और फिर मिम्बर की पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो खजूर के बेजान तने ने चीख़ मारी कि सारी मस्जिद गूंज उठी।

﴿حنا حنين الاعشار﴾ वह ऐसा चीख़ा जैसे हामला ऊँटनी चीख़ती है तो आपने उसको पीछे मुड़कर देखा तो वह हिचकियाँ ले रहा था। आप नीचे उतरे और उसको सीधे हाथ से सीने से लगाया

और कहा तू मेरे साथ एक सौदा कर मैं तुझ से जुदा हो जाता हूँ और इसके बदले मैं जन्नत में तुझे अल्लाह से कहकर पेड़ बनवाता हूँ। क्या तू इस पर राज़ी है? फिर वह खुजूर का तना चुप हुआ। फिर आपने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मैं इसे सीने से न लगाता तो क़यामत तक मेरी जुदाई पर यह रोता रहता। जिसकी जुदाई पर बेजान पेड़ रोए हम ने खुद उसके तरीक़ों को जुदा कर दिया। मेरे भाईयो! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक ज़िन्दगी को अपनाओ अगर यह नहीं कर सकते तो इतना तो करो कि हराम से बचो।

बहनों को विरासत ज़रूर अदा करो

मेरे भाईयो! आज हमारी क़ौम एक बहुत बड़े गुनाह में मुलव्विस हो चुकी है। वह बहनों को हिस्सा अदा करना है और अफ़सोस तो इस बात का है कि इस गुनाह को गुनाह नहीं समझती। अल्लाह ने उनका बहुत बड़ा हिस्सा रखा है और इस हिस्से को ख़ास तौर से क़ुरआन मजीद में बयान किया है। अगर हम अपनी बहनों का हक़ नहीं अदा किया तो सारी ज़िन्दगी हराम हमारे पेट में पड़ा रहेगा। जिसकी वजह से सारी इबादतें मुँह पर मार दी जाएंगी और हम कभी जन्नत की हवा भी न पा सकेंगे। इस बात को रिवाज दो बाप मर गया तो माँ को बहन को हिस्सा अदा करो चाहे चार आने हैं या चार लाख उनका हक़ अदा करो। यह मत कहो कि उन्होंने हमें माफ़ कर दिया है। हलाल लुक़्मा हमेशा बहार लाता है, हराम का लुक़्मा हमेशा मुसीबतें और बेसुकूनी लाता है।

बाहर से बड़े नेक नमाज़ी अन्दर से बदतमीज़

मेरे भाईयो! अपने अख़्लाक़ अच्छे करो। आपका फ़रमान है ﴿خيركم خيركم لاهله﴾ तुममें सबसे बेहतरीन मुसलमान वह जो बीवी से अच्छा सुलूक करे।

और यहाँ सबसे ज़्यादा बदतमीज़ी बीवी के साथ की जाती है। बाहर बड़े ख़ुश होकर मिलेंगे, बड़े अख़्लाक़ दिखाएंगे, चाय का भी पूछेंगे, पानी का भी पूछेंगे। घर में जाकर बीवी को कभी गाली देंगे, कभी थप्पड़ मारेंगे, कभी ज़लील करेंगे। कितने लोग हैं जो माँ-बाप से बीवियों को मिलने नहीं देते। क्या ज़ुल्म व सितम की हद है। जिन माँओं ने जना उनसे मिलने नहीं देना यह कैसे अल्लाह के नबी को मुँह दिखाएंगे?

ख़ातिमुल अंबिया और दौड़ का मुक़ाबला

आपने फ़रमाया ﴿وانا خيركم لاهلى﴾ मैं अपनी बीवी से तुममें सबसे अच्छा सुलूक करता हूँ। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं एक बार आप सफ़र से वापस आ रहे थे। आपने सहाबा से कहा तुम आगे चले जाओ। जब वह दूर चले गए तो आपने आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा मुझसे दौड़ लगाओगी? कहा लगाऊँगी। काएनात का सरदार दौड़ लगा रहा है। काएनात जिसको झुक झुककर सलाम करे। आप जिस पत्थर से गुज़रते वह कहता अस्सलाम अलैकुम या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। ऐसी बुलन्द शान वाला अपनी बीवी के साथ दौड़ लगा

रहा है। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं आगे निकल गई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीछे रह गए। मैं दौड़ में जीत गई।

कुछ अर्से के बाद एक सफ़र से आप वापस आ रहे थे। आपने फिर कहा लोगों तुम आगे चले जाओ। फिर आपने कहा आएशा दौड़ लगाओगी। कहा लगाऊँगी। इस दूसरी दौड़ में आप आगे निकल गए मैं पीछे रह गई। फिर आपने कहा यह पिछली दौड़ का बदला हो गया। यह थे अल्लाह के नबी के अख़्लाक़। हमारा क्या हाल है? हमारा नबी तो लुक़्मा बनाकर अपनी बीवी के मुँह में डालते हैं और इर्शाद फ़रमाया कि बीवी के मुँह में लुक़्मा डालना सदक़े का सवाब है।

हज़रत आएशा जहाँ से पानी पीती और जहाँ उनके होंट ग्लास को लगते थे हमारे नबी ख़ुद पूछते आएशा तुमने कहाँ से पिया था? फिर उस निशान ज़दा जगह पर होंट रखकर पानी पीते थे। यह थे हमारे नबी के अख़्लाक़।

हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा के घर आप सोए हुए थे। आप हाजत से फ़राग़त के लिए घर से निकले। मैमूना की आँख खुली तो उनके नफ़्स ने उनको धोका दिया। वह दिल में कहने लगीं मुझे छोड़कर किसी और बीवी के पास चले गए। उनको आया गुस्सा। उन्होंने अन्दर से कुंडी लगा दी। इतने में आप वापस तशरीफ़ ले आए। कहा दरवाज़ा खोलो। मैमूना काएनात के सरदार से कहने लगीं नहीं खोलती। आप क्यो मुझे छोड़कर दूसरी बीवी के पास जाते हैं? कहने लगे अल्लाह की बन्दी ﴿السی حالی﴾ मुझे पेशाब आया हुआ था इसलिए बाहर निकला। कहने लगीं

नहीं नहीं मुझे पता है आप मुझे छोड़कर दूसरी बीवी के पास गए थे। आपने फ़रमाया अल्लाह की बंदी नबी ख़्यानत नहीं कर सकता। मैमूना को नदामत का एहसास हुआ तो उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। आप मुस्कुराते हुए वापस आए और चूँ चरां भी नहीं की, उफ़ भी नहीं किया। इतना तो कह देते कि यह तूने क्या बदतमीज़ी की। हमारे जैसा कोई होता तो डंडा उठाकर उसके सिर में दे मारता। मेरे भाईयो! आज हमारे घरों में ज़िन्दगी क्यों बर्बाद हो रही है, क्योंकि हम अख़्लाक़ को दीन का हिस्सा नहीं समझते?

महबूब की अनोखी सुन्नत

एक बार आपने हसन रज़ियल्लाहु अन्हु को कमर पर बिठाया। आप के दोनों हाथ और घुटने ज़मीन से लगे हुए हैं, सवारी बन गए। पूरे कमरे का चक्कर लगाया। हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा को ऊपर बिठाकर। एक बार मैंने अपने छोटे बच्चे को इसी तरह कमर पर बिठाकर चक्कर लगाया कि चलो बच्चा भी खुश महबूब की सुन्नत भी ज़िन्दा होगी।

हज़रत ज़ैनब की बेटी थीं इमामा। उनको आपने उठाया हुआ है और नफ़ली नमाज़ भी पढ़ी जा रही है। जब आप रुकू में जाते हैं तो उनको उतार देते। सज्दे से उठते तो फिर इमामा को उठाकर फिर नमाज़ शुरू कर देते हैं। ऐसा बच्चों से प्यार करके दिखाया।

आप मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे। हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा आए एक ऊपर चढ़ गया और एक सीने के नीचे चला गया तो आपने अपना सीना ऊपर करके हाथ खोल दिए ताकि वह अन्दर आराम से बैठ सकें। सहाबा दौड़े उतारने के लिए।

आपने हाथ के इशारे से रोक दिया कि कुछ मत करो। आप लोग सारी दुनिया से हँसकर मिलते हो बीवी को दबा कर रखते हो कि हम मर्द हैं, हम छोटे क्यों बनें।

मुहब्बत से दिल फ़तेह करो

आपके अख़्लाक़ इतने आला कि घर का काम खुद करते ताकि बीवी खुश हो। कभी कभी आटा खुद गूंधते थे। कपड़े खुद धोते थे, जूता टूट गया खुद गांठ रहे हैं, घर की झाड़ू दे रहे हैं। कभी मेरे भाईयो! आपने आटा गूंधा, कभी घर में झाड़ू दी? (इस बात का अन्दाज़ा लगाएं कि हम कितने मुतकब्बिर हैं।) अपने ऊँट को खुद ही पानी पिला रहे हैं, उसका चारा खुद सिर पर लेकर जा रहे हैं।

पत्थर दिल इंसान

मेरे भाईयो! काफ़िरों की वर्दी उतार दो। जो नबी हमारे लिए इतना रोया इतना तड़पा आज हमें उसका लिबास अच्छा नहीं लगता, उसका चेहरा अच्छा नहीं लगता। मेरे भाईयो! मैं आपको उसके रोने का वास्ता देता हूँ, उसके तड़पने का वास्ता देता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि क़यामत के दिन उसका सामना करते हुए शर्म आए।

मैं आपसे हाथ जोड़कर कहता हूँ। अल्लाह के नबी के तरीक़ों को अपना लो। उसी में कामयाबी है। उसकी वर्दी में आ जाओ। छोड़ दो उसके दुश्मनों का लिबास जो तुम्हारी जान के दुश्मन हैं।

तुम्हारे ईमान के दुश्मन हैं। तुम उन्हीं ज़ालिमों को बड़ा बनाकर चलते हो। तलम्बे जैसे छोटे से क़स्बे में भी चार साल के बच्चे पतलून और टाई पहनाकर स्कूल भेजते हो। तुम्हें क्या हो गया? तुम सोचते क्यों नहीं तुम किसके पीछे जा रहे हो? जो तुम्हारे लिए लुट गया, तुम्हारे लिए पिट गया, तुम्हारे लिए रोता रोता बेजान होकर निढाल हुआ, फ़रिश्ते रोए उसको रोता हुआ देखकर, पहाड़ रोए उसके दुखों को देखकर, पत्थर रोए उसके दुखों को देखकर। चश्मे तसव्वुर में ग़ौर करो जब आप ख़ून में नहाकर पत्थर खाकर बेहोश हुए सोचो! सोचो! यह कौन है? यह वह है जिसकी उंगली का इशारा सारे ताएफ़ को ज़मीन में धंसा सकता है (मगर वह उम्मत को क़रीब करने के लिए पत्थर भी खा रहा है।) दुआएं भी दे रहा हैं

सुन्नत की अहमियत

टायर से हवा निकल जाए तो गाड़ी खड़ी हो जाती है। नबी की सुन्नत का जनाज़ा निकाल दो तो क्या कुछ भी नहीं होता? दवाइ की एक गोली कम कर दो तो दवाई का असर कम हो जाता है। उसके महबूब के तरीक़ों पर आओ जो आपके लिए ज़िन्दगी फ़ना कर गया।

हम अगर दो वक़्त खाना न खाएं तो भूख से बुरा हाल हो जाता है। नींद तक नहीं आएगी। वह अल्लाह का नबी भूख की शिद्दत से चारपाई पर तड़प रहा है। एक दिन गुज़ारा, दो दिन गुज़ारे, तीन दिन गुज़र गए। एक लुक़्मा भी मुँह में नहीं गया। (क्या आप कमा नहीं सकते थे? वजह क्या थी कमाई का वक़्त

भी इस उम्मत की तर्बियत और अल्लाह के साथ तअल्लुक़ और तबलीग़ पर ख़र्च किया।)

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा रोने लगीं। अल्लाह के नबी कपड़े में चमड़े का पेवन्द भी लगा हुआ है। सुन्नत की क़द्र करो। कभी मेरा नबी बाज़ार में नंगे सिर नहीं गया फिर तुम नंगे सिर ईद पढ़ने आए हो। आप नहीं समझ सकते एक सुन्नत में अल्लाह ने क्या ताक़त रखी है।

ईद का दिन ऐसी मुबारक घड़ी जिसमें अल्लाह की रहमत बरसती है, तौबा क़ुबूल होती है मगर शराब पीने वाली की बख़्शिश नहीं होती, माँ-बाप के नाफ़रमान की बख़्शिश नहीं होती, रिश्तेदारों से तोड़ पैदा करने वाले की बख़्शिश नहीं है। दिल में कीना और बुग्ज़ रखने वाले की बख़्शिश नहीं। बख़्शिश कोई न होने का मतलब यह है जब तक उस गुनाह में मुब्तला है अल्लाह माफ़ नहीं करेंगे।

अल्लाह तआला का सुनना और देखना

मेरे भाईयो! तौबा करो। अल्लाह का सुनना कामिल है, देखना कामिल है। अल्लाह की नज़र सारी काएनात को देख रही है मिसाल पढ़िए

﴿یری ربیا نملة سوداء سخرة السماء فی اللیله الظلمات.﴾

एक काला पत्थर है फिर ऊपर काली परत फिर ऊपर जंगल छा चुका है, नीचे एक काली च्युंटी जा रही है। अल्लाह अर्श पर बैठा उस चियोन्टी के चलने की लकीर को भी देखता है। अल्लाह यह नहीं कह रहा कि चियोन्टी को देखता हूँ। वह तो अर्श पर बैठा कह रहा है कि उसकी लकीर को भी देखता हूँ। रात का

अंधेरा, पहाड़ का अंधेरा, काले पत्थर का अंधेरा, काली चियोन्टी का अपना अंधेरा भी मुझसे यह लकीर नहीं छिपा सकता।

दीन में पाबन्दी है सख़्ती नहीं

मेरे भाईयो! अल्लाह की मानो। अल्लाह की चाहत पर ज़िन्दगी गुज़ारो। अल्लाह बड़ा ही मेहरबान है। दीन में पाबन्दी है सख़्ती कोई नहीं। कोई काम पाबन्दी के बग़ैर हुआ? कोई बच्चा पाबन्दी के बग़ैर डाक्टर बना है? किसी ने इज़्ज़त पाई हो पाबन्दी के बग़ैर। कभी पालने वाला भी सख़्ती करता है? तर्बियत के लिए तो माँ भी डंडा लेती है। बच्चों को माँ स्कूल भेजती है। बच्चा कह रहा है सख़्ती हो रही है। माँ कह रही है पाबन्दी हो रही है।

इज़्ज़त हासिल करने का रास्ता

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है ﴿من اراد عز بلا عشيره﴾ जो इज़्ज़त चाहता हो ख़ानदानी भी न हो ﴿غنى بلا مال﴾ बग़ैर माल के दौलत चाहता हो ﴿هيبة بلا سلطان﴾ बादशाह नहीं है मगर बादशाहों जैसी शान चाहता है ﴿وجاهة بلا اخوان﴾ क़ुव्वत चाहता हो बग़ैर लोगों के। यह सब कैसे हासिल हो ﴿فليخرج من المعصية﴾ अल्लाह की नाफ़रमानी छोड़ दे और फ़रमांबरदारी अपना ले। इज़्ज़ते उसकी ग़ुलाम बन जाएंगी, हैबत और सरदारी उसकी पाबन्द होंगी, दुनिया उसके सामने हाथ जोड़कर खड़ी होगी। हम भी आपसे यही कह रहे हैं। अल्लाह से मिलने और जुड़ने का रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी है।

च्यूंटी अल्लाह की निशानी

चियोन्टी अंडे से निलकते ही अपना काम जानती है। न वह सुनती है न बोलती है न उसे कोई पढ़ाता है न उसे कोई सिखाता है न वह देखती है। अन्दर घुप अंधेरा है और तीस हज़ार अंडे हैं। उनमें से बच्चे निकले हैं। उसमें से कुछ पहरेदार हैं, कुछ ग़ल्ला लाने वाले हैं, कुछ ग़ल्ले की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, कुछ दरवाज़े की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, कुछ अंडों पर पहरा देने वाले हैं, कुछ मलिका के साथ रहने वाले हैं, कुछ नए घरों की तलाश और तामीर के लिए हैं।

ये इतने मुश्किल मुश्किल काम हैं और च्युंटी की अवक़ात क्या है। जो पहरेदार च्युंटी होती है उनके सिर क़ुदरती बड़े होते हैं। उनको न किसी ने बताया कि तुम्हारे ज़िम्मे पहरा है क्योंकि तुम्हारे सिर बड़े हैं। वे अल्लाह की दी हुई तालीमात हैं जिसने उन्हें बाँध दिया है। वे अपने आप उनके अन्दर मौजूद है। वे अपने आप जब थोड़ी ताक़त पकड़े हैं तो दरवाज़े पर पहरा देने लग जाते हैं। उनका पहरा क्या होता है? सिर से सिर जोड़कर खड़े हो जाते हैं। अन्दर से च्युंटी बाहर जा रही हो तो पीछे हट जाते हैं।

च्युंटी के माथे पर दो ऐंटीना होते हैं। वह आकर अपने दोनों ऐंटीना के ज़रिए दरवाज़े पर आकर दस्तक देती है। कराची में अगर एक अरब ख़ानदान च्युंटियों के आबाद हैं तो हर च्युंटी के दस्तक देने की आवाज़ दूसरी से अलग है। एक जैसी नहीं। यह

अल्लाह का निज़ाम है। पहरेदार दस्तक के अन्दाज़ समझते हैं कि यह घर की च्युंटी है।

फिर वे अपना सिर हटा लेते हैं। अगर कोई ग़लती से आ जाए तो उन्हें फ़ौरन पता चल जाता है कि मेरे घर का फ़र्द नहीं है। एकदम पीछे हट जाते हैं फिर वे पीछे पीछे साएरन बजाते है। हमला करो शिकार हाथ में आ गया है तो पीछे से पियादा फ़ौज आगे आती है। अगर वे थोड़ी हों तो वैसे ही काम बन जाता है अगर ज़्यादा हैं तो पीछे से तोपख़ाना बुलाया जाता है। तोपख़ाना क्या करता है? वह उल्टा लेटकर अपनी दुम से फ़ायर करता है। बम बरसाता है। ज़हर का स्प्रे करता है। ऐसे ही अल्लाह ने क़ुरआन में च्युंटी (नमल) का ज़िक्र नहीं कर दिया। अगर उन पर क़ाबू पा लिया जाता है तो वह ग़िज़ा बन जाते हैं।

आजकल यह नारा ख़ूब लग रहा है कि औरतों को आज़ादी दी जाए। ज़ाहिर बात है जब औरत आज़ाद होगी तो मर्दों की ख़ूब नज़रें ख़राब होंगी।

इधर सन् 1972 ई० में एक आदमी मर रहा था एडम्स्मिथ उसने माशियात पर एक किताब लिखी है कि इंसान कमाने में आज़ाद है। चाहे औरत नचाकर कमाए, शराब बेचकर कमाए, जुवा खेलकर कमाए जिस तरह कमाना हो कमाए। अब ये दो आज़ादियाँ बाज़ार में आ गयीं। औरत आज़ाद है, माल कमाने में हम आज़ाद हैं। (यह अंग्रेज़ों का नारा है।)

इस आज़ादी का आख़िरी रूप क्या बना कि जो औरत सिर्फ चार बच्चों को संभालने पर तैयार नहीं थी वह चार सौ आदमियों

की ग़ुलामी कर रही है और हर एक को मुस्कुरा मुस्कुराकर कह रही है वाटर (पानी), टी (चाय) यह आज़ादी है या वह आज़ादी है?

अब चार सौ इन्सानों की हवसनाक नज़रें उस पर पड़ रही हैं। और वह कभी इधर भाग रही है कभी उधर भाग रही है। कभी खाना ला रही है कभी चाय ला रही हैं। दूसरी एयर लाईनों में शराब भी देते हैं। फिर जिनको चढ़ जाती है वे ख़ूब ग़ुल ग़पाड़ा मचाते हैं।

इंगलिस्तान में सर्वे किया गया। सन् 1792 ई० का यह सर्वे उनके हाथों में दम तोड़ गया। सन् 2000 ई० में इंगलिस्तान में सर्वे हुआ कि घर लौटना चाहती हो या आज़ादी चाहती हो। अठ्ठानवें फ़ीसद औरतों ने कहा हम घर लौटना चाहती हैं लेकिन हम क्या करें न हमें ख़ाविन्द मिलते हैं न माँ-बाप मिलते हैं।

हालैंड में एक लड़की घर की सीढ़ी पर बैठी रो रही थी। किसी ने पूछा तुम क्यों रो रही हो? कहने लगी मेरे बाप ने मुझे घर से निकाल दिया है। वह कहता है पहले किराया जमा कराओ फिर घर में रहना। तो वहाँ इस आज़ादी का नतीजा यह निकला कि औरत को ख़ाविन्द तो मिलता नहीं और ख़ाविन्द को बीवी नहीं मिलती। वहाँ सारे रूप ख़त्म हो चुके हैं सिर्फ़ एक शक्ल बाक़ी है महबूब और महबूबा।

जब तक महबूब का दिल नहीं भरा उसका नफ़ा बाक़ी है और जब दिल भर जाता है तो उसे इस्तेमाल हुए पन्ने की तरह फेंक दिया जाता है।

एक वाक़िआ

हमारी एक जमाअत ऐडमिरा गई तो नमाज़ पढ़ाने वाले नौजवान इमाम ने जब सलाम फेरा तो कुछ लड़कियाँ क़रीब आ गयीं। लड़की ने पूछा तुम अंग्रेज़ी जानते हो? कहा जानता हूँ। कहा यह क्या किया है? यह वाक़िआ मुझे अशफ़ाक़ अहमद ने सुनाया जो ड्रामानवीस है। उसने कहा मैं और मेरी बीवी वहाँ बैठे हुए थे। मैंने कहा आओ देखते हैं ये लड़कियाँ इससे क्या कहती हैं। वह अंग्रेज़ी में इमाम से कहने लगीं यह तुम ने क्या किया है? नौजवान कहने लगा हमने इबादत की है। वह कहने लगी आज इतवार नहीं है। लड़के ने कहा हम दिन में पाँच दफ़ा करते हैं। वह कहने लगी यह तो बहुत ज़्यादा है।

लड़के ने इस पर बताया कि अल्लाह के एहसानात को सामने रखा जाए तो यह बहुत थोड़ा है और यही वह अमल है जो सुकून की बहार लाता है। यह मुशक़्क़त नहीं राहत है। फिर लड़की ने हाथ बढ़ाया जाने के लिए तो उस नौजवान ने कहा माफ़ी चाहता हूँ कि मैं यह हाथ आपको नहीं लगा सकता। उसने कहा क्यों? उसने कहा यह मेरी बीवी की अमानत है। तो वह लड़की खड़ी खड़ी ज़मीन पर गिर गई।

उसकी चीख़ निकली और वह रोने लगी और कहने लगी कि कितनी ख़ुशक़िस्मत है वह बीवी जिसको ऐसा ख़ावन्दि मिला। काश! यूरोप के मर्द भी ऐसे होते और वह सिसकियाँ लेती हुई वहाँ से चली गई। अशफ़ाक़ अहमद अपनी बीवी से कहने लगा बानो आज वह तबलीग़ हुई है जो लाखों किताबों से भी नहीं हो सकती। आज उसने एक अमल से करके दिखा दी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुस्न का मंज़र

एक बार अम्मा आएशा चर्ख़ा कात रही थीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना जूता सी रहे थे। पसीने के क़तरे आपकी पेशानी पर जमा हो गए। अम्मा आएशा ने जब आपके हसीन चेहरे पर पसीना देखा तो बस देखती रह गयीं जैसे मबहूत हो गई हों। हाथ जैसा था वैसा ही रह गया। आपने कहा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा क्या देख रही हो। कहने लगीं आपके माथे पर पसीना चमकता देखकर एक शायर का शे'र याद आ गया ﴿واذا نظرت الى اسرت وجهه﴾ जब मैं उसके माथे पर नज़र डालता हूँ तो यूँ चमकता नज़र आता है जैसे आसमान पर बिजलियाँ नज़र आती हैं।

अख़्लाक़ का जनाज़ा मत निकालो

पेट पर पत्थर बाँधकर भी ख़ुशियाँ मनाई जा सकती हैं अगर अख़्लाक़ हैं। सोने चाँदी में तोलकर भी मुस्कुराहटें नहीं दे सकते किसी को बदअख़्लाक़ी के साथ। ज़बान का वार ऐसा है कि सारे घर को आग लगा देता है। इसलिए भाईयो अख़्लाक़ सीखो और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि पूरे दीन में सबसे मुश्किल सबक़ अख़्लाक़ है। आपका फ़रमान है तराज़ू में सबसे वज़नी चीज़ अच्छे अख़्लाक़ हैं तो नफ़्स पर भी सबसे वज़नी ये होंगे।

शक्लों से घर आबाद नहीं होते

इमरान बिन ख़त्तान एक ख़ारजी गुज़रा है। ऐसा ख़तीब गुज़रा

कि सारे अरब पर छा गया। पन्द्रह मिनट में आग लगा देता था मगर बेचारा बड़ा ही बदसूरत था। उसकी बीवी बड़ी ख़ूबसूरत थी। एक दिन उसकी बीवी ने कहा इन्शाअल्लाह हम दोनों जन्नती हैं। उसने कहा वह कैसे? बीवी कहने लगी मैं तुम्हें देखकर सब्र करती रहती हूँ तू मुझे देखकर शुक्र करता रहता है। सब्र पर भी जन्नत, शुक्र पर भी जन्नत। शक्लों से घर आबाद नहीं होते, अच्छे अख़्लाक़ से घर आबाद होते हैं।

मेरे भाईयो! अपने घरों में राहत चैन और सुकून लाना चाहते हो तो इस ज़बान को मीठा कर लो। मीठे बोल में जादू है। यह वह जादू है जो सिर पर चढ़कर बोलता है।

तीन तरह के वलीमे

आपने हर तरह के वलीमे किए। ग़रीब वाला वलीमा भी किया, मुसाफ़िरी वाला वलीमा भी किया, आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में सिर्फ़ दूध पिलाया गया था।

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का वलीमा इससे भी आसान किया गया था कि अपनी अपनी रोटी लेकर मेरे पास आ जाओ। हर कोई अपनी अपनी रोटी लेकर आ गया। वलीमा हुज़ूर का रोटी दूसरे लेकर आ रहे हैं।

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का वलीमा था ताकि मालदारों के लिए इजाज़त निकाल आए। सारे मदीने वालों को रोटियाँ खिलाई गयीं क्योंकि ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अल्लाह तआला ने आसमान से पढ़ा न इजाब न क़ुबूल।

वाक़िआ

मैं एक दफ़ा मौलान जमशेद साहब की ख़िदमत में शहद लेकर गया। यह मेरे उस्ताद हैं, मैं राइविन्ड में उनके पास पढ़ता था। मुझसे कहने लगे कहाँ से लाए हो? मैंने कहा मेरे अपने बाग़ का है। मुझसे कहने लगे तुम्हारे बाप ने ज़मीन में से अपनी बहनों को हिस्सा दिया है। बात शहद की है और मुझसे बाप की विरासत का पूछ रहे हैं। मैंने कहा वह सिर्फ़ दो भाई थे बहनें कोई नहीं थीं। फिर कहने लगे तुम्हारे दादा ने अपनी बहनों का हिस्सा दिया था। मैंने कहा जैसा कि अल्लाह ने मुकल्लफ़ बनाया है आप भी मुझे उतना ही मुकल्लफ़ समझें। कहने लगे अच्छा अच्छा ठीक है ठीक है। फिर कहने लगे यह बोतल भी हदिया है या सिर्फ़ शहद है। जिनको आख़िरत का ख़ौफ़ होता है वह ऐसे तहक़ीक़ करते हैं।

ख़ुश्क वादियों की तरह हो गए हमारे इल्मी हल्क़े

अल्लामा ज़दमेरी रह० ने कहा था कि अपने अख़्लाक़ ऐसे बनाओ की मुश्क के टीले की तरह महकने लग जाओ अगर तेरे अख़्लाक़ बन गए तो ऐसे महकेगा जैसे मुश्क का ढेर महकता है। फिर कहा ﴾وصدق صديقة ان صدقت صداقة﴿ दोस्तों से दोस्ती का हक़ अदा करो।

فدفع عدوك بلتى فاذا لتى فاز الذى بينك
وبينه عدواة كانه ولى حميم.

जो तुझसे बुरा सुलूक करे, अदावत पर आ जाए उसके साथ

बेहतरीन सुलूक कर फिर वह तेरा दोस्त बन जाएगा।

अख़्लाक़ सीखने पढ़ने का आज रिवाज ख़त्म हो गया। आज हमारी मजलिसें खुश्क वादियाँ हैं। इसमें बहार के झोंके नहीं हैं। इसमें सबा और नसीम की महक नहीं है।

फूल बरसाओ पत्थर न बरसाओ

एक बार हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में झगड़ा हुआ। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा मान नहीं रहीं थीं तो आपने हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया कि हमारी सुलह कर दो। अबूबक्र तशरीफ़ लाए सुलह करवाने के लिए। दोनों की बात सुनी। हज़रत आएशा की आवाज़ बुलन्द हो गई तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने रखकर थप्पड़ मारा। आएशा थीं तो अबूबक्र की बेटी लेकिन भागकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे पनाह ले ली तो आपने कहा ऐ अबूबक्र मैंने तुम्हें सुलह के लिए बुलवाया या लड़ने के लिए। तुम्हें किसने कहा था इसको मारने को।

घर अख़्लाक़ से आबाद होते हैं फ़तवों से घर आबाद नहीं होते। अल्लाह का नबी घर में झाडू दे रहा है, अपने कपड़े खुद धो रहा है, आटा गूंध रहे हैं।

तलीफ़ा

हमारे इलाक़े के एक ज़मींदार का निकाह हुआ। सीधा सादा देहाती। मौलवी साहब ने कहा फ़लां बिन्ते फ़लां को तेरे निकाह में

दिया तुझे क़ुबूल है? उसने कहा आवड़ दे। (आने दो)। उसके भाई ने उसको पीछे से कोहनी मारी कहने लगा जावड़ दे (जाने दे) फिर भाई ने कोहनी मारी क्या कह रहा है तो कहने लगा जैसे सबकी सलाह होवे। मौलवी साहब ने कहा सबकी सलाह से काम नहीं बनना तेरी सलाह से काम बनेगा।

अच्छे अख़्लाक़ सबसे बड़ा सरमाया है। अच्छे अख़्लाक़ से बढ़कर कोई तोहफ़ा नहीं है। अख़्लाक़ ही घर बनाते हैं। ज़बान एक लफ़्ज़ ही बाज़ दफ़ा घर बिगाड़ देता है। अख़्लाक़ बनाओगे तो बीवियाँ फ़िदा हो जाएंगी, क़ुर्बान हो जाएंगी और अगर अपना मौलवीपन दिखाओगे तो सारी ज़िन्दगी सुलगती आग में सुलगते रहोगे। यह आग तुम्हें भी सुलगाती रहेगी और तुम्हारे दर व दीवार में भी आग लगा देगी। मौलान जमशेद साहब फ़रमाया करते एक चुप में सौ गुर हैं।

जालीनूस की बीवी बड़ी गुस्से वाली थी। वह कपड़े धो रही थी और यह नवाब साहब किताबें पढ़ रहे थे। बीवी को यही गुस्सा था कि यह किताबें ही पढ़ता रहता है। (वह किताबों को भी सौकन समझती थी।) बीवी उसको कोसती रही कोसती रही और यह चुपकर के सुनता रहा। बीवी ने देखा इस पर तो कोई असर नहीं हो रहा है तो वह जिस टब में कपड़े धो रही थी वह सारा उठाकर उसके ऊपर फेंक दिया। जालीनूस हँसकर कहने लगा आज तो बादल गरजने के बाद बरस भी गया। इतनी बात में ही बात ख़त्म कर दी। आप भी अपने अख़्लाक़ ऐसे करो दोनों जहान में नफ़ा उठाओगे।

ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फैमली प्लानिंग) हक़ीक़त या अफ़साना

आज यह नारा लगता है कि आबादी बढ़ रही है। आबादी मत बढ़ाओ। मैं मदरसा चलाता हूँ। मुझे पता है कि मेरे मदरसे में तीन सौ बच्चों की गुंजाइश है। उसके बाद हम कहते हैं कि हमारे यहाँ दाख़िला बंद है। हम इंसान होकर गुंजाइश को भी जानते हैं और तंगी को भी जानते हैं। क्या अल्लाह रब होकर नहीं जानता कि मुझे पाकिस्तान में कितने पैदा करने हैं? उसका इल्म इतना घट गया है? क्या उसके ख़ज़ाने इतने कम हो गए हैं। अगर दो बच्चे हैं एक मर गया तो क्या करोगे?

मेरा एक दोस्त मेरे साथ गवर्मेंट कालेज में पढ़ता था। गुरंगों गुरंगों हम उसको कहा करते हैं। एक ज़बर्दस्त आदमी था मरी से दौड़ता था तो इस्लामाबाद तक पैदल चला आता था। मरी से इस्लमाबाद पैंतालिस किलोमीटर का सफ़र है। ब्रिगेडियर का बेटा था उसकी माँ भी ऊँचे ख़ानदान की थी। वह शराब में आवारगी में पड़ गया। गोरों से उसकी दोस्तियाँ हो गयीं। इस्लामाबाद में रहता था। बड़े बुरे अजीब काम शुरू कर दिए थे।

हमारी जमाअत इस्लामाबाद गई तो एक आदमी मुझसे कहने लगा कि आपका कोई दोस्त है उसने यहाँ बड़ा गंदा काम फैलाया हुआ है। आपसे उसे मिलाना था। मैं उसका नाम भी भूल गया था। मुलाक़ात का वक़्त तय हुआ। अल्लाह के हुक्म से इज्तिमा में बारिश हो गई। मुलाक़ात न हो सकी।

इज्तिमा में ख़ुश्क जगह तलाश करते करते मैं एक जगह सुन्नतें पढ़ने लग गया। जब मैंने सलाम फेरा तो उसे एक जगह बैठा देखा। एकदम मुझे ख़्याल आया कि यही मुस्तुफ़ा है। उसने मुझे ग़ौर से देखा मैंने उसे ग़ौर से देखा लेकिन न उसने पहचाना न मैंने पहचाना। मैं शर्म के मारे उससे पूछ न सका। उसका हुलिया भी काफ़ी हद तक बदला हुआ था। सोने के बुंदे उसने कानों में पहने हुए थे। अजीब सा लिबास पहना हुआ था। जब नमाज़ ख़त्म हो गई तो मैंने एक साथी से कहा कि यह जो नौजवान बैठा हुआ है उससे पूछो तुम्हारा नाम मुस्तुफ़ा है? अगर यह कहे तो कहना तुम्हें तारिक़ जमील बुला रहा है। तो वह उसके पास गया फिर भागकर मुस्तुफ़ा मेरे पास आया। मुझसे कहने लगा मैंने सुना है कि तू तबलीग़ का बिग शाट बन गया है। मैंने कहा मैं तो कुछ नहीं हूँ। कहने लगा मैंने तेरे बारे में बहुत कुछ सुना है। यह हमारी पहली मुलाक़ात थी। फिर हम उससे मिलते रहे।

आख़िर उसने चिल्ला लगाया। चिल्ला लगाने के बाद उसने सारे गुनाह छोड़ दिए। आवारगी, बदकारी, शराब भी छोड़ दी फिर दोबारा गोरों से दोस्ती हुई फिर शराब शुरू कर दी मगर ज़िना के क़रीब नहीं गया, जुए के क़रीब नहीं गया।

एक दिन मेरी उससे मुलाक़ात हुई। मैंने कहा अहमद मुस्तफ़ा यह भी छोड़ दो। कहने लगा सन् 2000 ई० में तीन चिल्ले लगाऊँगा फिर पक्की तौबा कर लूंगा, हज भी करूंगा, अम्मा को भी कराऊँगा। यह बात सन् 96 ई० की है। मैंने कहा तेरे पास क्या गारंटी है कि तू सन् 2000 ई० तक जिएगा।

कहने लगा नहीं मरता। सन् 96 ई० के सितम्बर में उससे बात हुई थी और अक्टूबर 96 ई० को पता चला की अहमद का

इन्तिक़ाल हो गया। मगर एक बात है वह पाँच वक़्त का पक्का नमाज़ी था। वह इस हाल में भी नमाज़ नहीं छोड़ता था।

मैं उसके जनाज़े में गया फिर उसके घर ताज़ियत के लिए। उसकी वालिदा को पता चला कि मैं बाहर बैठा हूँ तो उन्होंने अन्दर बुलवाया। मैं अन्दर चला गया। उसकी माँ बच्चों की तरह रोने लगी और कहने लगी अहमद तुझे बड़ा याद करता था और कहता था कि मेरा एक दोस्त है जिसने मुझे सच्चा रास्ता दिखलाया। फिर कहने लगी मैंने इस ब्रिगेडियर को बहुत समझाया दो बच्चे ठीक नहीं औलाद मांगनी चाहिए मगर वह यही कहता कि बच्चे दो ही अच्छे।

फिर दोनों मियाँ बीवी को ऐसा सदमा हुआ कि दोनों मियाँ-बीवी एक ही रात में सोए हुए सो गए। आज उनका चार कैनाल का ख़ूबसूरत महल वीरान पड़ा है।

मेरे भाईयों यह बड़ी गहरी चालें हैं। हमारी नस्ल को बर्बाद करने के लिए। आज अगर किसी औरत के बच्चे ज़्यादा हों तो उसको ताना मिलता है। कैसी बेवक़ूफ़ औरत है। आज आप यूरोप जाएं तो सौ गाड़ियाँ गुज़रते देखें मगर बच्चा शायद किसी गाड़ी में बैठा नज़र आए। अल्लाह का शुक्र है हमारी तो डिग्गियों में भी बच्चे नज़र आते हैं।

सच्ची तौबा कर लो

आज सच्ची तौबा करो। आज अल्लाह रूठा हुआ है। उसे मनाने का कोई रास्ता नहीं सिवास तौबा के। अल्लाह से दोस्ती किए बग़ैर हमारे लिए कोई रास्ता नहीं। अल्लाह को हम से बेपनाह प्यार है।

अल्लाह ने हमें बनाया है। बनाने वाला बनाई हुई चीज़ से प्यार करता है। यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से बाहर आए तों एक कुम्हार घड़े बना रहा था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कुम्हार से कहो एक घड़ा तोड़ दे। तो यूनुस अलैहिस्सलाम ने कहा एक घड़ा तोड़ दे। वह कहने लगा क्यों, क्या मैं तोड़ने के लिए बना रहा हूँ? अपने हाथ से बनाऊँ फिर तोड़ दूँ? अल्लाह ने कहा ऐ यूनुस कुम्हार ने अपने हाथ से घड़े बनाए। अब जब तुमने तोड़ने के लिए कहा तो उसने तोड़ने से इंकार कर दिया कि अपने हाथ से बनाए हैं क्यों तोड़ दूँ? अपनी मेहनत ज़ाए होने पर उसे दुख हो रहा है। इसी तरह अल्लाह को भी अपने बन्दों की हलाकत पर दुख होता है।

अल्लाह को अपने बन्दों से माँओं से ज़्यादा प्यार है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सत्तर से ज़्यादा का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया कि अल्लाह को सत्तर माँओं से ज़्यादा बन्दों से मुहब्बत है तो सत्तर से मुराद सत्तर नहीं है, सत्तर से मुराद बेइन्तेहा प्यार है अपने बन्दों से। माँ से कहो माँ वह कहेगी जी, फिर कहो माँ वह कहेगी जी, फिर कहो अम्मा वह कहेगी हूँ, फिर कहो अम्मा वह कहेगी बकवास न कर, मेरा सिर न खा।

और अपने अल्लाह को कहा या अल्लाह जो जवाब में सत्तर बार कहेगा लब्बैक, लब्बैक लब्बैक अब्दी फिर कह या अल्लाह वह कहेगा लब्बैक, लब्बैक, लब्बैक अब्दी, फिर कह या अल्लाह वह कहेगा लब्बैक, लब्बैक, लब्बैक अब्दी। सारी रात या अल्लाह कहते रहो वह जवाब देता हुए नहीं थकेगा। हम पुकार पुकारकर थक जाएंगे।

अल्लाह को पता है कि मेरे सारे बन्दे तो नेक होंगे नहीं। उसे पता है ﴿وقليل من عبادى الشكور﴾ मेरे थोड़ी ही बन्दे जो हया करके चलेंगे, अपने नफ़्स के ग़ुलाम, ख़्वाहिश के ग़ुलाम, नज़रों के ग़ुलाम, कानों के ग़ुलाम, शहवत के ग़ुलाम।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

ईद उसकी जिसने अल्लाह को राज़ी किया

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

ज़िन्दगी की क़द्र करो

मेरे मोहतरम भाईयो, दोस्तो! साल में एक बार जमा होने का मौक़ा अल्लाह देता है लेकिन ज़िन्दा रहने के लिए उसकी तौफ़ीक़ और ताईद शामिले हाल रहे तो ही यह मौक़ा नसीब होता है।

बहुत से लोग पिछली ईद पर थे आज नहीं हैं। वक़्त अपनी

रफ़्तार से बहुत तेज़ है और उम्र अपने घटने में बहुत तेज़ है और मौत के पंजों में रहम कोई नहीं और गर्दिशे अय्याम में कोई बदलाव नहीं।

वह अल्लाह जो हर बदलाव से पाक ज़ात है। अल्लाह है जिस पर कोई हालात असर नहीं डालते ﴿لا تغير بالحوادث ولا يخشى الدوائر﴾ अल्लाह है जो बीते, मौजूद और आने के बन्धन से आज़ाद है। ﴿لا يشتمل عليه زمان﴾ अल्लाह है जो ज़माने के क़ैद से पाक है। अल्लाह माज़ी, हाल, मुस्तक़बिल से पाक है। हम माज़ी, हाल, मुस्तक़बिल के बंधन में बंधे हुए हैं। गुज़रे ज़माने की याद में, मौजूद की दलदल में फँसकर आइन्दा के सुनहरे ख़्वाब देखते देखते इंसान की ज़िन्दगी बीत जाती है और बहुत से ऐसे हैं जो सिर्फ़ ख़्वाहिशात को अपने सीनों में दबाए मर जाते हैं। अल्लाह ने मौक़ा दिया, ज़िन्दगी दी आज फिर जमा हो गए।

अल्लाह से दूरी की वीरानियाँ

मेरे मोहतरम भाईयो! बात बड़ी फ़िक्र की है। फ़िक्र की घड़ी है, आख़िरत को सामने रखकर चलना था, अल्लाह को राज़ी करना अपना मलतब और मक़सद बनाना था। उस के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे तरीक़ों में ढलकर चलना यह हम से मुतालबा था। हम पटरी से उतरे, राह भटके, दुनिया की गलियों में गुम हो गए, शहवतों के ग़ुलाम बने, लज़्ज़तों के ताबे हुए।

इस वक़्त हम उस मुसाफ़िर की तरह हैं जो बीच रेगिस्तान में गुम हो चुका है। दूर दूर तक जिसे मंज़िल का निशान न मिले, रहबर न मिले, राही न मिले और हर निशान को रेगिस्तान की

बेरहम हवा पल पल में मिटा रही हो। पल पल में बदल रही हो। वह किसी रास्ते को मंज़िल समझकर चलता है। हवा का झोंका वहाँ से हटाकर उस रास्ते को दूसरी तरफ़ दिखा देता है। चार क़दम इधर चलता है। एक हवा का बिगोला सा उठता है उस राह को दूसरी तरफ़ दिखाता है। वह कभी यूँ चलता है कभी यूँ चलता है।

او كظلمت في بحر للجى يغشه موج فوقه موج من فوقه سحاب
ظلمت بعضها فوق بعض اذا اخرج يده لم يكد تراها.

पूरी दुनिया इस वक़्त इस आयत के मुताबिक़ नज़र आ रही है। घुप अंधेरा है, ऊपर रात की तारीकी, नीचे समुंद्र की काली मौजों का अंधेरा है और उसके पर भी बादलों का अंधेरा है। तीन अंधेरे हैं जिसके अन्दर इंसानी ज़िन्दगी का क़ाफ़िला चल रहा है और सफ़र का इरादा करता है। तीन अंधेरे हैं ﴿اذا اخرج يده لم يكد يراها﴾ वह घुप अंधेरे में अपना आपा देखना चाहता है तो अपना आप भी नज़र नहीं आता तो रास्ता कहाँ नज़र आएगा।

सूद लेना माँ से ज़िना से ज़्यादा बड़ा गुनाह है

दुनिया भटक चुकी है भाईयो! हम मुसलमान होकर भी भटके हुए हैं। हमें पता है सच नजात है झूठ में हलाकत है। दुनिया के बाज़ार सच पर नहीं चलते। हमें पता है सूद अल्लाह से ऐलाने जंग है और हलाल कमाने वाला अल्लाह का दोस्त और सच्चा फ़रमांबरदार है लेकिन हमारी तिजारतें सूद के मज़बूत पंजे में फँसी हुई हैं। हम उससे निकलने को तैयार नहीं हैं।

पहले तो बैंक सूद दिया करते थे, सूद लिया करते थे। अब

लोगों ने भी यह काम शुरू कर दिया है। जिनके पास चार पैसे हैं वह आगे सूद पर पैसे देते हैं। यह वबा आम हो चुकी है।

यह अल्लाह का करम है कि वह तौबा का इन्तेज़ार करता है, बन्दों को मोहलत और ढील देता है कि वह तौबा करके रुजू कर लें अगर अल्लाह का रहीम होना उसके क़ह्हार होने पर ग़ालिब न होता तो इस वक़्त हम सब ज़मीन के नीचे जा चुके होते।

हम तो आग और पत्थरों की बारिश के मुस्तहिक़ हैं मगर

मस्जिद मंदिर क्या, कारख़ाने, बाज़ार क्या, मर्द व औरत क्या, देहात और शहर क्या ज़मीन सबको निगल चुकी होती, बिजलियाँ उन पर टूट चुकी होतीं, बादल उन पर बरस चुके होते या आग के साथ, पत्थरों के साथ या तुफ़ानी बारिशों के साथ या समुंद्र की मौजें उन पर चढ़ चुकी होतीं।

यह तो अल्लाह है

افامن الذين مكروا سيات ان يخسف الله بهم الارض اوياتيهم
العذاب من حيث لا يشعرون و ياخذهم فى تقلبهم فما هم
بمعجزين او ياخذهم على تخوف فان ربكم لرؤف الرحيم.

क्या ख़ूबसूरत बात है अल्लाह फ़रमाते हैं मेरे नाफ़रमानो! तुम्हें पता नहीं कि मैं तुम्हें ज़मीन में धंसा सकता हूँ।

मेरे नाफ़रमानों तुम्हें पता नहीं कि मैं ऐसी जगह से अज़ाब देकर तुम्हें मार सकता हूँ कि तुम्हें होश भी न रहे, वहम गुमान भी न हो। मैं तुम्हें इस तरह अज़ाब दूँ कि तुम अपने काम काज खेतों, बाज़ारों में दुकानों में खड़े खड़े हलाक हो जाओ। मैं तुम्हें

इस तरह अज़ाब दूँ कि तुम्हें पता भी न चले। मैं तुम्हें इस तरह अज़ाब दूँ कि तुम्हें पहले से बता दिया जाए कि मेरा अज़ाब आ रहा है, तैयार हो जाओ।

﴿ويأخذهم على تخوف﴾ फिर बताओ तुम्हें डरा डराकर मारूं तो मैं ये सब कुछ क्यों नहीं करता हूँ हाँलाकि ज़मीन पूछ रही है या अल्लाह इजाज़त दे कि मैं इन्हें निगल जाऊँ, आसमान के फ़रिश्ते पूछ रहे हैं या अल्लाह इजाज़त दे हम उतर जाएं, समंद्रों का पानी पूछ रहा है या अल्लाह इजाज़त दे हम चढ़ जाएं, हवाएं बेताब हैं तुफ़ान बनने के लिए, बादल बेताब हैं तूफ़ान बनने को, ज़मीन बेताब है ज़लज़ला लाने को, पहाड़ बेक़रार हैं फट जाने को, लावा बन जाने को तो अल्लाह तआला फ़रमाता है फिर यह सब कुछ मैं करता क्यों नहीं?

﴿ان ربكم لرؤف رحيم.﴾

मेरा मेहरबान होना, मेरा रहीम व करीम होना मुझे रोक लेता है और फिर उनको मोहलत दे देता हूँ कि शायद तौबा कर लें, शायद तौबा कर लें।

हमारा रब हमसे नाराज़ है उसको मना लो

मेरे भाईयो! मस्अला बड़ा बिगड़ा हुआ है। हम अल्लाह को नाराज़ कर चुके हैं। अल्लाह की काएनात का तेवर हमारे हक़ में बिगड़ चुका है। ज़मीन भी तेवर बदल रही है आसमान भी आँखें दिखा रहा है। सारी काएनात का निज़ाम हमारे ख़िलाफ़ हो जाना यह अल्लाह के नाराज़ होने की बड़ी साफ़ और रौशन दलील है। इस वक़्त हमें तन्हा और सबको मिलकर तौबा की ज़रूरत है कि

हम अपने अल्लाह को राज़ी करें। दुनिया भी बिगड़ गई और आख़िरत के बिगड़ने के सारे असबाब पूरे हो चुके हैं। दुनिया का बिगड़ जाना कोई बड़ा मसअला नहीं है। मेरी आपकी ज़ात के लिए तो यह भी बहुत बड़ा मसअला है। हम तो दुनिया की भूख भी नहीं सह सकते। हल्का सा दर्द दो दिन से मेरे जिस्म में है उसने नींद हराम की हुई है। यह हल्का सा दर्द है और अगर पूरे वजूद को अल्लाह तआला दर्दमंद कर दे?

क़यामत का ज़लज़ला

पूरे वजूद में अल्लाह तकलीफ़ डाल दे तो हम कौन से तीस मार खां हैं कि हम अल्लाह की पकड़ का मुक़ाबला कर सकें। हम तो दुनिया का ग़म भी नहीं सह सकते बजाए इसके कि आख़िरत के ख़ौफ़नाक आने वाले मरहले झेल सकें। जबकि अल्लाह तआला फ़रमा रहा है—

﴿يوم يجعل الولدان شيبا﴾ जिस दिन बच्चा भी बूढ़ा हो जाएगा ﴿السماء منفطر به﴾ आसमान फट जाएगा, ﴿وكان وعده مفعولا﴾ और अल्लाह अपने वायदे को करके दिखाएगा, ﴿اذا دكت الارض دكا دكا﴾ जिस दिन ज़मीन टूट जाएगी, ﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ और अल्लाह खुद अपने फ़रिश्तों के साथ आ जाएगा, ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ जिस दिन अल्लाह का अर्श सिरों पर आ चुका होगा, उठाने वाले आठ फ़रिश्ते होंगे, ﴿يومئذ تعرضون﴾ और तुम्हें भी पेश किया जाएगा, ﴿ويوم نسير الجبال﴾ पहाड़ को हटा देगा अल्लाह तआला, ﴿وترى الارض بارزة﴾ ज़मीन नंगी कर दी जाएगी, ﴿وحشرناهم﴾ सारे कलिमे वाले इकठ्ठे करेगा, सारे पाकिस्तानी,

हिन्दुस्तानी, अरब, अजम इकट्ठे करेगा, ﴾فلم نغادر منهم احدا﴿ कोई एक भी पीछे नहीं रहेगा, ﴾وعدهم عدا﴿ एक एक को गिना हुआ होगा, ﴾ما كان ربك نسيا﴿ अल्लाह गिनते करते भूलता नहीं, काएनात को संभालते हुए भूलता नहीं, ﴾لا يضل ربي﴿ न उससे कोई भटक सकता है, न वह भटक सकता है, ﴾لا يعزب عن ربك من مثقال ذره﴿ न अल्लाह से कोई चीज़ भटकी है न वह किसी चीज़ से ग़ाफ़िल है, ﴾لاتحسبن الله غافلا عما يعمل الظلمون﴿ न उससे कोई चीज़ छिप सकती है।

سواء منكم من اسر القول ومن جهر به ومن هو
مستخف باليل وسارب بالنهار.

वह ऐसा दिन है जो तुम्हारे सारे करतूतों को खोल देगा

अंधेरा, उजाला, ख़लवत, जलवत, आवाज़, बेआवाज़, छिपकर, ऐलानिया, बोल को काम को, हरकत को, सुकून को यहाँ तक कि दिल के जज़्बात को, दिल की धड़कनों में पैदा होने वाली आवाज़ों को भी सुनता है, देखता है। काएनात को भी सुनता है, सब कुछ अल्लाह के सामने, काएनात सामने, अव्वल और आख़िर सामने, अरब व अजम सामने।

﴾وازلفت الجنة للمتقين﴿ जन्नत को बुलाया जा रहा है, ﴾وبرزت الجحيم للغاوين﴿ फिर जहन्नम को बुलाया जा रहा है और, ﴾نضع الموازين القسط﴿ फिर अल्लाह तआला तराज़ू को क़ायम फ़रमा रहा है, ﴾وان منكم الا واردها واذالصحف نشرت﴿ फिर अल्लाह तआला एक एक की किताब खोलकर उसे दिखा रहा है। एक एक का वर्क़

रोल हुआ है, अल्लाह यूँ खोलेगा, ﴿واذا الصحف نشرت﴾ आज उनके आमाल खोलो, ﴿يوم تبلى السرائر﴾ आज उनके पर्दे उठाओ, आज उनके पर्दे खोलो, दुनिया में छिपाओ, आख़िरत में खोलो, दुनिया में सत्तारी का मामला, आख़िरत में हिसाब किताब का मामला, ﴿اذا زلزلت الارض زلزالها﴾ वह दिन जब ज़मीन में ज़लज़ले आएंगे। वह दिन जब जहन्नम मौजूद और जन्नत मौजूद, इन्सान की क्या कैफ़ियत होगी? ﴿كالفراش المبثوث﴾ परवानों और पतंगों की तरह जमा होने के दिन की क्या कैफ़ियत होगी?

दोस्तियों को दुश्मनियों में बदलने वाला दिन

يوم يفر المرا من اخيه وامه وابيه وصاحبته
لكل امرء منهم يومئذ شان يغنيه.

भाई भाई से भागेगा, माँ बेटी से भागेगी, बाप बेटे से भागेगा, बीवी ख़ाविन्द से भागेगी, वालदैन औलाद से भागेगें, औलाद वालदैन से भागेगी।

﴿الاخلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو.﴾ आज दोस्तियाँ दुश्मनियों में बदल जाएंगी ﴿الا المتقين﴾ सिर्फ़ तक़्वे वाले हैं जिनको नजात मिलने की उम्मीद है बाक़ी तो सारे हिसाब में गिरफ़्तार हैं।

तो मेरे भाईयो! एक ख़ौफ़नाक घाटी एक ख़ौफ़नाक मरहला आने वाला है। जब बच्चा बूढ़ा हो जाएगा, इंसान मौत की तमन्ना करेगा, ﴿ياليتني كنت ترابا﴾ मौत की तमन्ना करेगा लेकिन मौत खुद मर गई। आगे एक चीज़ ने मरना है बाकी सबने उठना है। आज मौत मरेगी और सबको ज़िन्दगी मिलेगी। इंसान तीन तब्क़ों में तक़सीम होंगे—

﴿واصحاب الميمنه ما اصحاب الميمنه﴾ आम दर्जे के जन्नती, ﴿واصحاب المشئمه ما اصحاب المشئمه﴾ जहन्नम के लोग, ﴿السابقون السابقون اولئك المقربون.﴾ ऊँची आला शान वाले जन्नत में।

ऊपर के तब्क़े के लोग, दर्मियाने लोग, जहन्नम वाले लोग। ये तीन तब्क़ों में सारी इन्सानियत तक़सीम हो रही है।

﴿وامتاز اليوم ايها المجرمون﴾ एक पुकार आ रही है ऐ मुजरिमों की जमाअत तुम एक तरफ़ हो जाओ।

﴿فيومئذ لا يعذب عذابه ولا يوثق وثاقه احد.﴾

आज अल्लाह जैसी पकड़ कोई न पकड़ सकेगा। अल्लाह जैसी मार कोई न मार सकेगा, अल्लाह जैसा अज़ाब कोई न दे सकेगा।

मौत का पंजा

मेरे मोहतरम भाईयो! उस ख़ौफ़नाक घाटी, उस ख़ौफ़नाक दिन से इंसानियत ग़ाफ़िल हुई पड़ी है। उनको झंझोड़कर बताने की ज़रूरत है। उनको नहीं अपने को झंझोड़ने की ज़रूरत है।

तू कहाँ जा रहा है? तुझे ख़बर नहीं मौत तेरे पीछे है। हालात के मज़बूत पंजे तुझे लेने को हैं और मौत तेरे सिर पर सवार है। तू किन चीज़ों में लगा हुआ है? उस आने वाले ख़ौफ़नाक दिन के लिए अपने आपको तैयार करना यह हमारा सबसे बड़ा मस्अला है। अल्लाह को राज़ी करना है। यह हमारा सबसे बड़ा मस्अला था।

माँओं से ज़्यादा मेहरबान अल्लाह

मेरे भाईयो! हमने अल्लाह को नाराज़ कर दिया जो माँओं से

ज़्यादा शफ़ीक़ है, बाप से ज़्यादा मेहरबान, माँओं से ज़्यादा प्यार करने वाला, हमारी एक पुकार पर सत्तर बार लब्बैक कहने वाला, हमारी अंधेरों की सुनने वाला, तन्हाईयों की सुनने वाला, बीमारी में सुनने वाला, उजाले में सुनने वाला, सबकी सुनने वाला, फ़रमांबरदार कहे या अल्लाह तो कहता है लब्बैक, नाफ़रमान कहे या अल्लाह तो कहता है लब्बैक, सारी ज़िन्दगी का रूठा हुआ एक दफ़ा कह दे या अल्लाह तो वह इन्तेज़ार में होता है कि कभी तो मुझे पुकारेगा या अल्लाह, वह कभी न पुकारने वाले को भी उतनी ही ख़ुशी से जवाब देता है लब्बैक, लब्बैक, लब्बैक या अब्दी मेरे बन्दे मैं तो कितने सालों से इन्तेज़ार में था कि कभी तो मेरा नाम भी तेरी ज़बान पर आएगा। मैं तो कब से मुन्तज़िर था कि कभी तो तू मुझे पुकारेगा, मेरा नाम लेगा लब्बैक बोल बोल मैं हाज़िर हूँ, तुझे क्या चाहिए? ऐसे मेहरबान और ऐसे करीम अल्लाह से टक्कर लेकर हम ने ज़िन्दगियाँ ख़राब कर लीं।

ईद उसकी है जिसने अल्लाह को राज़ी किया

मेरे भाईयो! मैं सारे भाईयो की ख़िदमत में गुज़ारिश करूंगा। ईद उसकी है जिसने अपने रब को राज़ी कर लिया। ईद उसकी नहीं है जिसने अपने रब को नाराज़ कर दिया। ईद उसकी है जिसने अल्लाह पाक को राज़ी कर लिया। आज अपनी बख़्शिश का अल्लाह से ऐलान करवा लिया। ईद क्या ईद है कि अल्लाह भी नाराज़ हो। शरिअत भी टूट चुकी हो। एहकाम भी टूट चुके हों, आख़िरत भी बिगड़ चुकी हो।

यह कैसा नाफ़रमान शख़्स है?

मेरे भाईयो! ईद ख़ुशी का दिन है। अल्लाह ने यह ख़ुशी का दिन बनाया है। यह रोज़ों की जज़ा का दिन बनाया है लेकिन मैं किस बात पर ख़ुश हूँ। ऐसे ठंडे रोज़े भी सत्तर फ़ीसद मुसलमानों ने नहीं रखे।

मुझे किस बात की ख़ुशी हो कि ऐसे छोटे रमज़ान की तरावीह भी लोगों ने नहीं पढ़ी और नमाज़ें नहीं पढ़ीं। मैं कैसे बदगुमानी को अपने अन्दर से निकालूं? मैं कैसे अपनी आँखों को झुठलाऊँ कि रमज़ान गुज़र गया मगर उन्हें सज्दे की तौफ़ीक़ नसीब नहीं हुई। ऐसे ठंडे रोज़े नसीब नहीं हुए, जुमा जैसे नमाज़ नसीब नहीं हुई। रमज़ान का जुमा, जुमा-तुल-विदा भी नसीब न हुआ।

मैं अपने भाईयों को कैसे समझाऊँ? मैं किस तरह उनके दिल में उतरकर अपनी आवाज़ दाख़िल करूं और मैं किस तरह सारे मजमे के रुख़ को अल्लाह की तरफ़ फेरूं। मैं तो अपने दिल को अल्लाह की तरफ़ फेरने में अल्लाह का मुहताज हूँ। हम सब अल्लाह के मुहताज हैं।

लुटा हुआ मुसाफ़िर

मेरे भाईयो! अपने इस होने वाले नुक़सान पर आँखें खोलो। अपनी आख़िरत की बर्बादी पर अपने आपको संभालो। अल्लाह के वास्ते संभलो। और कोई गिरते को सहारा दे तो कहता है जज़ाकअल्लाह तेरी बड़ी मेहरबानी, कोई चोरी होते हुए पहुँच जाए

और चोरी से बचा ले तो कहता है जज़ाकअल्लाह तेरी बड़ी मेहरबानी।

हाय हम लुट गए, मेरे भाईयो लुट गए, लुट गए, ईमान के जनाज़े उठ गए, नज़रे ग़लत हुई ईमान लुटा, कानों ने गाने सुने ईमान लुटा, ज़बान ने झूठ बोला ईमान लुटा, हाथों ने ग़लत तोला ईमान लुटा, क़लम ने लिखा ईमान लुटा, पाँव संगीत के अड्डों पर चले ईमान लुटा, मौसीक़ी की महफ़िल में बैठे ईमान लुटा।

हया की चादर पहन लो

हया की चादर में लिपटी हुई मुसलमान बेटी से कि जब फ़रिश्ते भी उनसे हया करते थे। फ़रिश्तों को भी हया आती थी। इसी उम्मत की बेटी मुसलमान माँ की बेटी वह पाँव में घुंघरू डालकर महफ़िल की रौनक़ बनी है अगर अल्लाह पाक की सत्तारी न होती और उसकी मोहलत न होती तो उसके घुंघरूओं की छन छन हिमालय पहाड़ को भी छलनी करके रख देती और उसके पाँव की थाप जो ज़मीन पर पड़ती है। नाचते हुए वह तहतुस्सरा तक ज़मीन को आग लगा देती और जो बैठे हुए हैं हमारी मुहब्बत की कमी की वजह से हमारे ग़ाफ़िल भाई जो अल्लाह की इतनी बड़ी नाफ़रमानी को तफ़रीह का नाम देकर नज़ारा कर रहे हैं।

मैं मुजरिम हूँ मैंने उन्हें नहीं समझाया। अगर अल्लाह की रहमत का दरवाज़ा न खुला हुआ होता तो इन देखने वालों पर भी अज़ाब की बिजलियाँ कड़ककर गिरतीं और अल्लाह का कोड़ा बरसता और इन नाचने वालियों से हिमालय पहाड़ भी पुर्ज़े पुर्ज़े होता। तहतुस्सरा तक ज़मीन जलकर राख होती और अल्लाह उस

ज़मीन पर ही अपनी क़ुदरते क़ाहिरा के नज़ारे करवा देता लेकिन उस पर क़ुर्बान जाओ वह सत्तार भी है ग़फ़्फ़ार है, वह मोहलत भी देता है, पर्दे भी डालता हैं।

किस बात पर मुस्कुराते हो

मेरे भाईयो! इस वक़्त हम ईमान लुटाकर आए बैठे हैं। जिस आदमी की कुल चोरी हो गई हो, उसको आज ईद मुबारक कहना अच्छा नहीं लगेगा, जिसका कुल डाका पड़ जाए जिसके रात डाका पड़ जाए उसको आज ईद मुबारक अच्छी नहीं लगेगी। उसे लोगों का मिलना अच्छा नहीं लगेगा, उसे लोगों का मुस्कुराना अच्छा नहीं लगेगा। भाईयो! हम किस बात पर मुस्कुराएं।

किस बात पर ख़ुश हूँ कि हम तो ईमान पर एक डाका नहीं लाखों डाके डलवाकर आए बैठे हैं। मताए ईमान लुटा के आए बैठे हैं। पेट में शराब गई ईमान लुटा, पेट में रिश्वत का रुपया गया ईमान लुटा, झूठ बोलकर सौदा बेचा, उसकी रोटी पेट में गई ईमान लुटा, ज़बान पर गाली आई ईमान लुटा, ज़बान पर चुग़ली आई ईमान लुटा, तबियत में तकब्बुर आया ईमान लुटा, तबियत में दुनिया की रग़बतें पैदा हुईं ईमान लुटा, सरेआम एक दूसरे को गालियाँ दीं तो ईमान लुटा, झूठ बोला तो ईमान लुटा। किस किस बात पर रोऊँ और किस किस बात की तरफ़ मैं अपने को अपने भाईयों को मुतवज्जेह करूं कि हम पर एक डाका नहीं हम पर डाकों के डाके पड़ते चले गए। ईमान लुटाकर आए बैठे हैं।

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने यह ख़ुशी का दिन बनाया है। यह रोज़ों का शुक्राना है कि अल्लाह तूने तौफ़ीक़ दी, हमने रोज़े

रखे। उसके शुक्र में हम दो नफ्ल पढ़ रहे हैं। तेरे दरबार में हाज़िर हैं लेनिक मेरे मोहतरम भाईयो दोस्तो!

जो ग़फ़लत से निकल गया ईद उसकी है

ईद ईद होगी जब यह सारा मजमा तौबा करेगा। अगर यह इस तरह ग़फ़लत में आकर ग़फ़लत में उठकर चला जाए और अगर यह तौबा न करे तो यह हमारी ईद क्या ईद है? हमारा जमा होना क्या जमा होना है? हमारा मुबारक बाद देना लेना यह क्या मुबारक बाद है? जबकि सबसे बड़ा सरमाया हम अपने हाथों से लुटा चुके हैं।

अल्लाह के वास्ते गुनाह छोड़ दो

तो मेरे भाईयो! पता नहीं कौन कहाँ बाज़ी हार जाए, ज़िन्दगी का कुछ पता नहीं, कौन कहाँ किस जगह ज़िन्दगी गंवा बैठे।

मेरे भाईयो! मैं आपको अल्लाह का वास्ता देता हूँ। उस अल्लाह के नाम पर जिसने हमें जमा किया, उस अल्लाह के नाम पर जिसने हमें इंसान बनाया, उस अल्लाह के नाम पर जिसने हमें मुसलमान बनाया, उस अल्लाह के नाम पर जिसने हमें रोज़ों की तौफ़ीक़ बख़्शी। वह अल्लाह जो इस वक़्त रोज़ा रखने वालों को मुहब्बत भरी नज़रों से देख रहा है और फ़रिश्तों को उतार चुका है। मैं उस अल्लाह का वास्ता देकर कहता हूँ यहाँ से तौबा करके उठो, यहाँ अपने अल्लाह को मनाकर उठो। कब तक अपनी मानोगे, कब तक अपनी आँखों को अपने मन चाहा दिखाओगे? इन कानों को अपना मन चाहा सुनाओगे, इस ज़बान को कब तक

मनचाहा बुलवाओगे, इन ज़ालिम क़दमों को कब तक ग़फ़लत की महफ़िलों को जाओगे, कब तक ग़लत तोलोगे, कब तक सूद से खेलोगे? कब तक झूठ के बाज़ार गर्माओगे, कब तक नाच गाने की महफ़िल से लज़्ज़त उठाओगे? क्या मौत नहीं आएगी? क्या वक़्त थम गया? क्या ज़माना रुक गया? क्या ज़िन्दगी का पहिया चलते चलते रुक गय है? क्या मौत को अल्लाह ने धकेल दिया है? क्या अल्लाह पाक के फ़रिश्ते मुझसे ग़ाफ़िल हो गए? क्या इज़राईल मुझे देखता नहीं? क्या मेरी मौत से मेरा चिराग़ बुझेगा नहीं?

अपने ऊपर रहम करो

यह बोलती बुलबुल ख़ामोश न होगी? ये आँखों की शमें बुझेंगे नहीं? ये कानों की फोन की लाईनें कटेंगी नहीं? क्या यह चलता फिरता वजूद ख़ाक में नहीं मिलेगा? देखो मैं हाथ जोड़ता हूँ अपने ऊपर रहम करो, अपने ऊपर रहम करो। यह आपका अपने ऊपर रहम है,

﴿ان اعدا عوك نفسك التى بين جنبيه.﴾

यह अल्लाह तआला के नबी का फ़रमान है। मेरा सबसे बड़ा दुश्मन यहाँ बैठा हुआ है। तेरे सीने में छिपा हुआ, तेरे दिल में छिपा हुआ है। अल्लाह का वास्ता देता हूँ उसको दुश्मन बनाओ, शैतान दुश्मन है उसको दुश्मन बनाओ।

अल्लाह भी राज़ी होगा। अल्लाह का रसूल भी राज़ी होगा। फ़रिश्ते भी राज़ी होंगे, फ़िदा होंगे वारी हो जाएंगे।

अगर अपने आपसे दोस्तियाँ लगा लें। यह अन्दर का नफ़्स पलीद है। यह अन्दर का नफ़्स नाफ़रमान है। यह खींचकर ले जा

रहा है जहन्नम की तरफ़, शैतान ने लगाम पकड़ी हुई है। वह खींचकर ले जा रहा है जहन्नम की तरफ़।

मेरे भाईयो! अंगारा अपने हाथ में न रखो। जलती हुई आग के ऊपर थोड़ी देर के लिए अपने अपने हाथ रखो। आग नहीं उठने वाली, भाप के ऊपर थोड़ी देर के लिए अपने हाथ को रखो। कोई है भाप की तपिश को बर्दाश्त कर ले? सिर्फ़ भाप की तपिश। जून की धूप में बाहर खड़े हो जाओ, आपको इस मुक़द्दस जगह जो मस्जिद है उसका फ़र्श भी जला देगा और आप खड़े नहीं हो सकते। बेक़रार होकर अन्दर भागोगे। वह दिन क्या होगा?

क़यामत की गर्मी से हिफ़ाज़त का बन्दोबस्त आज कर लो

यह सूरज इस वक़्त नौ करोड़ तीस लाख मील के फ़ासले पर है। उसमें से आने वाली आग का बीस करोड़वां हिस्सा ज़मीन पर गिर रहा है। यह सूरज अगर साढ़े चार करोड़ मील के फ़ासले पर आ जाए तो सारी ज़मीन बुख़ारात बनकर हवा में उड़ जाएगी। वह क्या दिन होगा जब तन पर कपड़ा नहीं होगा। उस दिन औरत भी नंगी होगी, आज मर्द भी नंगा होगा। सिर पर टोपी नहीं, पाँव में जूता नहीं, तन पर कपड़ा नहीं और यह सूरज नौ करोड़ मील नहीं, साढ़े चार करोड़ मील नहीं, दो करोड़ मील नहीं, एक करोड़ मील नहीं, पचास लाख मील नहीं, पचास हज़ार मील नहीं, पाँच हज़ार मील नहीं, पाँच सौ मील नहीं, एक सौ मील नहीं, पचास मील नहीं यह सूरज एक मील के फ़ासले पर होगा।

और मेरी सुनो तो सही मैं क्या कह रहा हूँ? मेरी तो समझो, मैं क्या कह रहा हूँ मेरे भाईयो! ﴿انی لکم ناصح امین﴾ मेरी तो समझो मैं क्या कह रहा हूँ? मैं एक सवाली हूँ, मैं फ़क़ीर हूँ, मैं भिखारी हूँ, मैं आपसे भीख मांग रहा हूँ, मैं आपके सामने हाथ जोड़ रहा हूँ। अपने आपके दुश्मन न बनो, तौबा की तरफ़ आओ। इस सूरज की आग जब गर्मी में थोड़ी तेज़ होती है तो हमें तड़पा देती है, पंखे चलाते हैं, ग़रीब आदमी पीपल की छांव की तरफ़ भागता है, मालदार आदमी ऐयर कंडीशन चलाता है। दर्मियानी आदमी कूलर चलाता है, बर्फ़ के कारखाने खुलते हैं। वह क्या दिन होगा। वह दिन क्या होगा जब ज़मीन तांबा बन जाएगी और तन से लिबास उतार लिया जाएगा और सूरज एक मील के फ़ासले पर कर दिया जाएगा। और उसके अन्दर की गर्मी है दो करोड़ सत्तर लाख फ़ारन हाइट। तेरह सौ सेंटी ग्रेड पर लोहा पिघल जाता है, पानी बन जाता है, दो करोड़ सत्तर लाख दर्जा जिसके अन्दर आग हो और वह सिर के ऊपर एक मील के फ़ासले पर हो और अल्लाह के अर्श के सिवा साया न हो तो सोचो कि उस दिन क्या हाल होगा?

मरने वालों से इबरत लो

मेरे भाईयो! हम क्यों नादान बन गए। यह हमें क्या हो गया। हमें सुनाई क्यों नहीं देता। हमें लोगों का मरना दिखाई क्यों नहीं देता। हमें क़ब्रों में गुम हो जाना क्यों दिखाई नहीं देता, मिट्टी में रुल जाना, दास्तान का मिट जाना, भूल भुलैया हो जाना, यह हमें

क्यों नहीं दिखाई देता? हमें रोने वालों के नौहें सुनाई क्यों नहीं देते? हमें हालात का बदलना क्यों नहीं दिखाई देता? इस दुनिया का फ़रेब, इस ग़द्दार, इस मक्कार, इस बे वफ़ा और इस धोकेबाज़ दुनिया का फ़रेब, इस डायन और जादूगरनी का दिन ब दिन नए नए आशिक़ बनाना, पुरानों से जफ़ा, नए से वफ़ा, उनसे जफ़ा इनसे वफ़ा, इनको फँसाया उनको छोड़ा।

यह दुनिया मच्छर का पर है

ऐसी दुनिया और ऐसी मिट जाने वाली दुनिया, धोके का घर और मच्छर का पर और मकड़ी का जाला और दारुल ग़रूर। हमें क्यों समझ में नहीं आ रहा है?

بقيمة بحسبه وتفاخر بينكم وتكاثر في الاموال والاولاد
كمثل غيث اعجب الكفار نباته ثم يهيج فتراه مصفرا ثم
يكون حطاما وفي الآخرة عذاب شديد ومغفرة من الله
ورضوان وما الحيوة الدنيا الامتاع الغرور.

यह धोके का घर है, यह मच्छर का पर है, यह मकड़ी का जाला है। मकान पर लड़ने वाले भाई, मकान तो बाक़ी रहेगा और तू उठाकर क़ब्र के गढ़े में डाल दिया जाएगा, दुकान पर आने वाले ग्राहक को धोका देने वाले भाई तेरी दुकान खड़ी रहेगी और तू जाकर क़ब्र के गढ़े में सो जाएगा, कीड़ा तुझे खा जाएगा, औलाद तुझे भुला देगी, जिस औलाद की ख़ातिर तूने झूठ बोला, ग़लत तोला, रिश्वत ली, ज़ुल्म किए, डाके डाले वही औलाद तुझे क़ब्र में डालकर कभी तुझे पूछेगी भी नहीं कि कोई बाप था, वह माँऐं जो अपनी औलाद को खिलाने के लिए ज़ुल्म की हद तक आगे बढ़

जाती हैं। औरों का हक़ छीनो बच्चों को खिलाओ, औरों से लेकर आओ मेरे बच्चों को खिलाओ, इन माँओं का आज मरना होगा कल भूलना होगा। कोई याद नहीं रखता, कौन कब मरा? कहाँ दफ़न हुआ? किस हाल में है?

कोई नहीं, कोई नहीं, कोई नहीं। यह धोके का घर है।
तू हिंस व हवस को छोड़ मियाँ मत देस ब देस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक अजल का लूटे है दिन रात बजा के नक़्क़ारा
क्या बधिया भैंसा बैल शुतर क्या गूनी पल्लाह सर भारा
क्या गेहूँ चावल मोठ मटर क्या आग धुंआ क्या अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

﴿وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور.﴾

इस धोके के घर में बड़ों बड़ों ने धोका खाया। सिकन्दर भी गया, दारा भी गया, जमशेद भी गया, अंग्रेज़ भी गया, बनू उमैय्या भी गए, बनू अब्बास भी गए, उस्मानी तुर्क भी गए, मुग़ल भी गए, अमरीका भी चला जाएगा, रूस भी चला जाएगा। कोई नहीं रहा, कोई नहीं रहा।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे
मिटे नामियों के नाम कैसे कैसे
हुए नामवर बेनिशां कैसे कैसे
ज़मीं खा गई आसमां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है
यही तुझको धुन है रहूँ सबसे आला
हो ज़ीनत निराली हो फ़ैशन निराला

जिया करता है क्या यूंही मरने वाला
तुझे हुस्न ज़ाहिर ने धोके में डाला
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है
तुझे पहले बचपन ने बरसों खिलाया
जवानी ने तुझको मजूनं बनाया
बुढ़ापे ने फिर आके क्या क्या सताया
अजल कर देगी तेरा बिल्कुल सफ़ाया
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है

मेरे बन्दे तू मुझे छोड़कर कहाँ जा रहा है?

मेरे भाईयो! यह मिट जाने वाला सामान है, यह छूट जाने वाली मता है, यह धोके का घर है, इससे लौट आओ, लौट आओ, इधर आ जाओ, अल्लाह पुकार रहा है—

﴾يا ايها الانسان ما غرك بربك الكريم.﴿

अरे मेरे बन्दे मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो? अल्लाह की पुकार सुनो, अल्लाह की पुकार सुनो। मैं किस तरह समझाऊँ? जैसे माँ नादान बच्चे को समझाते समझाते जब आजिज़ आ जाती है, जब थक जाती है तो फिर कहती है कि—

हाय बेटा! तू कैसे समझेगा? अरे बच्चे! तू कैसे समझेगा? तू कहाँ जा रहा है?

वह दीवाना होता है, पागल होता है। उसे जवानी ने इन्सानियत के दायरे से निकालकर जानवरों के रूप में बदला हुआ होता है।

उसकी समझ ख़त्म हो चुकी होती है, उसकी आँखों का ग़लत देखना उसको अंधा कर चुका होता है, मौसीक़ी को सुन सनुकर उसके दिल पर पत्थरों से ज़्यादा सख़्ती आ चुकी होती है। ग़लत महफ़िलों ने उसको बर्बाद कर दिया होता है। कभी माल का नशा, कभी आँख का नशा, कभी कान का नशा, कभी जवानी का नशा, कभी सियासत का नशा।

वह भूल जाता है कि वह मुझे देख रहा है जिसने मुझे आँख दी है। जिसने मुझे कान दिए हैं। उसने आँख इसलिए नहीं दी थी कि औरों की बेटियों को देखो, आँख इसलिए नहीं दी थी कि औरों की इज़्ज़त देखो, कान इसलिए नहीं दिए थे कि तुम इससे गाने सुनो, यह मुँह इसलिए नहीं दिया था कि इससे गालियाँ बको, पेट इसलिए नहीं दिया था कि इसमें हराम लुक़्मे डालो और इसमें शराब डालो और अल्लाह ने शहवत इसलिए नहीं दी थी कि तुम इससे ज़िना के अड्डे चला दो और ज़िना के बाज़ार गर्म कर दो, नहीं! नहीं! नहीं! जैसे माँ आज रोकर कहती है कि ऐ बेटा तुझे कैसे समझाऊँ? तू कैसे समझेगा? वह दीवाना समझता ही नहीं। अल्लाह कह रहा है—

﴿يايها الانسان، يايها الانسان﴾ क़ुरआन में सिर्फ़ दो जगह आया है। ﴿يايها الانسان، يايها الانسان﴾ मतलब क्या है कि अल्लाह मुझे पकड़ रहा है, अल्लाह तआला मुझे पकड़ रहा है, तारिक़ जमील! अल्लाह मुझे झंझोड़ रहा है कि तुझे क्या हो गया है? यह जितना मजमा बैठा है, इनमें से एक एक को और जो आ गए उनको और जो आज ईद भी नहीं पढ़ेंगे उनको और जो सारी दुनिया का क़ातिल है उसको भी।

﴿يا ايها الناس﴾ ऐ लोगों नहीं, ﴿يا ايها المسلم﴾ ऐ मुस्लमानों नहीं, ﴿يا ايها المومن﴾ ऐ मोमिनो नहीं, ﴿يا ايها الموحد﴾ ऐ तौहीद वालों नहीं, ﴿يا ايها المتقى﴾ ऐ मुत्तक़ियों नहीं, ﴿يا ايها المحسن﴾ ऐ मोहसिनो नहीं।

﴿يا ايها الانسان، يا ايها الانسان﴾ जैसे अल्लाह एक एक के दरवाज़े पर चलकर आ चुका हो और एक एक का कंधा पकड़कर उसको हिला रहा है; उनसे कह रहा हो, मेरे बन्दे, मेरे बन्दे ﴿يا ايها الانسان﴾ मेरे बन्दे ﴿ما غرك بربك الكريم﴾ मैंने तुम्हें बनाया था, मैंने तुम्हें पाला था, मैं तेरा कभी बुरा चाहने वाला नहीं हूँ। तुझे किसने धोका दिया? तुझे मुझसे दूर किसने किया?

जब बेटा ही माँ के बारे में बदगुमान हो जाए तो वह माँ ज़िन्दा मर जाती है। माँ-बाप के बारे में औलाद बदगुमान हो जाए तो वे माँ-बाप ज़िन्दगी में ज़िन्दा रहकर भी मौत का ज़ाएक़ा चख लेते हैं। मेरे भाईयो! मेरे भाईयो! अल्लाह बुलन्द व बाला है तमाम तास्सुरात से लेकिन अल्लाह तआला ने इस आयत में इस क़िस्म का दर्द बताया है। मेरे बन्दे मैं तेरा रब हूँ।

﴿بربك الكريم﴾ मैं तुझ पर करम करने वाला रब हूँ, ﴿الذى خلقك﴾ मैं तुझे बनाने वाला, ﴿فسواك فعدلك﴾ तुझे बराबर ऐतदाल से बनाने वाला, ﴿فى اى صورة ما شاء ركبك﴾ फिर तुझे यह सब कुछ देकर, शक्ल देकर, आँखें देकर, ज़बान देकर, होंट देकर, ﴿الم نجعل له عينين﴾ आँखें लगायीं, ﴿وشفتين﴾ होंट दिए, ﴿جعل لكم سمع﴾ कान दिए, ﴿والابصار﴾ आँखें दीं, ﴿والافئدة﴾ दिल दिए।

वह कौन सी चीज़ है जो मुझसे दूरी का सबब बनी

अब मुझे बता मैं कभी तेरा बुरा चाहने वाला हो सकता हूँ? मेरे बन्दे तू मुझे क्यों छोड़ गया? ﴿ما غرك بربك الكريم﴾ मेरे बन्दे तू मुझे क्यों छोड़ गया? मुझको जवाब तो दे तू मुझे क्यों छोड़ गया? किस वजह से तूने मुझे छोड़ा?

क्या मैंने सूरज को चमकने से रोक दिया? क्या मैंने ज़मीन को ग़ल्ला देने से रोक दिया? क्या मैंने तेरी नींद को तुझसे रोक दिया? तूने मेरे सामने मेरी दी हुई आँखो से ग़लत देखा, क्या मैंने तेरी आँखों में तीर बरसा दिए? तूने मेरे सामने मेरे दिए हुए कानों से मौसीक़ी की महफ़िलों में जा जाकर सुना क्या मैंने तेरे कानों के पर्दे फाड़ दिए? तूने ग़लत तोला क्या मैंने तेरे हाथ तोड़ दिए? तरे हाथ ज़ुल्म को बढ़े, तेरे क़लम ने ग़लत फ़ैसले किए, तूने हाथों से रिश्वत को लिया क्या मैंने तेरे हाथ काट दिए? तू ग़लत महफ़िलों को चलकर गया क्या मैंने तेरे पाँव तोड़ दिए? तेरे पेट में हराम के लुक़्मे गए क्या मैंने तेरे मेदे को चीरकर रख दिया? तू अकड़कर चला क्या मैंने तुझे ज़मीन में धंसा दिया?

मुझे बता तो सही मैंने क्या चीज़ रोकी तुझसे?

क्या मेरे सूरज ने चमकाना छोड़ा? क्या मेरे सूरज ने तेरी खेतियों को पकान छोड़ा? क्या पानी ने बरसना छोड़ा? क्या दरियाओं ने बहना छोड़ा? क्या ज़मीन ने ख़ज़ानों को उगलना छोड़

दिया? क्या रात ने आना और ढलना छोड़ दिया? क्या सुबह और शाम ने आना और जाना छोड़ दिया? क्या मौसम नहीं बदले, क्या मौसमों को रोका? या फलों की मिठास को छीन लिया? या ज़मीन की रगों को बंद कर दिया? या ग़ल्लों को निकालना बंद कर दिया? तो कौन सी नेमत और रहमत थी जिसका दर मैंने तेरे लिए नहीं खोला हो?

अल्लाह की गुलामी को इख़्तियार कर लो

﴿يايها الانسان ما غرك بربك الكريم﴾

तू क्यों धोके में आ गया, तू क्यों मुझे छोड़ गया?

मेरे भाईयो! अल्लाह का नाम देकर सवाल करता हूँ, अल्लाह का वास्ता देकर सवाल करता हूँ यहाँ से तौबा करके उठो। कब तक अल्लाह से लड़ाई लड़नी है? कब तक उससे जंग करनी है? कब तक उसके हुक्मों से बाग़ी बनकर चलना है? उसकी मान लो।

मेरे भाईयो! उसके हुक्मों में ढल जाओ यही कामयाबी का रास्ता है। हम औलाद के गुलाम नहीं हैं, बीवी बच्चों के गुलाम नहीं हैं, हुकूमत के गुलाम नहीं हैं, मुल्क व क़ौम के गुलाम नहीं हैं, ज़मीन व दुकान, जाएदाद के गुलाम नहीं हैं, नौकरी के गुलाम नहीं हैं, हम अल्लाह के गुलाम हैं।

हम अल्लाह को मनाएंगे। वह राज़ी हो गया तो हम कामयाब, वह नाराज़ हो गया तो हम नाकाम। हम अल्लाह को राज़ी करके न जाएं चाहे बादशाह बन जाएं तो भी कामयाबी नहीं है। अल्लाह को नाराज़ करके हम सारी काएनात के मालिक बन जाएं तो नाकाम हैं। अल्लाह राज़ी मैं कामयाब, अल्लाह नाराज़ मैं नाकाम।

अल्लाह मुझसे राज़ी मुझे तख़्त पर बिठा दिया मेरा काम बन गया, मुझे मिम्बर पर बिठा दिया मेरा काम बन गया, मुझे झोपड़ी में बिठा दिया मेरा काम बन गया, मुझे गाड़ी में बिठा दिया मेरा काम बन गया, मुझे रेढ़ी पर बिठा दिया मेरा काम बन गया, मुझे ज़िल्लतों में गुम कर दिया मेरा काम बन गया, मुझे गुमनाम कर दिया मेरा काम बन गया।

अल्लाह ही अल्लाह

चूँकि न मैं गुमनामी से डरने वाला न शोहरत का ग़ुलाम, पैसे का ग़ुलाम न ज़िन्दगी का ग़ुलाम, न ज़र का ग़ुलाम, मेरा मतलूब अल्लाह, मेरा माबूद अल्लाह, मेरा मक़सूद अल्लाह, मेरा मस्जूद अल्लाह, मेरा मालिक अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ अल्लाह, मेरा रज़्ज़ाक अल्लाह, मेरा मौला अल्लाह, मेरा अज़ीज़ अल्लाह, मेरा जब्बार अल्लाह, मेरा मुतकब्बिर अल्लाह, मेरा ख़ालिक़ अल्लाह, मेरा बारी अल्लाह, मेरा मुसव्विर अल्लाह, मेरा ग़फ़्फ़ार अल्लाह, मेरा क़ह्हार अल्लाह, मेरा वह्हाब अल्लाह, मेरा रज़्ज़ाक अल्लाह, मेरा फ़त्ताह अल्लाह, मेरा क़ाबिज़ अल्लाह, मेरा बासित अल्लाह, मेरा हाफ़िज़ अल्लाह, मेरा राफ़ेअ अल्लाह, मेरा मुइज़ अल्लाह, मेरा मुज़िल्ल अल्लाह।

मेरा अल्लाह समीअ व बसीर, मेरा अल्लाह लतीफ़ व ख़बीर, मेरा अल्लाह हकीम व गफ़ूर व शकूर, मेरा अल्लाह करीम व रक़ीब, मेरा अल्लाह मुजीब व वासेअ, मेरा अल्लाह मजीद व बाइस, मेरा अल्लाह मतीन व वली, मेरा अल्लाह हमीद व मोहसी, मेरा अल्लाह मुहयि व मुमीत, मेरा अल्लाह हय्यि-वक़य्यूम, मेरा अल्लाह वाजिद व माजिद, मेरा अल्लाह समद व क़ादिर, मेरा

अल्लाह मुक़द्दिम व मौख़िख़र, मेरा अल्लाह अव्वल व आख़िर, मेरा अल्लाह ज़ाहिर व बातिन, मेरा अल्लाह वाली व मुताआली, मेरा अल्लाह मुन्तक़िम, मेरा अल्लाह ग़फ़ूर व रऊफ़, मेरा अल्लाह मालिकुल मुल्क, मेरा अल्लाह ज़ुल जलालि वल इकराम, मेरा अल्लाह मुक़्सित व जामे, मेरा अल्लाह ग़नी व मुग़्नि, मेरा अल्लाह राफ़ेअ व नूर, मेरा अल्लाह हन्नान व मन्नान, मेरा अल्लाह रशीद व सबूर। मेरा अल्लाह सब कुछ है।

अल्लाह का हम से मुतालबा

मेरा अल्लाह ही सब कुछ है। वह राज़ी तो मैं कामयाब हूँ। वह नाराज़ है तो मैं हलाक हूँ। ग़ाफ़िल बनकर न सुनो। मैं फ़रियाद कर रहा हूँ, मैं ख़िताबत नहीं कर रहा हूँ, मैं फ़रियाद कर रहा हूँ। मैं सवाली हूँ, मैं सवाली हूँ। मेरी झोली है आपसे तौबा का सवाल है। यह मेरा सवाल नहीं है, मेरे अल्लाह का सवाल है—

﴿توبوا الى الله جميعا ايها المؤمنون.﴾

ऐ ईमान वालो! तौबा करो। मेरे अल्लाह का मुतालबा है। मैं तो दर्मियान में वास्ता हूँ। अपने अल्लाह की बात पहुँचा रहा हूँ। मैं भी तौबा करता हूँ आपको भी अल्लाह का वास्ता देता हूँ तौबा करो।

हाय हाय उससे वफ़ा करो जो वफ़ाओं का हक़दार है। उसके तरीक़ों पर आओ जिसकी बरकत से आज मुसलमान हो, उसके तरीक़ो पर आओ जिसके तुफ़ैल आज ईदगाह में आए बैठे हो, उसके तरीक़ों पर आओ जिसके तुफ़ैल आज इंसान हो, अगर वह न रोया होता, अगर वह तड़पा न होता, अगर वह मचला न होता

अगर अल्लाह को उसने मना न लिया होता तो आज ज़मीन में इंसान नज़र न आता। आज पाकिस्तान में इंसान नज़र न आता। आज धरती में कोई मुसलमान नज़र न आता या बंदर होता या ख़िंज़ीर होता।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहसान

दुआ दो उस मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यतीम पैदा हुआ, जो मिस्कीन बनकर ज़िन्दा रहा, मिस्कीनी की मौत मर गया।

जिसके लिए ख़ज़ानों के ढेर हो सकते थे। जिसके लिए कैसर व किसरा क्या चीज़ है। जिसके लिए जन्नत को उतारा जा सकता था, जिसके लिए दुनिया क्या चीज़ है? जिसके लिए जन्नतुल फ़िरदौस को ज़मीन पर उतारा जा सकता था। जिसके लिए बुर्राक़ की सवारी उसके दरे दौलत पर बांधी जा सकती थी, जिसके लिए सोने चाँदी के घर खड़े किए जा सकते थे। जो सुबह शाम नहीं सुबह दोपहर शाम हर क़िस्म के आला क़िस्म के खाने खा सकता था, खिला सकता था। ज़र्क बर्क़ लिबास पहन सकता था, पहना सकता था। तख़्ते सुलेमानी का वह सुलेमान से ज़्यादा हक़दार था। ज़ुलकरनैन के लश्करों से ज़्यादा लश्करों का हक़दार था। वह हस्ती जो दुनिया में रहते हुए अल्लाह से सब कुछ मनवा सकती थी। और सब कुछ अल्लाह उसका कर भी देता तो उस नबी रिसालत में कोई कमी न आती और उसकी महबूबियत में कमी न आती, हबीब होने में बाल बराबर फ़र्क़ न पड़ता अगर वह जन्नत ज़मीन पर उतरवाता, सोने चाँदी के महल बनाता, हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के महल होते, फ़ातिमा, ज़ैनब, रुकैय्या, उम्मे

कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुन्न के महल होते, आएशा, जुवेरिया, ख़दीजा, उम्मे सलमा, हफ़सा, मैमूना, ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा, ज़ैनब बिन्ते अबि जहश रज़ियल्लाहु अन्हुन्न इन सबके महल खड़े होते। अली रज़ियल्लाहु अन्हु का महल होता, जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु का महल होता, अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु का महल होता, अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का महल होता, बनू हाशिम के महल होते, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महल होते। ज़र्क़ बर्क़ लिबास होते।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ोहद

सह कुछ अगर वह मांगता, अल्लाह कर देता तो भी अल्लाह के ख़ज़ानों में उसके मक़ाम में, हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की जन्नत की शहज़ादगी व सरदारी के मर्तबे में कमी न होती। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के सिर से सरदारी का ताज न उतारा जाता, वे सब कुछ पा लेते यहाँ भी वहाँ भी लेकिन इसके बावजूद उसने पेट पर पत्थर बांधे, लोगों ने एक बांधा उसने दो बांधे, लोगों ने टाट में टाट के पेवन्द लगाए उसने टाट में चमड़े के पेवन्द लगाए, लागों ने सुबह खाया, शाम खाया, उसने सारी ज़िन्दगी सुबह खाया तो शाम न खाया, शाम खाया तो सुबह न खाया, एक दिन खाया, दो दिन नहीं खाया, तीन तीन दिन गुज़र गए और उसके मुँह में एक लुक़्मा नहीं गया।

हज़रत आएशा की फ़ाक़ाकशी

आपकी महबूब बेटी फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार हुई।

हाल पूछने गए, अन्दर जाने की इजाज़त मांगी मेरी बेटी मैं अन्दर आ जाऊँ, मेरे साथ एक सहाबी भी हैं?

बेटी फ़ातिमा जन्नत की सरदार कहती हैं या रसूलल्लाह मेरे घर में तो इतना भी रूमाल नहीं कि उससे चेहरा छिपा सकूं अगर अजनबी घर में आता है तो पर्दा करने की कोई चीज़ नहीं है।

यह इधर ईदगाह वालों ने मिम्बर एक कपड़ा डाला हुआ है। यह मिम्बर पर कपड़े पर भी कपड़ा डाला हुआ है और दो जहान के सरदार की बेटी के घर में इतना कपड़ा भी नहीं है कि वह सिर छिपा ले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कंधे से चादर उतार कर अन्दर दी। कहा इससे पर्दा कर लो। अब्बा की चादर से बच्ची ने पर्दा किया। अंदर आए, सहाबी भी लेकर बेटी क्या हुआ?

कहा या रसूलल्लाह! पहले भूख थी तो रोटी न मिली अब बीमारी है तो दवा कोई नहीं और रोने लगीं। उससे साबिर बेटी किसी माँ ने जनी नहीं। उससे मुक़द्दस बेटी ज़मीन व आसमान ने देखी नहीं और उससे मुक़द्दस बाप कहाँ से कोई लाएगा और कौन लाएगा और कैसे लाएगा और क्योंकर लाएगा?

बाप बेटी का रोना

मुक़द्दसतरीन बाप मुक़द्दस बेटी के गले लगकर रो रहे हैं। अल्लाह का नबी भी रो पड़ा। ताएफ़ के पत्थर खाकर, ओहद के पत्थर खाकर आँसू नहीं बहा, बेटी के आँसुओं ने पिघला दिया, घुला दिया, रुला दिया। दोनों बाप बेटी मिलकर रो रहे हैं और आप कह रहे हैं मेरी बेटी ग़म न कर ﴿والذی بعثك بالحق ما دمت من

ثلثة ايام ذو اللهؐ तीन गुज़र चुके हैं तेरे बाप ने रोटी का एक लुक़्मा भी नहीं खाया।

दुआएं दो उस कम्बली वाले को, दुआएं दो मुहम्मद अरबी, हाशमी, क़ुरैशी को, दुआएं दो उस मक्की, मदनी, मुहाजिर को, दुआएं दो उस ताहा, यासीन, अबूक़ासिम, फ़ातेह, ख़ातिम, शाहिद, मुबश्शिर, नज़ीर को जो खुद अपनी औलाद को तड़पा गया, नेज़ों पर चढ़ गया और उम्मत के लिए दरवाज़े खुलवा गया और उम्मत का मस्अला हल करवाकर गया और मेरे भाईयो तुम्हें क्या हो गया? किसके तरीक़ों को क़ुर्बान करके ज़िन्दगी गुज़ारते हो जो तुम्हारे लिए क़ुर्बान हो गया। तुम सुबह सुबह उसके तरीक़े क़ुर्बान करके आए बैठे हो। कहाँ जा रहे हो? शेव करने जा रहे हो? क्यों? ईद की नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं।

तुम्हें शर्म नहीं आती नबी की सुन्नत को ज़िब्ह करते हुए?

मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ कि तुम किसकी सुन्नत को ज़िब्ह करके बैठे हो? जो तुम्हारे लिए खुद ज़िब्ह हो गया। उसने क्यों पोशाकें छोड़ दीं? उसने क्यों टाट में चमड़े के पेवन्द लगाए? उसने क्यों खुजूर की शाख़ों के घर में ज़िन्दगी गुज़ार दी? उसके घर में क्यों न बिस्तरों पर बिस्तर बने? उसके घर में क्यों न चिराग़ जले? वह तो जिस दिन दुनिया से जा रहा था और बुढ़ापे में कुछ न कुछ तो आदमी इकठ्ठा कर लेता है। आज उसकी आख़री रात है। कल अल्लाह की मुलाक़ात है और आएशा अम्मा के घर में तेल नहीं था चिराग़ में जलाने के लिए।

जिसके लिए सूरज घर में उतर सकता हो। जिसके लिए जन्नत के घर ज़मीन में बनाए जा सकते हों वह क्यो खुजूर की शाख़ों के घर में जान दे रहा है? एक पुरानी मैली चादर थी जिसमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जान दी। एक पुरानी रज़ाई थी जिसमें अल्लाह का नबी रात को सोता था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुनिया से बेरग़बती

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से एक अन्सारी औरत मिलने के लिए आई। उसने देखा कि पुरानी रज़ाई है मेरे नबी की। औरत ने कहा यह पुरानी है। मैं अभी नई भेजती हूँ। वह घर गई और एक नई रज़ाई लेकर आई। इतने में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए। देखा फूलदार रज़ाई। कहा आएशा! यह कहाँ से आई?

कहा या रसुलल्लाह! अन्सारी औरत आई थी। उसने आपकी पुरानी रज़ाई देखी तो उसने कहा मैं नई भेजती हूँ। यह उसने भेजी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा आएशा! मैं इससे बहुत ज़्यादा ले-सकता हूँ अपने अल्लाह से, जाओ यह उसको वापस कर दो। यह रज़ाई और मुहम्मद एक छत में जमा नहीं हो सकते। वह लाडली थीं। कहने लगीं या रसूलल्लाह यह बड़ी अच्छी लग रही है मुझे, मैं वापस नहीं करूंगी। आपने कहा आएशा! यह छत मुझे और इस रज़ाई को इकठ्ठे नहीं देखेगी। मुझे यहाँ बिठाना है तो रज़ाई को बाहर कर दो। मैं इससे ज़्यादा अल्लाह से ले सकता हूँ लेकिन मैंने ठुकरा दिया। वही पुरानी

रज़ाई ली और वह नई रज़ाई वापस कर दी।

मेरे भाईयो! एक जोड़े में ज़िन्दगी गुज़ारी। नमाज़ का वक़्त होता। कपड़े खुद धोते। सुखाने रखते फिर बैठकर इन्तेज़ार करते। इतने में बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आते, या रसूलल्लाह नमाज़ का वक़्त हो चुका है। आप फ़रमाते मेरे पास तो कोई और कपड़ा नहीं है। मैं कहाँ से नमाज़ पढ़ाऊँ? इन्तेज़ार कराओ मजमे को। मेरे कपड़े सूखेंगे, पहनकर आऊँगा फिर नमाज़ पढ़ाऊँगा। नमाज़ में देर हो जाती कि दूसरा जोड़ा उनके पास कोई नहीं होता था।

काएनात का नबी और टाट की चादर

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में टाट था। उसको रात को दोहरा करतीं। सुबह को फैला देतीं। एक रात को चार तह लगा दीं। दोहरे के बजाए चार तह कर दीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुबह को फ़रमाया हफ़्सा मेरा बिस्तर क्यों बदल दिया? कहा जी बदला तो नहीं वही है, मैंने चार तहें कर दीं। क्यों? कहा ज़रा नरम हो जाएगा। कहा उठो उसे वैसा ही कर दो, आज रात मुझे उठने में तकलीफ़ हुई। उसकी नरमाहट ने मुझे उठने से रोके रखा। मैं अल्लाह से बात करता हूँ। मेरा बिस्तर वैसा बना दो जैसे पहले था।

तुम उसकी सुन्नत की मज़ाक़ उड़ाते हो जो तेईस साल तुम्हारे लिए रोता रहा

मेरे भाईयो! मोहसिन को तो देखा। ये जिन्होंने वोट लिए हैं फिर जो जीत गए उनका शुक्रिया अदा करने आते हैं हाँलाकि उनको कुर्सी चाहिए। उनको टेलीफ़ोन के तार चाहिए। ये अपनी

ग़रज़ में वे अपनी ग़रज़ में लेकिन इफ़्तार पार्टी हो रही है और बुलाकर शुक्रिया अदा किया जा रहा है।

अरे उसका शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते हो जो तुम्हारे लिए तेईस बरस रोता ही गया और इतना रोया कि ख़ुद अल्लाह को कहना पड़ा मेरे नबी इतना तो न रोया कर। वह आपके लिए इतना तड़पा कि ख़ुद भी तड़पा, सारे घर को तड़पा दिया जाओ ताएफ़ की वादी में पूछो, उस पहाड़ से पूछो। यहाँ कैसे पत्थर पड़े थे। इसको ज़रा सोच की आँख से ज़रा सोचो कि जिसके लिए काएनात हाथ बाँधकर खड़ी हुई थी।

पेड़ की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का एक मंज़र

एक जगह सोए हुए हैं। एक पेड़ कोने से दौड़ा हुआ आया और आपके सर पर ऐसे खड़ा हुआ। थोड़ी देर खड़ा हुआ फिर वापस चला गया। जब आपकी आँख खुली तो अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बोले या रसूलल्लाह! वह पेड़ यूँ आया, यूँ खड़ा हुआ, यूँ चला गया। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको एक नज़र देखा फिर इर्शाद फ़रमाया यह मुझसे दूर था। मुझे देख नहीं पा रहा था तो इसने अपने अल्लाह से अर्ज़ किया कि या अल्लाह! तेरे हबीब का दीदार करना चाहता हूँ। मुझे ज़ियारत की इजाज़त चाहिए। तो अल्लाह तआला ने इजाज़त दी। वह मुझे देखने आया था और देखकर वापस चला गया।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

नमाज़ और नौकर

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.
وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

दुनिया का मालदार सबसे बड़ा फ़क़ीर क्यों?

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! दुनिया में सबसे ज़्यादा मुहताज इंसान है। इससे ज़्यादा मुहताज कोई मख़्लूक़ नहीं। और जो जितना ज़्यादा अमीर होता है वह उतना ज़्यादा मुहताज हो जाता है। ग़रीब आदमी तो शीशम के नीचे भी सो जाता है। मालदार हो तो कूलर के बग़ैर नींद नहीं आएगी। एयरकंडीशनर के बग़ैर नींद नहीं आएगी। ग़रीब आदमी रूखी रोटी भी खा लेगा। मालदार को तो आइस क्रीम न मिले तो परेशान बैठा होता है। कोई आदमी दुनिया में ऐसा नहीं जो ख़ुद कफ़ील हो। पैसा कमाने

वाले को लोग कहते हैं कि ख़ुद कफ़ील हो गया।

हाँलाकि जब वह बीमार होता है तो डाक्टर के पास जाता है तो ख़ुद कफ़ील तो नहीं है। घर बनाना हो तो मज़दूर मिस्तरी बुलाता है, ख़ुद कफ़ील नहीं है। ख़ुद कफ़ील उसे कहते हैं जिसको अपनी ज़रूरतों में किसी की ज़रूरत न पड़े। बाक़ी सारी मख़्लूक़ ख़ुद कफ़ील है।

परिन्दे उड़ना ख़ुद सीख लेते हैं, घोंसला बनाना ख़ुद सीख लेते हैं, चिड़िया बच्चे पालना ख़ुद सीख लेती है। साँप रेंगना, बिल बनाना, फुंकारना ख़ुद सीख लेता है। उक़ाब उड़ना, झपटना ख़ुद सीख लेता है। इंसना कभी ख़ुद कफ़ील नहीं बन सकता। जितना दुनिया में कोई ज़्यादा तरक़्क़ी करता है उतना ही उसकी मुहताजी बढ़ती जाती है।

और अल्लाह इस काएनात में, इस जहान में, ख़ुश्की और तरी में, ज़मीन व आसमान में, पूरब व पश्चिम में, उत्तर व दक्षिण में बेजोड़, ग़नी, ग़ैर-मुहताज ज़ात है जो एक लम्हे के लिए भी किसी का मुहताज़ नहीं और इंसान हर लम्हे उसका मुहताज है। जिससे ज़रूरतें पड़ती हैं उसके आगे झुककर चलते हैं। जिससे वास्ता न पड़ता हो उसकी परवाह नहीं करते। इस जहान में सबसे ज़्यादा मैं और आप मुहताज हैं। इस जहान में अल्लाह सबसे ज़्यादा ग़नी है।

फिर मैंने जैसे कहा जो जितना मालदार होगा वह उतना ज़्यादा मुहताज है। जानवरों को कपड़ों की कोई ज़रूरत नहीं होती। हम कपड़ों के बग़ैर नहीं रह सकते, जानवरों को छत नहीं चाहिए। हम छत के बग़ैर नहीं रह सकते। परिन्दों, चरने वालों को खाना बासी, कच्चा पक्का सब हज़म, हम पकाए बग़ैर नहीं खा सकते।

तुम्हारा मालिक तुम्हें बुलाता है और तुम बैठे रहते हो

तो हमारी ज़रूरते सबसे ज़्यादा हैं। अल्लाह सबसे ज़्यादा ग़नी ज़ात है। तो होना तो यह चाहिए था कि हम उससे दोस्ती लगाकर रखते लेकिन उसी से दुश्मनी लिए हुए हैं। उसी को ललकारा हुआ है नाफ़रमानी के साथ।

तो अल्लाह कहता है मेरा बन्दा बड़े बड़े गुनाह करके मुझे ललकारने लगता है। मुवज़्ज़िन कहता है। आओ अल्लाह पुकार रहा है ﴿حی علی الصلوة﴾ "हैय्या अलस्सलाह" सौ में से पाँच भी उठकर नहीं जाते। आपका नौकर कितनी तंख़्वाह लेता है? एक हज़ार रुपए, दो हज़ार रुपए, तीन हज़ार रुपए। इससे ज़्यादा कोई बड़ी मिलों वाले चार हज़ार रुपए देते हैं। इससे ज़्यादा कोई क्या तंख़्वाह देगा।

अगर आपका मुलाज़िम बैठा है। आप कहते हैं ज़रा बात सुनना। वह आपके सामने बैठा ऐसे देखता रहता है। न हाँ न ना। फिर आपने कहा बात सुनना। वह बैठा देखता रहता है। फिर आप तीसरी बार बुलाते हैं कि भाई तुम्हें बुला रहा हूँ, सुनते क्यों नहीं? फिर वह यूँ ऐसे बैठे सुन रहा है। फिर चौथी बार, फिर पाँचवी बार आप उसको बुलाते हैं। तब भी नहीं सुनता। फिर दूसरे दिन आपने बुलाया। वह ऐसे ही बैठा रहा। फिर दूसरी बार बुलाया, ऐसे ही बैठा रहा, फिर सुना नहीं।

अगले दिन फिर ऐसा हुआ। फिर ऐसा हुआ। कोई ऐसा

बर्दाश्त वाला आपको नहीं मिलेगा जो ऐसे नौकर को नौकरी पर रहने दे। दो दिन बाद कहेगा जाओ भाई अपना रास्ता लो। तेरे जैसा घमंडी और गुस्ताख़ मुझे नहीं चाहिए। कितने बरस गुज़र गए? पचास गुज़र गए, साठ गुज़र गए, अस्सी गुज़र गए, चालीस गुज़र गए, पैंतीस गुज़र गए। अल्लाह तआला दिन में पाँच दफ़ा कहता है। आ जाओ, आ जाओ। फिर कहता है ﴿حی علی الصلوٰۃ﴾ आ जाओ नमाज़ की तरफ़।

दिन में पाँच दफ़ा में दस दफ़ा बुलाता है। हर अज़ान में दो बार कहता है ﴿حی علی الصلوٰۃ﴾ आ जाओ नमाज़ के लिए। फिर कहता है आओ नमाज़ के लिए। फिर ज़ोहर, असर, मग़रिब, इशा। बन्दा पिछले तीस बरस से उठकर नहीं गया नमाज़ पढ़ने को तो कभी अल्लाह ने उसको बर्ख़ास्त किया और उसकी आँखें ले लीं? उसकी टांगों से जान निकाल ली? उसके हाथों को मरोड़ दिया? उसकी ज़बान पर ताला लगा दिया? उसके कानों में सीसा डाल दिया? आँखों से अंधा कर दिया, पाँव से अपाहिज कर दिया कि मैं तुझे बुलाता हूँ तू आता नहीं, मैं तुझे पुकारता हूँ तू सुनता नहीं, तू मेरा कैसा नाफ़रमान नौकर है जो मेरी पुकार पर तो उठता नहीं लिहाज़ा इसे निकाल दिया जाए, इसे मरदूद कर दिया जाए।

कितना बड़ा ज़र्फ़ है मेरे अल्लाह का लगातार हमारा इंकार देखकर भी हमें रोटी खिलाता है। पानी भी पिलाता है। नींद भी देता है। कपड़े भी देता है।

मुहब्बत करने वाले भी देता है, छत भी देता है, साया भी देता है, फल भी देता है, फूल भी देता है, सबा भी देता है, बादे नसीम

भी देता है, गर्मी को भी लाता है, सर्दी को भी लाता है, हवाओं को भी चलाता है। सारी नाफ़रमानियाँ देखकर भी कितने बड़े ज़र्फ़ का मालिक है। दुनिया में माँ-बाप जैसा रिश्ता कोई नहीं होता। माँ भी एक दिन में पाँच दफ़ा बुलाए और तू इंकार करे, अगले दिन बुलाए, फिर इंकार करे, अगले दिन बुलाए फिर इंकार, फिर बुलाए, इंकार। हफ़्ते के बाद अख़बार में आ जाएगा कि हमने अपनी जायदाद से आक़ कर दिया। माँ-बाप से कोई लेनदेन नहीं है। आए दिन अख़बार में पढ़ते नहीं हो आक़नामा।

चालीस साल में एक नमाज़ भी नहीं पढ़ी

मुझे एक आदमी मिला। वह मुझसे कहने लगा मैं साल में दो नमाज़ें पढ़ता हूँ। ईदुल फ़ितर और ईदुल अज़्हा। ये दो नमाज़ें पढ़ता हूँ।

मुझे दो आदमी मिले तीस या चालीस साल की उम्र होगी। मुझसे कहने लगे हमने अपनी ज़िन्दगी में एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी। न जुमा न ईद न बक़र ईद, न फ़र्ज़ नमाज़, ज़िन्दगी भर ऐसे ही रहे। वह तो हम गश्त कर रहे थे तो मस्जिद में ले आए तो मैंने बात शुरू की। वह तो पता नहीं क्या एकदम असर हुआ। एकदम खड़े हुए कहने लगे मौलवी साहब आज हम पहली दफ़ा मस्जिद में आए हैं। तो मैं समझा कि यह मस्जिद जिसमें हमारी जमाअत ठहरी है। मैंने कहा कि आप इस मस्जिद में पहली दफ़ा आए हो?

तो कहा नहीं नहीं, वैसे ही मस्जिद में पहली दफ़ा आए हैं।

मैंने कहा आपने कभी नमाज़ नहीं पढ़ी?

अल्लाह को राज़ी करने का ग़म

यह फ़िक्र दिल में पैदा हो जाए कि मुझे अल्लाह को राज़ी करना है। हर हाल में राज़ी करना है। चाहे तन-मन-धन मेरा लुट जाए। तो सिर्फ़ पैसे से ही तो काम नहीं बनते। सारी काएनात जो अल्लाह की पकड़ में है और अल्लाह की ताक़त और क़ब्ज़े में है। हमारे ऊपर हवा का पाँच सौ मील लम्बा हवा का ग़िलाफ़ है। अल्लाह तआला इस हवा को वापस बुला लें, एक सेकेंड में हम मर जाएं अगर अल्लाह हम से ज़मीन की कशिश निकाल लें।

आइन्सटाईन एक साइंसदान गुज़रा है। उसने ज़िन्दगी के आख़िरी दस साल ज़ोर लगाया इस बात की तहक़ीक़ पर कि ज़मीन में कशिश क्यों हैं? कोई तो जवाब होना चाहिए कि क्यों है? ज़मीन अपनी तरफ़ क्यों खींचती है। चीज़ ऊपर फेंकते है और वापस आ जाती है?

हम ज़मीन पर बैठे हैं। ज़मीन पर उछल नहीं रहे तो ज़मीन अपनी तरफ़ क्यों खींच रही है। दस बरस वह मेहनत करता रहा इस बात को मालूम करने की कोशिश में कि क्यों है? वह मालूम न कर सका। फ़िज़िक्स, कैमिस्टरी, बाइलोजी किसी भी क़ानून से वह साबित न कर सका किस वजह इसमें कशिश है। उसने कहा इस पर और तहक़ीक़ न करो। इसका कोई जवाब नहीं है लेकिन हमारे पास एक जवाब मौजूद है। अल्लाह फ़रमाता है—

﴿امن جعل الارض قرارا﴾ मैं हूँ जिसने ज़मीन को क़रार की जगह बना दी।

अल्लाह को राज़ी करने का ग़म

यह फ़िक्र दिल में पैदा हो जाए कि मुझे अल्लाह को राज़ी करना है। हर हाल में राज़ी करना है। चाहे तन-मन-धन मेरा लुट जाए। तो सिर्फ़ पैसे से ही तो काम नहीं बनते। सारी काएनात जो अल्लाह की पकड़ में है और अल्लाह की ताक़त और क़ब्ज़े में है। हमारे ऊपर हवा का पाँच सौ मील लम्बा हवा का ग़िलाफ़ है। अल्लाह तआला इस हवा को वापस बुला लें, एक सेकेंड में हम मर जाएं अगर अल्लाह हम से ज़मीन की कशिश निकाल लें।

आइन्सटाईन एक साइंसदान गुज़रा है। उसने ज़िन्दगी के आख़िरी दस साल ज़ोर लगाया इस बात की तहक़ीक़ पर कि ज़मीन में कशिश क्यों हैं? कोई तो जवाब होना चाहिए कि क्यों है? ज़मीन अपनी तरफ़ क्यों खींचती है। चीज़ ऊपर फेंकते है और वापस आ जाती है?

हम ज़मीन पर बैठे हैं। ज़मीन पर उछल नहीं रहे तो ज़मीन अपनी तरफ़ क्यों खींच रही है। दस बरस वह मेहनत करता रहा इस बात को मालूम करने की कोशिश में कि क्यों है? वह मालूम न कर सका। फ़िजिक्स, कैमिस्टरी, बाइलोजी किसी भी क़ानून से वह साबित न कर सका किस वजह इसमें कशिश है। उसने कहा इस पर और तहक़ीक़ न करो। इसका कोई जवाब नहीं है लेकिन हमारे पास एक जवाब मौजूद है। अल्लाह फ़रमाता है—

﴿امن جعل الارض قرارا﴾ मैं हूँ जिसने ज़मीन को क़रार की जगह बना दी।

ज़मीन अल्लाह की निशानी

अल्लाह ने ही रखी है कशिश। अल्लाह के हुक्म से ज़मीन अपनी तरफ़ खींचती है और मुतवातिर तरीक़े से खींचती है। यूँ नहीं कि कहीं पकड़ा है मगर इतना पकड़ा है कि जम जाएं और न इतना छोड़ा हुआ है कि पाँव उठे तो उठा ही रह जाए। तवाज़ुन के साथ अगर अल्लाह इस कशिश को दस गुना कर देता तो फिर हम को ज़मीन पर चलते हुए यूँ लगता जैसे हमारा पाँव कीचड़ में फंसा है। ऐसे निकालते फिर फंसते फिर यूँ निकालते तो अगर ज़मीन की कशिश दुगनी हो जाती है चौबीस के बजाए अड़तालीस हज़ार मील होती तो ज़मीन की कशिश भी दुगनी हो जाती तो हमारे लिए चलना मुश्किल हो जाता अगर यह ज़मीन चार गुना हो जाती तो फिर क्या होता?

पेड़ अल्लाह का अजूबा

पेड़ों की बढ़त ख़त्म हो जाती। ये ऊपर न चल सकते थे और हम चल न सकते थे। चलते तो ज़मीन हमें ऐसे जकड़ लेती कि चलते तो अगला क़दम चलना मुश्किल होता। अगर छः गुना हो जाती तो क्या होता। जो आज यह छः फ़ुट का इंसान है उसका क़दम सिर्फ़ चूहे के बराबर हो जाता। चार फ़ुट वाला तो च्युंटी बन जाता। कैसे अल्लाह ने अन्दाज़े के साथ यह सिस्टम बनाया है। फिर अल्लाह कहता ऐ ज़मीन मेरी कशिश वापस कर दे तो अब क्या होगा कि यह ज़मीन फ़ौरन ऐक्सीलेटर पर पाँव रखेगी कि अल्लाह ने कशिश को निकालने का हुक्म दे दिया है और यह छः

हज़ार किलोमीटर फ़ी घंटा की रफ़्तार से सूरज की तरफ़ मुड़ना शुरू हो जाएगी।

सूरज अल्लाह की क़ुदरत का शाहकार

सूरज हम से नौ करोड़ तीस लाख मील के फ़ासले पर है। हमारी ज़मीन अभी तो सूरज के चारों तरफ़ घूमती है तो यह जो दिन तीन सौ पैंसठ दिन में चक्कर लगाती है। जो यह साढ़े उन्नीस करोड़ मील के दायरे में घूम रही है और उसकी रफ़्तार छियासठ हज़ार किलोमीटर फ़ी घंटा और इसके घूमने की रफ़्तार है एक हज़ार किलोमीटर फ़ी घंटा। इस दौड़ने में और यूँ घूमने में यह यूँ थरथराती है। कभी यूँ जाती है, कभी यूँ जाती है, कभी दाएं, कभी बाएं। जब सीधे हाथ की तरफ़ मुड़ती है तो पौने तेईस डिग्री का दायरा बनाती है। फिर जैसे जैसे वापस आती है उल्टे हाथ पर तो तेईस डिग्री का दायरा बनाती है। अगर अल्लाह इस की हरकत को ख़त्म कर दे तो फ़ौरन हवा चलना बंद हो जाएगी।

हवा अल्लाह की कारीगरी का नमूना

हवा हर रोज़ चलती है। हवा हर रोज़ हरकत में है। वह ज़्यादा होती है तो हमें महसूस होती है। अगर वह यूँ घूमना, यूँ कपकपाना, नाचना छोड़ दे तो क्या होगा?

हवा थम जाएगी। फिर क्या होगा? यहाँ दस हज़ार लाउड स्पीकर भी लगे हों तो भी मेरी आवाज़ आप नहीं सुन सकेंगे।

दूसरा क्या होगा कि मेरे मुँह से तो कार्बन डाइआक्साइड

निकल रही है वह मेरे चारों तरफ़ घेरा बनाना शुरू कर देगी और मुझे हलाक कर देगी। जैसे रेशम के कीड़े को रेशम हलाक कर देता है। वह अपने चारों तरफ़ घूमता जाता है, घूमता जाता है, घूमता जाता है। जब अन्दर दम घुटता है तो अन्दर मर जाता है।

हर इंसान डाक्टर साहब, इंजीनियर साहब, सरदार साहब, नवाब साहब, जर्नैल साहब, ऐटमी ताक़तें, राकेट की ताक़तें, इंसानी ताक़तें सारी ताक़तों के नमूने अपनी कार्बन डाइआक्साइड में दम घुटकर राख हो जाएंगे। दूसरी तरफ़ क्या होगा यह जो आक्सीजन निकल रही है इन हरे पत्तों से यह पेड़ों के चारों तरफ़ हाला बनाती जाएगी, बनाती जाएगी, बनाती जाएगी और ज़रा सी माचिस दिखाने की ज़रूरत है सारी काएनात फट से उड़ जाएगी। अल्लाह तआला ने आक्सीजन हवा में इक्कीस फ़ीसद रखी हुई है और नाईट्रोजन इक्हत्तर फ़ीसद रखा हुआ है। क्या आपने हवा में कोई गैस सिलेंडर फ़िट देखा है कि उस पर कोई फ़रिश्ता बैठा हुआ हो और वह गैस को हवा में छोड़ रहा हो और आक्सीजन इक्कीस फ़ीसद पर पहुँच जाए तो रोक लेता हो, नाइट्रोजन इक्हत्तर फ़ीसद पर पहुँच जाए तो तो रोकता हो। कहीं तो कोई नज़र आता।

हवा तो ज़मीन पर भाग रही है। उसके ऊपर हवा का ग़िलाफ़ है। छियासठ हज़ार पाँच सौ मील, उसके साथ साथ भाग रहा है। इस पर आक्सीजन को इक्कीस फ़ीसद पर फिक्स कर देना, नाईट्रोजन को इक्हत्तर फ़ीसद पर बाँध देना यह सिर्फ़ वहदहु ला शरीक अल्लाह का काम है।

अगर यह इक्कीस से बयालिस हो जाए तो हमारे पास कोई

इख़्तियार है कि उसे रोक दें। यह सारा निज़ाम इस चीज़ को बता रहा है कि हम अल्लाह के कितने मुहताज हैं।

हमारे माँ-बाप ने हमारा किस क़द्र ग़लत ज़ेहन बनाया कि जो नहीं कमाएगा तो भूखा मर जाएगा। कोई तो कहता बेटा अल्लाह को राज़ी कर लो तेरी दुनिया भी बन जाएगी, आख़िरत भी बन जाएगी। अपने अल्लाह को मना ले तेरा यह जहान भी बन गया तेरा वह जहान भी बन गया।

यह ज़ेहन बनाना ख़त्म कर दिया माँ-बाप ने, कालेज ने, युनिवर्सिटी ने। जिधर देखो इज़्ज़त, दौलत, शोहरत इसके गिर्द ज़मीन की गर्दिश की तरह हम भी चक्की की तरह भाग रहे हैं।

कल ख़ूबसूरती का नमूना थे आज बदसूरती का

अरे भाईयो! मिट जाने वाली इज़्ज़त, दौलत, शोहरत क्या। मिट जाने वाले की क्या शोहरत और गुमनामी क्या, मिट जाने वाले का मालदारी और ग़रीबी क्या?

कुछ दिन बाद तो वजूद ही मिट जाएंगे, क़ब्रों के निशान भी मिट जाएंगे। ये हसीन चमकते चेहरे इनको कीड़े खा लेंगे तो नीचे ख़ौफ़नाक खोपड़ियाँ निकल आएंगी, चमकती आँखों की जगह बदसूरत सूराख़ और बोलती बुलबुल की ज़बान की जगह ख़ौफ़नाक क़िस्म के जबड़े, वीरान क़िस्म के दाँत और यह हसीन सरापा जिस्म सिवाए ढांचे के कुछ न होगा। ज़मीन की तपिश से कीड़े भी मर जाएंगे, फिर ज़मीन और तपेगी तो हड्डियाँ टूट जाएंगी, फिर और तपेगी तो वे चूरा बन जाएंगी। फिर ज़मीन को करवट लेने का ख़्याल आएगा तो वह करवट बदलेगी तो वह नीचे का

ऊपर कर देगी और ऊपर का नीचे कर देगी। मेरी और आपकी हड्डियों को चूरा ज़मीन की सतह पर आएगा फिर हवाएं चलेंगी, मस्त हवाएं चलेंगी और फिर कुछ हिस्सा यूँ उड़ा देंगी, कुछ हिस्सा यूँ उड़ा देंगी, कुछ हिस्सा पूरब को उड़ेगा कुछ हिस्सा पश्चिम को उड़ेगा, कुछ हिस्सा उत्तर को उड़ेगा कुछ दक्षिण को, कुछ ऊपर को कुछ नीचे को, कुछ दाएं को कुछ बाएं को। फिर वह चूरा हवाओं में बिखरकर यूँ बेनिशान हो जाएंगे जैसे कभी बेनिशान थे। यूँ मिट जाएंगे जैसे कभी आए न थे। ऐसा हो जाएगा कि जिन माँओं ने जना वे माँऐं भी भूल जाएंगी। जिस बाप ने गोद में लेकर खिलाया, सारा सारा दिन सारी सारी रात, वह फिरा अपने बच्चों को रिज़्क़ देने के लिए, खिलाने के लिए, पिलाने के लिए, वे बच्चे भूल जाएंगे, हमारा कोइ बाप था जो रात को दिन को थकता था रोटी खिलाने को। कोई माँ थी जो हमारे पोतड़े धोती थी, हमारा पेशाब धोती थी। हमारे लिए रातों को जागती थी। सगी औलादें ही भूल जाएंगी तो पराई क्या याद रखेंगी।

जिस अल्लाह को ज़वाल नहीं उससे दिल लगाओ

यह मिट जाने वाला फ़ानी, टूट जाने वाला, फ़ना हो जाने वाला जहाँ है। जहाँ पर हर दम बदलाव है। एक अल्लाह है जिसको बाक़ी रहना है बाक़ी सब फ़ना की ज़द में हैं। एक अल्लाह है जो मौत से पाक है बाक़ी सबको उस वादी में गिरना है, इस घाट में उतरना है। एक अल्ला है जो हर ज़ोर से पाक है बाक़ी हर ताक़त ज़ोर से बदल जाती है। एक अल्लाह है जो हर हाल से पाक है बाक़ी हर इंसान को अलग अलग हालात से

गुज़रना पड़ता है। एक अल्लाह है जो उतरने से पाक है, हर इब्तिदा और इन्तिहा से पाक है। बाक़ी हर इंसान कहीं से शुरू होता है कहीं पर मिट जाता है। कभी चढ़ना है कभी उतरना है, कभी जवानी है कभी बुढ़ापा है। कभी सेहत है कभी मर्ज़ है। कभी मौत है कभी मौत के बाद उठना है, कभी क़ब्र का कीड़ा है।

अल्लाह से बग़ावत करते हुए शर्म नहीं आती

मेरे भाईयो! हम सौ फ़ीसद अल्लाह के मुहताज हैं। फिर अल्लाह से बग़ावत कोई अच्छी बात तो नहीं। अल्लाह ही से बाग़ी हो गए। झूठ न बोलें तो कहते हैं तिजारत नहीं चलती। नाप-तोल में कमी न करें तो नफ़ा नहीं होता। ब्याज पर काम न करें तो गुज़ारा नहीं होता। गाना न सुनें तो गुज़ारा नहीं होता। गाली न दें तो कोई नौकर हमारी बात नहीं मानता।

कितने उज़्र हमने घढ़े हुए हैं। ये सिर्फ़ गालियों से सीधे होते हैं। मैं कहता हूँ सात ज़मीन व आसमान को आग लगा दो यह थोड़ा नुक़सान है। किसी मुसलमान को माँ-बहन की गाली देना इससे बड़ा नुक़सान है। ज़मीन व आसमान तो चलो छोटी चीज़ें हैं बैतुल्लाह को तोड़ दो, बैतुल्लाह को चूरा चूरा बना दो, उसके पत्थरों को कूट कूटकर बजरी बना दो, यह छोटा गुनाह है मगर किसी मुसलमान को माँ-बहन की गाली देना इससे बड़ा गुनाह है।

सोचो तो सही किसको नाराज़ कर रहे हो?

कितनी आसानी से अल्लाह का हुक्म तोड़ देते हो। कोई

कितना ही बड़ा नुक़सान कर दे तो नुक़सान की भरपाई का कोई और सबब तलाश करो। उसको माँ-बहन की गाली न दो। हाँ गाली देने की इजाज़त है जब अगला गाली दे तो। कोई मुझे माँ की गाली दे तो मुझे इजाज़त है कि मैं उसको एक बार माँ की गाली दूँ अगर मैंने दो दफ़ा दी तो मैं ख़ुद ज़ालिम हो जाऊँगा। बदला लेने की इजाज़त है मगर माफ़ करने की फ़ज़ीलत है। माफ़ करने की फ़ज़ीलत है। माफ़ कर दो, बदला न लो क्योंकि बदला लेते हुए आदमी हमेशा ज़ालिम हो जाता है। वह हद से पार हो जाता है।

ज़मीन अल्लाह की निशानी

अब अगर ज़मीन की कशिश को अल्लाह वापस ले ले तो क्या होगा, तो क्या होगा?

यह ज़मीन छः हज़ार किलोमीटर की रफ़्तार से भागना शुरू करेगी, सूरज की तरफ़ चलना शुरू करेगी तो नौ करोड़ तीस लाख मील का फ़ासला और छः हज़ार किलोमीटर फ़ी घंटा की रफ़्तार तो हफ़्तों में ज़मीन सूरज की आग में जा गिरेगी और सूरज की चारों तरफ़ जो शोले हैं तो वे एक लाख किलोमीटर के तो शोले हैं।

सन् 1944 ई० मे सूरज का एक शोला निकला और उसने कमान की शक्ल बनाई और वह सूरज की दूसरी तरफ़ पर उतर गया तो उसको नीचे ज़मीन पर बैठने वालों ने नापा। नापने वालों ने कहा कि उस आग के शोले में कितनी ताक़त है? तो नीचे बैठकर मशीनों से देखा कि अगर इस शोले की ताक़त दुनिया वाले क़ाबू कर लें तो छः महाद्वीपों के लोगों को दस करोड़ साल

के लिए बिजली काफ़ी हो जाए। कोई पावर प्लांट नहीं लगाना पड़ेगा। यह ऐसी आग है।

तो फिर क्या होगा यह ज़मीन तिनके की तरह जलकर राख हो जाएगी। तो मैं तो सिर्फ़ ज़मीन का बता रहा हूँ। यह ज़मीन कितना बड़ा तोहफ़ा है हमारे लिए।

समुंद्र अल्लाह की निशानी

अल्लाह कहता है कि कभी ज़मीन पर चलकर तो देखो। मैं नज़र आऊँगा। इसके ज़र्रे ज़र्रे में तुम्हारा रब नज़र आएगा। यह अल्लाह ने क्या शाहकार बनाया है। जिसके ऊपर ज़िन्दगी का गुज़ारना तुम्हारे लिए आसान कर दिया। दिन रात का इसमें निज़ाम चलाया, हवाओं का निज़ाम चलाया। ऊपर हवा का ग़िलाफ़ ठहराया और ऊपर सूरज को हमसे मुनासिब फ़ासले पर रखा ताकि हमारी फ़सलें पकें। चाँद को एक मुनासिब फ़ासला दिया ताकि हमारे फल मीठे हो जाएं। इसकी किरणों से इसकी चाँदनी से फल मीठे होते हैं। इसकी चाँदनी से समुंद्रों में लहरे उठती हैं। वे लहरे इसमें उठने वाली किसी भी गंदगी को ख़त्म कर देती हैं। समुंद्र का पानी एक मिनट में बुख़ारात बनकर हवा में उड़ता है और ऊपर जाकर छतरी बनाता है फिर रात की ठंडक आए तो यह गर्माइश का काम देता है। दिन की धूप आए तो यह ठंडक का काम देता है।

क्या काएनात अपने आप बन गई?

इस पूरी ज़मीन को अल्लाह ने बुख़ारात के ज़रिए ढांपा हुआ

है फिर इस पानी के ज़रिए दोबारा बारिश बरसाता है।

﴿انا صببنا الماء صبا﴾ फिर उसने बारिश बरसाई, ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ आगे वह इससे अनाज निकालता है,

وانبتنا فيها حبا وعنبا وقضبا وزيتونا ونخلا
وحدائق غلبا وفاكهة وابا متاع لكم ولا نعامكم

ऊपर जाकर उसे ठंडा कर देता है। उसे बादल की शकल देता है। एक काला बादल तीन टन पानी लेकर चल रहा होता है। यूनान के फ़लासफ़रों ने नज़रिया पेश किया कि यह काएनात अब्दी है। हमेशा से है, हमेशा से चली आ रही है। यहाँ से दहरियत (नास्तिकता) की शुरूआत हुई। तो दहरियत का मतलब क्या है कि इंसान सिर्फ़ पैसे का पुजारी नहीं बल्कि दहरियत के पीछे यह नज़रिया है कि यह काएनात एक माद्दा है जो शुरू से चला आ रहा है और हमेशा रहेगा और यह इत्तेफ़ाक़ से वजूद में आ गया। यह आप ही आप वजूद में आ गया। इसका बनाने वाला कोई नहीं। तो उन्नीसवीं सदी में इस नज़रिए को बड़ा ज़ोर मिला, बड़ा उरूज मिला कि दुनिया अपने आप ही वजूद में आ गई।

अंग्रेज़ अपने आपको बंदर की औलाद समझते हैं शायद

लंदन में हमारी जमाअत गई। जमाअत वापस आ गई। मैं बीमार हो गया। मुझे वहाँ रहना पड़ा तो उन्होंने मुझे वहाँ बहुत सी चीज़ें दिखायीं। वहाँ डारविन की थ्योरी पर एक बहुत बड़ा म्युज़ियम है। मुझे वहाँ ले गए तो वहाँ एक लम्बी दीवार है।

उसे तस्वीरों से बनाया था कि इंसान कहाँ से शुरू हुआ था। फिर वह चलते चलते मानस बना, फिर बंदर बना, फिर दुम छोटी हुई, फिर दुम ग़ायब हो गई। फिर बाल ग़ायब हुए फिर वहाँ जाकर यह इंसान बना। लिहाज़ा इस काएनात का कोई बनाने वाला पैदा करने वाला नहीं है।

काएनात का वजूद साइंसदानों की नज़र में

इस जहान का ख़ालिक़ नहीं है। यह इत्तेफ़ाक़ से वजूद में आ गया लेकिन जब आज की साइंस ने तरक़्क़ी की तो ख़ुद साइंस पुकार उठी कि इतना ख़ूबसूरत निज़ाम इत्तेफ़ाक़ से वजूद में नहीं आ सकता। कितने फ़ीसद मुमकिन है कि यह इत्तेफ़ाक से वजूद में आ जाए। मुमकिनात की हद जब दशमलव के बाद ज़ीरो लगाओ। ज़ीरो दशमलव यह ज़ीरो तो एक इम्किानी चीज़ है। जब यह ज़ीरो पाँच तक पहुँच जाए तो इसका मतलब है कि यह नामुमकिन है। दशमलव के बाद अगर एक सौ तेईस ज़ीरो लगाए जाएं और उसके बाद एक लगाया जाए तो तब यह इम्किानात के हिसाब में आता है कि एक दशमलव एक सौ तेईस ज़ीरो के बाद तो यह मुमकिन है कि काएनात इस हिसाब से वजूद में आई हो। तो साइंस कहती है कि नामुमकिन है कि इतना बड़ा निज़ाम इत्तेफ़ाक़ से वजूद में आ गया हो। कोई न कोई तो इसका पैदा करने वाला ज़रूर है। सन् 1926 ई० में अमरीका में एक साइंसदान ने देखा कि यह काएनात फैल रही है। अपने मर्कज़ से दूर हो रही है। बड़ी तेज़ रफ़्तार जा रही है। जब इस नज़रिये पर ग़ौर किया गया तो यह बात साबित हुई कि यह चल रही है।

एक ज़माना था तो यह इकठ्ठी थी, आपस में मिली हुई थी, आपस में जमा थी और फिर आपस में कोई धमाका हुआ और फिर यह फैलनी शुरू हो गई और इस पर सौ फ़ीसद इत्तेफ़ाक़ हो गया। धमाका कोई कर सकता है, अपने आप नहीं हो सकता। लिहाज़ा इधर यह भी मानने पर मजबूर हो गया कोई बनाने वाला ज़रूर है।

तारिक़ जमील साहब से यहूदी का बिलवास्ता सवाल

हम साहिवाल में थे। एक बच्चा आ गया। सिर पर हैडफ़ोन लगा हुआ था। कहा जी यह मेरे कमप्युटर से जुड़ा हुआ है। इस वक़्त सात सौ लड़के मेरी बात सुनेंगे जो मैं आपसे करूंगा और आप मुझे जवाब देंगे। इस वक़्त एक यहूदी है जो हम से यह सवाल कर रहा है कि यह जो आज साइंस ने साबित किया कि दुनिया एक धमाके से बनी और वजूद में आई। इसकी तुम्हारे मज़हब में कोई दलील है? अगर तुम मुझे दलील दे दो तो मैं मुसलमान हो जाऊँ। हम मस्जिद में बैठे थे। मैंने कहा देखो क़ुरआन साइंस की ताईद के लिए नहीं आया, हिदायत के लिए आया है। कल को साइंस का नज़रिया ग़लत हो जाए तो क्या हमारा क़ुरआन ग़लत हो जाएगा? साइंस के नज़रिए तो बदलते रहते हैं।

﴿وليطمئن قلبي﴾ यह इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा मुझे पता तो है कि तू मुर्दों को ज़िन्दा करेगा मगर ऐसे ही ज़रा देखना चाहता हूँ। तो यह कोई दलील नहीं है कि कोई इस दलील को समझे। मैं यह कोई दलील नहीं दे रहा हूँ।

तो उसने कहा कि कोई ऐसी आयत है कि जिससे यह पता चलता हो कि धमाके से काएनात बनी हो तो एकदम मेरी आयत ज़बान पर यह आयत आ गई–

اولم یرا الذین کفروا ان السموات والارض کانتا رتقا
ففتقنا هما وجعلنا من الماء کل شیء حی افلا یومنون.

कि ये इंकार करने वाले और न मानने वाले देखते नहीं कि ज़मीन व आसमान एक माद्दा था, मिला हुआ फिर हमने उसको फाड़ दिया।

तो मैंने कहा इस आयत से इशारा होता है। यह आयत की तफ़सील नहीं, यह इसका तर्जुमा नहीं, इसकी ताबीर नहीं। पर यह आयत इस तरफ़ इशारा करती है। तो शाम को वह बच्चा मेरे पास आया कि जी वह यहूदी मुसलमान हो गया।

काएनात का ख़ालिक़ कौन?

तो मेरे भाईयो! इस काएनात का एक ख़ालिक़ है, मालिक है, बड़ा ज़बर्दस्त ख़ालिक़ है–

﴿والارض فرشناها فنعم الماهدون فررنا فنعمل القادرون.﴾

ऐसे दावे अल्लाह ही कर सकता है। कोई मेरे जैसा फ़र्श बिछाने वाला है? कोई मेरे जैसे निज़ाम बनाने वाला है? कोई तुम्हारे रब के अलावा है जो यह सब करके तुम्हें दिखा दे? तो मेरे भाईयो! अल्लाह हमारा ख़ालिक़, हमारा मालिक, हमारा राज़िक़, हमारा कफ़ील, हमारा वकील, हमारा रक़ीब, हमारा सब कुछ है तो लिहाज़ा भाईयो अल्लाह से जोड़ बिठाओ, अल्लाह को साथी

बनाओ। इस काएनात के फ़ैसले अल्लाह करता है। इस काएनात में इज़्ज़त व ज़िल्लत के निज़ाम आसमान से उतरते हैं।

﴿تعز من تشاء وتذل من تشاء﴾

तख़्तों पर बिठाना, तख़्तों से उतारना यह फ़ैसला आसमानों पर होता है।

﴿تؤتي الملك من تشاء تنزع الملك ممن تشآء﴾

इसलिए मैं कहता हूँ कि हुकूमत को गालियाँ न दो। उल्टा अपना जुर्म है और गाली देना तो वैसे ही नाजाएज़ है चाहे कोई कितना नाफ़रमान हो।

किसी को समझाए बग़ैर, बताए बग़ैर उसके लिए बद्दुआएं करना और उनको गालियाँ देना और उनकी बुराई करना यह अपनी आख़िरत को ख़राब करना है। फ़ैसला आसमान से आते हैं। जब अल्लाह किसी को तख़्त पर बिठाता है तो ज़मीन में उसके हुक्म के मुताबिक़ निज़ाम चलता है, जब किसी को उतारता है तो नीचे से उसके मुताबिक़ निज़ाम चलता है। वह जब राज़ी होता है तो उसका और निज़ाम होता है, नाराज़ होता है तो उसका और निज़ाम होता है।

हम अल्लाह को राज़ी कर लें तो इन हालात के बनने बिगड़ने में न किसी ऐटमी ताक़त का ज़ोर है न किसी माद्दी ताक़त का ज़ोर है। फ़ैसला तो आसमान से आता है। और क्या काएनात इसको रोक लेगी? फ़ैसले तो आसमान वाला करता है।

अल्लाह ने फ़ैसला किया कि मुझे फ़िरऔन की छुरी से मूसा को बचाना है। अल्लाह ने फ़ैसला किया कि मुझे ख़लील की छुरी से इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचाना है। एक छुरी दुश्मन के हाथ

में है। एक छुरी दोस्त के हाथ में है। एक छुरी फ़िरऔन के पास एक इब्राहीम के पास है।

हर मुसीबत उसके हुक्म से हटती है (मिसालें)

वह महबूबतरीन है, वह मुरदूदतरीन है लेकिन ऊपर से फ़ैसला आया कि मुझे मूसा को कटने से बचाना है, मुझे इस्माईल को कटने से बचाना है। अल्लाह ने दोनों को बचाकर दिखाया। न ख़लील की छुरी ज़बीह (ज़बीहुल्लाह) पर चल सकी न फ़िरऔन की मूसा पर चल सकी। मूसा अलैहिस्सलाम तो गोद में ही नहीं आए बल्कि अल्लाह तआला ने उठाकर गोद में बिठा दिया। ऐसा पर्दा डाल दिया। और इस्माईल अलैहिस्सलाम पर सीधी छुरी चल रही है। और यहाँ कोई लोहे का टुकड़ा नहीं आया और छुरी कोई नरम नहीं हुई। छुरी लोहा गर्दन नरम लेकिन अल्लाह ने छुरी से काटने की ताक़त को वापस लेकर सारी दुनिया को बता दिया कि जो अल्लाह चाहता है वह कर देता है। जो नहीं चाहता वह नहीं होता। सारी ताक़तों का मालिक सारी काएनात का मालिक तो वह है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह मुर्दे को कैसे ज़िन्दा करेगा?

तो कहा तुझे यक़ीन नहीं।

कहा यक़ीन तो है मगर, वैसे ही देखना चाहता हूँ।

तो कहा ﴾فخذ اربعة من الطير﴿ चार परिन्दे लो ﴾فصرهن اليه﴿ उन्हें मानूस करो (हिलाओ)। फिर उन्हें ज़िब्ह करो, फिर उन्हें क़ीमा क़ीमा करो, ﴾ثم اجعل على كل جبل منهم جزء﴿ फिर चार पहाड़ों पर

उनकी क़ीमा क़ीमा की हुई बोटियाँ रख दो, ﴿ثم ادعوهن﴾ फिर उन्हें बुलाओ।

﴿يأتينك سعيا﴾ फिर देखना वे तेरे पास कैसे आएंगे, चलकर आएंगे, उड़कर नहीं आएंगे कि कहीं तुझे देखने में धोका न हो जाए और तू कहे या अल्लाह मुझे तो पता ही नहीं लगा कि कैसे ज़िन्दा हो गए। तू देखेगा कि वे तेरी तरफ़ चलकर आएंगे। अपने रब की क़ुदरत को तू देखेगा कि वे तेरी तरफ़ आएंगे चलते हुए।

यह एक क़ौल है कोई पक्की बात नहीं है चार परिन्दे थे। कहते हैं वे मोर था, उक़ाब था, कव्वा और मुर्ग़ था। कोई भी थे मगर चार अदद लिखा है। फिर वे परिन्दे लिए और फिर उन्हें मानूस किया। फिर उन्हें ज़िब्ह किया। उनकी सिरियाँ अपने पास रख लीं और उनको क़ीमा क़ीमा करके चार पहाड़ों पर रखा।

फिर यूँ मोर की सिरी को उठाया फिर कहा मोर आ जाए। फिर एक पहाड़ से उसका क़ीमा निकला, दूसरे से, तीसरे से, चौथे से चारों जगहों से उसकी बोटियाँ निकलकर बाहर आयीं और फिर बोटियाँ उड़ती हुई आपस में मिलीं, वे जो पर उन्होंने फाड़कर अलग किए थे वे उड़कर आए और आपस में आकर यूँ मिलना शुरू हुए, पर बने और मोर का सारा सामने वजूद बन गया। अब मोर बजाए उड़ने के पहाड़ से उतरकर यूँ आ रहा है, यूँ आ रहा है। इब्राहीम मुझे अच्छी तरह देख लो मैं उड़कर नहीं आ रहा, चलकर आ रहा हूँ।

﴿يأتينك سعيا واعلم ان الله عزيز حكيم﴾

जान लो कि तेरे रब जैसा न काएनात में कोई इज़्ज़त वाला है और न कोई हिकमत वाला है। जब वह क़रीब आया तो इब्राहीम

अलैहिस्सलाम ने कव्वे की सिरी आगे कर दी तो मोर बग़ैर सिर के खड़ा था। तो बजाए मोर के कव्वे की सिरी दी तो मोर ने वह सिरी दूर कर दी, कबूतर की दी तो दूर कर दी, उक़ाब की दी तो दूर कर दी, मोर की दी तो वह सिरी ठक करके लगा ली और ठक करके यूँ लगाया और ज़िन्दा हो गया पूरा। आवाज़ आई इब्राहीम! पता चल गया हमारी क़ुदरत का?

तो भाईयो! हमारा रब बड़ी क़ुदरतों वाला है। उसको राज़ी कर लो। वह आपके सारे काम बना देगा और उसको राज़ी करने का रास्ता हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी है।

○ ○ ○

क़यामत की निशानियाँ

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

ज़िन्दगी गुज़ारने के रास्ते

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला ने दुनिया में दो रास्ते बताए हैं, दो राहें बताई हैं। ज़िन्दगियों को गुज़ारने के दो रास्ते हैं, दो तरीक़े हैं। दो तरह की मौत है, दो तरह के अंजाम हैं।

कुछ लोग वे हैं जो अपनी जानों को बेचते हैं और अल्लाह की रज़ा को ख़रीदते हैं। कुछ लोग वे हैं जो अपनी जानों का सौदा करते हैं और अल्लाह की नाराज़गी को ख़रीदते हैं। ﴿كل الناس يغدو فبايع نفسه﴾ बाज़ार गर्म है, ख़रीदारी उरूज पर है, लेनदेन चल रहा है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आमाल को भी

एक मंडी के साथ मिसाल दी है, बज़ार से मिसाल दी है कि दीन का बाज़ार भी सरगर्म है और हर इंसान इसमें ख़रीदने और बेचने के लिए उतर रहा है। कुछ लोग वे हैं जो अपनी जान को बेचते हैं और आज़ादी हासिल करते हैं। कुछ वे हैं जो अपनी जान बेचते है और हलाकतें ख़रीदते हैं ﴿كل الناس يغدوا﴾ सुबह सुबह यह दौड़ लगती है और हर इंसान बाज़ार में उतरता है ﴿بائع النفس﴾ अपनी जान को बेचता है ﴿فمعتقها﴾ कुछ आज़ादी ख़रीदते हैं ﴿او موبقها﴾ कुछ हलाकतें ख़रीदते हैं और दो ज़िन्दगियों में एक वह है जिसे अल्लाह ने पसन्द फ़रमाया है और ﴿ان الدين عند الله الاسلام﴾ के साथ अल्लाह ने उसको सजाया है फिर हम से मुतालबा किया है ﴿ادخلوا فى السلم كافة﴾ मेरे नज़दीक ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा जो पसन्दीदा है वह इस्लाम है ﴿ان الدين عند الله السلام﴾ सिर्फ़ इस्लाम। क्या इसके अलावा कोई और तरीक़ा चल सकता है?

﴿ومن يبتغ غير الاسلام دينا فلن يقبل منه﴾ इस्लाम को छोड़कर जिस तरीक़े को भी अपनाया जाए वह अल्लाह के दरबार में मरदूद हो जाएगा। इसमें फिर अल्लाह तआला का मुतालबा है, ﴿ادخلوا فى السلم كافة﴾ पूरे पूरे आओ। हमारी तुम्हारी तरह नहीं कि हमारा एक पाँव अन्दर है एक बाहर है। हम कुछ अल्लाह की मानते हैं कुछ अपनी मानते हैं, कुछ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलते हैं कुछ अपने तरीक़े पर चलते हैं।

शैतानी रास्ता

दूसरा रास्ता यह है जिसको अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ﴿لا تتبعوا خطوات الشيطان﴾ शैतान के पीछे न चलना।

﴿انا هديناه السبيل﴾ रास्ते दो हैं। ﴿اما شاكرا﴾ शुक्रगुज़ारी वाला इस्लाम का रास्ता, ﴿واما كفورا﴾ नाशुक्री वाला शैतान का रास्ता, ﴿وهديناه نجدين﴾ हमने अंजाम भी दो बताए हैं। रास्ते भी दो बताए हैं। ﴿فالهمها فجورها تقوىها﴾ तुम्हारे अन्दर हमने बुराई की ताक़त भी रखी है और अच्छाई की ताक़त भी रखी है।

नेक शख़्स की मौत पर ज़मीन का ग़मगीन होना

जैसी ज़िन्दगी गुज़री है वैसी ही मौत आती है।

﴿ان الارض تبكى على الانسان وتبكى للانسان﴾

कुछ लोग वे हैं जिनकी मौत पर ज़मीन इसलिए रोती है कि या अल्लाह! यह क्यों मर गया, कुछ ऐसे होते हैं जिनके ज़िन्दा रहने पर रोती है कि या अल्लाह! यह कब मरेंगे? ﴿ان الارض تبكى على الانسان﴾ या अल्लाह यह क्यों मर गए? या अल्लाह ये क्यों मर गए? इनको तो नहीं मरना था। इनकी तो नमाज़ें, इनका तो ज़िक्र, इनकी तो तिलावत, इनकी तहज्जुद, इनका अल्लाह से डरना, इनका अल्लाह की राह में ख़र्च करना यह सब कुछ मेरे ऊपर एक बाग़ था, एक चमन था। आज इसके मरने से वह चमन उजड़ गया।

कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी वजह से ज़मीन रोती है ﴿تبكى للانسان﴾ या अल्लाह यह ज़ालिम कब मरेगा, इसके ज़िना ने मुझे बर्बाद कर दिया, इसकी चोरियों ने मुझे हलाक कर दिया, इसके डाके डालने की आदत ने मुझे बर्बाद कर दिया, इसके झूठ ने मेरे कलेजे में सुराख़ कर दिए, माँ-बाप की नाफ़रमानियों ने मुझे

जलाकर रख दिया। गाने बजाने की महफ़िलों, मौसीक़ी की तानों ने मुझे वीरान कर दिया। या अल्लाह! यह कब मरेगा, कब यह बोझ मेरे सिर से हटेगा और यह ज़मीन के नीचे जाएगा तो मुझे राहत होगी।

तो मेरे भाईयो! कुछ ऐसे होते हैं जो ज़मीन के कलेजे को जलाकर रख देते हैं और उसकी रग रग में दर्द उतार देते हैं। अपनी नाफ़रमानियों से, चोरियों से, डाकों से, ज़िना से, क़त्ल से, तअल्लुक़ात तोड़ने से, कंजूसी से, घंमड से, अपने में अपने को अच्छा समझने से, दिखावे से, गाने बजाने से, जितने भी बड़े गुनाह हैं रिश्वत से, ज़ुल्म से, सितम से कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़मीन की रग रग को जला देते हैं।

गुनाहों से बचने पर अल्लाह की ख़ुशी

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ज़मीन की रग रग में ठंडक भर देते हैं और राहत भर देते हैं। वे जिधर से गुज़रते हैं, जहाँ पाँव रखते हैं ज़मीन ठंडी हो जाती है। जो हवा उनसे टकराती है वह नसीम बन जाती है। जहाँ सज्दे में सिर रखते हैं तहतुस्सरा तक ज़मीन का कलेजा बर्फ़ बन जाता है। जहाँ बैठकर तिलावत करते हैं फ़िज़ा मुअत्तर हो जाती है, जब नज़र झुकाकर बाज़ार से गुज़रते हैं तो बाज़ार की एक एक चीज़ उनको नज़रें उठा उठाकर देखती हैं कि यह कौन हया वाला गुज़र रहा है।

बाज़ार तो बेहयाओं से भरा हुआ है, बाज़ार तो आवारा नज़रों से भरा हुआ है। यह कौन है जो नज़रें झुका झुकाकर चल रहा है। ज़मीन उसके क़दम चूमती है, हवाएं उसका बोसा लेती हैं और

आसमान के फ़रिश्ते भी उसको देखकर ख़ुश होते हैं और अल्लाह भी उस पर नाज़ करते हैं।

इस नंगेपन के दौर में किसने इस नौजवान की नज़रों का पर्दा झुका दिया। यह क्यों नज़रें झुकाए चल रहा है?

يا ابن آدم جعلت لك عينين وجعلت لهما الغطاء فانظر بعينيكما
احللته لك فان النظر كما حرمت عليك فالق عليها الغطاء.

मेरे बन्दे मैंने तुझे दो आँखे दीं। उस पर दो पर्दे लगाए। इन आँखों से देख जो तेरे लिए हलाल है और जब तुझे हराम नज़र आने लगे तो यह पर्दा गिरा लिया कर। यह पर्दा मैंने इसलिए लगाया है कि इससे हराम न देखा कर। इससे ग़लत न देखा कर तो ऐसे लोग बाज़ारों से गुज़र जाएं, गलियों से गुज़र जाएं तो ये गलियाँ मुअत्तर हो जाती हैं, ये बाज़ार रौशन हो जाते हैं, चमन से गुज़र जाएं तो चमन का हुस्न दोगुना हो जाता है। ज़मीन व आसमान पर उनके चर्चे होते हैं।

कहाँ गई हया की चादर

मेरे भाईयो! अब तो चिराग़ रुख़े ज़ेबा से भी ये लोग नज़र नहीं आते। दुनिया उजड़ गई, इंसान मिट गए, औरतें मर गयीं, मादा रह गयीं, कुछ नर हैं कुछ मादा हैं, औरतें चली गयीं। ये मर्द उठ गए, औरतें ज़मीन के नीचे सो गयीं। ये मर्द मिट्टी की चादर ओढ़कर सो गए। जिनकी रातों का रोना-धोना अर्श को हिलाता था। वे औरतें जिनकी हया फ़रिश्तों को भी शर्मा देती थी। उनसे जहान ख़ाली हो गया। कोई करोड़ों में एक हो तो शायद हो। होना भी चाहिए वरना क़यामत ही आ जाती। वरना तो भाई

आज़ नर हैं मादा हैं जिन्हें शहवतों के सिवा लज़्ज़तों के सिवा नफ़्स की ग़ुलामी के अलावा जिन्हें कुछ भी नहीं आता। इस सारी ज़िन्दगी के लिए अल्लाह तआला ने एक फ़ैसले का दिन रखा है।

﴿يوم ترجف الراجفة﴾ एक ज़लज़ला ﴿تتبعها الرادفة﴾ ज़लज़ले के पीछे ज़लज़ला, ﴿قلوب يومئذ واجفة﴾ दिल धड़कते हुए, डरे हुए, परेशान ﴿ابصارها خاشعة﴾ आँखें ज़लील व पस्त।

क्या हुआ? यह आज क्या हुआ? वह दिन आ गया, वह फ़ैसले का दिन आ गया जिसको अल्लाह तुम्हें बताता रहा, तुम्हें डराता रहा, अरे संभलकर चल, संभल कर बोल, संभल कर तोल, संभल कर देख।

तेरा रब न सोता है न ऊँघता है न खाता है न ग़ाफ़िल है, न जाहिल है, न कमज़ोर है, न आजिज़ है, न ज़ईफ़ है न अदम से वजूद में आया, न उसे किसी ने बनाया न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ न उसने किसी का मुल्क लिया। जो साझेदारी से पाक है, जो कमज़ोरी और ज़िल्लत से पाक है। पहले भी आज भी, कल भी, क़यामत तक अल्लाह, हमेशा अल्लाह, पूरब का अल्लाह, पश्चिम का अल्लाह, उत्तर दक्षिण, ऊपर नीचे, सितारे कहकशां, सूरज व चाँद, दिन व रात, सुबहें व शामें, जंगल, दरिया, पहाड़, सब काएनात का तन्हे तन्हा वह्दहू लाशरीक ख़ालिक़।

जिसने सब कुछ बनाया उसे किसी ने नहीं बनाया, जो सबको मौत देगा कोई उसको मार नहीं सकता, जो सबको पकड़ता है कोई उसे नहीं पकड़ता, जो सब से पूछेगा कोई उससे नहीं पूछ सकता, जो सब को देता है कोई उसे नहीं दे सकता, जो सबसे

लेता है उससे कोई नहीं ले सकता, जो ऊँचा करता है कोई नहीं कर सकता, गिरा देता है तो कोई उठा नहीं सकता, बचा ले तो कोई मान नहीं सकता, मारने पर आए तो कोई बचा नहीं सकता फिर काएनात लोहे की दीवार बन जाए, आसमान की छत भी लोहा बन उस पर क़ायम हो जाए।

अल्लाह की हिफ़ाज़त का नमूना

अगर अल्लाह ने इरादा कर लिया कि मुझे मारना है तो काएनात आजिज़ हो जाएगी।

﴿قل لكم ميعاد يوم لا تستأخرون عنه ساعة ولا تستقدمون.﴾

वह सारा साल, वह महीना, वह दिन, वह घड़ी, वह घंटा, वह मिनट, वह सेकेंड, सेकेंड का आख़िरी लम्हा। जब मौत का हमला होगा और यह साँस का तार कटेगा और आँखों की शमा बुझेगी और कानों के टेलीफ़ोन के तार कटेंगे। वह अल्लाह ने तय किया हुआ है। अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं न कम होगा न ज़्यादा होगा न आगे होगा न पीछे होगा। और जब वह बचाने पर आता है तो ख़ूंख़ार मछली का पेट हो, समुंद्र की बिफरी मौजें हों, ﴿فالتقمه الحوت﴾ यूनुस अलैहिस्सलाम को मछली ने निगला, मछली के पेट में रखकर भी अल्लाह तआला ने बचाकर दिखाया।

आग के ढेर में इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बचाकर दिखाया, छुरी की धार के नीचे इस्माईल अलैहिस्सलाम को बचाकर दिखाया, समुंद्र को फाड़कर बनी इस्राईल को पार लगाकर दिखाया। काएनात में उसकी अजीब व ग़रीब निशानियाँ हैं। क़दम क़दम पर बिखरे हुए हैं।

मौत का वक़्त लिखा जा चुका है

मेरे भाईयो! इन दो रास्तों को बनाने के बाद, दो ज़िन्दगियों का अख़्तियार देने के बाद वह ग़ाफ़िल नहीं है। एक दिन तय है मेरी आपकी मौत का एक दिन तय है इन्सानियत की मौत का जब ज़मीन में ज़लज़ला आएगा। ﴿اذا زلزلة الارض زلزالها﴾ पहाड़ उड़ना शुरू कर दें ﴿وتكون الجبال كالعهن المنفوش﴾ और जब समुंद्रों में आग लग जाएगी ﴿واذا البحار سجرت﴾

क़यामत कौन से दिन आएगी?

अल्लाह जाने वह कौन सा जुमा होगा? वह कौन सा वक़्त होगा? वह कौन सी घड़ी होगी? कुछ रिवायतों में है कि दस मुहर्रम लेकिन वह यक़ीनी नहीं, जुमा का दिन होगा यह पक्की रिवायत है।

जुमा का दिन, रात हौले हौले ढली होगी। रात कहकर गई होगी कि कल आऊँगी, सितारों ने आख़िरी बार चमकना था, आज चाँद की आख़िरी किरणें थीं और सूरज नक़ाब कुशाई पर आया। उसे नहीं मालूम आज मेरी आख़िरी किरणें हैं जो ज़मीन को रौशन कर रही हैं। कलियों को नहीं पता कि आज आख़िरी दफ़ा खिलना है। गुलाब को आज आख़िरी दफ़ा महकना है, चिड़ियों को नहीं पता है कि आज आख़िरी चहचहाट है, कोयल को नहीं पता कि आज आख़िरी कौ, कौ कौ है और बुलबुल को नहीं पता कि मेरा आख़िरी नग़्मा है, शेर को नहीं पता कि आज मेरा आख़िरी दहाड़ना है, साँप को नहीं पता कि मेरा आज

आख़िरी बल खाना है, दरियाओं को नहीं पता कि आज आख़िरी मौज बह रही है, समुंद्र को नहीं पता कि आज आख़िरी तूफ़ान है जो उठ रहा है, हवाओं को नहीं पता कि आज आख़िरी झोंके हैं जो चल रहे हैं, पेड़ों को नहीं पता कि आज आख़िरी दिन है जिस को हम देख रहे हैं, आज हमारी हरियाली का आख़िरी घड़ी है, हीरों का आख़िरी दिन है, हुस्न का आख़िरी दिन, वादियों की हरी भरी वादियों का आख़िरी दिन है, सहराओं और रेगिस्तानों का आख़िरी दिन है, पहाड़ों के पत्थरों का आख़िरी दिन और इंसानों का आख़िरी दिन है।

क़यामत उसके लिए जो गुनाहगार है

क़यामत मुसलमान पर नहीं है। क़यामत काफ़िरों पर है। अल्लाह तआला क़यामत से पहले सूरज को पश्चिम से निकालेगा जो आख़िरी निशानी होगी। पश्चिम से सूरज निकलते ही तौबा का दरवाज़ा बंद हो जाएगा जो खुला हुआ है, हर वक़्त खुला हुआ है। जब सूरज पश्चिम से निकलेगा। शैतान उसे देखेगा—

एक दम सज्दे में गिरकर कहेगा ऐ अल्लाह! आज तू जिसको भी कहेगा सज्दा करने के लिए तैयार हूँ। तो उसके शतूंगड़े छोटे शैतान आकर कहेंगे क्या हुआ? आज आपसे हम वह सुन रहे हैं, वह देख रहे हैं जो न कभी देखा न सुना।

वह कहेगा मेरी मोहलत ख़त्म होने का वक़्त आ गया, मेरी मोहलत ख़त्म होने का वक़्त आ गया। यह सूरज पश्चिम से निकल आया। इसके बाद किसी की तौबा क़ुबूल नहीं है फिर मुसलमानों को अल्लाह तआला मार देगा। यह बैतुल्लाह की

आवाज़, ये मस्जिद, मदीना मक्का का शहर, मदीना मुनव्वरा का आबाद शहर, मस्जिद नबवी की पुररौनक़ फ़िज़ाएं, ये ऐसे चटियल मैदान बन जाएंगी कि इसके क़रीब से गुज़रते हुए क़ाफ़िले कहा करेंगे यहाँ कभी कोई आबादी हुआ करती थी, यहाँ कभी लोग रहा करते थे। किसी चीज़ का निशान न रहेगा।

वह दिन जब बैतुल्लाह को भी तोड़ दिया जाएगा

अल्लाह के नबी ने फ़रमाया मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ हब्शा की हब्शी टेढ़ी पिंडली वाला वह बैतुल्लाह के पत्थरों को तोड़ तोड़कर गिरा रहा है। वह आज कहेगा अब अबाबील नहीं आएंगी। अब यह जहाँ का दस्तरख़्वान अल्लाह लपेटना चाहता है, इस बारात को समेटना चाहता है, अब खरे खोटे को अलग करने का वक़्त क़रीब है। अब मुजरिम और पारसा की जुदाई का वक़्त क़रीब है, अब ज़ालिम और मज़लूम के इंसाफ़ का वक़्त क़रीब है। इसलिए अल्लाह अब समेट देगा। लोगों को कुछ ख़बर नहीं होगी कि आज का दिन आख़िरी दिन है। राजनीति वालों की राजनीति चमक रही होगी, शादी की बारातें इकठ्ठी हो रही होंगी, मीरासी ढोल बजाने को तैयार, इधर नाई देगे पकाने को तैयार, उधर नई दुकान की शुरूआत हो रही है कचहरी बाज़ार में, इधर खेत हाली हल लेकर जा रहा है, उधर माँएं सुबह-सुबह मक्खन निकाल रही हैं, पेड़ी बना रही हैं, कोई माँ उसको तवे पर डाल रही है, कोई निवाला बनाकर बच्चे के मुँह में ले जा रही है, किसी ने दुकान खोली है, झाड़ू दे रहा है, कोई झाड़ू देकर बैठ चुका है, कोई आख़िर ग्राहक से लेनदेन शुरू कर चुका है और इस तरह हदीस में

आता है कि वह कपड़ा नाप रहा है, कपड़ा नापकर उसने कैंची डाली कि मैंने दस मीटर इसको नापकर दे दिया, यहाँ कैंची डाली और ग्राहक ने जेब से पैसे निकाले, गिनने शुरू किए कि मुझे उसको देने हैं। वह काटने में यह गिनने में मसरूफ़। यह ज़मींदार यूँ अपनी मुठ्ठी को उठाएगा, बीज बिखेरने के लिए और उधर दुकान खोलने के लिए ताले में चाबी डालकर यूँ हिला रहा होगा और झाड़ू देने वाली औरत घर में यूँ झाड़ू उठाएगी और बादशाहों के तख़्त सजाए जा रहे होंगे और दुल्हनों को गजरे पहनाए जा रहे होंगे। दुल्हा को हार पहनाए जा रहे होंगे। और काएनात ऐसी होगी जैसे आज सुबह हुई ऐसी सुबह होगी। सूरज ऐसे निकलेगा, दिन ऐसे चढ़ेगा, हवा इसी तरह चलेगी, कलियाँ इसी तरह खिलेंगी, कव्वा इसी तरह कांए कांए करता आएगा। बिल्ली मियाँऊ मियाँऊ करती। साँप बिल से बल खाता निकलेगा। उक़ाब झपटने को तैयार है। कव्वा छिपने को भाग रहा है। मौजें बिखरने को तैयार है।

दोज़ख़ की चीख़

﴿اذا جاءت الطامة الكبرى﴾

एक धमाका हो जाएगा। वह माँ जिसने निवाला बनाया था मुँह में डालने के लिए वह निवाला ऐसे गिर जाएगा। वह मैंने अभी बताया ना कैंची यूँ गिर जाएगी, कपड़ा यूँ गिर जाएगा। पैसे वाला इधर गिर जाएगा। जिसने मुठ्ठी उठाई थी बीज बिखेरने को उसकी मुठ्ठी ऐसे ढीली होकर नीचे आ जाएगी। जिसने हल डाल दिया हल इधर गिरेगा, यह उधर गिरेगा। वह मीरासियों के ढोल

इधर गिरेंगे ये उधर गिरेंगे। गजरे वे पड़े होंगे, दुल्हन वह पड़ी होगी, हार उधर पड़ा होगा, दुल्हा उधर होगा। तख़्त इधर होगा तख़्त वाले उधर। बाराती इधर भागेंगे, दुल्हा उधर भागेगा। माँएं इधर भागेंगी, बच्चे उधर रोएंगे।

﴿تذهل كل مرضعة عما ارضعت﴾ कुछ घड़ियों पहले यह बच्चे को गोद में लेकर उसका माथा चूम रही थी, होंट चूम रही थी, मेरा लाल कह रही थी,. मेरा लाल कह रही थी। ﴿فاذا جاءت الصاخة﴾ वह चीख़ आएगी। वह हंगामा खड़ा होगा। वह लाल को यूँ फेंकेगी। ऐसे उठाकर फेंक देगी कि यह मरता है तो मरे।

﴿وتضع كل ذات حمل حملها.﴾

हमल वाली औरतों के हमल गिर जाएंगे। बूढ़े बाप को कोई नहीं पूछेगा, माँ का कोई हाल पूछने वाला नहीं होगा। हर कोई आपा धापी में पड़ जाएगा और बाज़ार वीरान। अरे इस दुकान का तो अदालत में केस चल रहा था, तुम कहाँ जा रहे हो? आज ज़मीन का फ़ैसला होना था, कहाँ जा रहे हो? कल फ़ैसलाकुन इलैक्शन है तुम कहाँ भागे जा रहे हो? असेम्बलियाँ वीरान, बाग़ात वीरान, वादियाँ वीरान, घर घरौंदे औंधे मुँह गिरना शुरू होंगे। इंसान क्या पेड़ सहमे, पहाड़ काँपने लगे, पत्थर लरज़ने लगे, ज़मीन थरथराने लगी। हवाएं रूकने लगीं, ज़मीन का ज़लज़ला, आवाज़ बढ़ी। ज़मीन थरथराने लगी। फिर आवाज़ और बढ़ी, फिर आवाज़ और बढ़ी फिर वह डरावनी शक्ल अपनाती गई। जंगल के जानवर भाग भागकर बाहर आना शुरू हुए। शैतान व जिन्नात नज़र आने लगे। शैतान भी चीख़ता चिल्लाता इधर भागे कभी उधर भागे।

जब चाँद सितारों को तोड़ दिया जाएगा

इतने में आसमान को बैठता देखेंगे। सितारों को टूटता देखेंगे। सूरज बेनूर नज़र आएगा। यह सूरज को क्या हुआ? देखो देखो ﴿اذا الشمس كورت﴾ अरे यह तो काला हो गया। यह चाँद को क्या हो गया ﴿وانشق القمر﴾ यह तो फटता जा रहा है। सितारों को क्या हुआ ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ ये क्यों टकरा टकराकर झड़ रहे हैं और टूट रहे हैं? और यह ज़मीन को क्या हुआ, ज़मीन को क्या हुआ? कि एक धमाका होगा। ज़मीन ऐसे फटना शुरू हो जाएगी। ज़मीन फटना शुरू हो जाएगी और ज़मीन के नीचे तो आग है। सिर्फ़ पचास किलोमीटर नीचे आग है।

ज़मीन चौबीस हज़ार किलोमीटर की गेंद है। इसके ऊपर पचास किलोमीटर की वही हैसियत है जो सेब के ऊपर छिलके की हैसियत है। यूँ सूई लगाओ तो छिलका फट जाए। चौबीस हज़ार किलोमीटर पर पचास किलोमीटर एक छिलके की हैसियत है। ज़मीन फटेगी और नीचे से आग निकलेगी और वह आग समुंद्रों को भी जलाना शुरू कर देगी।

पानी को आग लगा दी जाएगी

﴿واذا البحار فجرت﴾ पानियों में आग लग गई। पहाड़ हिमालय जो आज सरबुलंद खड़ा हुआ कह रहा है कि कोई मेरे मुक़ाबले में है? कोई मेरे जितना ऊँचा है? कोई मेरे जैसा सिर रखने वाला है? कोई मेरी जैसी ऊँचाइयाँ रखने वाला है? कोई मेरे जैसे सख़्ती

रखने वाला है? आज कोई देखने वाला देखता कि हिमालय के साथ हिमालय के बनाने वाले ने क्या करके दिखाया?

अल्लाह की क़ुदरत का अदना नमूना हिमालय पहाड़

जब हम बंगलादेश जा रहे थे नेपाल के रास्ते से। हम काठमांडू से आगे चले तो कैप्टन ने ऐलान किया आप लोग ख़ुशकिस्मत है कि आज हिमालय का क्षितिज साफ़ है। सारे साल में सिर्फ़ कुछ दिन क़े लिए इस चोटी पर बादल नहीं होते। आज इस पर बादल नहीं हैं। आप सब लोग इसको देखें तो मैं इस तरफ़ बैठा हुआ था तो हम दूसरी तरफ़ भागकर गए तो अल्लाह का शाहकार नज़र आया जो ख़ामोशी से कह रहा था अल्लाहु अकबर। जो ख़ामोश ज़बान से कह रहा था मैं मख़्लूक़ ऐसी हूँ तो मेरा ख़ालिक़ कैसा होगा? जो ख़ामोशी से कह रहा था जब मैं इतना मज़बूत हूँ तो मेरा बनाने वाला कितना मज़बूत होगा? जो अपनी ख़ामोश ज़बान से पुकार पुकारकर कह रहा था जब मैं इतना ताक़तवर हूँ तो मेरा बनाने वाला कितना ताक़तवर होगा? वह हिमालय, वह शाहकार मैं नहीं भूल सकता। फिर उसके बाद कई बार वहाँ से गुज़रे बादल ही नज़र आए। बस वही एक दफ़ा बादल बग़ैर देखा तो ज़बान बेसाख़्ता पुकार उठी ﴿الله اكبر سبحان الخالق﴾ क़यामत के दिन कोई हिमालय की वादी में खड़ा होकर देखता कि वह कैसे रूई के गालों की तरह उड़ना शुरू हो जाएगा, बर्फ़ पिघल गई। पहाड़ उड़ गए, रूई के गाले बन गए। फटते चले गए।

﴿فقل ينسفها ربي نسفا فيذرها قاعا صفصفا لا ترى فيها عوجا ولا امتا.﴾

पहाड़ रूई के गाले बनते चले गए।

وتكون الجبال كالعهن المنفوش. يوم نسير الجبال
وترا الارض بارزة وحشرناهم فلم نغادر منهم احدا.
وعرضوا على ربك صفا. لقد جئتمونا كم كما
خلقنكم اول مرة بل زعمتم الن نجعل لكم موعدا.

पहाड़ फट गए, फैल गए, उड़ गए, रेत बन गए, हवाओं में बिखर गए तो जो आवाज़ हिमालय को पिघला देगी। वह आवाज़ पाँच फिट गोश्त पोस्त पर क्या असर करेगी? हड्डियाँ पिघल जाएंगी और जानवरों की चीख़ पुकार होगी ﴿واذا الوحوش حشرت﴾ आज जानवरों का भी कोई हाल पूछने वाला नहीं है। फिर एक ज़ोरदार धमाका होगा और ज़मीन टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी। इंसान मरेंगे, शैतान मरेंगे फिर इबलीस की बारी आएगी।

शैतान की मौत का दिन

मलकुल-मौत सामने से आएगा। वह ज़मीन में ग़ोता लगाएगा तो दूसरी तरफ़ निकल जाएगा। आगे देखेगा तो मलकुल-मौत फिर वह ज़मीन में ग़ोता लगाएगा तो तीसरी तरफ़ निलक जाएगा। आगे देखेगा तो मलकुल-मौत। फिर वहाँ से ग़ोता लगाएगा और चौथी तरफ़ निकल जाएगा। हर तरफ़ मलकुल-मौत को सामने देखेगा। आज कोई पनाह का ठिकाना नहीं है। मलकुल-मौत कहेगा—

भाग, भाग आज कहाँ तक भागेगा। आज तेरा वक़्त भी आ गया।

इबलीस पूछेगा मुझे कहाँ ले जाओगे? जवाब मिलेगा तेरी माँ के पास। कहाँ? ﴿جهنم الى امك الهاوية﴾ तेरी माँ के पास ले जाऊँगा। हाविया जहन्नम की सबसे डरावनी आग जो मुनाफ़िक़ीन के लिए तैयार की गई है। यह आवाज़ पड़ेगी, आसमान फटेगा। फ़रिश्ते मरेंगे। दूसरे आसमान पर ख़ौफ़ होगा। फ़रिश्ते मरेंगे। आसमान फटेगा। तीसरे आसमान पर मौत, चौथे आसमान पर मौत, पाँचवे पर मौत, छठे पर मौत, सातवीं आसमान के फ़रिश्ते पर मौत। फिर अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाएंगे अर्श उठाने वालों को भी मौत दे दी जाए। अर्श के फ़रिश्ते धड़ाम से गिरेंगे।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जिब्राईल और मीकाईल मर जाएं। तो अल्लाह तआला का अर्श बोल उठेगा, सिफ़ारिश करेगा या अल्लाह जिब्राईल और मीकाईल को आप बचा लें। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे—

﴿اسكت فقد كتبت الموت على كان تحت عرشه.﴾

मेरे अर्श के नीचे सबको मरना है। कोई नहीं बच सकता। हाय वह देखो जिब्राईल मर गए, मीकाईल मर गए। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे इसराफ़ील मर जाएं। एक रिवायत में आता है अल्लाह तआला पूछेंगे कौन बाक़ी है?

कहा जाएगा या अल्लाह अर्श के फ़रिश्ते बाक़ी हैं, जिब्राईल, मीकाईल, मलकुल-मौत, इसराफ़ील बाक़ी हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जिब्राईल और मीकाईल मर जाएं, मर गए। अब कौन बाक़ी है? ये बाक़ी मर जाएं। अब कौन बाक़ी है? इसराफ़ील मर जाएं। अब कौन बाक़ी है?

इज़राईल अलैहिस्सलाम की मौत

मलकुल-मौत कहेंगे या अल्लाह ऊपर तू बाक़ी है नीचे मैं बाक़ी हूँ। ऊपर अल्लाह अर्श के नीचे मलकुल-मौत। इसराफ़ील जो सूर उठाकर फूंक रहा था वह उड़ता बुलंद होता चला जाएगा और अल्लाह के अर्श पर जाकर अपने आप टिक जाएगा और इसराफ़ील मुँह के बल ज़मीन पर गिरेगा। अब ऊपर अल्लाह नीचे मलकुल-मौत सबकी रूहें निकालने वाला, सबको तड़पता देखने वाला।

आज कोई उसको तड़पता देखता। आज उसकी कोई चीख़ सुनता। हदीस में यूँ आता है अगर इस वक़्त इंसानियत ज़िंदा होती तो उसकी चीख़ सुनकर सबके कलेजे फट जाते। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ऐ मलकुल-मौत! मर जाओ, मर जाओ। किसी को बक़ा नहीं सिवाए अल्लाह की ज़ात के अर्श के नीचे सबको मौत है। जब जिब्राईल, मीकाईल की अर्श सिफ़ारिश करेगा कि या अल्लाह जिब्राईल को बचा ले, मीकाईल को तो बचा ले। तो अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿اسكت﴾ ख़ामोश मेरे अर्श के नीचे सबको मौत आती है। कोई नहीं बच सकता। हाय मलकुल-मौत गिर पड़ा है। सबको मिटा दिया बनाने वाले ने।

كما بدأنا اول خلق نعيده وعداً علينا انا كنا فاعلين منها
خلقنكم وفيها نعيدكم ومنها نخرجكم تارةً اخرىٰ.

मिट्टी से बने थे तुम मिट्टी में लौटा दिया तुम्हें। इन्तिज़ार करो दोबारा ज़िंदा होने का। फिर अल्लाह तआला सारी काएनात को अंधेरे में धकेलकर ऐलान करेगा—

﴿من کان لی شریکاً فلیات﴾ कोई मेरा शरीक है तो मेरे सामने आए? फिर दोबारा कहेगा ﴿من کان لی شریکاً فلیات﴾ मेरा शरीक हो तो सामने आए। फिर तीसरी बार कहेगा ﴿من کان لی شریکاً فلیات﴾ कोई मेरा शरीक हो तो सामने आए। फिर अल्लाह तआला ज़मीन और आसमान को झटका देकर कहेगा ﴿انا الملك﴾ मैं हूँ बादशाह। फिर अल्लाह दूसरा झटका देकर कहेगा ﴿انا القدوس السلام المؤمن﴾ मैं हूँ क़ुद्दूस, अस्सलाम, अल्मोमिन फिर तीसरा झटका देकर कहेगा ﴿المهيمن العزيز الجبار المتكبر﴾ मैं हूँ मुहैमिन, अज़ीज़, जब्बार, मुतकब्बिर।

कहाँ गए बड़े-बड़े बादशाह?

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा, बादशाह कहाँ हैं? मुग़ल ताक़त कहाँ गया? अंग्रेज़ी ताक़त कहाँ गई? अमरीका की ताक़त कहाँ गई? बनू अब्बास और बनू उमैय्या कहाँ गए? कहाँ गए उस्मानी तुर्क? कहाँ गया सिकंदर यूनानी? कहाँ गया सिकंदर ज़ुलक़रनैन? किधर चले गए महमूद व अयाज़? कहाँ गए तैमूर लंग? बादशाह कहाँ हैं? ज़ालिम कहाँ हैं? ज़ालिम कहाँ हैं? ﴿اين المتكبرون﴾ घमंड करने वाले कहाँ चले गए? ऐड़ियाँ मारकर चलने वाले कहाँ चले गए? गर्दन अकड़ाकर चलने वाले कहाँ चले गए?

गंदगी का ढेर भी कभी अकड़ता है

मेरे भाईयो! इंसान की भी कोई अवक़ात है कि घमंड करे।

एक दर्द ही उसको तड़पा के रख दे। मौत का झटका निशान मिटाकर रख दे। पेट का पाख़ाना इसके अंदर, गंदगी पेशाब के जोहड़, गंदा पानी इसके अंदर, पाख़ाना इसके अंदर, गंदा ख़ून इसके अंदर, थूक इसके अंदर, बलग़म इसके अंदर, नाक की गंदगी इसके अंदर, कानों का मैल इसके अंदर, आँखों का मैल इसके अंदर, सिर की जुंए इसके अंदर, आफ़तें, बलाएं इसके ऊपर, मौत इसके ऊपर, मिट्टी इसका ओढ़ना बिछौना, क़ब्र इसका आख़िरी ठिकाना, जिस इंसान की यह अवक़ात हो वह गर्दन अकड़ाकर चले, बाज़ू हिलाकर चले।

भाईयो! अल्लाह से शर्माना चाहिए। अल्लाह से शर्माना चाहिए। यह चाल मेरे रब को पसंद नहीं है। तो अल्लाह आज पूछ रहा है, कहाँ हैं घमंडी? फिर अल्लाह कहेगा ﴿لمن الملك﴾ आज किसकी बादशाही है? कोई जवाब देने वाला नहीं हुआ। फिर अल्लाह तआला ख़ुद कहेगा—

﴿لله الواحد القهار﴾ आज अकेले अल्लाह तआला की बादशाही है। फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा—

﴿انی برات باالدنیا ولم تکن شیاء وانا الذی اعھدھا.﴾

दुनिया में राहत कम ग़म ज़्यादा हैं

तुम कुछ न थे और अल्लाह था। फिर अल्लाह ने तुम्हें बनाया। फिर तुम्हें मोहलत दी। फिर तुम्हें मिटा दिया, फिर तुम्हें दोबारा ज़िंदा करेगा। सारी काएनात ख़त्म, झगड़े झमेले गए, मेले और ठेले गए, रोना और हँसना गया। सारी ज़िंदगी की सारी की सारी रानाइयाँ ख़त्म, सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात के बाक़ी है,

﴿الله لا اله الا هو الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم الخ.﴾

अल्लाह ने इस दुनिया को बनाया, उसी ने मिटाया। यह मच्छर का पर था, यह मकड़ी का जाला था, यह धोखे का घर। इसकी सुबहें थोड़ी हैं शामें ज़्यादा हैं। जिसकी राहतें थोड़ी हैं ग़म ज़्यादा हैं और ग़म ज़्यादा हैं। जिसका हँसना थोड़ा है और रोना ज़्यादा है। जिसके दर्द ज़्यादा और सुख थोड़े हैं। जहाँ की ज़िल्लतें ज़्यादा इज़्ज़ते कम हैं। जहाँ दर्द और ग़म थे, मुश्किलात और मुसीबतें थीं, आज अल्लाह ने उस जगह को मिटा दिया, उसके आशिकों को मिटा दिया। उसके पीछे रोने वालों को हलाक कर दिया। उन्हें बेनिशान कर दिया। यही वह दुनिया है जिसने मुझे और आपको अल्लाह से दूर कर दिया। यही वह रुपया है, यही पैसा है, आज सोने-चाँदी के ढेर हैं, लेने वाला कोई नहीं, मोतियों के ढेर हैं, हीरे जवाहिरात के ढेर हैं कोई नहीं उनके पीछे बाज़ी लगाने वाला। तख़्त ऐवाने शाही में पड़े हुए हैं। इस पर कोई नहीं है। यह धोखे का घर, यह मच्छर का पर, यह मकड़ी का जाला, यह मताए क़लील, यह दारुल ग़रूर, यह ज़ीनत, यह तफ़ाख़ुर, यह तकासुर यह मिट जाना वाले घर। इसकी सुबहें देखते हैं इसकी शामें नहीं देखते, इसकी शामें देखते हैं सुबहें नहीं देखते। यह मिट जाने वाला, टूट जाने वाला घर है।

दुनिया के लिए अल्लाह को न भुला देना

इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं—

﴿لا تغرنكم الحيوة الدنيا ولا تغرنكم بالله الغرور.﴾

याद रखना तुम्हें फ़ैसलाबाद की रौनकें जन्नत न भुला दें, अल्लाह न भुला दे, यहाँ के माल व मता तुम्हें जन्नत के शौक़ न भुला दें। यहाँ का ख़ौफ़ तुम्हें दोज़ख़ न भुला दे कि अल्लाह तआला ने सबको मिटा दिया। अब अल्लाह ने ज़िंदा करना है।

फिर एक दिन आएगा जब अल्लाह इस जहान को ज़िंदा करेगा। फिर दोबारा ज़मीन बिछाएगा—

يومن تبل الارض غير الارض والسموات وبرزو الله الواحد القهار وترى المجرمين يومئذ مقرنين في الاصفاد سرابيلهم فى قطران وتغشى وجوهم النار ليجزى الله كل نفسى بما كسبت ان الله سريع الحساب هذا بلغ الناس ولينذروا به وليعلموا انما هو اله واحد وليذكروا اولو الالباب.

अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम

जिस दिन ज़मीन बदल के बिछाई जाएगी। आसमान बदले जाएंगे और अल्लाह के सामने पेश किए जाओगे। दो ज़िंदगियाँ, दो रास्ते, दो मौतें, दो अंजाम हैं। आज जिन्होंने अल्लाह को नाराज़ किया तो अल्लाह फ़रमाता है—

﴿وبرزو الله الواحد القهار﴾ आज तुम सब आ गए, ﴿وترى المجرمين﴾ आज ज़रा मेरे नाफ़रमानों को देखो, ﴿مقرنين فى الصفاد﴾ ज़ंजीरों मे जकड़े हुए, ﴿سرابيلهم من قطران﴾ उनको शलवारें तारकोल की पहनाई जाएंगी, ﴿وتغشى وجوههم النار﴾ उनके सिरों पर आग चढ़ चुकी है, ﴿قطعت لهم ثياب من ضريع﴾ उनको कुर्ते आग के पहनाए जा चुके हैं, ﴿ليس لهم طعام الا من ضريع﴾ कांटेदार झाड़ियों के सिवा उनके लिए खाना कोई नहीं, ﴿ويسقى من ماء صديد﴾ खौलती

हुई पीप के सिवा उनका पानी कोई नहीं, ﴿يشوي الوجوه﴾ वह प्याले जब मुँह के करीब करेंगे तो इसका भाप उनके चेहरों की खाल को जलाकर पिघलाकर पानी में गिरा देगी। यह खाना पीना है। ये उनके कमरे हैं ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ आग के पर्दे, आग की दीवारें, ये उनके बिस्तर हैं।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

ईमान व यक़ीन के हैरान करने वाले असरात

نحمده ونستعينه ونستغفره ونؤمن به ونتوكل عليه
ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله
فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الا الله
وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن
اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا
سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह वह ज़ात है जिसका कोई शरीक नहीं है। ﴿المُلك لا شريك له﴾ वह अकेला है ﴿لا اله الا هو وحده﴾ उसकी ज़ात में कोई शरीक नहीं, उसकी सिफ़ात में कोई शरीक नहीं ﴿ليس كمثله شئ وهو السميع البصير﴾ उसकी सिफ़ात में, उसके कामों में कोई उस जैसा नहीं है। वह बादशाहे कुल है, काएनात का शंहशाह है, ज़मीन व आसमान का अकेला बादशाह है,

﴿له ما فى السموات وما فى الارض وما بينهما وما تحت الثرى﴾

वह अल्लाह जो आसमानों का भी मालिक, वह अल्लाह जो ज़मीनों का भी मालिक, वह अल्लाह जो उसके बीच का भी मालिक, वह अल्लाह जो तहतुस्सरा का भी मालिक ﴿لله ما فى السموات وما فى الارض﴾ जो कुछ ज़मीन में है वह अल्लाह तआला का है। अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही का उतार नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही की कोई शुरूआत नहीं, अल्लाह वह बादशाह है जिसकी बादशाही का कोई आख़िर नहीं, ﴿لله الامر من قبل ومن بعد﴾ पहले भी अल्लाह, बाद भी अल्लाह, आख़िर भी अल्लाह, ज़ाहिर भी अल्लाह, बातिन भी अल्लाह। इस काएनात और इसकी मख़्लूक की तो एक हद है पर उसकी बादशाही की कोई हद नहीं है। उसकी ज़ात की कोई हद नहीं है।

﴿كفى بالله وكيلا﴾ तेरा रब वकील है, ﴿كفى بالله شهيدا﴾ हाज़िर भी अल्लाह, ﴿كفى بالله رقيبا﴾ करीब है, ﴿كفى بالله عليما﴾ सब कुछ जानने वाला है, ﴿كفى بالله وليا﴾ तेरा दोस्त भी अल्लाह, ﴿كفى بالله نصيرا﴾ तेरा मददगार भी है। काफ़ी है, काफ़ी है सात बार अल्लाह ने पुकारा उसके बाद अल्लाह ने हमसे सवाल किया ﴿اليس الله بكاف عبده﴾ अब भी यक़ीन नहीं आता कि मैं तुम्हें काफ़ी हूँ? अब तो मान जाओ कि मैं अकेला तुम्हें काफ़ी हूँ।

कभी किसी को मैंने भूखा रखा, फिर तू हराम क्यों खाता है?

अरे मेरे बन्दे मैंने सात आसमान बनाए, मैं न थका। मैंने सात

ज़मीनें बनायीं मैं न थका, मुझे बता तो सही? तुझे रोटी खिलाके थक जाऊँगा? तो तू क्यों सूद की तरफ़ चल पड़ा? तूने क्यों कहना शुरू किया कि सूद के बग़ैर कारोबार कैसे चलेंगे? तू क्यों रिश्वत पर आ गया? तू क्यों झूठ पर आ गया? तूने क्यों किसी का माल लूटा? अरे मैंने फ़िरऔन को चार सौ साल खिलाया, नमरूद को सैकड़ों साल खिलाया, आद व समूद को खिलाया, आज के काफ़िरों को खिलाया। चलो वे तो इंसान हैं। बिल में पड़े हुए साँप को खिलाया, झपटते हुए उक़ाब को न भूला, शेर जैसे नुक़सान देने वाले को न भूला, चीते जैसे चालाक और ज़ालिम और ख़ूंख़ार को न भूला न भेड़िये को भूला, न लोमड़ी को भूला, वह लाखों करोड़ों चियोंटियों में से एक चियोंटी को न भूला। चियोंटी को पहुँचाया, परवाने को खिलाया, मछ्छर को खिलाया, पतंगे को खिलाया, उक़ाब को खिलाया, बल खाते साँप को खिलाया।

रोज़ी देने वाला हक़ीक़त में अल्लाह है

पानी की तह में जहाँ पानी काला है। कोई रौशनी नहीं। वहाँ की एक-एक मछली को खिलाया। व्हेल की क्या ज़रूरत है पहुँच रही है, शार्क की क्या ज़रूरत है पहुँच रही है। साँप की क्या ज़रूरत है पहुँच रही है। चार बेटों की परवरिश दो माँ-बाप नहीं कर सकते। उस रब को देखो जो खरबों खरब मच्छरों को, खरबों खरब पतंगों को, परवानों को, इंसानों को, जिन्नात को, फ़रिश्तों को, काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे को जो पाल रहा है, खिला रहा है, पिला रहा है, उठा रहा है। उन सबको देकर न भूला न थका न वह

भटका, न वह घबरया न चूका कि मेरा मुकद्दर किसी और को जाए। तो वह शुरूआत और आख़िर होने से पाक, दिशा और रुख़ से पाक, ज़माने से और मकान से पाक। इस मस्जिद ने हमारा घेराव किया हुआ है, घेरे में लिया हुआ है मगर अल्लाह तआला!

﴿لا يحويه مكان﴾ वह मकान से पाक, ﴿لا يشتمل عليه زمان﴾ वह किसी ज़माने में समाया हुआ नहीं। अल्लाह तआला भूत, वर्तमान, भविष्य से पाक, ज़मान और मकान से पाक, दिशा से पाक, नींद से पाक, थकन से पाक, ऊँघ से पाक।

﴿يطعم ولا يطعم﴾ वह सबको खिलाता है मगर खुद खाने से पाक, ﴿يسقى ولا يسقى﴾ वह सबको पिलाता है मगर खुद पीने से पाक, ﴿يكسى ولا يكسى﴾ वह सबको कपड़े पहनाता है मगर खुद पहनने से पाक, ﴿يصور﴾ वह शक्लें बनाता है खुद शक्ल से पाक, ﴿يلون﴾ वह हर एक को रंग देता है खुद हर रंग से पाक, हर रुख़ से पाक, सबको मारेगा मगर खुद मौत से पाक ﴿يميت ولا يموت﴾ और वह "युह्यी" ज़िंदा है वह ज़िंदा है। हम भी ज़िंदा हैं मगर हम ज़िंदा हैं असबाब के साथ। असबाब जब मिटते हैं तो हम भी मर जाते हैं। वह ज़िंदा है अपनी ज़ात के साथ ﴿القيوم﴾ क़ायम है बग़ैर असबाब के, क़ायम हमेशा से और हमेशा तक। हम क़ायम हैं रूह के साथ और मिट्टी व हवा के साथ। वह क़ायम है बग़ैर किसी मिट्टी, पानी, ग़िज़ा और रत्ती के बग़ैर असबाब के।

﴿الحي القيوم لا تاخذه سنة ولا نوم له ما في السموت وما في الارض.﴾

मैं बादशाहों का बादशाह हूँ

ज़मीन से नीचे तक सिर्फ़ अल्लाह की बादशाही है और इस

सारी बादशाही में, उसकी ज़ाते आली में न कोई उसका शरीक है और न वज़ीर है।

الملك لا شريك له المدبر لا مشير له القاهر بلا معين لم يتخذ صاحبة ولا ولدا لم يكن له شريك في الملك ولم يكن له ولي من الذل ما كان معه من اله.

वह ऐसा बादशाह है जिसका शरीक कोई नहीं, ऐसा तदबीर करने वाला है जिसका कोई सलाहकार नहीं, ऐसे गुस्से वाला जिसका मददगार कोई नहीं, न उसको बीवी की हाजत है और न औलाद की, कोई उसकी बादशाहत में शरीक नहीं और न ही उसको किसी दोस्त की ज़रूरत है और न ही उसकी खुदाई में कोई उसका शरीक है।

तो कोई उससे टकराने वाला नहीं, कोई उसका मुक़ाबिल नहीं ﴿هل تعلم له سميا﴾ है कोई मुक़ाबिल तो बताओ? है ही कोई नहीं। तो अल्लाह तआला अपनी ज़ात में कामिल है और किसी का मुहताज नहीं।

सबसे दिल हटा लो

तो मेरे भाईयो! अल्लाह से उम्मीद ग़ैरों से नाउम्मीद ﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" ने सबको काट दिया। ﴿الا الله﴾ "इलल्लाह" किसी से कुछ नहीं होता। ﴿الا الله﴾ अल्लाह सब कुछ करता है ﴿لا اله﴾ कोई मेरे काम नहीं कर सकता, ﴿الا الله﴾ अल्लाह मेरे सारे काम बनाएगा। ﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" हम यह समझते हैं कि हम अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा नहीं करते।

﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" कोई मुझे ज़िंदगी नहीं दे सकता ﴿الا الله﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह ही मुझे ज़िंदगी देगा तो मैं ज़िंदा रहूँगा।

﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" कोई मुझे ग़नी नहीं कर सकता ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह ही चाहेगा मुझे माल मिलेगा।

﴿لا الــــه﴾ "ला इलाहा" कोई मुझे फ़क़ीर नहीं कर सकता ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह ही चाहेगा तो मैं फ़क़ीर बनूंगा।

﴿لا الــه﴾ "ला इलाहा" कोई मेरी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह ही चाहेगा मेरी हिफ़ाज़त करेगा।

﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" कोई मुझे खुश नहीं कर सकता ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह चाहे मुझे खुशी होगी।

﴿لا الــــه﴾ "ला इलाहा" कोई ग़म नहीं दे सकता ﴿الا الـــلّٰـــه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह चाहेगा मेरे दिल में ग़म आएगा।

﴿لا الــــــــه﴾ "ला इलाहा" कोई ज़मीनों को हरा भरा नहीं कर सकता ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह चाहेगा हरियाली आएगी।

﴿لا الــه﴾ "ला इलाहा" ऐटम से हमारा मुल्क इज़्ज़त नहीं पाएगा ﴿الا اللّٰه﴾ "इल्लल्लाह" अल्लाह चाहेगा तो इज़्ज़त मिलेगी।

﴿لا الــه﴾ "ला इलाहा" कोई किसी की मुहब्बत किसी के दिल में पैदा नहीं कर सकता ﴿الا الــلّٰــه﴾ "इल्लल्लाह" जब अल्लाह चाहेगा तो मुहब्बत पैदा होगी। काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे पर अल्लाह ने ﴿لا اله﴾ "ला इलाहा" की छुरी चलाई है। सबसे दिल हटा लो और एक अल्लाह की तरफ़ फेर लो। इब्राहीम का क़ौल है नमाज़ के शुरू में ﴿سبحانك اللّٰهم﴾ पढ़ते हैं। यह एक दुआ नहीं है, बहुत सी दुआएं हैं। यहाँ पढ़ने की एक वजह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी—

انی وجهت وجهی للذی فطر السموات والارض
حنيفا وما انا من المشركين.

सबसे कटकर अल्लाह से जुड़ जाओ

सबसे मुँह मोड़कर अल्लाह की तरफ़ फिर गया। सबसे कट गया, अल्लाह से जुड़ गया, मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूँ। अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुनो ﴿اللهم اسلمت نفسى اليك﴾ ऐ अल्लाह! मैंने अपने आपको आपके हवाले कर दिया ﴿وضعت امرى اليك﴾ मेरे सारे काम तेरे सुपुर्द हो गए। तू ही मेरा सहारा है, मैंने अपनी कमर तेरे साथ लगा दी। ﴿لا ملجا ولا منجا من الله اليك﴾ कोई पनाह की जगह नहीं, कोई नजात की जगह नहीं सिवाए तेरी ज़ात के ﴿رغبة ورهبة اليك﴾ शौक़ में भी ख़ौफ़ में भी तू ही मलजा, तू ही पनाह, तू ही भरोसेमंद, तू ही वकील, तू ही कफ़ील, तू ही शहीद, तू ही रक़ीब।

यह तबलीग़ का काम है, अल्लाह की तारीफ़ करके लोगों को अल्लाह का दीवाना बना दो। जिसका सौदा नहीं बिकता वह भी शाम तक आवाज़ लगाता है। शाम को अपने सड़े सेब बेचकर घर आता है। आवाज़ में इतनी ताक़त अल्लाह ने रखी है।

पत्थर दिल इंसान

ओ मेरे भाईयो! यह दुनिया वाले तो पत्थर दिल हैं। ये तो ज़ालिम हैं, संग दिल हैं, ये तो औरों की इज़्ज़तें लूटकर अपनी महफ़िलें सजाते हैं। औरों के बच्चों के मुँह से निवाले छीनकर अपने बच्चों की ख़ुशियाँ पूरी करते हैं। औरों की बेटियों के सिरों से दुपट्टे छीन कर अपनी बेटियों को ये आँचल उढ़ाते हैं। औरों की ज़िंदगियों से खेलकर ये अपनी बीवियों की ज़िंदगियाँ बनाते

हैं। औरों के घर ढाकर ये अपने महल बनाते हैं। इनकी तरफ़ न जाओ।

उस मेहरबान की तरफ़ आओ जो इतना करीम है इतना करीम है कि आप की आह पर सत्तर बार कहता है ﴿لبيك لبيك لبيك عبدى﴾ मेरे बंदे मैं तो कब से तेरे इंतिज़ार में था कि तू मुझे भी पुकारे, मुझसे भी इल्तिजा करके मुझसे बातें करे। अल्लाह के सामने आँख के अंदर तैरने वाला एक आँसू जो आँख से बाहर भी न निकले, आँख के अंदर ही तैरता रहे। बड़ा क़ीमती है।

अरे इन अफ़सरों के पास मस्अले हल कराने जाते हो। जिनके सामने आँसुओं के ढेर लगा दो, नदियाँ बहा दो तो उन पर कोई असर नहीं होता।

अरे उस अल्लाह के सामने तेरी आँख में एक आँसू भी उतर गया तो सारी ज़िंदगी के गुनाह धोकर साफ़ कर देगा और ज़मीन व आसमान की चक्की जो आज हमारे गुनाहों की वजह से उलट चुकी है उसे सीधा करो।

मनमानी छोड़! रब चाही इख़्तियार कर

तो मेरे भाईयो! हम अपने आपको बदलें हुकूमतों से मुतालबे छोड़ दो, इस मन के मुतालबे मानना छोड़ दे, अब तो अल्लाह के मानने पर आ जा। कब तक मन की मानता रहेगा? यह ज़िंदगी है ही कितने दिन की? अपने नबी के तरीक़ों पर आजा। अब तो अपने क़दमों को लौटा ले और अल्लाह से तौबा कर ले। यह इतना बड़ा मजमा जो जुमा की नमाज़ पढ़ने आया है। यह हर नमाज़ में क्यों नहीं आता। रमज़ान में गाने की दुकानें बंद तो

क्या रमज़ान में ही गाना सुनना हराम है? बाक़ी ग्यारह माह हलाल है? रमज़ान में सच बोलना है तो क्या बाक़ी दिनों में झूठ बोलना हलाल है? जुमा की नमाज़ पढ़ी बाक़ी नमाज़ों की छुट्टी तो क्या जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ है बाक़ी नहीं?

अल्लाह को राज़ी कर लो

अल्लाह के वास्ते अल्लाह से तअल्लुक़ बना लें और अल्लाह को राज़ी कर लें। वह दिन आ गया हंगामे वाला दिन जिस दिन को अल्लाह तआला ने ख़ुद "ताम्मतुल कुबरा" कहा है। और गले में ज़ंजीर पड़ गई तो अब कोई नहीं बचा सकता। फिर ख़ून के आँसू भी बहाएंगे तो कुछ नहीं हो सकता और यहाँ छोटी मोटी आह निकालकर भाईयो! जब अल्लाह से तअल्लुक़ मज़बूत होता है तो ईमान व यक़ीन की ऐसी कैफ़ियत हो जाती है कि अल्लाह अपनी मख़्लूक़ उसके ताबे कर देता है। जैसा कि साफ़ हदीस शरीफ़ में है ﴿من كان لله﴾ जो अल्लाह का हो जाता है ﴿كان الله له﴾ अल्लाह भी उसके हो जाते हैं। अब हम उन हज़रात का ज़िक्र करते हैं जिनके साथ अल्लाह ने अपनी ग़ैबी मदद के दरवाज़े खोले।

अल्लाह की क़ुदरत! सौ बरस तक सुला दिया

हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम का बैतुलमुक़द्दस से गुज़र हुआ जिसे बख़्ते नसर ने तोड़ दिया था। ख़त्म हो चुका था। कहने लगे ﴿انى يحى هذه الله بعد موتها﴾ या अल्लाह ये भी ज़िंदा होंगे? सब मिट

चुके थे। शहर को आग लगा दी और सारा कुछ बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा या अल्लाह! यह कैसे होगा? ﴿فاماته الله مائة عام﴾ सफ़र पर जा रहे हैं। गधे पर सवार हैं। खाना बनाया हुआ है। अल्लाह पाक ने आराम करने का तक़ाज़ा पैदा किया। पेंड़ की नीचे गधे को बाँधा, खाने को साथ रखा। लेटे तो अल्लाह ने जान को निकाल लिया। सौ बरस तक मौत दे दी। ﴿ثم بعثه﴾ फिर खड़ा किया सौ बरस के बाद ﴿كم لبثت﴾ बताओ कितना ठहरे? ﴿يوما﴾ या अल्लाह एक दिन। फिर सूरज को देखा ढलने वाला था। कहा नहीं ﴿بعض يوم﴾ आधा दिन ﴿قال بل لبثت مائة عام﴾ नहीं एक सौ बरस तू यहाँ सोया है, सोया नहीं बल्कि मरा है।

﴿فانظر الى طعامك وشرابك لم يتسنه﴾ अपने खाने को देख लो। खाना गर्म, पानी ठंडा है। सौ बरस हो गए। खाने को कोई चीज़ ख़राब नहीं कर सकी। अल्लाह का अम्र है। फ्रिज के बग़ैर, बर्फ़ के बग़ैर पानी ठंडा है और सारी दुनिया के असबाब सौ बरस से चल रहे हैं लेकिन अल्लाह का अम्र इस खाने को ढके हुए है।

मेरे भाईयो! सौ बरस में खाना ख़राब नहीं हुआ और गधे को देखो। उसकी हड्डियों को देखो। उसका कुछ पता भी नहीं बचा। गधा जो टिकने वाली चीज़ है वह मिट्टी बन चुका है और खाना जो ख़राब होने वाली चीज़ है वह मौजूद पड़ा हुआ है। अल्लाह ने कहा अब देखो! ﴿كيف ننشزها ثم نكسوها لحما﴾ अब देखो मैं इसे कैसे ज़िंदा करता हूँ? अब जो गधे पर अम्र मुतवज्जे हुआ। हड्डियाँ ज़मीन से उगती चली गयीं और खड़े होकर ढांचा बनता चला गया और उसमें गोश्त आता चला गया और चारों तरफ़ से जो खाल के ज़र्रात ज़मीन में ख़त्म हो चुके थे वे उड़ उड़कर

उसके जिस्म पर लगने शुरू हो गए। एक आन की आन में उज़ैर अलैहिस्सलाम की आँख के सामने सारा नक़्शा आ गया। गधा मिटा और मिटकर बना और बनकर उसमें रूह आ आई। और वह दोबारा कान हिला रहा है ﴿فاذا هو ينهق﴾ और आवाज़ भी निकाल रहा है। अल्लाह ने कहा अब जाओ उस बस्ती को देखो जिसको कहते थे यह कैसे ज़िंदा होगी। अब आए तो बैतुलमुक़द्दस आबाद था। सौ बरस गुज़र चुके थे।

यहूदी का सवाल! सौ साल बड़ा भाई कौन?

एक यहूदी ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास सवाल लिखकर भेजे कि यह बताओ वह कौन दो भाई हैं जो एक दिन पैदा हुए, एक दिन वफ़ात पाई और एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है। पैदाईश का दिन और मौत का दिन एक लेकिन एक सौ साल बड़ा है एक सौ साल छोटा है और वह कौन सी जगह है जहाँ सूरज एक बार निकला फिर कभी नहीं निकला?

उन्होंने कहा भाई इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाओ। वही जवाब देगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया गया। उन्होंने फ़रमाया उज़ैर और अज़ीज़ दो जुड़वां भाई थे। उज़ैर को सौ बरस बाद मौत आ गई उसकी ज़िंदगी में से सौ बरस कट गए और फिर दोनों भाई एक दिन मरे। एक सौ बरस छोटा है एक सौ बरस बड़ा है और वह समुंद्र जिसे अल्लाह ने फाड़ा और फाड़कर ज़मीन को नीचे से निकाला उस पर सूरज एक बार निकला और फिर पानी को मिलाया फिर वहाँ कभी ख़ुश्की नहीं आई।

अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा तीन सौ बरस नींद

अल्लाह पाक अस्हाबे कहफ़ का क़िस्सा सुना रहे हैं ﴿فتية﴾ नौजवान थे जिनकी जवानियाँ उठी थीं। ﴿امنوا بربهم﴾ ईमान लाए ﴿وزدنهم هدى﴾ हमने उनके ईमान को और बढ़ाया। अब एक तरफ़ माँ है, बाप है, दोस्त हैं और एक तरफ़ ﴿لا اله الا الله﴾ "ला इलाहा "इल्लल्लाह" है। बादशाह ने बुलाया और यूँ कहा या तो कलिमे पर बाक़ी रहो और या फिर मरने के लिए तैयार हो जाओ। कलिमा या तुम्हारी जान होगी।

अगर कलिमे में रहना है तो मरना पड़ेगा और अगर कलिमा को छोड़ दोगे तो तुम्हें छोड़ दूंगा नहीं तो तुम सबको क़त्ल कर दूंगा। एक रात की मोहलत देता हूँ और खुद कहीं चला गया। पीछे यह सारे नौजवान इकठ्ठे हुए। उन्होंने कहा भाई ईमान बचाना सबसे ज़रूरी है। न जान ज़रूरी है न माल न माँ-बाप ज़रूरी हैं न बीवी बच्चे। ईमान का बचाना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

अस्हाबे कहफ़ की हिफ़ाज़त

ईमान को बचाकर निकले। गुफ़ा आई, अल्लाह ने सुलाया। अब अल्लाह अपनी क़ुदरत को ज़ाहिर फ़रमा रहा है। एक साल, दो साल, दस साल नहीं सोए तीन सौ बरस लगातार सोते रहे ﴿ولبثوا في كهفهم ثلث مائة سنين﴾ तीन सौ बरस तक सोते रहे।

आदमी ज़्यादा से ज़्यादा आठ घंटे सोए, दस घंटे सोए, बेहोश है तो चौबीस घंटे, अढ़तालिस घंटे सोए लेनिक आख़िर भूख भी

उसे उठाएगी, भूख लगेगी उठेगा, प्यास लगेगी, पड़े-पड़े थक जाए तो उठेगा, पेशाब का ज़ोर आएगा तो उठेगा, हाजत का तक़ाज़ा ज़ोर से आएगा तो उठेगा, पसलियाँ दर्द करेंगी सोते सोते तो उठ बैठेगा लेकिन अल्लह अपनी क़ुदरत क़ाहिरा दिखा रहा है। मैंने जान नहीं निकाली उनकी। उज़ैर की जान निकाल ली थी। इनकी जान नहीं निकाली, इनको सुलाया तीन सौ बरस तक सो रहे हैं।

﴿ونقلبهم ذات اليمين وذات الشمال﴾

हम उनकी करवटें भी बदल रहे हैं, कभी दाई तरफ़ कभी बाईं तीन सौ बरस में पेशाब नहीं आया, किसने पेशाब को रोका? तीन सौ बरस में हाजत नहीं हुई, कौन रोकने वाला है? तीन सौ बरस में भूख नहीं लगी किसने भूख को मिटाया? तीन सौ बरस सोए सोए थके नहीं, किसने उनकी थकावट को दूर किया? तीन सौ बरस में पसलियाँ दर्द नहीं हुई किसने दर्द को हटा दिया? तीन सौ बरस में कीड़ा साँप बिच्छू उन्हें काटने नहीं आया, किस ज़ात ने उन्हें रोका? तीन सौ बरस में कोई शेर चीता उन्हें खाने नहीं आया, कौन सी क़ुदरत ने उन्हें पीछे धक्का दिया? तीन सौ बरस में ज़मीन ने उन्हें नहीं खाया। ज़मीन खा जाती है। निगल जाती है। बड़े बड़ों को ज़मीन मिट्टी बना देती है। ज़मीन पर हुक्म उतरा तुमने खाना नहीं है। हवा पर हुक्म उतरा तुमने इनको जगाना नहीं है। सूरज को हुक्म हुआ ऐ सूरज तेरी किरणें मेरे बंदों पर सीधी नहीं पड़नी चाहिए ﴿تقرضهم﴾ जब सूरज चलता है तो अल्लाह पाक का हुक्म उतरता है जो सूरज की किरणों को उनसे हटा देता है।

तीन सौ बरस के बाद फिर उनको उठाया ﴿ثلث مائة سنين﴾ तीन सौ बरस सो रहे हैं। फिर उठाया ﴿قال قائل﴾ अब एक बोला ﴿كم﴾

﴿لبثنا﴾ यार कितना अरसा सोए? एक बोला ﴿يوما﴾ एक दिन। दूसरा बोला ﴿او بعض يوم﴾ नहीं आधा दिन, बाल नहीं बढ़े, नाखुन नहीं, कपड़े पुराने नहीं हुए, मैले नहीं हुए, फटे नहीं, थकावट नहीं और ﴿كلبهم باسط ذراعيه بالوصيد﴾ कुत्ता बाहर आराम से बैठा सो रहा है और वहाँ से फ़ौजें गुज़र रहीं हैं। उनकी तलाश में मुल्क का कोना-कोना छान मार रहे हैं।

लेकिन अल्लाह उनकी निगाहों पर पर्दा डाल रहे हैं। कुत्ता बाहर बैठा है, वे अंदर सो रहे हैं, फ़ौजें गुज़र रही हैं, किसी को नज़र नहीं आ रहा है। अल्लाह पाक ने अंधा कर दिया।

तीन सौ बरस के बाद उठाया। कितना अरसा सोए? भाई आधा दिन सोए। अच्छा भाई अब भूख लगी है। अल्लाहु अकबर तीन सौ बरस में भूख नहीं लगी। अब उठते ही भूख लगी। भाई कोई भूख का इंतिज़ाम करो। उन्होंने कहा भाई ऐसा करो, जाना और ﴿وليتلطف﴾ नरमी से बात करना ﴿ولا يشعرن بكم احدا﴾ किसी को पता न चले। कहीं हम पकड़े गए तो मारे जाएंगे। उन्हें ख़बर ही नहीं कि बाहर तीन सौ बरस गुज़र चुके हैं।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश का अनोखा वाक़िआ

मर्द व औरत मिलें तो बच्चा होता है। सारी दुनिया देखती है। सारा जहाँ देखता है। लिहाज़ा हर कोई शादी के बाद दुआ करता है कि अल्लाह औलाद दे दो। शादी से पहले भी किसी ने दुआ की? और यह अल्लाह की बंदी मरियम कोने में हुई, नहाने को गई तो फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में सामने आ गया। वह थर्रा गई

﴿انی اعوذ بالرحمن منک ان کنت تقیا﴾ अल्लाह से पनाह मांगती हूँ, कौन है? कहा नहीं डरो नहीं, मर्द नहीं हूँ।

﴿انما انا رسول ربک﴾ फ़रिश्ता हूँ। क्यों आए हो? ﴿لاهب لی غلما زکیا﴾ अल्लाह तुम्हें बेटा देना चाहता है। यह कहने लगीं तौबा! तौबा! ﴿انی یکون لی غلم﴾ मुझे बेटा? ﴿لم یمسسنی بشر﴾ मेरी तो शादी नहीं हुई ﴿ولم اک بغیا﴾ मैं कोई बाज़ारी औरत नहीं हूँ तो यह कैसे हो सकता है? या हराम आए या हलाल से आए तो दोनों काम नहीं हैं।

﴿قال کذالک قال ربک هو علی هین﴾ ऐ मरियम! तेरा रब कह रहा है कोई मस्अला नहीं अभी हो जाएगा। ﴿فنفخنا فیها من روحنا﴾ जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़ूंक मारी। इधर फ़ूंक पड़ी उधर हमल। उसको नौ महीने उठातीं तो किस किसको जवाब देतीं कि मेरी बेबसी है। लिहाज़ा दूसरी क़ुदरत, फ़ूंक से हमल और साथ ही नौ महीने के मरहले नौ पल में तय करवाकर बच्चे की पैदाईश का दर्द लगा दिया ﴿فاجاءها المخاض الی جذع النخلة﴾ और दर्द ने भगाया और एक खुजूर के नीचे जाकर बच्चा दे दिया। और अब सिर पर हाथ रखा ﴿یالیتنی مت قبل هذا﴾ हाय मैं मर जाती ﴿وکنت نسیا منسیا﴾ हाय मेरा दुनिया में आना भी लोग भूल जाते। मैं किस मुँह से शहर को जाऊँ?

जिब्राईल अलैहिस्सलाम फिर आए,

﴿لا تحزنی قد جعل ربک تحتک سریا﴾

ग़म न कर, चश्मा चल गया है ﴿کلی واشربی﴾ खा पी ﴿وقری عینا﴾ इत्मिनान रख और बच्चे को शहर में ले जा। उन्होंने कहा मैं कैसे ले जाऊँ? क्या जवाब दूंगी?

कहा तुम जवाब देना,

﴿انی نذرت للرحمن صوما فلن اکلم الیوم انسیا.﴾

मेरा रोज़ा है, मैंने बात नहीं करनी।

बनी इसराईल रोज़े में बात भी नहीं कर सकते थे। हम रोज़े में भी झूठ बोलें तो रोज़ा नहीं टूटता। वे सच बोलें तो टूट जाता था। इतनी रिआयत लेकर भी अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं हाय! हाय।

﴿فاتت به قومها تحمله﴾ बच्चा गोद में लेकर शहर में आयीं। एक पुकरा पड़ी ﴿یا مریم لقد جئت شیئا﴾ फ़रमाया ऐ मरियम यह क्या किया? ﴿یا اخت هارون﴾ ऐ हारून की बहन! ﴿ما کان ابوك امرء سوء﴾ तेरा बाप तो ऐसा नहीं था ﴿وما کانت امك بغیا﴾ तेरी माँ तो ऐसी नहीं थी ﴿فاشارت الیه﴾ उनकी उंगली उस बच्चे की तरफ़ उठी फिर यूँ कहा इससे बात करो, मेरा रोज़ा है तो वे फट पड़े ﴿کیف نکلم من کان فی المهد صبیا﴾ बेवक़ूफ़ बनाती है, बहाना करने का भी तुझे तरीक़ा नहीं आता। एक तो मुँह काला किया, एक ऐसा बहाना बनाती है, बच्चा कैसे बात करेगा? तो एक हंगामा शुरू हो गया। अभी वे ऐसे ही हूँ हाँ कर रहे थे कि एकदम बच्चे ने बात करनी शुरू की बग़ैर लाउडस्पीकर के सारे डिफ़ेंस में घूम गया, सारे बैतुलमुक़द्दस में घूम गया।

पैदाईशी बच्चे की तक़रीर

انی عبد اللّٰه اتانی الکتاب وجعلنی نبیا وجعلنی مبارکا
اینما کنت واوصنی بالصلوة والزکوة ما دمت حیا وبرا

بوالدتی ولم یجعلنی جبارا شقیا والسلام علی یوم ولدت
ویوم اموت ویوم ابعث حیا ذالک عیسی ابن مریم

ईसा अलैहिस्सलाम ने तक़रीर की। तीसरी क़ुदरत। फूंक से हमल, फ़ौरन बच्चा पैदा हुआ, तीसरी ताक़त ज़ाहिर हुई कि जो ढाई साल के बाद टूटी फूटी बात करने वाला बच्चा यह माँ की गोद में ऐसी साफ़ तक़रीर कर रहा है:

> **मैं अल्लाह का बंदा, मैं किताब वाला, मैं नबुव्वत वाला, मैं बरकत वाला, मैं माँ का फ़रमांबरदार, मैं नहीं हूं बद्‌दाग़, मैं नमाज़ वाला, मैं ज़कात वाला, मैं सलामती वाला पैदाईश के दिन, मैं सलामती वाला मौत के दिन और मैं सलामती वाला क़यामत के दिन।**

यह तक़रीर इस बच्चे से अल्लाह तआला ने करवाकर सारी दुनिया के दिमाग़ों पर हथौड़ा मारा है कि इस काएनात का निज़ाम असबाब से चलता है। अल्लाह किसी सबब का पाबंद नहीं है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की पैदाईश का अनोखा वाक़िआ

सारी काएनात के मसाइल का हल सिर्फ़ एक अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह की ज़ात तो ऐसी क़ुदरत वाली है कि नामुमकिन को मुमकिन बना दे। इस पर एक वाक़िआ पढ़िए।

फ़िरऔन का सारा लश्कर इस कोशिश में है कि मूसा अलैहिस्सलाम पैदा न हों। वह एक साल बच्चे ज़िब्ह करता था, एक साल छोड़ता था। जिस साल छोड़ता था उस साल हारून

अलैहिस्सलाम पैदा हुए। फिर अगर अल्लाह तआला कहीं छिपाकर उनको पालता तो क़ुदरत का कैसे पता चलता?

﴿واوحينا الى ام موسى ان ارضعيه﴾ ऐ मूसा की माँ दूध पिला इसको, ﴿فاذا خفت عليه﴾ जब डर लगे ﴿فالقيه في اليم﴾ तो फिर संदूक़ में डाल देना,

﴿ولا تخافي ولا تحزني انا رادوه اليك وجاعلوه من المرسلين﴾

न डरना न ग़म करना तेरी गोद में रसूल बनकर वापस आएगा। फ़िरऔन का लशकर हरकत में है कि नहीं ज़िंदा रहने देना। अल्लाह का निज़ाम हरकत में है कि करके दिखाना है।

मूसा अलैहिस्सलाम की माँ तरख़ान के पास गयीं कि संदूक़ बना दो। उसको शक पड़ गया कि कोई चक्कर है। वह फ़िरऔन के दरबार में आया कि मुझे बात करनी है कि एक ऐसा चक्कर चल रहा है। जब फ़िरऔन के सामने आया तो अल्लाह पाक ने ज़बान बंद कर दी। वह कहे बोलो क्या बात करनी है? वह बोलना चाहे तो बोल न सके। इशारों से समझाए तो समझ न आए। उसने कहा पागल लगता है, निकाल दो। जब बाहर निकाला तो फिर ज़बान ठीक हो गई। वह फिर वापस आया कि भाई मुझे ज़रूरी बात करनी है। फ़िरऔन ने अंदर आने की इजाज़त दी।

रहम दिली का करिश्मा

फ़िरऔर बनी इसराईल के अलावा अपनी क़ौम में रहम दिल भी था और आदिल भी। इसलिए उसको मोहलत मिल गई। एक दिन मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा या अल्लाह फ़िरऔन तो ख़ुदाई

का दावा करता था तो आपने इतनी मोहलत क्यों दी? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह अपनी प्रजा में रहमदिल था इसलिए मैंने उसको इतनी मोहलत दी।

वह फिर अंदर आ गया कहा क्या बात है? फिर ज़बान बंद हो गई। अब वह समझाना चाहे तो समझा न सके। उन्होंने फिर निकाल दिया। जब बाहर निकला तो फिर ज़बान ठीक हो गई। फिर वह अंदर भागा। जब तीसरी बार उसकी ज़बान बंद हुई तो फ़िरऔन ने कहा अगर अब आए तो इसकी गर्दन उड़ा देना। तो उसने सोचा अल्लाह ही कुछ करना चाहता है। इसमें इंसान बेबस है। चुप करके संदूक़ बनाकर हवाले कर दिया। फिर इन्हें दरिया में डाल दिया गया।

अजाएबाते क़ुदरत

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ ने पूछा या अल्लाह अब यह संदूक़ कहाँ जाएगा? ﴿فليلقه اليم بالساحل﴾ दरिया की मौज इसको किनारे पर लगा देगी।

﴿يأخذه عدو لي وعدو له﴾ इसको फ़िरऔन उठा लेगा। यह सुनकर मूसा अलैहिस्सलाम की माँ का सीना एक दम दहल गया कि या अल्लाह यह आप क्या कह रहें हैं? जिससे बचाना चाहते हैं उसी के पास भेज रहे हैं?

कहा ﴿لا تخافي﴾ इसकी मौत का डर न कर ﴿ولا تحزني﴾ इसकी जुदाई का ग़म न कर ﴿انا رادوه اليك﴾ उसे तेरी गोद में वापस ला दूंगा ﴿وجاعلوه من المرسلين﴾ और उसे रसूल बनाकर दिखा दूंगा।

जब इस बच्चे को पकड़कर फ़िरऔन के दरबार में लाया गया तो फ़िरऔन ने देखते ही कहा ﴿انه قاتل﴾ यही मेरा क़ातिल है, इसे मार दो। खुद आसिया ने कहा ﴿قرت عين لك﴾ यह तो आँखों की ठंडक है। इसे छोड़ दो। इतने मारे हैं यह हमारे घर में पलेगा। क्या हो जाएगा। तो अल्लाह तआला ने फ़िरऔन के घर में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ठहरा दिया। ﴿وحرمنا عليه المراضع﴾ जिस ख़ज़ाने से इसे क़त्ल कराने के लिए पैसा ख़र्च हुआ था। आओ भाई इसे दूध पिलाओ (इसने बड़े होकर मेरा ही सिर लेना है।) मूसा अलैहिस्सलाम किसी का दूध न पिएं। अल्लाह पाक ने सारी औरतों को दूध हराम कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम की माँ ने अपनी बेटी को भेजा था। जाओ हालात देखकर बताना। जब बहन ने देखा कि मूसा किसी का दूध नहीं पी रहे हैं तो उन्होंने कहा मैं एक घर जानती हूँ। उसका पता बता दूँ? उन्होंने कहा ज़रूर बताओ। यह अपनी माँ को बुलाकर लायीं। अब माँ बच्चे को देखे और उसके दिल में मुहब्बत का जोश न आए और चेहरे पर असर न हो। यह कैसे हो सकता है? यह तो इंसानी फ़ितरत के ख़िलाफ़ है।

यही मेरी माँ है

शंहशाह अकबर अमरकोट में पैदा हुआ। दो ढाई साल का था। उसकी माँ काबुल चल गई। ढाई साल बाद वह काबुल गया तो बहुत सारी औरतें बैठी थीं। तो अकबर को छोड़ा गया कि अपनी माँ के पास जाओ। उसने सबके चेहरों को देखा और अपनी माँ की गोद में जाकर बैठ गया। कहाँ से पहचाना? उसके

चेहरे से कि उसकी माँ के चेहरे के एक एक ख़ाल से मुहब्बत फूट रही थी। उसने कहा यही मेरी माँ है।

मूसा अलैहिस्सलाम की अपने घर में वापसी

जब मूसा अलैहिस्सलाम की माँ आयीं तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿ان كادت لتبدى به لو لا ان ربطنا على قلبها﴾

क़रीब था कि मूसा अलैहिस्सलाम की माँ के दिल की बेक़रारी चेहरे पर आ जाती। हमने उसके दिल को बंद कर दिया और मूसा अलैहिस्सलाम की मुहब्बत को खींच लिया और उनकी माँ ऐसे पत्थर हो गई जैसे अपना बेटा है ही नहीं। लेकिन जब उन्हें दूध पिलाया तो वह पीने लग गए। उनकी माँ ने कहा कि मैं ग़रीब औरत हूँ, मैं आपके पास नहीं रह सकती। मेरे और भी बच्चे हैं। मैं तो उसे घर ले जाऊँगी और घर ले जाकर उसे दूध पिलाऊँगी। यह मंज़ूर है तो ठीक है नहीं तो मैं जाती हूँ। फ़िरऔन ने कहा ठीक है, इसे ले जाओ और दूध पिलाओ। और दूध पिलाकर हमारे पास छोड़ जाओ। अब जिस ख़ज़ाने से पैसे ख़र्च करके बच्चे ज़िब्ह किए जा रहे हैं उसी ख़ज़ाने से मूसा अलैहिस्सलाम की परवरिश हो रही है।

आग का ढेर जला न सका मगर क्यों?

मेरे भाईयो! इस काएनात में हुकूमत अल्लाह तआला की है। यहाँ वह होगा जो अल्लाह चाहता है। सारी की सारी नमरूद की

ताक़त इस्तेमाल हुई कि इब्राहीम को फेंकने का वक़्त आया तो आग के क़रीब जाएगा कौन? रास्ता ही कोई नहीं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम से कहने लगे तू खुद चला जा। वह कहने लगे क्यों जाऊँ? तुमने जलाना है फेंको मुझे।

अब फेंकने का तरीक़ा कोई नहीं। क़रीब जाएं तो खुद जलते हैं। शैतान ने एक हथियार बनाकर दिया। गुलेल की तरह। उसमें उतारकर फेंका। कपड़े उतारे रस्सियों से बाँधा।

जब हवा में उड़े तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम दाएं तरफ़ आ गए और पानी का फ़रिश्ता बाएं तरफ़ आ गया बीच में इब्राहीम अलैहिस्सलाम। इधर जिब्राईल अलैहिस्सलाम उधर पानी का फ़रिश्ता और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़ामोश हैं।

बस इतना कह रह हैं ﴿حسبی اللہ ونعم الوکیل﴾ इससे आगे कुछ नहीं बोल रहे हैं। उधर पानी का फ़रिश्ता इंतिज़ार में है कि अभी अल्लाह तआला फ़रमाएगा पानी डालो, आग बुझाओ। जिब्राईल अलैहिस्सलाम इस इंतिज़ार में है कि यह मुझ से कहें तो मैं आगे करूं। तो जब देखा कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम बोलते नहीं तो बेक़रार हो गए कि यह आग में जाएगा तो जल जाएगा। जिब्राईल अलैहिस्सलाम भी तो यही जानते हैं कि आग जलाती है। कहने लगे इब्राहीम अलैहिस्सलाम आपको मेरी ज़रूरत नहीं? ﴿اما الیک فلا﴾ ज़रूरत है पर मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं ﴿واما الی اللہ فنعم﴾ बेशक अल्लाह का ज़रूर मुहताज हूँ पर तेरा मुहताज नहीं हूँ। आग में जा रहे हैं।

जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम से भी नज़र हट गई और पानी के फ़रिश्ते से भी नज़र हट गई तो अल्लाह तआला ने सीधे आग को हुक्म दिया ﴿ینار کونی بردا وسلاما علی ابراھیم﴾ ऐ आग ठंडी हो जा

सलामती के साथ मेरे इब्राहीम पर तो अल्लाह जल्ले जलालुहू ने ऐसा ठंडा फ़रमाया और उसको शोलों को गोद बना दिया।

शोलों ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को गोद में लिया। जैसे माँ बच्चे को चारपाई पर लिटाती है। ऐसे आराम से अंगारों पर बिठा दिया। आग को पारदर्शी बना दिया। यहाँ तक कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बाप आज़र जो जानी दुश्मन और क़त्ल की कोशिश में था। जब उसकी नज़र पड़ी तो उसकी ज़बान से भी बेसाख़्ता निकला ﴾نعم الرب ربك يا براهيم.﴿ ऐ इब्राहीम! तेरे रब के क्या कहने, तेरा रब ज़बरदस्त है। काएनात में जो भी शक्ल है जो भी सूरत है उसको अल्लाह ने बनाया है। वह अल्लाह के क़ब्ज़े में है। वह अल्लाह के ताबे है अल्लाह की चाहत से इस्तेमाल होती है। इस जहान में फ़ैसला अल्लाह का हतमी चलता है जो ज़मीन को कहेगा वह करेगी जो आसमानों को कहेगा वह करेंगे जो हवाओं को कहेगा वह करेंगी जो पानियों को कहेगा वही होगा। सारी काएनात में आख़िरी फ़ैसला अल्लाह का है।

लंगड़े मच्छर का कारनामा

नमरूद के मुक़ाबले में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कलिमे की दावत को दिया। अल्लाह ने लंगड़े मच्छर से पिटवाकर दिखा दिया कि मैं हूँ असल करने वाला। मच्छरों से नमरूद के लश्कर को बर्बाद कर दिया। नमरूद के लश्करों पर मच्छरों ने हमला किया। मच्छरों ने काट काटकर नमरूद के लश्कर को बर्बाद किया नमरूद भागा और अपने महल में पहुँचा और बीवी से कहा मेरे लश्कर को तो मच्छरों ने बर्बाद किया और सब हलाक हुए। इतने

में एक लंगड़ा मच्छर फनफनाता हुआ कमरे में आया और यूँ सिर पर घूमा कहने लगा ऐसे मच्छर तो ऐसे जिन्होंने बर्बाद और वही आके उसकी नाक में घुसा और अल्लाह ने उसे दिमाग़ में पहुँचाया और उसके सिर पर जूते पड़ रहे हैं और जूते पड़ते पड़ते भेजा फटकर मर गया और अल्लाह ने दिखाया, कलिमे की ताक़त को दिखा दिया।

अल्लाह ने हर आसमान को अपने हुक्म और अपनी ताक़त के साथ अलग अलग अहकाम देकर जकड़ दिया, बाँध दिया। इतने बड़े अल्लाह को पुकारते ही नहीं लेकिन जब आजिज़ हो जाते हैं फिर कहते हैं अब तो अल्लाह ही करेगा। अच्छा पहले कौन कर रहा था। अब तो अल्लाह ही शिफ़ा देगा, क्या पहले तू शिफ़ा दे रहा था।

दवा में शिफ़ा नहीं मगर

मूसा अलैहिस्सलाम के पेट में दर्द हुआ कहने लगे या अल्लाह पेट में दर्द है। अल्लाह ने कहा रैहान के पत्ते उबाल कर ले लो। रैहान एक छोटा सा पौदा होता है। उन्होंने उसको रगड़कर पीस कर पी लिया। ठीक हो गए। फिर कुछ दिनों के बाद दोबारा पेट में दर्द हो गया। अल्लाह तआला से नहीं पूछा खुद ही जाकर रगड़कर पीस कर पी लिया। तो दर्द तेज़ हो गया एकदम तेज़ या अल्लाह यह क्या हुआ अल्लाह तआला ने फ़रमाया तूने क्या समझा था इसमें शिफ़ा है। मुझसे क्यों नहीं पूछा, मुझसे क्यों नहीं पूछा? ﴿واذا مرضت فهو يشفين﴾ तेरा रब शाफ़ी है रैहान नहीं, तेरा रब शाफ़ी है।

छोटे से पत्थर की आवाज़

कामयाबी और कामरानी अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह को साथ लेने से काम बनता है। फिर पत्थर भी ऐटम बम बन जाता है। जब तालूत जालूत के मुक़ाबले के लिए निकला तो दाऊद अलैहिस्सलाम उस वक़्त छोटे बच्चे थे। कहने लगे कि मुझे भी साथ ले लें। जब रास्ते में जा रहे थे तो इधर एक पत्थर पड़ा हुआ था।

वह पत्थर कहने लगा कि ऐ दाऊद! मुझे उठा लो। मेरे अंदर जालूत की मौत लिखी हुई है। छोटा सा पत्थर था। उसको उठाकर जेब में डाल लिया। जब मैदान में पहुँचे तो जालूत लोहे का लिबास पहनकर आया, सिर्फ़ आँखें नज़र आ रही थीं। उसने ऐलान कर दिया कि आओ मेरे मुक़ाबले में।

दाऊद अलैहिस्सलाम ने तालूत से कहा कि इसके मुक़ाबले के लिए मैं जाता हूँ। उन्हें इजाज़त मिल गई तो यह छोटा सा नौ उम्र बच्चा मैदान में उतरा तो जालूत ने कहा यह नौ उम्र बच्चा मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी मौत से खेल रहा है। इतने में दाऊद अलैहिस्सलाम ने वही पत्थर उठाकर उसके सिर पर मारा। वह पत्थर सिर से पार निकल गया। इतना छोटा सा पत्थर सिर को पार करके दूसरी तरफ़ निकल जाए। यह कोई अक़्ल की बात है?

﴿وما رميت اذ رميت ولكن الله رمى﴾ तू नहीं मारता बल्कि तेरा रब मार रहा है।

मेरा अल्लाह गवाह है

आप सल्लल्लाहु अलैहिव वसल्लम ने बनी इसराईल के एक आदमी का वाक़िआ सुनाया कि बनी इसराईल में एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि मुझे नक़द रक़म चाहिए और मैं परदेसी हूँ। मेरा घर दरिया के पार बस्ती में मौजूद है। दूसरे आदमी ने कहा कि इस पर गवाह कौन होगा? क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा ﴿وكفى بالله وكيلا﴾ उसने कहा कितना चाहिए? क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा कि तीन सौ। उसको दे दिया और तारीख़े वापसी तय हो गई। जब वह क़र्ज़ मांगने वाला वापस करने के लिए आया तो दरिया में ज़बरदस्त पानी चढ़ रहा था। किश्तियाँ खड़ी हुई थीं। तो यह आदमी सिर पकड़कर दरिया के किनारे बैठकर फ़रियाद करने लगा कि या अल्लाह मैं आपको गवाह बनाया था और वकील बनाया था।

अब तयशुदा वक़्त पर पहुँच न सका तो तेरी गवाही झूठी होगी। जितना मुझ से हो सका मैंने कर दिया। आगे तू काम कर देना। एक बड़ा तिनका लकड़ी का पड़ा हुआ था। उसको अंदर से खोदा और पैसे की थैली उसमें डाली और साथ में एक पर्चा लिखकर डाला कि–

दरिया में पानी के चढ़ाव की वजह से मैं नहीं आ सकता। इस लकड़ी में डाल रहा हूँ और जिसको कफ़ील और गवाह बनाया था उसको कह रहा हूँ कि वह इसको तुझ तक पहुँचा दे और लकड़ी को दरिया में डालकर ख़ुद घर चला गया।

दूसरी लेनदार किश्ती के इंतिज़ार में बैठा हुआ था है। जब

कोई किश्ती नहीं आई तो कहने लगा कि अल्लाह को गवाह बनाया, झूठा और वायदा ख़िलाफ़ निकला। जब वापस जाने लगा तो वह लकड़ी नज़र आई। तो कहा चलो घर के लिए ईंधन तो हाथ आ गया। वह लकड़ी दरिया की मौजों को चीरती हुई उसके पास दरिया के किनारे खड़ी हो गई। उठाकर घर लाया फिर चीरने के लिए कुल्हाड़ा लेकर आया। दो तीन बार कुल्हाड़ा उस लकड़ी पर मारा तो छन-छन करते हुए दिरहम बाहर आ गए और पर्ची भी उठाकर पढ़ी और उसके बक़ाया भी मिल गए।

कुछ ज़माने के बाद वह आदमी आया और कहने लगा कि मेरे साथ यह वाक़िया हुआ था और मैंने इस तरह कर दिया था। अब अगर वह रक़म न पहुँची हो तो यह ले लो तो उसने कहा अल्हम्दुलिल्लाह जिसको तुमने वकील बनाया और गवाह बनाया उसने वह रक़म भी पहुँचा दी और ईंधन भी पहुँचा दिया।

मेरे दोस्तो! हम दीन पर चलें, दीन का काम करें तो अल्लाह की क़सम अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हिफ़ाज़त करेगा। अब बताओ इस काम के लिए कौन कौन तैयार है? उधार नहीं हमें नक़द चाहिए। अब फ़रमाएं कि कौन कौन चार महीने और चिल्ले के लिए नक़द तैयार है?

एक हज़ार कुफ़्फ़ार और तीन सौ तेरह सहाबा की लड़ाई

सबसे पहली लड़ाई जिसमें हक़ व बातिल टकराए वह बदर है। बदर इस्लाम का एक बुनियादी बुनियाद का पत्थर है। नींव

का पत्थर जहाँ से इस्लाम का इतिहास बना। एक तरफ़ पूरी हथियारबंद फ़ौज खड़ी है। हज़ार आदमी हैं जिनमें से तीन सौ घोड़ सवार हैं, सात सौ तलवार वाले हैं, बाक़ी भाले वाले हैं। इधर कुल तीन सौ तेरह आदमी खड़े हैं। ये तीन सौ तेरह बग़ैर तैयारी के निकले हैं। लड़ाई के लिए न ज़हनी तौर पर तैयार हैं, न हथियार हैं, सारे लश्कर में आठ तलवारें हैं। सात सौ तलवार और आठ तलवार क्या मुक़ाबला है? तीन सौ घोड़े सवार और दो घोड़े सवार क्या मुक़ाबला है? साठ ऊँटनियाँ यह कुल जंग का सामान है बदर की लड़ाई का कुल जंग का सामान। और एक हज़ार हैं उस ज़माने के सारे हथियारों के साथ और अल्लाह का नबी सज्दे में पड़ा हुआ है—

﴿ان تهلك هذه العصابة فلن تعبد﴾

इनको तूने मार दिया तो तेरा नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा। यह अल्फ़ाज़ बदर के सहाबा की अज़मत को बता रहे हैं कि अल्लाह का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना ऊँचा मक़ाम दे रहा है कि अगर ये मिट गए तो फिर तेरा नाम भी दुनिया से मिट जाएगा। ये ऐसी बुनियादी लोग थे।

और इस दिन जो रोए हैं और अल्लाह से मांगा है। कुछ भी नहीं हाथ में और इधर सबने भी मांगा—

﴿اذ تستغيثون ربكم فاستجاب لكم﴾

सब मांग रहे हैं या अल्लाह! तू ही करेगा, तू ही करेगा। तो अल्लाह ने कहा—

﴿لبيك لبيك انى ممدكم بالف من الملائكة مردفين﴾

मेरे हज़ार फ़रिश्ते आ रहे हैं। काफ़िर एक हज़ार फ़रिश्ते भी एक हज़ार। एक बात समझाइ। कहा फ़रिश्तों को न समझना कि फ़रिश्तों से काम होता है। काम अल्लाह ही करता है ﴾وما النصر الا من عند الله﴿ काम अल्लाह ही बनाता है।

दूसरी मदद आई ﴾اذ يغشيكم النعاس امنة منه﴿ अल्लाह ने नींद दे दी। सब सो गए। थके हुए थे, सो गए, थकावट दूर हो गई। तीसरी मदद क्या फ़रमाई? एक तो अल्लाह ने फ़रिश्ते भेजे, शैतान के वसवसे दूर हुए और जमाव हो गया, क़दम जम गए और अल्लाह ने दिलों को मज़बूत कर दिया। फिर पाँचवी मदद क्या आई? अल्लाह ने फ़रिश्तों को लड़ने का हुक्म दे दिया। फ़रिश्ते आते तो थे हमेशा लेकिन लड़ते नहीं थे। जंगे बदर में फ़रिश्ते लड़े हैं आकर। यह पहली जंग थी जिसमें फ़रिश्तों ने आकर लड़ाई की और अल्लाह ने उनको बताया—

﴾فاضربو فوق الاعناق واضربوا منهم كل بنان.﴿

उनकी गर्दने काटना और उनके हाथ काटना।

तो कहाँ तीन सौ तेरह और कहाँ एक हज़ार। जब लश्कर आमने सामने होने लगे तो एक हवा चली। एक ज़ोर से हवा आई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह हवा कैसी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा जिब्राईल अलैहिस्सलाम आ गए फ़रिश्तों के साथ।

फिर एक दूसरी हवा आई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलअल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! यह हवा कैसी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मीकाईल अलैहिस्सलाम

आ गए फ़रिश्तों के साथ। अल्लाह तआला ने मिनटों में पासा पलट कर दिखा दिया। अल्लाह की मदद को साथ लिए बग़ैर कामयाबी नामुमकिन है।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का दरिन्दों के नाम ख़त

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु मदाईन के अफ़सर बनकर आए। बड़े गर्वनर बनकर आए तो चोरियाँ शुरू हो गईं। पहले तो कोशिश करते रहे कि ऐसे ही ठीक हो जाएं। फिर कहने लगे अच्छा भाई काग़ज़ क़लम लाओ। लिखा मदाईन के गर्वनर की तरफ़ से जंगल के दरिन्दों के नाम आज रात तुम्हें जो भी चलता फिरता संदिग्ध आदमी नज़र आए उसे चीर फाड़ देना। अपने दस्तख़त करके फ़रमाया शहर के बाहर इसको कील गाड़के लटका दो। इधर राब्ता दो रकअत नमाज़ के ज़रिए ऊपर और इधर जंगल के दरिन्दों को हुक्म। इधर राब्ता ऊपर है तो ख़ाली मोहरें ही हैं शतरंज की मोहरों की तरह। अच्छा कहा भाई आज दरवाज़ा खुला रहेगा शहर का दरवाज़ा बंद नहीं होगा। जैसे ही रात गुज़री शेर गुर्राते हुए अंदर चले आए। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि बाहर निकल सकें। आपकी दो नफ़िल वह काम करेंगी जो बड़े-बड़े हथियार काम नहीं कर सकेंगे। और इन सारे ज़ालिमों और बदमाशों की अल्लाह तबारक व तआला गर्दनें मरोड़ कर तुम्हारे क़दमों में डाल देगा। सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल वाला तरीक़ा सीख लें। तो इसकी भी ट्रेनिंग चाहिए। बग़ैर ट्रेनिंग के

कैसे आएगा। तो जो तबलीग़ का काम है इस ज़िंदगी की ट्रेनिंग है कि जिसमें हमारे जिस्म के सारे हिस्से अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ताबे हो जाएं।

अल्लाह की मदद का नज़ारा

हज़रत उक्बा बिन नाफ़े जब पहुँचे त्युनिस में तो कहरवान का शहर अब भी मौजूद है। यह पहले जंगल था। ग्यारह किलोमीटर लम्बा चौड़ा जंगल था। यहाँ छावनी बनानी थी। तो लश्कर में उन्नीस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम थे। उन्होंने सहाबा को लेकर एक टीले पर चढ़कर ऐलान किया कि जंगल के जानवरों! हम अल्लाह और उसके रसूल के ग़ुलाम हैं। यहाँ छावनी बनानी है। तीन दिन में ख़ाली कर दो और उसके बाद जो हमें मिलेगा हम उसे क़त्ल कर देंगे। यह वाक़िआ ईसाई इतिहासकारों ने भी अपनी किताबों में नक़ल किया है। ईसाई इतिहासकार इस वाक़िए को लिखते हैं। इस सच्चाई को क़ुबूल करते हैं। तो तीन दिन में सारा जंगल ख़ाली हो गया और इसको देखकर हज़ारों अमरीकन क़बीले इस्लाम में दाख़िल हो गए कि इनकी तो जानवर भी मानते हैं हम कैसे न मानें।

आँख का क़ीमा बन गया मगर रौशनी लौट आई

क़तादा बिन नोमान एक सहाबी हैं। ओहद की लड़ाई में उनकी आँख में एक तीर लगा। अंदर घुस गया तो सारी आँख चूरा चूरा हो गई क़ीमा हो गया। आँख का वह क़ीमा उठाकर ले

आए या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी आँख ज़ाए हो गई। आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह मेरी आँख ठीक कर दे। उन्होंने कहा दोनो ही लूंगा। अल्लाह के पास क्या कमी है। दोनों ही लूँगा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी बीवी को बड़ा बुरा लगेगा कि मेरी आँख नहीं है। तो आप मुस्कुरा दिए वही कीमा था, उठाया उसकी आँख ढेले में रखा और यूँ हाथ फेरा ﴿اللهم اجعلها احسن عينين﴾ ऐ अल्लाह! इस आँख को दूसरी से भी ख़ूबसूरत कर दे फिर वह आँख दूसरी से ज़्यादा ख़ूबसूरत होकर चमक रही थी देख रही थी। तो शाफ़ी तो अल्लाह है जो चाहे कर दे तो भाई अल्लाह को साथ ले लो।

वह अल्लाह जब इरादा करेगा। आपके काम बनाने का कोई उसको रोक नहीं सकेगा। सारा जहान आप के पीछे और अल्लाह आपके आगे तो सारा जहान क़रीब नहीं खड़ा हो सकता। सारा जहान आपके आगे आ जाए हिफ़ाज़त को और अल्लाह तआला का इरादा हो हलाकत का यह सब मिट्टी की मूर्ति साबित होंगे कुछ नहीं कर सकते। ﴿وان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ मैं मुसीबत में डाल दूँ पाकिस्तान को तो सारी दुनिया के माहिरीने माशियात उस मुसीबत को दूर नहीं कर सकते। लोग पागल हैं कि अंधों से पूछ रहे हैं कि रास्ता बताओ, ﴿وان يردك بخير﴾ और अगर मैं इनकी भलाई का इरादा कर लूँ तो सारा जहाँ मिलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

तुमने तलवार देखी है हाथ नहीं देखा

जब सहाबा ईरान में दाख़िल हुए और ईरान के बादशाह यजिदगर्द

के पास गए तो दरबारी हँसने लगे कि अच्छा इन तीरों से ईरान को जीतने आए हो। उनके तीर छोटे-छोटे थे। ईरानियों के तीर बड़े-बड़े थे और कहा कि छोटी-छोटी तलवारों से ईरान को जीतोगे? तो सहाबा ने कहा कि तुम इसकी तेज़ी मैदान में देखोगे, हमारे साथ अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम है। हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं। आज वह छुटी हुई है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का अल्लाह पर तवक्कुल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इशा की नमाज़ पढ़कर घर की तरफ़ निकले तो साथी पहरा दे रहे हैं। कहा ये क्यों पहरा दे रहे हैं? कहा आपको ख़तरा है इसलिए पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया किसकी वजह से पहरा दे रहो, ज़मीन वालों से या आसमान वालों से? कहा आसमान वाले से कौन पहरा दे सकता है, हम तो ज़मीन वालों से पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया जाओ सो जाओ, आसमान वाला जब तय करता है तो ज़मीन वालों के पहरे नफ़ा नहीं देते, जब आसमान वाला तय नहीं करता तो यहाँ तीर तलवार कुछ असर नहीं करता। जाओ आराम करो। वापस भेज दिया।

मेरे भाईयो! आज मुसीबत पर अल्लाह की तरफ़ दौड़ ख़त्म, तंगी में अल्लाह याद नहीं आता, मुसीबत परेशानी में याद नहीं आता। जब सारे असबाब टूट जाते हैं तब अल्लाह को याद करते हैं। कोई डाक्टर के पास जाओ, कोई थानेदार के पास जाओ,

कोई कहे वकील और जज के पास जाओ। तो मैं अल्लाह से तअल्लुक़ काटकर अपनी जैसी मख़्लूक के पास जाऊँ तो मुझसे बड़ा बेवक़ूफ़ कौन होगा।

तू अल्लाह से क्यों नहीं मांगता?

हज़रत अमीर मआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का वज़ीफ़ा तय था, दीनार और दिरहम। एक दिन आने में देर हो गई और आई बड़ी तंगी तो ख़्याल आया कि ख़त लिखकर याद दिलाऊँ। क़लम और दवात मंगाई फिर एकदम छोड़ दिया। क़लम काग़ज़ सिरहाने रखकर सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया हसन! मेरे बेटे होकर मख़्लूक़ से मांगते हो? कहा तंगी आई। तो फ़रमाया तू मेरे अल्लाह से क्यों नहीं मांगता? कहा क्या मांगू? फ़रमाया यह मांगो, ऐ अल्लाह! मेरे दिल में यक़ीन भर दे ﴿وقطع رجائی عمن سواك﴾ सारी मख़्लूक़ से मेरी उम्मीदें काट दे कि या अल्लाह तू ही मेरे दिल व दिमाग़ में समा जाएं, बाक़ी सारी मख़्लूक़ से मेरी उम्मीदें कट जाएं।

اللهم ما دعوت عنه قوتی ويقصر عنه عملی ولم تنتهی اليه
رغبتی تبلغ مسئلتی ولم يجری علی لسانی مما اعطيت احد
الاولين والآخرين من اليقين تخصه عنی به يا رب العالمين.

या अल्लाह तेरे ऊपर तवक्कुल का वह दर्जा जिसको मैं ताक़त से न ले सका, अपनी उम्मीद और तसव्वुर भी उसका क़ायम न कर सका, मेरा सवाल अभी तक उस तक न पहुँच सका, मेरी ज़बान पर भी यक़ीन का वह दर्जा न आ सका। वह इतना ऊँचा

दर्जा है यक़ीन का जो मेरी ज़बान पर भी न आया, मेरी मेहनत के दायरे में न आया, वह दर्जा या अल्लाह तूने अपने बंदों में से किसी को दिया है, वह दर्जा मुझे भी नसीब फ़रमा दे।

क्या ज़बरदस्त दुआ है। बेटा यह दुआ मांग। कुछ दिन के बाद एक लाख के बजाए पंद्रह लाख पहुँच गया।

हीरे से भरी हुई किश्ती

मालिक बिन दीनार रह० कुछ साल पहले शराब में मस्त रहते थे। फिर अल्लाह ने हिदायत दी। फिर जान लगाई। फिर यह मक़ाम आया ﴿فنظر نظرة في السماء﴾ आसमान की तरफ़ यूँ देखा तो चारों तरफ़ से किश्ती को मछलियों ने घेरा डाल दिया और हर मछली के मुँह में एक हीरा था। तो उन्होंने हर मछली के मुँह से एक हीरे का पत्थर निकाला और ज़ुन्नून मिसरी रह० को दिखाया कि आप ये ले लें मैंने चोरी तो नहीं की जिसका गुम हुआ है उसको दे दें और वह ख़ुद किश्ती से उतरे। पानी के ऊपर चलते हुए पार चले गए।

अल्लाह के बन गए तो समुंद्र भी नहीं डुबोएगा

हदीस पाक में आता है कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर तवक्कुल और भरोसा होगा, वह पानी पर चले तो पानी उसको रास्ता देगा, उसको डुबा नहीं सकेगा,

﴿لو كان لابن آدم حبة الشعير من اليقين ان يمشي على الماء﴾

मेरे भाईयो! अल्लाह से अपना तअल्लुक़ बना लें।

अल्लाह को साथ लोगे तो काम बनेंगे

जब तक अल्लाह मुसलमानों के साथ है, उनकी कोई तदबीर कामयाब नहीं हो सकती। जब अल्लाह साथ है ﴿ان ينصركم الله فلا غالب لكم﴾ अगर मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। ﴿ان يخذلكم فمن ذالذى ينصركم من بعده﴾ अगर मैं तुम्हें छोड़ दूँ तो कौन तुम्हारी मदद करेगा?

इस आयत से पता चला कि अल्लाह हमारे साथ होना चाहिए। हुकूमत हमारे साथ हो या न हो, फौज हमारे साथ हो या न हो, हथियार ज़्यादा हों या न हों तो भी हमारा ही नाम ऊँचा होगा, हमारा ही पल्ला भारी होगा, हमारा ही बोल ऊँचा होगा, उन्हीं को इ़ज़्ज़त मिलेगी जिनके साथ अल्लाह है और अगर अल्लाह साथ नहीं है तो हज़ारों ऐटम बम बना लें तो कोई मस्अला हल नहीं होगा। यह कोई मिठाई बांटने की चीज़ नहीं है। हाँ अगर इंसान तौबा कर ले तो यह मिठाई बांटने की चीज़ है कि अब अल्लाह साथ हो गया।

बनू अब्बास के हथियार क्या काम आए चंगेज़ियों के सामने? अलाउद्दीन ख़्वारज़मी शाही सलतनत का घमंडी इंसान था। चार लाख फ़ौज तैयार की। चंगेज़ ख़ान लुटेरा था और दो लाख लश्कर के साथ दो हज़ार किलोमीटर का सफ़र करके आया था। कहाँ वह लश्कर पहाड़ी कोह क़राक़रम के सिलसिलों को चंगेज़ ख़ान ने पार किया। आज तक कोई हाकिम, कोई सालार, कोई फ़ौज पार न कर सकी। अल्लाह कि क़ुदरत कितनी पेचीदा औद दुश्वार गुज़ार घाटियों से वह गुज़रा। एक सिपाही भी रास्ते में ज़ाए नहीं हुआ, कोई भी फिसल जाए। नोकीली चट्टानों पर भी सफ़र किया। दो

लाख के लश्कर में एक आदमी भी फिसलकर नहीं मरा। यह इतना थका लश्कर पराए देश में लड़ने आया और वहाँ चार लाख का ताज़ा दम फ़ौज उसके इंतिज़ार में है। फिर भी अल्लाह ने उसके टुकड़े करवा दिए और चालीस साल में उसने पूरी इस्लामी हुकूमत को ज़मीन चटा दी और ख़ून की नदियाँ बहा दीं। जब अल्लाह तआला साथ छोड़ देता है तो फिर ऐटम बम बनाने से काम नहीं बनता।

मौत से ज़िंदगी का सफ़र

एक औरत लाहौर में आई। बड़े मालदार आदमी की बेटी थी और अभी भी ज़िंदा है। उसको जिगर में कैंसर हो गया। वहाँ एक बुज़ुर्ग के पास गई कि मैं अमरीका इलाज के लिए जा रही हूँ। आप मेरे लिए दुआ करें। उन्होंने एक छोटी सी दुआ दी,

﴿يا بديع العجائب بالخير يا بديع﴾

"या बदीइल अजाईबि बिल ख़ैर या बदीअ"

एक महीने तक उस औरत ने यह वज़ीफ़ा पढ़ा। एक महीने बाद हस्पताल में चैक कराया तो डाक्टरों ने कहा यह वह मरीज़ नहीं है जो पहले हमारे पास लाया गया था। अल्लाह मुर्दों को ज़िंदा कर सकता है तो नामुमकिन बीमारियों में भी सेहत दे सकता है। अल्लाह चाहे तो मौत को ज़िंदगी में बदल देता है। ﴿العظمة لله﴾ सारी अज़मतें अल्लाही की हैं।

पैर चाटने वाला शेर

अबुल हसन ज़ाहिर ने अहमद बिन तूलून को नसीहत की।

उसको गुस्स चढ़ गया। तो उसने शेर के सामने डलवा दिया। हाथ पैर बंधवाकर भूखे शेर के सामने और सब को इकठ्ठा किय कि बादशाहों के साथ गुस्ताख़ी करने वाले का अंजाम देखा जाए। सब इकठ्ठे हो गए।

शेर को जब छोड़ा वह आया। जाएज़ा लिया और फिर पाँव की तरफ़ आकर बैठ गया। आपके पाँव चाटने लगा जैसे जानवर अपने बच्चे को चाटता है। इज़्हारे मुहब्बत, यह प्यार है, चाट रहा है, चाट रहा है। इस पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं तो बर्बाद हो गया।

शेर को बाहर निकाला गया। इनको वापस बाहर लाए। लोग कहने लगे कि हज़रत! शेर आपके पाँव की तरफ़ बैठ गया तो वह आपको खा भी सकता था। तो उस वक़्त आप क्या सोच रहे थे? कहने लगे मैं सोच रहा था कि शेर मेरे पाँवा चाट रहा है। पता नहीं मेरे पाँवा पाक हैं या नापाक हैं। मैं यह सोच रहा था।

﴿العظمة لله﴾ अल्लाह की अज़मत ऐसी दिल में उतरी कि शेर भी उनके सामने बकरी हो गया और हम बकरियों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते। अपनी जैसी मख़्लूक़ से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते।

अल्लाह को मना लो

भाईयो! अल्लाह से तअल्लुक़ बना लें। अल्लाह के वास्ते अपने अल्लाह को राज़ी कर लें। मस्अला ऊपर से हल होगा, नीचे से हल नहीं हो सकता। और वह हल होगा तौबा से, अल्लाह के सामने रोने धोने से। कहीं वह दिन आ गया कि जिस दिन के

हंगाम को अल्लाह तआला ﴿الطامة الكبرى﴾ कह रहा है ﴿الصاخة﴾ कहा रहा है और गले में ज़ंजीर पड़ गई तो अब कोई नहीं बचा सकता। फिर हम ख़ून के आँसू रोएंगे तब भी रहम नहीं आएगा। और यहाँ छोटी मोटी हाय भी निकल जाए तो अल्लाह तआला ख़ुश हो जाता है चलो! मेरे लिए हाय तो की है। मेरे लिए हाय तो की है।

एक आदमी बुत की पूजा करता था, ﴿يا صنم﴾ या सनम कहीं ग़लती से ﴿يا صمد﴾ या समद या समद निकल गया। अल्लह ने कहा ﴿لبيك لبيك يا عبدى﴾ लब्बैक! लब्बैक! लब्बैक! या अब्दी। फ़रिश्तों ने कहा तुझे तो जानता भी कोई नहीं, ग़लती से निकल गया। अल्लाह ने कहा सत्तर साल से इंतिज़ार कर रहा था। कभी तो मुझे बुलाएगा चाहे बेख़बरी में बुलाया है। मेरे ज़िम्मे तो जवाब देना है।

साठ हज़ार काफ़िरों के मुक़ाबले में साठ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम

आज के ऐटम बम से डरना ऐसा है जैसा बुतों से डरना। ऐटम बम पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है उनके दिमाग़ों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। उनकी तदबीरों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है। उनके दिलों पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मेरी तदबीरें नहीं जानते। अल्लाह तआला ताक़तवर से बेताक़त कर दे। अगर हम ﴿لا اله الا الله﴾ "ला इलाहा इल्लल्लाह" की ताक़त को समझते तो ये सब हमें खिलौने नज़र आते। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु

को जब पता चला कि साठ हज़ार अरब ईसाई चौबीस हज़ार कुफ़्फ़ार जंगे यरमूक में उनके सामने हैं और मुसलामन छत्तीस हज़ार थे। रोमियों के सरदार बहान ने कहा तुम अरब हो, तुम जाओ उनका मुक़ाबला करो।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को जब पता चला कि यह अरबियत की बुनियाद पर यह कह रहे हैं तो अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा तीस, साठ हज़ार के मुक़ाबले में। तो पूछा हकीकत कह रहे हो या मज़ाक़ कर रहे हो। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु बोले कुफ़्र के ज़माने में बड़ा दिलेर था। इस्लाम लाकर बुज़दिल बन गया। कहने लगे मैं बुज़दिली की नहीं इंसाफ़ की बात करता हूँ

फ़रमाने लगे नहीं अगर तुम ने जाना है तो साठ आदमी लेकर जाओ किसके मुक़ाबले में साठ हज़ार के मुक़ाबले में। यह अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हु का मशवरा था। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु अमीर थे। उन्होंने फ़रमाया अबू सुफ़ियान ठीक कहते हैं तो अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि साठ आदमी ले लो। तो कहने लगे कि मैं ऐसे आदमियों का चुनाव करूंगा कि अगर वे अल्लाह के यहाँ हाथ उठाएंगे तो अल्लाह तआला उनके हाथ ख़ाली नहीं लौटाएगा। उन्हें बताऊँगा कि हम अरबी होने की वजह से जीत नहीं पा रहे हैं। अल्लाह के साथ होने की वजह से फ़तेह पा रहे हैं।

जंगे बदर में अल्लाह की मदद

﴿ولقد نصركم الله ببدر وانتم اذلة﴾

जंगे बदर में आयतें उतरी हैं। तुमने कहा था कि कहाँ है मदद तो आ गई मदद। आप भी बाज़ आ जाओ। अच्छी बात है। और अगर तुमने दोबारा हमला किया तो अल्लाह कहता है मैं हमला करूंगा फिर तुम्हारी कोई ताक़त तुम्हें नफ़ा नहीं दे सकती। मैं ईमान वालों के साथ हूँ। ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ लगाई अब्बास! ज़ुबैर! अब्दुर्रहमान! सरार बिन अज़वर कहाँ है? ग़र्ज़ साठ आदमियों को साथ लिया और साठ हज़ार पर जाकर पड़े। जबला कहने लगा कि क्या कर रहे हो। कहने लगा होश में हो। कहने लगे होश में हूँ। एक हमला हुआ, दूसरा हमला हुआ, तीसरा हमला हुआ। तीसरे पर दरार पड़ी। सफ़ में नौ दस टोलियाँ बना दीं। फ़रमाते हैं कि कोई माँ इन जैसा नहीं जनेगी। कहते हैं मैंने देखा कि बीस बार कुफ़्फ़ार ने ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल करने के लिए उस टोली पर हमला किया। हज़रत अब्बास रज़ियल्लहु अन्हु आगे बढ़ते थे और ऐलान करते थे कि अब्बास का बेटा फ़ज़ल। ऐ कुत्तों की जमाअत मेरे नबी के साथियों से दूर हो जाओ। उन्होंने बीस हमलों को तोड़ दिया।

वह अकेले नहीं तोड़ा, तुम नहीं तीर मार रहे थे, कहा मैं मार रहा हूँ, तुम क़त्ल नहीं कर रहे हो मैं क़त्ल कर रहा हूँ, तुम ने नहीं मारा मैंने मारा है।

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु की करामत समुंद्र पर हुकूमत

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु समुंद्र में जा रहे हैं। तुफ़ान

आ गया। कहने लगे ﴿اسكن يابحر هل انت الا عبد حبشى﴾ ऐ समुंद्र थम जो तू काला हब्शी ही तो है। यह काला हब्शी क्यों कहा? समुंद्र जब गहरा होता है तो काली छाल देता है। कहने लगे ठहर जा! ऐ समुंद्र तू काला हब्शी ही तो है। दूसरी मौज नहीं उठी, इसके बाद वह थम गया।

और किश्ती में सफ़र कर रहे हैं और अपना क़ुरआन सी रहे हैं। सूई हाथ से गिरकर पानी में चली गई, पानी में। कहने लगे

﴿عازمت عليك على رب الا رددت على ابرتى﴾

ऐ अल्लाह! तुझे क़सम देता हूँ मेरी सूई मुझे वापस कर दे, मेरे पास कोई दूसरी सूई नहीं है। वह सूई पानी पर यूँ खड़ी हो गई।

एक वक़्त था जब मुसलमान उठता था तो सारी काएनात के बातिल पर लरज़ा तारी हो जाता था और वे अपने ऐवानों में थरथर काँपते थे। वह वक़्त था जब मुसलमान ने कलिमा सीखा हुआ था। आज मुसलमान ने कलिमा नहीं सीखा। इसलिए दुनिया की कोई ताक़त उसे अल्लाह के यहाँ सुर्ख़रू नहीं कर सकती।

करामत! उंगली के इशारे से क़िला गिर गया

हज़रत शराबील बिन हसन रज़ियल्लाहु अन्हु एक पतले से सहाबी थे। "वही" के कातिब थे, "वही" लिखने वाले थे। मिस्र में एक क़िला फ़तेह नहीं हो रहा था। कुछ दिन गुज़र गए। एक दिन शराबील बिन हसन को जोश आया। अपने घोड़े को ऐड़ लगाकर आगे हुए और फ़सील के क़रीब जाकर फ़रमाया—

ऐ क़िब्तियों की सुनो! हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें

बुला रहे हैं अगर उसका इरादा हो जाए तो आन के आन में तुम्हारे इस किले को तोड़ सकता है और ﴿لا إله إلا الله، الله أكبر﴾ कहकर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आकर गिरा। यह कलिमा सीखा हुआ था। मैं आपको पक्की रिवायतें बता रहा हूँ। यह कलिमा सीखा हुआ था। ये लोग वह गधे नहीं थे जिसने शेर की खाल को पहन लिया था।

हम गधे हैं जिन्होंने शेर की खाल को पहना हुआ है और कहते हैं हम इस्लाम वाले हैं। नहीं मेरे भाईयो! हमने अभी कलिमा ही नहीं सीखा। जब कलिमा अंदर उतर जाता है तो बातिल ऐसे टूटता है जैसे तुम अंडे के छिलके को तोड़ते हो।

हज्जाज बिन यूसुफ़ का अल्लाह पर यक़ीन

हज्जाज बिन यूसुफ़ इस उम्मत का ज़ालिम गिना जाता है। उसकी ज़िन्दगी में कभी तहज्जुद क़ज़ा नहीं हुई और हफ़्ते में उसका क़ुरआन ख़त्म होता था, हफ़्ते में क़ुरआन ख़त्म करता था, तीन दिन में, पाँच दिन में क़ुरआन ख़त्म करता था। कभी ज़िन्दगी में झूठ नहीं बोला मरते दम तक और यक़ीन ऐसा था कि एक दफ़ा उसकी बीवी पर कुछ असरात हुए। उसने किसी आमिल को बुलवाया और उसने दम करके लोहे की कील रख दी कि इसको दफ़न कर दो, उन्होंने कहा यह क्या चीज़ है? उन्होंने कहा तुम अपने हब्शी गुलाम बुलाओ। दो हब्शी बुलाए कि लकड़ी डालकर इसको उठाओ। दो गुलाम ज़ोर लगा रहे हैं, उठा रहे हैं। वह छोटा सा कील नहीं उठता फिर दो और लगाए चार फिर दो और छः फिर दो और आठ, दो और लगाए दस बारह गुलाम

लगाए। छः इस तरह छः इस तरह इस छोटे से कील को उठा रहे हैं उठता ही नहीं। उस (जादूगर ने) कहा देखी इसकी ताक़त यह है। इस पर हज्जाज ने कहा पीछे हट जाओ अपनी छड़ी उठाई और आयत पढ़ीः

ان ربکم الله الذی خلق السموٰت والارض فی
ستة ایام ثم استوی علی العرش۔

यह आयत पढ़कर जो छड़ी डाली और कील हवा में उड़ता हुआ वह गया। उन्होंने क़हा भाग जाओ मैं तुम्हारे अमलों का मुहताज नहीं हूँ। यक़ीन की ताक़त ने उसके जादू को तोड़ दिया।

कलिमा तैय्यबा की क़ुव्वत

तो भाईयो! आज अल्लाह की मुहब्बत दिलों से निकल गई है। अल्लाह पर से भरोसा और यक़ीन उठ गया है। वह हमारे सारे मसाईल हल कर देगा। इसका इल्म तो है मगर इसका यक़ीन ढीला पड़ गया है। इस उम्मत का काम है कि अज़मत, किबरियाई, जबरूत, जलाल के क़िस्से सुनाकर लोगों के दिलों में जितने बुत हैं उनको तोड़ते हैं। अंदर के बुतों को तोड़कर ला इलाहा का नक़्श दिलों में उतारे हैं कि "ला इलाहा इल्लल्लाह" दिल में उतर जाए। एक हदीस से आप अंदाज़ा लगाइए ﴿والذی نفسی بیدی﴾ उस ज़ात की क़सम जो मेरी जान का मालिक है—

لو جی بالسموات السبع والارضین السبع وما فیھن وما بینھن وما
تحتھن فوضعن فی کفة لو جحت بھن المیزان ولا اله الا الله فی کفة.

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया इतना बड़ा तराज़ू हो कि उसके एक पलड़े में सात आसमान और सात ज़मीन रख

दिए जाएं और उनके दर्मियान में जो कुछ भी हो, उन सबको रख दिया जाए और दूसरी तरफ़ "ला इलाहा इल्लल्लाह" तो यह "ला इलाहा इल्लल्लाह" सब को हवा में उठा देगा और यह वज़नी हो जाएगा और हमारी मेहनत यह है कि हम इसको दिल में उतारें, इसको सीखें, इसकी दावत दें।

"ला इलाहा इल्लल्लाह" में काएनात की ताक़त नहीं अल्लाह की ताक़त छिपी हुई है। अल्लाह वह ज़ात है न उसकी कोई शुरू न उसका कोई आख़िर है।

अल्लाह से दोस्ती का फ़ायदा

एक बार हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० अपनी माँ से कहने लगे मुझे अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर दो। माँ ने कहा जाओ मैंने अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया तो ये घर से निकले तो उन्नीस साल बाद वापस लौटे। रात को घर पहुँचकर दरवाज़े पर दस्तक दी तो अंदर से माँ ने कहा मैंने आपको अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर दिया था और दी हुई चीज़ को वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है। चले जाओ क़यामत के दिन मुलाक़ात होगी। दरवाज़ा नहीं खोला।

﴿اللقاء يوم اللقاء﴾ मुलाक़ात मुलाक़ात के दिन होगी। यह बेटे की क़ुर्बानी थी। उसको क्या मक़ाम मिला। इस लड़के ने बाद में जाफ़र बिन मंसूर के ख़िलाफ़ फ़तवा दिया। अबू जाफ़र ने हुक्म लागू कर दिया कि मैं मक्का मुकर्रमा आ रहा हूँ सूली तैयार की जाए और उसको मेरे सामने सूली पर लटका दिया जाए। यह हतीम में फ़ुज़ैल बिन अयाज़ की गोद में सिर रखकर लेटे हुए थे।

सुफ़ियान बिन ऐनिया आकर कहने लगा कि सुफ़ियान बिन

सौरी उठो और भाग जाओ। अबू जाफ़र ने तुझे सूली पर लटकाने का हुक्म दिया है। उठकर सीधे मुलतज़िम पर आकर अल्लाह से फ़रियाद की कि या अल्लाह आपने अबूजाफ़र को मक्के के अंदर दाख़िल होने दिया तो दोस्ती टूट जाएगी। अबू जाफ़र का मक्का पहुँचना तो दरकिनार ताएफ़ तक नहीं पहुँच सका। ताएफ़ के पीछे ही पहाड़ों में मर गया। आज उस जाबिर और ज़ालिम की क़ब्र का भी किसी को पता नहीं है कि कहाँ पड़ा हुआ है।

ईमान सबसे बड़ी दौलत

सबसे बड़ी दौलत ईमान है। इसको तो ज़ाए कर रहे हैं। दस डालर की चीज़ ख़रीदकर लाते हैं और चैकिंग करते हैं कि कहीं ज़ाए न हो जाए। एक किलो गोश्त ख़रीदकर लाते हैं और उसको लपेटकर लाते हैं कि कहीं ख़राब न हो जाए। उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ्रिज बना रखा है। मेरे भाईयो! दस डालर की चीज़ की हिफ़ाज़त का इंतिज़ाम कर रखा है, ईमान को रखने को कोई इंतिज़ाम नहीं है कि--

आँखों ने ग़लत देखा तो ईमान लुटा, कानों ने ग़लत सुना तो ईमान लुटा, हराम खाया तो ईमान लुटा, अपनी शोहरत को ग़लत इस्तेमाल किया तो ईमान लुटा।

सबसे बड़ी दौलत तो लुटा दी। सबसे बड़ी दौलत तो बर्बाद कर दी तो पैसा कमाकर क्या करोगे? मैं कहता हूँ कि छोटे से छोटा अमल नेकी का न छोड़ो और छोटे से छोटे गुनाह से भी परहेज़ करो।

अल्लाह तआला का इंसान से शिकवा

हदीस में आता है—

﴿يا ابن آدم لو لا انت ذنبا فلا تنظر الا صغره انظر الى من عاصيته﴾

मेरे बंदे जब ते कोई गुनाह करता है। यह न देखाकर कि छोटा है कि बड़ा है यह देखाकर कि नाफ़रमानी किसकी हो रही है। नाफ़रमानी तो बहुत बड़े रब की हो रही है। उसकी ज़ात का असर लेकर चलना यह ईमान है।

आप में से बहुत सारे मुझे जानते हैं। नाम से नहीं जानते शक्ल से तो मुझे पहचान रहे हैं। तआर्रूफ़ तो इसको भी कहते हैं। तआर्रूफ़ ताल्लुक़ का मतलब यह है कि जब आप उसके दरवाज़े पर आएं तो वह आपका काम ज़रूर करे। ऐसा अल्लाह के साथ तअल्लुक़ बना लें। और अल्लाह तआला भी यही फ़रमाता है कि अपने बंदे का हाथ ख़ाली लौटाते हुए मुझे शर्म आती है। इस का नाम तअल्लुक है। इस तअल्लुक़ अल्लाह पाक के साथ आप बना लें।

ईमान के "नूर" की निशानी

﴿اذا دخل النور انشرح الصدر﴾ जब अल्लाह की रौशनी अंदर दाख़िल होती है तो अंदर सीना खुल जाता है। किसी सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया।

﴿فهل لذلك من علامة يارسول الله﴾ या रसूलल्लाह! इस नूर की कोई निशानी है? हम सारे ईमान वाले बैठे हैं। हम सारे दुआ

करते हैं। हमारे ईमान का नूर है। देखो और उसकी निशानी क्या है। अल्लाह पूछने वाले का भला करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसकी निशानी तीन चीज़ें हैं–

﴿التجافی عن دار الغرور﴾ दुनिया से बेरग़बती पहली निशानी। मालदार है ग़रीब है दुनिया से बेरग़बती वाला।

﴿انابة الی دار الخلود.﴾ जन्नत का शौक़ वाला,

﴿استعداد للموت قبل النزول﴾ मौत से पहले मौत की फ़िक्र।

ये तीन बातें हैं तो ईमान का नूर अंदर आ चुका है अगर तीन बातें नहीं हैं तो ऐन मुमकिन है ईमान है लेकिन नूर से ख़ाली है।

जैसे लाइन है अंदर बत्ती भी है और जलाने वाला कोई नहीं और ज़रूरत है उसको जलाने की, ईमान है मगर उसको चमकाने की ज़रूरत है। चमकाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। नफ़्स का मुजाहिदा उसको कहते हैं यानी अपनी तबियत से लड़ना ईमान का नूर पैदा करने के लिए। यह ईमान का नूर बतालाएगा कि आमाल में कामयाबी है और अल्लाह और नबी के हुक्म में कामयाबी है और अल्लाह के हाथ में आसमान ओर ज़मीन का नक़्शा है। नबी दुनिया में आकर यह मेहनत करते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर भी यही मेहनत की।

मेरे बंदे तेरा रोना मुझे अच्छा लगता है

अल्लाह से तअल्लुक़ बना लें। अपने अल्लाह को अपना बना लें। जिसकी वफ़ाओं का यह हाल हो कि (जब बंदा) या अल्लाह एक दफ़ा कहे (तो अल्लाह) सत्तर बार (कहे) मेरे बंदे तू क्या कहता है। एक आदमी दुआ मांगता है या अल्लाह तो अल्लाह

तआला कहता है जल्दी दे दो, जल्दी दे दो, (मैं इसकी आवाज़) सुनना नहीं चाहता, नाफ़रमान है, दे दो।

एक आदमी रो रहा है या अल्लाह, या अल्लाह, दूसरी रात या अल्लाह, या अल्लाह, फिर तीसरी रात या अल्लाह, या अल्लाह। कभी महीनों गुज़र गए, कभी साल गुज़र गए, या अल्लाह, या अल्लाह। यहाँ तक कि फ़रिश्ते सिफ़ारिश करते हैं या अल्लाह तेरा फ़रमांबरदार बंदा है। इसे तू देता क्यों नहीं?

﴾انی احب﴿ इसकी मुझे हाय हाय अच्छी लग रही है। ज़रा रोने तो दो और अगर दे दिया तो कब रोएगा। हाँ दे दिया तो कब रोएगा। अच्छा लग रहा है। रोने दो इसका रोना मुझे पसंद आ रहा है। क्योंकि हमें दीन से गहरी वाक़फ़ियत नहीं है। इसलिए हम हालात से परेशान होकर अल्लाह ही के नाशुक्रे बन बैठे हैं और कोई मिला ही नहीं अल्लाह को, आज़माने के लिए हम ही रह गए थे।

भाईयो! यह तबलीग़ का काम है। अल्लाह को साथ लेने का, ज़ुलजिललि-वल-इकराम को साथ लिए बग़ैर न क़ौमें बन सकती हैं और न मुल्क बन सकते हैं और न अफ़सरान बन सकते हैं और न औरतें बन सकती हैं और न औलाद बन सकती है। अल्लाह को लेना पड़ेगा।

अल्लाह से बग़ावत अच्छी नहीं

ऐसे मेहरबान अल्लाह से बग़ावत करना किसी मुसलमान के लिए हलाल नहीं अगर यह वजूद तेरा अपना है तो जो मर्ज़ी कर

अगर मरना नहीं है तूने तो फिर जो मर्ज़ी में आए कर, अगर मरकर हिसाब किताब कोई नहीं है फिर भी जो मर्ज़ी कर लेकिन अगर मरकर मरना नहीं बल्कि एक और ज़िंदगी का सामना करना है और एक ताक़तवर बादशाह का सामना करना है तो क्या मुँह दिखाओगे? किस मुँह से जाओगे? किस मुँह से सामना करोगे?

तो मेरे भाईयो! जब दिल का कनेक्शन अल्लाह से टूट जाता है तो उस दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं आता। जब अल्लाह का डर किसी के दिल से निकल जाता है तो वह दिल सारी चीज़ों से डरता है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

O O O

आज अल्लाह नाराज़ है

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم. قل هذه سبيلى ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعنى وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

क्या तुम अपने आप पैदा हो गए?

मेरे मोहतरम, भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला हम से एक सवाल करता है ﴿ام خلقوا من غير شىء﴾ मेरे बंदे बताओ तो सही अपने आप पैदा किए गए हो, इत्तेफ़ाक़न?

दूसरा सवाल ﴿ام هم الخالقون﴾ या तुम अपने ख़ालिक़ खुद हो?

तीसरा सवाल ﴿ام خلق السموات والارض﴾ क्या यह ज़मीन आसमान तुमने बनाया है? फ़र्श तुमने बिछाया? छत तुमने बिछाई? हवाओं को तुमने चलाया? चाँद तारों को रौशनी तुमने दी?

यह सवाल क्यों किया है? ﴿أم خلقوا من غير شيء﴾ इत्तेफ़ाक़न अगर तुमने साबित कर दिया कि हम ऐसे ही पैदा हो गए या हम अपने ख़ालिक़ खुद ही हैं तो फिर अल्लाह आपकी छुट्टी देता है कि जाओ जैसे मर्ज़ी चाहे ज़िंदगी गुज़ारो।

झूठ सच बराबर, निकाह ज़िना बराबर, गाना क़ुरआन बराबर, हलाल हराम बराबर, फिर बे पर्दगी और बा पर्दगी बराबर, फिर आवारगी और बंदगी बराबर। जाओ मज़े करो।

लेकिन तुम्हें साबित करना पड़ेगा ﴿أم خلقوا من غير شيء﴾ कि तुम अपने आप पैदा हो गए कोई चीज़ कभी अपने आप बनी? इस काएनात के बारे में तीन नज़रिए हैं।

काएनात की इब्तिदा

दुनियावी उलूम अल्लाह ने खोले तो यह चीज़ सामने आई कि काएनात की इब्तिदा नहीं है। न शुरू है न आख़िर तक रहेगी। इस काएनात की एक शुरूआत है। कहाँ से है? किसने की? तो यह नज़रिया सामने आया कि इत्तेफ़ाक़न शुरूआत हो गई। ऐसे ही हो गई। पानी के किनारों पर किसी तरह ज़िंदगी की शुरूआत हुई। वह इरतिक़ाई उतार-चढ़ाव तय करते करते यह पेड़ बने, ये इंसान बने, हवा बनी, यह फ़िज़ा बनी, रंग बने, यह सूरतें, ये मूर्तें ये आबशारें, ये नदियाँ, ये नाले। यह ऐसे अपने आप होता चला गया। इत्तेफ़ाक़न हो गया।

दुनिया को जन्नत बनाने वाले साइंसदानों की बेबसी

फिर जब दुनिया ने और आगे तरक़्क़ी की। इंसानी इल्म आगे

बढ़ा तो सन् 1929 ई० में यह बात सामने आई कि यह काएनात फैल रही है। एडमिन हैलडर कैलीफोरनिया का एक साइंसदान था जिसने इसको साबित किया कि काएनात एक पूरे मुनज़्ज़म तरीक़े से हरकत में है। इनके फ़ासले, इनकी हरकत और उनके फैसले और उनकी गर्दिश ऐसे नाप-तोल के साथ है। यह ज़मीन हर सेकेंड के बाद सूरज से दो दश्मलव आठ मिलीमीटर दूर हो जाती है। मिलीमीटर कितना छोटा सा हिस्सा होता है। अगर यह ज़मीन दो दश्मलव आठ के बजाए दश्मलव एक मिलीमीटर दूर हो जाए तो तीन माइक्रोमीटर का फ़र्क़ पड़ा। माइक्रोमीटर इसलिए कहते हैं कि वह नज़रों से दिखाई नहीं देता। वह माइक्रोस्कोप से देखा जाता है या फिर दो दश्मलव पाँच हो जाए यानी तीन माइक्रोमीटर कम हो जाए।

ज़मीन पर अल्लाह की क़ुदरत का निज़ाम

चौबीस हज़ार किलोमीटर की यह ज़मीन गेंद है। चौबीसी हज़ार किलोमीटर की चौड़ाई में चलने वाला एक सय्यारा हर सेकेंड के बाद कितने ताक़तवर अंदाज़ के साथ सिर्फ़ दो दश्मलव आठ मिलीमीटर दूर होता है। तीन का फ़र्क़ अगर पड़ जाए, तीन मील का नहीं, तीन फलांग, तीन गज़, तीन फिट, तीन इंच, तीन सेंटीमीटर, तीन मिलीमीटर नहीं तीन माइक्रोमीटर अगर यह बढ़ जाए और रोज़ाना यह फैसला बढ़ता रहे तो चंद हफ़्तों मे सारी काएनात जमकर बर्फ़ बनकर सारी ज़िंदगी जाम होकर यक बस्ता होकर मौत की वादी में चली जाएगी।

अगर यह फ़ासला तीन माइक्रोमीटर कम होना शुरू हो जाए

तो कुछ ही हफ़्तों में आग में जलकर राख हो जाएगी तो कितना ताक़तवर निज़ाम चल रहा है। तो यह ऐसे ही नहीं हो रहा है बल्कि कोई चलाने वाला है।

कौन पागल कहता है कि काएनात अपने आप बन गई?

सन् 1948 ई० में यह बात बाइया सेवक तक पहुँची कि काएनात एक धमाके से बनी है लिहाज़ा क्योंकि अल्लाह का तसव्वुर सामने नहीं था तो कुछ ने कहा इत्तेफ़ाक़न हो गया लेकिन आस्ट्रेलिया के एक साइंसदान ने यह बात तर्जुबात की रौशनी में बतलाई कि यह बताओ, आप भी सोचो कि कभी कोई धमाका ऐसा हुआ कि इधर कालेज के दामन में धमाका हुआ और सारा मजमा हवा में उड़ता हुआ अपनी मोटरों में फ़िट हो गया। साइकलों में जाकर फ़िट हो गया और अपने घरों को चल पड़ा। क्या यह मुमकिन है कि यहाँ धमाका हो और हर आदमी बड़े आराम से अपनी सवारियों पर फ़िट हो जाए और अपने घरों की तरफ़ चल पड़े।

इस बात को कोई भी नहीं मानेगा। गेहूँ के ढेर में धमाका हो, सारी गेहूँ उड़ती हुई बोरी में जाकर फ़िट हो गई। कौन पागल इसको मानेगा?

नर्सरी में धमाका हुआ, सारे छोटे-छोटे पौधे हवा में उड़ते हुए गए, बाग़ में फ़िट हो गए, बाग़ लग गया। चल मेरा भाई बाग़ बढ़ना शुरू हो गया। कोई दीवाना है जो इस बेवक़ूफ़ी वाली बात को माने।

तो वह यूँ कहता है कि जब यह धमाका हुआ था तो माद्दे में एक रफ़्तार पैदा हुई। दूसरी कशिश पैदा हुई। उस रफ़्तार और कशिश अगर थोड़ा सा भी फ़र्क़ पड़ जाता है तो फिर काएनात तबाह हो जाती और रफ़्तार ज़्यादा होती तो काएनात गुम हो जाती। अगर रफ़्तार सुस्त होती तो काएनात सिमट कर फ़ना हो जाती। कितनी देर का फ़र्क़ पड़ता इसमें फ़र्ज़ी तौर पर सेकेंड के एक हिस्से को एक हज़ार हिस्सों में बाँटा जा सकता है। इससे ज़्यादा में नहीं किया जा सकता। एक सेकेंड एक हज़ार हिस्सों में बटने के बाद फ़ना हो जाता है।

तो वह यूँ कहता है कि अगर एक सेकेंड के दस लाख खरब हिस्से किए जाएं। इसको एक बटा दस लाख खरब सेकेंड के बराबर अगर धमाके के वक़्त में माद्दे की रफ़्तार तेज़ हो जाती तो यह गुम होकर ख़त्म हो जाता।

तो वह कहता कि कौन पागल है जो कहता है कि यह ख़ुद हो गया, हो सकता है? नहीं, नहीं कभी नहीं। कोई ख़ालिक़ है, कोई बनाने वाला है। फिर बात क़ुरआन पाक पर आ गई।

पाँच करोड़ ऐटम बम और सूरज

﴿ام خلقوا من غير شیء﴾ बोलो क्या आप ही बन गए?

﴿ام ھم الخالقون﴾ बोलो क्या अपने ख़ालिक़ ख़ुद हो?

तो साइंस का इल्म भी यहाँ तक पहुँच चुका है कि नहीं नहीं यह मुमकिन कि यह जहाँ ख़ुद बन जाए। नामुमकिन है कि यह इतना तनासुब यह तर्तीब यह अपने आप हो जाए। ऐसा नहीं हो सकता।

ऐटम बम की तबाही

एक वक़्त में एक सेकेंड में एक धमाका होता है। वह धमाका कितना ताक़तवर होता है? अगर ज़मीन पर पाँच करोड़ ऐटम बम इकठ्ठे फटें तो उसमें जितनी आग निकलती है उतनी सूरज एक सेकेंड में रोज़ाना फेंक रहा है और पिछले करोड़ों साल से फेंक रहा है। नागासाकी और हीरोशिमा पर जो ऐटम बम गिराया गया था। उसका तापमान सिर्फ़ छः हज़ार सेंटीग्रेड तक गया था और दो लाख तीस अज़ार आदमी कुछ मिनटों में मौत का लुक़मा बनकर तबाह व बर्बाद हो गए। आज तक उसकी तबाहकारी के असरात से वह जगह पाक नहीं हुई। पचास करोड़ा ऐटम बम फटेंगे तो क्या होगा? फिर वह तो ऐटम बम भी छोटा सा था। यह सूरज छः करोड़ तीन लाख मील के फ़ासले पर है। इससे जो आग़ निकलती है उस आग का सिर्फ़ एक हिस्सा ज़मीन पर उतरता है और बाक़ी बीस करोड़ निन्नानवे लाख निन्नानवे हज़ार नौ सौ निन्नानवे हिस्से फिज़ा में ख़त्म हो जाता है। बीस करोड़ में एक हिस्सा ज़मीन पर उतरता है जिससे घरों में गर्मी आई हुई है, पसीने बह रहे हैं, पंखे चल रहे हैं, कूलर चल रहे हैं अगर 2 बटे बीस करोड़ हिस्सा गर्मी हो जाती तो हमारी हड्डियों पर से हमारी बोटियाँ गोश्त की तरह उबलने लगती और पकने लगतीं।

फ़िज़ा में गैसों का तनासुब

तो कौन है जिसने ऐसा ताक़तवर निज़ाम बनाया? न ज़र्रा इधर होता है न उधर होता है। इक्कीस फ़ीसद फ़िज़ा में

आक्सीजन है और अठ्हत्तर फ़ीसद हाइड्रोजन और सत्तर फ़ीसद नाइट्रोजन है और एक फ़ीसद इसमें कार्बन डाइआक्साई है, बाक़ी एक फ़ीसद में और गैसें हैं। आक्सीजन अगर इक्कीस फ़ीसद से बाइस फ़ीसद हो जाए तो दुनिया में आतिशज़दगी के वाक़िआत सत्तर गुना ज़्यादा बढ़ जाएंगे। सत्तर फ़ीसद आग लगने के वाक़िआत बढ़ जाएंगे और यह अगर इक्कीस फ़ीसद से सिर्फ़ पच्चीस फ़ीसद हो जाए सिर्फ़ चार फ़ीसद ज़्यादा हो जाए तो क़ुतुब शुमाली और क़ुतुब जुनूबी के बर्फ़ों में जो बर्फ़ के पहाड़ खड़े हैं सिर्फ़ वे बच जाएंगे बाक़ी क्या हिंद, क्या सिंध, क्या ईरान, क्या तेहरान सब जगह अपने आप आग भड़क उठेगी और कोई ज़िंदा नहीं बच सकेगा। कौन है जिसने इस लेवल को इक्कीस फ़ीसद पर फ़िट किया है। आज पंद्रह अरब साल दुनिया की उम्र है।

कोई इक्कीस का साढ़े इक्कीस देखता, कभी कोई बाइस देखता, कभी बीस और उन्नीस देखता। कौन है तो यहाँ अक़्ल आकर सिर पकड़कर बैठ जाती है। इंसानियत थकती है। पता नहीं कौन है? है तो सही। आज सारी काएनात नज़रयाती तौर पर तसलीम कर चुकी है कि कोई है। काश हम जाकर उन्हें बताते कि वह अल्लाह है।

हमें नाच गाने से फ़ुर्सत नहीं, कमाई से फ़ुर्सत नहीं, हम ख़ुद अल्लाह के दीन के बाग़ी हैं वरना मेरे रब की क़सम इस वक़्त दुनिया में इस्लाम फैलाने का सबसे बेहतरी मौक़ा है। सारी दुनिया नज़रियाती तौर पर हार खा चुकी है।

साइंस अल्लाह की तलाश

माद्दियत दम तोड़ चुकी है। इशतिराकियत मर चुकी है और

साइंस अपने आप में कह रही है कि कोई ख़ालिक़ है। भाई तलाश करो—

بل الدارك علمهم في الاخرة بل هم في شك منها بل هم منها
عنود يعلمون ظاهراً من الحيوة الدنيا وهم عن الاخرة هم
غافلون لا تعلم الابصار ولكن تعلم قلوب التي في الصدور.

दुनिया की चमक-दमक, ज़ेब व ज़ीनत आँखों के सामने है। जन्नत जहन्नम सामने नहीं है। यह अल्लाह को पहचान नहीं सकते। दिल अंधे हैं, दिल वीरान हैं। लिहाज़ा अब मौक़ा है हम मैदान में आएं कि हमारे पास तो चौदह सौ साल पहले ख़बर आई है।

﴿ان ربك الله﴾ इस काएनात का, मेरा, आपका रब अल्लाह है। ज़िंदगी कहाँ से शुरू हुई? ﴿والله خلقكم من تراب﴾ मिट्टी से फिर क्या हुआ? ﴿ثم نطفة﴾ फिर नुत्फ़ा। फिर क्या हुआ?

ثم خلقنا نطفة علقة فخلقنا المضغة عظاماً فكسونا العظام لحما
ثم انشانه خلقاً اخر فتبارك الله احسن الخالقين.

हमारे पास शवाहिद कम नहीं

ज़माना बड़े शौक़ से सुन रहा था
हम ही सो गए दास्तां कहते कहते

आज वक़्त है दुनिया को अल्लाह से जोड़ने का। अठ्ठारवीं सदी साइंस की सदी है। जब साइंस ने आँखें खोलीं। साइंसदान बोल उठे कि किसी जन्नत की ज़रूरत नहीं। हम दुनिया को जन्नत बना देंगे। हम ने काएनात के भेद पता कर लिए हैं।

इसकी ताक़तों को पकड़ने का तरीक़ा सीख लिया है। हमने हवाओं पर कमांड हासिल कर ली है।

हमने बर्क़ और भाप को क़ैद कर लिया। अब वक़्त और काएनात यह सब हमारी मुठ्ठी में हैं। हमने दुनिया को जन्नत बना देंगे। सौ साल के बाद थक हार कर भटके मुसाफ़िर की तरह साइंस आजिज़ हो चुकी है और थक गई और बोल उठी कि हम काएनात को जन्नत नहीं बना सकते। हम तो इसे पहले से ज़्यादा जहन्नम में बदल चुके हैं।

अल्लाह के एहसानात

लाओ भाई कोई तरीक़ा बताओ। कोई मंज़िल बताओ। कोई पता बताओ। यहाँ अल्लाह का महबूब आया। यहाँ अल्लाह ख़ुद आया है। उसने ख़बर दी।

﴿والله خلقكم﴾ अल्लाह ने बनाया। कहाँ से? ﴿من ترابا ثم من نطفة﴾ मिट्टी और नापाक नुत्फ़े से फिर इसको ﴿علقة﴾ फिर नदवा फिर गोश्त, फिर हड्डियाँ फिर खाल, फिर रूह, फिर हुस्न, फिर यह शकल, फिर जमाल ﴿ثم السبيل يسره﴾ फिर कोई जल्दी क्यों मरता है? फिर कोई देर से मरता है।

وما يعمر ما يعمر من معمرو ولا ينقص من عمره الا فى كتاب ان ذالك
على الله يسيره. من يتوفا من قبلك لكى لا يعلم بعد علم شيئاً

जो ज़िंदगियों के क़लम चलाता है, मौत के फ़ैसले सुनाता है। इज़्ज़त और ज़िल्लत के निज़ाम चलाता, बुलंदी और पस्ती के फ़ैसले करता है। उत्तर दक्षिण पर हुकूमत करता है। अर्श से फ़र्श तक अपनी ताक़त को इस्तेमाल करता है। चाँद तारों पर, सूरज पर, सय्यारों पर, दिन पर, रात पर, हवा पर ख़ला पर, फ़िज़ा पर,

पानी वालों पर, ज़मीन वालों पर, सब पर तन्हे तन्हा अल्लाह ही है जो हुकूमत करता है। यह सारी दुनिया को पैग़ाम सुनाना था। हम ही भूल गए तो औरों को क्या सुनाते।

﴿ان ربكم الله﴾ रब अल्लाह। कहाँ से बनाया? ﴿من تراب﴾ मिट्टी से फिर एक मर्द बन गया। एक औरत बन गई। एक लड़का बन गया। एक लड़की बन गई। ﴿ان خلقكم من ذكر وانثى﴾ फिर क़बीले कैसे बने ﴿وجعلنا شعوبا وقبائل﴾ कोई पंजाबी, कोई पठान, कोई बलूची, कोई सिंधी, कोई हिंदी, कोई मकरानी। यह सारे अल्लाह के बनाए हुए निज़ाम हैं। ﴿من آية﴾ क्या अभी भी नज़र नहीं आया। अब भी पता नहीं चला कि ज़मीन बिछी, आसमान बुलंद हुआ, रात काली हुई, दिन रौशन हुआ, तुम्हें भी पता न चला कि एक माँ और बाप से पैदा होकर कोई पंजाबी बोलता है कोई उर्दू, कोई सिंधी। तुम्हें अभी नज़र नहीं आया।

﴿واختلاف السنتكم والوانكم﴾

तुम्हारे रंग अलग, ज़बानें अलग, यह सब बताता है कि काएनात का एक ख़ालिक़ है, मालिक है अल्लाह।

﴿ان فى خلق السموات والارض.﴾

ज़मीन बिछी, आसमान बुलंद हुआ, रात काली चादर ओढ़कर आई, दिन सफ़ेद पोशाक पहन कर आया।

अल्लाह की क़ुदरत समुंद्र में जहाज़ का न डूबना

﴿والفلك التى تجرى فى البحر بما ينفع الناس.﴾

समुंद्र के सीनों को चीरकर तुमने तिजारत की राहें बना लीं। कौनसी ताक़त है जो तुम्हारे छोटे छोटे जहाज़ों को समुंद्र जैसी मख़्लूक़ में गुज़रने की राहें दे देता है। समुंद्र की एक मौज सातों ज़मीनों को निगल सकती है। दुनिया में अल्लाह तआला ने उनत्तीस फ़ीसद ज़मीन बनाई है। इकहत्तर फ़ीसद पानी बनाया है। अगर अल्लाह हुक्म दे तो एक मौज उछल कर हिमालय पहाड़ को भी निगल जाए लेकिन तुम्हारे जहाज़ कराची से चलकर जद्दा कैसे पहुँच जाते हैं और वे लंदन कैसे पहुँच जाते? उर्दुन और जुनूबी अफ़्रीक़ा और जुनूबी अमरीका कैसे पहुँच जाते हैं?

﴿والفلك التى تجرى فى البحر بما ينفع الناس.﴾

यह समुंद्र में कूदने वाले मछलियाँ, ये उछलने वाली, यह फुदकने वाली, खेलने वाली यह तुम्हें कुछ नहीं बता रहे हैं?

﴿لتا كل منه بلحم طريا﴾

अल्लाह की निशानियाँ

है कोई ख़ालिक़ व मालिक पानी को क़तरा और मोतियों में बदलकर चमक देने वाला? यह तुम्हें नहीं बता रहा कि कोई है, कोई है।

यह क़तरा सदफ़ के मुँह में जाने वाला मोती बना, साँप के मुँह में जाने वाला ज़हर बना, मक्खी के मुँह में जाकर शहद बना, बकरी के मुँह में जाकर दूध बना, हिरन के मुँह जाकर मुश्क बना और रेशम के कीड़े के मुँह में जाकर रेशम बना, इंसान के मुँह में जाकर ज़िंदगी का सामान बना, आम की जड़ में जाकर वह आम

के रूप में निकला, अंगूर की जड़ों में जाकर वह अंगूर की शकल में बदल गया, करेले की जड़ में जाकर वह करेले की शकल में बदला, वह नाशपाती की जड़ में नाशपाती की शकल में बदला। पानी कितना अक़लमंद हो गया कि सेब को लगे तो वह सेब बनेगा, इंसान को लगे तो ज़िंदगी बनेगा।

यह कौन कर रहा है? कहाँ से हो रहा है? क्यों हो रहा है? किस लिए हो रहा है?

﴿وما انزل الله من السماء من مآء فاحیا به الارض بعد موتها.﴾

आसमान से पानी बरसाया। तुम्हारी ज़िंदगी का सामान बख़्शा, तुम्हें ज़िंदा किया, ज़मीन को ज़िंदा किया। एक सेकेंड में एक करोड़ साठ लाख टन पानी बुख़ारात बनकर हवा में उड़ जाता है। एक साल में पाँच सौ तेरह खरब टन पानी बुख़ारात बनकर हवा में उड़ जाता है। उसे अल्लाह ऊपर ले जाता है। ये बुख़ारात ऊपर जाकर ठंडे हो जाते हैं और ऊपर जाकर ठंडक पैदा करते हैं। हवा मिलती है। हवा की मिट्टी मिलती है। वह बादल की शकल बनती है। वे क़तरे बनते हैं। हवा कंधा देती है। जब वह थक जाती है और वह क़तरा वज़नी होता है। हवा पीछे हटती है। अल्लाह बारिश बरसाना शुरू करता है। आमतौर से बादलों की बारह सौ मीटर की बुलंदी होती है।

बारह सौ मीटर की बुलंदी से अगर कोई चीज़ गिराई जाए तो उसकी ज़मीन पर गिरने की रफ़्तार होनी चाहिए पाँच सौ अठ्ठावन किलोमीटर फ़ी घंटा। गोली की रफ़्तार होती है सत्रह सौ किलोमीटर फ़ी घंटा। पाँच सौ अठ्ठावन किलोमीटर की रफ़्तार से अगर कोई बारिश बरसती तो न कोई घर सलामत रहता, न कोई

सिर सलामत रहता, न कोई पहाड़ सलामत रहता, न कोई सड़क सलामत रहती, न फ़ैक्टरी सलामत रहती, न कोई बंगला सलामत रहता।

पाँच सौ अठ्ठावन किलोमीटर फ़ी घंटा की गोलियों की बरसात, गोलियों की बौछार हुई। वह बारिश सड़कों पर गिरती है। मस्जिद में गिरती है तो उसकी रफ़्तार ज़मीन पर आने की सात-आठ किलोमीटर फ़ी घंटा है।

﴿وما انزل الله من السماء من ماء﴾ अब इस आयत को सुनो ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ तेरे रब ने पानी को अनोखे अंदाज़ में बरसाया है। ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ फिर उसने ज़मीन को फाड़ा।

وانبتنا فيها حبا عنبا وقضبا وزيتونا ونخلا وحدائق غلبا وفاكهة
وابا متاعا لكم ولانعامكم

यह इल्म अल्लाह ने दिया कि ऐ काएनात के इंसानो! बिछी हुई ज़मीन पर ग़ौर करो, बुलंद आसमान पर ग़ौर करो, तारों भरी रात पर ग़ौर करो। पुकार उठोगे—

﴿ربنا ما خلقت هذا باطلا﴾

कोई तो है जो निज़ामे हस्ती को चला रहा है

चाँद का हुस्न देखो, सूरज की आग देखो, पूरब की सफ़ेदी देखो, पश्चिम की लाली देखो, शाम को परिन्दों के झुंड देखो, कोयल का नग़मा सुनो, बुलबुल का गीत सुनो, चिड़िया की चहक सुनो, साँप की फुंकार सुनो, उक़ाब की बुलंद उड़ान देखो, पतंगे और परवाने को उड़ता देखो, तितली को पकड़कर उस पर छपा

प्रिंट देखो, नाचते हुए मोर का नख़रा देखो, इसके परों पर छपा प्रिंट देखो, समुंद्र की तह में उतकर हसीन व जमील मछलियों को देखो, गुलाब को देखो कैसे सुर्ख़ लिबास में, चमेली को देखो कैसी सफ़ेद पोशाक में, उसकी महक को देखो। आम की मिठास देखो, करेले की कड़वाहट देखो, केले का तह-ब-तह लगना देखो, नारियल का बुलंद पेड़ पर लगना देखो, इसमें पानी का भरना देखो, दूध का दही में बदलना देखो, दही का मक्खन में बदलना देखो, मक्खन का घी में बदलना देखो। ये सारे निज़ाम देखो।

आसमान से बरसती बारिश देखो, पहाड़ों पर बर्फ़ को गिरता देखो, सूरज से पिघलता देखो, फिर नदी और नालों की शकल में उसे चलता देखो, चश्मों का झरना देखो, उनका उबलना देखो, पानी की आबशारें देखो, उनका उबलना देखो। पहाड़ों की सख़्ती देखो। ज़मीन की मोटाई को देखो। हवा की लताफ़त देखो।

अपनी आँखों के बल्ब को देखो। अपने कानों का टेलीफ़ोन देखो। अपने दिल की धड़कन को देखो। अपनी ज़बान का बोलना देखो। अपने जिगर व गुर्दे का निज़ाम देखो।

सिर से पाँव तक रब की कारीगिरी देखो और क़ुदरत को देखो। यह सब देखकर तुझे अल्लाह का यक़ीन नहीं आया कि अल्लाह है। तो अल्लाह ने मुझे क्यों बनाया?

नाचने-गाने के लिए, कमाने-खाने के लिए? क्यों बनाया? आख़िर क्यों बनाया? किस लिए? यहाँ जाकर इंसान का इल्म चुप हो जाता है। इंसानी इल्म चुप हो जाता है। यहाँ भी अल्लाह ही ने बताया अरे बनाया तो तुझे अपने लिए था मगर तू अपना ही पुजारी बन बैठा।

अल्लाह तआला का मुहब्बत भरा शिकवा

आज एक बड़े ज़माने के बाद एक हदीस याद आई ﴿الجن والانس في نبإ عظيم﴾ और देखो यह जिन्न और इंसान मेरे साथ क्या करते हैं। ﴿اخلق ويعبد غيري﴾ मैंने पैदा किया मगर मानते किसकी हैं। मेरे ग़ैर की मानते हैं। ﴿ارزق ويشكر سواعي﴾ रिज़्क़ मैंने दिया और शुक्रिया किसी और का करते हैं। मेरी रहमतें उन पर रोज़ाना उतरती हैं। मैं उनके काले गुनाह काली रात की तरह रोज़ देखता हूँ। सारा दिन गुनाह करके सारा दिन गाने में, सारा दिन किसी की बेटी को देखकर, कभी नाच, कभी गाना, कभी झूठ, कभी ज़िना, कभी सूद, कभी जुवा, कभी शराब, कभी धोखा, कभी फ़रेब, कभी कुछ कभी कुछ।

माँ को भी, बाप को भी, भाई को भी। कभी किसी से लड़कर, कभी किसी से लड़कर। सारे दिन के गुनाह देखो (लेकिन) जब रात आती है, मैं ख़ामोशी से उसको आराम की नींद सुला देता हूँ। जैसे सारे दिन में एक भी मेरी नाफ़रमानी करने वाला काम न किया हो और जब दिन चढ़ता है तो उसे उठा देता हूँ और जब रात आती है तो चुप करके उसे प्यारी नींद सुला देता हूँ। मेरा रब कहता है मैं अपने बंदे की तौबा का इंतिज़ार करता हूँ। कभी तो तौबा करेगा।

वह अल्लाह है, वह वहदहु लाशीरक है। वह मालिकुल क़ुद्दूस है, वह अल्लाह है। वह अस्सलामुल मोमिन है। वही अल्लाह अज़ीज़ुल जब्बार है। वह अल् मुतकब्बिर है। वह अल्लाह मुसव्विर है। वह अल्वह्हाब है। वही अल्लाह राज़िक़ है। अल्फ़त्ताह वही है।

अल्लाह की बड़ाई

सारी सिफ़ात का मालिक वहदहु लाशीरक ज़ात में अकेला, सिफ़ात में अकेला, इज़्ज़त में अकेला, शहंशाही में अकेला, मुल्क में अकेला, हैबत में अकेला, इल्म में ला महदूद, क़ुदरत में ला महदूद, ख़ज़ानों में ला महदूद, सलतनत में ला महदूद, किबरियाई में ला महदूद, अदल में ला महदूद, अता में ला महदूद, पकड़ में ला महदूद। देने पर आए तो अपने ख़ज़ानों के दरवाज़े खोल दे। सारा जग ले मगर उसके ख़ज़ाने में एक क़तरा भी कमी नहीं आए। पकड़ने पर आए तो,

﴿ان بطش ربك لشديد فيومئذ لا يعذب عذابه احد ولا يوثق وثاقه احد.﴾

जब पकड़े तो कोई छुड़ाने वाला नहीं। जब छुड़ाए तो कोई पकड़ने वाला नहीं। वह दे तो कोई न ले सके। वह ले तो कोई दे न सके।

मेरे भाईयो! एक अल्लाह ख़ालिक़ है—

जो चाँद की किरणों से पैग़ाम देता है मैं हूँ। जो सूरज की शुआओं से पैग़ाम देता है मैं हूँ। जो तारों की झिलमिलाहट से पैग़ाम देता है मैं हूँ। ये खिलते फूलों के ज़रिए पैग़ाम पहुँचाता है मैं हूँ। मैं हूँ ज़मीन के ज़रिए से, हवाओं के ज़रिए से, उड़ते बादलों के ज़रिए से।

अल्लाह की बंदों से मुहब्बत

ज़मीन व समुंद्र के ज़रिए वह कहता है कि मैं हूँ मेरे बंदे! मेरी

माल ले। मैं अल्लाह तुम्हारा रब, तुम्हारा ख़ालिक़ हूँ। तुम्हारी माँ ऐसी शफ़ीक़ नहीं है जैसा तुम्हारा रब शफ़ीक़ है। तो मेरे भाईयो! काएनात को सवाल का जवाब न मिला। हमें जवाब मिला है कि अल्लाह है। तो भाईयो! क्यों पैदा किया है? कहा मेरी इबादत कर लो, मुझे राज़ी कर लो। मुझे अपना बना लो।

﴿يا ابن آدم انى لك محب فبحق عليك كن لى محبا.﴾

मेरे बंदे! मैं तुझ से प्यार करता हूँ। तुझे मेरी क़सम तू भी तो मुझसे प्यार कर। ऐसा बादशाह कोई दुनिया में नहीं पाओगे जो प्रजा के पीछे-पीछे फिरे और उनकी देखभाल करे।

अल्लाह के ख़ज़ानों की वुसअत

रात को भी जागे, दिन को भी जागे, सुबह भी जागे, शाम भी जागे। अकेला आए तो सुने, दस आएं तो सुने, हज़ार आएं तो सुने, लाख आएं तो सुने, करोड़ आएं तो सुने, अरबों आएं तो सुने, खरबों आएं तो सुने, हर ज़बान वाले आएं तो सुने। कोई है? नहीं नहीं वही अल्लाह है।

الوان اولكم اخركم انسكم جنكم حيكم ميتكم رطبة يابسكم
صغيركم كبيركم ذكركم انساكم.

मेरे बंदो! इंसान व जिन्न इकठ्ठे हो जाओ। छोटे भी आ जाओ, बड़े भी आ जाओ। मर्द भी आ जाओ, औरत भी आ जाओ। खुश्क भी आ जाओ, तर भी आ जाओ। बूढ़े भी आ जाओ, जवान भी आ जाओ। पिछले भी आ जाओ, अगले भी आ जाओ। खड़े हो जाओ सब खड़े हो जाओ।

बोलो-बोलो बारी-बारी। बारी-बारी बोलना शुरू किया तो मेरी बारी तो लाख साल बाद आएगी। नहीं नहीं मेरे बंदे इकठ्ठे हो जाओ। तो या अल्लाह तेरी ज़बान तो अरबी है, मैं तो पंजाबी में बोलूंगा।

बोल मेरे बंदे बोल। हिंदी बोल, सिंधी बोल, फ्रांसिसी बोल, उर्दू बोल, अंग्रेज़ी बोल, अरबी बोले, फ़ारसी बोल, पंजाबी बोल, बलूची बोल, बरोही बोल, पठानी बोल, बोल-बोल, हर ज़बान में बोलो, इकठ्ठे बोलो।

यहाँ तक कि गूंगे भी बोलो। इशारे से बोलो। तेरा रब सब की एक साथ सुनकर अभी अलग-अलग समझ जाएगा और सब का चाहा सबको दे दिया जाएगा और उसके ख़ज़ाने में एक क़तरे के बराबर भी कमी न आएगी।

उस अल्लाह की इबादत करो। तबलीग़ी जमाअत कोई फ़िरक़ा नहीं है, कोई जमाअत नहीं, कोई मसलक नहीं, तबलीग़ का काम अल्लाह से सुलह करने का काम है।

करोड़ो माँओं से ज़्यादा प्यार

मेरे भाईयो! अरसा गुज़रा है अल्लाह से यारी लगाए हुए। मेरा रब मुझे नहीं भूला। माँ-बाप औलाद को नहीं भूला करते। हमेशा औलादें ही माँ-बाप को भुला दिया करती हैं। माँ-बाप औलाद को धक्के नहीं दिया करते। औलादें ही माँ-बाप को धक्के दिया करती हैं।

मेरे भाईयो! मेरे रब की क़सम मेरा अल्लाह मेरी माँ से करोड़ों

गुना ज़्यादा मुझसे प्यार करता है। मेरी माँ मुझे क्या प्यार देगी जो मेरा अल्लाह मुझे प्यार देता है।

मेरे भाईयो! ऐसे रब के हम गुनाहगार हो गए। ऐसे रब के नाफ़रमान हो गए। जिसने देखा कि नज़रें आवारा हो गयीं फिर भी इन्हें देखने का हुक्म देता रहा। जिसने देखा कि कान गाना सुनने के आदी हो गए फिर भी वह कानों को सुनने का हुक्म देता रहा। जिसने देखा ज़बान गाली की आदी हो गई फिर भी उसे बोलने का हुक्म देता रहा। जिसने देखा कि नौजवान आवारा हो गए उसने फिर भी इस जवानी पर फ़ालिज नहीं गिराया, इसकी ताक़त को नहीं छीना। उसने देखा हाथ ज़ालिम हो चुके हैं फिर भी उसने हाथों को काटा नहीं। उसने देखा पाँव अय्याशी को जा रहे हैं फिर भी पाँव तोड़े नहीं।

हाय-हाय कैसे बताऊँ कि एक औरत घुंघरू बाँधकर स्टेज पर आती है और वह छन-छन से अपने पाँव को हिलाती है तो अगर यह जहान जज़ा सज़ा का होता तो उसी वक़्त ज़मीन फटती और गाने वाले भी धंसते, सुनने वाले भी धंसते और बैंड बाजे वाले भी धंसते ओर यह ज़मीन बराबर हो जाती।

यह तो मेरा अल्लाह है। तौबा के इंतिज़ार में है। कभी तो तौबा करेगा। जवानी ढल गई। चलो बुढ़ापा में सही हो जाए। बुढ़ापा ढल गया अगर इस वक़्त भी बंदा कहता है कि मैं तौबा कर लूँ। उस वक़्त मैं भी बेक़रार माँ की तरह खुद आकर तुझे सीने से चिमटा लेता हाय-हाय।

﴿وكان الله شاكرا عليما﴾

लाओ मेरे जैसा हसीन क़द्रदान

लाओ मेरे जैसा क़द्रदान। बाप-बेटे में लड़ाई। माँ-बेटे में लड़ाई। जनने वाली माँ भी एक दिन तंग आकर कहती है। जा दफ़ा हो जा, नज़रों से दूर हो जा। बाप कहता है निकल जा मेरे घर से। जहाँ आकर जज़्बात टकराते हैं। वहाँ फिर हर कोई अपनी ज़ात की पूजा करता है। एक मेरा अल्लाह ही तो है जो आख़िरी दम तक इंतिज़ार करता है। आ जा, आ जा पनाह ले ले मेरे दामन में। कभी तो लौट आ। कहीं भी चैन न मिलेगा, कहीं सुकून न मिलेगा सिवाए अल्लाह की याद के। अल्लाह की मुहब्बत के तअल्लुक़ के उसके आगे झुक। खुदा की क़सम जाओ मौसीक़ी की दुनिया में डूबकर देखो।

जुनैद जमशेद और सुकून की तलाश

अरे दुनिया में पाकिस्तान का सबसे बड़ा गुलोकार जुनैद जमशेद उरूज पर था। सन् 1997 ई० में मुझे मिला। मुझसे कहने लगा एक नौजवान जिन लज़्ज़तों के ख़्वाब देखता है। जिन सूरतों मूरतों से ख़्वाबों में इश्क़ करता है। वह सब मुझे हासिल हुईं। मेरी दाएं बाएं ज़िंदगी नाच रही है, हुस्न मेरे दाएं बाएं नाच कर रहा है लेकिन मेरे अंदर अंधेरा है। मैं वह किश्ती हूँ जिसकी कोई मंज़िल नहीं। मैं वह किश्ती हूँ जिसका कोई घाट नहीं। मुझसे कहने लगा यह क्यों है?

मैंने कहा मेरे अज़ीज़ इस दिल पर मेरे अल्लाह का पहरा है।

यहाँ न औरत जा सकती है न मौसीक़ी जा सकती है न दौलत जा सकती है। यह दिल के कान पैसे की खनक नहीं सुनते। दिल की आँखें पैसों की चमक नहीं देखतीं। यह दिल इन सारी ख़ुराफ़ात की चीज़ों से ना आशना है। उसे सिर्फ़ अल्लाह चाहिए। जिस दिन अल्लाह इस दिल में आ जाए उस दिन तेरे दिल की किश्ती को घाट मिलेगा। तेरे अंधेरे को उजाले मिलेंगे। तेरी ज़िंदगी को मंज़िल मिलेगी। आज का नौवजवान समझता है—

शायद मौसीक़ी से दिल बहल जाए। शायद माल की चमक से दिल बहल जाए। शायद मूरत सूरत से दिल बहल जाए। यह मिट्टी की सूरतें, ये धोखे का घर, यह मच्छर, यह मकड़ी का जाला, यह गुनाह का घाट। जाओ क़ब्रें देखो। हुस्न के अंजाम देखो। चढ़ता हुआ सूरज देखो मग़रिब में डूबता है। जवानी न देखो बुढ़ापे की झुर्रियाँ देखो। गाना न सुनो रोने वालियों की बीन सुनो। दुल्हन का घर न देखो टूटी क़ब्रें देखो। चलती बारातें न देखो उठते जनाज़े देखो। सियासतदानों के जलसे न देखो। ये ख़ुद भी अंधे हैं। उनके नारे लगाने वाले भी अंधे हैं। जल्दी ख़ौफ़नाक क़ब्र का मुँह खुलेगा और उस वक़्त तुमको याद आएगा। हाय हाय मैं क्या कर बैठा। उस वक़्त कोई फ़ायदा न होगा।

अरे अगर इस वक़्त तेरी आँख से एक क़तरा आँसू भी निकल गया जो मक्खी के सिर के बराबर होगा तो तेरे हज़ारों बरस के गुनाह अल्लाह धोकर माफ़ कर देगा।

जुनैद के रोने ने मुझे भी रुला दिया

मैंने कहा तू जहाँ तलाश करता है वहाँ पर सौदा मिलता नहीं।

जहाँ मिलता है वहाँ तू आता नहीं तो कैसे काम बनेगा। दर्द दाएं घुटने में है दवा बाएं घुटने में लग रही है। दर्द अपनी जगह पर दवाई अपनी जगह पर—

मर्ज़ बढ़ता गया जूँ जूँ दवा की

अब अल्लाह ने उसे सन् 1997 ई० से सन् 2003 ई० में जभाव दी और वह बदला और दाढ़ी रखी और मुझसे बड़ी पगड़ी तो टीवी वग़ैरह में बहुत से लोगों ने उसे नाचते देखा होगा। मैंने उस नौजवान को रात को बच्चे की तरह तड़प तड़प कर रोते देखा है कि या अल्लाह मैं क्या कर बैठा। मैंने कितनों को गुमराह किया। वह ऐसा रोया कि मैं भी उसका रोना देखकर रो पड़ा। अगर इन चीज़ों में सुकून होता तो यूँ दुनिया बर्बाद न होती, यूँ दुनिया के सीने वीरान न होते, दिल काले न होते। आ जाओ, आ जाओ अल्लाह पुकार रहा है।

﴿يايها النفس المطمئنة﴾

कुत्ते से वफ़ादारी सीखो

मेरे भाईयो! कुत्ता भी दो वक़्त रोटी खाकर सारी ज़िंदगी उस दर पर लगकर गुज़ार देता है। घर का बच्चा भी मारे तो चुप करके बैठा रहता है। ज़बाने हाल से कहता है, तेरे बाप की रोटी खाई है। तुझे कुछ न कहूँगा। छः फिट का जवान अजनबी आ जाए लपककर चढ़ जाए। मार देगा या मर जाएगा यह तो कुत्ते की वफ़ादारी है।

मेरे रब ने सिर से पाँव तक जिस्म दिया। नुत्फ़े से इंसान बनाया। दिल व दिमाग़ का निज़ाम दिया। मुहब्बत करने वाली माँ

दी, शफ़क़त करने वाला बाप दिया। घर की छतरी, ज़मीन का फ़र्श, सूरज की आग, चाँद की ठंडक तारों की रौशनी झिलमिलाहट काएनात के लाखों जानवर, परिन्दे ज़िब्ह करके मेरे दस्तरख़्वान पर आए। फल टूट के आए।

दूध थनों से निकलकर आया। मुर्ग़ियाँ ज़िब्ह होकर आयीं बकरियाँ ज़िब्ह होकर आयीं। परिन्दे भुने हुए आए। गोश्त भुने हुए आए। कबाब तले हुए आए। रोटियों के ढेर लग गए। कपड़ों के ढेर लग गए। ज़मीन के फ़र्श बिछाकर सब्ज़ा उगाया। हवाओं को चलाया। मीठे पानी को निकाला। कढ़वे पानी को जुदा किया। समुंद्रों से आबी बुख़ारात बनाकर उड़ाया। दरियाओं को बहाया। ज़मीन व पानी की मख़्लूक़ को मेरी ख़िदमत में लगाया।

एक कुत्ते ने रोटी पर निभा दी। इन सारी नेमतों की क्या क़ीमत होनी चाहिए। कभी सोचो तो सही सिर्फ़ आँख न झुका सके। कानों को गाने से न बचा सके। अपनी ज़बान को गाली से रोक न सके। पाँच वक़्त नमाज़ न पढ़ सके। किसी की बेटी से नज़रों को न झुका सके।

आख़िरत की फ़िक्र

क्या अल्लाह सो गया है? क्या अल्लाह ग़ाफ़िल हो गया है? क्या वह देखता नहीं? क्या क़यामत न आएगी? जहन्नम की आग भड़क नहीं रही है? क्या जन्नत महक नहीं रही है? या तराज़ू टूट गया या पुलसिरात उठा दिया गया, ना! ना! ना।

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ यह मेरा अल्लाह आ गया।

﴿وازلفت الجنت للمتقين﴾ यह जन्नत आ गई। ﴿وجيئ يومئذ بجهنم﴾ यह दोज़ख़ आ गई। ﴿وان من كم إلا واردها﴾ यह पुलसिरात आ गया। ﴿ونضع موازين القسط﴾ और यह तराज़ू आ गया और फिर मैं भी आ गया। ﴿وحشرنا هم﴾ मैं भी आ गया। कैसे आया? बंधा हुआ, जकड़ा हुआ, सिमटा हुआ। मैं भी आया। फिर कहा ﴿لم﴾ ﴿الفواجا﴾ फ़ौज-दर-फ़ौज मैं भी आया। ﴿يوم يخرجون من الاجداث سراعا﴾ क़ब्रों से निकलकर मैं भी आया। ﴿فان ما هي زجرة واحدة﴾ ﴿فاذاهم﴾ क़ब्रें फटीं, हम निकले, यह अल्लाह, यह जन्नत, यह जहन्नम, यह पुलसिरात, यह तराज़ू, यह फ़रिश्ते, यह अर्श, यह अर्श के फ़रिश्ते, मेरा अल्लाह बोला, मेरे बंदे! आज हिसाब के लिए तैयार हो जाओ।

क़यामत का मंज़र

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾ मैं भी आया, फ़रिश्ते भी आए।

﴿يوم تسير الجبال ترالارض بارضة وحشرناهم لقد احصاهم وعدهم عدا.﴾

और गिन-गिनकर जमा किया। भागो भागो ﴿اين المفر﴾ बोलो कहाँ भागोगे। यहाँ कोई इलाक़ा ग़ैर नहीं है। इलाक़ा ग़ैर भाग गए मगर अब ﴿اين المفر﴾ कहाँ भागोगे? भाग के दिखाओ छिपकर दिखाओ। ﴿لا يخفى منكم خافيه﴾ आज नहीं छिप सकते ﴿فانفروا﴾ ﴿فانفروا﴾ छिप के आदमी जान बचाए, भागकर आदमी जान बचाए तो आज अल्लाह कहता है ताक़त है तो आज ﴿فانفروا﴾ भाग के दिखाओ। कहता है या अल्लाह तू क्या करेगा? कहेगा

यह दुनिया के करतूत

अभी तेरी किताब खोलूंगा ﴿واذا الصحف نشرت﴾ या अल्लाह फिर क्या करेगा? फिर मैं कहूँगा ﴿اقراء كتابك﴾ पढ़ फिर एक एक हरफ़ लिखा आएगा। फिर तू क्या करेगा?

﴿مالى هذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرا إلا احصاها.﴾

हाय मैं मर गया। इस किताब में सब कुछ लिखकर दे दिया। पकड़ो किसी के उल्टे हाथ में जब किताब आएगी तो वह कहेगा मैं मर गया ﴿يا ليتنى لم اوت كتابيه﴾ ऐ लोगों में बाज़ी हार गया। देखो मेरी उल्टे हाथ में किताब आ गई। अल्लाह कहेगा इधर बाज़ी हारी उल्टे हाथ में किताब मिली, नेक़ियाँ घटीं उधर ऐलान हुआ फ़लां फ़लां का बेटा आज बाज़ी हार गया, नेकियाँ घट गयीं।

﴿قد خفت موازينه وشقى شقاء لا خزانه ابدا.﴾

नाकाम हो गया फिर अल्लाह कहेगा पकड़ो, खोलो। फ़रिश्ते पकड़ेंगे। देखें कैसे पकड़ेंगे यहाँ से हाथ डालेंगे, कहाँ जबड़े के नीचे। सारा जबड़ा निकलकर बाहर आ जाएगा और यूँ धक्का देंगे तो यूँ उलट-पलट होकर गिरेगा। औरतों का सिर की चोटी से पकड़ेंगे और वह यूँ लुढ़कती हुई जाएगी। कहेगी रहम रहम तो फ़रिश्ते कहेंगे। रहमान ने तुम पर रहम नहीं किया तो हम तुम पर कहाँ से रहम करें।

अल्लाह के वास्ते आख़िरत का सौदा न करो

मेरे भाईयो! अल्लाह का वास्ता देता हूँ। इस ज़िंदगी से लौट आओ। गुनाहों की ज़िंदगी में कुछ नहीं है। माल की दौड़ में कुछ

नहीं है। हलाकत के सिवा कुछ नहीं है। यह मिट जाने वाला घर है अगर इसके सौदे कर लिए आख़िरत का सौदा न किया तो फ़रिश्तों ने पकड़ा, बाँधा, जकड़ा, जहन्नम में धक्का दिया। आगे फ़रिश्तों ने कहा ओ बदबख़्तो—

الم یاتکم رسل منکم یتلون علیکم آیات ربکم
وینذرونکم لقاء یومکم هذا.

क्या तुम्हें कोई बताने वाला नहीं आया था कि कुछ कर लो? ﴿قالو بلی﴾ कहेंगे कि आए तो थे। फिर तुमने क्या किया? फिर चुप। अगर सिर में दर्द हो तो कहते हैं गोली दो, गोली दो। सिर में दर्द है अरे ज़ालिम मौत का दर्द पड़ने वाला है। इसकी भी तो दवा कर लो। बिजली का बल्ब फ़्युज़ हो जाए तो कहते हैं बल्ब लगाओ, अंधेरा है। क़ब्र में भी तो अंधेरे आने वाले हैं कोई उसका भी तो इलाज कर ले। अरे उठ चुके हैं शंहशाहों के जनाज़े, वज़ीरों के जनाज़े बेगम और साहब के जनाज़े, अमीर और अमीरन के जनाज़े, ग़रीब और ग़रीबन के जनाज़े, बादशाह व फ़क़ीर, हसीन व बदसूरत जाओ देखो तो सही कि क़ब्र पुकार पुकारकर कह रही है कि यही आख़िरी ठिकाना है। तैयारी करके आओ।

जहन्नम की हौलनाकियाँ

आग ने घेरा और फिर आग ने जकड़ा, पकड़ा बिस्तर बिछ गए आग व अंगारे इकठ्ठे करके, ऊपर चादर डाली जाएगी। आग की तह से कमरे बनाए गए।

﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ ऊपर छत लगाई गई ﴿انها عليهم مؤصدہ﴾

छत भी आग, दीवार भी आग, चारपाई भी आग, बिस्तर भी आग, कुर्ता भी आग, शलवार भी आग, टोपी भी आग, ऊपर से खौलता हुआ पानी पीने का जिसका प्याला मुँह के करीब करेगा तो सारे मुँह की खाल उतरकर प्याले के अंदर गिर जाएगी।

इसके बावजूद उसे पीना होगा। उसे पीना होगा। समझो मैं क्या कह रहा हूँ। समझो मैं क्या कह रहा हूँ। आख़िर पिएगा। प्यास ऐसी कि पीना पड़ेगा। पेट की आँते मेदा काटकर पाख़ाने के रास्ते बाहर निकलेंगी। फ़रिशता आकर मुँह में डाल देगा।

मेरे भाईयो! यह हो रहा है। मेरे नबी "मेअराज" पर गए। देखा कि एक आदमी का पेट गुंबद की तरह है और उसको सज़ा हो रही है। मुख़्तलिफ़ सज़ा हो रही है। अजीब सज़ा हो रही है। उसके पेट के अंदर साँप बिच्छू नज़र आए जो उसको अंदर से काट रहे थे। उनके अंदर काटने की वजह से उसकी हाय हाय सबसे ज़्यादा, उसकी चीख़-पुकार सबसे ज़्यादा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन है?

कहा यह सूद खाने वाला है। सूद खाने वाले के पेट में साँप उतर जाएंगे। ज़ानी और शराबी को बाहर से डसेंगे। इतने साल बाद इतना मुनाफ़ा, पाँच साल इतना मुनाफ़ा। अरे यह मुनाफ़ा नहीं है। यह ईमान के बेचने के सौदे हैं। यह आग के अंगारे हैं। सूद की नसल कभी पनप न सकी। हलाल खाने वालों को कभी कोई मिटा न सका। मेरे भाईयो! इस तरह पकड़ आएगी।

अच्छे आमाल का ईनाम

अगर नेकियों का पलड़ा भारी हो गया तो फरिश्ता कहेगा—

﴿فلان ابن فلان قد ثقلت موازينه وسعيد سعدة لا يشقى بعدها ابدا﴾

मुबारक! मुबारक! फलां कामयाब हो गया, फलां कामयाब हो गया। ऐलान होगा। कपड़े पहनाओ, सब्ज़ रौशन ज़ेवर पहनाओ, सोने के कंगन फिर पाँच फिट का आदमी जन्नत का क्या मज़ा उठाएगा। इसका क़द उठाओ, कितना उठाओ आदम अलैहिस्सलाम जितना।

आदम अलैहिस्सलाम का क़द कितना था? एक सौ पच्चीस फ़िट लम्बा क़द। हमारी इन मीनारों से भी ऊँचा क़द होगा। मर्दों के चेहरों से दाढ़ी हटा दी जाएगी हाँ अगर दुनिया में नहीं रखी पता नहीं आगे रखनी पड़ जाए तो पता नहीं लेकिन जन्नत में आकर दाढ़ी ग़ाएब, जिस्म के बाल ग़ाएब सिर्फ़ सिर के बाल, भवों के पलकों के बाल होंगे, भीगी मूंछें चमकता चेहरा, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न फिर दाऊद अलैहिस्सलाम की ज़बान, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल, ईसा अलैहिस्सलाम की उम्र ओर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़।

उसके जिस्म से उठने वाली महक और कपड़ों से उठने वाली महक। जन्नती औरत अगर दुपट्टे का कपड़ा दुनिया में लहरा दे तो सारी काएनात ख़ुशबूदार हो जाएगी। यह भी एक नारा लगाएगा।

नारे में आदमी आवाज़ ख़ुशी में ज़ोर से निकालता है और आवाज़ बेसाख़्ता निकलती है। और जिसने हमेशा की कामयाबी को पा लिया तो आज वह नारा न लगाए तो क्या करे। हमेशा हमेशा कहाँ से और कोई लफ़्ज लाऊँ? अबदी! अबदी! अबदी! यह लफ़्ज भी छोटा है। हमेशा की कामयाबी उसका मुक़द्दर बन गई।

जन्नत का अंगूर

एक बद्दू बोला ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसललम! क्या जन्नत में अंगूर है? कहा है। कहा एक गुच्छा कितना बड़ा होगा? तो कहा कि एक कव्वा एक माह तक सीधा उड़ता चला जाए न इधर जाए न उधर जाए। एक महीने की उड़ान के बाद एक अंगूर का गुच्छा ख़त्म होगा। कहने लगा एक दाना कितना बड़ा होगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरे बाप ने बड़ा अच्छा ऊँट ज़िब्ह करके गोश्त बनवाकर बोल बनवाया है कभी तेरी माँ से? कहा जी हाँ कई दफ़ा। कहा जितना बड़ा वह बोल है इतना बड़ा एक दाना होगा। तो वह बेचारा अपनी सादगी में बोला बस मुझे और मेरी बीवी को तो एक दाना ही काफ़ी है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तेरे सारे घर को काफ़ी है। जब अंगूर इतना बड़ा तो केला कितना बड़ा, तरबूज़ कितना बड़ा। सोचो सोचो। मेरे भाईयो क्या कुछ मेरे अल्लाह ने बनाया।

﴿فهو في عيشة الراضيه في جنة عاليه. قطوفها دانيه﴾

फल झुक, गुच्छे पके, कभी गोश्त के ज़िक्र, कभी फलों के ज़िक्र। पानी की नहरें, दूध की, शहद की। शराब के चश्मे बह रहे हैं। ऊपर हवा में उड़ उड़कर पानी जा रहा है। उड़ने वाले महल भी हैं। जन्नत में कुछ महल ऐसे भी हैं कि नीचे कोई सुतून नहीं, ऊपर किसी ज़ंजीर ने नहीं पकड़ा और हवा में उड़ते जा रहे हैं। किसी ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल इनमें दाख़िल कैसे होंगे?

कहा जैसे परिन्दा उड़कर घोंसले में चला जाता है ऐसे ही उसके अंदर चले जाएंगे और ऐसे ही उससे नीचे उतर आएंगे।

फिर उसको सजाया। जन्नत की ख़ूबसूरत लड़कियों के साथ कहीं ﴿حور عين﴾ कहीं ﴿خير الحسان﴾ कहीं ﴿عرابا اترابا﴾ कहीं ﴿كواعب اترابا﴾ उनके हुस्न व जमाल की अल्लाह के नबी ने तारीफ़ बयान की है कि मैं ज़ुबान से बता ही नहीं सकता।

जन्नत के ख़ूबसूरत महल

जन्नत के महल एक ईंट मोती की एक ईंट सोने की, एक चाँदी की, एक ज़ुमुर्रद की, एक याक़ूत की, लाअल की, एक जवाहर की। मुश्क के गारे, ज़ाफ़रान की खाद, अल्लाह का अर्श छत बना और अल्लाह ने अपने हुस्न और अपने नूर में से उसमें नूर डाला।

और जन्नत की लड़की को बहुत हुस्न बख़्शा लेनिक ईमान वाली औरत जन्नत की औरत से सत्तर गुना ज़्यादा ख़ूबसूरत हो जाएगी।

﴿يشربون من كاس كان مزاجها كافورا.﴾

कुछ लोग होंगे जो शराब डालेंगे, ख़ुद पिएंगे। एक ऊपर का दर्जा होगा।

चकोर की नख़रीली चाल का तज़्करा

﴿ليسقون فيها كاس كان مزاجها زنجبيلا.﴾

कुछ लोगों को जन्नत की हूरें पिलाएंगी डालकर ग़ुलाम भी

पिला रहे हैं, ख़ुद्दाम भी पिला रहे हैं और जन्नत की हूर आएगी क़दम उठाती हुई एक हाथ में जाम दूसरे हाथ में सुराही, क़दम के चकोर की चाल होगी। चकोर एक परिन्दा है जो बड़े नख़रे की चाल चलता है। ऐसे जैसे नई नई बस आती है। उसके पीछे लिखा होता है, देखो पोर चकोर दी। जब वह थोड़ी पुरानी हो जाती है तो फिर लिखा होता है, हॉरन देकर पास करें। फिर जब थोड़ी और पुरानी हो जाए तो लिखा होता है, या पासकर या बर्दाश्त कर। फिर जब थोड़ी और पुरानी हो जाए तो लिखा होता है, न छेड़ मलंगा नूं।

यह इल्म मैंने कहाँ से हासिल किया? यह तबलीग़ में सड़क पर चल चलकर हासिल किया।

जन्नत की हूर के अनोखे अंदाज़

तो वह जन्नत की औरत एक क़दम उठाएगी तो एक क़दम में एक लाख के नख़रे दिखाएगी। उसके जिस्म के बल, अंदाज़, उसकी अदा, उसकी मुस्कुराहट जैसे एक छोटा बच्चा जिसे हम बार बार हँसाते हैं। क्यों बच्चे की मुस्कुराहट अच्छी लगती है क्योंकि उसके अंदाज़, उसकी मुस्कुराहट जी को लगती है।

क्या पूछते हो वह क्या जन्नत है अठकेलियाँ लेती हुई। नाज़ व अंदाज़ दिखाती हवाओं के अंदाज़। हूरों की चाल, उनका चलकर आना, नाज़ व नख़रे में आना है। रेशम में सजकर आना, ताज का सिर पर धजकर आना, मोतियों की चमक, अंगूठियों की चमक, उसकी चाल का ताज जिनका अदना मोती पूरब-पश्चिम को चमकाएगा और कंधों पर बिखरे हुए बाल जो पाँव की ऐड़ी

तक जाते हैं। कुछ बाल तोड़कर दुनिया में डाल दो सारी दुनिया में खुशबू फैल जाए, रौशन हो जाए, मुअत्तर हो जाए। दुनिया की हसीना के सिर में जुएं और उस हसीना के सिर में मुश्क और काफ़ूर की खुशबूएं हैं।

मगर ईमान वाली औरत को छोटा न समझो। अगर यह अल्लाह को राज़ी कर गई तो इस औरत का हुस्न जन्नत की हूर से सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा होगा वह हूर आ रही है, मुस्कुरा रही है। एक नज़र पड़ेगी। उसे पीना भी भूलेगा, जाम भी भूलेगा, पहले नज़रों से पिएगा, वह नज़रों से पिलाएगी, यह नज़रों से पिएगा। चालीस बरस उसे यूँ ही देखता रहेगा। यह दुनिया में नज़र की हिफ़ाज़त का सिला मिल रहा है। यह बैठी रहेगी वह देखता रहेगा। यह आँखों में बातें करेगी और आँखों-आँखों की बातों में वह लज़्ज़त होती है जो बातों में नहीं होती। तो यह ज़िना से बचने का सिला है। उस हूर की मीठी आवाज़ जो सुनने को मिली है यह मौसीक़ी न सुनने का बदला है। यह कैसे हो सकता है कि रात का गाना सुनने वाले और रात को रोने वाले अल्लाह बराबर कर दे। यह कैसे हो सकता है कि सूद खाने वाला और हलाल की कमाई से बच्चों की दवाई भी नहीं ले सकता और बच्चों का तड़पना देखता है और उसकी जेब में एक पैसा भी नहीं कि दवाई लेकर दे सके। यह कैसे बराबर हो सकते हैं।

नमाज़ पढ़ने वाला और न पढ़ने वाला, सच बोलने वाला, झूठ बोलने वाला, पाकदामन और ज़ानी, पर्देदार और बे पर्दा, आवारा और मुत्तक़ी अगर इन दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है और अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है, अल्लाह माफ़ कर देगा तो फिर मैं कहता हूँ

इब्ने ज़ियाद और हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का झगड़ा मिट गया।

हाय हाय मज़लूम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

अगर यही क़िस्सा कहानी है तो हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घर के सोलह आदमी को ज़िब्ह होते हुए देखा और सब्र से सहते रहे। मासूम बच्चे अब्दुल्लाह। अरे ज़ालिमों बच्चा तो मुर्ग़ी का भी ज़िब्ह करते हुए डर लगता है यह तो आले रसूल था। अब्दुल्लाह दो साल का सबसे आख़िर में शहीद हुए। आख़िर बार बुलवाया, प्यार कर लूँ, अल्विदा कर लूँ, जाने का वक़्त है, मौत सिर पर खड़ी है, ज़िंदगी जाने को है, मौत आने को है। अब्दुल्लाह को बुलवाया। उसे प्यार किया। वह प्यास में बिलख रहा था। उसे सीने से लगाया फिर उसके होंटो को चूमा। यह गोद में लिए बैठे थे कि इब्ने मौकफ़ का सनसनाता हुआ तीर आया और अब्दुल्लाह के गले से पार हो गया।

हाय हाय सारी जंग में एक बोल ज़बान पर न आया लेकिन जब अपने मासूम बच्चे को तड़पते देखा तो उसके ख़ून को अपने दोनों हाथों में लिया और चुल्लू भरा और आसमान की तरफ़ हाथ उठाए और फ़रमाया एक मेरे मालिक! अगर तूने अपनी मदद को रोक लिया है तो भी मैं राज़ी हूँ लेकिन इनसे तू ही निबटना। कहाँ लिखा है महरिम मुजरिम बराबर हो जाएंगे। क्या क़ुरआन बदल गया? क्या हदीस बदल गई? तफ़सीर बदल गई? या अल्लाह बदल गया? अल्लाह वही है।

﴿قل هو الله احد. الله الصمد. لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا احد.﴾

अल्लाह वही है।

आज सच्ची तौबा कर लो

आओ! आओ! आज तौबा कर लो। बहुत अपने रब को नाराज़ कर लिया। आओ भाई आज सुलह कर लें अपने मौला से तो बोलो तौबा करते हो? यह तो मैंने ज़ाती तक़ाज़ा रखा है। मुझे सारे जवान नज़र आ रहे हैं। बूढ़ा कोई नज़र नहीं आ रहा है। यह सारी नर्सरी बैठी है जिससे बाग़ बनेगा। जिससे बहार आएगी। जिससे ताज़ी हवा चलेगी। जिससे नसीम के झोंके आएंगे और इंसानियत को फिर से बहार देखने को मिलेगी। आँखें तरस गयीं नौजवान नसल में तक़्वा देखने को, औरतों में पाकीज़गी, पाकदमानी देखने को आँखें तरस गयीं। बाज़ारों से सूद को निलकता देखने और अल्लाह की इताअत को देखने को आँखें तरस गयीं। ख़िज़ां ही ख़िज़ां है। आख़िर कब ख़त्म होगी लेकिन अब कुछ उम्मीद हो चली है।

एक ज़माना था कि एक आदमी भी हमारी नहीं सुनता था। आज अल्लाह ने रुख़ फेरा है। सुबह की आमद है। हवा चलने वाली है। सफ़ेदी आने वाली है। अंधेरों के भागने का वक़्त आ चुका है। ज़ुल्म के सोने का वक़्त आ चुका है। अद्ल के जागने का वक़्त आ चुका है। जल्दी जल्दी तौबा करो। हम दावत की इस मुबारक मेहनत में चल पड़ें ताकि आइंदा जो इस्लाम की नसल और हवा चलने वाली है। उन सबका अज्र मिले हमें मिल जाए।

मेरे भाईयो! आज मेरी इतनी मान लो। अल्लाह का वास्ता देता हूँ। आज तौबा करके उठो। तो बोलो तौबा करते हो? आज ज़मीन व आसमान का गवाह बना दो। आज फ़रिश्ते ख़ुश हो

गए। आज अल्लाह भी खुश हो गया। तुम्हारे मेरे रब की क़सम! जिसने हमें यहाँ बिठाया है अगर तुमने तौबा दिल से की है तो तुम्हें मुबारक हो कि तुम्हारे सब गुनाह माफ़ हो चुके हैं। अल्लाह तुम्हें देखकर खुश हो रहा है।

बंदों की तौबा पर अल्लाह की खुशी

तो मेरे भाईयो! आज वह अल्लाह जो अलीम है, ख़बीर है। जिन भाईयों ने सच्ची तौबा की है अल्लाह उनके नाम लेकर, उनके बाप के नाम लेकर अपने अर्श पर सदा लगा रहा है। निदा कर रहा है, फ़रिश्तो फ़लां बिन फ़लां ने तौबा की। तुम गवाह रहना मैंने माफ़ कर दिया, मैंने माफ़ कर दिया। यह तुम्हारा एक एक बोल तुम्हारी तौबा अगर सच्ची है तो उसने फ़र्श से उठाकर अर्श पर पहुँचा दिया।

अल्लाह को खुदा न कहा करो

तो मेरे भाईयो! अल्लाह को अपना बनाओ। अल्लाह नाम ही ऐसा प्यारा है। मैं कहा करता हूँ कि अल्लाह को खुदा न कहा करो। अल्लाह न खुदा है, अल्लाह न गॉड है, न भगवान है, न अवतार है, न देवता है। अल्लाह बस अल्लाह ही है। अल्लाह का कोई तुर्जमा नहीं है।

उलमा ने खुदा इस्तेमाल किया है। मैं इसको ग़लत नहीं कह रहा हूँ। अपना ज़ौक बता रहा हूँ। अल्लाह, अल्लाह ही है। किसी भी लफ़्ज़ से हर्फ़ निकाल दो। मतलब बदल जाता है। जमील का

'ज' हटाओ मैल बन गया, आगे 'मीम' हटा दो जेल बन गया 'या' हटा दो जमल (ऊँट) बन गया। ख़ुदा का 'ख़' हटाओ तो 'दा' हो गया, 'द' हटा दो 'ख़' हो गया।

अल्लाह का 'अलिफ़' हटा दो तो अल्लाह ने क़ुरआन में गवाही दी ﴿لله ما في السموات والارض﴾ इसका 'लाम' हटा दो तो 'लहु' हो गया। क़ुरआन में बोला ﴿له ما في السموات وما في الارض.﴾ आख़िरी का 'लाम' हटा दो तो 'इलाहु' हो गया तो क़ुरआन बोला ﴿وهو الذي في السماء اله في الارض اله﴾ अब 'अलिफ़' भी हटा दो 'लाम' भी हटा दो, अगला 'लाम' भी हटा दो, आख़िरी 'लाम' की 'पेश' की आवाज़ को बाक़ी रखो बाक़ी सबके ऊपर हाथ रख दो 'पेश' की आवाज़ भी अल्लाह, अल्लाह बोलती है।

هو الله الذي لا اله الا هو، الله لا اله الا هو، الم٥الله لا اله الا
هو، فان تولوا فقل حسبي الله لا اله الا هو،

यह भी अल्लाह, और इलाहा तो अल्लाह ही है। दिल के पट खोल दो और कहो अपने रब से—

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

अपने दिल को तख़्त बना दो। अर्श बना दो अपने रब का फिर देखो अल्लाह तुम्हें ज़िंदगी की कैसी बहार दिखाता है।

तो मेरे भाईयो! यह अल्लाह घर बैठे नहीं मिलता। धक्के खाने से मिलता है। दर-दर की ठोकरे खाने से मिलता है। दर से बेदर हो, घर से बेघर हो, घाट-घाट का पानी पियो तब जाकर अल्लाह मिलता है।

इमाम ग़ज़ाली रह० की क़ुर्बानी

मेरे भाईयो! इमाम ग़ज़ाली रह० ने सत्ताइस साल की उम्र में सदर मुदर्रिस होकर निज़ाम संभाला जो उस ज़माने में इज़्ज़त व वक़ार के ऐतबार से अमीरूल मोमिनीन से बड़ा ओहदा था। सिर्फ़ चार साल के बाद उसको ठोकर मार दी और इकत्तीस साल की उम्र में निकल गए। दस साल दर-ब-दर रहे।

दस बरस गुज़र गए धक्के खाते खाते। एक आदमी बोला अरे ग़ज़ाली! तुझे क्या मिला इज़्ज़त छोड़ी, तदरीस छोड़ी, तसनीफ़ छोड़ी, वक़ार छोड़ा। तुझे क्या मिला? क्या मिला धक्के खाकर? तो इमाम ग़ज़ाली रह० ने का जवाब सुनो। क्या कहा? पता है तुझे कि मुझे क्या मिला? अरे मैंने "लैला" छोड़ दी, मैंने "साअदा"छोड़ दी। तीन नाम हैं इश्क़ के जो अरबी शायरी में बोले जाते हैं, "लैला", "रफ़ीआ" और "साअदा"। ये अलामती नाम हैं। ये तीनों किरदार मौजूद थे क्या मतलब? मैंने बनावटी ख़ुदा छोड़े, बनावटी इश्क़ छोड़े, बनावटी ओहदा छोड़ा, मैं अपने महबूब को लौटा। उसके घर की राहों को लौटा। मुझे दूर से उसकी मुहब्बत का नूर नज़र आया। उसके घर के आसार नज़र आए तो जैसे मंज़िल की तरफ़ लौटा हुआ मुसाफ़िर दूर दराज़ से आ रहा हो तो दस किलोमीटर पहले से ही उसका दिल उछलने लगता है और वह घर उड़कर पहुँचना चाहता है।

तो ऐ मेरे दोस्त मुझे अल्लाह ने अपनी मुहब्बत का नज़ारा कराया। मुझे "लैला" भूली, मुझे "साअदा" भूली। मैं सब भूला। मैं भागकर चला, मैं दौड़कर चला मगर मेरा शौक़ मुझसे पहले

अल्लाह से जा मिला। मेरा इश्क़ मुझसे पहले मेरे अल्लाह के दर पर जा गिरा। तो मेरा अल्लाह जब मिला तो मुझे सब कुछ मिला।

भाईयो! अल्लाह की राह में निकलना है। अल्लसह से सुलह करना है तो कोई अल्लाह से न मिल सका, मुहम्मदी बने बग़ैर कोई अल्लाह को नहीं पा सका। मुहम्मदी बने बग़ैर तो इतना करो के मुहम्मदी नज़र आओ। उसकी चाल में, उसकी ढाल में, उसकी गुफ़तार में, उसकी रफ़्तार में, उसकी सूरत में, उसकी मूरत में उतरो। इस्लाम वह ख़ुशबू है जो फैलकर रहती है।

मौलाना तारिक़ जमील का अपरहण

सन् 1971 ई० में तीन दिन में गया था। वहीं तीन दिन से तीन चिल्ले किए। तो हमारे इलाक़े में मशहूर हो गया कि भाई वह मौलवी बख़्श के बेटे को मौलवी अपरहण करके ले गए। यह सारे इलाक़े में मशहूर हो गया। एक तबलीग़ में जाना क्या अपरहण हो गया।

बस मैंने कालेज छोड़कर मदरसे में दाख़िल होने का इरादा कर लिया तो वालिद ने भी डंडा उठा लिया। और वालिदा ने कहा तुम्हें आक़ कर देंगे। घर से निकाल देंगे। तू मुल्ला होना चाहता है। हमारी नाक कटवाना चाहता है। हमने इतना पैसा ख़र्च किया अब तू कहता है मुल्ला बनूंगा। हम हर्गिज़ यह बर्दाश्त नहीं करेंगे।

यह आज से छब्बीस साल पहले का दौर बता रहा हूँ। आज वह दौर है शहज़ादों की औलादें हमारे मदरसों में आकर पढ़ रही हैं। शहज़ादों की बच्चे चटाईयों पर बैठकर क़ुरआन व हदीस पढ़ रहे हैं। तो नियत करें अल्लाह तेरी मानकर चलेंगे और तेरे नबी

के तरीक़े पर ज़िंदगी गुज़ारेंगे। आदमी जब नियत कर लेता है तो उसी दिन से अज्र शुरू हो जाता है। पाँच वक़्त नमाज़ का एहतिमाम हो जिसमें कभी नाग़ा न हो। न सफ़र न घर में, क़ुरआन की तिलावत, अल्लाह का ज़िक्र, अपनी औलादों को दीन सिखाने का जज़्बा, अपने घरों में दीन लाने की मश्क़ की जाए और अल्लाह से मांगा जाए कि अल्लाह पाक हमारी ज़िंदगी को इस्लाम के फैलने का ज़रिया बनाए।

जब से आँख खुली तेरे दीन को मिटते देखा! (दुआ)

या अल्लाह हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे। या अल्लाह हमारी कमियों को माफ़ कर दे। हम से गुनाह जान बूझकर हुए या नादानी से हुए अपने फ़ज़्ल से, अपने करम से हमें माफ़ फ़रमा दे। आज तक जो ज़िंदगी ग़फ़लत में गुज़री उस पर तो हम तौबा करते हैं। हमें अपनी तौबा में पक्का कर दे। हमें नफ़्स और शैतान के पंजे और फंदे से निकाल दे। या अल्लाह चारों तरफ़ नाफ़रमानी की फ़िज़ा है। इस फ़िज़ा को तू ही अपनी ताक़त से बदले तो बदले, हमारे तो बस में नहीं रहा। हमारे हाथ से तो डोर निकल गई मगर तेरे लिए तो मुश्किल नहीं। हमारे लिए नामुमकिन है। चारो तरफ़ इस्लाम के डाकू हैं। हर तरफ़ फिसलन है, हर मोड़ पर रुकावट है, हम तो आजिज़ आ चुके। हम तो थक चुके हैं तू अपने फ़ज़्ल व करम से ईमान की हवा चला दे।

जबसे आँख खोली है तेरे दीन को मिटते देखा है। तेरे दीन

का मज़ाक़ उड़ते देखा है। या अल्लाह अपनी क़ुदरत को ज़ाहिर फ़रमा और हमारी बेबसी पर रहम फ़रमा। हमें मज़ीद ज़िल्लतों से बचा। या अल्लाह हमें मज़ीद रुसवाइयों से बचा। हमें मज़ीद हलाकतों से बचा ले। हमारा सब कुछ चला गया। हम उस मुसाफ़िर की तरह हैं जो माल व मता भी गवां बैठा, घर वालों से भी बिछड़ा। अंधेरा ही अंधेरा है। न आगे का पता चलता है न पीछे का पता चलता है। मंज़िल से भी दूर हुए, रास्ते से भी भटक गए। या अल्लाह तूने फ़िरऔन के घर में आसिया को हिदायत अता फ़रमाई और तूने आज़र के घर में इब्राहीम को पैदा फ़रमाया। ऐ इब्राहीम ख़लील के अल्लाह! ऐ मूसा कलीम के अल्लाह और ऐ मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह तूने तीन सौ साठ बुतों की पूजा करने वालों को रज़ियल्लाहु अन्हु बना दिया। तू आज भी हिदायत की ताक़त में कामिल है और इंतिक़ाम की ताक़त में कामिल है। तू आज इन फ़िज़ाओं में हिदायत की चाँदनी फैला दे। (आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

जज और वकीलों से ख़िताब

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا شريك له ونشهد ان محمدا عبده ورسوله. اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم. بسم الله الرحمن الرحيم.
قل هذه سبيلي ادعوا الى الله على بصيرة انا ومن اتبعني وسبحان الله وما انا من المشركين.

وقال النبي صلى الله عليه وسلم يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة.

मुँह पर तारीफ़ करने के अहकाम

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! एक हदीस में आपकी ख़िदमत में मौज़ू से हटकर अर्ज़ करना चाहता हूँ। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है–

﴿لا تطروني اطرأ كما اطردرت اليهود والنصارى انبياء هم.﴾

अल्लाह के नबी की शान को जितना भी बयान किया जाए। उसका इदराक नहीं हो सकता है न कोई कर सकता है न कोई उसको अल्फ़ाज़ के साथ समझ सकता है।

उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे मेरे मर्तबे से ज़्यादा न बढ़ाओ जैसे यहूदी और ईसाईयों ने अपने नबियों के मर्तबे को बढ़ाया।

दूसरी हदीस में आता है कि किसी की यूँ बेजा तारीफ़ करना ऐसा है जैसे उसका खोटी छुरी से ज़िब्ह करना। वह आख़िरकार अपने आपको ऐसा ही समझने लगता है। होता तो वह है नहीं। न वह कोई समझदार न कोई आलिम, इल्म हासिल करने में ज़िंदगी गुज़र गई और क्या सीख लिया।

ज़ुल्म से बचो, इंसाफ़ करो

मैं आइंदा के लिए आपको उसूल बता रहा हूँ। किसी का हौसला बढ़ाना है, यह भी ज़रूरी है, हिम्मत तोड़ना ठीक नहीं है और किसी को इतना चढ़ाना कि वह आपे से बाहर निकल जाए यह भी हलाकत है।

﴿ومن يعمل مثقال ذرة شرا يره.﴾

एक राई के दाने के बराबर एक वकील साहब का क़लम किसी ज़ालिम के हक़ में चल गया तो नतीजा देखेगा। एक राई के दाने के बराबर वकील साहब का क़लम मज़लूम से हटकर ज़ालिम की तरफ़ झुक गया तो नतीजा देख लेगा। अगर एक पल को मज़लूम की तरफ़ मुड़ गया तो उसका नतीजा भी देख लेगा। यह क़ुरआन की सबसे हैबतनाक आयत है और क़ुरआन की

सबसे ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली आयत है। सबसे ज़्यादा हौसला देने वाली आयत है—

يا عبادى الذين اسرفوا على انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله. ان الله يغفر الذنوب جميعا. انه هو الغفور الرحيم.

ऐ मेरे नाफ़रमान बंदो! ना उम्मीद न होना, तौबा करो तो मैं सारे गुनाह माफ़ कर दूंगा।

फिर क़ुरआन की सबसे अज़ीम आयत, आज़म आयत, लम्बी नहीं, अज़ीम सबसे ज़्यादा अज़मत से पुर आयत, आयतुलकुर्सी है:

الله لا اله الا هو الحى القيوم

जन्नत वालों के लिए सबसे ज़्यादा खुश करने वाली, सबसे ज़्यादा दिलरुबा आयत यह है—

﴿ولهم فيما ما يشتهى ولهم مزيد.﴾

जो चाहेगा मिलेगा। हमारी चाहतें ख़त्म हो जाएंगी और अल्ला तआला अपने शान के मुनासिब अता फ़रमाएगा। वह ऐशा हमेशा का है। एक दिन का क़िस्सा नहीं है। हमेशा का है।

क़ुरआन की सबसे अद्ल वाली आयत यह है—

ان الله يامر بالعدل والاحسان وايتاء ذى القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر. يعظكم لعلكم تذكرون.

इस आयत में सारे क़ुरआन का निचोड़ बयान कर दिया गया। सारा क़ुरआन एक आयत में है। और इसको कहा जाता है अद्ल वाली आयत। सबसे ज़्यादा अद्ल को बताने वाली, सारा इस्लाम दो चीज़ों में है। "अम्र" व "नही" यह करो यह न करो, यह अपनाओ यह छोड़ दो तो अद्ल व एहसान रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक और उनको देना यह तीन चीज़ें जड़ हैं। सारे करने के काम इन पर आकर जुड़ जाते हैं।

﴿وينهى عن الفحشاء﴾ मुन्किरात, बड़े गुनाह, बग़ावत सारे न करने के काम इन तीनों से जुड़ जाते हैं। तो यह आयत सारे क़ुरआन पर हावी है। अद्ल पूरे इस्लाम की पूरी ताबीर करता है और अद्ल जब ज़िंदा होता है तो पूरी दुनिया सुख-चैन का साँस लेती है। और जब इंसाफ़ बिक जाता है तो मज़लूम सिसकने लगता है तो सोने चाँदी की बारिश भी उस देश को ख़ुशहाल नहीं बना सकती। हमारा पाला ऐसे समझदार लोगों से पड़ा है जो कि पश्चिमी समाज की रौशनी के हिसाब से चलते हैं।

जिन्होंने हमेशा काग़ज़ के फूल देखे, उन्हें पता भी कोई नहीं। जिन्होंने हमेशा रबड़ के पौधे देखे, उन्होंने चमन देखा ही नहीं। जिन्होंने अंधेरों को रौशनी समझा, उन्हें उजाले का पता नही नहीं। उन्होंने हमारा यह ज़ेहन बनाया है कि रोज़गार हमारी रीढ़ की हड्डी है। रोटी है तो कमर सीधी है, रोटी नहीं तो हमारी कमर टूट गई। यह ग़लत इल्म का ग़लत नतीजा है।

मुशरिक को अपना रहबर न बनाओ

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لا تستعجر فى العلم المشرك﴾ कि मुशरिक को अपना रहबर न बनाओ। वह तो अंधा है। वह आख़िरत जानता भी नहीं। उसके सामने तस्वीर पूरी ही नहीं। अधूरी तस्वीर से किस तरह नतीजा निकलेगा? अधूरी तस्वीर से सही शकल किस तरह समझ में आएगी? जब आख़ितर को साथ न जोड़ा जाए तो सही तस्वीर सामने नहीं है तो उसका इल्म भी कुछ सही न होगा। अरे यह कितनी बड़ी नादानी की बात है।

﴿اللہ نور السموات والارض﴾ अल्लाह का नूर है जो चमकता है, दमकता है। जो आँखें ग़ैर-औरत या ग़ैर-मर्द को देखने से झुक जाती है। उन आँखों के चप्पे-चप्पे में अल्लाह तआला अपना नूर दिखाता है। जब ये आँखें आवारा हो जाती हैं अल्लाह तआला उनसे रौशनी छीन लेता है। जो अपने कानों से गाना सुनना बंद कर देते हैं। अल्लाह तआला उनको रेत के ज़र्रों से भी अपनी तस्बीह सुना देता है। जो कान गानों के आदी हो जाते हैं इतनी गंध भर जाती है, इतनी गंदगी भर जाती है, इतना मैल भर जाता है कि सुनाई नहीं देता।

संगीत का गंद जब कानों में उतर जाता है तो अल्लाह तआला के नग़मे सुनने से महरूम हो जाता है। डाक्टर कहते हैं कि कान बिल्कुल साफ़ हैं लेकिन उम्मत के नबी की नज़रें कह गई हैं कि गंदगी से भरा हुआ है। आँख का माहिर डाक्टर कहता है कि आपकी नज़र 6×6 है लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र कह गई कि अंधा हो चुका है। इसकी नज़रों में गंदगी है। बेहयाई की गंदगी इसके अंदर उतर चुकी है।

तो मेरे भाईयो! इस काएनात में एक आदिल हुक्मुरान है जिसने ज़मीन और आसमान को एक अद्ल में बाँधा हुआ है।

दुनिया बर्फ़ बन जाएगी मगर कब?

﴿والسماء رفعها﴾ आसमान बुलंद किया ﴿ووضع المیزان﴾ और इसमें अदल का तराज़ू क़ायम किया। इस अद्ल से मुराद काएनात का अद्ल है। आपने देखा कि एक सेकेंड के फ़र्ज़ी हिस्से बनाए जाएं। अगर उसके बराबर भी ज़ुल्म होता तो काएनात

बर्बाद हो जाती। यह ज़मीन हर सेकेंड के बाद सूरज से दो दशमलव आठ मिलीमीटर दूर हो जाती है। इतनी बड़ी चौबीस हज़ार किलोमीटर की ज़मीन में इतनी ज़बर्दस्त क़ायदे के साथ हर सेकेंड में दो दशमलव आठ मिलीमीटर दूर होती है। अगर सूरज ज़ुल्म करे और इसको अपनी तरफ़ खींच ले, इतना सिर्फ़ तीन माइक्रोमीटर अपनी तरफ़ खींच ले या ज़मीन ज़ुल्म करे और अगले हिस्से को खींच ले, कितना? तीन दशमलव एक मिलीमीटर तो कितना फ़र्क़ पड़ा? तीन माइक्रोमीटर। माइक्रोमीटर का क्या मतलब है कि जिसको आप माइक्रोस्कोप के नहीं देख सकते तो अगर यह ज़मीन आगे हो जाए।

यहाँ पर लोग दुकान दबाकर आपसे केस लड़वाते हैं। पूरा घर दबाया हुआ है और वकील साहब को आगे किया हुआ है? एक नस्ल मर जाएगी, केस चलता रहेगा। कितना ज़ुल्म हुआ है लेकिन सिर्फ़ तीन माइक्रोमीटर का अगर ज़ुल्म हो जाए और ज़मीन आगे चली जाए तो काएनात, हमारी ज़मीन हफ़्तों में बर्फ़ बनकर फ़्रिज हो जाएगी। फिर वह नार्थपोल और साउथपोल का टैम्प्रेचर हरीपूर में हो जाए। डिस्ट्रिक्ट मुल्तान है, पंजाब का गर्म ज़िला इसमें भी बर्फ़ ही बर्फ़ होगी। जैकबाबाद दुनिया का गर्मतरीन ख़ित्ता है, वहाँ भी बर्फ़ के अंबार लगेंगे और सारी इंसानियत बर्फ़ बनकर ख़त्म हो जाएगी।

सूरज ज़्यादती कर जाए और उसको अपनी तरफ़ खींच ले तो कुछ हफ़्तों के बाद हमारी काएनात तंदूर हो जाएगी। तंदूर और उसमें से धुंवा उठना शुरू होगा और सब जलकर राख हो जाएंगे।

अद्ल ख़त्म हो गया तो काएनात जहन्नम का नमूना

इस ज़मीन में आसमान में इतने बड़े अद्ल को क़ायम रखने के लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿واقيمو الوزن بالقسط ولا تخسرو الميزان﴾

जज साहिबान, वकील साहिबान और आम जनता आप भी तो अद्ल करो। तुम भी अद्ल करो। अगर इंसाफ़ मिट गया तो सब कुछ मिट गया। इंसाफ़ है तो सब कुछ है। हमारी रीढ़ की हड्डी रोटी नहीं है, इंसाफ़ है। हमारी बुनियाद इंसाफ़ है। न ज़ेवर न यह सोना न चाँदी न बर्फ़ न भाप। अगर इंसाफ़ है तो काँटों पर भी कमख़्वाब के मज़े आने चाहिए। इंसाफ़ है तो अंधेरे में भी उसको सूरज चकमते दिखाई देंगे। इंसाफ़ है तो सूखी रोटी भी पराठे का मज़ा देगी।

इंसाफ़ टूट गया तो अल्लाह की क़सम इसके घर को घी के चिराग़ भी रौशन नहीं कर सकते। मरमरी छत भी इसको सुकून नहीं पहुँचा सकती। नरम गद्दे भी इसके अंदर की आग ठंडी नहीं कर सकते। सावन की झड़ियाँ और भादो की बरसात भी अल्लाह की क़सम इसके वजूद में भड़कने वाली आग को ठंडा नहीं कर सकती। यहाँ ज़ुल्म छा गया है, इंसाफ़ दब गया। वकील का इल्म बिक गया ज़िना करने वाले के लिए, क़त्ल करने वाले के लिए, ज़मीन दबाने वाले के लिए और जज का क़लम बिक गया कुछ कौड़ियों के बदले। यह देश लुट गया, लुट गया, लुट गया। यहाँ कोई ज़िंदगी नहीं, यहाँ कोई ज़िंदगी नहीं। जहाँ इंसाफ़ है वहाँ

ज़िंदगी है। जहाँ ज़ुल्म है वहाँ मौत है। क़ब्रिस्तान है, मुर्दे हैं जो अपनी ज़िंदगी के बोझ को उठाए हुए ज़िंदा शक्ल में हैं। वह इंसानियत मुर्दा हो चुकी। जिस क़ौम में इंसाफ़ मिट जाता है।

अल्लाह तआला से तअल्लुक़ हज़ारों ऐटम बम से क़ीमती

अगर कारोबार रीढ़ की हड्डी होती तो रीढ़ की हड्डी के लिए हमारे पास अब कितने डालर होंगे। इससे भी कभी बहार आई। जब ये ऐटम बम बनाया पाकिस्तान वालों ने तो शीरनी मिठाई बांटी। मुझे इतना डर लगा कि ज़िल्लत और बढ़ जाएगी। ज़िल्लत और बढ़ जाएगी। अल्लाह की मदद ऐटम बम बनाने पर नहीं। उसकी मदद तो तक़्वे पर है। तक़्वा तो आया नहीं, तौबा तो की नहीं। नाफ़रमानी ऐसी ही है तो अल्लाह पाक ऐटम बनाने से तो इज़्ज़त नहीं देता। मुझे डर है कि ज़िल्लत और न हो जाए, पस्ती और न हो जाए, भवंर और ख़तरनाक न हो जाए तो वही हुआ। मैं कोई नजूमी नहीं हूँ।

हमारा अल्लाह है न कि असबाब

क़ुरआन फ़रमाता है:

ظهر الفساد فى البر والبحر بما كسبت ايدى
الناس ضرب الله مثلا قرية كانت.

यह सब क़ुरआन की तारीख़ बताती है। जब क़ौमों के अमल हद से गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने उन पर अज़ाब के कोड़े

बरसा दिए। मदद और नुसरत के बरसने के सबब अमल की पुख़्तगी और अंदर की दुनिया को आबाद करना होता है। बाहर के मंज़र दूसरा दर्जा रखता है। मैं इंकार नहीं करता हूँ। मैं इंकार नहीं कर रहा हूँ। असबाब का सही इख़्तियार करना हम पर फ़र्ज़ है।

आप देखते नहीं कि अल्लाह के नबी दो जहान के सरदार हैं लेकिन मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा जाते हुए छिपकर निकले से, ग़ारे सौर में तीन दिन छिपे रहे। फिर रास्ता बदला, फिर लम्बा रास्ता लेकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए। असबाब का सही इख़्तियार करना हमारे ज़िम्मे है लेकिन असबाब को सब कुछ समझ लेना यह हमारी तबाही और हलाकत है। हमरा रब अल्लाह है ना कि ये चीज़ें। मदद तो ऊपर से आती है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का पहलवान से मुक़ाबला

ख़ंदक़ की लड़ाई में अमूर बिन ऐन बिन अब्द छलांग लगाकर सामने आ गया कि कोई मेरे मुक़ाबला में आए। सबको उसकी बहादुरी की पता था। सारे ही दुबक गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। इक्कीस साल की उम्र है। आपने कहा हुज़ूर! मैं जाऊँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اجلس انه هو عمرو﴾ तुझे पता नहीं कौन है? यह अमूर है, यह अमूरु है।

उसने फिर नारा लगाया कोई है मेरे मुक़ाबले में? फिर सब ख़ामोश हो गए। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए कि रसूलल्लाह मैं जाऊँ? कहा बैठ जाओ। तुम्हें मालूम नहीं कौन है यह अमर है अमर।

वह कहने लगा कि तुम्हारी जन्नत कहाँ हैं जिसके शौक़ में तुम मरने के दावे करते हो? शहादत की तमन्ना करते हो।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो गए, मैं जाऊँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठ जाओ, यह अम्र है अम्र। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ﴿ان كان عمرو﴾ अगर यह अमर है तो क्या हुआ? दो बातों में से एक बात तो मेरा नसीब होगी, शहादत या फ़तेह।

तो अल्लाह के नबी चीज़ों की रिआयत फ़रमा रहे हैं। इसलिए तो अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बिठा रहे हैं। बैठो बैठो इसका कोई जोड़ नहीं, इसका कोई मुक़ाबला नहीं। इसकी रिआयत में फ़रमा रहे हैं। जब तवक्कुल अल्लाह पर हो जाता है तो असबाब अपने आप सिमट जाते हैं। सिकुड़ जाते हैं। बदल जाते हैं। अल्लाह तासीर बदल देते हैं। जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम ऊपर उठे तो जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा मदद करूं? जवाब दिया तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं, अल्लाह की ज़रूरत है। अल्लाह की मदद की ज़रूरत है तो अल्लाह ने आग को बुझाया नहीं बल्कि जलती आग में से उसकी तासीर को खींच लिया।

वह अपनी क़ुदरत को क़ुरआन के वाक़िआत में ज़ाहिर करके यह असर जमाना चाहता है कि असबाब अपनाओ मगर नतीजा अल्लाह पर रखो। सारी दुनिया की कैमिस्ट्री अब आजिज़ आ चुकी है कि एक वजूद है और इस वजूद पर आग अपने कैमिकल एक्शन करने से आजिज़ है। क्यों आजिज़ है? सारी कैमिस्ट्री फ़ेल हो गई। और जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हज़रत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा को यहाँ से पकड़ा और उसे फूंक मारी तो इस फूंक का

हमल से क्या तअल्लुक़ हुआ? वही हमल हुआ, वही बच्चा जना। सारी की सारी ज़्युलोजी का इल्म अल्लाह ने फ़ेल कर दिया कि लाओ इसकी कोई दलील लेकर आओ। यह कैसे हो गया? बच्चा कैसे हो गया?

﴿فاجائها المخاض الى جذى النخلة قالت يلتني كنت.﴾

मैं अर्ज़ कर रहा है कि आप भाईयों के साथ इस मुल्क की 3/4 की तक़दीर वाबस्ता है। 1/4 की तक़दीर बाक़ी शोबों से वाबस्ता है। 3/4 आपसे वाबस्ता हैं। अगर यह कारोबार रीढ की हड्डी होती तो अल्लाह का नबी जो शफ़ीक़ तरीन है कभी अपनी औलाद के लिए यह दुआ न करता। अगर यह तसव्वुर सही है तो यह दुआ है।

नबी के बेटी के घर का फ़ाक़ा

अगर रोज़गार रीढ़ की हड्डी है तो यह फ़रमान नबवी बद्दुआ है। और फिर अगर कोई और चीज़ रीढ़ की हड्डी है तो यह दुआ है ऐ मेरे रब आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रोज़ी थोड़ी कर दे।

ऐसा शफ़ीक़ नबी जो कि उम्मत का फ़ाक़ा देखे तो आँखों में आँसू आ गए। उनकी भूख देखा तो अल्लाह से यूँ दुआ करे या अल्लाह! इनको खाना खिला। ये नंगे हैं इनको कपड़े पहना तो फिर अपनी औलाद के लिए क्या ज़ुल्म किया था कि ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रोज़ी थोड़ी कर दे। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार थीं। उनका हाल पूछने गए। इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी साथ

थे। दरवाज़े पर दस्तक देकर फ़रमाया बेटी अंदर आ जाऊँ, मेरे साथ इमरान भी है?

तो उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे घर में चादर नही हैं जिससे सिर छिपा सकूं। तो आपने अपने कंधे की चादर उतारकर दी कि बेटा इससे पर्दा कर लो। उससे पर्दा किया। जब अंदर आए और हाल पूछा तो बाप की क़ुर्बत से रो पड़ीं। या रसूलल्लाह! पहले भूख थी, रोटी नहीं थी। अब बीमारी है, दवाई नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गले लगा लिया और आप भी रोने लगे। जिसको ताएफ़ के पत्थर न रुला सके वह यहाँ रो पड़ा।

﴿ليثى مولى عليك وللذى نفسى بيده﴾

उस ज़ात की क़सम जो तुम्हारी जान का मालिक है और उस ज़ात की क़सम जिसने तेरे बाप को नबी बरहक़ बनाया आज तीन दिन गुज़र चुके हैं मैंने रोटी का लुक़्मा नहीं चखा। अगर मैं चाहता तो मेरे लिए ये पहाड़ सोना-चाँदी के बना दिए जाते। मेरे रब ने मुझसे कहा बना दूं सोना-चाँदी? मैंने कहा मुझे नहीं चाहिए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया फ़ातिमा तेरी इज़्ज़त के लिए इतना ही काफ़ी है कि तू जन्नत की औरतों की सरदार है।

अंग्रेज़ों की साज़िश! क़ुरआन से दूर करो

हमें पैसों की ग़ुलामी, माल की चमक और खनक मिली है ग़ुलामी की वजह से। ये जो सौ साल अंग्रेज़ की ग़ुलामी देखी और नज़रियाती तौर पर उसने हमारे धारे का रुख़ आख़िरत की तरफ़

से मोड़कर दुनिया की तरफ़ कर दिया। हमने मैदाने जंग में बड़ी हार खाई। हारना कोई बुरी बात नहीं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसी हस्ती और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की पाक जमाअत जिन जैसा दुनिया में पैदा न होगा। उनको ओहद की लड़ाई में हार हुई। मैदान की हार नबियों ने उठाई। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठाई है। सोच की हार दुनिया की सबसे बदतरीन हार होती है। यह पिछले सौ साल से हुआ है कि हमारा रुख़ ही बदल गया।

4, मई सन् 1831 ई० में सैय्यद अहमद शहीद हुए। सन् 1834 ई० में लार्ड मैकाले को भेजा कि इस कौम को काबू में करने की कोई तदबीर सोचो। यह कौम डूबती उभरती रहती है। सन् 1834 ई० में लार्ड मैकाले आया कि भाई इनका क्या किया जाए? तो उसने यह नज़रिया दे दिया। जिसको अमली जामा पहनाने का मौक़ा नहीं मिला। सन् 1857 ई० में फिर तहरीक उठी। वह नाकाम हो गई। फिर उसके बाद डबल्यू० डबल्यू० हिंड को बुलाया गया। इस नस्ल को कंट्रोल करने का तरीक़ा अपनाया जाए। उसने एक साल सर्वे किया। इसके बाद मजलिसे अमल को रिपोर्ट दी कि इनको कंट्रोल करने का तरीक़ा यह है कि इनको क़ुरआन से काट दो। क़ुरआन से अजनबी कर दिया जाए और अपना तालीम का निज़ाम इनको दिया जाए। पचास साल में यह हमारी झोली में होंगे।

हमारा अल्लाह हम से क्या चाहता है?

मैं गिला करूं तो ठीक है। आप हरीपूर का सबसे ज़हीन तब्क़ा

हैं लेकिन क़ुरआन की एक आयत से ना आशना हैं। जब अल्लाह कहता है ﴿يا ايها الذين امنوا﴾ तो उसके बाद अल्लाह आपसे कुछ कहना चाहता है। किसी चीज़ से आपको रोकना चाहता है। किसी चीज़ की आपको दावत देना चाहता है। कभी ख़्याल आया कि मुझे यह क्या कह रहा है? एक दिन मैंने देखा कि अल्लाह हम से क्या चाहता है? एक दिन मैंने देखा कि अल्लाह हम से क्या चाहता है और हम में से कितनों को चाहता है? तो आप यक़ीन जानिए मैं हैरान हुआ कुल निन्नानवे मर्तबा कहा ﴿يا ايها الذين امنوا﴾ ईमान वालों यह कर दो, यह छोड़ दो। फिर मैंने देखा कि इसमें बारंबारता कितनी है:

يا ايها الذين امنوا اتقوا الله حق تقته. يا ايها الذين امنوا اتقوا الله
ولتنظر نفس ما قدمت لغد. يا ايها الذين امنوا.

एक ही हुक्म बार-बार है ﴿اتقوا الله، اتقوا الله، اتقوا الله.﴾ बारंबारता निकाल दें तो पीछे कोई पचास बातें हैं जो दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त व कामयाबी का ज़ीना हैं। यह कर लो, यह छोड़ दो तो यह दुनिया भी तुम्हारी है और यह आख़िरत भी तुम्हारी है।

क़ुरआन अल्लाह का ज़िंदा मौजिज़ा

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया,

﴿يا ابا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والآخرة.﴾

ऐ अबू सुफ़ियान! मैं तुम्हारे पास दुनिया और अख़िरत की इज़्ज़तें लेकर आया हूँ लेकिन बड़े दुखः और दर्द की बात है कि

इतना ज़हीन और समझदार तब्क़ा भी क़ुरआन से ना आशना है। रमज़ान में मस्जिद भरी हुई होती है। तरावीह हो रही होती है, हज़ारों आदमी एक मस्जिद में खड़े हुए होते हैं लेकिन एक आदमी को भी मालूम नहीं होता कि अल्लाह क्या कह रहा है। पढ़ने वाला पढ़ता जाता है, सुनने वाला सुनता जाता है। यह क़ुरआन आसमानी किताब है। अल्लाह का कलाम है। यह बारीक फ़र्क़ है। तौरेत, ज़ब्बूर, इंजील आसमानी किताबें हैं अल्लाह का कलाम नहीं हैं। क़ुरआन आसमानी कितबा भी है और अल्लाह का कलाम भी है। वह क्योंकि आसमानी किताबें थीं, अल्लाह का कलाम नहीं थीं इसलिए मिट गयीं। उनकी ज़बानें ख़त्म हो गयीं। तर्जुमा रह गया। आप लोग देखते नहीं हर जगह फोटो स्टेट नहीं चलता। अहम जगहों पर असल काग़ज़ात दिए जाते हैं।

सारी ज़ेर ज़बर की कमी से पाक क़ुरआन मौजूद है। क्योंकि यह अल्लाह का कलाम है और अल्लाह के कलाम को दुनिया की कोई ताक़त नहीं बदल सकती। यह हमारे लिए कोई तसदीक़ की चीज़ नहीं है। जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा था ﴿ولكن ليطمئن قلبي﴾ ऐ अल्लाह ऐसे ही दिल के तसल्ली के लिए बता दें। कोई दलील नहीं, कोई हुज्जत नहीं।

सुपर कम्प्यूटर और क़ुरआन

एक सुपर कम्प्यूटर अमरीका में बना है। किसी चीज़ को एक मिनट में एक अरब कोणों से चैक कर लेता है। एक मिनट में एक अरब कोणों से। तौरेत की सीड़ियाँ डालीं, सारी स्क्रीन पर ग़लतियाँ आ गयीं। इंजील की सीड़ियाँ डालीं तो सारी स्क्रीन पर

ग़लतियाँ आ गयीं। क़ुरआन की सीड़ियाँ डालीं तो सारी स्क्रीन ज़ेर व ज़बर से भर गई। उसमें कोई ख़ता नहीं। लिहाज़ा यह न बदला जा सकता है, न इसमें कोई कमी ज़्यादती हो सकती है, न इसमें कुछ आगे पीछे हो सकता है। फिर क़ुरआन उन्नीस की गिनती पर सफ़र करता है। सन् 1960 ई० में एक मिस्री आलिम था। उसकी जुस्तुजू थी। वह कैलिफ़ोर्निया में रहता था। उसने क़ुरआन को कम्प्युटर पर फीड किया और उस पर तहक़ीक़ करता रहा तो उस पर यह बात खुली कि सारा क़ुरआन उन्नीस के साथ जुड़ा हुआ है।

﴿بسم الله الرحمن الرحيم﴾ "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" में उन्नीस हुरुफ़ हैं। ﴿اقراء باسم ربك الذى خلق﴾ "इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ि" जो शुरूआत में उतरी उसमें उन्नीस हुरुफ़ उतरे। ﴿اقراء باسم ربك الذى خلق﴾ "इक़रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ि" से सूरहः नास में चलें तो बीच में उन्नीस सूरतें हैं। क़ुरआन की 114 सूरतें हैं जो उन्नीस पर तक़सीम हो जाती हैं। यह मैंने मिसाल के तौर पर पेश किया कि क़ुरआन किस तरह उन्नीस के साथ जुड़ा हुआ है। सारा क़ुरआन उन्नीस के साथ जुड़ा हुआ है।

क़ुरआन की हक़्क़ानियत का अदना नमूना

मैं सन् 1998 ई० में अमरीका गया था। वहाँ पर हमारा एक दोस्त है। पी०एच०डी० फिजिक्स का सेमीनार था। युनिवर्सिटी में साढ़े चार सौ पी०एच०डी० किए हुए लोग बुलाए गए थे। उनमें एक तक़रीर करने वाला था। उसने भी पी०एच०डी० की थी। उसने इसाईयत पर तक़रीर की। फिर उसने कहा कि सवाल जवाब

हो जाएं। तो मिस्री आलिम ने खड़े होकर कहा कि मेरा एक सवाल है कि ख़ुदा तीन नहीं बल्कि एक है। तक़रीर करने वाले ने कहा क्या तुम्हारे पास कोई दलील है? तो उस मिस्री आलिम ने कहा क़ुरआन आसमानी किताब है। इसमें अल्लाह का दावा है ﴿قل هو الله احد﴾ तो उस तक़रीर करने वाले ने कहा, इसकी क्या दलील है कि यह आसमानी किताब है, यह अल्लाह का कलाम है?

मैंने कहा तुम्हारे पास सुपर कम्प्युटर है। इसको मैं डालूंगा। देखो इसमें उन्नीस की संख्या कहीं सफ़र करता है। अगर नहीं तो समझो कि अल्लाह की किताब नहीं। तुम अपनी इंजील भी इसमें डालो। तुम देखोगे कि वह क़दम-क़दम पर टूटेगा। इस संख्या के साथ इसको जोड़ना अगर मेरी बात सच्ची होगी और अगर यह तहक़ीक़ सच्ची होगी तो मेरी बात भी सच्ची होगी।

तो उसने एक हफ़्ते की मोहलत मांगी। एक हफ़्ते के बाद फिर सेमीनार हुआ। उन्होंने कहा कि भाई हम ने पूरा हफ़्ता रिर्सच किया है, उन्नीस को हमने दांए बांए होते नहीं देखा। इतनी बड़ी किताब को एक संख्या पर जमा करना सिर्फ़ अल्लाह ही का काम है। कोई हिसाब जानने वाला यह नहीं कर सकता। इसमें 70 पी०एच०डी० मुसलमान हुए और वह तक़रीर करने वाला और पादरी खुद भी मसुलमान हुआ। जो मैं अर्ज़ कर रहा हूँ कि नज़रियाती तौर पर पैसे के ग़ुलाम हो गए। चीज़ों के ग़ुलाम, झोपड़ी के ग़ुलाम हो गए। आख़िरत को भूल गए, अल्लाह को भूल गए, जन्नत को भूल गए, अल्लाह के महबूब को भूल गए। लिहाज़ा जो गाड़ी डाइरेक्ट हो जाती है और उसकी कोई मंज़िल

नहीं होती तो मुमकिन है वह लुढ़कनिया खाते, कलाबाज़ियाँ खाते किसी सड़क से टकरा जाए, किसी गाड़ी से टकराकर किसी खड्डे में जा गिरे। हम अपनी असल से हट गए हैं। हमारी बुनियाद यह थी कि अगर अल्लाह राज़ी है तो हम कामयाब हैं। और अगर अल्लाह नाराज़ा है तो हम नाकाम हैं यानी अल्लह का राज़ी होना मेरी कामयाबी है और अल्लाह की नाराज़ी नाकामी है। अगर वह नाराज़ है, मैं नाकाम अगर वह राज़ी है तो मैं कामयाब।

कामयाब कौन, नाकाम कौन?

इस नज़रिए पर हम टीपू सुल्तान को सेहरा पहनाते हैं और मीर सादिक़ को लानत बरसाते हैं हालाँकि जाएदाद तो उसने बहुत बनाई। ख़ैर मीर सादिक़ तो मौक़े पर हलाक हो गया। मीर गुलाम अली लंगड़ा ने तो बहुत बनाया। टीपू सुल्तान हार गया। सिराजुद्दौला बाज़ी हार गया। मीर जाफ़र हुकूमत ले गया।

लेकिन जब भी हम अपने दिल की दुनिया में झांकते हैं तो हमारी अक़ीदत मीर जाफ़र के साथ नहीं सिराजुद्दौला के साथ होती है। हमारी मुहब्बत टीपू सुल्तान के साथ है मीर ग़ुलाम अली लंगड़ा के साथ नहीं। जब हम दिल्ली की जंगे आज़ादी को देखते हैं तो हारा हुआ जर्नैल है जर्नैल बख़्त ख़ान हम उसके लिए अक़ीदत का जज़्बा रखते हैं।

मिर्ज़ा इलाही बख़्श, नजफ़ ख़ान, नवाब शुजाअतुद्दौला जिन्होंने साज़बाज़ करके सन् 1857 ई० में दिल्ली का सौदा कर दिया था। उन्होंने बड़ी बड़ी जागीरें बनायीं। मीर रजब अली था जो बहादुर शाह ज़फ़र का सारा ख़ज़ाना भी उठाकर लाया था और

यह जो अंबाला का ज़िला है। उसमें इसने बहुत बड़ा आलीशान महल बनाया था। जिसमें एक हौज़ था, जिसमें फ़व्वारे बनाए गए जिसमें शराब निकलती थी और फिर वहाँ बैठकर शराब का दौर चलता था लेकिन वह कमबख़्त कुछ दिन की बहार के पीछे हमेशा की बर्बादी में चला गया।

बख़्त हारकर भी अपना नसीब बुलंद कर गया क्योंकि वह इस बुनियाद पर था कि मुझे अल्लाह को राज़ी करना है। चाहे मैदान में बाज़ी हार जाऊँ, मुझे अल्लाह को राज़ी करना है। यही बुनियाद थी जिस पर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी सारी नस्ल के साथ ज़िब्ह हो गए कि मैं यह सौदा नहीं कर सकता वरना एक बोल, बोल देते थोड़ी सी सियासत कर जाते, थोड़ी सी सियासत खेल जाते। जैसे हम नहीं कहते मियाँ साहब दीन दुनिया साथ होनी चाहिए। ज़िना करने वाले का केस भी ले लो नमाज़ी का केस भी ले लो। यह भी कर लो वह भी कर लो।

मज़लूम की आह से बचो

मज़लूम की आहों से अर्श हिल रहा है। न वकील को होश है न उस ज़ालिम को होश है। क्या अल्लाह ने हुकूमत किसी और को दे दी? क्या मौत नहीं आएगी? क्या महशर क़ायम नहीं होगा? क्या तराज़ू क़ायम न आएगा? क्या जन्नत नहीं महकेगी? क्या जहन्नम नहीं भड़केगी? नहीं नहीं ख़ुदा की क़सम यह सब होगा।

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا الخ﴾

आज जन्नत आएगी और अल्लाह तआला बग़ैर तर्जुमान के कहेगा ﴿يا ابن آدم اعطيت قولت انعمت عليك﴾ तुझे समझ दी, होशियारी दी, मंसब दिया, ओहदा दिया। तो दुनिया में क्या करके आया? ज़ालिम का साथी बनकर आया या मज़लूम का? आज वकील साहब अपना केस ख़ुद लड़ेंगे, आज जज साहब दूसरों के बारे में फ़ैसला करने के बजाए अपने बारे में अल्लाह से फ़ैसला सुनेंगे। आज अगर इंसाफ़ को ज़िंदा करके चले गए तो वह मक़ाम बख़्शेगा कि बड़े-बड़े अब्दाल, क़ुतुबों, बड़े-बड़े आलिमों, शहीदों को भी वह मक़ाम हासिल नहीं कर सकते। अल्लाह तआला अपने अर्श का साया देगा। और इस साए में सिर्फ़ उनको जगह दी जाएगी। जिनको अल्लाह बुलाएगा। सबसे पहले अल्लाह जिसको बुलाएगा वह होगा आदिल बादशाह, आदिल क़ाज़ी, आदिल हुक्मुरान। आ जाओ, आ जाओ। आज हम तुमको अपने अर्श का साया देंगे और बाक़ी सब धूप में चलेंगे। और ऐसी ख़ौफ़नाक दहशत होगी और ऊपर आग होगी कि कहेंगे हमें दोज़ख़ में डाल दो मगर हमें इस अज़ाब से निकालो हालाँकि दोज़ख़ का अज़ाब इससे करोड़ों गुना ज़्यादा होगा।

बदतरीन शख़्स कौन?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि बदतरीन आदमी वह है तो तौबा की उम्मीद पर गुनाह करे। अब तौबा कर लूंगा। और फिर ज़िंदगी की उम्मीद पर तौबा को टाले। आज नहीं कल, कल नहीं परसों यह धोका खाया हुआ इंसान है। वह मर जाएगा और उसको भी तौबा नसीब नहीं होगी। एक शख़्स के

सामने उसकी नस्ल ज़िब्ह हो रही है, ज़िब्ह हो रही है उसकी जन्नत पहले ही बन चुकी है। यह मैं इसलिए बयान कर रहा हूँ और आप इसलिए बैठकर सुन रहे हैं कि अल्लाह हमें जन्नत दे। अल्लाह हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे। तो उनको जन्नत का फ़ैसला दूध पीने की उम्र में ही हो चुका है। ﴿سيدا شباب اهل الجنه الحسن والحسين﴾ जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जिनको अल्लाह का नबी अपनी कमर पर बिठाकर कमरे में चक्कर लगाए। आप सवारी बन गए। दोनों को इकठ्ठा बिठाया और सारे कमरे में चक्कर लगाए। जिनको ऐसी सवारी मिली हो वह कितनी ऊँची शान वाले होंगे।

अपने ही ख़ून से नहाने वाले आले रसूल

दुनिया की सबसे मुक़द्दस नस्ल का ख़ून बह रहा है था। और 16 अफ़राद आले रसूल के शहीद हुए। बाक़ी तो जांनिसार थे। 16 अफ़राद जिनके ख़ून का एक-एक क़तरा सातों ज़मीन और आसमान से अज़ीम, क़ीमती और बरतर था। वह आँखों के सामने थे और देख रहे थे। ख़ुद एक कूफ़ी कहने लगा मैंने ऐसा जवान आज तक नहीं देखा जो अपनी नस्ल का ख़ून होते देख रहा हो और उसके माथे पर शिकन भी न आई हो। हाँ दिल भी तो है। आख़िरी बच्चे अब्दुल्लाह को तीर लगा। वह दो साल का था। उसको अल्विदाई प्यार करने के लिए बुलाया। अरे इस मासूम को कोई क्या कहेगा। आजा आजा तो उसको गोद में लेकर देख रहे थे। एक आदमी था इब्ने औक़न उसका तीर लगा और गर्दन में लगा। तो उस वक़्त सिर्फ़ उनके ख़ून को अपने दोनों हाथों में ले

लिया फिर यूँ आसमान की तरफ़ बुलंद किया और कहा मौला! अगर तूने मदद को रोक लिया है तो भी मैं तुझे से राज़ी हूँ, कोई शिकायत नहीं हाँ इनको न छोड़ना, इनसे खुद बदला लेना।

ऐसे नस्ल कट गई। हम चिपड़ी रोटी पर झूठा केस लिए बैठे हैं। और ज़मीन दबाने वाले का केस हम लड़ रहे हैं। बड़ा समझदार था इब्ने ज़ियाद, बड़ा समझदार था शिमर और यज़ीद कि अपनी झोपड़ी पर अपना ईमान बेच गए। नहीं नहीं हम पागल हैं हम दीवाने हैं। हमने धोखे के घर और मच्छर के पर, मकड़ी के जाले को ज़िंदगी समझा।

तू हिर्स हवस को छोड़ मियाँ मत देस बदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
क्या बधिया भैंसा बैल शतर क्या गोनी पल्ला सर भारा
क्या गेंहूँ चावल मौठ मटर क्या आग धुंआ और अंगारा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बन्जारा

रिज़्क़ में बरकत का नुस्ख़ा

तो हमारी बुनियादें टूट चुकी हैं। तबलीग़ का काम इन सबको ज़िंदा करने की मेहनत है। तलबीग़ के काम को ज़िंदा करना हमारी मेहनत है। हम न कोई फ़िरक़ा हैं न कोई मसलक हैं। भाईयो! हम नफ़्से ईमान की दावत दे रहे हैं। आप हमारे लिए सरमाया हो। आप इंसाफ़ पर क़ुर्बान हो जाओ। अल्लाह की क़सम अपके मक़ाम को बड़े-बड़े अब्दाल भी हासिल नहीं कर सकते। बड़े-बड़े शहीद आपके मक़ाम को नहीं पहुँच सकते। इंसाफ़ को ज़िंदा कर जाओ। अपना रिज़्क़ अल्लाह पर छोड़

जाओ। बच्चों का रिज़्क अल्लाह पर छोड़ दो।

एक साहब ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! रिज़्क की तंगी है क्या करूं?

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बावुज़ू रहा करो। अल्लाह रिज़्क बढ़ा देगा। नमाज़ पढ़ो। पैसा कोई नहीं। मुसल्ला बिछाओ। रोज़ा रखो। अल्लाह दरवाज़े खोल देगा। वहाँ से खोलेगा जहाँ से किसी का वहम व गुमान भी नहीं होगा।

वहाँ से अल्लाह रिज़्क के दरवाज़े खोलेगा। जहाँ से कोई वहम व गुमान भी नहीं तो अल्लाह के ख़ज़ाने ख़ाली तो नहीं हुए। अल्लाह के ख़ज़ाने पर ताले नहीं पड़े और आबादी की ज़्यादती की वजह से उसके क़ाबलियत में कोई कमी नहीं आई। मांगने वाला कोई नहीं है। अपना रिज़्क अल्लाह पर छोड़ दो। कभी ज़ालिम के लिए फ़ाइल मत खोलो। कभी ज़ालिम के लिए हाथ मत बढ़ाओ। मज़लूम के साथी बनो ज़ालिम के लिए फ़ाइल बंद करो। जज का क़लम टूटता है तो टूट जाए लेकिन वह इंसाफ़ को न बेचो। कल अल्लाह उसकी क़ीमत लगाएगा।

इंसाफ़ का मिसाली वाक़िआ

बूनू उमैय्या सन् 132 हि० में जब हार ख़ाई तो एक नौजवान था अब्दुर्रहमान बिन माविया बिन वलीद बिन अब्दुलमलिक यह धक्के खाता हुआ उन्दलुस पहुँच गया। इसके बाद सन् 137 हि० में उसने एक हुकूमत की बुनियाद रखी जो फिर सात सौ साल तक चली। उस ख़ानदान ने कोई 250 साल हुकूमत की। फिर अलग-अलग ख़ानदान आते गए और हुकूमत करते रहे। इसका

एक बादशाह गुज़रा मंज़र उसका इकलौता बेटा था वली अहद उसने एक यहूदी का क़त्ल कर दिया। केस अदालत में गया। उसने वरसा से मुँह मांगे पैसे देकर ख़ून बहा अदा कर दिया। और फ़ैसला जज ने वारिसों के पैसे लेने के मुताबिक़ कर दिया। सुबह यह सब अदालती कार्यवाही जब बादशाह के सामने गई। उसने पढ़ा। अपने बेटे का फ़ैसला पढ़ा तो उसने सबके सामने कहा कि इसका फ़ैसला सबके सामने दरबारे आम में होगा।

दरबारे आम हुआ। यहूदी के वारिसों को बुलाया गया। अपने ख़ानदान को बुलाया। अवाम को बुलाया। खुद मेंबर पर खड़ा हुआ और कहा लोगो! मैं किसी के लिए ग़लत सुन्नत जारी नहीं करना चाहता कि बादशाह की औलाद हुकूमत के घमंड में प्रजा को क़त्ल करें। और माल के ज़ोर में अपनी जान बचाए। मैं यह बुरी आदत अपने पीछे नहीं छोड़ना चाहता। बतौर चीफ़ जस्टिस में इस फ़ैसले को रद्द करता हूँ। मैं इसके क़त्ल की सज़ा को बहाल रखता हूँ। फिर कहा बेटा यह सज़ा मैं ही अंजाम दूंगा। मुझे पता है तेरे बाद मैं भी ज़िंदा नहीं रह सकता और तेरी माँ को भी बड़ा दुखः होगा। लेकिन मुझे तुझसे ज़्यादा अल्लाह का हुक्म प्यारा है और नीचे उतरकर अपने बेटे को क़त्ल कर दिया और फिर दो हफ़्ते नींद नहीं आई। छतों को देखता रहा और 42 साल की उम्र में खुद भी इंतिक़ाल कर गया।

जिस क़ौम के पीछे इतना रौशन गुज़रा ज़माना हो। उस क़ौम का अद्ल रुपयों में बिक रहा है। और मज़लूम की आहों से अर्श हिलता हो। मगर अदालत के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती हो। यह कल अल्लाह को क्या मुँह दिखाएंगे। तो जो कुछ हमारी

अदालतों में हो रहा है उसका बहुत बुरा अंजाम सामने आने वाला है। वह सोया हुआ नहीं है। वह ग़ाफ़िल नहीं है। वह नादान नहीं है। जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को पैदा किया तो फ़रिश्तों ने पूछा या अल्लाह तू किसका साथी है?

मज़लूम का साथी अल्लाह है

तो अल्लाह तआला ने कहा मैं मज़लूम का साथी हूँ। मज़लूम काफ़िर भी होगा तो अल्लाह उसका साथी होगा। तो मेरे भाईयो! आप भाईयों की ख़िदमत में मेरी यह गुज़ारिश है कि नमाज़ को ज़िंदा करो। आपके यहाँ माशाअल्लाह नमाज़ का रिवाज है। हमारे पंजाब में तो 100 में से 2 भी नमाज़ नहीं पढ़ते। आपके यहाँ नमाज़ का रिवाज है लेकिन यहाँ पर भी केबिल आ गया है। डिश भी आ गया तो सब कुछ आ गया। हलाकतें भी आ गयीं तो यह कोशिश आप हज़रात फ़रमाएं कि ज़ोहर तो यहाँ हो ही जाती है। ज़ोहर पर अदालत बंद हो जाए और जज भी, वकील भी, मुवक्किल सबके सब मस्जिद में आ जाएं। कोई नमाज़ पढ़े न पढ़े अदालत आधे घंटे के लिए बंद हो जाए।

अल्लाहु अकबर के साथ ही क़लम रुक जाए। चलो अल्लाह की पुकार है। अल्लाह ने बुलाया है। इधर चलना है। इसको रिवाज दें। बेनमाज़ी कोई न हो। घरों में इसको रिवाज दें। बच्चों मे उसको रिवाज दें। बच्चों में इसको रिवाज दें। जो सज्दों में पढ़कर अल्लाह से मांगना सीख लेता है। वह कभी फ़क़ीर नहीं हो सकता। वह कभी फ़क़ीर नहीं हुआ। ज़ालिम पर हाथ न रखें। ज़ालिम के पुश्त पनाह न बनें। चाहे ज़िंदगी का सौदा हो जाए, हो

जाने दो। कौन सा यहाँ रहना है। जाना ही तो है लोग जाने ही के लिए तो आए हैं।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ﴿إن كان في الدنيا تعد.﴾ अगर तुमको दुनिया हसीन नज़र आ रही है तो मुझे जन्नत हसीन नज़र आ रही है। तो जिस मुसाफ़िर को वापस लौटना होता है। वह सफ़र की मंज़िलों से जी नहीं लगाता। वह आगे ही बढ़ता है। पानी में जिसको किनारे पर पहुँचना होता है। वह जज़ीरों को देखकर अपना रुख़ वहाँ मोड़ता नहीं है। इसके जहाज़ की नोक किनारे की तरफ होती है। हमारा सफ़र अल्लाह की तरफ़ है। इस हाल में कि वह राज़ी हो जाए। इस तरह मौत न आए कि वह हम से नाराज़ हो। यह तबलीग़ इसको सीखने की मेहनत है। आप लोगों की अगस्त में छुट्टी होती है। आप सब लोग एक चिल्ला तलबीग़ में लगाएं। मक़ाम में रहते हुए हर महीने तीन दिन फ़ारिग़ करें। अल्लाह की राह में तीन दिन के लिए निकलें। इस दर्जे का ईमान पैदा करें कि मफ़ादात से टक्कर लेना आ जाए और दुनिया की वक़्ती लज़्ज़तों को क़ुर्बान करना आ जाए और अल्लाह और उसके रसूल की पसंदीदा ज़िंदगी हमारे लिए मशअले राह है।

शाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद ऐसे थी जैसे काएनात ज़िंदा हो गई। जैसे बहार आ गई। इसलिए अल्लाह तआला ने अरब में ज़ाहिरी बहार नहीं रखी। काले पहाड़ रखे। मेरी नबी भी पहाड़ है। इसके होते हुए किसी की ज़रूरत नहीं है। ख़ुद चश्मा है उसके होते हुए किसी चश्मे की ज़रूरत नहीं। यह

रबिउल अव्वल का महीना है। रबीअ बहार को कहते हैं। बहार की बारिश, बहार की रौनक़, बहार के कली और फूल। इस सारे मंज़र के लिए लफ़्ज़ रबीअ आता है। तो अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए रबिउ अव्वल का महीना तय किया। बहार वाला, असल बहार अब आई है। वह फूलों की बहार, वह चमन की बहार, वह वक़्ती है। यह हमेशा के लिए है। कभी पतझड़ का मौसम नहीं आएगा। अगर तुम उसके गुलाम बनकर चलोगे।

22, अप्रैल सन् 571 ई० रबिउ अव्वल की 12 तारीख़ सुबह के चार बज चुके थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुनिया में तशरीफ़ लाए। अरबों में दस्तूर था कि जब कोई बच्चा रात को पैदा होता है तो उसके ऊपर हांडी रख देते थे और उसमें सुराख़ होते थे। जिससे हवा आती थी। इस को हांडी में इसलिए छिपाते थे कि उसको नज़र न लग जाए। तो सुबह के उजाले में देखते थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिसाली पैदाईश

तो हमारे नबी को उनकी दा'ई शिफ़ा ने जब लिटाया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दम करवट बदली और सज्दा किया और यूँ सिर उठाया। और जैसे ही सिर उठाया तो हज़रत आमना पर सारी काएनात रौशन हो गई तो उन्होंने सिर पर हांडी रखी तो ठक की आवाज़ आई और हांडी के दो टुकड़े होकर एक इधर को गया और एक इधर को गया। 63 साल 4 दिन आपने

उम्र पाई। रबिउ अव्वल, सफ़र वाले महीने के लिहाज़ से 63 साल 4 दिन आपने उम्र पाई। ईसवी कलेंडर के मुताबिक़ 22 हज़ार 330 दिन 6 घंटे आपकी उम्र है। अय्याम के लिहाज़ से 18156 दिन इसमें अय्यामे नबुव्वत, ज़हूरे नबुव्वत सब आ गए वरना नबुव्वत तो आपको बहुत पहले मिल गई थी।

जब हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि आपको नबुव्वत कब मिली? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब आदम अलैहिस्सलाम की कहानी शुरू भी नहीं हुई थी मुझे नबुव्वत मिल चुकी थी। यह ज़हूरे नबुव्वत के अय्याम के लिहाज़ से ﴿اقراء باسم ربك الذى خلق﴾ से कहानी शुरू हुई ﴿اللهم الرفيق الاعلى﴾ पर जाकर ख़त्म हुई तो ये 18156 दिन हैं। पूरी ज़िंदगी आप रौशन छोड़कर गए हैं। दुनिया की किसी ताक़त, किसी जर्नैल की, किसी बादशाह की, बड़े-बड़े से इंसान की ऐसी तारीख़ मौजूद नहीं है।

अंग्रेज़ी तहज़ीब की नहूसत

मुझे ख़्याल आता है कि हमारा चार साल का बच्चा जब टाई लगाकर स्कूल जाता है तो उसे कल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत कौन सिखाएगा? एक सात आठ साल की बच्ची नंगे सिर स्कूल जाती है तो कल उसे फ़ातिमा की बेटी कौन बनाएगा? उसको यह कौन सिखाएगा? दुनियावी इल्म पढ़ने से न हमें अल्लाह ने रोका और न हमारे नबी ने रोका हाँ ग़ैरों की तहज़ीब से रोका है कि नहीं नहीं मैं तुम्हारे लिए काफ़ी हूँ। तुम मेरे पीछे ही चलना।

हम ख़ुद तराशते हैं मंज़िल के संगे मील
हम वह नहीं कि जिनको ज़माना बना गया

अंग्रेज़ की साज़िश वेटर की पगड़ी

हम कोई बे बुनियाद तो नहीं हैं। कटी पतंग तो नहीं हैं, भटके हुए राही तो नहीं हैं। हमारी तो एक मंज़िल तय है। एक रहबर है। एक क़ाएद है। जिसके संग चलना है। जिसके क़दम-ब-क़दम चलना हमारी इज़्ज़त है, हमारी शराफ़त है। यह मौलवियों का हुलिया नहीं है। यह मुसलमान का हुलिया है। यह मौलवी का लिबास नहीं है। यह मुसलमान का लिबास है। यह हमारी पहचान है। हमें इस पर नाज़ है। यह हमारी पहचान है।

दुनियवी उलूम पढ़ने से कौन मना करता है? क्या इस लिबास में नहीं पढ़ सकते? दुनिया में तरक़्क़ी करनी है तो इसमें क्या रुकावट है? आपने देखा नहीं कभी फ़ाइव स्टार होटल के गेट पर गेट खोलने वाले बियरे होते हैं। उनके सिरों पर पगड़ी होती है। और जो आफ़सरों की गाड़ी चलाने वाले होते हैं उनके सिरों पर पगड़ी होती है। अफ़सर साहब नंगे सिर होते हैं। यह ख़ामोश ज़हर है जो आहिस्ता आहिस्ता हमारे अंदर उतारा गया है कि अंदर से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत निकल जाए।

तो भाईयो! यह भी एक तर्बियत है। यह भी एक मेहनत जो करेगा अल्लाह उसको देख रहा है। लेकिन यह मुफ़्त की चीज़ नहीं है कि विरासत में मिल जाए कि बाप मर गया तो उसकी ज़मीनों के हम वारिस हो गए। दुनिया में इल्म एक ऐसी दौलत है

जो मुफ़्त नहीं मिलती, तक़्वा ऐसी दौलत है जो मुफ़्त नहीं मिलता। यह बिकाऊ चीज़ नहीं है। इसे धक्के खाकर लेना पड़ता है।

मैं (तारिक़ जमील) तबलीग़ में कैसे लगा

भाईयो! आपसे गुज़ारिश यह है कि आप हज़रात इस मेहनत को इस तबलीग़ को काम बनाकर करें। एक दौर था जब हमें कोई पूछता नहीं था। हर तरफ़ से बस धक्के ही धक्के थे। एक वक़्त आया कि शहर का सबसे इज़्ज़तदार तब्क़ा हमें बुलाता है। कि आओ भाई बात करो। मैं मेडिकल का स्टूडेंट था। मेरे वालिद साहब मुझे डाक्टर बनाना चाहते थे। मेरा तअल्लुक़ ज़िला ख़ानोवाल से है। मेरा तअल्लुक़ ज़मींदार घराने से है। बाप मर गया हम दो भाई रह गए। मेरा छोटा भाई हार्ट स्पेशलिस्ट है लाहौर में और मुझे अल्लाह ने इधर राग़िब कर दिया। मैं अल्लाह की तक़दीर पर राज़ी और ख़ुश हूँ तो मैं गार्वमेंट कालेज में था। मेरा एक दोस्त मुझे तीन दिन के लिए लेकर गया। ज़ुबर्दस्ती खींचकर ले गया। वहीं से मेरी ज़िंदगी का रुख़ मोड़ा। वहीं से मैंने चार महीने लगाए।

चार महीने के आख़िर में था तो मुझे एक लड़के ने कहा तुम क्या करते हो? मैंने कहा मैं डाक्टर बनना चाहता हूँ। उसने कहा तेरा बाप क्या करता है? मैंने कहा ज़मींदार है। कहा फिर तुम्हें क्या ज़रूरत है डाक्टर बनने की। रोटी तो वैसे ही घर की है। इल्म पढ़ ले, आख़िरत बन जाएगी।

फिरता हूँ यार को जाने जानाँ किए हुए

अल्लाह ने उसकी बात को ज़रिया बनाया और मैं राइविंड के मदरसे में दाख़िल हो गया। मैंने वहाँ अपनी तालीमी ज़िंदगी के आठ साल गुज़ारे। सन् 1972 ई० में एक जलसे में था। लोग गालियाँ देते थे। धक्के देते थे कि तुम वहाबी हो। वह बेचारे वही कहते जैसा उनके मौलवियों ने पट्टी पढ़ाई थी। एक दिन मैंने तंग होकर अपने अमीर साहब से कहा कोई दिन आएगा कि लोग हमारी सुनेंगे। अक्टूबर सन् 1972 ई० की बात आपको बता रहा हूँ।

फिरते हैं मीर ख़्वार कोई पूछता नहीं
इस आशिक़ी में इज़्ज़त-ए-सादात भी गई

तो उन्होंने कहा बेटा ग़रीबों में काम करते रहो। एक दिन आएगा बादशाह भी तुम्हारी बात सुनेगा। सुमंद्र की ख़ामोश सतह के नीचे बड़े तूफ़ान छिपे हुए हैं। बड़ी मुद्दतों के बाद अल्लाह ने एक काम दिया है। आप भाईयों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि इसमें अपना वक़्त लगाएं। आपको ईमानी नफ़ा भी होगा, रुहानी नफ़ा भी होगा। आपके काम में भी नफ़ा होगा और अल्लाह भी राज़ी होगा। यह जहाँ भी बनेगा और वह जहाँ भी बनेगा। इसलिए जिस भाई के दिल में आ रहा है वह नाम लिखाए।

﴿وآخر دعونا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

अल्लाह तआला का ख़ौफ़

صلی اللہ تعالی علی رسولہ الکریم
وبارك وسلم كثيرا كثيرا. اما بعد.

فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم. بسم اللہ الرحمٰن الرحیم.
الم٥ احسب الناس ان یترکوا ان یقولوا امنا وھم لا یفتنون٥
وقال تعالی: ونبلوکم بالشر والخیر فتنۃ والینا ترجعون٥

हर लम्हा मौत से क़रीब कर रहा है

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! दिन रात की गर्दिश बड़ी तेज़ी के साथ हमें अपने अंजाम की तरफ़ लेकर चल रही है।

﴿الا ترون الليل والنهار﴾ तुम दिन व रात में ग़ौर क्यों नहीं करते? ﴿ويأتيان بكل موعود﴾ आने वाले वायदे को तुम्हारे सामने ला रही है।

हम रुकते हैं वक़्त नहीं रुकता। हम थमते हैं वह नहीं थमता। हम सोते हैं वह चलता रहता है ज़िंदगी का क़ाफ़िला यकसानियत के साथ रवां है। उसकी रफ़्तार में फ़र्क़ नहीं आया। हर पल मुझे

खा रहा है। हर लम्हा मेरे ही गोश्त को खा रहा है। हर घड़ी टक-टक छुरी की तरह मेरी ज़िंदगी को काट रही है। और दिन व रात की सवारी मेरी ज़िंदगी की सड़क के फ़ासले को बड़ी तेज़ी से नाप रही है। मीलों पर मील गुज़रते जा रहे हैं और इंसान उसी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता चला जा रहा है। जल्दी ही मैं, आप और सारी दुनिया के इंसान एक बहुत बड़े बादशाह के सामने पेश होने वाले हैं। जहाँ वह खुद फ़ैसले के लिए आएगा।

﴾وجاء ربك والملك صفا صفا.﴿ आज वह खुद आएगा। आज ज़ालिम और मज़लूम के सामने एक हद्दे फ़ासिल क़ायम की जाएगी। ﴾وامتازو اليوم ايها المجرمون﴿ आज महरम और मुजरिम को जुदा किया जाएगा। आज मुत्तक़ी, फाजिर एक सफ़ में खड़े नहीं हो सकते। आज ज़ानी और पाकदामन एक सफ़ में खड़े नहीं हो सकते। आज पर्देदार औरत और बेपर्दा औरत एक सफ़ में खड़ी नहीं हो सकती। आज हलाल खाने वाला और हराम खाने वाला, उनको एक नज़र से नहीं देखा जा सकता। दोनों के लिए आज एक क़ानून नहीं है।

क़यामत की हौलनाकी

तवाज़ोअ से चलने वाला, तकब्बुर से चलने वाला। सच पर मरने वाला, झूठ से सारी दुनिया को धोका देने वाला आज एक दिन है। यह ﴾يوم الفصل﴿ है—

وما ادرك ما يوم الفصل، وما ادرك ما يوم الدين
ثم ما ادرك ما يوم الدين، يوم الدين.

आ गया है ﴾يوم الجزاء﴿ आ गया है। ﴾يوم القارعة﴿ है। ﴾يوم

﴿يوم طامة الكبرى﴾ है। यह ﴿يوم الساعة﴾ है। यह ﴿يوم الغاشية﴾ है। ﴿الحاقة﴾ है। यह ﴿يوم ويل﴾ है। ﴿يوم الخسران﴾ है।

﴿يوم لا تملك نفس لنفس شيئا والامر يومئذ لله.﴾

यह क़ुरआन आपके सामने क़यामत के मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ पेश करता है। ख़ौफ़नाक अंदाज़ के साथ एक हौलनाक अंदाज़ के साथ, एक हौलनाक अंदाज़ के साथ, ﴿يوم التغابن﴾ ﴿يوم يجمع الله﴾ है, ﴿الرسل﴾ है, यह ﴿يوم النجات﴾ है, ﴿يوم الهلاك﴾ है, ﴿يوم الفوز﴾ है, ﴿يوم الجنة﴾ है, ﴿يوم النار﴾ है। यह दिन है। ﴿يوم يات﴾ यह आएगा, किस शान से आएग ﴿لا تكلموالنفس﴾ आज कोई बोल नहीं सकता, कोई दम नहीं मार सकता ﴿يوم يقوم الروح﴾ फ़रिश्ता जिब्राईल कैसे खड़े हैं ﴿صفا﴾ ﴿يوم يقوم الروح والملائكة صفا﴾ आज सफ़ों में हैं ﴿لا يتكلموا﴾ आज बोल नहीं सकते ﴿خشعت الاصوات﴾ पस्त हैं ज़मीन की तरह ﴿يوم يفر المرء من اخيه﴾ आज भाई-भाई से भाग गया ﴿وامه وابيه﴾ माँ-बाप से भाग गया ﴿وصاحبته وبنيه﴾ बीवी बच्चों से भाग गया ﴿منهم يومئذ شأن يغنيه﴾ आज हर आदमी अपनी-अपनी मुसीबत में गिरफ़्तार हो गया। यह दूर नहीं है ﴿انهم يرونه بعيدا﴾ गुलिस्तान वाले समझ रहे हैं कि शायद अभी बड़ा ज़माना पड़ा है, ﴿ونراه قريبا﴾ वह दूर नहीं है बल्कि बहुत क़रीब है। अल्लाह तआला फ़रमाता है तेरा रब तुझ से बड़ा क़रीब कह रहा है। ﴿ازفت الازفة ليس لها من دون الله كاشفة﴾ आ गया, वह आ गया, सिरों पर छा गया। कोई रोक नहीं सकता, उसको कोई हटा नहीं सकता।

डराओ मेरे नबी इनको उस दिन से जो क़रीब आ चुका है। ﴿انذرهم يوم الحسرة﴾ इनको डराओ मेरे नबी उस दिन से जो हसरतों वाला है ﴿انذر الناس﴾ मेरे नबी तू डरा इंसानों को, सारी दुनिया के

इंसानों को। किस चीज़ से ﴿يوم يأتيهم العذاب﴾ जब अज़ाब आएगा। जब पकड़ आएगी, अल्लाह की गिरफ़्त आएगी, जहन्नम भड़कती हुई, जन्नत महकती हुई। फ़रिश्ते पहरे पर होंगे। हर इंसान नंगे पाँव, नंगे सिर, नंगे बदन, बग़ैर ख़त्ना के अकेला उठ रहे होंगे।

﴿لقد جئتمونا فرادى﴾ अकेले अकेले उठ रहे हैं ﴿كما خلقنكم اول مرة﴾ जैसे तुम्हें अकेले अकेले पैदा किया था, ﴿وحشرنهم﴾ और अल्लाह तआला ने सबको जमा करके खड़ा कर दिया है और ﴿لقد احصنهم﴾ और अल्लाह तआला ने सबको घेरे में लिया हुआ है, ﴿وعدهم عدا﴾ अल्लाह तआला ने एक-एक को गिना हुआ है। आज कोई छिपना चाहे तो अल्लाह तआला कहता है ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ छिपने के दिन गए। कोई भागना चाहे तो अल्लाह तआला कह रहा है, भागने के रास्ते ख़त्म ﴿اين المفر﴾ आज भागने की राहें बंद हो चुकी हैं। कोई ताक़त से बदमाशी से, हुकूमत के ज़ोर पर लड़कर निकलना चाहे तो अल्लाह कहता है ﴿فانفذو﴾ अगर ताक़त है तो आज निकलकर दिखाओ। ﴿لا تنفذون الا بسلطان﴾ निकलोगे किस ताक़त के साथ, ताक़त तुम्हारी छिन चुकी है। हक़ीर ज़लील करके अल्लाह ने अपने सामने खड़ा कर दिया है। ﴿لا يسئل حميم حميما﴾ ऐसा दोस्त जिसकी मुहब्बत दिल में जोश मारती है। वह भी कहेगा तू मेरा कुछ नहीं है, ﴿يبصرونهم﴾ नज़र आ रहा होगा। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है मैं तो बड़ा क़रीब कह रहा हूँ। तुम कहते हो दूर हो। जब एक आवाज़ आएगी ﴿ان كانت الا صيحة واحدة﴾ जब एक आवाज़ आएगी, एक चीख़ होगी। ﴿ما ينظرون الا صيحة واحدة﴾ एक ज़बर्दस्त आवाज़ होगी, ﴿فانما هي زجرة واحدة﴾ एक ज़बर्दस्त हथौड़े की तरह लगती हुई वह ज़र्ब होगी।

دكا دكا وجاء ربك والملك صفاً صفا. فيومئذ وقعت الواقعة

وانشقت السماء فهي يومئذ واهية.

यह ज़मीन जब ऐसे तोड़ी जा रही होगी और फिर ज़मीन और पहाड़ इकठ्ठे ﴿فدكتا دكة واحدة﴾ ज़मीन को भी तोड़ा जा रहा है, पहाड़ों को भी तोड़ा जा रहा है, रेज़ा-रेज़ा किया जा रहा है। ज़मीन व आसमान थर्रथरा रहे हैं। उस दिन में आप और मैं अपने अपने क़ौल के ज़िम्मेदार होंगे। मुझे बताना पड़ेगा मैंने क्यों बयान किया था? आपको यह बताना पड़े आप क्यों आए थे? यह रोज़े रखने का बताना पड़ेगा क्यों रखे थे? ज़िंदगी की एक एक चीज़ खोल कर अल्लाह तआला कहेगा ﴿اقرأ كتابك كفى بنفسك اليوم حسيبا.﴾ आज पढ़ो अपनी शर्मनाक करतूतों को।

तो मेरे भाईयो! यह दुनिया हकीक़त नहीं है। लोग कहते हैं कि तबलीग़ वाले हक़ाएक़ से नज़रें चुराकर भाग जाते हैं। ये हक़ाएक़ छोड़कर बिस्तर उठाकर भाग जाते हैं। मेरा अल्लाह किसको हक़ीक़त कह रहा है।

﴿الحاقة﴾ हक़ीक़त तुमने रोटी पानी को हक़ीक़त समझा, तुमने बिजली, गैस को हक़ीक़त समझा, गुलिस्तान कालोनी के बाज़ारों को हक़ीक़त समझा, तूने खेतीबाड़ी को हक़ीक़त समझा। हुकूमत मिम्बरी को, एम०पी० को हक़ीक़त समझा। जिस रब ने बनाया उससे तो पूछो वह क्या कहता है।

﴿الحاقة﴾ तुम्हें पता है हक़ीक़त का? वह हक़ीक़त ﴿وما ادراك ما الحاقة﴾ तुम्हें कुछ ख़बर है कि वह हक़ीक़त क्या है? ﴿ما الحاقة﴾ तुम्हें कुछ ख़बर है कि वह हक़ीक़त क्या है? ﴿الحاقة ما الحاقة﴾ तुम्हें मालूम है वह क्या है? ﴿وما ادراك ما الحاقة﴾ तुम्हें पता लग भी नहीं सकता वह क्या हक़ीक़त है?

क़ौमे आद पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा

तुमसे पहले भी एक क़ौम थी जिसने कहा था दुनिया हक़ीक़त है। रोटी पानी हक़ीक़त है और शहवतें बीवी बच्चे हक़ीक़त हैं। बस तुमसे पहली क़ौमों ने कहा था आख़िरत कुछ नहीं है।

هيهات هيهات لما توعدون. ان هى الا حياة ن الدنيا نموت

ونحى وما نحن بمبعوثين.

कुछ नहीं है, कुछ नहीं है। सब धोखा है, झूठ है जो मर गया

﴿ء اذا كنا عظاماً نخرة، انا لمردودون فى الحافرة﴾

जो मर गया, हड्डियाँ चूरा-चूरा हो गयीं, वह नहीं उठ सकता। तुमसे पहली क़ौमों ने हक़ाएक़ को झुठलाया। दुनिया की ज़िंदगी को हक़ीक़त जाना, ﴿كذبت ثمود فاهلكو بالطاغيه﴾ एक ज़बरदस्त चीख़ आई और क़ौमे समूद के कलेजे फटे और क़ौमे आद,

فاهلكوا بريح صرصر عاتية. سخرها عليهم سبع

ليال وثمانية ايام حسوما فترى القوم فيها صرعا

كانهم اعجاز نخل خاوية. فهل ترىٰ لهم من باقية.

फिर एक क़ौम आद आई जो इनसे भी ताक़तवर थी। वह कहते थे ﴿من اشدنا قوة﴾ वह कहते थे, हमसे ताक़तवर कोई है ही नहीं तो तेरे रब ने उनको पकड़ा, झिंझोड़ा उनके टुकड़े-टुकड़े किया। उनको अलग किया। ﴿فترى القوم فيها صرعا﴾ आओ! आओ! देखो ईमान की निगाह से देखो, ख़्याल की नज़र से देखो आज से कई हज़ार साल पहले, सात आठ हज़ार साल पहले की क़ौम है। उनके सिर हैं गुंबद की तरह इतनी बड़ी-बड़ी बलाएं हैं। वह बूढ़े नहीं होते, बीमार नहीं होते, थकते नहीं हैं और उनकी कमर नहीं

झुकती। उनमें दर्द नहीं। कहने लगे ﴿من اشد منا قوة﴾ हम से ताक़तवर कोई नहीं।

तो मेरे रब ने कहा जिसने तुम्हें बनाया वह तुमसे ज़्यादा ताक़तवर है। हवा चली, उन्हें तहस-नहस किया। फिर एक फ़िरऔन भी था। आज के सियासतदानों को बताओ जो एम०पी० की कुर्सी पर ईमान बेचते हैं, जो सदारत की कुर्सी पर ईमान के सौदे करते हैं, जो एसेम्बली के पीछे ईमान बेच देते हैं उनको बताओ।

وجاء فرعون ومن قبله والمؤتفكة بالخاطئة فعصوا رسول ربهم
فاخذهم اخذة رابية انا لما طغى الماء حملنكم في الجارية.

फ़िरऔन आया था दंदनाता हुआ। ﴿انا ربكم الاعلى﴾ मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ।

﴿كم تركوا من جنت وعيون وزروع ومقام كريم ونعمة كانوا فيها فاكهين.﴾

वह बाग़ छोड़ गए, खेतियाँ छोड़ गए, ऐश गाहें छोड़ गए और ऐश परस्ती का सामान छोड़ गए।

فما بكت عليهم السمآء الارض وما كانو منظرين.

ना उन पर ज़मीन रोई ना आसमान रोया।

भाईयो! होश में आ जाओ। यह ज़िंदगी धोखा है। यह मच्छर का पर है। यह धोके का घर है। मकड़ी का जाला है। चढ़ता सूरज न देखो, उतरते सूरज को देखो। देखते नहीं हो सुबह की ख़ूबसूरती, सुबह अपना निशान उतार पाती कि पश्चिम का छोर डुबोकर सारी रौनकें छीन लेता है। उसकी रौनक़ अंधेरों में बदल देता है। दिन की रौशनी को स्याही में बदलकर डूबने वाला सूरज पुकार-पुकार कर कहता है कि यह धोखे का घर है। इसके चक्कर में न पड़ना।

आज का लड़का लड़की अपने आप को आईने में हर कोण से देखता है। अपने हुस्न पर इतराता है। चाहता है लोग इसकी तारीफ़ करें। कुछ सुबहें, कुछ रातें उसके बाद क्या होगा। इसके बाद बुढ़ापे की मकड़ियाँ आ गयीं। उन्होंने चेहरे पर ताना-बाना बना दिया। अब उनसे कहो शीशा देखो। कहता है नहीं देखता, आज मैं शीशा देखने की ताब नहीं रखता। नहीं! नहीं! यह मैं नहीं हूँ। मुझमें तो बड़ा हुस्न था। मैं तो वक़्त का यूसुफ़ था। देख तो सही अपना चेहरा, तूने तो बड़ा ज़ोर लगाया था कि बुढ़ापा न आने पाए, चेहरे की रौनक़ न जा पाए। लाखों क़िस्म के तुमने मैकअप के सामान ख़रीदे और किन-किन मुशक़्क़तों से तूने अपने जिस्म को संवारा, बनाया। फिर आज तू क्यों अपना चेहरा नहीं देखता।

तीन मन वज़न उठाने वाला दूसरों का मुहताज

नसरुल्लाह बट मीर हमारे ज़माने में फिल्मों में काम करता था। आज तो माशाअल्लाह अल्लाह बड़ी दाढ़ी रखी हुई है। वह जवानी में तीन मन की बोरी को दो उंगलियों से उठाकर फेंक देता था। मुझसे कहने लगा आज मुझसे खुद ज़मीन से ऊपर उठा नहीं जा रहा है।

तो भाईयो! हमें अपने चेहरे ऊपर से नज़र आते हैं। तेरी जवानी कहाँ गई? उसे दुनिया खा गई। मेरा हुस्न कहाँ चला गया। वह शाम के हाथ ढल गया। मेरी जवानी कहाँ चली गयी। वह ढल गई रात के साथ यहाँ का हर हर फूल खिलने नहीं पाता कि वह मुर्झा जा जाता है। बहार आने नहीं पाती कि पतझड़ के

थपेड़ें उसे धक्का देकर पेड़ों को नंगा कर देते हैं।

मुस्कुराहटें आने नहीं पातीं कि आँसुओं की रिमझिम बरसात शुरू हो जाती है। खुशियाँ आंगन में क़दम रखती हैं और ग़म आकर उसको दूर फेंकते हैं। कहीं शादियों के नग़मे न सुना करो। जाओ रोने वालियों के नौहे सुनो, नाचने वालियों के गाने न सुनो, उन माँओं के बीन सुनो जिनके जवान लाअल उनकी आँखों के सामने मैय्यत बनकर पड़े होते हैं। उन औरतों के नौहें सुनो जिनके जवान शौहर छोट-छोटे बच्चे छोड़कर क़ब्र में सो चुके हैं। यहाँ के राग न सुनना। धोखा खा जाओगे। यहाँ के होटलों में न जाना वे ईमान बर्बाद करने के अड्डे हैं। वहाँ न जाना। वहाँ हर चीज़ बनावटी है। लौटकर क़ब्रिस्तान जाना। टूटी क़ब्रें, वीरना क़ब्रिस्तान, टूटी हुई क़ब्रें, धंसी हुई क़ब्रें, बैठी हुई क़ब्रें। एक एक क़ब्र कहेगी मैं भी किसी के सिर का ग़रूर था।

क़ब्रिस्तान वालों की उदासी

मैं क़ब्रिस्तान से गुज़र रहा था ताकि क़ुरआन पढ़ता हुआ दाएं बाएं सबको ईसाले सवाब करता जाऊँ। अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता कौन है? एक क़ब्र ने मेरे पाँव रोक लिए उसकी बेबसी ने, उसकी हसरत ने, उसकी उदासी ने, बेबसी ने मेरे पाँव रोक लिए। मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं, मैं कैसे बयान करूं कि चलते हुए मेरे क़दम रुक गए और मैं खड़ा होकर क़ब्र को देखने लगा और मुझे यूँ लगा जैसे क़ब्र का एक-एक ज़र्रा कह रहा हो कि इधर भी कुछ पढ़ते जाओ। यहाँ कभी कोई नहीं आया।

माँओं को दफ़न करने के बाद औलादें भूल जाया करती हैं।

माँओं की गोद में खेलने के बाद फिर याद भी नहीं रहता कि कोई माँ भी थी। बाप के कंधों पर सवारी करने के बाद फिर याद भी नहीं रहता कि कोई हमारे लिए घर बना गया था। जाएदाद और ज़मीन छोड़कर मर गया। कोई किसी को याद नहीं रखता। यह मिट जाने के मक़ाम हैं।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को दफ़न करने के बाद फ़रमाया था, आज मुझ पर यह बात खुल गई कि कोई किसी का साथ नहीं दे सकता। कोई सदा सलामत नहीं रह सकता। ऐसी हसीन जोड़ी भी आज बिखर गई। ऐसी जोड़ी कोई कहाँ से लाएगा? ऐसा जमाल कोई कहाँ से लाएगा? अली और फ़ातिमा की जोड़ी कोई दिखाए तो सही नबियों के बाद कोई ऐसी जोड़ी हो लेकिन आज यह जोड़ी टूट गई।

चौबीस साल की उम्र में फ़ातिमा जुदाई दे गई लेकिन भाई! उनका तो मरना भी ज़िंदगी था। पानी के लिए अपनी ख़ादिमा से फ़रमाया मेरे गुस्ल का पानी रखो। ख़ादिमा ने पानी रखा। खुद गुस्ल किया। कपड़े पहने उसके बाद चारपाई को बीच में रखवा दिया और फ़रमाया अब मैं मर रही हूँ। मेरा गुस्ल हो चुका है। मुझे दोबारा गुस्ल न देना। यही मेरा गुस्ल है। हज़रत अली उस वक़्त बाहर गए हुए थे। फ़रमाया अली को बता देना और वह गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु

अन्हा से कहा था मैं जा रहा हूँ। वह रोने लगीं। फिर आपने कान में कहा नहीं, नहीं तू ग़म न कर। सबसे पहले तू ही मुझसे आकर मिलेगी। फिर हंसने लगीं। हज़रत आएशा देख रही थीं। कहा क्या बात है? कहने लगीं मुझे मेरे बाप ने कहा मैं जा रहा हूँ तो मुझे रोना आया। तो उन्होंने फ़रमाया तू ग़म न कर सबसे पहले तू ही मुझसे आकर मिलेगी। तो मैं ख़ुश हो गई। बाप के जाने के सिर्फ़ छः महीने के बाद अब्बा से मुलाक़ात हो गई। तो अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे हैं:

आओ! आओ! देखो मैंने इन हाथों से मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़ब्र में उतारा। आज इन्हीं हाथों से फ़ातिमा को क़ब्र में उतार दिया। आज मुझ पर यह राज़ खुल गया कि यहाँ कोई दोस्ती सलामत नहीं रह सकती। कोई घर आबाद नहीं रह सकता।

और मेरे भाईयो! कोई घर कितना आबाद रहे, सलामत रहे, दिन आता है कि मकड़ी के जालों के सिवा वहाँ कुछ नहीं होता। हवाओं की सनसनाहट के सिवा वहाँ कुछ नहीं होता। अल्लाह का वास्ता देता हूँ फ़ैसलाबाद से धोके न खाओ। इसके बाज़ारों से धोका न खाओ। होश में आओ। हम ग़लत जा रहे हैं।

मेरे भाईयो! होश में आओ

मेरे भाईयो! अगर मरकर अल्लाह के पास नहीं जाना है, रसूल का सामना नहीं करना है तो जो मर्ज़ी में आए करो। फिर हमें भी कुछ समझाओ। हम क्यों बोल बोलकर गले की एक-एक रग में

दर्द उतार बैठे हैं। घर छोड़े बैठे हैं। सारा वजूद, हड्डियों में दर्द उतार गया है। हमें भी कोई रास्ता बताओ कि यह रास्ता है। इसमें मौज मेले भी होंगे। अल्लाह भी नहीं मिलेगा। आओ हम मिलकर तुम्हारा साथ दें। हम क्यों ऐसे खारी उठाए हुए दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं।

मेरे भाईयो! मैं बता रहा हूँ कि कोई ऐसा रास्ता नहीं है। मैं ऐसे नौजवानों को देखता हूँ तो मेरा दिल टूट जाता है। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे इनके दिलों में उतरकर उनकी लगामें अल्लाह की तरफ़ फेर दूं? उसके रसूल की तरफ़ उनके क़दम उठते। जब ताजिर ग़लत तोलते हैं, जब ये बैंक से लम्बे लम्बे कर्ज़े लेकर ग़लत निज़ाम बनाते है। पराईज़ बांड ख़रीदकर दुआएं मांगते हैं या अल्लाह! मेरे बांड निकल आएं। ओ मेरे भाई! तुझे क्या हो गया? तू जुए पर दुआएं कर रहा है। या अल्लाह! मेरा बांड निकाल दे। मैं कैसे होश में लाऊँ? मैं तो खुद मदहोश हो चुका हूँ। कोई सुनता ही नहीं, कोई मानता ही नहीं। चार दिन के लिए हाय, हाय करते हैं। फिर वही रास्ता, वही राहें, वही ग़फ़लत, वही शामें। कहाँ से कोई आएगा? कौन सी आवाज़ आएगी?

क्या मौत के बाद तौबा करोगे?

क्या क़यामत के कड़के सुनना चाहते हो? क्या आसमान के धमाके सुनना चाहते हो? क्या ज़मीन के कलेजे को फटा देखकर तौबा करोगे? या समुंद्र की बिफरी मौजों को देखकर फिर तौबा करोगे? या हवाओं के झक्कड़ बगोलों को देखकर तौबा करोगे? नहीं, नहीं फिर तौबा का वक़्त निकल जाता है। अभी वक़्त है।

अब भी हम लौट आएं। क़ब्रों की बोसीदगी को याद करो। क़ब्रों के अंधेरे याद करो।

मैं आपको सुना रहा था। उस क़ब्र ने मुझे रोक लिया। उसकी मिट्टी के एक एक ज़र्रे ने कहा कुछ मुझ पर पढ़ दो। यहाँ कोई नहीं आया करता। जुदाईयाँ होती हैं, फिर क्या होता है? जब जुदाईयाँ हो जाती हैं तो ऐसे हो जाता है जैसे कभी कोई आया ही नहीं था। कोई मिल बैठा ही न था, कोई माँ न थी, कोई बाप न था, कोई भाई न था।

इस तरह इंसान भुला देता है। अपनों झमेलों में गुम होकर। मैं उस क़ब्र पर खड़ा होकर पढ़ता जा रहा हूँ। उसका सिरहाने का पत्थर टेढ़ा हो चुका था। ज़माने की गर्दिशों ने, गुज़रे ज़माने की बेरहम गर्दिश ने उसके सारे कुत्बे (क़ब्र के सिरहाने का पत्थर) को काला कर दिया था। मुझे ताज्जुब तजस्सुस हुआ कि देखूं कि यह कौन है? मैं क़रीब हुआ, झाड़ा तो ऊपर लिखा हुआ था, अल्लाहु अकबर! रुस्तमे हिंद इमाम बख़्श। जिसके लिए महाराजा क़ालीन बिछाते, जिसको हाथियों पर सवार करवाकर लाया जाता था, जिसके आगे पीछे ढोल बजते थे। जैसे यह आजकल क्रिकेट के खिलाड़ियों के आगे पीछे भीड़ होती है। यह वह दौर था जब पहलवानों के आगे पीछे भीड़ होती थी। आज उसकी क़ब्र वीरान होकर कह रही है कि कोई इधर भी तो पढ़ता जाए। कोई यहाँ भी तो कुछ तोहफ़ा देता जाए।

मौत सारे महबूबों को जुदा कर देगी

मेरे मोहतरम भाईयो! जब मौत आएगी तो कोई औलाद याद

न करेगी, कोई माँ-बाप याद न करेंगे। माँए भूल जाती हैं, माँओं को बच्चे भूल जाते हैं। बाप औलादें भूल जाते हैं। बीवियों को शौहर भूल जाते हैं। शौहरों की बीवियाँ भूल जाती हैं। यारों को यार भूल जाते हैं। वह तो हम जो ख़ाक के नीचे जाकर सो जाते हैं। अकेले तन्हा ज़िंदगी का सफ़र शुरू हो जाता है।

अली बिन अबी तालिब जैसा शहसवार, अल्लाह का महबूब इंसान जिसको अल्लाह के नबी ने कहा अली तुझे बशारत हो जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा। इतनी बड़ी बशारत का लेने वाला रोज़ाना रात की फ़रियाद। मुझे मालूम नहीं कि मेरा यह बयान क़ुबूल होगा या मरदूद। आपको मालूम नहीं कि आप की आमद क़ुबूल है कि मरदूद है। आज पच्चीस रोज़े रखते हुए हो गए। कुछ पता नहीं अल्लाह क़ुबूल करेगा या नहीं। वह बड़ी ज़ात है। आज तक कोई अमल भी नज़र नहीं आता जिस पर हम दावा कर सकें कि यह अमल तो मेरा क़ुबूल है और मेरी बख़्शिश का सामान हो जाएगा। हम फ़क़ीर हो गए। मेरे भाईयो! रोज़गार का निज़ाम हमारा इतना ख़राब नहीं हुआ जितना हमारा ईमान ख़राब हो गया।

आज मालदार भी फ़क़ीर हैं। दुकानदार भी फ़क़ीर हैं। ताजिर, ज़मींदार भी फ़क़ीर हैं। आज जो जितना बड़ा दुनियादार है वह ईमान का उतना ही बड़ा फ़क़ीर है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़िक्रे आख़िरत

जिनको जन्नत के परवाने मिल गए। आपने फ़रमाया जन्नत में

अली का घर मेरे घर के सामने होगा। फ़ातिमा मेरी बेटी जन्नत की औरतों की सरदार, हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा जन्नत के जवानों के सरदार, हज़रत अली रात को उठकर रो रहे हैं। ऐ मेरे मौला! मुझे माफ़ करना मेरे पास अमल कोई नहीं है, मेरा अमल थोड़ा है, तो हमारे पास क्या है। जिसका मैं दावा करूं। मेरा अमल थोड़ा है, तो कुछ तो सोचो कि कभी थोड़े अमल वाला भी दो जहाँ के सरदार के सामने घर बना सकता है। वह कह रहे हैं मेरा अमल थोड़ा है। तो मेरे पास क्या है जिसका मैं दावा करूं। मेरा अमल थोड़ा है। मुझे अकेले जाना है। रास्ता बड़ा ख़तरनाक है। ऐ मेरे अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे, मुझे माफ़ कर दे। यह वह हैं जो माफ़ हो चुके हैं। मुझे तो अपना मालूम नहीं किस हाल में जाना है। जब उठेंगे, दिन, घंटे, मिनट, घड़ी हमारा वक़्त तय है। क़ब्र की मिट्टी तय है। कफ़न के कपड़े तय हैं। क़ब्र में उतारने वालों के नाम लिखे जा चुके हैं। जिन कीड़ों ने हमारे जिस्म को खाना है वे भी तय हो चुके हैं।

कब हड्डियाँ पिघल जाएंगी? कब गोश्त उधड़ जाएगा? कब आँखें उबलकर बाहर आ जाएंगी? यह मुस्कुराता चेहरा तारीक हो जाएगा और उसके अंदर से ख़ौफ़नाक खोपड़ी बाहर निकलेगी। कब दाँत जबड़े टूट जाएंगे। कब यह रीढ़ की हड्डी जिसके सहारे हम खड़े हैं कीड़ें उसको नोच नोचकर चूरा-चूरा कर देंगे? यह पाँव जो ज़मीन पर ऐढ़ी मारकर चलता है, घमंड में इतराता है।

क़ब्र की आग

भाईयों पता नहीं कि यह ज़मीन पर पड़ा हुआ पाँव अल्लाह के यहाँ क्या ग़ज़ब के फ़ैसले कराता है?

हाँ एक दिन आएगा कि ऐड़ियों को कीड़ा खाएगा। कहेगा अब ऐड़ी मारकर दिखा। सारा वजूद मिट्टी हो जाएगा। क़ब्र की गर्मी पिघला देगी। फिर ज़मीन को गुस्सा आएगा। वह कहेगी मुझे करवट बदलनी है। फिर वह करवट बदलेगी। फिर वह अंदर की मिट्टी बाहर फेंक देगी। फिर मौलाना साहब, यह डाक्टर साहब, यह इंजीनियर साहब, यह बेगम साहिबा, यह अमीर साहब, यह ग़रीब साहब, यह नवाब व बेगम, ये शाह व शहज़ादी, यह अव्वल व आख़िर, ये हसीन व बदसूरत, ये मालदार व फ़क़ीर, ये बूढ़ा और जवान, यह बच्चा, आज इनका चूरा-चूरा ज़मीन के ऊपर आया। हवा का झोंका आया और उसने यूँ बिखेर दिया। और हवाओं पर हवा, आंधियों पर आंधियाँ चली। मेरे ज़र्रे बिखरने शुरू हुए। एक-एक ज़र्रा जुदा हुआ। पता नहीं कहाँ-कहाँ जाकर यह जिस्म की ख़ाक गिरेगी।

ग़फ़लत भरी ज़िंदगी से तौबा करो

मेरे भाईयो! जिस वजूद का यह अंजाम हो, हम उसको अल्लाह की नाफ़रमानी पर चला दें तो हम से बड़ा नादान कौन होगा? हम से बड़ा घाटे वाला कौन होगा? नुक़सान वाला कौन होगा? अल्लाह की रहमत का दर खुल चुका है। जन्नत के दरवाज़े खुले हैं। दोज़ख़ के दरवाज़े बंद हैं। एक फ़रिश्ता कह रहा है, भलाई के करने वाले आगे बढ़ तुझे मुबारक हो। दूसरा फ़रिश्ता कह रहा है बुराई करने वाले बस कर, वापस आ जा। अल्लाह पहले आसमान पर लश्कर के साथ बयान कर रहा है, कोई तौबा करने वाला है? कोई बख़्शिश मांगने वाला है? कोई मुझ से लेने वाला है?

﴿هل من سائل، هل من مستغفر، هل من تائب.﴾ हो कोई तौबा करने वाला? है कोई गुनाहों की बख़्शिश कराने वाला? है कोई मुझ से मांगने वाला?

मेरे भाईयों! आज आख़िरी जुमा है जुमा-तुल-विदा है, जुमा का दिन है। रहमत इलाहिया टूट-टूट कर गिर रही है। पर हाय मैं क्या करूं, इस रहमत से चार आदमी आज भी महरूम हैं। शराब पीने वाला अब भी महरूम है। उस पर जुमा की रहमत का कोई एक क़तरा भी नहीं गिर रहा। माँ-बाप का नाफ़रमान उसके लिए जुमा की रहमतों में से कोई हिस्सा नहीं। माँ-बाप के नाफ़रमान के लिए शबे क़द्र की बख़्शिश में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह राज़ोना दस लाख जहन्नमियों को जन्नत के फ़ैसले सुना रहा है लेकिन माँ-बाप का नाफ़रमान इस रहमत से भी महरूम है। पानी में खड़ा होकर भी प्यासा है। पानी में खड़े होकर भी ख़ुश्क है। उसे कुछ न मिला अक्सर नौजवान बैठे हैं। माँ-बाप अगर ज़िंदा हैं तो आज उनके पाँव पकड़ लो, उनको मना लो। माँओं की दुआएं तुम्हें वहाँ ले जाएंगी जहाँ डॉलर, बांड नहीं ले जाएंगे। और माँ की हाय अर्श हिलाकर रख देती है। अगर यह दुनिया जज़ा सज़ा की जगह होती तो जब माँ-बाप तंग आकर हाय करते हैं, अल्लाह की क़सम! हिमालय पहाड़ भी रेज़ा-रेज़ा हो जाता। ज़मीन फट जाती, आसमान टूट जाता, जब दूध पिलाने वालियों को औलाद आँख निकालकर बोलती है। डांट देती है, तुम्हें क्या पता है।

माँएं बद्दुआएं नहीं दिया करतीं। पर ये आँसू कहाँ जाएंगे। इसलिए में कहता हूँ, हुकूमत को बुरा क्यों कहते हो? फ़ौज गंदी, पुलिस गंदी, वापडा गंदी है। सिर्फ़ यही नहीं मैं भी डुबो रहा हूँ, आप भी डुबो रहे हैं। जब नौजवान आवारा नज़रें उठाकर लोगों

की बेटियों को देखते हैं तो उन्होंने भी तो इस मुल्क को आग लगा दी। जब नौजवान लड़कियाँ बेपर्दा होकर आवारगी के साथ बाज़ार में निकलती हैं। उनके लिबास छोटे से छोटे होते चले जा रहे हैं। क्या इससे पाकिस्तान का नसीब नहीं डूबेगा तो और क्या होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि हुकूमत को गालियाँ न दो। अपने अमल देखो जो आज बाज़ारों में हराम के कारोबार कर रहे हैं। जो बांड की दुकान खोलकर बैठे हुए हैं। आज ये जो गाने बजाने की महफ़िलें सजा रहे हैं। यह जो शादी के नाम पर अल्लाह का हर हुक्म तोड़ देते हैं। ये जिन्होंने तहज़ीब के नाम पर बेहयाई के बाज़ार गर्म कर दिए हैं। यह भी तो हैं जिन्होंने मेरे मुल्क की किश्ती को डुबो दिया। हर एक के हाथ में कुल्हाड़ी है अपने ही हाथ से उस शाख़ को काट रहे हैं जिस पर बैठे हैं।

तौबा कर लो इससे पहले कि मौत आ जाए

मेरे भाईयो! हमारी फ़ौज पुलिस डेढ़ दो करोड़ होगी। हम तेरह करोड़ हैं। तो डेढ़ दो करोड़ की बुराई तेरह करोड़ पर अज़ाब को नहीं ला सकती। मैं और आप पिच्चानवे फ़ीसद तो नमाज़ें छोड़ गए। आज भी फ़ैसलाबाद में लाखों होंगे जो जुमा नहीं पढ़ेंगे, ईद भी नहीं पढ़ेंगे। लाखों होंगे जिन्होंने एक रोज़ा भी नहीं रखा होगा। जिन्होंने एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी होगी। क्या ये नहीं हैं हमारी किश्ती में सुराख़ करने वाले। क्या सिर्फ़ पुलिस, वापडा, फ़ौज, अफ़सरशाही है? हमारे ही तो भाई हैं। इनके लिए दुआ करो। अल्लाह पर छोड़ दो। जानते नहीं हो सबसे शदीद अज़ाब ज़ालिम हुक्मुरान को होगा।

हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि अगर तुम्हारा दुश्मन अल्लाह

का नाफ़रमान है तो बदला लेने की नियत छोड़ दो। अल्लाह खुद कफ़ील बन जाएगा।

तो मेरे भाईयो! इस वक़्त अल्लाह का अर्श आ चुका है। वह तौबा तलब कर रहा है। तो आओ यह मुबारक महीना है। हम तौबा करें इस रहमत के महीने में। कोई माँ-बाप का नाफ़रमान हो तो वह जाकर पाँव पकड़कर माफ़ी मांग ले। उफ़ भी न करो ﴿لا تقل لهما اف﴾ उफ़ भी न करो उनके आगे।

इमाम बुख़ारी रह० ने वाक़िआ नक़ल किया है। एक आदमी क़ब्र से निकलता है। मरने के बाद उसका चेहरा गधे की तरह होता, तीन दफ़ा गधे की आवाज़ निकालता है। फिर क़ब्र में ग़ायब हो जाता। तो जो इस वाक़िए के रावी हैं, कहते हैं यह क्या चक्कर है। कहा कि यह आदमी शराबी था। शराब पीता था। उसकी माँ उसको रोकती थी बेटा शराब न पिया करो। तो यह उसे कहता खोते की तरह हर वक़्त बकवास न किया करो। जब वह मरा। जिस दिन से यह मरा है उसके साथ यह हो रहा है।

तो मेरे भाईयो! आज की बदक़िस्मती है। आज के स्कूल वह इल्म नहीं सिखा रहे हैं। वह तो पैसे कमा रहे हैं। वह दो जमा दो चार सिखा रहे हैं। कौन बता रहा है माँ किसे कहते हैं? कौन बताता है बाप क्या है। माँ-बाप नहीं बताते तो उस्ताद क्या बताएंगे। हमारी बदक़िस्मती है कि हमारी नस्ल केबिल में मुब्तला हो गई और वह इंटरनेट में फंस गए। हाय-हाय उन्होंने अपने अक़दार भूले, तहज़ीब भूली, अपनी मंज़िल भूली। दुनिया के ऐशों में लगकर गुम हो गए और यही सब कुछ नहीं है।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

यूरोप की तहज़ीब को आग लगा दो

الحمد لله الذی لم یتخذ صاحبة ولا ولدا ولم یکن لهٗ شریك فی الملك ولم یکن لهٗ ولیٌ من الذل وکبّره تکبیرا وتقدره تقدیرا. واشهد ان لا اله الا الله وحده لا شریك لهٗ واشهد ان سیدنا ومولانا محمدا عبده ورسوله ارسله بالحق بشیرا ونذیرا وداعیا إلی الله باذنه وسراجا منیرا صلی الله تعالی علیه اله وعلی اصحابه وبارك وسلم تسلیما کثیرا کثیرا. اما بعد

فاعوذ بالله من الشیطان الرجیم.
بسم الله الرحمٰن الرحیم.

واذا اردنا ان نهلك قریة امرنا مترفیها ففسقوا فیها فحق علیها القول فدمرناها تدمیرا ○ وکم اهلکنا من القرون من بعد نوح. وکفٰی بربّك بذنوب عبادهٖ خبیراً بصیرا ○ من کان یرید العاجلة عجّلنا لهٗ فیها ما نشاء لمن نرید ثم جعلنا لهٗ جهنّم یصلٰها مذموما مدحورا ○ (سورہ بنی اسرائیل پ۔ ۱۵ آیت ۱۶ تا ۱۸)

قال النبی صلی الله علیه وسلم ما رأیت مثل الجنة. مقالبها وما رأیت مثل النار إتق النار ولو بشق بأمره إن الله بعثنی کافة للناس رحمة.

मस्जिद में किसी के अदब में खड़ा होना नाजाएज़ है

पहले कई बार बताया जा चुका है मस्जिद में किसी के लिए खड़ा होना जाएज़ नहीं। यह अल्लाह का घर है। यह अल्लाह की ताज़ीम व अज़्मत के लिए है न कि इन्सान की ताज़ीम व अज़्मत के लिए। अल्लाह के नबी मस्जिद में आते थे तो कोई उनके लिए खड़ा नहीं होता था और न ही आप उसको पसन्द फ़रमाते थे बल्कि आप उनको बिठाते थे। हमारे यहाँ एक तो इल्म की कमी है दूसरे कोई तहक़ीक़ नहीं है। रिवाज इस्लाम बना हुआ है। मस्जिद अल्लाह की अज़्मत का घर है यहाँ किसी इन्सान की ताज़ीम के लिए खड़ा होना जाएज़ नहीं, ताज़ीम अल्लाह के लिए है। खड़ा न हुआ करें मुनासिब नहीं है। हम यहाँ अल्लाह के सामने खड़े होते हैं मख़्लूक़ के सामने नहीं तो इसलिए यहाँ अल्लाह कहता है:

في بيوت اذن الله ان ترفع ويذكر فيها اسمهٗ، يسبح لهٗ فيها بالغدو
والاصال، رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله واقام
الصلوة وايتاء الزكوة يخافون يوما تتقلب فيه القلوب والابصار.

(سورہ نور پ. ١٨، آیت ٣٦ تا ٣٧)

यहाँ अदब बताया गया है। एहतियात करनी चाहिए। लोगों का एहतिराम अपनी जगह पर है, अज़्मत अल्लाह की ज़ात के लिए है।

जाहिल कौन?

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! न जानने के दो दर्जे हैं। एक

आदमी जानता ही नहीं इसका नाम जिहालत है। एक आदमी ग़लत जानता है इसका नाम भी जिहालत है, नादानी है। किसी को पता ही नहीं कि घोड़ा क्या है तो कहेंगे भाई जाहिल है। घोड़े के बारे में भी नहीं जानता। एक आदमी गधे को घोड़ा कहे तो यह भी जाहिल है, ख़च्चर को घोड़ा समझे तो यह भी जाहिल है कुछ समझा तो है मगर बदक़िस्मती से ग़लत समझा। ऊँट को घोड़ा समझ बैठा, हाथी को गधा समझ बैठा तो पहले वाला जो जानता ही नहीं वह भी जाहिल है और यह दूसरा भी जाहिल है।

दूसरा जानता है मगर ग़लत जानता है यह भी जाहिल है तो इस जिहालत को जिहालत मुरक्कब कहते हैं। दो जिहालतें इकठ्ठी हो गयीं। दो जिहालतें न जानना जमा ग़लत जानना तो पहला जो दर्जा होता है उसे समझाना आसान होता है जो दूसरा दर्जा है उसे समझाना मुश्किल होता है कि वह ग़लत जानता है और उसे सही कह रहा है। जब किसी क़ौम का अमल ग़लत हो जाता है तो उन्हें वापस लाना आसान होता है लेकिन जब उनका इल्म बिगड़ता है और उनका इल्म जिहालत का शिकार हो जाए तो उन्हें वापस लाना मुश्किल हो जाता है। नामुमकिन तो नहीं है मुश्किल बहुत हो जाता है।

एक तख़्ती साफ़ है उस पर लिखना आसान है, एक तख़्ती पर लिखा हुआ है पहले उसे मिटाया जाएगा। मिटाने के बाद उसको दोबारा साफ़ किया जाएगा। बचपन में हम उस पर लिखा करते थे, साफ़ करते फिर उस पर दोबारा लिखा जाएगा तो कितने काम बढ़ गए ग़लत लिखे हुए को मिटाना फिर उसे साफ़ करना फिर उस पर दोबारा लेप करना फिर उस पर सही लिखना। काम

बढ़ गया, ज़्यादा हो गया। इस वक़्त हम अमल के लिहाज़ से भी बिगड़े हुए हैं और इल्म के लिहाज़ से बिगड़े हुए हैं। जब क़ौमों का इल्म ग़लत हो जाए फिर कुछ लोगों को इसके लिए फ़ना होना पड़ता है उनको वापस लाने के लिए अगर ऐसा कोई तब्क़ा तैयार न हो तो फिर सारी क़ौम डूबती है, किश्तियाँ डूबती हैं। बाक़ी रहने को नस्ल नहीं रहती खंडर होते हैं टूटे हुए, उजड़े हुए तय्याक़ होते हैं। गुज़रने वाले गुज़रते हैं और कहते हैं कि यहाँ कभी कोई रहा करता था, यहाँ भी कभी कोई आबादी थी। उस जगह को देखने के बाद यह समझ में आता है कि यक़ीनन यहाँ लोग रहा करते थे जो अब तो सिर्फ़ ख़ंडर की शक्ल में रह गया हे जो बाक़ी रहने वाले होते हैं वह मिट्टी की तह में चले जाते हैं। जो अल्लाह की पकड़ में आकर अपनी ग़लतियों की सज़ा भुगत रहे हैं।

पी०एच०डी० करने वाला आज क़ुरआन भी नहीं पढ़ सकता

हमें क़ुरआन से काटा गया है। मस्जिद भरी है मगर एक आदमी ऐसा नहीं जो अल्लाह के पैग़ाम को समझता हुआ उठता हो। हर मुल्क भरा है, इन्सान धंसे हुए हैं, आबादी की कसरत है लेकिन करोड़ों की आबादी में लाखों भी नज़र नहीं आते हैं जो अल्लाह का पैग़ाम समझते हों। उठते हों उस पर लब्बैक कहते हों। कहने पर उठते हों, हटाने पर हटते हों। तब्क़ा ही कोई नीं कालेज भरे हुए, युनिवर्सिटियाँ भरी हुई हैं प्राइवेट स्कूल भरे हुए,

ख़ूब लगी हुई है एक क्लास के कितने सैक्शन, हर सैक्शन में कितने बच्चे करोड़ों बच्चे। एबीसी से शुरू करते हैं और पढ़े जाते हैं कोई पी०एच०डी० करते हैं, कोई मास्ट्रस करते हैं, कोई डाक्टर बनता है, कोई इन्जीनियर बनता है, कोई ताजिर बनता है, कोई सांइसदान बनता है, कोई सियासदान बनता है। कोई भी ज़िन्दगी के इस लम्बे सफ़र में एक लाईन भी क़ुरआन समझने वाला इल्म नहीं पढ़ता, मेरा अल्लाह मुझ से क्या चाहता है। क्योंकि मैं खुद नहीं आया तो खुद अपनी ज़िन्दगी की राहों को तय करने का भी हक़दार नहीं हूँ। खुद मैं खुद नहीं मरता मुझे कोई मारता है।

हलाकत वाले ग़लत रास्ते से बचो

मैं अपनी मंज़िल अपने आप तय करने का हक़दार नहीं हूँ। जिसने मुझे पैदा किया उसी ने मेरी ज़िन्दगी का मक़सद भी तय किया है और जिसने औरों को मौत दी है, उसी ने मेरी मंज़िल को तय किया है।

﴿وان هذا صراطی مستقیما فاتبعوه.﴾

यह मेरा रास्ता है मेरे बन्दो इस पर चलो ﴿ولا تتبعوا السبل﴾ दाएं बाएं के रास्तों से बचो, एक्सीडेंटों से बचो,

﴿فتفرق بکم عن سبیله. (سورة انعام پ. ٨ آیت ١٥٤)﴾

अगर तुम एक्सीडेंटों में खो गए तो फिर क्या होगा कि तुम असल सीधे रास्ते से हटोगे। कोई वीराने में मर जाएगा, कोई गढ़े में जा मरेगा, कोई भूखा मरेगा, कोई किसी घाटी में, कोई किसी वादी में, कोई सहरा में बेबसी की मौत मरेगा।

सीधा रास्ता क्या है?

﴿وان هذا صراطی مستقیما﴾

यह रास्ता है कौन सा रास्ता है? ﴿اهدنا الصراط المستقیم﴾ जो उसने हमें कहा हक मांगो अल्लाह हमें सिराते मुस्तक़ीम अता फ़रमा, सीधा रास्ता अता फ़रमा। सीधा रास्ता क्या है?

الیوم اکملت لکم دینکم واتممت علیکم نعمتی ورضیت لکم
الاسلام دینا. (سورۃ مائدہ پ.٦، آیت ٣)

उसे अल्लाह ने पूरा कर दिया, कामिल कर दिया, तमाम कर दिया। हिस्से भी पूरे सिफ़ात भी पूरी, रास्ता भी कामिल, मंज़िल तय, राहें रौशन हैं। इस रास्ते पर चलने वालों को अंधेरे का सामना नहीं करना पड़ा, इस रास्ते पर चलने वालों पर रास्ते में रात नहीं आती, शाम नहीं आती। मेरे और आपके नबी ने फ़रमायाः

ترکتکم علی حجۃ بیضاء لیالیھا کنھارھا.﴾

मैं तुम्हें ऐसे रौशन रास्ते पर छोड़कर जा रहा हूँ जिस में रात आती ही नहीं। उसकी रात भी दिन की तरह रौशन है जैसे दिन रौशन वैसे रात रौशन। इससे न हटना जो इससे हटता है वह हलाक हो जाता है, वह बर्बाद हो जाता है, वह तबाह हो जाता है।

दुनिया का फ़रेब धोका है

भाईयो! हमारा इल्म ग़लत कर दिया गया। हाँ आज के दानिशवरों ने कहा पैसे से सब कुछ चलता है। क़ुरआन ने कहा

अल्लाह से सब कुछ होता है

आज का इल्म बोला दुनिया का इल्म असल इज़्ज़त है, अल्लाह का इल्म बोला दुनिया की ज़िन्दगी धोका है, आज के इल्म ने कहा दुनिया की ज़िल्लतों से बचो ये बड़ी मुसीबत है। अल्लाह के इल्म ने कहा दुनिया की ज़िल्लत भी फ़रेब दुनिया की इज़्ज़त भी फ़रेब। आज के इल्म ने कहा यहाँ की लज़्ज़त यहाँ की राहत, यहाँ के घर, यहाँ के बंगले, यहाँ की सदारत, यहाँ की वज़ारत, यहाँ का ओहदा, यहाँ की औरत, यहाँ की शराब, यहाँ की दौलत, यहाँ की धुन, यहाँ का सुर, यहाँ का साज़ यही सब कुछ है। इसी का नाम ज़िन्दगी है। इसी का नाम इज़्ज़त है और बुलन्दी है। हमारे साथ हमारी नस्ल को काट कर दख दिया गया। बेधार छुरी ज़िब्ह कर दिया गया। चार साल का बच्चा टाई लगाकर जाए और माँ-बाप ख़ुद उसके गले में टाई लगाएं तो बताओ भाईयो किस दीवार से आदमी सिर टकरा कर रोए और किस जगह आदमी सिर फोड़े कि जिस बदनसीब क़ौम को अपना लिबास पहनना नहीं आता वह दुनिया में अपना हक़ क्यों मांगती है? हम ज़लील हो गए, हम यह हो गए हम वह हो गए।

मग़रिबी तहज़ीब (वेस्र्टन कलचर) को आग लगा दो

ऐ मेरे भाईयो! हम तो अपने हाथों में ख़ुद ख़न्जर उठाए हुए हैं औरों ने नहीं। अमरीका को गालियाँ देते हो और यूरोप को गालियाँ देते हो, गाली देनी है तो अपने को गालियाँ दो, गाली

अपने ज़मीर को दो, अपने नफ़्स को दो। क्या ये अमरीका ने स्कूल खोले हुए हैं? ये जो गुलिस्तान कालोनी में खोले हैं और बाहर पाकिस्तानी फ़ौज खड़ी है जो हर हर बच्चे के माँ-बाप से कह रही है कि बच्चे के गले में टाई लगाओ। लड़की को फ्रॉक पहनाकर भेजो, पिंडलियाँ नंगी करके भेजो, सिर से दुपट्टा उतारकर भेजो। जब चार साल की बच्ची इस हुलिए से बाए उसे बाद में कौन समझाएगा कि मुसलमान औरत पर्देदार होती है, उसे कौन बताएगा कि मुसलमान बेटी का बाल भी ज़ाहिर होना हराम है, उसकी आवाज़ भी बग़ैर शदीद ज़रूरत के पर्दा है। उसे यह बात कौन समझाएगा?

मैं सुबह सैर को निकला। स्कूल के सामने से गुज़रा कोई दस साल की बच्ची उतरी। पूरी पिंडलियाँ नंगी। छोटा फ्रॉक यह उतरकर अन्दर जा रही है। उसको माँ ने ही तो तैयार किया है, बाप ने आँखों से जाते हुए देखा, अम्मा ने खुद उसको फ्रॉक पहनाया, गालियाँ अमरीका को, यहूदियों को, गालियाँ ईसाइयों को, गालियाँ बरतानिया को। अरे क्या उन्होंने आकर हमें फ्रॉक पहनाए हैं? जब माँ ने खुद यह पहनाए हैं, बाप ने खुद पहनाए, किस ने यह पहनाए। हम खुद अपने आप मुजरिम हैं

तू इधर उधर की न बात कर यह बता कि क़ाफ़िला क्यों लुटा
मुझे रहज़नों से गिला नहीं तेरी रहबरी का सवाल है

जब चरवाहा सो जाए तो भेड़ियों को लान-तान करना यह तो बड़े पागलपन की बात है। भेड़िये का काम तो हमला करना है। उसका काम बकरियों को उठाना है तो भेड़िये को गाली देने का क्या मक़सद? चरवाहे को कोसो जो कि सो गया, जो ग़ाफ़िल हो

गया।

भाईयो! ये स्कूल जाने वाले बच्चे अमरीका ने उन पर डंडा चढ़ाया हुआ है कि तुम पतलूनें पहनो, टाईयाँ पहनो, तुम फ्रॉक पहनो, तुम दुपट्टा उतारो। दुनिया की इज़्ज़त को इज़्ज़त समझा। यहाँ की ज़िल्लत को ज़िल्लत समझा, यहाँ की बड़ाई को बड़ाई समझा, यहाँ की छोटाई को छोटाई समझा, यहाँ की वादियों को दिल फ़रेब समझा, यहाँ के मुर्ग़गुज़ारों को पुरकशिश समझा, इसी को जन्नत समझा इसी को दोज़ख़ समझा।

ईमान का सौदा मत करो

इसी की दौड़ लगाई। इसी पर ईमान के सौदे किए, इसी पर ज़मीर के सौदे किए। माल की चमक, दौलत की खनक पर बिक गए। इस के सिवा कुछ न दिखाई दिया न सुनाई दिया। ज़मीर भी बिके, ज़बाने नहीं बिकीं। बकरा नहीं बकरे की सिरी बिकती है, ज़बानें बिक रही हैं, फेफड़े बिक रहे हैं, दिल बिक रहे हैं, कलेजा बिक रहा है, तिल्ली बिक रही है, रान बिक रही है। जाओ जाओ अदालतों में जाकर देखो दस्तार बिक रही है। आपके बाज़ारों में देखो ग़लत तोला जा रहा है। जैसे बकरे की ज़बान बिक गई, बकरे का भेजा बिक गया जाओ जाओ देखो माल के पुजारी अपना दिमाग़ बेच चुके हैं, ज़बाने बेच चुके हैं।

ग़फ़लत भरी ज़िन्दगी को छोड़ दो

न झूठ की तमीज़, न झूठ की परवाह, न अल्लाह का ख़्याल,

न मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत का एहसान, न जन्नत का शौक़ न जहन्नुम का ख़ौफ़, न क़ब्र के कीड़े याद, न क़ब्र के अंधेरे याद न मौत की सख़्तियाँ याद न मौत का धचका याद न मौत की तड़प याद। सिर्फ़ दुनिया और दुनिया यह हमारा इल्म ग़लत हो गया है।

भाईयो! बनाने वाला अल्लाह वह कह रहा है

﴿وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور. (سورة ال عمران:١٨٥)﴾

ये गुलशन, ये गुलज़ार, ये कोहसार, ये वादियाँ, ये दामन, ये झरने, ये चश्मे, ये दरिया, ये नदियाँ, ये आबशारें, ये समुंद्र, ये ख़ला, ये फ़िज़ा, ये हवा क्या है? क्या ये धोका है?

﴿لعب ولهو وزينة وتفاخر بينكم وتكاثر بالاموال والاولاد.﴾

फिर तमाशा बच्चे खेलते हैं। गुज़रने वाले कहते हैं कि खेल हो रहा है। मेरा अल्लाह कहता है फ़ैसलाबाद के आठों बाज़ारों में खेल हो रहा है, मिलों में फ़ैक्टरियों में खेल खेला जा रहा है। अल्लाह कह रहा है फ़ैसलाबाद के बाज़ार पाकिस्तान के बाज़ार अमरीका, एशिया, अफ़्रीक़ा, आस्ट्रेलिया, हिन्दुस्तान के बाज़ार, यहाँ की वादियाँ, यहाँ की खेतियाँ, हुकूमत, दौलतें, यहाँ की सारी इज़्ज़तें, बुलन्दियाँ ये क्या हैं लईब व लहव खेल हैं तमाशा हैं। आज का दानिश्वर आज का पढ़ा लिखा हुआ पागल है।

दुनिया धोके का घर है

मेरे भाईयो! अनपढ़ों को समझाना आसान होता है। आजकल

के पढ़े हुए को समझाना मश्किल हो रहा है। क्योंकि इसके अन्दर ग़लत जा चुका है। अब उसके अन्दर से ग़लत को निकालना है, सही को डालना मुश्किल है। मेरे भाईयो! दुनिया धोके का घर, दुनिया मच्छर का पर, दुनिया मकड़ी का जाला। आख़िरत क्या है? लोगो! मेरा नबी कह रहा है दुनिया गिरी पड़ी चीज़ है नेक भी खाता है बुरा भी खाता है। सुनो! आख़िरत सच्चा वायदा है, दारुलक़रार आख़िरत, सच्ची ठहरने का घर, मक़ाम आ गया, मुक़ीम हो गया, क़रार आ गया। यह क़रार की जगह नहीं वह क़रार की जगह है। यह मिटने वाला घर है वह हमेशा रहने वाला घर, यह ख़त्म होने वाला घर वह बाक़ी रहने वाला घर, यह धोके का घर वह सच्चा घर। वहाँ जन्नत है तो हमेशा जहन्नुम है तो हमेशा, वहाँ इ़ज़्ज़त मिली तो हमेशा की, वहाँ ज़िल्लत मिली तो हमेशा की। यहाँ इ़ज़्ज़त भी छिन गई, यहाँ ज़िल्लत भी छिन गई, माल भी चला गया, यहाँ का घर भी चला गया, जवानी भी ढल गइ, जवानी भी रुख़सत हो गई, सुबहें भी चली गयीं, शामें भी छिप गयीं, जैसे रुत बदली ऐसे ज़िन्दगी बदली, जैसे मौसम बदले ऐसे जवानी ढली यहाँ तक कि क़ब्र में पहुँच गया, कीड़े खा गए, करवट बदली हवाओं ने पकड़ा, गुब्बार बनाकर उड़ा दिया और धरती में, फ़िज़ा में, ख़ला में ऐसे बिखेर दिया जैसे कभी न था। कभी न की तरह की अदम हो गया, कुछ न हो गया। फिर मेरा अल्लाह ज़र्रात को जमा करेगा, हड्डियों को जमा करेगा, गोश्त चढ़ाएगा, खाल चढ़ाएगा, आँख, नाक, पलक सही करेगा फिर रूह फूंकेगा। जिस्म में रूह दौड़ेगी, क़ब्र फटेगीं,

﴿فاذا هم من الاجداث الى ربهم ينسلون.﴾

क़ब्रें फटेंगी,

ان كانت الا صيحة واحدة... فانما هي زجرة واحدة فاذا هم بالساهرة.

आसमान फट गया, आसमान तड़तड़ा गया ﴿على ارجائها﴾ फ़रिश्ते कोनों पर चले गए ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अल्लाह अपने अर्श के साथ सिरों पर आ गया।

﴿يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية.﴾

डाक्टर भी आ गया, इन्जीनियर भी आ गया, मौलवी भी आ गए, अल्लामा भी आ गए, औरत भी आ गई, मर्द भी आ गए, शाह भी आ गए, वज़ीर भी आ गए, पाक दामन भी आई और इज़्ज़त को बेचने वाली भी आई, जुवा खेलने वाला भी आया, शराबी भी आया, रातों को रोने वाला भी आया और सूद खाने वाला भी आया, नाचने वाला भी आया, तड़पने वाला भी आया और अल्लाह की राह में फिरने वाला भी आया। आज सब मजमे में जमा हैं।

ख़ौफ़नाक दिन

﴿لقد احصاهم.﴾

मेरे रब ने उनको घेरे में लिया हुआ है ﴿وعدهم عدا﴾ एक दाना गिना हुआ है ﴿يومئذ تعرضون﴾ आ गए हो ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ आज छिपकर दिखाओ छिप नहीं सकते ﴿اين المفر﴾ आज भाग के दिखाओ, नहीं भाग सकते ﴿ففروا﴾ आज ताक़त है तो पार निकलकर दिखाओ, नहीं निकल सकते। अब क्या होगा ﴿الى يومئذ المستقر﴾ आज अल्लाह तुझे पकड़ेगा तुझे बाँधेगा, तुझे खड़ा करेगा

के पढ़े हुए को समझाना मश्किल हो रहा है। क्योंकि इसके अन्दर ग़लत जा चुका है। अब उसके अन्दर से ग़लत को निकालना है, सही को डालना मुश्किल है। मेरे भाईयो! दुनिया धोके का घर, दुनिया मच्छर का पर, दुनिया मकड़ी का जाला। आख़िरत क्या है? लोगो! मेरा नबी कह रहा है दुनिया गिरी पड़ी चीज़ है नेक भी खाता है बुरा भी खाता है। सुनो! आख़िरत सच्चा वायदा है, दारुलक़रार आख़िरत, सच्ची ठहरने का घर, मक़ाम आ गया, मुक़ीम हो गया, क़रार आ गया। यह क़रार की जगह नहीं वह क़रार की जगह है। यह मिटने वाला घर है वह हमेशा रहने वाला घर, यह ख़त्म होने वाला घर वह बाक़ी रहने वाला घर, यह धोके का घर वह सच्चा घर। वहाँ जन्नत है तो हमेशा जहन्नुम है तो हमेशा, वहाँ इज़्ज़त मिली तो हमेशा की, वहाँ ज़िल्लत मिली तो हमेशा की। यहाँ इज़्ज़त भी छिन गई, यहाँ ज़िल्लत भी छिन गई, माल भी चला गया, यहाँ का घर भी चला गया, जवानी भी ढल गइ, जवानी भी रुख़्सत हो गई, सुबहें भी चली गयीं, शामें भी छिप गयीं, जैसे रुत बदली ऐसे ज़िन्दगी बदली, जैसे मौसम बदले ऐसे जवानी ढली यहाँ तक कि क़ब्र में पहुँच गया, कीड़े खा गए, करवट बदली हवाओं ने पकड़ा, गुब्बार बनाकर उड़ा दिया और धरती में, फ़िज़ा में, ख़ला में ऐसे बिखेर दिया जैसे कभी न था। कभी न की तरह की अदम हो गया, कुछ न हो गया। फिर मेरा अल्लाह ज़र्रात को जमा करेगा, हड्डियों को जमा करेगा, गोश्त चढ़ाएगा, खाल चढ़ाएगा, आँख, नाक, पलक सही करेगा फिर रूह फूंकेगा। जिस्म में रूह दौड़ेगी, कब्र फटेगीं,

﴿فاذا هم من الاجداث الى ربهم ينسلون.﴾

क़ब्रें फटेंगी,

ان كانت الا صيحة واحدة... فانما هي زجرة واحدة فاذا هم بالصاهرة.

आसमान फट गया, आसमान तड़तड़ा गया ﴿على ارجائها﴾ फ़रिश्ते कोनों पर चले गए ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अल्लाह अपने अर्श के साथ सिरों पर आ गया।

﴿يومئذ تعرضون لا تخفى منكم خافية.﴾

डाक्टर भी आ गया, इन्जीनियर भी आ गया, मौलवी भी आ गए, अल्लामा भी आ गए, औरत भी आ गई, मर्द भी आ गए, शाह भी आ गए, वज़ीर भी आ गए, पाक दामन भी आई और इज़्ज़त को बेचने वाली भी आई, जुवा खेलने वाला भी आया, शराबी भी आया, रातों को रोने वाला भी आया और सूद खाने वाला भी आया, नाचने वाला भी आया, तड़पने वाला भी आया और अल्लाह की राह में फिरने वाला भी आया। आज सब मजमे में जमा हैं।

ख़ौफ़नाक दिन

﴿لقد احصاهم﴾

मेरे रब ने उनको घेरे में लिया हुआ है ﴿وعدهم عدا﴾ एक दाना गिना हुआ है ﴿يومئذ تعرضون﴾ आ गए हो ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ आज छिपकर दिखाओ छिप नहीं सकते ﴿اين المفر﴾ आज भाग के दिखाओ, नहीं भाग सकते ﴿ففروا﴾ आज ताक़त है तो पार निकलकर दिखाओ, नहीं निकल सकते। अब क्या होगा ﴿الى يومئذ المستقر﴾ आज अल्लाह तुझे पकड़ेगा तुझे बाँधेगा, तुझे खड़ा करेगा

फिर क्या होगा?

﴿ينبا الانسان يومئذ بما قدم واخر.﴾

जो तूने देखा होगा, जो तूने किया, जो बैठे, जो चले, जो लेटे, जो सोए, जो खाया, जो पिया तो पढ़ो ﴿اقرا كتابك﴾ पढ़ो अपने किए हुए आमाल को। यही तो देख, वह मैं ही तो हूँ, क्या तेरा रब सोया हुआ था? क्या तेरा रब जाहिल था? क्या तेरा रब ग़ाफ़िल था? तेरा रब आजिज़ था? तेरा रब कमज़ोर था? तेरा रब किसी मुश्किल में था? ऐटमी ताक़तों ने उसे डराया था? लोहे के जहाज़ों ने उसके फ़रिश्तों को आजिज़ कर दिया था? देख तू ही है कोई और तो नहीं? कहेगा हाँ।

यह कैसा कंप्यूटर है?

﴿ما لهذا الكتاب لا يغادر صغيرة ولا كبيرة إلا احصاها.﴾

हाय! हाय! मैं मर गया, हाय! हाय! मैं मर गई। यह कैसी किताब है? यह कैसी कापी है? यह कैसा कंप्यूटर है? जिसने मेरी एक-एक चीज़ को उचक लिया है। न ख़िलवत छोड़ी न बोल छोड़ा, न इशारा छोड़ा, न दिल में उठने वाली धड़कनों की आवाज़ों को छोड़ा, न अन्दर में पनपने वाले जज़्बात को छोड़ा, क़ौल भी लिखा, अमल भी लिखा, जज़्बा भी लिखा, नियत भी लिखी, इरादा भी लिखा, बैठना भी लिखा, चलना भी लिखा ﴿اين المفر﴾ ओ मुझे कोई भागने की जगह बताओ ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ मुझे कोई छिपने की जगह बताओ। नहीं नहीं दरवाज़े बन्द हैं।

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا.﴾

हो कि हमारे वह जो बड़े होटलों में गाड़ियों का दरवाज़ा खोलते हैं और गेट का दरवाज़ा खोलते हैं उनके सिर पर कलाह होता है, पगड़ी होती है। ये हमें समझा रहे हैं कि यह पगड़ियाँ बाँधना छोटे लोगों का काम है बड़े लोगों का काम नहीं, यह छोटे लोगों का काम है, बड़े लोगों का काम नंगे सिर फिरना है। चार साल के बच्चे ने टाई लगाई, पतलून पहनी, बच्ची ने फ़्रॉक पहना, नंगे सिर गई। किसने यह ज़हर भरा? किसने उसको ज़हर पिलाया? मेरे भाईयो! इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

इत्तिबाए सुन्नत की तर्ग़ीब

तो अल्लाह तआला हमारा ज़हन बनाता है कि आख़िरत असल है। दुनिया गुज़रगाह है, आख़िरत को सामने रखकर चलो, अल्लाह की रज़ा को सामने रखकर चलो। हज़रत मुहम्मद रहबर बनकर आए, इन्सानों के लिए हादी बनकर आए, कामिल बनकर आए, सारी उम्मत के लिए रहमत का पैग़ाम बनकर आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी रोज़े रौशन की तरह खुली किताब की तरह पन्नों पर नहीं धरती के पन्नों पर, काएनात के पन्नों पर, ज़मीन व आसमान ख़लाओं के बीच, हवाओं पर, सूरज पर, चाँद पर, तारों पर, ज़मीन के चप्पे-चप्पे पर, पहाड़ों के एक-एक पत्थर पर अल्लाह ने महबूब की ज़िन्दगी को नक़्श करके साबित कर दिया। कोई हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा ज़िन्दगी को छिपा नहीं सकता, मिटा नहीं सकता। मुसीबत यह है पहले मुहब्बत आती है फिर इताअत आती है। दिल मुहब्बत से ख़ाली माँ-बाप ने मुहब्बत बिठानी थी। उसको

पतलून पहना दी, टाई पहना दी, फ्रॉक पहना दी, नंगे सिर कर दिया। पहला ज़ुल्म तो माँ-बाप ने किया, दूसरा ज़ुल्म स्कूल ने किया, तीसरा ज़ुल्म मास्टर ने किया। पर्दा ज़ुल्म नहीं है। आज की तालीम कोई मक़सद को सामने रखकर तो है नहीं। आज की तालीम तो पैसा कमाना है। स्कूल का मक़सद पैसा कमाना है।

ट्यूशन सैन्टर क्यों बने?

मैं जब आठवीं जमात में था। हमारे उस्ताद थे आसिम साहब मरहूम उर्दू के टीचर। मैं एक बात पूछने गया। फ़रमाने लगे वह बच्चा आया था मुझ से कह रहा था कि उस्ताद जी! आपसे ट्यूशन पढ़नी है तो मैंने कहा बेटा जो हुकूमत मुझे तंख़्वाह देती है उसमें मेरा गुज़ार अच्छी तरह हो जाता है तो अब मैं अपने इल्म को बेचा नहीं करता। तुम्हें जब पढ़ना हुआ करे आ जाया करो मैं पढ़ा दिया करूँगा। मुझे हुकूमत की तंख़्वाह काफ़ी है। वे उस्ताद तो क़ब्रों में चले गए। उनकी हड्डियाँ भी शायद गल-सड़ गई होंगी। अब तो ना कोई उस्ताद है ना कोई शार्गिद है। उस्ताद के सामने भी पैसा शार्गिद के सामने भी पैसा। वह तक़द्दुस ही चला गया, वह मंसब ही चला गया। ट्यूशन सैन्टर भी खुले, प्राइवेट स्कूल भी खुले। माँ-बाप की जेब से पैसा निकालना है।

बदज़बानी से बचो

तो मेरे भाईयो! ख़ुद होश में आने की ज़रूरत है। किसी को गालियाँ न दो, अपना दामन संभालो, अपना घर संभालो, अपनी

नस्ल संभालो इससे पहले कि कोई ज़ाएक़ा भड़क उठे, इससे पहले कोई कोड़ा लपक जाए, इससे पहले कि कहीं आसमान से दरवाज़े खुल जाएं, इससे पहले कि उसके ज़लज़लों के रुख़ हमारी तरफ़ फिर जाएं, बिखरी मौजें हमारी तरफ़ को चल पड़ें, अल्लाह के अज़ाब के कोड़े बरस पड़ें, इससे पहले कि ये सब कुछ हो जाए क्योंकि हम जो कुछ कर रहे हैं उस पर यह होना चाहिए क्यों नहीं हो रहा है? यह मेरे अल्लाह की रहमत है, जो कुछ पाकिस्तान और छः बर्रे आज़मों में हो रहा है इस पर कब के कोड़े बरस जाते, दुआएं दो कमली वाले को जो दुनिया से जाते हुए मेरा आपका मस्अला हल करवा चुका है, दुआ दो मदीने वाले को। अब उसके पैग़ाम पहुँच रहे हैं, अब भी उसकी सदाएं जा रही हैं और अब भी वह ज़ख़्मी है, बेचैन है, बेक़रार है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो कि थका हुआ मुसाफ़िर, बरसों का सताया हुआ, भूख प्यास सहता हुआ, पेट पर पत्थर बाँधता हुआ अपनी मंज़िल पर आ रहा है। दर्द की तेज़ी से हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा रो पड़ीं। हाय मेरे अब्बा का दुख, मेरे अब्बा का दर्द तो आपने फ़रमाया मेरी बेटी! आज तेरे बाप का दर्द ख़त्म होने वाला है बस आज के बाद तेरे बाप पर दुख न आएगा। आप ने मलकुलमौत को इजाज़त दे दी तो जिब्राईल भी ग़मज़दा हो गए। कहा या रसूलुल्लाह! क्या आपने जाने का फ़ैसला कर लिया अगर आपने जाने का फ़ैसला कर लिया तो मेरा भी आज दुनिया में आख़िरी दिन है। आज के बाद मैं भी कभी "वही" लेकर नहीं आऊँगा। ख़त्म हाय! दुनिया बदनसीब महरूम हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसीयत

मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना और ग़ुलामों से नौकरों से नौकरानियों से अच्छा सुलूक करना, उसको सूली पर न लटका देना, टाँग न देना। पन्द्रह सौ रुपए देकर उनकी खाल उतार देते हो, तीन हज़ार रुपए देकर उनकी माँ बेटी नहीं छोड़ते। कभी देखा कि तुम अल्लाह के कितने वफ़ादार हो? अल्लाह से सौ फ़ीसद ग़द्दारी और नौकर से कहते हो मेरा वफ़ादार बन के चल। क्या देते हो। चार हज़ार, पाँच हज़ार, तीन हज़ार इसमें घर चल सकता है। आज के दौर में जब कि मंहगाई का दौर मुसल्लत हो चुका है। यह अज़ाब अल्लाह ने उतारा है, यह अज़ाब अल्लाह ही दूर करेगा। हुकूमतें यह अज़ाब दूर नहीं करेंगी। तौबा करो तो यह अज़ाब टलेगा। आसमान से फ़रिश्ता उतारता है सारे रेट तय करके जाता है। फ़लाँ मुल्क में फ़लाँ चीज़ इस भाव बिकेगी। जब वहाँ क़लम मंहगाई का चले तो हुकूमत क्या करे, डालर के अंबार लग जाएं चीज़ें सस्ती नहीं होंगी। जब तक मेरा अल्लाह फ़ैसला न करे और अल्लाह फ़ैसला जब उतारता है जब लोग तौबा करते हैं। तौबा का रिवाज ख़त्म, तौबा का एहसास ख़त्म, तौबा का ख़्याल ख़त्म, तौबा का ध्यान नहीं। चन्द टके देकर कहते हो कि एक टाँग पर खड़े हो जाओ, सौ फ़ीसद मेरे ग़ुलाम बन जाओ न चूँ करो न चाँ करो न उफ़ करो तो तुम अपने अल्लाह से कितना निभाते हो। अपने ग़रीबों पर ऐसा सुलूक न रखना कि कल अल्लाह के दरबार में पकड़े जाओ। अल्लाह को अपने बन्दों से

प्यार है। देखना कहीं माल के तकब्बुर में, कहीं सरदारी के तकब्बुर में, कहीं मालिक होने के तकब्बुर में आख़िरत बर्बाद न कर बैठना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ऐ आएशा! ﴿احبی المساکین وقربیهم﴾ आएशा ग़रीबों से मुहब्बत कर और उन्हें अपने पास बिठा ﴿فان الله یقربك یوم القیامة﴾ अल्लाह तुझे अपना क़ुर्ब नसीब फ़रमाएगा।

न नमाज़ ही रही न ग़रीबों से सुलूक रहा। आप ने कहा जो खाते हो उन्हें खिलाओ जो पहनते हो उन्हें पहनाओ। यह दौलत ढलती छांव है। किसी के पास नहीं रही। बदलता निज़ाम है। कभी ग़रीब को हक़ीर न समझना। नहीं बनती फ़ारिग़ कर दो। इज़्ज़त को तार-तार करने की कोई इजाज़त नहीं है। सब्र करो नरमी करो।

जहन्नम से जन्नत का सफ़र

एक आदमी क़यामत के दिन लाया जाएगा कोई नेकी नहीं है। उसके लिए जहन्नुम का फ़ैसला है। अल्लाह तआला कहेगा तेरे पास कोई है भी सही दिखाने को। कहेगा या अल्लाह और तो कुछ है नहीं जिस पर मेरा हक़ बनता था उस को कभी तंग नहीं किया करता था, बेइज़्ज़त नहीं करता था, ज़लील नहीं करता था। मिल गया तो ठीक है तो अल्लाह कहेगा अच्छा चल तू मेरे बन्दों पर नरमी करता रहा तो फिर मेरे लिए भी मुनासिब नहीं कि तेरे ऊपर सख़्ती करूँ। चल इसके तुफ़ैल मैंने तुझे जन्नत का वारिस बना दिया। प्याली टूट जाए नौकरानी से, झाड़ू में देर हो जाए अरे

सफ़ाई कराते कराते दिल की दुनिया और दाग़दार कर दी। बर्तन क्या टूटा तूने ईमान तोड़कर रख दिया। प्याले का बदल तो आ जाएगा लेकिन ज़बान से निकले हुए गंदे बोल उन्हें कहाँ से वापस करोगे? अरे बदबख़्त कभी बोल भी वापस हुए हैं। सीना तो ज़ख़्मी कर दिया, दिल तो छलनी कर दिया, दाग़ कर दिया, हड्डियों से धुँवा उठने लगा फिर कहता है अच्छा जी मैं अपने बोल वापस लेता हूँ। तू पहले ही क्यों न होश में आया? तुझे पहले ही क्यों न ख़्याल आया? बोलने से पहले क्यों न तोला? गोली तो निकल गई। गोली का ज़ख़्म तो भर जाता है गंदी गाली के बोल का ज़ख़्म कभी नहीं भरता। भाईयो! आओ तौबा करें अपने अल्लाह को मनाएं। अरे उस दोस्त का ख़्याल करो जो तुम्हारे लिए फ़िदा हो गया, क़ुर्बान हो गया।

शाने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

निकल जाओ अल्लाह की राहों में, तबलीग़ में, आज घरों में बैठने का वक़्त है पता नहीं कब निज़ाम बदल जाए? महबूब मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एहसानात को सामने रखो। आज किसी नबी की क़ब्र महफ़ूज़ नहीं। फ़लस्तीन में जो क़ब्रें हैं वे यक़ीनी नहीं, सिर्फ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा है कि आप दुनिया से जाने के बाद भी अपनी पूरी निशानियों के साथ मौजूद हैं, अपनी मस्जिद के साथ मौजूद हैं। सुबह होती है सत्तर हज़ार फ़रिश्ते क़ब्र पर आते हैं शाम तक दरूद पढ़ते रहते हैं पहला जाता है फिर शाम को सत्तर हज़ार

फ़रिश्ते आते हैं सुबह तक दरूद व सलाम पढ़ते रहते हैं। हम भी पढ़ते हैं फ़रिश्ते भी दरूद पढ़ते हैं। एक ज़माना आएगा कि सूरज मग़रिब से निकलेगा, मुसलमान मर जाएंगे, सिर्फ़ काफ़िर होंगे। इन्सानों में दरूद पढ़ने वाला कोई न बचेगा फिर फ़रिश्ते दरूद पढ़ेंगे और अल्लाह पढ़ेगा और मस्जिदे नबवी ख़त्म, रौज़-ए-अक़दस ख़त्म, बैतुल्लाह ख़त्म, मक्का ख़त्म, मदीना ख़त्म, मैदान होगा पर फ़रिश्ते दरूद पढ़ेंगे। फिर अल्लाह एक डंका बजाएगा क़यामत का। जिब्राईल भी मर जाएंगे मीकाईल भी इसराफ़ील भी, इज़राईल भी, अर्श के फ़रिश्ते भी मर जाएंगे सिर्फ़ अल्लाह, अल्लाह बाक़ी रह जाएगा। फिर क्या होगा कि अल्लाह ख़ुद अकेला अपने नबी पर दरूद पढ़ता रहेगा ﴿يصلون﴾ का मतलब होता है तमाम ﴿ان الله وملائكته يصلون على النبى﴾ अल्लाह और फ़रिश्ते मुसलसल उसके नबी पर दरूद पढ़ते रहते हैं।

कुत्ते की वफ़ादारी से सबक़ सीखो

तो मेरे भाईयो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मना लो उसकी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लो। उसके एहसानात का इतना बदला तो दो जितना कुत्ता अपने मालिक को देता है। देखते नहीं हो कि घर के बच्चे से मार खाता है, रोटी खाने के लिए बुलाओ भागकर आता है। हमारे वालिद को कुत्तों का शौक़ था जैसे कि ज़मींदारों को होता है। उनका भी एक कुत्ता हुआ करता था जैकी उसका नाम था। मेरी उम्र होगी छः सात साल तो वह कभी रोटी खा रहा होता

था। कभी दूध पी रहा होता था तो मेरे वालिद कहते जैकी दूसरी आवाज़ उनको देने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। वह रोटी छोड़कर, दूध छोड़कर भागा हुआ आता था और मेरे बाप के पैर पर चिमट पड़ता था। कुत्ता नापाक न उसका न उसका ख़ालिक़ न मालिक सिर्फ़ रोटी खिलाई, दूध पिलाया। तो बुलाने वाले अल्लाह जिसको बुलाया जा रहा है वह इन्सान। बुलाने वाला मालिक जिसको बुलाया जा रहा है वह ममलूक, बुलाने वाला ख़ालिक़ जिसको बुलाया जा रहा है वह मख़्लूक़, वह अल्लाह यह बन्दा। वह दिन में पाँच बार कहता है आओ न मेरे पास नमाज़ पढ़ने। ﴿حی علی الصلوٰۃ﴾ न जवान उठता है न बूढ़ा उठता है, न मर्द उठता है न औरत उठती है तो क्या हम जैकी से भी नीचे दर्जे पर चले गए है? इतनी तो वफ़ा कर दें। अल्लाह और उसके रसूल के साथ वफ़ा करने वाले चले गए।

तल्हा जन्नती कैसे बने?

ओहद की लड़ाई में हार हो गई। उम्मे अम्मारा सामने आ गयीं। इधर बेटा हबीब बिन ज़ैद उधर बेटा अब्दुल्लाह बिन ज़ैद दो बेटों के साथ माँ सीना सिपर हो गई। कहा ऐ मेरे बेटों आज मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ख़्म लगा। मरते दम तक तुम्हें माफ़ नहीं करूंगी और अब्दुल्लाह बिन शहसवार था जिसने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वार किया है और कन्धे पर तलवार मारी जिसका ज़ख़्म एक महीने तक रहा। उस पर हमला करने वाली सिर्फ़ उम्मे अम्मारा थीं जिन्होंने आगे

बढ़कर उसके वार को रोका। वह शहज़ोर था यह बेज़ोर थीं, वह सवार ये पैदल, वह लोहे की ज़िरह में यह वैसे ही तो उन्होंने दो बार उस पर तलवार मारी लेकिन दोनों बार तलवार बेअसर गई लेकिन यह औरत तो जब वह बेबस हो गया तो जब उसकी तलवार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कन्धे पर पड़ी है और उसे भी तलवार मारी। जब तक गिरी नहीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर किसी को चढ़ने नहीं दिया। अबू तल्हा अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐसे छा गए कि सारी कमर तीरों से भर गई लेकिन अल्लाह के नबी पर तीर नहीं आने दिया उनको खींचा गया तो तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु सामने आ गए। अपना हाथ आगे कर दिया। सीधे हाथ पर तीर सहते रहे। सारा हाथ सुन्न हो गया। सारा हाथ बेकार हो गया और काफ़िरों ने नरग़े में ले लिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ख़्म की वजह से बेहोश हो गए थे। कुछ बेहोशी थी कुछ होश था। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अकेले कुफ़्फ़ार के नरग़े को तोड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उठाया और दौड़ लगाई तो आपने कहा, "तल्हा तेरे ऊपर जन्नत वाजिब हो गई।" फिर काफ़िर पीछे भागे फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरे में ले लिया। हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बिठाया और फिर तलवार लेकर बिफरे हुए शेर की तरह हमलावर हुए। फिर क़ुरैश को छानकर रख दिया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उठाया फिर दौड़ लगाई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तल्हा पर जन्नत वाजिब हो गई।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौजिज़ा

फिर इसी तरह काफ़िरों ने घेर लिया फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिठाकर उन पर हमला किया। इस तरह तीन बार हमला किया। दौड़ते हुए ओहद पहाड़ पर चढ़ें जबकि खुद का सारा हाथ लहूलुहान हो चुका था, उठाया आख़िरकार एक ग़ार था उसके अन्दर जाकर लिटा दिया, दीवार से टेक लगवाई। जैसे ही आपकी कमर ओहद पहाड़ से लगी पता चला कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं उतना हिस्सा जो कमर मुबारक से लगा था वह स्पंच की तरह नरम तकिये में बदल गया। इससे पहले क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु थे जो तीर आए आगे हो जाएं, जो तीर आए आगे हो जाएं। एक तीर आया और सीधा क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख में लगा और आँख क़ीमा-क़ीमा होकर बाहर आ गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में आँसू आ गए और फ़रमाया, "ऐ अल्लाह! क़तादा की आँख तेरे नबी की हिफ़ाज़त में ज़ाए हो गई।" आपने तीर को निकाला, सारी आँख बहार आ गई। आपने (उस आँख के) सारे के मल्बे को जमा किया और उठाकर आँख में रखा और ऊपर से अपना हाथ रखा और फ़रमाया ऐ अल्लाह क़तादा की आँख तेरे नबी की हिफ़ाज़त में ज़ाए हुई है ﴿اللهم اجعل احسن عينيه﴾ ऐ अल्लाह! इसकी आँख को दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत कर दे।" यह कहकर हाथ फेरा। जब हाथ हटाया तो यह आँख दूसरी आँख से ज़्यादा ख़ूबसूरत हो चुकी थी। जगमग कर रही थी। हाय! हाय! उन्होंने सीने पर ज़ख़्म सहे हैं।

अल्लाह की मदद व नुसरत का हुसूल कैसे?

पर हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने पर ज़ख़्म लगाए हैं। उन्होंने आने वाले तीरों को आँखों में लिया। तुमने उसी के तीर उसी सीने में चुका दिए। उन्होंने तलवारों के, नेज़ों के ज़ख़्म अपने जिस्मों पर सहे और हमने अपनी तलवार व तोपों का रुख़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सीने की तरफ़ कर दिया फिर भी हम कहते हैं हम ज़लील क्यों हैं? हमारी मदद क्यों नहीं हो रही है? अरे हम क्या कर रहे हैं? मैं क्या कर रहा हूँ? मेरी ख़िलवत क्या है, मेरी जलवत क्या है। तो मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लेना है तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम बनो।

﴿قل ان كنتم تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله.﴾

उसके पीछे चलो तो यह सीखना पड़ेगा। यह घर बैठे मिलने वाला सौदा नहीं है। इसलिए कह रहा हूँ तौबा करो।

मौलाना तारिक़ की तवाज़ोअ

तबलीग़ में वक़्त लगाओ, यह घर बैठे मिलने की सौग़ात नहीं है, यह वह सरमाया नहीं है जो बाप के घर मिल जाएगा। तो भाईयो! निकलो। नफ़े की बात बता रहा हूँ। मैं अपनी ज़ात का दाअ़ई नहीं हूँ। मैं कोई पीर नहीं हूँ जो कहूँ के सुनकर मेरे मुरीद हो जाओ, मुझसे बैअ़त हो जाओ, अल्लाह से मिला दूँगा। मेरा कोई दावा नहीं है मैं तो खुद अनपढ़, गँवार मैं तो खुद इस तलाश

में हूँ कि मुझे मेरा अल्लाह मिल जाए। जिस राह पर चलकर अल्लाह मिलता है मैं वह रास्ता आपको बता रहा हूँ तो भाईयों इस पर चलो। मुझे डाकिया समझो, मुझे मैयार न बनाओ, मैं इन्सान हूँ इन्सान का मतलब है ख़ता का पुतला, मैं अपनी श्ख़सियत का दाअ़ई नहीं हूँ कि मुझ से बैअ़त हो जाओ अल्लाह से मिला दूँगा। अल्लाह की राह में निकलो अल्लाह तुम्हें खुद मिलेगा। वह इन्तिज़ार में है। वह खुद कहता है मैं तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है।

मेरे भाईयो! आज का मुसलमान गुमराह हो चुका है। सैंकड़ो माबूद बना कर चल रहा है। हम तो रहम के क़ाबिल हैं। इसके लिए दुआ करो, इसके लिए रोओ। बुरे को बुरा कहना आसान है। बुरे के पीछे फिर तौबा कराना नबियों का काम है तो भाई अच्छे की क़दर बुरे से मुहब्बत करो। यह पता नहीं कब तौबा करके अल्लाह का क़रीबी बन जाए। अपनों से तौबा करवाओ, ग़ैरों को इस्लाम की दावत दो। यहाँ तबलीग़ का काम ज़िन्दा होगा। तुम यहाँ बहार खुद देख लोगे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

मिसाली शादी

والصلوة والسلام علی رسوله الکریم وعلیٰ آله واصحابه اجمعین اما بعد.

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो!

अल्लाह तआला ने इन्सान को दुनिया में आज़ाद पैदा किया है लेकिन उसकी यह मुश्किल है कि यह जानता नहीं अपनी इस आज़ादी को कैसे इस्तेमाल करे कि ख़ुद भी चैन से ज़िन्दगी गुज़ार सके और दूसरे भी आराम और सकून से रह सकें। इन्सान के अलावा जितनी मख़्लूक़ात हैं वह अपना इल्म अपने साथ लेकर पैदा होती हैं।

﴿ ربنا الذی اعطیٰ کل شیء خلقه ثم هدیٰ... ﴾

हर मख़्लूक़ अपना इल्म अपने साथ लेकर पैदा होती है। उन्हें अपनी ज़रूरतों को पूरा करना और हर मौक़े पर उनको जो ज़रूरतें पेश आतीं हैं उसको पूरा करने का इल्म उनके अन्दर से निकलता है, उबलता है।

बच्चा मुर्ग़ी के अंडों में से निकलता है इक्कीस रोज़ के बाद तो अंडों से बाहर आता है, दाना चुगने लगता है। हमारा बच्चा इक्कीस महीने का हो जाए तो उसको खिलाना पड़ता है और यह चूज़ा जो आज निकला पाँच मिनट हुए उसके बाहर आए हुए न उसने माँ से पूछा कि मुझे खाने का तरीक़ा बताओ न यह पूछा

कि मैं ने क्या खाना है? मुज़िर क्या है? मुफ़ीद क्या है? मेरी गिज़ा क्या है? थोड़ी ताक़त आई अपने आप उसने दाना चुगना शुरू कर दिया।

भैंस का बच्चा पैदा होता है तो ख़ुद उठकर थोड़ी देर बाद माँ के थनों की तरफ़ चला जाता है। कोई उसको भेजता नहीं ख़ुद चला जाता है।

इन्सान के बच्चे को बड़ी मुश्किल से दूध पिलाया जाता है लेकिन भैंस जो अपनी ना समझी की वजह से मशहूर है यहाँ तक कि उसके बारे में कहावत मशहूर है "भैंस के आगे बीन बजाना" लेकिन उसका बच्चा फ़ौरन थनों की तरफ़ जाता है। मैं आपको मिसाले दे रहा हूँ बात साफ़ करने के लिए। हर मख़्लूक़ अपना इल्म लेकर पैदा होती है। लेकिन जब इन्सान पैदा होता है तो उसे पता नहीं होता कि मुझे करना क्या है? उसको यह इल्म बाहर से मिलता है। इसका नाम इल्म-ए-वही है, इसका नाम इल्म-ए-क़ुरआन है। यह वह ज़िन्दगी का तरीक़ा है जिस पर चलकर दुनिया और आख़िरत में कामयाब हो जाए। उसका नाम अल्लाह तआला ने इस्लाम रखा है।

मुर्ग़ी का बच्चा अपने घर से बाहर निकला मगर बिल्ली पर नज़र पड़ते ही भागकर वापस आ गया। न उसको किसी ने बताया कि बिल्ली तेरी दुश्मन है। न अब्बा ने न अम्मा ने। पहली नज़र भाग कर वापस यह इल्म कहाँ से सीखा उसने?

मकड़ी अल्लाह की क़ुदरत का नमूना

मकड़ी जाला तानती है। वह स्वेटर बुनती है। वह पूरी

टैक्सटाइल मिल है। वह पूरी टैक्साटाइल इन्जीनियर है। टैक्सटाइल वालों को धागा ख़रीदना पड़ता है। हमसे कपास ख़रीदते हैं। कपास के काश्तकार हैं। हम क्या उसे काश्त करते हैं? आगे हम से टैक्सटाइल मिल वाले लेते हैं। फिर आगे बहुत माहिर लगते हैं वे इसका धागा बनाते हैं।

मकड़ी अपने अन्दर से ही कपास निकालती है। अन्दर से ही वह माद्दा निकालती है। अन्दर से ही धागा है, अन्धेरे में बनती है जबकि मील में लाईट्स मशीन और इन्सान मौजूद होते हैं।

फिर भी हर मशीन पर धागे टूट रहे हैं और ज़ाए हो रहे हैं लेकिन बिल्कुल रात होती है। हमारे टायलेट में घर के किसी कोने में मकड़ी जाला बुनती है, लाईट बन्द है, रात का घुप अंधेरा है लेकिन वह इस अंधेरे में ताना बाना बुनती है। सारा जाला बुनती है स्वेटर की तरह और वह इसमें इतनी मज़बूती से काम करती है कि मकड़ी के जाल में जो वह एक तार जो चलता है। इस तार की मोटाई के बराबर अगर लोहे की सलाख़ बनाई जाए तो इस लोहे की सलाख़ से जो यह मकड़ी का बनाया हुआ धागा है वह एक हज़ार गुना मज़बूत होता है दस गुना नहीं सौ गुना नहीं एक हज़ार गुना मज़बूत है।

﴿ربنا الذی اعطی کل شیء خلقه ثم هدی﴾

वह रब है जो हर चीज़ को पैदा करता है उसे ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाता है।

इन्सान को नहीं सिखाता बल्कि उसको सीखना पड़ता है। इन्सान कभी ख़ुद कफ़ील नहीं हो सकता, इसके अलावा सारी

मख़्लूक़ खुद कफ़ील है। जिसके पास पैसा आ जाए हम कहते हैं यह खुद कफ़ील है तो क्या उसने घर खुद बनाया है, यह कुर्ता मैंने खुद सिया है? कपड़ा मैंने खुद बनाया है बल्कि कपड़ा मैंने किसी से ख़रीदा है और उसे कहीं सिलवाया है। इसे कपड़े वालों ने खुद कहीं से ख़रीदा है। इन्सान कभी खुद कफ़ील नहीं हो सकता बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा यह कि वह खुशहाल हो सकता है। पैसे आ गए हैं हाँ घर बनाना है। मिस्तरी को बुलाओ, कपड़े सिलवाने हैं दर्ज़ी को बुलवाओ, खाना पकाना है बावर्ची को बुलवाओ। खुद तो सारे काम नहीं करता। जो किसी का मोहताज नहीं होता वह होता खुद कफ़ील। दुनिया में सबसे ज़्यादा मोहताज तो इन्सान है यह तो कभी खुद कफ़ील नहीं हो सकता।

खुद कफ़ील जो हैं बिल्ली व कुत्ते हैं, गधे हैं, आग है मच्छर है, मक्खी है, परवाना है, पतंगा है। ये सब खुद कफ़ील हैं। उनको कोई बल्ब नहीं लगाना, उसके अन्दर जेनेरेटर लगा हुआ है। दिन को बुझ जाता है रात को जलता है तो हम तो बत्तियाँ दिन में खुद बुझाते हैं, रात को खुद जलाते हैं। उसकी दिन में अल्लाह बुझाता है रात को जला देता है।

दीन पर मुकम्मिल अमल करो

तो इन्सान अपनी ज़रूरतों को पूरा कर ले। उसके लिए एक तरीक़ा अक़्ल का है जो समझ में आए वैसे करो और एक तरीक़ा अल्लाह का बताया हुआ है। उस तरीक़े का नाम इस्लाम है।

﴿ان دين عند الله الاسلام.﴾

अल्लाह के नज़दीक एक दीन है और उसका नाम इस्लाम है और वह कामिल व मुकम्मिल है।

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتى
ورضيت لكم الاسلام دينا.

हमने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया, कामिल कर दिया और हदीस पाक में आ गया,

﴿اللهم بكتاب هم الكتب ويدين هم الاديان وبشريعتم الشعائر.﴾

हमने उनकी किताब पर किताबें ख़त्म कर दीं, दीन पर दीन ख़त्म कर दिए और उनकी शरियत ने सारी शरियतों को पूरा कर दिया।

तो कामिल और मुकम्मल तरीक़ा जो हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा अल्लाह ने हमें दिया वह इस्लाम है जो क़ुरआन की शक्ल में है और सीरते नबवी की शक्ल में आज भी हमारे पास महफ़ूज़ है तो इसमें अक़ल से हटाकर "वही" के ताबे होकर ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाया है जिसमें एक नस्ल का मिलना, बढ़ना और जवान होने पर शादी का करना सब शामिल है।

रोटी खाना, पानी पीना, मकान बनाना, सवारियाँ ये सब भी इन्सानी ज़रूरत है। मेरे भाईयो अल्लाह तआला ने क़ुरआन में हुक्म दिया है।

फ़हश हरकात से बचो

﴿تنكحوا﴾ निकाह करो और उसके साथ यह भी हुक्म है

﴿لا تقربوا الزنا. (سورة بنى اسرائيل)﴾

ज़िना के क़रीब न जाना ﴿انه كان فاحشة وساء سبيلا.﴾ कि यह बहुत बेहयाई का काम है, बहुत बुरा रास्ता है, बहुत बदबख़्ती का काम है। जिस मुल्क में, जिस शहर में, गाँव में मौसिक़ी फैल जाएग वहाँ ज़िना खुद-ब-खुद फैल जाता है। मौसिक़ी और ज़िना में आपस में ऐसा जोड़ है जो सूरज और रौशनी में जोड़ है। सूरज निकलता है रौशनी आ जाती है। जिस नस्ल में मौसिक़ी फैल जाए उस नस्ल में ज़िना भी आ जाता है तो अल्लाह तआला ने कहा ﴿ولا تقربوا الفواحش﴾ फ़वाहिश के क़रीब न जाओ और कहा ﴿لا تقربوا الزنا﴾ ज़िना के क़रीब न जाओ ﴿انه كان فاحشة﴾ बहुत बेहया चीज़ है।

यहाँ कहा फ़वाहिश के क़रीब न जाओ। फ़वाहिश से क्या मुराद है? हर वह अमल जो ज़िना की तरफ़ ले जाए, बेपर्दगी ज़िना तक पहुँचाती है, मर्द व औरत का आज़ादी के साथ मिलना जुलना यह ज़िना की तरफ़ ले जाता है।

गाना बजाना ज़िना की तरफ़ ले जाता है। हराम रिज़्क़ से इन्सान के अन्दर गंदे जज़्बे पैदा होते हैं, बेहयाई के जज़्बे पैदा होते हैं।

हर वह अमल जो ज़िना की तरफ़ ले जाने वाला हो फ़वाहिश। बेदपर्दगी, नज़रों की आवारगी, गाना-बजाना, नाच-गाने की महफ़िले, आज की टीवी, वी०सी०आर०, डिश, केबिल जहाँ ये चीज़े चलेंगी वहाँ अगला गुनाह ज़िना भी होगा तो अल्लाह तआला ने इससे रोका है और इसकी सज़ा रखी है संगसार करना। पत्थर मार मारकर उसे हलाक कर दिया जाए। इस्लाम दीने रहमत है लेकिन जो शादी-शुदा ज़िना करे पत्थर मार मारकर हलाक कर

दो। ग़ैर शादी-शुदा करे तो सौ कोड़े मारो। अल्लाह तआला ने इससे बचने के लिए निकाह का हुक्म दिया है कि निकाह करो, ज़िना न करो। ज़िना से नस्ल ख़राब हो जाती है। ख़ानदानी निज़ाम टूट कर रह जाता है, बिखर कर रह जाता है।

यूरोप की तहज़ीब तबाही के रास्ते पर

जैसे यूरोप में ख़ानदानी निज़ाम बिखर गया। सन् 1792 ई० में इंगलिस्तान में एक औरत थी उसका नाम था मेरी वास स्टोन क्राफ्ट उसने एक किताब लिखी औरतों की आज़ादी की कि औरतों को आज़ादी दी जाए, औरतें क्यों कमरे में पाबन्द हों? ये बाहर आएं, मर्दों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करें। उनको पूरी आज़ादी दो। इससे पहले यूरोप में भी कोई तसव्वुर नहीं था औरत के बेपर्दा होकर बाहर फिरने का। वहाँ का समाज भी हया पर क़ायम थी लेकिन पीछे शैतान ने खड़काया इधर अग्रेंज़ का राज था कि उसकी हुकूमत में सूरज नहीं डूबता था तो शैतान की ताक़त पीछे से हुकूमत की ताक़त, पीछे नफ़्स की ताक़त। अब मर्दों की भी ज़्यादा शहवत पूरी होनी लगी, औरतों की पूरी होने लगी तो बढ़ते-बढ़ते वह चिंगारी ऐसी है कि अब उनका सारा निज़ाम टूट गया।

अब सन् 2000 ई० में एक सर्वे किया गया उसी इंगलैंड का जहाँ सन् 1792 ई० में तहरीक चली थी कि औरतों को आज़ादी दी जाए तो औरतों से पूछा गया कि तुम वापस घर जाना चाहती हो या काम करना चाहती हो या इसी तरह आज़ाद रहना चाहती

हो तो अठ्ठानवें फ़ीसद औरतों ने कहा हम घर जाना चाहती हैं लेकिन हमें ख़ाविन्द नहीं मिलते, माँ-बाप नहीं मिलते। इस आज़ादी की क़ीमत औरतों को यह देनी पड़ी कि उसका माँ का रूप, बहन का रूप, बीवी का रूप ख़त्म हो गया। वह सिर्फ़ गर्ल-फ्रेंड है और इधर मर्दों के साथ क्या हुआ कि उनका भी बेटे का रूप ख़त्म, बाप की शक्ल ख़त्म, भाई की शक्ल ख़त्म, चाचा की शक्ल ख़त्म, दादा की शक्ल ख़त्म, ताया की शक्ल ख़त्म, ख़ाविन्द की शक्ल ख़त्म अब वह ब्वाय-फ्रेंड है। यह गर्ल-फ्रेंड है। जब तक इनका दिल लगा रहेगा एक दूसरे की तसकीन का सबब बनते रहेंगे अगर कभी एक का भी दिल भर जाएगा तो उसे ऐसे उठाकर फेंक देंगे जैसे टिशु पेपर को इस्तेमाल के बाद बाहर फेंक देते हैं। यह वहाँ की दर्दनाक ज़िन्दगी है।

यूरोपियन लड़की की पुकार काश ऐसा मर्द मुझे मिलता

एक जमात ऐडमिरा गई। एक लड़की ने मस्जिद में मग़रिब की नमाज़ पढ़ने वाले से पूछा कि इंगलिश आती है? उसने कहा आती है। लड़की ने पूछा तुमने यह क्या किया है? उस आदमी ने कहा हमने अपनी इबादत की है। उस लड़की ने कहा आज तो इतवार नहीं है। नमाज़ पढ़ने वाले ने कहा हम दिन में पाँच बार अल्लाह की इबादत करते हैं। वह कहने लगी कि यह तो बहुत ज़्यादा है। फिर उसने उसको दीन की बात समझाई। कहने लगी अच्छा ठीक है फिर हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उस

नौजवान ने कहा कि मैं अपना हाथ आपके हाथ को नहीं लगा सकता। उसने कहा क्यों? तो नौजवान ने कहा यह हाथ सिर्फ़ मेरी बीवी को छू सकता है। यह उसकी अमानत है। उसके सिवा किसी को नहीं छू सकता तो उस लड़की की चीख़ निकल गई और रोती हुई ज़मीन पर गिर गई और कहने लगी वह कितनी ख़ुशक़िस्मत औरत है जिसका तू ख़ाविन्द है। काश! यूरोप के मर्द भी ऐसे होते। तो इस आज़ादी की क़ीमत यह है और मुझे यह डर है कि हमारी जो नस्ल कहीं यह भी न बिगड़ जाए क्योंकि केबिल के आगे बैठते हैं, डिश के आगे बैठते हैं तो अगर हमने अपनी नस्ल को इस माहौल से न निकाला तो कहीं वह आवारगियाँ यहाँ खुलकर यहाँ भी बाहर न आ जाएं और काफ़िर को तो अल्लाह तआला ढील देता है मुसलमान को अल्लाह ज़्यादा ढील भी नहीं देता। यह अल्लाह का क़ानून है:

﴿ولنذيقنهم من العذاب الادنى دون العذاب الاكبر لعلهم يرجعون.﴾

हम तुम्हें अज़ाब देंगे नक़द दुनिया में छोटा बड़ा नहीं ताकि तुम तौबा करो।

﴿ذرهم ياكلون ويتمتعون.﴾

उनको छोड़ दो, नाचने कूदने दो कब तक?

﴿حتى يلقو يومهم الذى يوعدون.﴾

उस दिन तक जिस दिन तक उनका वायदा है। मर कर मेरे पास आएंगे। अगला पिछला बराबर हो जाएगा।

मज़लूम औरत

तो मेरे भाईयो और नौजवानो! बातिल की चाल को समझो। वह हमें आवारा करना चाहते हैं, हमारी बच्चियों को बाहर लाना

चाहते हैं, नौजवानों के हाथ में गिटार पकड़ाना चाहते हैं कि उन में भी वह कल्चर तरक़्क़ी पा जाए कि जब ज़्यादा बुराई हो जाएगी तो फिर यह अल्लाह के ग़ज़ब और अज़ाब का शिकार हो जाएंगे तो अल्लाह तआला इसके मुक़ाबले में हमें पाकीज़ा तरीक़ा अता फ़रमाया है निकाह का ﴿فانكحوا﴾ निकाह करो और अल्लाह तआला ने हमें पाकीज़ा रहन-सहन अता फ़रमाया है। वहाँ की औरत मज़लूम है कि उसको ग्यारह साल की उम्र में अपना साथी तलाश करने की फ़िक्र होती है और चालीस बरस उसके गुज़र जाते हैं और उसको साथी कोई नहीं मिलता और यहाँ बच्ची माँ की गोद में परवरिश पाती है, बाप की तर्बियत के तले होती है, भाईयों की हिफ़ाज़त में होती है फिर उसको मजमे में इज़्ज़त के तरीक़े के साथ किसी नौजवान के साथ बाँधा जाता है और उसके साथ मेहर रखा जाता है। मेहर किस लिए है? यह कोई क़ीमत है कहीं-कहीं कोई किसी की बेटी की क़ीमत लगा नहीं सकता। सात ज़मीन व आसमान सोना बन जाएं तो भी यह क़ीमत नहीं बनती। ख़ून के रिश्तों की कोई क़ीमत नहीं होती तो फिर जो मेहर रखा जाता है यह किस लिए है? इसके बग़ैर निकाह नहीं हो सकता।

निकाह ज़िना बन जाता है। यह अस्ल में एक अलामती चीज़ है न कि किसी की क़ीमत है।

यह एक अलामत है कि यह लड़की बाज़ार नहीं जाएगी, नौकरी नहीं करेगी, काम नहीं करेगी। तेरे बच्चे की तर्बियत करेगी अगर अल्लाह ने औलाद दी है तो तेरे ज़िम्मे है और सारी ज़िन्दगी इसको कमाकर लाकर खिलाना फिर अल्लाह ने इस पर ऐसा अज्र

रख दिया सुब्हानल्लाह!

जो सुबह से लेकर शाम तक हलाल कमाने में थकता है और उस थकन के साथ शाम को घर लौटकर आता है तो उसके उस दिन के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

निकाह करने पर अल्लाह का ईनाम

एक अल्लाह के नेक बन्दे थे। उन्होंने शादी नहीं की। उनके बहुत मुरीद थे। जब वह फ़ौत हुए तो ख़्वाब में किसी को नज़र आए। उसने पूछा क्या मामला हुआ? कहने लगे मेरी मग़फ़िरत हो गई लेकिन एक शादी-शुदा मुसलमान जो अपनी बीवी बच्चों को कमाकर खिलाता है और उस पर जो परेशानियाँ देखता है उन परेशानियों पर जो जन्नत उसके लिए बनाई है उस जन्नत की मुझे हवा भी नहीं हुई।

इस वाक़िए की ताइद होती है हदीसे पाक से। यह वाक़िया कच्चा पक्का भी हो सकता है। मैं हदीस में आपको सुनाता हूँ आपको ﴿ان فى الجنة الدرجة﴾ जन्नत में एक बहुत आलीशान दर्जा है ﴿لا ينالها الا ثلث﴾ इसमें सिर्फ़ तीन क़िस्म के लोग जा सकते हैं। जन्नतुल फ़िरदौस में एक आली मक़ाम है जो सिर्फ़ तीन आदमियों के लिए है:

एक आदिल हुक्मुरान, आदिल बादशाह, आदिल क़ाज़ी,

दूसरा सिलारहमी करने वाला जो अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे, अपने माँ-बाप की ख़िदमत करे। उनकी दुआएं ले और जो ख़ून के रिश्ते हैं उनसे अच्छा सुलूक करे अगर दूसरा न

करे यह फिर भी करे तो यह भी उस मक़ाम पर पहुँचेगा।

और अल्लाह ने एक आदमी को औलाद दी फिर रिज़्क़ थोड़ा दिया। अब वह हराम नहीं लेता, झूठ नहीं बोलता, डंडी नहीं मारता बल्कि उसी हलाल में रूखी सूखी खुद भी खाता है और अपनी औलाद को भी खिलाता है। सब्र करता है तो जो इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ार गया वह भी इस दर्जे में पहुँचेगा।

निकाह की अहमियत

तो अल्लाह तआला ने हमें पाकीज़ा शरियत अता फ़रमाई। हमें निकाह का हुक्म दिया है। खुद हमारे नबी ने निकाह किए अपनी बेटियों की शादियाँ कीं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निकाह किए, उनके वलीमों में शरीक हुए। अपने वलीमे में उनको बुलाया तो हमें एक ज़िन्दगी का नमूना मिला।

हज़रत ईसा ने तो शादी ही नहीं तो उनकी उम्मत के सामने नबी की तरफ़ से कोई नमूना ही नहीं था कि क्या करना है? शादी भी नहीं की औलाद भी नहीं थी लेकिन अल्लाह तआला ने तो हमारे नबी की शादियाँ भी करवाई, औलाद भी हुई, आपकी शादियों में भी अजीब बात नज़र आती है। सारी जवानी तो गुज़ार दी आपने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ पन्द्रह बरस जवानी तो गुज़ार दी और उनके दो निकाह पहले हो चुके थे और हर निकाह से औलाद थी। एक से बेटी थी और एक से बेटा था।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्ने मुबारक

अबि हाला रज़ियल्लाहु अन्हु मशहूर सहाबी हैं वह साक़ुर्रसूल कहलाते हैं। यह अबू हाला रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले ख़ाविन्द से उनके बेटे हैं। ये अल्लाह के नबी का हुलिया बयान करने में बड़े मशहूर हैं तो चालीस बरस की औरत हैं और आप पच्चीस साल के हैं। ऐसे हसीन हैं हमारे नबी कि बस,

﴿واحسن منك لم ترقط عيني﴾

उन जैसा हसीन कोई है ही नहीं। आपके बारे में आता है ﴿طاهر الوذع﴾ साफ़ सुथरे, चमकता चेहरा ﴿واسع الجبين﴾ पेशानी बड़ी कुशादा ﴿رجل الشعر﴾ बाल घुंघराले, सिर आपका बड़ा, आबरू आपके बड़े ख़ूबसूरत, पलकें बड़ी ﴿في عيونه دعج﴾ आँखे बड़ी मोटी ओर उनकी पलकें ऊपर साए की तरह दराज़ ﴿في صوته سحر﴾ आपकी आवाज़ में एक जादू था, एक सहर था, एक अजीब मुहब्बत थी, कशिश थी, कभी जलाल भी था, कभी जमाल था, मुख़्तलिफ़ चीज़ें मिलती हैं, जो मिलता था दीवाना हो जाता था। गर्दन आपकी लम्बी ﴿في لحيته كثاثة﴾ दाढ़ी मुबारक आपकी घनी थी, न लम्बे, न छोटे लेकिन मौजिज़ा था कि लम्बे से लम्बे क़द वाला आदमी भी हमारे नबी के पास खड़ा हो जाता तो हमारे नबी का क़द लम्बा नज़र आता, दूसरा आदमी छोटा नज़र आता। ऐसा कभी नहीं हुआ कि हमारे नबी किसी के पास खड़े होकर छोटे नज़र आ रहे हों।

सबसे ऊँची शान वाला नबी

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा है। उनका क़द इतना लम्बा था कि घोड़े पर बैठते तो पाँव ज़मीन पर लगते थे। दस फ़िट से कम उनका क़द नहीं था जब वह हमारे नबी के पास खड़े होते थे तो हमारे नबी ऊँचे नज़र आते और अब्बास छोटे नज़र आते। जिसको अल्लाह ने ऐसा हुस्न दिया हो वह चालीस साल की औरत से शादी क्यों करे? आप ऐसे मोटे नहीं थे कि भरे हुए हों।

आप ऐस पतले नहीं थे कि कमज़ोर नज़र आएं न ऐसे मोटे कि पेट इधर जा रहा हो खुद उधर जा रहे हों। बाज़े भाई चलते इधर हैं और पेट उधर होता है तो ऐसे भी नहीं थे कि दो चल रहे हों पेट मशरिक़ में जा रहा हो वह मग़रिब में जा रहे हों।

﴿سواء البدن وصدر﴾ सीना और पेट बराबर था ﴿بعيد ما بين المنكبين﴾ छाती बड़ी चौड़ी थी और सीना कुशादा और जोड़ बड़े मज़बूत जो आपको देखता था देखता ही रह जाता था।

वसीम उसको कहते हैं जिसको देखने से दिल न भरता हो और क़ीम उसको कहते हैं जिसको जिधर से देखो हसीन नज़र आए।

ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं, होंट, पलकें, नथने, गर्दन, सीना जिधर से देखो हसीन नज़र आऐ तो ऐसे नौजवान को चालीस साल की औरत से शादी की क्या ज़रूरत थी? वह तो बीस बरस की लड़की से शादी करे, अठ्ठारह बरस की लड़की से शादी करे। ऐसा हुस्न था कि लोग देखकर दीवाने हो जाते थे।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुस्न हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़बान से

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मिस्रकी औरतों ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देखकर हाथ काटे थे अगर मेरे महबूब को देखतीं तो सीना चीरकर बैठ जातीं। फिर आपकी पचास साल की उम्र हुई तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हुआ। इक्कयावन साल की उम्र में आपने हज़रत सौदा से शादी की और बावन बरस की उम्र में आपने हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी की। फिर तिरेप्पन से तिरेसठ बाक़ी दस साल में आपने आठ निकाह किए तो बुढ़ापे में कोई शादी के शौक़ बढ़ते हैं?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कसरत से निकाह क्यों किए?

एक हदीस में और तिरेसठ साल और चार दिन की उम्र पाकर आप दुनिया से चले गए और अंग्रेज़ी लिहाज़ से इकसठ बरस दो महीने और तैंतीस दिन आपकी उम्र बनती है। बाईस हज़ार तीन सौ तीस दिन और छः घन्टे बनते हैं। नुबुव्वत के आठ हज़ार और एक सौ छब्बीस दिन बनते हैं।

तो आपने निकाह किए, मदीने में आकर सादा भी किए दर्मियानी भी किए, कुछ तकल्लुफ़ वाले ताकि तीनों तब्क़ात के

लिए आसानी हो जाए। ग़रीब भी कर सके, बीचे के लोग भी कर सकें, मालदार भी कर सकें और ये आपकी शादियाँ थीं यह ज़रूरत की थीं। क्या ज़रूरत थी? कि औरतों में दीन जाए। दिन में आप मर्दों में घिरे होते कभी मैदाने जंगों में तो कभी मस्जिद में। निकाह की जो कसरत हुई वह इसलिए हुइ कि औरतों में अल्लाह का दीन पहुँचाया जाए। अपने घरों में हैं, अपनी बीवियों को बता रहे हैं। बस एक घर में हैं बाक़ी घर ख़ाली हैं अगर आपकी एक बीवी होती तो आप परेशान हो जाते। हर वक़्त औरतें पूछने के लिए आ रही हैं। हर वक़्त आप पर्दे में जा रहे हैं। उस ज़माने में कोई इतने पर्दे घर में नहीं हुए थे। पर्दा कैसे कराते तो आप एक बीवी के पास आते दस बीवियाँ फ़ारिग़ बैठीं थीं। किसी के पास एक, किसी के पास पाँच, किसी के पास चार तो हर वक़्त एक सीखने सिखाने का निज़ाम चल रहा होता।

सादगी वाला निकाह

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह ऐसे हुआ। फ़रमाया कि अपनी-अपनी रोटी लेकर मेरे दस्तरख़्वान पर आ जाओ तो हर आदमी अपना-अपना खाना लेकर आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान पर सब ने मिलकर खाया। यह निकाह हुआ फ़तेह ख़ैबर के मौक़े पर। ग़रीब से ग़रीब हमारे समाज में अगर इस्लामी रहन सहन हो तो अपने बच्चे का निकाह इस तरह कर सकता है। दूसर ज़रा तकल्लुफ़ वाला वलीमा था।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वलीमे में आपने सबको दूध पिलाया तो यह हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से आपका निकाह हुआ फिर आपने पुर तकल्लुफ़ भी किया है। जब आपका हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह हुआ। ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा अकेली औरत हैं जिनका निकाह आसमानों पर अल्लाह तआला ने किया।

﴿فلما قضا زيد منها وطرا زوجنكها.﴾

इस खुशी में वलीमे का एहतिमाम हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने खुद किया। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! इन्तिज़ाम मैं खुद करूँगी तो हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने गाय ज़िब्ह की। सारा मदीना इस वलीमे में शरीक हुआ। मर्द भी औरतें भी तो अगर कोई मालदार आदमी वलीमे में वुसअत करना चाहे तो इसकी भी गुंजाइश है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बदतरीन वलीमा वह है जिसमें ग़रीबों को न बुलाया जाए।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़सती का मंज़र

मेरे भाईयो! अगर हम अपनी शादी में सादगी ले आएंगे तो शादी आसान हो जाएगी। ज़िना मुश्किल हो जाएगा और अगर हम अपनी शादी की शर्तें पूरी कर देंगे तो शादी मुश्किल और ज़िना आसान हो जाएगा।

ऐसे ही हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह मस्जिद

में हुआ, दो चार महीने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! रुख़सती हो जाए तो आपने फ़रमाया ठीक है करवा देते हैं तो आप मग़रिब की नमाज़ पढ़कर घर आए तो आप ने फ़रमाया उम्मे ऐमन को बुलाओ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं घर में काम कर रही थी कि मुझे आवाज़ आई कि उम्मे ऐमन को बुलाओ। उम्मे ऐमन आ गईं तो आपने फ़रमाया फ़ातिमा को अली के घर छोड़कर आ जाओ। उनसे कहो में इशा की नमाज़ पढ़कर आऊँगा तुम मेरा इन्तिज़ार करना। अब यह दो जहान के सरकार की बेटी हैं। उनकी रुख़सती यूँ हो रही है कि बाप भी साथ छोड़ने नहीं गया और दुल्हा लेने नहीं आया, बाप छोड़ने नहीं गया। उम्मे ऐमन जो बाँदी हैं उनके साथ भेज दिया दोनों औरतें चलकर आईं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के दरवाज़े पर दस्तक दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर निकले तो उम्मे ऐमन ने कहा भाई अपनी अमानत संभाल लो और अल्लाह के नबी का फ़रमान है कि मैं इशा के बाद आऊँगा। इतनी सादगी से रुख़सती हो गई।

हमारे अमीर थे भाई शब्बीर साहब रह०। उन्होंने बेटी का निकाह किया था। रुख़्सती बाक़ी थी तो सारे रिश्तेदार तो एक ज़हन के नहीं होते तो उन्होंने कहा भाई आप लोग दो चार अफ़राद आ जाओ। लड़की ले जाओ। उन्होंने कहा नहीं भाई हम तो देहाती लोग हैं, हम बारात लाएंगे। अब उनको समझाना भी मुश्किल था। उन्होंने कहा ठीक है बहुत अच्छा तो शादी वाला दिन जो था उससे एक दिन पहले अपनी बेटी को, बेटों को, बीवी को लिया और सीधे बहाव लंगर पहुँचे और कहा लो भाई हम

अपनी अमानत खुद छोड़ने आ गए और यह काम उन्होंने उस वक़्त किया जब पूरे पाकिस्तान के टेलीफ़ोन के डायरेक्टर जर्नल थे। दुनियवी ओहदा इतना बड़ा था और काम ऐसा किया कि आज का चपरासी भी वह काम न करे। तो भाई सादगी अपनाओ और दूसरी बात यह है कि हमेशा ज़िन्दगी जो खुशगवार गुज़रती है वह अच्छे अख़्लाक़ से गुज़रती है। यह सोना, यह चाँदी, यह मेहर इनसे घर आबाद नहीं होते। मियाँ-बीवी के अख़्लाक़ अच्छे हों, एक दूसरे की सह सके तो वह घर आबाद हो सकता है और इसमें लड़की वालों की ज़िम्मेदारी ज़्यादा है कि माँ-बाप अपनी लड़की को पालते हैं। अपने हाथों से उठाकर डोली में बिठाकर पराए घर भेज देते हैं।

बीवी को इतनी मुहब्बत दो कि उसे अपना घर याद ही न आए

एक लड़की ने पन्द्रह बरस, अठ्ठारह बरस एक घर में गुज़ारे, चार दीवारी में गुज़ारे, मानूस फ़िज़ा में गुज़रे। माँ भी ख़िदमत कर रही है, बाप भी लेकर आ रहे हैं, भाई भी नाज़ उठा रहा है, कोई उस पर हुक्म चलाने वाला नहीं है और वह चारों तरफ़ से मुहब्बत की फ़िज़ा देखती है तो भाई को छोड़कर गई, बाप को छोड़कर गई, माँ को छोड़कर गई, अपना घर छोड़कर गई, सब कुछ छोड़ा। अब लड़के वालों के ज़िम्मे है कि उसको इतनी मुहब्बत दें कि वह अपना घर भूल जाए।

सास और बीवी के झगड़े और उनका हल

हमारे यहाँ होता क्या है? पहुँचते ही ख़ाविन्द कहता है कि अब तू मेरी बीवी है और मैं तेरा ख़ाविन्द हूँ, तेरा हाकिम हूँ। अब जो मैं कहूँगा वह होगा। तूने मेरी माँ की भी ख़िदमत करनी है, मेरे बाप की भी ख़िदमत करनी है, तू ने मेरी बहनों की भी ख़िदमत करनी है, तू ने उनके सामने चूँ नहीं करनी है। उसके ज़िम्मे शरियत ने तो ख़ाविन्द की रोटी पकाना भी नहीं लगाया। यह कहता है कि मेरी माँ की रोटी पकाओ, मेरी बहनों की रोटी पकाओ, अगर नहीं पकाती तो (कहता है) तू ऐसी गुस्ताख़, ऐसी बदतमीज़, तुझे माँ-बाप ने कुछ नहीं सिखाया। सास अपना अलग हुक्म चलाती है, नन्दें अपना अलग हुक्म चलाती हैं, ससुर अपना अलग हुक्म चलाता है क्योंकि हमारे समाज में इस्लाम नहीं है, इबादतों का इस्लाम मौजूद है, रहन-सहन का इस्लाम हमारे अन्दर नहीं है। इसलिए शादी के बाद अक्सर बेटी वालों को रोते ही देखा है। कोई होता है लाखों में एक जो कहता है कि शुक्र है अल्लाह का कि अच्छे लोग मिल गए। वजह क्या है कि बेटे की तर्बियत कोई नहीं की कि इसको किसी की ज़िन्दगी को साथ लेकर चलना है।

निकाह में दीनदारी देखो मालदारी मत देखो

हमारे यहाँ शादी का पैमाना इतना है, कारोबारी हो, पैसे वाला हो तो शादी कर दो। हमारी एक बुज़ुर्ग ख़ातून औरत थीं तो वह अपनी भतीजी के रिश्ते की बात कर रही थीं। दूसरी औरत को

बता रही थीं। हमारे यहाँ क्योंकि ज़मींदार हैं तो कारोबार के बजाए ज़मीन देखते हैं कि ज़मीन कितनी है? तो अब वह दूसरे को कह रही हैं कि उसके चौदह मरब्बे हैं, उसकी पेपर मिल है। मैंने बीच में पूछा कि मासी वह लड़का कैसा है? जवाब दिया कि उसके चौदह मरब्बे हैं, पेपर मिल है। मैंने दोबारा पूछा कि वह लड़का कैसा है? फिर वही जवाब दिया कि उसके चौदह मरब्बे हैं, पेपर मिल है। मैंने तीसरी बार पूछा कि वह लड़का कैसा है? तो उसने फिर यही कहा कि उसके चौदह मरब्बे हैं, उसकी पेपर मिल है। उसको समझ नहीं आया कि मैं क्या पूछ रहा हूँ। मैं पूछ रहा हूँ वह कैसा है? वह कह रही है उसके चौदह मरब्बे हैं। एक साल के बाद तलाक़ हो गई।

अख़्लाक़ से घर बनते हैं

तो भाईयो! इस वक़्त बहुत बड़ा गिरावट है समाजी ज़िन्दगी में कि हम हदें नहीं जानते और इस्लामी रहन-सहन नहीं जानते। दस हज़ार गाड़ियाँ जा रही हैं लाईन में तो ट्रेफ़िक नहीं रुकेगा। दस गाड़ियाँ लाईन तोड़ दें तो ट्रेफ़िक नहीं जाएगी। ख़ाविन्द की हद है, बीवी की हद है, सास की हद है, ससुर की हद है, नन्दों की हद है। उसके अन्दर अगर सारा घर चले तो सारा घर खुश खुर्रम रहेगा लेकिन जब हदें तोड़ी जाएंगी। जब सास हद तोड़कर आगे बढ़ेगी, ख़ाविन्द हद तोड़कर आगे बढ़ेगा, बीवी हद तोड़ेगी, नन्द हद तोड़ेगी तो फिर वह घर संगमरमर का होकर भी काँटेदार सहरा बन जाएगा। जगमगाते घर अंधेरे हो जाएंगे। ख़ूबसूरत

ख़्वाबगाहें पहली सदी के ग़ार नज़र आएंगे। जब अख़्लाक़ अच्छे हो जाते हैं तो भाईयो अंधेरे घरों में चौदहवीं के चाँद नज़र आते हैं और ठंडे चूल्हों में शबे बरात रोज़ होती है और रोटी खाकर पुलाव ज़र्दे के मज़े पाते हैं और पुरानी खाट पर सोकर वे आलीशान ख़्वाबगाहों के मज़े उठाते हैं। यह उस वक़्त है जब अख़्लाक़ अच्छे होते हैं।

अख़्लाक़ बिगड़ जाएं तो दिल पारा-पारा हो जाते हैं। ज़िन्दगी अजीरन और वीरान हो जाती है। जब आपके काँटा चुभा हुआ हो तो न आपको बिस्तर पर नींद आएगी न ज़मीन पर नींद आएगी न घर में नींद आएगी, न बाहर नींद आएगी। दर्द उठ जाए तो किसी पल चैन नहीं आता और जब वह दर्द दिल में उठ जाए तो फिर कैसा होगा?

अपनी ज़बान पर ताला लगा दो

बदअख़्लाक़ी से दिल ज़ख़्मी हो जाते हैं और दिल है शीशे की तरह और शीशा एक ऐसी धात है जो टूट जाए तो कभी नहीं जुड़ता। दिल भी ऐसी बला है जो टूट जाए तो जुड़ता नहीं है और इसको तोड़ने वाली चीज़ ज़बान है। यह ढाई इचं की ज़बान है जो दिल को सबसे ज़्यादा ज़ख़्मी करती है।

अल्लाह तआला ने इस पर बत्तीस ताले लगाएं हैं। ऊपर मेन गेट लगाया है। यह इतनी ज़ालिम है कि सारे ताले तोड़कर, गेट तोड़कर बाहर आ जाती है। चोरों से एक ताला तोड़ना मुश्किल होता है। यह बत्तीस ताले तोड़कर एक दम बाहर आती है तो भाईयो लड़ाईयाँ तो होती हैं ज़बान से। ज़बान का बोल मीठा कर लो।

बदमाश धोबन की कहानी

हमारी धोबन थी। कपड़े धोने वाली। वह थी लड़ाका। वह आ गई मेरी बहन के पास। उनसे अपनी बहुओं की शिकायत कर रही है कि मेरी बहुएं मुझसे बहुत लड़ती हैं। मुझे कोई ऐसा तावीज़ दे कि वे मेरी गुलाम हो जाएं। उन्होंने कहा बहुत अच्छा। उन्होंने एक कागज़ पर लिखा। उल्टा सीधा उसको बन्द किया और कहा मासी जब तेरी बहुएं लड़ने लगें तो यह तावीज़ दाँतों के नीचे दबा लेना। दाँत नहीं खोलना, तू एक हफ़्ता इस पर अमल कर। सारी बहुएं तेरी गुलाम हो जाएंगी। अब वह आठवें दिन बड़ी बड़ी ख़ुशी-ख़ुशी आई कि बीबी मेरी सारी लड़ाई ख़त्म हो गई।

अब सारी लड़ाई ख़त्म क्योंकि तावीज़ ज़बान के नीचे है। हमारे यहाँ रिवाज है तावीज़ गंडे का ज़्यादा तो अब वह समझी जाने क्या है इसमें हाँलाकि उसकी ज़बान रोकी थी उस तावीज़ से।

मीठे बोल का जादू

मेरे अज़ीज़ो! घर बर्बाद हो जाते हैं अगर ज़बान तेज़ हो तो लड़की के ज़िम्मे भी है कि पराए घर में जाकर अच्छे अख़्लाक़ पेश करे कि सारा घर उसका गिरविदा हो जाए लेकिन इससे ज़्यादा लड़के वालों के ज़िम्मे है क्योंकि वे पराई लड़की को लेकर आ रहे हैं। उसके लिए पूरा माहौल अजनबी हैं, सारा माहौल अजनबी है, उसके लिए शक्लें बेगानी हैं और यह एक पक्की बात है कि सास माँ नहीं बन सकती और ससुर बाप नहीं बन सकता। इसीलिए अल्लाह तआला ने हदें क़ायम की हैं कि हद के अन्दर हो ताकि

लड़ाई न हो झगड़ा न हो। सबसे बड़ी दौलत जो किसी के घर को आबाद करने के लिए है वह मीठा बोल है और अच्छे अख़्लाक़ हैं। इल्म से घर नहीं चलते। ये जो मौलवी होते हैं वे वैसे ही बड़ी जल्दी लड़ाई करते हैं। जिन्होंने पढ़ा होता है वह फ़त्वे जल्दी जल्दी सुनाते हैं।

आपके मिसाली अख़्लाक़ का अनोखा वाक़िया

अरे यह हराम है, यह हराम है, तो बड़ी जल्दी खिलौने की तरह घर तोड़ने बैठ जाते हैं। अरे यह सब्र का काम है। इसलिए शादी से पहले अपने नबी की मआशरत के पाठ पढ़ो। जिसकी भी शादी हो तो पहले वह पढ़े। अल्लाह का नबी अपनी बीवियों के साथ कैसा शफ़ीक़ था? आप अन्दाज़ा लगाएं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो उमर-तुल-कज़ा के लिए तशरीफ़ लाए। सन् 6 हिजरी में उसमें आपने मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुली, पेशाब का तक़ाज़ा हुआ तो उठकर बाहर चले गए। हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा की आँख खुली तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ायब हैं तो उनको चक्कर आ गए। वह जो सौकनपन है वह ज़ाहिर हुआ। ओहो! मुझे छोड़कर किसी और बीवी के पास चले गए। उन्होंने अन्दर से कुंडी लगा दी। थोड़ी देर के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस्तक दी। कहा दरवाज़ा खोलो। बोलीं नहीं खोलूंगी। पूछा क्या हुआ? कहने लगीं मुझे छोड़कर औरों के पास जाते हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने

लगे अल्लाह की बन्दी मैं अल्लाह का नबी हूँ ख़्यानत नहीं करता। फिर उनको एकदम ख़्याल आया कि यह तो बात सही है नबी तो ख़्यानत नहीं कर सकता। फिर उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। आप अल्लाह के नबी दरवाज़ा खोलते ही जूती उठाकर पिटाई शुरू कर देता कि तू ऐसी बदतमीज़, तू ऐसी गुस्ताख़। आप मुस्कराते हुए चारपाई पर जाकर सो गए।

अख़्लाक़ सीखो और सिखाओ

तो भाईयो! अपने अख़्लाक़ बनाओ। अपनी औलाद को अख़्लाक़ सिखाओ, अपनी बेटियों को सब्र सिखाओ कि आज का समाज आने वाली बेटी को नौकर ही बनाकर रखता है। बहुत कम लोग होते हैं जो किसी की बेटी को अपनी बेटी समझते हैं वरना तो हर एक के हाथ में नये से नया हरबा होता है नए से नया ज़ख़्म लगाने के लिए और ऊपर से छिड़कने के लिए नमक होता है। कोई भी घर आबाद करना हो तो अख़्लाक़ सीखो सिखाओ। यह उन लड़कों के ज़िम्मे है कि वे अपनी बीवियों को मुहब्बत दें, माँ-बाप के ज़िम्मे है कि वह उनको (लड़कियों को) वक़्त दें फिर वे ख़ुद काम करेंगी और कहेंगी कि आप छोड़ें मैं करूंगी। लड़का कहता है मेरी माँ की ख़िदमत कर, मेरे बाप की ख़िदमत कर, मेरी बहनों की ख़िदमत कर। अरे उसके ज़िम्मे तो अपने ख़ाविन्द की रोटी पकाना भी नहीं है, कपड़े धोना भी उसके ज़िम्मे नहीं। शरअन ऐसे मर्द के ज़िम्मे उसका दवा-दारू नहीं बल्कि पैसे दे दे। तो अल्लाह के नबी अपने कपड़े ख़ुद धोते थे,

अपना आटा खुद गूंधते थे। घर में आटा गूंध रहे हैं, बर्तन धो रहे हैं, झाड़ू दे रहे हैं। अपने घर के काम खुद कर रहे हैं।

औरत नाज़ुक शीशे की तरह है

तो मेरे भाईयो! अज़ीज़ो अपने-अपने घरों को अच्छे अख़्लाक़ से लैस करो। अल्लाह के नबी ने औरतों को शीशे से मिसाल दी है। और शीशे टूट जाते हैं तो जुड़ते नहीं। अगर हमने अपनी बदअख़्लाक़ी से दिल तोड़ दिया तो फिर वह कभी नहीं जुड़ेगा। एक दिल तो वैसे ही नाज़ुक है फिर साथ में औरत भी हो जाए तो दो चीज़ें एक साथ बिगड़ जाएं तो सारी उम्र कढ़वाहट के साथ गुज़रती है। मुहब्बत देना सीखो तो सारी ज़िन्दगी राज करोगे। आर्डरबाज़ी से रहोगे तो सारी ज़िन्दगी कढ़वाहटें चलती रहेंगी। नफ़रतें बढ़ती रहेंगी। मुहब्बत से जो दिल जीते जाते हैं वह न दौलत से न जवाहर से न हुकूमत की लाठी से जीते जाते हैं। दिल वही जीत सकता हे जो चुप रहना जानता हो, सिर झुकाना जानता हो, जो दरगुज़र करना जानता हो, जो ग़ल्ती पर ख़ामोश रहना जानता हो, ग़ल्ती पकड़ना न जानता हो।

बदअख़्लाक़ी से घर बर्बाद होते हैं

तो मेरे भाईयो! अख़्लाक़ बनाने के लिए जिस दर्जे का ईमान चाहिए वह नहीं है। जिस दर्जे की मेहनत चाहिए वह नहीं। तबलीग़ में चिल्ले भी देते हैं, साल भी लगाते हैं लेकिन अख़्लाक़ नहीं बनते। कुछ क़ुर्बानी का जज़्बा बन जाता है, तहज्जुदगुज़ार

बन जाते हैं, नमाज़ी हो जाते हैं, दावत देने वाले बन जाते हैं, गश्तें करने वाले हो जाते हैं लेकिन अख़्लाक़ की बुलन्दियों तक पहुँचने के लिए, जिस अख़्लाक़ की ज़रूरत है वह इससे नहीं बनता और क़ुर्बानी देनी पड़ती है।

एक हदीस में आता है अल्लाह तआला ने सही यक़ीन और अच्छे अख़्लाक़ बहुत थोड़े तक़सीम किए हैं तो जो चीज़ बाज़ार में थोड़ी हो उसकी क़ीमत बढ़ जाती है। इसलिए भाईयो! अगर अपने घरों को आबाद करना है तो अख़्लाक़ बनाओ। अच्छे अख़्लाक़ सीखो। अल्लाह के नबी ने अख़्लाक़ तीन चीज़ों में बताए हैं:

﴿صل من قطعك﴾ जो नाता तोड़े उससे जोड़ो।

﴿واعف عمن ظلمك﴾ जो तुम पर ज़्यादती करे उसे माफ़ कर दो।

﴿وتعط من حرم﴾ जो रोके उसे दो।

यह तीन बुनियादें हैं अच्छे अख़्लाक़ की। इस पर जो घराना चलेगा वह जन्नत में जाएगा जो बदअख़्लाक़ हो उसके लिए इबादत की ज़्यादती के बावजूद जहन्नम की धमकी है। इसलिए बदअख़्लाक़ी से बचो।

जहन्नम से डरो

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जहन्नमियों का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया:

﴿لهم من جهنم مهاد﴾ अंगारों के बिस्तर पर उनकी चादरें हैं।

﴿ومن فوقهم غواش﴾ उनके ऊपर आग की चादरें और,

﴿لهم من فوقهم ظلل من النار ومن تحتهم ظلل﴾ उनके ऊपर भी आग के पर्दे और उनके नीचे आग के पर्दे।

﴿يا عباد فاتقون﴾ अल्लाह पाक कह रहे हैं ऐ फ़ैसलाबाद वालों! ऐ गुलिस्तान वालो! अरे तुम्हें क्या हो गया? दीवानों, पागलों किस चीज़ से डरते हो? जहन्नम से नहीं डरते हो और दुनिया के फ़क़्र व फ़ाक़े से डरते हो। यहाँ की भूख प्यास से डरते हो।

ऐ पूरी दुनिया के इन्सानों! ऐ मेरे बन्दो! उस आग से बचो, उस आग से डरो, उस जहन्नम से डरो जिसको अल्लाह ने भड़काया है।

﴿كلما زدناهم سعيرا﴾ जब वह ठंडी होती है तो अल्लाह तआला और भड़का देता है।

उसकी एक चिंगारी पूरे-पूरे बड़-बड़े महल के बराबर हवाओं में उड़ती चली जाती हैं। उसका एक क़तरा सारी दुनिया के पानी को कढ़वा कर देगा, उसका एक लोटा पानी समुंद्रों का खौला देगा, बर्फ़ को पिघला देगा। जन्नत का एक क़तरा दुनिया को मीठा कर दे, उसका एक झोंका जहान को मोत्तर कर दे।

हुस्न हो तो ऐसा

जन्नत की लड़की अपना दुपट्टा हवा में लहरा दे तो सारी काएनात रौशन हो जाए, मोत्तर हो जाए, ख़ुशबूदार हो जाए, ज़िन्दों को झलक दिखा दे तो कलेजे फट जाएं, मर्दों से बात करे

तो उनमें रूह दौड़ जाए, समुंद्रों में थूक डाले तो समुंद्र मीठे हो जाएं। ख़ाविन्द की तरफ़ चलकर आए तो एक क़दम में एक लाख के नाज़ व अन्दाज़ दिखाए, मुस्कराए तो दाँतों का नूर सारी जन्नत का चमका कर रख दे। सिर के बाल चोटी से पाँव की ऐढ़ी तक बिखरे हुए फैले हुए। उसके एक बाल में सूरज चमकता हुआ दिखाई देता है। गुलाब चहकते हुए महसूस होते हैं।

मेरे भाईयो! एक अन्जाम यह है जो अल्लाह तआला ने बनाया है कि उस दिन अल्लाह तआला ज़मीन को ज़िन्दा कर रहा है। इधर मुजरिम आ गए, उधर मोहतरम आ गए।

﴾ولمن خاف مقام ربه جنتن.﴿

आ जाओ इधर का अंजाम भी देखो ये वे हैं जिन्होंने अल्लाह को राज़ी किया। उसके महबूब के तरीक़ों को अपनी ज़िन्दगी बनाया। उसकी गुलामी को अपनी इज़्ज़त समझा, अपना फ़ख़्र समझा। यह कैसी ख़ूबसूरत जन्नत है। उसमें क्या है?

﴾فيهما عينان تجريان﴿ उसमें चश्मे हैं बहते हुए,

﴾فيهما من كل فاكهة زوجان﴿ हर फल के बेशुमार क़िस्में-क़िस्में जोड़े हैं।

﴾بطائنها من استبرق﴿ ऊपर चमकदार ग़लीचे बिछाए जा चुके हैं। उनके फ़र्श बिछे हुए हैं और उस पर रहमान है।

﴾وجنى الجنتين دان﴿ सिरों के ऊपर जन्नत के फल झुके हुए हैं। छिपे हुए फल और फैले हुए साए और उड़ते हुए परिन्दे और बहते हुए पानी और बिछे हुए तख़्त और भरे हुए जाम और भरी हुई सुराहियाँ, सजे हुए दस्तरख़्वान।

﴿فيهن قاصرات الطرف﴾ दांए और बांए नज़रें झुकाई हुई जन्नत की लड़कियाँ।

﴿كأن هن الياقوت والمرجان . لم يطمثهن انس قبلهم ولا جان.﴾

जिन्हें इन्सान ने नहीं छुआ, जिन्न ने नहीं छुआ याक़ूत व मरजान की तरह और हया में कामिल हुस्न व जमाल में कामिल।

अल्लाह तआला ने उनको आग, मिट्टी, पानी, हवा से नहीं बनाया। मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर से बनाया। पाँव के अंगूठे से लेकर घुटने तक अंबर व ज़ाफ़रान से, घुटने से लेकर छाती तक मुश्क से, छाती से लेकर गर्दन तक अंबर से और गर्दन से लेकर सिर तक काफ़ूर से बनी हुई हूरें और फिर अल्लाह तआला ने आबे हयात डाला फिर सबसे आला चीज़ अल्लाह ने उनमें अपने नूर में से नूर डाला, वे चमक गईं वे दुल्हन बन गईं, मुकम्मल हो गईं शबाब कामिल, जवानी कामिल, पेशाब से पाक, पाख़ाने से पाक, वे बुढ़ापे से पाक, वे हैज़ से पाक, वे निफ़ास से पाक, वे हमल से पाक, वे मौत से पाक, वे बेवफ़ाई से पाक, गाली-गलौच से पाक, वे बदअख़्लाक़ी से पाक, जूंए पड़ने से पाक, बूढ़े होने से पाक, हर ऐब से पाक है। *"ताहिरात"*, *"तय्यबात"*, *"कामिलात"*, *"कासियात"*, *"नाईमात"*, *"राज़ियात"*, *"मुक़ीमात"*, ये सारी सिफ़ात है जो नबी बताता चला जा रहा है।

वे कामिल, वह अकमल, वह पाक, वह पाकीज़ा, वह मुज़य्यन, वह मरसअ, वह आला, वह हसीन, वह जमील, वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाली, हमेशा जवान रहने वाली, हमेशा ख़ुश रहने वाली, हमेशा साथ रहने वाली, हमेशा साथ देने वाली, हमेशा ख़ुशबूदार रहने वाली। उनका मैकअप करने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनका

लिबास पहनाने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनको ज़ेवर पहनाने वाला अल्लाह ख़ुद है, उनके मेल नफ़्स, उनकी नोक-पलक सवांरने वाला अल्लाह ख़ुद है, उसकी आँखों को मोटाई दी, और अजली को स्याही, अल्लाह तआला ने उसके हुस्न में नूरानियत भरी।

मरने वालों से सीख लिया करो

अल्लाह तआला ने उसको हर क़िस्म की गंदगियों से पाक फ़रमाया ﴿ولمن خاف مقام ربه جنتان﴾ आ जाओ फैसलाबाद में अल्लाह से डर कर ज़िन्दगी गुज़ारो, दिलेर न बनो, ज़ालिम न बनो, बाप के नाफ़रमान न बनो, शराब से बचो, सूद से बचो, झूठ से बचो, ज़ुल्म से बचो, रिश्वत से बचो, माँ-बाप को दुख देने से बचो, जूए से बचो, गाने बजाने से बचो, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी से बचो, झूठी गवाही से बचो। ये जो कबीरा गुनाह हो रहे हैं उनसे बचो, अपने आपको हराम कमाइयों से बचाओ। हराम कामों से किस-किस पाप को रोऊँ? ईनामी बांड ख़रीदने से बचो फिर नफ़्लि पढ़ते हैं कि हमारा नम्बर निकल जाए। ओ अल्लाह के बन्दो तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हें कैसे समझाऊँ कि तुम जुआ खेलकर अल्लाह से दुआएं करते हो जो अल्लाह कह रहा है ऐ मेरे बन्दो! जुआ छोड़ दो, अरे शराब छोड़ दो और तुम्हें क्या हो गया कि तुम जुए का कारोबार करके दुआएं करते हो कि या अल्लाह बरकत दे दे और यह पागल दीवानी दुनिया कहती है कि यह मुसलमान कहाँ से आ गए। मुसलमान जो बांड ख़रीदकर कहते हैं या अल्लाह! मेरा बांड निकाल दे और ऊपर से दुआएं भी करवाते हैं, मेरा मुक़द्दर संवर जाए।

अरे ज़ालिम! तू क्या कह गया है। तू हराम पैसे से मुक़द्दर संवारता है। मैं कहाँ से बोल लाऊँ और तुम्हें समझाऊँ अपने भाईयो को। मेरे भाईयो मुझे माफ़ करना। मुझे समझ नहीं आता कि मैं कैसे दिल चीरकर अन्दर में बात उतारूं कि जिसको इतने बड़े रब का सामना करना है। वह उसकी नाफ़रमानी करके ललकारता है। न उसे जन्नत याद न उसे दोज़ख़ याद, न उसे अल्लाह याद, न मौत याद, न क़ब्र याद, न तन्हाईयाँ याद, न वहशतें याद। इस गंदी दुनिया के पीछे पड़े हो जिसे छोड़कर मर जाते हो। क्या कहा था नज़ीर अकबराबादी ने:

तू हिर्स हवस को छोड़ मियाँ मत देस बदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़ अजल का लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा

सूदी बैंकों में पैसे रखे हैं इस गंदी दुनिया की ख़ातिर, जुवा खेला इस गंदी दुनिया की ख़ातिर। अरे उठते जनाज़े देखा करो। रोने वालियों का विलाप सुना करो। घरों की वीरानियाँ देखो। क़िले में जाकर देखो। सैर करने नहीं इबरत की नज़र से जाओ:

वह देख रावी के किनारे एक टूटा सा मकां है
दिन को भी यहाँ शब की स्याही का समां है
कहते हैं कि यह आरामगहे नूर जहाँ है

दुनिया की दौड़ लगाने वालों का अंजाम

जाओ! जाओ! उसकी क़ब्र से पूछो कि तेरे नाम का तो डंका बजता था। तेरे सामने तो जहांगीर पाँव में पड़ गया था। आज तू

क्यों ज़मीने के नीचे सो गई? यह मकड़ियों ने क्यों जाले तन दिए? तू तो गुलाब के अर्क़ में नहाने वाली औरत थी। आज तेरी हड्डियाँ बोसीदा हैं। क़ब्र तेरी वीरान। फिर ऊपर आने वाला कोई नहीं है। कोई हाथ उठाकर नहीं आता कि फ़ातेहा पढ़ दूँ। जाते हैं तो सैर करने जाते हैं। इन इबरतकदों को देखकर मेरे भाईयो इबरत लो। क़ब्रिस्तान जाओ देखो! ये लोग थे जिन्होंने दुनिया की दौड़ें लगायीं, जिन्होंने झूठ बोले, सूद खाए, रिश्वतें खायीं, ज़ुल्म किए, क़त्ल किए, ज़िना किए, शराबें पीं, गाने सुने, नाच की महफ़िलें सजायीं। जाओ क़ब्रिस्तान फ़ैसलाबाद का बड़ा क़ब्रिस्तान तंग हुआ पड़ा है।

क़ब्र पर क़ब्र चढ़ी हुई है। यह अपने क़रीब का क़ब्रिस्तान देखो क़ब्र पर क़ब्र चढ़ी हुई है। एक दिन यही मिट्टी होगी और हम होंगे।

काएनात आबाद होगी। दिन चढ़ता होगा। घर आबाद रहेंगे। काम चलते रहेंगे। कारोबार होते रहेंगे। औलादें माँ को भूल जाऐंगी। कोई थी जो मेरे लिए रातों को तड़पा करती थी और बाप को भूल जाएंगे कोई था जो मेरे लिए सारा-सारा दिन बाज़ार में झुलसा देने वाली गर्म हवाएं सहता हुआ मेरे लिए कमाता था। याद रखना कोई किसी को याद नहीं रखता। यह सब बेवफ़ा हस्तियाँ हैं।

क़यामत का ख़ौफ़नाक दिन

वफ़ादार एक अल्लाह और एक उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। बाक़ी सब बेवफ़ा हैं। सब! सब! सब! सब! बेवफ़ा

हैं। उस नबी को दुआएं दो तेईस बरस आपके लिए रोया। तेईस बरस आपके लिए तड़पा। उम्मत! उम्मत! कहता दुनिया से रुख़्सत हुआ। उस नबी को दुआएं दो जो तुम्हें जाने से पहले सलाम पेश कर गया।

वफ़ात से एक हफ़्ता पहले हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और साथी आए। आपकी आँखों में आँसू आ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाने का वक़्त क़रीब आ चुका है। मेरा तुम्हें आख़िरी सलाम हो और तुम्हारे बाद जो मेरी उम्मत आए तो उनको भी कह देना कि तुम्हारा नबी तुम्हें सलाम कह गया था।

अरे मैं तुम्हें कहाँ से समझाऊँ? किससे वफ़ा कर रहे हो और किस से बेवफ़ाई कर रहे हो? वह जिसकी जुदाई को बेजान महसूस कर उठे और हाय-हाय पुकार उठे। मस्जिदे नबवी में एक खजूर का तना था जिस पर टेक लगाकर अल्लाह के नबी ख़ुत्बा देते थे। मजमा बढ़ गया मिम्बर बनाया गया। क़रीब मेरे नबी का घर था। आज आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकले और मिम्बर की जानिब बढ़े। खजूर के तने ने जब यह देखा कि आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं तो उसकी भी हाय निकली।

वह प्यारा नबी पैग़ाम दे रहा है। सिर्फ़ सहाबा को नहीं पैग़ाम दे रहा है। वह कह रहा है मेरे बाद जो मेरी उम्मत आए उन्हें भी कहना कि तुम्हारा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हें सलाम पेश कर गया था और क़यामत का दिन आएगा और दोज़ख़ को मैदाने हश्र में घसीटकर लाया जाएगा और वह एक चीख़ मारेगी। बड़े-बड़े अबदाल और औलिया, बड़े-बड़े मुजाहिद, शहीद, उलमा।

क्या फ़ासिक़ क्या फ़ाजिर ज़मीन पर जा गिरेंगे। क्या अंबिया, क्या फ़रिश्ते सब ज़मीन पर जा गिरेंगे और सब कहेंगे या रब्बी नफ़्सी-नफ़्सी।

और फ़रिश्तों ने तो दोज़ख़ में नहीं जाना मगर वह डर के मारे ज़मीन पर जा गिरेंगे और सारे इन्सान पुकार उठेंगे नफ़्सी-नफ़्सी। सारे नबी पुकार उठेंगे नफ़्सी-नफ़्सी। क्या आदम अलैहिस्सलाम, क्या नूह़ अलैहिस्सलाम, क्या इदरीस अलैहिस्सलाम, क्या इब्राहीम अलैहिस्सलाम, क्या मूसा अलैहिस्सलाम, क्या हारून अलैहिस्सलाम, क्या याक़ूब अलैहिस्सलाम, क्या इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, क्या यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, क्या इस्माईल अलैहिस्सलाम, क्या दाऊद अलैहिस्सलाम, क्या सुलेमान अलैहिस्सलाम, क्या याहया अलैहिस्सलाम, क्या ज़क्रिया अलैहिस्सलाम, क्या यूनुस अलैहिस्सलाम, क्या ईसा अलैहिस्सलाम।

सारे नबियों की पुकार नफ़्सी-नफ़्सी। सुनो इब्राहीम अलैहिस्सलाम कह रहे हैं या अल्लाह! मैं तुझसे अपने बाप का भी सवाल नहीं करता। मेरी जान बचा ले और ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे या अल्लाह! मैं आज अपनी माँ मरियम का सवाल नहीं करता मेरी जान बचा ले। वे नबी होकर कहेंगे मेरी जान बचा ले।

हम नमाज़ें छोड़ें, रोज़े छोड़ें, सूद खाकर, माँओं का गालियाँ देकर, बाप को धक्के देकर, भाईयों के हक़ मारकर, शराबें पीकर, गाने सुनकर, झूठी गवाहियाँ देकर, ज़मीन दबाकर, नाप-तोल ग़लत करके, जुए के कारोबार करके हम मीठी नींद सो जाते हैं कि जैसे हमने कुछ किया ही नहीं।

आज ख़लीलुल्लाह को देखो कह रहा है मेरी जान बचा,

आज कलीमुल्लाह मेरी जान बचा,

आज ज़बीहउल्लाह को देखो! कह रहा है या अल्लाह! मेरी जान बचा,

आज ुल्लाह को देखो! कह रहा है या अल्लाह! मेरी जान बचा।

ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे मैं माँ मरियम का भी सवाल नहीं करता बस या अल्लाम मेरी जान बचा।

जब नबी भूल जाएंगे तो बीवी कब याद करेगी? बाप कब याद करेगा? ख़ाविन्द कब बीवियों को याद करेंगे? इधर देखो इस महशर के मैदान में एक नबी है जिसका नौहा सबसे जुदा है, जिसकी फ़रियाद सबसे निराली है, जिसका रोना सबसे अनोखा है, जिसकी दुआ सबसे अलग है। उसकी झोली फैली हुई है हाथ उठ रहे हैं। वह नफ़्सी-नफ़्सी नहीं कह रहा है। वह कह रहा है या रब्बी उम्मती-उम्मती। या अल्लाह मेरी उम्मत को बचा ले! या अल्लाह मेरी उम्मत को बचा ले। वाह! ऐसा आलीशान नबी पाकर फिर उम्मत उसकी सुन्नतों पर छुरियाँ चलाए, उसकी सुन्नतों को ज़िब्ह करे।

जैसे मेरा नबी यतीम पैदा हुआ था कोई दाया उसको लेने को तैयार नहीं थी। आज मेरे नबी का दीन यतीम हो गया। नौजवान लेने को तैयार नहीं। उन्हें नाच-गाने से इश्क़ हो चुका है। ताजिर लेने को तैयार नहीं। वह कहता है मेरा नफ़ा कट जाएगा, मेरा कारोबार टूट जाएगा। ज़मींदार लेने को तैयार नहीं। वह कहता है

कि हमारी खेतियाँ उजड़ जाएंगी। सियासदान लेने को तैयार नहीं वह कहता है कि हमारी सियासत चली जाएगी। हुक्मुरान लेने को तैयार नहीं। अदालत का क़ाज़ी लेने को तैयार नहीं। चैम्बर का वकील लेने को तैयार नहीं।

मैं उनको क्या रोऊँ। यहाँ रेढ़ी पर बैठकर केले बेचने वाला, आम बेचने वाले, ग़रीब, मज़दूर ये सब भी आज अल्लाह के नबी के तरीक़ों को लेने को तैयार नहीं जैसे मेरे नबी को हर दाया छोड़कर चली जाती थी। आज मेरे नबी का दीन भी हराम हो गया। हाय! हाय! आज इसका कोई लेने वाला नहीं रहा। नफ़्स के ग़ुलाम, चीज़ों के ग़ुलाम, झोपड़ी और रोटी के ग़ुलाम, चटख़ारे और मज़ों के ग़ुलाम, कपड़े के ग़ुलाम, मकानों के ग़ुलाम होकर रह गए, नौकरियों के ग़ुलाम और मेरे भाईयो! वह तो तुम्हें हश्र में भी नहीं भूला। कह रहा है या अल्लाह! उम्मती-उम्मती।

देहाती के नदामत भरे शे'र

इब्ने कसीर और इमाम नुव्वी रह० ने इस वाक़िये को नक़ल किया है कि अतबी रह० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र पर बैठे हुए थे। एक बद्दू आया, देहाती। कहने लगा:

﴿السلام عليك يا رسول الله﴾

फिर कहने लगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके रब का फ़रमान सुना है:

ولو انهم اذ ظلموا انفسهم جاؤك فاستغفروا الله واستغفر لهم
الرسول لوجدوا الله توابا الرحيما.

आपका रब कह रहा है कि अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत अपनी जानों पर ज़ुल्म करके गुनाहों का बोझ उठाकर आपके दरबार में आ जाए और अल्लाह से माफ़ी मांगे और आप भी अल्लाह से माफ़ी मांगे तो मैं उनको माफ़ कर दूँगा। फिर कहने लगा'

يا رسول الله مستشفعا بك الى ربى يا رسول الله...الخ.

मैं आपके पास आया हूँ अपने गुनाहों का इक़रार करके और आपको अल्लाह के दरबार में वसीला बनाकर आपके अल्लाह से यह मांगता हूँ कि आपकी शफ़ाअत से मेरा अल्लाह मुझे माफ़ कर दे। फिर उसने चार शे'र कहे। दो शे'र आज भी रौज़ा-ए-मुबारक पर लिखे हुए हैं। आज भी जब सलाम करने के लिए खड़े होते हैं तो दो सफ़ेद सुतूनों पर जो दाएं-बाएं जानिब हैं जाली के उस पर वे दो शे'र आज भी लिखे हुए हैं दो और हैं जो किताब में हैं। फिर उसे शे'र पढ़ा। क्या कहा?

يا خير من دفنت في البقاء اعظمه
فطاب من القاب والحكم

ऐ वह ज़ात! जो इस ज़मीन में जाकर छिप गई। उसकी बरकत से ज़मीन का अन्दर भी बाबरकत हो गया, बाहर भी बाबरकत हो गया। अन्दर भी ख़ुशबुएं फैल गयीं, वादियाँ और पहाड़ भी ख़ुशबूदार हो गए।

نفس الفداء لقبر انت ساكنه.

मैं क़ुर्बान इस क़ब्र पर जिसमें आप आराम कर रहे हैं।

فيه العفاف وفيه الجود والكرم.

सिर्फ आप ही इस कब्र में नहीं सो रहे हैं बल्कि आपके साथ आपकी सख़ावत भी, आपका माफ़ करना भी, आपका दरगुज़र करना भी, आपकी मेहरबानियाँ भी, आपकी अताएं भी आपके साथ यहीं मौजूद हैं। ये दो शे'र तो रौज़े पर हैं और दो उसने आगे कहे:

انت الشفيع الذی ترجی شفاعتہ
علی الصراط ما زالت قدم

पुले-सिरात कोई घाटी नहीं है? अरे मेरे भाईयो! जिस चीज़ को अल्लाह बड़ी ﴿بل الساعة ادھا وامر﴾ मेरे बन्दो! आख़िरत बड़ी है, भयानक है, ख़ौफ़नाक है, आख़िरत बड़ा कढ़वा मस्अला है। उसकी तैयारी करो।

हमें शैतान ने कहा कि दुनिया बड़ा मस्अला है, दुनिया बड़ी अहम है, उसके पीछे दौड़ लगाओ। हम अल्लाह और उसके रसूल को भूल गए। चार दिन की चाँदनी में हम बिक गए, फ़रोख़्त हो गए। तो वह पुल सिरात भी राह में है। जहाँ वही पार लगेगा जिसे अल्लाह चाहेगा। तीन हज़ार बरस का सफ़र है तीन हज़ार बरस का, अंधेरा है रौशनी नहीं, बारीक है चौड़ा नहीं है, तेज़ धार है नरम नहीं है। उस पर वही पार होंगे जिसे अल्लाह चाहेगा तो बद्दू कहने लगा ﴿انت الشفيع الذی ترجی شفاعتہ﴾ हमारे पास तो कुछ है नहीं जिस पर पुलसिरात को पार कर सकें। सिर्फ़ आपकी शफ़ाअत होगी।

जिसके तुफ़ैल अल्लाह हमें पार लगाएगा अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब न हुई तो फिर पुलसिरात से कोई पार नहीं निकलता। जब उम्मत पुलसिरात पर आएगी तो

अल्लाह का नबी पुलसिरात का पाया पकड़कर खड़े हो जाएंगे और कहेंगे ﴿يارب سلم سلم﴾ ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को पार लगा दे-पार लगा दे।

﴿وصاحبا كلا ان ساعتها ابدا امنى السلام عليكم ما صر االقدم﴾

मैं अबूबक्र और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी नहीं भूल सकता। जब तक क़लम वाले का क़लम चले, कातिब की किताबत चले, अदीब का अदब चले, लिखने वाले का क़लम लिखता रहे। ऐ मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा आप पर और आपके साथियों पर सलाम पहुँचता रहे। ये शे'र पढ़ा और अपने गिले सुनाए और उठकर चला गया। अत्‌बी को नींद आ गई और सो गए। अचानक हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़्वाब में आ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उठ अत्‌बी! मेरे उम्मती को जाकर पकड़ो और उसे खुशख़बरी दो कि तेरे रब ने तेरी बख़्शिश कर दी और जो दुनिया से जाकर भी अपनी रहमतें नहीं भूला। तुम गुलिस्तान वाले कितने ज़ालिम हो, तुम फ़ैसलाबाद वाले कितने ज़ालिम हो? मैं भी आपके साथ एक ज़ालिम हूँ। मैं और आप हम कैसे ज़ालिम हैं, यह पूरी उम्मत कैसी ज़ालिम है जो ऐसे नबी के तरीक़ों को छोड़कर पता नहीं कहाँ जा रहे हैं और क्यों जा रहे हैं जबकि क़यामत का डंका नहीं बजने को आ चुका है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था जब देखो माँओं से औलाद नौकरों की तरह सुलूक करे और अरब लम्बी लम्बी बिल्डिंगे बनाएं तो समझना क़यामत आने को है। अब

क़यामत आने को है। अब क़यामत सिर पर आ चुकी है। देखो यह नौजवान अपनी माँओं के साथ क्या सुलूक करते हैं? कैसे बदतमीज़ी के साथ बोलते हैं? वह देखो दुबई में और इमारात में सऊदिया में अरबों ने कितनी लम्बी लम्बी बिल्डिंगें खड़ी रक दी हैं। बात दूर नहीं है शाम हो चुकी है, दिल ढल चुका है, सूरज मग़रिब के किनारे तक पहुँच चुका है पीला नहीं पड़ा, सुर्ख़ हो चुका है।

आजकल यह कहानी ख़त्म होने वाली है।

﴿من مات فقد قامت قيامته﴾

बाक़ी जो मर गया उसकी तो क़यामत आ ही गई।

अल्लाह का खाकर उसी के बाग़ी मत बनो

मेरे भाईयो! लिहाज़ा उसके लिए तैयारी करो। मेरे पास कोई मज़मून नहीं है मैं एक ही फ़रियाद हर जुमा को करता हूँ तौबा कर लो तुम्हें अल्लाह का वास्ता तौबा कर लो। अपने अल्लाह को मना लो उस ख़ालिक़ मालिक उस मोहसिन व राज़िक़, उस लतीफ़ ख़बीर, उस हन्नान व मन्नान, उस रहीम व करीम के बाग़ी न बनो और उस कमली वाले के बाग़ी न बनो। वह जिस नबी ने पेट पर पत्थर बाँधे तुम्हें खिलाने के लिए, जो खजूर की शाखों के घरों में ज़िन्दगी गुज़ार गया तुम्हें अच्छे घरों में बिठाने के लिए, जो अपनी औलाद को दुख-दर्द की भट्टी में धक्का दे गया अपनी उम्मत की औलाद को सुख देने के लिए, कोई नहीं है जो औलाद के लिए दुआ करता हो तंग दस्ती की हमें रोका तंग दस्ती न

मांगना, फ़क्र व फ़ाक़ा मांगना, शुक्र मांगना, फ़राख़ी मांगना और अपनी औलाद के लिए देखो क्या कह गया।

﴿اللهم اجعل رزقها لمحمد قوتا﴾ ऐ अल्लाह! आले मुहम्मद की रोज़ी थोड़ी कर दे।

जन्नत के सरदारों की फ़ाक़ा भरी ज़िन्दगी

जिससे बेहतर कोई आल नहीं जिससे बेहतर कोई घर नहीं वह ऐसे अहले बैत वे ऐसे रसूल हैं जिनके लिए अल्लाह तआला ने जन्नत के वह दर्जात मुक़र्रर किए कि हुज़ूर की बीवियों को हमारी माँएं बना दिया, औलाद को जन्नत का सरदार बना दिया। हसन रज़ियल्लाहु अन्हु, हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जन्नत के नौजवानों के सरदार, फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार, अली रज़ियल्लाहु अन्हु का घर नबी के घर के सामने इतने बड़े घर के लिए कह रहा है या अल्लाह उनकी रोज़ी तंग कर दे, गुज़ारे की कर दे, क्यों! क्यों! क्यों! ताकि मेरी उम्मत यह न कह सके कि अपनी औलाद के तो मज़े करवाए (और) हमें देखो धक्के दे गया।

और उसने अपनी औलाद को दुखों के हवाले कर दिया। मासूम बच्चों के गले कट गए। हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर नेज़े पर चढ़ गया। हाय! हाय! यह करबला ऐसे नहीं हुई। यह आपको तसल्ली देने के लिए हुई है कि रोटी पर बिक न जाना, हुकूमतों पर बिक न जाना, घरों पर बिक न जाना, यह ज़र-ज़मीन पर बिक न जाना। देखो! देखो! मेरी औलाद कैसे नेज़ों पर चढ़

गई बिके नहीं। उनके जिस्मों को घोड़ों से रौंदा गया पर वे बिके नहीं। वे जान की बाज़ी हारकर आख़िरत की बाज़ी जीत गए। वह सिर नेज़ों पर चढ़ाकर अल्लाह के अर्शों में अपना नाम, आसमानों पर अपना नाम, हमेशा के लिए लिखवा गए तो देखना देखना पैसे के गुलाम न बनना। चीज़ों के गुलाम न बनना। इस मिट जाने वाली दुनिया के पीछे अपने मालिक को नाराज़ न कर देना।

रूठे हुए आक़ा को मना लो

इसलिए मेरे भाईयो! मेरे पास तो काई मज़मून नहीं। मैंतो हर बात यहीं पर ख़त्म करता हूँ। अरे तौबा कर लो भाईयो! तौबार कर लो! अपने अल्लाह को मना लो। वह ऐसा करीम है एक साल नहीं हज़ार सला नहीं कराड़ों साल, दस करोड़ साल अगर गुनाह कर भी लोगे, आसमान गुनाहों को पहुँचा दोगे फिर एक दफ़ा कह दो या अल्लाह! आ गया हूँ माफी मांगने, माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला कहता है जाओ मैं ने माफ़ कर दिया।

माँ नाराज़ हो तो उसको मनाने जाओ तो वह मुँह इधर-उधर करके बैठ जाती है कि मेरी अच्छी तरह मिन्नतें करे, बाप को मनाने जाओ तो वह मुँह दूसरी तरफ़ फेरकर बैठ जाता है, पाँव पकड़याता हे कि मेरी अच्छी तरह मिन्नतें करें और भाई को मनाने जाओ तो वह उठकर चल देता है कि मेरे पीछे आकर मनाओ, पड़ौसी को मनाने जाओ कुंडा नहीं खोलता, दरवाज़ा नहीं खोलता और अल्लाह को मनाने जाओ तो अल्ला क्या करता है? अल्लाह की अज़मत जिसको न नबियों की ज़रूरत न फ़रिश्तों की ज़रूरत,

न अर्श की ज़रूरत, न ज़मीन व आसमान की ज़रूरत, न जन्नत की ज़रूरत, न जहन्नम की ज़रूरत, न काएनात की ज़रूरत।

वह मौजूद था, मौजूद है और मौजूद रहेगा। शुरूआत से पाक, आख़िर से पाक, ग़नी, समद, अहद, ﴿الله الصمد لم يلد ولم يولد ولم يكن له كفوا احد﴾ जिस रब की यह सिफ़त हो।

उसको एक बन्दा मनाने जा रहा है। सारी ज़िन्दगी गुनाह करके धरती को काला कर दिया है। आज वह अल्लाह को मनाने जा रहा है तो अल्लाह तो ज़्यादा दरवाज़े बन्द करता, अर्शों से और ऊपर चला जाता, मुँह फेरकर बैठ जाता।

मनाओ लम्बे-लम्बे सज्दे कर तुमने पचास साल नाफ़रमानी की, दस साल नाक रगड़ों तब तुझे माफ़ करूंगा। अल्लह यह किया करता। यह मनाने जा रही है अल्लाह की बन्दी सारी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़ारकर आज अल्लाह को मनाने जा रही है यह अल्लाह का बन्दा गुनाहों में लिथड़ा हुआ गुनाहों की गंदगी में लिथड़ा हुआ आज अल्लह को मनाने जा रहा है तो अल्लाह तआला क्या कहते हैं?

﴿ومن تقرب الى تلقيته من بعيد.﴾

जो मेरी तरफ़ बढ़कर आता है तौबा को आता है, मैं अर्शों से नीचे उतरकर आगे बढ़कर उसका इस्तिक़बाल करता हूँ। आज तौबा कर लो। अल्लाह आगे बढ़कर तुम्हारा इस्तिक़बाल करेगा और जो मनाने न आए उसके पास भी कभी कोई गया कि मुझे मनाओ? कभी बाप औलाद को कहता है कि मुझे मनाओ, कभी माँ कहती है कि बच्चों मुझे मनाओ और अल्लाह क्या कहता है

﴿ومن اعرض عني ناديته عن قريب﴾ और जो मुझे मनाने नहीं आता मैं उसके पास खुद चला जाता हूँ।

मेरे बन्दे क्या मेरे सिवा तेरा कोई और रब है? क्या मेरे सिवा तेरा कोई और मालिक है? मेरे बन्दे तू कहाँ जा रहा है? देख तो मैं आ गया, मैंने उसे अपनी बांहों में ले लिया। अपनी रहमत की चादर में ले लिया, तू कहाँ जा रहा है? क्या मेरे सिवा कोई और रब है तुझे पनाह देने वाला? मेरे जैसा कोई नहीं कि एक नेकी को दस गुना करके दूँ और जितना चाहे बढ़ा दूँ जबकि तेरे गुनाह को एक ही लिखकर जब चाहूँ माफ़ कर दूँ। क्या ऐसा रब तुम्हें कोई मिलेगा?

चौबीस घंटे अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती

तो मेरे भाईयो! सब अल्लाह के दरबार में तौबा करो। आज अल्लाह हम से रूठा हुआ है। रातों को रोने वाले चले गए। रातों को गाने सुनने वालों से जग भरा हुआ है, सारी रात केबिल चलता है और गंदे नंगे नाच देखे जाते हैं। हाय! इस क़ौम को ऐटम बम मारने की ज़रूरत नहीं हे यह तो मरे पड़े हैं। जिस क़ौम का नौजवान सारी रात नंगे नाच देखे उन्हें मारने की क्या ज़रूरत है वे तो पहले ही मरे पड़े हैं। उन्हें बेचने की क्या ज़रूरत है वे तो पहले ही बिके पड़े हैं। तो मेरे भाईयो! अल्लाह के दरबार में तौबा करो। आज उसको मनाकर उठना, ऐसे न चले जाना, राज़ी करके उठना। तौबा में पक्कापन होगा जब अल्लाह की राहों में फिरोगे,

फ़ैसलाबाद छोड़ोगे, निकलो तबलीग़ में। इससे बड़ा कोई काम नहीं हो रहा है। इस वक़्त में किसी अक़ीदत की वजह से नहीं कह रहा हूँ कि मैं तबलीग़ की वजह से मिम्बर पर पहुँचा हूँ। मैं आपको बसीरत से कह रहा हूँ। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ तौबा करो और इस रास्ते में निकलो ऐसा न हो कि ग़फ़लत में रहें और लेने वाला आए और लेकर चला जाए और पीछे हम अफ़सोस में हाथ मलते रह जाएं। फिर कोई अफ़सोस फ़ायदा न देगा। इससे पहले ज़िन्दगी की बाज़ी पलट जाए तौबा कर लो। भाईयो! तौबा करो, अपने रब को मनाओ। वह तो पूछता भी नहीं कि आइन्दा तो नहीं करोगे। वह कहता है जाओ माफ़ कर दिया फिर वल्लाह! अल्लाह के रास्ते में इससे ज़्यादा इस वक़्त अल्लाह के क़रीब तक पहुँचाने वाला कोई रास्ता नहीं, कोई काम नहीं है।

तौबा कर लो! यह न हो वह अज़ाब का कोड़ा बरसा दे

मेरे भाईयो! इन्सानों को भी हिदायत मिल जाएगी। इसलिए अपनी ज़िन्दगियों को खपाओ। आज घरों में बैठने का वक़्त नहीं रहा। मैं आसमान के तेवर बदले हुए देख रहा हूँ, ज़मीन की गर्दिश को मैं पलटता हुआ देख रहा हूँ। लगता है कि जैसे अल्लाह का घेरा तंग हो रहा है। यह ज़मीन बहुत रो चुकी है।

या अल्लाह! अब मैं और ज़िना नहीं सह सकती, और सूद नहीं सह सकती, अपने ऊपर और ज़ुल्म सितम नहीं सह सकती, और माँ-बाप की नाफ़रमानियाँ, गाने-बजाने नाचघर, हर जगह

नाचघर बन गई। जहाँ केबिल है चल रहा है वह नाचघर नहीं तो और क्या है। यह ज़मीन की फ़रियाद जल्दी ही सुनी जाएगी। इसका रोना जल्दी सुना जाएगा, इन हवाओं का रोना अल्लाह तआला जल्दी ही सुनेगा।

यह धरती अल्लाह की है। इसे अल्लाह ने पाक बनाया है। काएनात का ऐटमी ताक़त बन जाना। उसके लिए ऐटम राकेट पत्थर बराबर, आज और कल बराबर, गुज़रा और मौजूद बराबर आने वाला बराबर। उसके लिए जिब्राईल और च्युंटी बराबर, उसके लिए इज़राईल पतंगा बराबर, उसके लिए अर्श और पत्थर बराबर। वह अल्लाह अल्लाह है। अगर यह धरती अल्लाह की है तो इसके पाक होने का वक़्त आ चुका है, अगर यह हवाएं अल्लाह की हैं तो उनके धुलने का वक़्त आ चुका है, अगर यह फ़िज़ा अल्लाह की है तो उसके साफ़ होने का वक़्त आ चुका है। इससे पहले कि अल्लाह के नक़्क़ारे पर चोट पड़े और अज़ाब का कोड़ा घूमे ﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب﴾ इससे पहले कि अल्लाह के अज़ाब के कोड़े निकलने लगें और उसकी तलवार मियान से बाहर आए भाईयो होशियार हो जाओ। अल्लाह के अज़ाब का शिकंजा हमारी तरफ़ बढ़ रहा है। इससे पहले कि यह हो लौट जाओ! लौट जाओ! लौट जाओ! तौबा कर लो! अपने रब को मना लो। मेरे पास इसके सिवा कोई पैग़ाम नहीं है। न मुझे सियासत का पता है, न मुझे बाज़ार का पता है। मुझे इतना पता है कि मैं और आप नुक़सान में हैं। हम अल्लाह को नाराज़ करके जो जी रहे हैं यह ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं है। यह जीना कोई जीना नहीं है जिसमें न अल्लाह का ख़्याल हो न उसके नबी का

ख़्याल हो।

मेरे भाईयो! तौबा करो अपने अल्लाह को राज़ी करो। करते रहो। यह नहीं कि एक दफ़ा तो कह दो या अल्लाह मुझे माफ़ कर दो और उसके बाद छुट्टी। अक्सर नौजवान बैठे हैं। यह तुम्हारी उम्र है तौबा करने की और ऐसे रहो कि तुम्हारे दामन पर गुनाहों की स्याही का एक छींटा बाक़ी न रहे। एक धब्बा न रहे और अल्लाह खुश होकर अर्श पर ऐलान कर दें कि मेरे बन्दे ने तौबा कर ली और मैंने उसे माफ़ कर दिया।

﴿و آخر دعونا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

O O O

पॉप सिंगरों से ख़िताब

الحمد لله رب العالمين. والصلوة والسلام علىٰ رسوله الكريم
وعلىٰ آله واصحابه اجمعين امابعد.

तौबा करो

यह सारे महल मिट्टी के खंडर हैं और टाइलें लगी हुई हैं। संगमरमर के ऊपर ग्रेनाइट लगा हुआ है। वह भी तो मिट्टी है। मिट्टी पालिश करके नाईट बनाया और फिर कुछ साल बाद जनाज़ा उठा और खुद जाकर क़ब्र के देस में, अंधेरे की काल कोठरी में, शहरे ख़ामोशां का शहरी बनकर मिट्टी की चादर ओढ़कर हमेशा के लिए सो गया और वह घर वालों के लिए छोड़ गया और पीछे औलादों में लड़ाईयाँ शुरू हो गयीं। यह हिस्सा मेरा, यह हिस्सा मेरा।

﴿كل بيت من قالت سلامته يوم ستبدلون.﴾

कोई घर कितना सलामत रहे। एक दिन ऐसा आता है कि मकड़ियों के जालों के सिवा कुछ नहीं बचता और हवाओं की संसनाहट के सिवा कुछ नहीं बचता और अल्लाह के घर में एक ईंट सोने की एक ईंट चाँदी की, एक ईंट ज़मुर्रद की, एक ईंट याक़ूत की, एक मोती की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और

अल्लाह तआला ने कुछ महल ऐसे बनाए हैं जो हवाओं में उड़ते रहते हैं। पूरा महल हवा में उड़ रहा है जैसे बादल।

जन्नत में मछली और बैल का मुक़ाबला

मेरा एक दफ़ा बयान हुआ पहलवानों में। उनकी अक़्ल वैसे ही कमज़ोर हो जाती है। दवाएं और गिज़ाएं खा खाकर। मैंने सोचा क्या बयान करूं? बड़ा परेशान हुआ। अल्लाह मैं इनको क्या सुनाऊँ। जैसे ही मैं मिम्बर पर बैठा अल्लाह अचानक एक हदीस याद दिला दी कि जन्नत में जब अल्लाह पाक दाख़िल करेगा उससे पहले सारे जन्नत वालों को बैल और मछली की कुश्ती दिखाएगा। यह बैल यहाँ का नहीं। यह वह मछली नहीं जो दुनिया के बाज़ार में पड़ी है और बदबू फैल रही है। यह वह नहीं। सिर्फ़ नाम अल्लाह तआला ने इस्तेमाल किए हैं वरना हक़ीक़तें उनकी कुछ और ही हैं। फिर उनकी कुश्ती होगी फिर अल्लाह उनके कबाब बनाकर तमाम जन्नत वालों को नाश्ता करवाएगा। फिर उसके बाद कहेगा कि अपनी-अपनी जन्नत में चले जाओ। मुझे वह हदीस याद आ गई। मैंने कहा भाई जन्नत में जाने का सबसे ज़्यादा मज़ा तुमको आएगा। वे सारे मुझे देखने लगे जैसे आँखों से सवाल कर रहे हों कि वह कैसे? मैंने कहा जो सबसे पहला काम जन्नत में होगा वह कुश्ती है।

वह तुम जानते हो हम तो जानते नहीं दाँव क्या है? पेच क्या है? पटख़ा क्या है? जब कोई मछली दाँव लगाएगी तो सबसे ज़्यादा तुम कुर्सियों से उछल उछलकर दाद दोगे वाह! वाह! तुमने

लाहौर के सारे अखाड़े याद आ जाएंगे और जो कोई बैल दाँव लगाएगा तो सबसे ज़्यादा जन्नत का मज़ा तुम्हें आएगा और सबसे ज़्यादा लुत्फ़ कुश्ती का तुम उठाओगे। हमें इसका कुछ पता नहीं तो अल्लाह जन्नत के दाख़िले पर उनके कबाब खिलाकर कहेगा जाओ और आज के बाद भूख भी ख़त्म, प्यास भी ख़त्म। हज़ारों साल हों कोई हर्ज नहीं। खाओ तो लाखों साल खाओ। कोई परवाह नहीं खाओ।

बन्दों के हक़ अदा करने में कोताही से बचो

आज इस मज्लिस से तौबा करके उठो जैसे भाई अकबर ने की। तुम भी तौबा करो। यह दर व दीवार को गवाह बनाओ कि या अल्लाह आज से वह होगा जो तू कहेगा। या अल्लाह मेरी तौबा। नियत करते हो सब इसकी। एक बार सब कहो या अल्लाह मेरी तौबा। एक दफ़ा और कह दो या अल्लाह मेरी तौबा। यह दर व दीवार गवाह बन गए, यह माहौल गवाह बन गया और अगर यह तौबा सच्ची है तो आपको मुबारक हो। अल्लाह की क़सम! आप अब ऐसे बैठे हो जैसे माँ के पेट से निकले। सारे गुनाह माफ़ हो गए। हक बाक़ी रह गया। हक़ तलफ़ी माफ़ हो गई। नमाज़ छोड़ी तो गुनाह माफ़ हो गया मगर क़ज़ा बाक़ी है। किसी का हक़ मारा था गुनाह माफ़ हो गया मगर हक़ की अदाएगी बाक़ी रह गई।

भाईयो! जिस तरह इस फ़िज़ा ने गुनाह देखे इसी तरह इस फ़िज़ा को तौबा दिखाओ। फ़रिश्तों को ख़ुश कर दो। या अल्लाह!

हम तेरे दरबार में तौबा करते हैं। हाँ मिलादुन्नबी का चश्न मनाएं।

तौबा के साथ हम मिलादुन्नबी को ज़िन्दा करें। तौबा के साथ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढलने के साथ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत को ज़िन्दा करने के साथ और आप सिर्फ़ स्टेज पर बयान करने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे, आप सिर्फ़ किताबों में लिखे जाने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे, आप सिर्फ़ मौज़ू सुख़न बनने के लिए तशरीफ़ नहीं लाए थे बल्कि आप इन्सानियत के धारे को अल्लाह की तरफ़ मोड़ने के लिए आए हैं।

हम आज के बाद वह करेंगे जो अल्लाह का महबूब चाहता है। तबलीग़ इसको सीखने की मेहनत है। यह वह मुबारक मेहनत है जिसको अल्लाह ने सदियों के बाद ज़िन्दा किया और अल्लाह ने आहिस्ता आहिस्ता इसे फैलाकर उम्मत के जितने तब्क़े हैं दुनिया के छः बर्रे आज़म के मुसलानों को मुतवज्जेह किया और इस उम्मत को शान दी तो इसी काम का वजह से दी। देखो! हमारी उम्र थोड़ी मगर सवाब ज़्यादा है।

एक आदमी काम ज़्यादा करे उसे तंख़्वाह कम मिले, एक आदमी काम कम करे उसे तंख़्वाह ज़्यादा मिले। काम भी वही हो तो हमारी डयूटी घटा दी, उम्र घटा दी, इबादत को उनसे कम कर दिया। पहले वालों को कहा तुम तीन सौ साल इबादत करो फिर तुम्हारा फ़ैसला करूंगा, चार सौ साल करो, दो सौ साल करो फिर उनको मौत आई। फिर फ़ैसला करूंगा। हमारे लिए फ़ैसला जल्दी कर देते हैं। पचास साल, साठ साल, बीस साल।

क़ौमे आद की बुढ़िया का शिकवा

क़ौमे आद में एक बूढ़ी अम्मा थी। उसका बेटा मर गया। उसकी उम्र तीन सौ साल थी। सिरहाने बैठे हाय बच्चा! हाय बच्चा! न खाया न पिया न तूने जहान देखा न तूने दुनिया देखी। हाय! हाय! तू ऐसे ही दुनिया छोड़ गया। एक ने कहा अम्मा एक उम्मत आने वाली है। जिसकी कुल उम्र साठ सत्तर साल होगी। वह हैरान होकर बोली क्या वे घर बनाएंगे? कहा हाँ वे घर बनाएंगे बल्कि कालोनियाँ बनाएंगे। वह कहने लगी अगर मेरी उम्र इतनी होती तो मैं एक सज्दे में गुज़ार देती। अब बन्दगी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी सी, डयुटी उनकी ज़्यादा हमारी थोड़ी सी, अज्र हमारा ज़्यादा मर्तबा हमारा, मक़ाम जन्नत में हम पहले जाएंगे। दरवाज़े से हम पहले गुज़रेगें, हमारे बग़ैर कोई उम्मत जन्नत में नहीं जा सकती। इस बुलन्दी की वजह यह तबलीग़ का काम है।

यह काम किसी उम्मत को नहीं मिला। हमें मिला। किसी क़ौम को नहीं मिला हमें मिला।

﴾كنتم خير امة﴿ तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो। शाब्बाश अल्लाह दे रहा है। किस बात पर? ﴾اخرجت للناس﴿ तुम निकाले गए हो। क्यों? ﴾للناس﴿ लोगों को नफ़ा पहुँचाने के लिए। कौन सा नफ़ा? ﴾تامرون بالمعروف﴿ भलाईयों को फैलाते हो ﴾تنهون عن المنكر﴿ और बुराईयों को रोकते हो ﴾وتومنون بالله﴿ और उसका सिला सिर्फ़ अल्लाह से लेते हो। इसका सिला किसी और से नहीं लेते।

इस काम पर अल्लाह ने इसी उम्मत के कई दर्जे बुलन्द किए।

एक तो यह कि हमको सबसे आख़िर में और जन्नत तक इन्तेज़ार थोड़ा होगा और दूसरे हमें थोड़ा वक़्त दिया उनको ज़्यादा वक़्त दिया और (हमारा) बदला ज़्यादा कर दिया और तीसरा एहसान यह किया कि दूसरी उम्मतों की कमियाँ हमें बतायीं।

फ़िरऔन ने यह किया, शद्दाद, क़ारून, हामान, नमरूद ने, क़ौमे सबा ने, क़ौमे शुऐब ने, क़ौमे लूत ने, क़ौमे सालेह ने, क़ौमे आद ने और क़ौमे समूद ने, क़ौमे नूह ने। उन्होंने यह यह किया और मैंने उन्हें ऐसे मारा।

उनको मर्दों की बुराईयाँ बतायीं उनकी औरतों की। लेकिन जब हमारा नम्बर आया तो हमारे ऊपर चादर डाल दी कि हमारे गुनाह बताए कोई नहीं। हमारे बाद कोई नहीं है और क़यामत के दिन हमारे नबीकहेंगे या अल्लाह मेरी उम्मत का हिसाब मुझे दे दे।

तो अल्लाह फ़रमाएगा क्यों? आप लेंगे तो आपको उनके गुनाहों की वजह से शर्म आएगी। मैं आपको भी नहीं देता। मैं चादर के अन्दर इनका हिसाब लेता हूँ। कमाल है भाई! कमज़ोरियाँ और दरगुज़र क्यों? किस वजह से? जब जो नौकर अच्छा काम करता है तो हम उसकी ज़ाती बुराईयों से दरगुज़र कर जाते हैं। जब नौकर मालिक के साथ वफ़ादार होता है तो मालिक उसकी ज़ाती कमियाँ दरगुज़र कर देता है।

इस उम्मत पर अल्लाह तआला ने काम नबियों वाला डाल दिया। बोझ नबियों वाला, जाओ मेरे पैग़ाम को दुनिया में फैलाओ तो उनकी ज़ाती ग़लतियों से अल्लाह तआला ने ऐसे दरगुज़र किया कि अल्लाह तआला ने क़यामत के दिन भी उनके गुनाहों

पर पर्दा डाल दिया और इस उम्मत के नख़रे उठाए। दूसरी उम्मतों का मुजरिम तौबा करता है तो अल्लाह कहता है कत्ल करो अगर पकड़ा जाऐ तो कत्ल करो। इस उम्मत का मुजरिम कहता है या अल्लाह मेरी तौबा। अल्लाह कहता है जाओ माफ़ कर दिया।

पहली उम्मतों के लिए कपड़े गंदे हो जाते तो काट दो, खाल पर लग जाए तो खुर्चो-खुर्चो पानी से पाक नहीं होगा। इस उम्मत को पानी भी नहीं मिला तो फ़रमाया मिट्टी मुँह पर मलकर पाक हो जावे। तैय्यमुम क्या है? मिट्टी पर हाथ मारो फिर हाथ मारो और चल भाई यह किसी उम्मत को अल्लाह ने नहीं दिया।

हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्ल की हाजत हो गई। सोच में पड़ गए कि वुज़ू तो यूँ होता है मगर तैय्यमुम का मालूम नहीं था। उन्होंने ग़ुस्ल के तैय्यमुम के लिए यह किया है कि कपड़े उतारकर रेत में लोट-पोट होते रहे। जब मदीने पहुँचे तो फ़रमाया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ग़ुस्ल की हाजत हो गई तो मैंने यह किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ग़ुस्ल के लिए भी दो ज़र्बे ही काफ़ी थीं। एक मुँह पर और एक हाथ पर। तो तू पाक था। कभी कोई मुँह पर मिट्टी मलकर पाक हुआ? तुम मुँह पर मिट्टी मलो मैं तुम्हें पाक करता हूँ।

दुनिया की तारीख़ का अनोखा वाक़िआ

एक बद्दू आया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं हलाक हो गया। आपने फ़रमाया क्या हुआ? उसने कहा रोज़े की

हालत में बीवी के क़रीब चला गया, मेरा क्या बनेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू ग़ुलाम आज़ाद कर कफ़्फ़ारा दे। अर्ज़ किया मैं सिर्फ़ इस गर्दन का मालिक हूँ आज़ाद कैसे करूं? मेरे पास कुछ नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साठ ग़रीबों को खाना खिला। उसने कहा मुझसे ज़्यादा ग़रीब मदीने में है कोई नहीं मैं कहाँ से लाऊँ? फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साठ रोज़े रख। उसने कहा एक रोज़े में चाँद चढ़ाया है साठ रोज़ों को मैं कैसे रखूँगा? कहा बैठ जा तेरा इन्तेज़ाम करता हूँ। वह बैठ गया। इतने में एक अन्सारी आया। वह थैला लेकर आया कि या रसूलुल्लाह! खजूरें सदक़े की हैं। हाँ भाई तुम बैठे हो? फ़रमाया जी हाँ। फ़रमाया ले जाओ और मदीने के साठ फ़क़ीरों में बाँट दो। यह मुजरिम है यह जुर्माना है और यह तरीक़ा। वह कहता है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा की क़सम मदीने में मुझसे ज़्यादा ग़रीब कोई नहीं है। यह जुर्माना मुझे ही दे दो। तो हमारे नबी मुस्कराकर फ़रमाते हैं जा तू ही ले जा लेकिन यह रिआयत तेरे लिए है किसी और के लिए नहीं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की दीन के लिए क़ुर्बानी

दुनिया की तारीख़ में ऐसा नहीं हुआ कि मुजरिम को जुर्माना मिल गया हो। यह इस उम्मत के अल्लाह ने लाड उठाए हैं। इस उम्मत के नख़रे उठाए हैं। क्यों? इसलिए कि यह उम्मत वह काम

करेगी जो किसी नहीं किया। यह उम्मत अल्लाह के पैग़ाम को लेकर दुनिया के आख़िर किनारे तक पहुँचाएगी। बयास्सी साल की मुद्दत में यह पैग़ाम मदीने से मुलतान तक पहुँच गया। नेपाल और कश्मीर तक पहुँच गया। इस रास्ते में असफ़ेहान में हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल हुआ। यह हुआ है। कितने ऐसे सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं जिनके हम नाम नहीं जानते। जिन्हें गुज़रे ज़माने के अंधेरे निगल गए। अल्लाह ही बेहतर जानते हैं कि वे कितने थे?

यह ऐसा नक़्शा बनता है इससे इस्लाम के पौधे निकलते चले गए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा में चन्द हज़ार सहाबा अरब की मुक़द्दस ज़मीन में दफ़न हुए बाक़ी सब बिखरते चले गए जैसे फूल की पत्तियाँ बिखरती चली जाती हैं तो हवा के झोंके महकते हैं तो इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब सहाबा की क़ब्रें फूल की पत्तियों की तरह बिखरीं सारी काएनात के फूल में तौहीद का रस घुल गया। तौहीद की ख़ूबसूरत फ़िज़ा क़ायम हुई और महकती हुई हवा चली और अंधेरों में उजाला हुआ। गुमराही में हिदायत का निज़ाम चला। यह इस उम्मत की ख़ास शान है कि यह अल्लाह के पैग़ामे हक़ को लेकर चलते हैं। आपने मिना की वादी में कहा था—

﴿فليبلغ الشاهد الغائب.﴾

मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो।

भाईयो! भलाईयों का फैलाना बुराईयों से रोकना, मुहब्बत से चलना। एक ज़माना था जिसमें लोगों को सख़्ती से रोकते थे। सख़्ती से रोकने वाले को बुज़दिल कहते है। किसी को क़रीब

करने के लिए पहले दिल तो दो।

जुनैद जमशैद का ढाई करोड़ रुपया ठुकरा देने का वाकिआ

जुनैद जमशैद किस स्टेज का आदमी है? छः साल सिर्फ़ उसको सलाम करते रहे हैं। वह हराम कर रहा है, हमारे सामने गा रहा है लेकिन ताकत, हज़्म की ताक़त नहीं, छः साल चलते-चलते उसने चार महीने लगाए। चार महीने के बाद क्या हुआ? पेप्सी वालों ने ढाई करोड़ की पेशकश कर दी। दाढ़ी मुंढा दी, लबनान पहुँच गया। लबनान में एक लड़की थी नवाल। उसने कहा था मैं गाना गाऊँगी सिर्फ़ जमशैद के साथ। पेप्सी वालों ने दाना डाला और इन्सान कमज़ोर है फिसल गया। ज़रा माथे पर शिकन नहीं आने दिया औरतों की तरह।

भाई बात सुनो! बात सुनो! पता चला वह गया है। मैंने हाजत की नमाज़ पढ़ी, मैंने पचास नफ़ल पढ़े कि या अल्लाह उसे बचा ले! या अल्लाह उसे बचा ले! उसे बचा दे। पता नहीं उसके अन्दर क्या आग लगी? लबनान होते हुए फिर उसने बैग उठाया और कराची वापस। फिर टेलीफ़ोन करके राएविन्ड बुलाया तो कहा मैंने दाढ़ी मुंढा दी है। तो मैंने कहा तो क्या हुआ? तुम आ जाओ इन्सान ही तो है। बहादुर ही तो गिरते हैं मैदान में।

दीन डंडे से नहीं फैला

हमारे पास जादू की पुड़िया तो नहीं है कि सब को खिला दी

जाए अगर मैं आप सबको कहूँ कि कल तक आप सब आलिम बन जाओ वरना सबको लटका दूँगा तो क्या यह मुमकिन है? अगर आप सबको कहूँ कल तक आप सब डाक्टर बन जाओ वरना मैं सबको लटका दूँगा क्या यह मुमकिन है? मुमकिन नहीं। क्योंकि डाक्टरी एक लेबल नहीं एक मेहनत है। इसी तरह मैं कहूँ कि कल तक तमाम फ़ैसलाबाद वाले ठीक हो जाएं वरना मैं सबको लटका दूँगा। यह नामुमकिन है। तक़्वा इतना सस्ता नहीं है, दीन इतना सस्ता नहीं कि डंडे से आ जाएगा।

यह चलने से आता है। रुकने से नहीं जान-माल को खपाने से अल्लाह दिल में ईमान की शमा रौशन करता है। फिर दिल में ईमान की शमा रौशन होती है तो उसे दुनिया के तेज़ व तंद तूफ़ान भी बुझा नहीं सकता। अन्दर रौशन न हुआ तो उसे बाहर की कोई ताक़त रौशन नहीं कर सकती तो जब कोई कुछ करता है तो बहुत से बेदीन लोग दीनदारों से नफ़रत करते हैं।

लोगों के ऐबों को छिपाओ ज़ाहिर न करो

एक सहाबी आकर कहता है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने ज़िना किया है। मुँह से इक़रार करता है लेकिन आपने दूसरी तरफ़ मुँह इधर फेर लिया तूने ज़िना नहीं किया। वह इक़रारी मुजरिम पर आप चादर डालने वाले और हम दूसरों के ऐबों को तलाश करें। यह तबलीग़ी क्या करते है? ये मौलवी क्या करते हैं? ये मदरसे वाले क्या करते हैं? भाईयों तुम बर्बाद हो जाओगे अगर तुम किसी ज़ानी, शराबी को भी हक़ीर समझकर मर

गए तो सारी नेकियाँ बर्बाद हो जाएंगी। इस स्टेज पर नाचने वाली लड़की को भी हक़ीर समझा तो तुम अल्लाह की निगाह में गिर जाओगे। हिक़ारत कबीरा गुनाह है। यह नेक लोगों के गुनाह बता रहा हूँ। हिक़ारत तकब्बुर को साथ लाती है। हिक़ारत और तकब्बुर बहन भाई हैं अगर मैं किसी को हक़ीर समझूंगा तो यक़ीनन मैं तकब्बुर में मुब्तिला हो जाऊँगा।

एक बार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम गुज़र रहे थे। उनके दो साथी भी थे। इतने में उनमें से एक ने हिक़ारत से पीछे देखा तो इसने मुँह यूँ फेरा और बोला बड़े आए नेक लोग नेक पाक बड़े लोगों का इस्तिक़बाल करते हैं। तूने सिर्फ़ यह कहा था तो अल्लाह ने फ़ौरन जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा और "वही" आ गई। तेरे भेजे दो आदमी आ रहे हैं एक साथी है तेरा और एक दुश्मन मुजरिम है। इस मुजरिम से कहो मैंने सारे गुनाह माफ़ कर दिए अमल कर और तेरे साथी को कह कि मैंने तेरी सारी नेकियाँ ख़त्म कर दीं तू देखता है नए सिरे से आमाल कर तू क्या ठेकेदार है? मेरे बन्दों को हक़ीर नज़रों से मत देखो, मुहब्बत दो।

मौलवियों की क़ुर्बानी

भाईयो! धक्के देना आसान है लेकिन इन्सानियत नहीं है। धक्का देना कौन सा मुश्किल काम है? कोई थोड़ा फुके चाहे तबलीग़ी हो या मौलवी अगर यह इल्म वाले न होते तो तुम न तो आज मुसलमान होते और न क़ुरआन सीनों में होता तो क्या हम मुसलमान हैं? तो दुआ क़ारियों को जिनकी तंख़्वाह तीन हज़ार

होती है। दवाई ले सकता है? बेटी की शादी नहीं करनी? तो तीन हज़ार में शादी हो सकती है। इतनी मामूली तंख़्वाह होने पर ज़िल्लत अलग, रगड़े अलग। मौलवी आप तो बड़े लालची हो। तंख़्वाह बढ़ाने को कहो तो कहा जाता है आपको अल्लाह पर तवक्कुल नहीं।

एक डाक्टर का मौलवी पर ऐतिराज़

यह आज पन्द्रह साल पहले की बात है। हम एक दावत में थे। हमारे साथ एक डाक्टर साहब थे। उन्होंने कहा कोई इमाम साहब को समझाए। हमने उनकी तंख़्वाह पन्द्रह सौ की है। वह कहते हैं कि मेरा गुज़ारा नहीं हो रहा है। मेरी तंख़्वाह बढ़ा दें। वह कहने लगे एक साथी क़रीब ही थे कि डाक्टर साहब आपके एक दिन के नाश्ते का ख़र्च पन्द्रह सौ है। वह डाक्टर साहब इस हक़ीक़त के पर्दा उठने पर ऐसे चुप हो गए कि फिर चूँ भी न की। अगर ये लोग न होते तो दीन भी मुश्किल से मिलता। समाज में कोई मक़ाम देने को तैयार नहीं।

इंजीनियर का इश्काल

एक दफ़ा मैं अपने डेरे में बैठा था। एक इंजीनियर आ गया और कहने लगा तबलीग़ वाले ऐसे और तबलीग़ वाले वैसे। जब सारी बात पूरी हो गई तो मैंने कहा भाई बात सुनो। यह हुकूमते पाकिस्तान बड़ी ज़ालिम है लेकिन फिर भी वह इतनी रहम दिल है अपने बच्चों के लिए कि अगर कोई बच्च सौ में से तैंतीस नम्बर

लेकर आए और सरसठ नम्बर ज़ाए कर दे तो उसको भी पास कर देते हैं। मैंने कहा मेरा मामला अल्लाह के साथ है अगर दस बारह नम्बर ले गया तो मैं अल्लाह से कहूँगा ऐ अल्लाह मेरी ज़ालिम हुकूमत पाकिस्तान भी अपने बच्चों को पास कर देती है और मेरा मामला तो रहमान व रहीम अल्लाह के साथ है।

क़यामत के दिन एक आदमी की एक नेकी कम पड़ जाएगी। अल्लाह कहेगा कि तेरी एक नेकी कम पड़ गई है। वह कहेगा मुबारक है तुझे मेरे पास एक ही नेकी है, दोज़ख़ में वैसे ही जाना है यह नेकी भी तुम ले लो। वह लेकर अल्लाह के पास जाएगा खुशी-खुशी कि या अल्लाह मेरा काम बन गया। अल्लाह कहेगा किस तरह? वह कहेगा फ़लां ने मुझे एक नेकी दे दी।

हुस्ने अख़्लाक़ की करामत

एक आदमी इस्लामाबाद में मेरे पास आया। दाढ़ी मुंढी हुई, आँखें झुकी हुई, उठाए न। मैंने कहा क्यों घबरा रहे हो? मैंने कहा खाना लाओ भाई,चाय लाओ भाई। अल्लाह तआला ने कुछ महीनों के बाद ऐसा जमाया कि अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से हज की जमात में दो महीने लगाए। चिल्ला लगाया, मुझ से बड़ी दाढ़ी है, मुझ से बड़ी पगड़ी है, पहले नहीं थी।

मैं फ़ाहिशा से सहाबिया कैसे बनी?

एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना खा रहे थे।

एक फ़ाहिशा औरत गुज़र रही थी। उसने देखा तो कहा औरों को पूछता नहीं कैसी बदतमीज़ी है। आपने कहा आ जा तू भी खा ले। वह आकर बैठ गई। उसने कहा नहीं-नहीं जो तेरे मुँह में है वह मुझे खिला। उसकानसीब ख़ूब है कि आपके मुँह से निकलवाकर खाएगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुँह का निवाला यूँ मुँह में डाल दिया। उसके साथ ईमान भी उसके अन्दर चला गया। एकदम ईमान की दौलत मिल गई और इस तरह कहते कि ओ बदतमीज़ औरत तू मुझसे इस तरह बात करती है तो उसकी किस्मत में दोज़ख़ थी। निवाला मुँह में गया और वह सहाबिया बन गई। फ़ाहिशा से सहाबिया बन गई। एक और शख़्स आप कह रहे हैं कलिमा पढ़ लो, कहते हैं नहीं पढ़ता, कहा कलिमा पढ़ लो, कहते हैं नहीं पढ़ता। सहाबा फ़रमाते हैं छोड़ो गर्दन उड़ा दो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं इसको छोड़ दो। फिर वहाँ से भागे-भागे गए। गुस्ल करके आए और कहा "*ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह*।"

हाँ जहाँ तलवार नहीं चलती वहाँ अख़्लाक़ चलते हैं। मैं तलवार के डर से मुसलमान नहीं हूँ। यह बताना चाहता था कि मेरे क़त्ल का हुक्म हो रहा था मैं मुसलमान नहीं हुआ। मैं बताना चाहता था कि मुझे तलवार ने नहीं जीता इस कमली वाले क़े अख़्लाक़ ने जीता है। तो यह शफ़क़त और सोहबत, इस तरह मेहनत हुई तो उनके दिल खिंचे चले आए। क़रीब आ, क़रीब आ तो मेरे भाईयो! अल्लाह ने हमें यह मुबारक मेहनत दी है। पूरी दुनिया में इसको फैला दो।

सत्ताईस साल से अल्लाह की नाफ़रमानी करने वाले की तौबा का वाक़िआ

हम इंगलैंड गए एक आदमी से मिलने। अन्दर आकर बैठे उसकी बीवी अंग्रेज़ थी। उसने कहो हैलो! तो हमने हाथ यूँ कर लिए (पीछे कर लिए) तो वह आदमी हमसे इतना नाराज़ हुआ कि उसने हमें इतनी गालियाँ दीं कि अल्लाह की पनाह कि मेरी बीवी की तौहीन कर दी कि तुमने उससे हाथ नहीं मिलाया। हम उसे कैसे समझाएं कि पागल हमने तेरी बीवी की इज़्ज़ती की है यह तौहीन नहीं थी। उसने हमारी कोई बात नहीं सुनी। सिर्फ़ रगड़ा देता रहा। कौन हो कहाँ से आए हो? ज़्यादा पैसा है इधर बरतानिया में बेरोज़गारी है मैं लोगों को बाँट दूँ कि किसी का भला हो जाए। मुँह उठाकर चले आते हैं। एक घंटे तक बातें सुनाता रहा। हम चुप करके सुनते रहे।

एक बुज़ुर्ग हमारे साथ थे। मैंने कहा एक मुश्किल मुलाक़ात के लिए जा रहा हूँ क्या करूं? फ़रमाया रउफ़ुर्रहीम पढ़ते रहें। एक घंटे बाद उसका गुस्सा ठंडा हुआ तो मैंने कहा मस्जिद की तरफ़ चलते हैं तो उसने कहा नहीं। मैंने कहा कोई बात नहीं आज नहीं तो कल। फिर टेलीफ़ोन किया पूछा क्या ख़्याल है आएंगे? आ जाएंगे तो बड़ी मेहरबानी होगी। उसने कहा आकर ले जाओ तो आजाऊँगा। मैं जब उसको मस्जिद लेकर आया तो उसने कहा आज सत्ताईस साल के बाद मस्जिद में आया हूँ। वह लाहौर का था। जुमा कोई नहीं, ईद कोई नहीं, सत्ताईस साल तक कोई नमाज़ नहीं पढ़ी। अगर हम उसकी बदतमीज़ी पर कि हमें गालियाँ

दे रहा है छोड़ कर आ जाते तो वह जहन्नम में जाता। तीन चार मुलाक़ातों में तीन दिन दिए तो रो रोकर मेरे क़दमों पर गिरा कि मेरी माँ मरी मैं न रोया, मेरा बाप मरा मैं न रोया। मेरी ज़िन्दगी के सारे आँसू निकल गए हैं और आज इस बात को बाईस बरस हो गए हैं उसकी तहज्जुद क़ज़ा नहीं होती। मालदार आदमी था। उसका अजीब शौक़ था। पन्द्रह लाख की सिर्फ़ अंगूठी पहनता था, सोने की ज़ंजीर पहनता था। सत्ताईस लाख रुपए की ज़कात एक हफ़्ते में पाकिस्तान आकर रिश्तेदारों में बाँटकर चला गया। वह दिन है आज का दिन है न नमाज़ क़ज़ा नहीं हुई, न रोज़ा क़ज़ा हुआ, न तहज्जुद कज़ा हुई तो मेरे भाईयो यह मुहब्बत से लोगों को क़रीब करना है। ज़िन्दगी में बदलाव लाना है, तबलीग़ में मुहब्बत है, हिकमत है, बुज़दिली नहीं है जिससे ये नक़्शे वजूद में आ रहे हैं।

तबलीग़ की मेहनत के नतीजे

मेरे भाईयो! ज़िन्दगी में पलटा खा रही तो भाईयो! मुबारक मेहनत को ग़नीमत समझो। अल्लाह तआला ने इसको हमारे देस में शुरू कर दिया।

हम कुवैत से वापस आ रहे थे। फ़ैसलाबाद के साथियों की जमात थी। फलाईट एक घंटा लेट हो गई। हमने कहा फलाईट क्यों लेट हो गई? तो उन्होंने कहा कनाडा से कुछ पाकिस्तानी आ रहे हैं उनकी वजह से लेट हो गई। हम अगली सीटों पर बैठे हुए थे तो कुछ लोग आए नौजवान बीस-पच्चीस साल की उम्र के एक

दो नहीं तीस नौजवान।

टोपियाँ पहनी हुई थीं कहा कि यह सब कहाँ से आ रहे हैं? कनाडा की वजह से हमारे ज़हन में सूट-बूट, पैंट, कोट टाईयाँ। तो ये सब कहाँ से आए? तो हमने कहा जान-पहचान हो जाए। मैंने कहा पता करो लगता है ये सब राइविन्ड जा रहे हैं। फिर मालूम किया तो मालूम हुआ कि यह सब राइविन्ड जा रहे हैं। छुट्टियाँ थीं और जमात में वक़्त लगाने जा रहे हैं।

तो मेरे भाईयो! अल्लाह तआला ने एक माहौल बना दिया है। सारी दुनिया के पलटने का रुख़ बन गया है।

तो मेरे भाईयो! आज हम सब यह नियत करें कि अल्लाह तआला की राहों में निकलकर वक़्त फ़ारिग़ करें। ये तबलीग़ी जमात को वक़्त नहीं दे रहे हैं और हम अल्लाह और उसके रसूल को वक़्त दे रहे हैं। अल्लाह तआला ने इस उम्मत की तबलीग़ में इसी के मक़सद को रखा है।

तबलीग़ में ख़ामोश इन्क़िलाब आ रहा हैं दिल पलट रहे हैं। इस स्टेज में काम हो रहा है। लाहौर में छः स्टेज हैं, पहले तालीम होती है फिर इन्टरवल में तालीम होती है। पाँच स्टेज ऐसे हैं जहाँ लड़के लड़कियों का हल्क़ा तालीम अलग-अलग लगता है। जमात के साथ नमाज़ होती है। यह ख़ालिद डार जो है ना वह मेरा स्कूल फ़ैला है। उस वक़्त जान पहचान नहीं थी लेकिन तबलीग़ की वजह से मुलाक़ात हो गई। एक वक़्त वह था की ड्रामा से फ़ारिग़ होकर शराब और लड़की की तलाश होती थी और अब यह दौर आ गया हे कि लोटे मुसल्ले की तलाश होती है, नमाज़ पढ़नी है।

उनकी जमात निकलती है तीन रोज़ की बाक़ायदा क़सूर, शेख़ोपूरा, गुजरात के बीच में चलते हैं। रात तक तबलीग़ करते हैं फिर इशा करते हैं फिर इशा के बाद ड्रामें करते हैं फिर आकर मस्जिद में सो जाते हैं।

फ़नकारा की तौबा का वाक़िआ

एक लड़की के बारे में बताया हमारे साथी ने फ़ैसलाबाद से थे। ड्रामे के लिए उसे लाहौर लाते। ड्रामा करके वापस ले जाते तो दो दिन तो गाने लगाए चौथे दिन तुम्हारे बयान की कैसेट लगाई तो उसने कहा यह क्या लगाया है? तो मैंने कहा अगर अच्छा न लगे तो बंद कर दूँ? दस मिनट के बाद मैंने बंद कर दिया तो कहा सुनाओ। फ़ैसलाबाद तुम्हारा बयान चलता रहा। वापस जाने लगे तो अपनी माँ से कहने लगी माँ मैं ड्रामा नहीं करूंगी आज के बाद। माँ ने कहा तो खाएगी की कहाँ से?

उसने कहा मैं भूखी मर जाऊँगी लेकिन आज के बाद ड्रामा नहीं करूंगी। हमारे साथी ने बताया कि वह लड़की कभी स्टेज पर नहीं आई। एक को ऐसे ही क़रीब किया। वह आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटना शुरू हुई। पहले असमत फ़रोशी को छोड़ा फिर बेपर्दगी को छोड़ा, फिर सिर्फ़ ड्रामे पर रह गई, पर्दा शुरू कर दिया, नमाज़ शुरू कर दी और फिर ड्रामा भी छोड़ दिया। फिर एक दिन उसका फ़ोन आया कि आजमेरे घर में फ़ाक़ा है लेकिन मैंने क़सम खाई है।

मैं आज भूखी मर जाऊँगी लेकिन दरवाज़े से बाहर मेरे क़दम नहीं जाएंगे। यह ख़ामोश इन्क़िलाब दिल को पलट रहा है तो मेरे

भाईयो! यह मुबारक काम करते रहो। दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी।

जुनैद जमशेद की तौबा का वाक़िआ

जुनैद जमशेद ख़ानेवाल में मेरे साथ था जो मेरा ज़िला है तो एक जगह उसे बयान के लिए भेजा। वहाँ उसने गाने-बजाने के दौर में गाने गाए थे। आज वह दाढ़ी लकड़ी के साथ। तो उनको कहने लगा आप कहते हैं कि संगीत गाना रूह की ग़िज़ा है अगर गाना बजाना रूह की ग़िज़ा होती है तो मैं कभी न छोड़ता, यह रूह की ग़िज़ा नहीं है, यह रूह को ज़ख़्मी कर देता है, यह रूह का टुकड़े-टुकड़े कर देता है। यह दूधारी तेज़ ख़न्जर है जो रूह को ज़ख़्मी कर देता है अगर गाना बजाना रूही की ग़िज़ा होती तो जुनैद कभी न छोड़ता, नहीं यह शैतान का जादू है। जिस पर वह जादू करता है और इन्सानियत को बेहयाई की आग में धकेल देता है और बेहयाई के हौज़ में नंगा कर देता है। फिर नंगापन तहज़ीब बन जाता है। चादर से बाहर आना तहज़ीब बन जाता है और घुंघरुओं की छन-छन और पायल की झंकार कानों की मौत का सामान बन जाता है।

शैतानी ज़िन्दगी को छोड़ दो

मेरे भाईयो! इन पर बैठकर रोना चाहिए। वह हमारी बेटियाँ हैं, हमारी बहनें हैं। वह ग़लत हाथों में परवान चढ़ीं, ग़लत हाथों में परवरिश पाई है। उनको किसी ने बताया ही नहीं कि यह न कर। फ़ातिमा बेटी थी, ज़ैनब बेटी थी। आएशा एक माँ थी।

ख़दीज़ा भी माँ थी।

उन्हें बताया ही किसी ने नहीं अगर इनको पता चल जाता है तो उनके सिर के बाल कोई न देखता बजाए इसके कि मंज़रे आम पर अपने जिस्म को सरेआम नचाकर इसकी दावत दें। अगर इनको पता चल जाता फ़ातिमा कौन थी? रुकैय्या कौन थी? ज़ैनब कौन थी? सुमैय्या कौन थी? ख़दीजा कौन थी? तो तुम उनके बाल भी नहीं देख सकते थे। कैसा ज़ुल्म है अपनी बेटियों को नचाकर लज़्ज़त हासिल करना फिर कोई मुसीबत आए तो अमरीका को गालियाँ देना शुरू हो जाते हैं। कोई मुसीबत आए बरतानियाँ को गालियाँ शुरू हो जाती हैं। कोई दुख आए यहूदियों को गालियाँ, इसाईयों को गालियाँ। ठीक हे वह हमारे दुश्मन हैं, शुरू से दुश्मन हैं, साँप का काम डसना है। यह कोई नई बात नहीं है। तुम अपना बचाओ करो। बिच्छू का काम डंक मारना है।

मेरे भाईयो कोई हमारी नस्ल नाचने में लग जाए क्यों?

हमारे कारोबार सूद पर होने लगे क्यों?

हमारी बेटी के सिर का दुपट्टा उतर गया क्यों?

नौजवानों के हाथों में गिटार आ गए, कुरआन क्यों नहीं आया?

ताजिर पैसे के पुजारी बन गए, सट्टा, झूठ, कारोबार बन गए क्यों? दयानतदार अफ़सर को लान-तान पड़ने लगी। जो दयानतादार है उस अफ़सर का तबादला होने लगा। कभी बच्चे को दवाई दिलानी है। पैसा कोई नहीं, हराम खाने वाले के एकाउंट भरे पड़े हैं। अल्लाह नहीं है? क्या सो गया है? क्या फ़ैसला नहीं

करेगा? क़यामत नहीं आएगी? हश्र क़ायम नहीं होगा? क्या जन्नत नहीं रही? क्या जहन्नम नहीं भड़क रही? तौबा करो।

तन्हाइयों में जहन्नम का मुराक़बा करो

मेरे भाईयो! एक गर्म निवाले ने मुझे चार दिन से तड़पाया हुआ है। जहन्नम में ऐसा पानी पीने के लिए दिया जाएगा कि जिसका एक लोटा समुंद्र में डाला जाए तो सात समुंद्र उबलने लग जाएं। हम कहाँ जा रहे हैं? ऐसा खाना खाने को दिया जाएगा जो हलक़ में फंस जाएगा। अरे मैं कैसे समझाऊँ और कैसे बताऊँ कि हम किधर जा रहे हैं?

मेरे भाईयो साल शुरू हो चुका है, महीना ख़तम होने वाला है। आज सत्ताइस तारीख़ हो गई तीन दिन बाक़ी हैं नया साल शुरू होने में। तौबा करें। अल्लाह पर क़ुर्बान होना सीखो, अल्लाह पर मिटना सीखो। अल्लाह की इताअत में ज़िन्दगी गुज़ारो और जो पीछे गुज़री है अल्लाह से माफ़ी मांग लो। मेरे नबी ने फ़रमाया सबसे थोड़ा अज़ाब किसको होगा जिसके पाँव में जूता होगा, टख़ने उसके अन्दर होंगे, आग का जूता होगा जिसकी वजह से उसका दिमाग़ आग की तरह से खौलेगा तो वह कहेगा कि मुझे दोज़ख़ में सबसे ज़्यादा अज़ाब हो रहा है हाँलाकि उसे सबसे थोड़ा अज़ाब हो रहा होगा तो दर्दनाक अज़ाब वाले तो ख़ून के आँसू रोएंगे। मर्द-औरत सूद खाते हैं, माँ-बाप को तड़पाते, शराबें पीते, ज़िना करते, क़त्ल करते, नाच-गाने के रसिया होकर, गाली-गलौच करके जहन्नम में गए। आख़िरी ठिकाना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मत के ग़म में रोना

इसमें जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने आकर कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "हाविया" में मुनाफ़िक़, "हुतमा" में इसाई और "जहन्नम" कहकर चुप हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बोलते नहीं हो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! जहन्नम में आपकी उम्मत के गुनाहगार होंगे। वे गुनाहगार जो तौबा के बग़ैर मर गए। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़श खाकर गिर गए। वह जहन्नम आँसू शुरू, रोना शुरू, खाना छोड़ दिया, बोलना छोड़ दिया और नमाज़ पढ़ाने आते तो रोते हुए आते और रोते हुए जाते। तीन दिन गुज़र गए न बात करें न कलाम।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िदमत अक़दस में हाज़िर होकर दस्तक दी। इजाज़त चाही। इजाज़त नहीं दी। सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु गए इजाज़त मांगी। इजाज़त नहीं दी। हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गए। बेटी अल्लाह के नबी का यह हाल है तू जा तुझे ज़रूर इजाज़त मिल जाएगी।

पूछ तो सही हुआ क्या है? हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा दौड़ी हुई गयीं। दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा कौन है? कहा फ़ातिमा। कहा अन्दर आ जाओ। जब अन्दर दाख़िल हुए तो देखा कि हमारे नबी ज़ार व क़तार रो रहे हैं। क्या हुआ या रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी जान आप पर क़ुर्बान क्या हुआ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्यों रो रहे हैं? आपने कहा फ़ातिमा मुझे जिब्राईल ने बताया कि मेरी उम्मत के मर्द व औरत जो बग़ैर तौबा के मर गए उनको जहन्नम में फेंका जाएगा कितने नौ नौजवान होंगे जिनको फरिश्ते पकड़ेंगे। वह कहेंगे हाय।

अल्लाह को प्यारी है क़ुर्बानी

हाय! मेरी जवानी पर रहम करो। कितने बूढ़ें होंगे जिनको फ़रिश्ते पकड़ेंगे तो वह कहेंगे हाय हमारे बुढ़ापे पर रहम करो। कितनी औरतें होंगी जिनको नंगा करके जब फ़रिश्ते घसीटेगें तो कहेंगे हाय हमारी बेपर्दगी पर रहम करो लेकिन उनसे कहा जाएगा जब रहमान ने रहम नहीं किया तो हम कहाँ से करें।

साल का शुरू है। या अल्लाह! सारे जहान के मालिक हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर कट गया और इब्ने ज़ियाद का तख़्त जम गया। शिमर ने झंडे लहराए और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवासे के टुकड़े-टुकड़े हुए। पलीद शिमर कामयाब हो गया देखिए, पलीद इब्ने ज़ियाद कामयाब हो गया और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी आल-औलाद समेत कुर्बान हो गए। ज़रा इधर देखो। इधर रसूलुल्लाह इस्तिक़बाल में हैं, अली रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल में हैं, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु इस्तिक़बाल के लिए आए हैं, माँ फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बाहें फैलाए खड़ी हैं, जन्नत सजी हुई है। जन्नत के सरदार तो आज आए हैं। सरदार के साथ तो महफ़िल सजती

है। आज जन्नत इन्तिज़ार कर रही है। एक दूल्हा तो आ चुका है। आज दूसरा दूल्हा भी आ रहा है। देखने वालों को नज़र आ रहा है।

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर बुलन्द हुआ। उसका झंडा लहराया। वह तो खुद आज शिमर से सिर ऊँचा है। उसका सिर झंडे पर नहीं है। उसका सिर तो नेज़े पर है। उसका सिर खुद ऐलान कर रहा है।

ख़ौला जब हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु का सिर लेकर आया और रात को अपने तख़्त के नीचे रखकर बीवी को कहा,

"आज एक बड़ी चीज़ लेकर आया हूँ।"

बीवी ने कहा, "क्या लेकर आए हो?"

हुसैन का सिर लेकर आया हूँ। कहा तेरा बेड़ा गरक़ हो जाए। लोग तो सोना-चाँदी लेकर घर आते हैं।

करबला के क़िस्से को गा गाकर मत सुनाया करो

तू आले रसूल में हुसैन का सिर लेकर मेरे घर आया है। मेरे और तेरे बीच हमेशा के लिए जुदाई है। अब यह छत मुझे कभी तेरे बग़ल में लेटे हुए नहीं देखेगी। रूठकर निकल गई और पड़ौस की औरत को बुलाया कि तू मेरे साथ सो। उसने कहा मैंने देखा आसमान से एक नूर आया था जो उसके कमरे में दाख़िल हो रहा था और सफ़ेद परिन्दे उस कमरे का तवाफ़ कर रहे थे। चारों तरफ़ वे परिन्दे घूम रहे थे। कभी-कभी अल्लाह तआला ग़ैब से पर्दे हटा देता है।

फिर कुछ दिनों के बाद अबी ज़ियाद का भी सिर कटकर आया था तो देखने वालों ने देखा कि नूर नहीं आया था। एक साँप आया जो इब्ने ज़ियाद के मुँह में दाख़िल हुआ और नाक से निकल गया। तीन बार मुँह में घुसा और नाक से निकल गया। अभी क़ब्र में जाने से पहले देखा गया। अभी वह मरदूद क़ब्र में नहीं गया तो उसके साथ क़ब्र में क्या हुआ होगा?

आले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ून से दामन रंगीन करने वालों को अल्लाह तआला ऐसे तो नहीं छोड़ देगा। काएनात का मुक़द्दसतरीन ख़ून बहाया गया।

और एक कहानी लिखी गई। इसलिए करबला का क़िस्सा नहीं सुनाता। पैग़ाम सुनाता हूँ पैग़ाम। मुझ से क़िस्सा वैसे भी नहीं सुनाया जाता। न मेरी हिम्मत है न मेरे पास अलफ़ाज़ हैं न मेरे पास सब्र का इतना मज़बूत बंद है कि इसको संभाल कर मैं उसे सारा क़िस्सा सुनाऊँ? इससे बड़ा इबरत का क़िस्सा कोई नहीं है। इस क़िस्से को दस बार भी सुनकर किसी ने सूद छोड़ा? किसी ने गाना छोड़ा? किसी ने दाढ़ी मुढंवानी छोड़ी? किसी बेपर्दा ने पर्दा किया? किसी नाफ़रमान ने माँ के क़दम चूमे, किसी ने बाप के सामने हाथ जोड़े हों? किसी ने भाई से सुलह कर ली हो? किसी हराम खाने वाले ने हराम खाना छोड़ा हो कि कोई तो तौबा करता। कहानी बन गया, क़िस्सा बन गया, अफ़साना बन गया और गा गाकर सुना दिया और रोने वालों ने कुछ दिन रो लिया लेकिन फिर वही रविश, वही सुबह वही शाम।

मैं क़िस्सा नहीं कहता हूँ। मैं पैग़ाम कहता हूँ। क़िस्सा नहीं सुनाता। यह जन्नत का राही है। जन्नत मुन्तज़िर थी, जन्नत का

दूल्हा था। जन्नत में गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने, अली के साथ, हसन के साथ, फ़ातिमा के साथ, जाफ़र के साथ और हमज़ा शहीदों के सरदार के साथ (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजइमईन)। ऊपर इस्तिक़बाल हो रहें हैं नीचे मातम हो रहे हैं। नीचे नाकामी की दास्तान, ऊपर कामयाबी की दास्तान। पैग़ाम यह है कि अल्लाह पर मर मिटो। पैसे के ग़ुलाम न बनो, बीवी-बच्चों के ग़ुलाम न बनो, दरहम और दीनार के ग़ुलाम न बनो, हुकूमत नौकरी चाकरी के ग़ुलाम न बनो। वह करो जो अल्लाह चाहता है। वह न करो जो अल्लाह नापसन्द करता है।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين﴾

○ ○ ○

पत्थर दिल इन्सान

الحمد لله الذى لم يتخذ صاحبة ولا ولدا ولم يكن له شريك فى
الملك ولم يكن لهٗ ولى من الذل كبره تكبيرا ونقدره تقديرا
واشهد ان لا اله الا الله وحده لا شريك له واشهد ان سيدنا
ومولانا محمدا عبده ورسولهٗ ارسله بالحق بشيرا ونذيرا وداعيا
الى الله باذنه وسراجا منيرا صلى الله تعالىٰ عليه وعلى اله
واصحابه وبارك وسلم تسليما كثيرا كثيرا.

اما بعد فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم. بسم الله الرحمٰن
الرحيم. من كان يريد العاجلة عجلنا لهٗ فيها ما نشاء لمن نريد ثم
جعلنا لهٗ جهنم يصلٰها مذموما مدحورا.

मेरे मोहतरम भाईयो और दोस्तो! हम सबसे एक इज्तिमाई जुर्म हुआ है, क़ुसूर हुआ है। इस जुर्म का एहसास भी मिटा। अल्लाह तआला ने इस उम्मत को पैग़ामे हक़ पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अता फ़रमाई थी। जितने यहाँ बैठे हुए हैं। अल्लाह का शुक्र है। सब नौजवान नज़र आ रहे हैं। एक दिन भी किसी का तबलीग़ में नहीं लगा। तलबीग़ तो छोड़ो नमाज़ का एक सज्दा भी कभी नहीं किया।

अल्लाह करे ऐसा कोई न हो? मगर क्या करें। हक़ाएक़ ऐसे हैं कि नज़र चुराना भी चाहें तो नहीं चुरा सकते। जब मस्जिदों को वीरान देखते हैं। बाज़ारों को आबाद देखते हैं और जवानों के

क़दमों को नाच-गाने की महफ़िलों की तरफ़ उठता हुआ देखते हैं तो अपनी आँखों को झुठलाना चाहते हैं लेकिन वे मानती नहीं। कितने ही ज़िना कर लिए लेकिन सज्दा ज़िन्दगी भर नहीं किया। मोमिन माँओं ने जना, मुसलमान माँओं की छातियों से दूध पिया, मुसलमान बापों की पुश्त से निकले। एक सज्दा भी ज़िन्दगी में नहीं किया। कितने हैं जो सिर्फ़ जुमा पढ़ते हैं जो सिर्फ़ ईद पढ़ते हैं, सारा साल छुट्टी।

अहकमुल हाकिमीन अल्लाह, रब्बुल आलमीन अल्लाह दिन में पाँच बार कहता है। इसमें दो बार कहता है ﴿حي على الصلوة﴾ आ जाओ ﴿حي على الفلاح﴾ पाँच अज़ानें दीं और हम तो अल्लाह को नहीं देख रहे। वह क़रीब है देख रहा है। हमारे इतने क़रीब है ﴿اقرب اليه من حبل الوريد﴾ ज़िन्दगी की रग से ज़्यादा क़रीब है।

लोगो! मेरे सामने मुझे कहता है आओ ना मेरे पास और बन्दा ऐसा बैठा हुआ है। कोई कैरम खेल रहा है, कोई ताश खेल रहा है, कोई टीवी देख रहा है, कोई गाना सुन रहा है, कोई नाप-तोल कर रहा है, कोई फ़ाईल लिख रहा है, कोई खाना खा रहा है, कोई चाय पी रहा है।

आओ ना मेरे बन्दे! जो दस बार बुलाने पर भी न आए तो उससे बड़ा घमंडी और कौन होगा? नहीं भाई हम तो मिसकीन हैं। कहाँ मिसकीन हो? तुमने रब की पुकार पर लब्बैक न कहा। तुम से बड़ा घमंडी कौन है? तो मैंने यह कह दिया था कि चाहे उसने ज़िन्दगी भर एक सज्दा भी न किया उसको भी अल्लाह तआला ने चुना है और छांटा है। कभी अपने बारे में भी सोचा करो।

मैंने तुम्हें नबियों वाले काम के लिए चुना है

ये जो इलैक्शन में जीत जाते हैं उसे लोग वोट देते हैं। वह अपने को बड़ा महसूस करता है कि मुझे लोगों ने मेरा चुनाव किया है तो जिसको अल्लाह चुने वह कैसा होगा? लोगों का चुनना तो ग़लत भी हो सकता है मगर अल्लाह का चुनाव ग़लत नहीं हो सकता। तो अल्लाह मेरे बारे में आपके बारे में, सारी उम्मते मुहम्मदिया के बारे में, फ़रमाबरदार, नाफ़रमान, किरदार वाले, आवारा सब मर्दों और औरतों के बारे में अल्लाह तआला कह रहा है ﴿هو اجتبكم﴾ मैंने तुम्हें बिना मुक़ाबले चुना है और ﴿اجتبى﴾ "अजतबा" का मतलब वाज़ेह होगा एक मिसाल से। आप फल की दुकान में जाते हैं। सेब का एक-एक दाना उठाकर देखते हैं जो पसन्द आता है उसे डलवाते हैं जो पसन्द नहीं आता उसे वापस टोकरी में डाल देते हैं। जो अच्छा लगा उसे डाल लिया। जो बुरा लगा उसे वापस कर दिया। मुमकिन है मेरी नज़र ख़ता खा जाए। मेरी छांट ग़लत हो जाए कि मुमकिन है कि मैं सही की बजाए कोई ख़राब दाना डाल दूँ। तो यह सबकी टोकरी से दाना दाना देखता है, परखता है, छांटता है फिर उसे तराज़ू में डालता है। वह दुकानदार कहता है कि आपने तो मेरी क्रेट की जान निकाल दी। तो आप कहते हैं कि अपनी मर्ज़ी का रेट लगा लो मगर चीज़ अपनी पसन्द की लूँगा। यह एक मिसाल है।

अब अल्लाह इस से पाक है मगर हम समझने समझाने के लिए, बात वाज़ेह करने के लिए मिसाले लाते हैं। मैं यह कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नस्ल के

सारे दाने अपने सामने खड़े कर दिए। फिर एक-एक रूह को उठाया। उसे सिर से लेकर पाँव तक देखा, नर की भी, मादा की भी, मर्द की भी, औरत की भी सिर से लेकर पाँव तक जो उसकी नज़रों में जचा उसे अपने महबूब की उम्मत में डाल दिया जो नज़र में नहीं जचा उसे दूसरी उम्मतों में डाल दिया।

मूसा अलैहिस्सलाम को दे, ईसा अलैहिस्सलाम को दे, इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दे, दाऊद अलैहिस्सलाम को दे, यूशा अलैहिस्सलाम को दे दो, हारून अलैहिस्सलाम को दे दो।

जो पसन्द आया उसी के बारे में कहा इसे मेरे महबूब की उम्मत में डाल दो। माशाअल्लाह हज़ारों हज़ारों का मजमा है। कभी हमने अल्लाह से कहा था कि हमें अपने महबूब का उम्मती बना दे। तो हम चुने हुए हैं। हुकूमत के नुमाइन्दे की बेइज़्ज़ती की जाए तो हुकूमत उसे पकड़ती है, गिरफ़्तार करती है कि यह हुकूमत की तौहीन है। मेरे भाईयो इसीलिए जब मुसलमान किसी मुसलमान की तौहीन करता है, ज़लील करता है, माँ-बहन की गाली देता है, ग़ीबत करता है, चुग़ली करता है तो अल्लाह अपनी तौहीन समझता है कि मेरे इन्तिख़ाब में नुक़्ताचीनी करता है, ऐब लगाता है, मेरे इन्तिख़ाब में कमी निकालता है।

चाहे वह नाचने वाला हो, नाचने वाली हो। चुना उसे अल्लाह ही ने है। उसकी ताकत में न था कि वह "ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का बोल लेकर पैदा होता या होती। इसलिए ग़ीबत का गुनाह ज़िना से भी ज़्यादा शदीद है कि ज़िना इन्सान शहवत से मजबूर होकर करता है और ग़ीबत अल्लाह की छांट पर ऐतिराज़ करना है।

तो मेरे भाईयो! हमें अल्लाह ने चुना है, छांटा है, मुन्तख़ब किया है। ﴿هو اجتبكم﴾ तुम्हें चुन लिया है। क्यों चुना है? कि एक नबुव्वत का सिलसिला आ रहा था। उसे लाकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म कर दिया और पूरी दुनिया के इन्सानों को बता दिया कि इनके बाद कोई नबी नहीं है। यह आख़िरी नबी हैं तो सारी दुनिया के इन्सानों को गुमराही की राहों से निकालकर जन्नत की राहों पर डालना इसके लिए ऐसी उम्मत चाहिए थी जिसमें नबियों जैसी सिफ़ात हों। नबी तो न हों, नबियों जैसी सिफ़ात हों।

वह इस ज़िम्मेदारी को उठाए तो इस बुनियाद पर अल्लाह तआला ने इस उम्मत का चुनाव फ़रमाया।

सारी उम्मतों में नबी आए ﴿ولكل قوم هاد﴾ हर क़बीले में नबी आए। हर क़ौम में नबी आए। जब हमारे नबी आए तो अल्लाह तआला ने क़ानून बदला।

﴿تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعالمين نذيرا.﴾

कि यह मेरा नबी आ रहा है। इस पर क़ुरआन को उतारा है।

अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से मिला दो

यह सारी काएनात नज़र आने वाली और पोशीदा सब उसी के लिए है। अब रसूल बनकर आया है। इस क़ानून का तक़ाज़ा था कि आप आज मौजूद होते। कम से कम नूह अलैहिस्सलाम की उम्र तो मिल ही जाती तो हम भी सहाबी हो जाते मगर अभी सवा चौदह सौ साल शुरू हो रहे हैं। पच्चीसवाँ साल अब शुरू हो रहा है और नूह अलैहिस्सलाम ज़िन्दा रहे साढ़े चौदह सौ बरस तो

हम में से बहुत से सहाबी हो जाते। अल्लाह तआला ने इतनी थोड़ी उम्र दी सारी नबियों में और काम इतना लम्बा दिया कि पूरब से पच्छिम और उत्तर से दखिखन जितने मर्द व औरत हैं उनमें तुझे पैग़ाम पहुँचाना है, जितने जिन्नात हैं उनको तुझे पैग़ाम पहुँचाना है।

क़यामत के नक़्क़ारे पर चोट पड़ने तक जितनी इन्सानियत है तू ही उनका रसूल है तो नूह अलैहिस्सलाम की उम्र, सुलेमान अलैहिस्सलाम का तख़्त और ज़ुलक़रनैन का लश्कर देता। आप खुद अपने लश्करों के साथ सुलेमान अलैहिस्सलाम के तख़्त के साथ, तख़्ते सुलेमान के साथ ज़ुलक़रनैनी लश्करों के साथ नूह अलैहिस्सलाम की उम्र के साथ अमरीका, अफ़्रीक़ा, आस्ट्रेलिया में खुद फिरते फिराते लेकिन कितनी थोड़ी उम्र मिली। तिरेसठ साल पाँच दिन और यह उम्र चाँद के हिसाब से है और अंग्रेज़ी महीनों के हिसाब से इकसठ साल दो महीने और तेईस दिन। और घट गए। अंग्रेज़ी में दस दिन घट जाते हैं। और इकसठ साल दो महीने और तेईस दिन इसको दिनों में तक़सीम करें तो बाईस हज़ार तीन सौ तीस दिन और छः घंटे दुनिया में आपकी बक़ा का वक़्त है। इसमें जो आपको हुक्म मिला कि उठो। नबी तो नबी पैदाईशी होता है। उसका ज़हूर बाद में होता है और हमारे नबी का मामला तो और भी अलग है।

आपको नबुव्वत कब मिली?

अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कि या रसूलुल्लाह! आपको

नबुव्वत कब मिली थी? तो जवाब यह था कि चालीस साल की उम्र में, ग़ारे हिरा में, रमज़ान के महीने में मिली थी लेकिन आपने यह जवाब दिया कि

﴿كنت نبيا آدم بين الروح والجسد.﴾

अभी आदम अलैहिस्सलाम की कहानी शुरू भी नहीं हुई थी और मेरा रब मुझे नबी बना चुका था।

तो इसलिए पता नहीं कब कि कब बनाया था? शुरूआत तो है क्योंकि मख़्लूक़ लामहदूद नहीं होती वरना ख़ालिक़ और मख़्लूक़ में फ़र्क़ मिट जाता। फिर वह शुरूआत है कहाँ से? इसे अल्लाह के अलावा कोई नहीं जानता। तो नबुव्वत का ज़हूर हुआ चालीस साल की उम्र में। इक्तालिसवें साल में दाख़िल हो चुके थे और रमज़ान का महीना था और ग़ारे हिरा में हैं और पीर का दिन है।

जब नामूस-ए-आज़म ज़ाहिर हुए जिब्राईल अलैहिस्सलाम तो उस दिन से लेकर दुनिया से जाने तक हुए तेईस बरस वह बनते हैं आठ हज़ार और एक सौ छप्पन दिन। आठ हज़ार एक सौ छप्पन दिनों में सात बर्रे आज़मों को कवर करना है। सातों बर्रे आज़म के उस वक़्त के लोग और क़यामत तक आने वाले लोगों के लिए ईमान और हक़ और दीन के पहुँचाने का निज़ाम बनाया है। इतना लम्बा चौड़ा काम देकर ऐसे फ़क़र की हालत में पैदा किया कि दूध पिलाने वालियाँ मुँह फेरकर गुज़र गयीं कि ग़रीब है, यतीम है, क्या मिलेगा? हमें नहीं चाहिए। वह तो हलीमा का नसीब जागा कि उसकी ऊँटनी भी कमज़ोर थी, उसकी गधी भी कमज़ोर थी कि पहुँचते-पहुँचते देर हो गई और उसकी ख़ानदान

की और औरतें तेज़ सवारियों पर पहले पहुँची और सारे (बच्चे) ले लिए।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूरानी बचपन

दस बच्चे थे उस वक़्त। ग्यारहवें हमारे नबी। सब चले गए, हलीमा भी छोड़कर चली गयीं कि क्या करूं लेकर यह यतीम, ग़रीब, कुछ नहीं मिलेगा। फिर ख़ाली झोली फिरीं और मक्के में कोई बच्चा नहीं। उनके ख़ाविन्द ने कहा ख़ाली क्यों जाती हो? चलो इसको ले लो। यतीम का ले लो तो फिर दोबारा लौटकर आयीं। जिसको दाया दूध पिलाने को तैयार न उसके सिर पर दो जहानों की सरदारी का ताज सजाया जा रहा है। जब आप पैदा हुए वह शान जो सबसे निराली है। पूरे हमल के दौरान हज़रत आमना ने आपका वज़न महसूस नहीं किया। कोई हमल की तकलीफ़ महसूस नहीं की और हर रात नूर ही नूर आसमान से उतरते हुए नज़र आते थे और बारह रबिउल अव्वल आम-उल-फ़ील पीर के दिन बाइस अप्रैल सन् 571 ई० सुबह चार बजकर पैंतालीस मिनट पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए।

मोजिज़ात ही मोजिज़ात

बच्चा जब पैदा होता है तो उसकी नाफ़ माँ की आँत से जुड़ी होती है। उसको काटा जाता है। हमारे नबी जब पैदा हुए तो

आपकी नाफ़ माँ की आँत से जुदा थी। बच्चे का ख़त्ना बाहर किया जाता है। हमारे नबी माँ के पेट से ही ख़त्ना करवाकर आए। आपका ख़त्ना नहीं हुआ। ख़त्ना के साथ पैदा हुए। बच्चे को नहलाया जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो आपके जिस्म मुबारक पर माँ के पेट की गंदगी का एक ज़र्रा न था। धुले धुलाए पाक और जैसे ही आपको रखा गया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़ौरन सज्दे में सिर रखा और फिर यूँ सिर उठाया तो सारा कमरा रौशन हो गया और हज़रत आमना ने सारा जहाँ अपनी आँखों से देखा। दुनिया सिमटकर सामने आ गई। गोद में लिया परेशान हो गयीं कैस बच्चा है? माँ है, औरत है कितने बच्चों को पैदा होते देखा, अपना पैदा हुआ तो हैरान परेशान कि यह कैसे है? गोद में लिया, छत ऐसे लगा कि जैसे फट गयी है और उसमें एक अबर, धुआँ, बादल कमरे में आता गया। सारा कमरा भर गया और एक लम्हे के लिए ऐसा महसूस हुआ कि बच्चा गोद से निकल चुका है और बादल के अन्दर से आवाज़ आई:

﴿طرفوا به مشارق الارض ومغاربها ليعرفوا باسمه ونعته وصورته.﴾

इस बच्चे को पूरब से पच्छिम और उत्तर से दखिन तक फिरा ताकि पूरी दुनिया देख ले कि यह वह सरदार है, यह वह दुल्हा है, जिसका बारात को इन्तिज़ार था। यह वह जिसके लिए यह बिसात बिछाई गयी थी।

وعطوه خلق آدم ومعرفت شيث شجاعة نوح مرحلة ابراهيم
وفصاحة صالح وحكمة لوط ورضا اسحق وبشرى يعقوب

وجمال يوسف وشدة موسیٰ وجهاد يوشع وحب دانيال ووقار
الياس وقلب ايوب وطاعة يونس وعصمة يحیٰ وزهد عيسٰى من
اخلاق النبيين.

यह एक दूसरी निदा है। इस बच्चे को आदम अलैहिस्सलाम के अख़्लाक़, शीश अलैहिस्सलाम की मारिफ़त, इब्राहीम व इस्माईल अलैहास्सलाम की क़ुर्बानी दो, सालेह अलैहिस्सलाम की फ़साहत दो, लूत अलैहिस्सलाम की हिकमत दो, इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की रज़ा दो, याक़ूब अलैहिस्सलाम की बशारत दो, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न व जमाल दो, मूसा अलैहिस्सलाम की शिद्दत दो, यूशा अलैहिस्सलाम की जिहाद दो, दानियाल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत दो, इलयास अलैहिस्सलाम का विक़ार दो, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल दो, दाऊद अलैहिस्सलाम की शीरीं मीठी सुरीली ज़बान दो, यूनुस अलैहिस्सलाम का ज़ुहद और तमाम सवा लाख अलैहिमुस्सलाम के अख़्लाक़ के सांचे के अन्दर उतार दो।

पैदा होते ही इतना कुछ मिला तो तिरेसठ साल चार दिन में जो परवाज़, बुलन्दियाँ रहीं तो उसका मक़ाम कौन बयान करे? कैसे बयान करे, कहाँ से इल्म आए, कहाँ से अलफ़ाज़ आएं।

अठ्ठाइस हरुफ़ मिलने से जुमला बनता है। इससे इबारत बनती है। उससे मज़मून बनता है। मेरे पास अठ्ठाइस हज़ार हरुफ़ होते तो भी अल्लाह की कसम आपका मक़ाम बयान नहीं किया जा सकता था तो अल्लाह तआला ने आपको सब से निराला ताज पहनाया नबुव्वत का। सारे आलम का नबी बनाया, सारे ज़मानों का नबी बनाया और फिर आख़िरी बनाया। पहले मुकम्मिल नहीं

था हज में मुकम्मिल फ़रमाया। फिर इस उम्मत को ज़िम्मेदारी सोंपी गई। हमने इस ज़िम्मेदारी को भुला दिया है।

ख़ंजर लगे किसी को तड़पते हैं हम अमीर

यह एक बड़ा जुर्म है। अगर हम इस ज़िम्मेदारी को निभाने वाले होते जुनैद जैसे सब तौबा कर चुके होते और उन राहों पर चलते ही न। मैंने आते-आते उसकी कारगुज़ारी सुनी। मैं बहुत थका हुआ था।

रात से बहुत ज़्यादा बोझ था। मैंने कहा चलो तुम थोड़ा मेरा हाथ बटाओ। फिर थोड़ी मैं बात कर लूँगा। मिल जुलकर काम हो जाए। न मुझ से बैठा जा रहा है न बोला जा रहा है। तो मुझे रास्ते में यह ख़्याल आया कि अगर यह उम्मत यह काम करती तो सिर्फ़ यह नहीं कि अपनी हिदायत पर बाकी रहती बल्कि सारे आलम के इन्सानों के लिए हिदायत के दरवाज़े खुल जाते। और हम तो भाईयो भूलना भी भूल गए। एक होता है भूलना कि आदमी कहता है एक बात भूल गया पता नहीं क्या थी। तो एक वक़्त आता है कि वह यह भी भूल जाता है कि मैं भूला हुआ हूँ। दुनिया के लिए रहबर बनकर चलना इस उम्मत के लिए इज़्ज़त और अज़मत है।

उन्हें नापाकियों से निकालना। उन्हें ज़िनाकारियों से निकालकर पाकदामनी का चोला पहनाना है, उन्हें गाने बजाने की महफ़िलों से निकालकर क़ुरआन के नग़मात से आशना करना, उन्हें तबले की थाप पर नाचने के बजाए मुसल्ले पर बैठ कर माही दे।

आपकी तरह तड़पना, मुर्गे बिस्मिल की तरह तड़पना इस उम्मत का काम था। यह इस उम्मत का काम था। उनको सिखाना। उन्हें हा-हा, हो-हो, ही-ही के बजाए रातों को उठकर रोना और तड़पना और उसके लिए उन्हें बेक़रारियाँ सिखाना, यह इस उम्मत का काम था।

मुसलमान जाग जाओ वरना!

लेकिन भाईयो! हम ऐसा सोए, हम ऐसा सोए, हम ऐसा भूले कि फिर भूलना भी भूल गए। अब क्या कह रहे हैं कि यहूदियों ने हमारे साथ यह कर दिया, अमरीका ने यह कर दिया, सारी साज़िश यहूदियों की है, यह सारी साज़िश अमरीका की है, यह सब साज़िश हिन्दुओं की है, सब साज़िश फ़लाँ की है।

भाईयो! मैं उनका कोई वकीले सफ़ाई नहीं हूँ अगर दीवार खड़ी-खड़ी गिर जाए तो मिस्तरी से भी पूछा जाएगा कि यह दीवार कैसे गिर गई? बनाई तूने थी। जब बाग़ सूखता है तो मालिक नौकरों से नहीं पूछता वह मैनेजर से नहीं पूछता कि यह बीमारी क्यों है? क्या इस पर स्प्रे नहीं किया था। वह कहे सन्डी खा गई। अरे सन्डी का तो काम ही खाना है, उसका काम ही हमला करना है तू कहाँ सो गया था। अमरीका ने यह कर दिया, यहूदी ने यह कर दिया, इसाईयों ने यह कर दिया, हिन्दुओं ने यह कर दिया तो क्या पहले से नहीं कर रहे? क्या पहले से हमारे बड़े दोस्त थे। वह तो पहले से ही यही कुछ कर रहे थे।

आज क्यों वार चल गए आज क्यों डाके डल गए, आज क्यों

इज़्ज़तें लुट गयीं।

मैं यह कहता हूँ कि पहले भी नुक़सान हुए पर वे बड़े थोड़े थे। पहले जाने क़ुर्बान होती थीं और जान की क़ुर्बानी तो मतलूब है।

मौत से मुहब्बत करने वाले

कूफ़े वालों ने कहा ना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा जब वे आख़िरी ख़ुत्बा दे रहे थे। लोग कहने लगे कि हम अभी तुझे, तेरे सारे ख़ानदान को तलवार के नीचे कर देंगे। तो उन्होंने मुस्कराते हुए फ़रमायाः

अरे पागलो! मुझे मौत से डराते हो। मुझे तुम मौत से डरा रहे हो?

उन्हीं के बहत्तर साथियों में एक का नाम है युसैब बिन ख़ुबैब वह कहने लगे कि अल्लाह की क़सम! हमारे और हूरों के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला बाक़ी रह गया कि ये आएं और हमें क़त्ल कर दें तो उनको मारने से क्या होगा वह मरने के लिए तैयार रहते हैं। क्या कहा लोगों तुम गवाह रहो न कभी जवानी में मेरा दामन दाग़दार हुआ और अब तो मैं बुढ़ापे में दाख़िल हो चुका हूँ। न कभी बुढ़ापे में मैंने अपने रब को नाराज़ किया। मैं आज तुम सबको गवाह बनाकर कहता हूँ कि मैंने हमेशा अल्लाह को चाहा और उसकी नाफ़रमानी से बचा। ग़म न करो हमारे और जन्नत की हूरों के बीच सिर्फ़ इतना फ़ासला बाक़ी रह गया है कि ये बदबख़्त आकर हमें क़त्ल कर दें तो उनका मारना कौन सी नाकामी है उनकी। वे तो मरने को तैयार बैठे हैं। यह हमारी कोई नाकामी नहीं हमारे मुल्कों पर क़ब्ज़े हो गए और हमारी

नस्लें तबाह हो गयीं। अरे इधर तबाह हुए उधर जन्नत में चले गए। हमारी नाकामी यह है कि हमारे ईमान पर हमले हुए और हमलावर होने में पहले हम हैं। पहले मुसलमान ने मुसलमान की बेटी से ज़िना किया फिर हिन्दू ने, यहूदी ने, फिर इसाई ने किया। पहले मुसलमान ने मुसलमान की क़त्ल करके उसकी जान को बेक़ीमत किया फिर काफ़िर का ख़न्जर धारदार होकर चलना शुरू हुआ। पहले मुसलमान ने मुसलमान के माल को लूटा। यह जंग और नवाऐ वक़्त में पढ़ो ख़बरें, ये जो लूटमार क़त्ल व ग़ारत के क़िस्से हैं क्या हिन्दू कर रहे हैं? पहले मुसलमान ने मुसलमान को बेक़ीमत किया है फिर औरों ने भी कर दिया। मुसलमान ने गाने बजाने की महफ़िलों को सजाया, मुसलमानों ने शराबों के ठेके लिए।

शरीफ़ की बातें

मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मैं बंगलादेश से आ रहा था तो एक गोरा मेरे पास बैठा था तो मैंने उसको दावत देना शुरू की। तो वह गोरा ऐसे बैठकर मेरी बातें सुनता रहा कोई आधा पौना घंटा हो गया बात करते-करते तो पता नहीं मेरे मुँह से कैसे निकल गया अभी मुझे न याद है कि मज़मून का सियाक़ व सबाक़ क्या था? शराब का क़िस्सा छिड़ गया। मैंने कहा हमारा मज़हब बहुत पाकीज़ा है। उसमें शराब हराम है। यह इन्सान को बेअक़्ल कर देती है। वह ऐसे बैठा सुन रहा था। जब मैंने कहा शराब हराम है तो वह कहने लगा यह उसका अन्दाज़ था। मैंने कहा क्या हुआ। वह गार्मेन्टस का ताजिर था। सारी दुनिया में फिरता था। कहने

लगा मैं सारी दुनिया में फिरता हूँ अपनी तिजारत में। सबसे अच्छी शराब मैं कराची में आकर पीता हूँ। हाय अरे भाईयो! उनको दोष न दो अपने अन्दर ढूंढो। क़ाफ़िले के ज़िम्मेदार से पूछा जाता है:–

तू इधर उधर की न बात कर यह बता क़ाफ़िला क्यों लुटा
मुझे रहज़नों से गिला नहीं तेरी रहबरी का सवाला है

तू "ला इलाहा इलल्लाह" का झंडा लेकर उठा था तो क्यों इज़्ज़तें नीलमा हो गयीं? क्यों मुसलमान के बच्चे गिटार लेकर उछलने लगे, कूदने लगे? क्यों मुसलमान बेटियाँ सरेआम नाचने लगीं? क्यों सरे बाज़ार बाजों की सरतान ने दिल की दुनिया को बर्बाद कर दिया।

मेरे अज़ीज़ो! दुनिया में कोई ऐसा है जो दिल के तारों को छेड़ सके। दुनिया की कोई आवाज़, कोई साज़, कोई सुर ऐसा नहीं है जो दिल के तारों को छेड़ ले, जो रूह का बेक़रार करे। यह एक अल्लाह के पहरे में है।

यहाँ न गाना-बजाना आ सकता है न औरत आ सकती है न शराब आ सकती है। पैसे की खनक सिर्फ़ कानों तघ है। मौसिक़ी की धमक़ कानों तक है, नज़र का चस्का सिफ़ नज़र के थोड़े से कटोरे तक है। मेरे रब की क़सम! इनमें कोई चीज़ भी नहीं है जो दिल की दुनिया में जाकर आराईश पैदा करे, बेक़रारी पैदा करे। सिर्फ़ क़ुरआन का नग़मा है, "ला इलाहा इलल्लाह" कितना बढ़िया गीत है जो दिल के तारों में जाकर बजता है। यह वह है जब तारों पर जाकर गिरता है तो सारी रूह सिर से लेकर पाँव तक सरापा आवाज़ बन जाती है, सरापा सोज़ व साज़ बन जाती है और उसके अन्दर वह तासीर हैं कि सात समुंद्रों की मौजें भी उनके

सामने हाथ जोड़कर खड़े हो जाती और उसमें वह परवाज़ है कि बड़े-बड़े राकेट भी उसके सामने आजिज़ हो जाते हैं। यह सीधा जाता है और अपने रब के दरबार में जा पहुँचता है। यह वह नग़मा है, यह वह कलाम है जो दिल के तारों को छेड़ता है। दीवानी दुनिया, पागल दानिशवर जो कहते हैं कि संगीत रूह की ग़िज़ा है। उनका दिमाग़ ख़राब है। वह अल्लाह का चैलेंज है। सुनो! सुनो! सुनो! ऐ धरती के इन्सानों सुनो। चैन-सकून के लिए दौड़ो जितना दौड़ सकते हो। बर्फ़पोश, स्याहपोश, सब्ज़पोश, फ़लकपोश चोटियों पर बैठकर नज़ारों को दावत दो कि तुम्हारे दिल लुभाएं, नग़मों को दावत दो कि तुम्हारे सीने की बेक़रारी को सुकून में बदलें। तुम्हारे दिल को चैन मिला तो मुझे रब मानना। मेरा ऐलान है ﴿الا بذكر الله تطمئن القلوب﴾ दिलों को सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारे रब की याद में है। भाईयो! बड़ा जुर्म हुआ अल्लाह की कसमः

मुद्दत हुई सैय्याद ने छोड़ा भी तो क्या
ताबे परवाज़ नहीं राहे चमन याद नहीं

हम भूलना भी भूले। परिन्दे का मासूम बच्चा, शिकारी की नज़र पड़ी, घोंसले से उठाकर लाया। पिंजरे में लाकर बन्द किया। उसने आँख खोली तो पिंजरा देखा। सुबह की तो पिंजरा देखा, शाम हुई तो पिंजरा देखा।

सुबहें आयीं, रुत बदली, मौसम बदले। उसी में परवान चढ़ा, उसी को उसने जहान समझा, उसी को उसने आशियाँ समझा, उसी को उसने बुलन्दियाँ समझा, उसके दर व दीवार से वह मानूस हुआ, एक दिन आया उड़ना भी भूला, परवाज़ भी भूला, चमन भी

भूला, आशियाँ भी भूला। शिकारी को रहम आया। उसने आकर खोला कि जा अपने चमन को उड़ जा तो आगे यह बड़ी सादगी से कहता है मुझे उड़ना भी नहीं आता, अगर मैं उड़ा तो मुझे तो पता नहीं कि किस चमन से पकड़कर लाए थे? मुझे याद नहीं किस डाली पर मेरा आशियाना था? मुझे याद नहीं मेरे घर को कौन सी राहें जाती हैं? मुझे नहीं पता कौन सी शाख़ पर किस पेड़ पर मैं पैदा हुआ था? मुझे बताओ तो सही, मुझे बताओ तो सही। आज मेरा और ख़ानेवाल के मुसलमानों का हाल और पूरी उम्मत के मुसलमानों का हाल इसी पिंजरे में क़ैद पंछी का है जिसे कुछ याद नहीं। ऐसे ही मुझे और आपको कुछ याद नहीं है। हमें सिर्फ़ कमाने का पता है, खाने का पता है, पहनने का पता है, घर का पता है, दुनिया की चमक नज़र आती है, पैसे की खनक सुनाई देती है। इसके सिवा हमें न कुछ पता रहा न होश रहा। अब एक आवाज़ आती है लोगों इसलिए नहीं आए हो। तुम अल्लाह के पैग़ाम को दुनिया में पहुँचाने आए हो, तुम रहबर हो तुम राही नहीं हो। तुम रहबर हो तुम पीछे चलने वाले नहीं हो तुम क़ायद होः

हम ख़ुद तराशते हैं मंज़िल के संगे मील
हम वह नहीं जिनको ज़माना बना गया

तो आगे कहते हैं उड़ने की ताब नहीं, चमन का रास्ता याद नहीं। हमें तो सिर्फ़ दफ़्तर का रास्ता आता है, हमें तो सिर्फ़ दुकान का रास्ता पता है, हमें सिर्फ़ आम के बाग़, कपास के खेत तक पता है। आगे हमें कुछ पता नहीं। हम इसीलिए आए हैं। नहीं नहीं भाईयो!

एक दर्द है, एक ग़म है कि हमने एक इज्तिमाई क़ुसूर किया है कि दुनियाए इन्सानियत को पैग़ामे हक़ सुनाना छोड़ दिया। उनको जन्नत की राहें बताना छोड़ दिया।

वह उलझ गए छोटे-छोटे माबूदों में, बन्दों में उलझ गए, पत्थरों में उलझ गए, गाने में उलझ गए, मूर्तियों में उलझ गए, सूरतों के सामने गिर पड़े, क़ब्रों पर जा गिरे। क़ब्रों पर जाकर ख़ाक चाटने लगे। हमने कितना बड़ा ज़ुल्म किया कि अल्लाह जैसी हसीन हस्ती का उन्हें पता नहीं बताया।

दुनिया को हुस्न देने वाला ख़ुद कैसा होगा?

﴿الله نور السموات والارض مثل نوره كمشكوة﴾

उसका नूर तो चप्पे-चप्पे में फैला हुआ है। पत्ता-पत्ता नूरानी उसके नूर से, ज़र्रा-ज़र्रा नूरानी उसके नूर से, सूरज का नूर उसके नूर से, तारों की झिलमिलाहट उसके नूर से, चाँद की चाँदनी उसके नूर से और पेड़ों की हरियाली उसके नूर से, पानी की रवानी उसके नूर से, हवाओं का नसीम बनना उसके नूर से, सबा बनना उसके नूर से।

मेरे भाईयो! जो इतना साफ़ हो कि मेरे बन्दे मैं तुम्हें चप्पे-चप्पे अपने आपको दिखा दूँगा। आसमान को छूती हुई चोटियाँ बताती हैं कि अल्लाह है, ऊँचाइयों पर उड़ता हुआ उक़ाब, बे ख़ता लपकता उक़ाब, बल खाता हुआ साँप यह बताता है कि अल्लाह है, रोज़ जगह बदलते टीले और खड़े हुए पहाड़, कभी न जगह बदलने

वाले चोटियों की झालरों से उछलता हुआ गाता हुआ पानी और खिलती हुई कलियाँ और महकते हुए फूल, ख़ुद सुबह-सुबह मशरिक़ जब सफ़ेद जोड़ा पहन कर दुल्हा बनता है और शाम को जब मग़रिब सुर्ख़ जोड़ा पहनकर दुल्हन बनती है ऊपर आफ़ताब चमकता है और तारों की बारात लेकर चलता है। ये सब कुछ बताता है कि अल्लाह है जिसने दुनिया को इतना हसीन बनाया है वह मेहमानख़ाना कैसा हसीन होगा? इन्सान कमज़ोर है। उसे क़वी का सहारा चाहिए। इन्सान कमज़ोर है उसे ताक़तवर का सहारा चाहिए। यह इसके बग़ैर रह ही नहीं सकता। तो अल्लाह से कोई ताक़तवर है नहीं।

﴿الذى خلقهم هو اشد منهم قوة.﴾

अल्लाह तआला के सिवा क़वी बादशाह कोई नहीं।

﴿ان القوة لله جميعا﴾ हुकूमत में कोई शरीक नहीं,

﴿ان الامر كله لله﴾ हुकूमत की शुरूआत व आख़िर कोई नहीं।

अल्लाह की तख़्लीक़ के शाहकार

उसकी हुकूमत में जो शुरू नहीं हुई। बग़ैर शुरू के शुरू। बिला इब्तिदा हुकूमत बिला इन्तिहा हुकूमत पानी और ख़ुश्की, अर्श व फ़र्श में हर एक बिला शराकत वाहदहु ला शरीक हुक्मुरान,

﴿و الخلق امر و الليل و النهار وما سكن فيهما الله وحده.﴾

मख़्लूक़ उसकी, अम्र उसका, रात उसकी, दिन उसका, राही, मुसाफ़िर, मुक़ीम उसके, सदफ़ में पानी मोती की शक्ल में बदलने में उसके हुक्म का मोहताज, शहद की मक्खी में फूल का रस

शहद की शक्ल में बदलने में, साँप के मुँह में पानी ज़हर में बदलने में उसी के अम्र का मुन्तज़िर है, शेर के पंजे उसी के हुक्म से बने, उसके बड़े-बड़े दाँत उसी रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, उसका फाड़ना उसी की तख़्लीक़ का शाहकार है, हिरन का छलांगे मारते चले जाना मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, बुलबलु का ख़ूबसूरत नग़मे सुनाना मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, कोयल की सुबह की "को-को" मेरे रब की तख़्लीक़ का शाहकार है, बुगलों का क़तार बनाकर चलना उसी की तख़्लीक़ का शाहकार है, फूलों का लाल होकर महकना, सफ़ेद होकर महकना और कई रंगों का होकर महकना और मोर का फ़ख़्र से नाचना और लाखों क़िस्म के रंग लेकर माँ के अंडे से निकलना और सिर पर ताज सजाना ये सब मेरे रब की क़ुदरत का शाहकार है।

किसने मोर को नाचना सिखाया? कौन सी फ़ैक्टरी में मोर का पिरहन बना? किस रंगसाज़ ने यह रंग लगाया? किस रंगरेज़ ने यह पेंट किया और किस पेन्टर ने इसको यह पेंट अता फ़रमाया?

अजाएबात ही अजाएबात

यह मेरा अल्लाह है, मेरा अल्लाह है जो एक ही वक़्त में एक अंडे से बदसूरत कव्वे को निकाल रह है और दूसरे अंडे से हसीन मोर को निकाल रहा है और तीसरे अंडे से झपटने वाले उक़ाब को निकाल रहा है और चौथे अंडे से मासूम कबूतर को निकाल रहा है और पाँचवे अंड से वह कछवे को निकाल रहा है और छठे अंडे से वह मगरमछ को निकाल रहा है और सातवें अंडे से वह मुर्ग़ी को निकाल रहा है और आठवे अंडे से वह चिड़िया को निकाल रहा है

और नवे अंडे से वह फ़ाख़्ता को निकाल रहा है। छोटे-छोट नज़र न आने वाले अंडो से मच्छर को निकाल रहा है, मक्खी को निकाल रहा है, च्युंटियों को निकाल रहा है, पतंगे निकाल रहा है, परवाने निकाल रहा है और ये बेशुमार निज़ाम एक वक़्त में खरबों चीज़ें बना रहा है, खरबों चीज़ें मिटा रहा है, खरबों चीज़ों को वजूद दे रहा है।

इस सारे निज़ाम में कभी तो मेरा रब ख़ता करता तो फिर वह रब कहाँ रहता तो उसने चैलेंज किया ﴿وما كان ربك نسيا لا يضل ربي ولا ينسى﴾ मैं वह रब हूँ जो न कभी भूलता हूँ, न थकता हूँ न चूकता हूँ। एक पल में, एक वक़्त में एक फ़ैक्टरी में, एक मील में बन रहा है उसमें भी यह ग़लत हो गया, इसे वापस करो। यह ख़राब हो गया उसे दोबारा लाओ, यह कन्डम हो गया चलो इसे कचरे में डालो। हाय! ऊपर निगाहें, दांए बांए मज़दूर, इन्जीनियर फिर भी ग़लतियाँ और हर वक़्त निगाहें फिर भी यह ग़लत, वह ग़लत और एक चीज़ बन रही है, एक कपड़ा बन रहा है, एक पेंट हो रहा है और एक सेकंड में मेरा रब, मेरा आक़ा, मेरा मालिक, मेरा मौला इन सब कामों का, बहर व बर, अर्श व फ़र्श, पूरब व पच्छिम, उत्तर व दखिन का वाहदहु बिला शरीक अल्लाह बिला शिरकत ग़ैर मालिक है।

ला शरीक अल्लाह, अहद व समद अल्लाह, वाजिद व माजिद अल्लाह, हय्यु क़य्यूम अल्लाह, क़ुद्दूस व सलाम अल्लाह, रहमान व रहीम अल्लाह, क़ह्हार व जब्बार अल्लाह, मालिक व मुल्क अल्लाह, ज़ुल जलाल वल इकराम अल्लाह, ग़नी व मुग़नी अल्लाह, वकील अल्लाह।

तबलीग़ भूला हुआ सबक़

सारी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह से जोड़ना यह सिर्फ़ तबलीग़ी जमात का काम नहीं। अगर यह तबलीग़ जमात होती, फ़िरक़ा होता तो ऐसा मजमा बग़ैर इश्तिहार के न आता। ऐसे लाउडस्पीकरों में यह इश्तिहार हों, इश्तिहार छपें, मस्जिदों में ऐलान हों, पता नहीं क्या-क्या हो फिर भी आने वाले न आएं। यहाँ बुलाया भी न जाए फिर भी खिचे चले आएं, दौड़े, भागे चले आएं। यह कोई तहरीक नहीं है, यह कोई जमात नहीं, यह तो भूला हुआ सबक़ है जो दिल के पर्दों में था, सीने के अन्दर था, रग-रग में था, ख़ून में था, रूह में था, बोटी-बोटी में था, रेश-रेशे में था, खाल व बाल में था, रोंए-रोंए में था। यूँ लगा जैसे मेरा अपना सबक़ है जो मुझे याद आ रहा है। खिंचती चली गई इन्सानियत, कितने नौजवान बैठे नज़र आ रहे हैं। एक ज़माना था मस्जिद में बूढ़ों के सिवा कोई नज़र न आता था। बात सुनने के लिए दाँत टूटे हुए लोगों के सिवा कोई आने वाला न था। मुझे बीस-पच्चीस साल के बीच के लोग 98वें फ़ीसद नज़र आ रहे हैं। यह वह है:-

लौट पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम तू

अल्लाह का तआर्रुफ़ कराना हमारा काम है

यह हमारा सबक़ है भाईयो! हमने अपने अल्लाह का तआर्रुफ़ करवाना है। अपने मालिक से लोगों को मिलाना है, उनको पैग़ाम सुनाना है कि पूरी दुनिया के इन्सानों के मसाइल का हल अल्लाह

के हाथ में है। अल्लाह जैसा करीम कोई नहीं। उस जैसा मेहरबान कोई नहीं। आओ भाई उससे सुलह कर लें, आओ भाई उसको मना लें। इस पर कोई सौदा नहीं, हर चीज़ उस पर क़ुर्बान की जा सकती है, अल्लाह को नहीं छोड़ सकते, जान क़ुर्बान हो सकती है। अल्लाह को नहीं छोड़ सकते। अल्लाह मेरा है तो सब कुछ मेरा है। मेरा अल्लाह मुझे न मिला मुझे कुछ न मिला। धरती गवाह, ज़मीन गवाह, तारीख़ का पन्ना-पन्ना गवाह, लाईन-लाईन, लफ़्ज़-लफ़्ज़, हरुफ़-हरुफ़ गवाह अल्लाह को पाने वाले कभी नाकाम नहीं हुए और अल्लाह को खो देने वाले कभी कामयाब नहीं हुए।

हमारा तो साल। देखो साल शुरू हुआ है। मुहर्रम शुरू हुआ सन् 1425 हिज्री हमारा साल मुहर्रम से शुरू होता है। जनवरी भी अल्लाह का, मुहर्रम भी अल्लाह का क्योंकि सूरज भी अल्लाह का चाँद भी अल्लाह का तो जो सूरज से निज़ाम चला वह भी अल्लाह का, चाँद से निज़ाम चला वह भी अल्लाह ही का है।

उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत

और एक चीज़ जो अल्लाह को पसन्द है वह हमें दे दी है जो ज़्यादा पसन्द है। वह औरों को दे दी। अल्लाह तआला ने सारी उम्मतों को कहा कि मुझे एक दिन पसन्द है। तुम ढूंढ लो तो यहूदियों ने कहा हमें हफ़्ता चाहिए, ले लो। इसाईयों से कहा मुझे एक दिन पसन्द है यह बतौर हदीस नहीं बल्कि बज़बाने हाल है। एक दिन तेरे रब को पसन्द है। एक दिन तेरे रब को पसन्द है।

ढूंढ लो। इसाईयों ने इतवार ले लिया।

अब हमारी बारी आई तो अल्लाह तआला ने कहा कहीं ये ढूंढते-ढूंढते ग़ाफ़िल न हो जाएं, ढूंढते हुए ख़ता न खा जाएं तो अल्लाह तआला ने ढूंढने से पहले ही कहा मेरे महबूब मैंने तुझे और तेरी उम्मत के लिए जुमा दे दिया। मुझे यही पसन्द है अपनी पसन्द मैंने ख़ुद ही बता दी है कि मुझे यह दिन पसन्द है। यह तुम्हारे लिए हो गया। आओ ईद मनाओ। हमारी हर हफ़्ते ईद होती है। कोई ऐसी नमाज़ है? फ़रमाया कि जो तीन जुमे जानबूझकर छोड़ दे मेरी मिल्लत से बाहर होकर काफ़िर हो जाता है।

शहादते हुसैन मुहर्रम में क्यों?

ख़ानेवाल भरा हुआ है ऐसे लोगों से जिन्होंने तीन नहीं तीन-तीन सौ जुमे छोड़े हुए हैं। देहात भरे पड़े हैं।

तो हफ़्ता भी अल्लाह का, इतवार भी अल्लाह का, जुमा भी अल्लाह का तो जुमा था जुमा हमें दे दिया।

जनवरी भी अल्लाह का, मुहर्रम भी अल्लाह का। पसन्द मुहर्रम है तो कहा साल यहाँ से शुरू करो। यह साल एक अहद व पैमान की याद दिलाता है कि हम अल्लाह के लिए हर चीज़ छोड़ सकते हैं और अल्लाह को नहीं छोड़ सकते।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत ज़िकादा में भी हो सकता थी, सफ़र में भी हो सकती थी और रजब में भी हो सकती थी, रमज़ान में भी हो सकती थी। नहीं-नहीं यह मुहर्रम को चुना गया, जुमा का चुनाव किया गया कि जैसे ही नया साल शुरू हो

सारी उम्मत के कान खड़े हो जाएं। हाँ-हाँ अल्लाह पर सब चीज़ क़ुर्बान हो सकती है पर अल्लाह को नहीं छोड़ सकते।

अरे जाएं कहाँ? क़ुर्बान करोगे? मैं कहता हूँ हराम छोड़ दो। अपनी फ़ैक्ट्री सूद पर मत चलाओ तो कहता है फिर मेरी फ़ैक्टरी कैसे चलेगी तो क्या अल्लाह पाक की बात इतनी सस्ती है कि एक फ़ैक्टरी पर बेच दें। अरे तुम रिश्वत मत लो तो कहता है बच्चों को रोटी कहाँ से खिलाऊँ? अरे तराज़ू में सही तोल, वकील साहब किसी ज़ानी को बचाने के लिए क़लम को मत चलाना, किसी क़ातिल को बचाने के लिए क़लम मत चलाना। बहुत से लोगों ने झूठे केस दर्ज करवाए हुए हैं। पुलिस भी शामिल, वकील भी शामिल, अरे यह काम न करना। कहता है तो फिर बच्चों को रोटी कहाँ से खिलाऊँ, बच्चों को खाना कहाँ से खिलाऊँ? उनकी फ़ीस कहाँ से भरुं? उनके स्कूल आने-जाने का ख़र्चा, बिजली का बिल कहाँ से भरूं? बैंकों के चक्कर में सूद में न फँस जाना, अश्र अदा करो, ओ जी गुज़ारा ही नहीं होता। इन सारे सवालों का जवाब है दस मुहर्रम, इन सारे सवालों का जवाब करबला है।

इन सारे सवालों का जवाब है हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी हस्ती का सिर कट जाना। दुनिया में उस वक़्त उनसे अफ़ज़ल कोई इन्सान नहीं था और सोलह अफ़राद आले रसूल में से शहीद हुए। उनसे अफ़ज़ल फ़र्द न था। बाक़ी तो साथी थे। अब्बास, अब्दुल्लाह, मुहम्मद, उस्मान और जाफ़र ये तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हैं। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई दूसरी माँ से थे।

ख़ून ही ख़ून

तो सीधे-सीधे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की नस्ल पर सीधी तलवार चल रही है। फिर हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु थे अबूबक्र और अली और अब्दुल्लाह और हसन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ासिम और अब्दुल्लाह और मुहम्मद और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र थे और मुहम्मद, मुस्लिम बिन अकील, अब्दुर्रहमान और अब्दुल्लाह और मुहम्मद यह वह चिराग़ थे जिनके बुझने पर दुनिया अंधेरी हो गई। सबसे छोटा बच्चा अब्दुल्लाह गोद में है। आख़िर में बाप और बेटा रह गए। कहानी ख़त्म हो रही है। शमा बुझने को है और यह वह शमा है जो बुझकर सूरज की तरह चमकने लगेगी। अल्लाह के नाम पर मरने वाला मरा नहीं करते। वह यज़ीद मर गया। इब्ने ज़ियाद मर गया। शिमर पलीद मर गया। आख़िरी बच्चा अब्दुल्लाह है गोद में है।

हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की सबसे ज़्यादा महबूब बीवी थीं और सबसे ज़्यादा उनसे प्यार था। जब कभी वह मैके चली जातीं तो कहते आज तो रात लम्बी हो गई। हज़रत अली ने दो बहनों एक सलमा एक रुबाबा एक का निकाह हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से किया और एक हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से किया। दो बरस का बच्चा अगर काफ़िर का भी हो तो प्यारा लगता है। हिन्दू व सिख का भी हो प्यारा लगता है। यह तो आले रसूल है, प्यास से लबे दम है मुर्ग़ बिस्मिल है। उसको लेकर ऐसे दिलासा दे रहे हैं और उसको चूम रहे हैं और उसे तसल्ली दे रहे हैं। इतने में एक तीर आया और तीन मारने वाला था इब्ने अल-मौकफ और

आकर गले के पार हो गया। यहाँ आकर जाम छलक पड़ा। आँसू तो फिर भी नहीं बहे लेकिन उसके ख़ून को हाथों में लिया लप भर लिए और यूँ आसमान की तरफ़ उठा दिया कि ऐ मौला! अगर तूने अपनी मदद को रोक लिया है तो फिर भी मैं तुझसे राज़ी हूँ। तू उनसे इन्तिक़ाम लेना।

इन सोलह में क़ासिम सबसे हसीन थे। हज़रत हसन के बेटे क़ासिम सबसे हसीन। जब वह क़त्ल हुए तो क़ातिल की आँखों में भी आँसू आ गए। मारने वाले रो रहे हैं। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे हैं मेरे बेटे आज तेरे चचा के दुश्मन ज़्यादा हो गए और दोस्त थोड़े हैं। आज तेरा चचा बड़ा आजिज़ है कि तेरी आवाज़ पर लब्बैक न कह सका। वह क्या दिन होगा जब तेरा मुद्दई बनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आएगा? मैं वाक़िआ नहीं सुना रहा हूँ। वाक़िआ मुझसे सुनाया भी नहीं जाता। पता नहीं लोग कैसे गा-गाकर सुना देते हैं, अल्लाह ही जाने। पैग़ाम सुना रहा हूँ। पैग़ाम साल की शुरूआत है भाई। आओ इस पैग़ाम को सीने से लगाएं कि अल्लाह को राज़ी करते हुए हर चीज़ क़ुर्बान की जा सकती है। अल्लाह को क़ुर्बान नहीं कर सकते।

तेरा रब बड़ा ही मेहरबान है

मेरा अल्लाह मेरी माँ से ज़्यादा मुझ पर मेहरबान है, मेरे बाप से ज़्यादा मुझ पर शफ़ीक़ है। मेरे लिए ज़मीन का फ़र्श बिछाया ﴿والارض فرشنها﴾ मैं चलता कहाँ? मेरे ऊपर आसमान की छत को

मेरे रब ने ताना ﴿والسماء بنينها بايد وان لموسعون﴾ सूरज का तन्दूर मेरे अल्लाह ने मुझ पर धहकाया वरना मेरे गेंहूँ कौन पकाता? ﴿وجعلنا سراجا وهاجا﴾ आसमान से पानी मेरे रब ने बरसाया ﴿انا صببنا الماء صبا﴾ वरना मेरी ज़मीन उपजाऊ कहाँ से होती? मेरे माँ-बाप के दिल में मुहब्बत डाली वरना मेरा पेशाब कौन धोता? मेरा पाख़ाना कौन धोता? मुझे डाक्टरों के पास कौन लिए फिरता? मेरी एक मुस्कराहट देखने के लिए मेरा बाप सारा दिन रेढ़ी चला रहा है, बूट पालिश कर रहा है, लोगों की गालियाँ सुन रहा है, लोगों की गाड़ियों को धो रहा है और पैसे जेब में डाल रहा है। शाम के लिए बच्चों की रोटी बन गई शुक्र है। यह सब कौन कर रहा है? क्या बाप अपनी ताक़त से माँ अपनी ताक़त से? नहीं, नहीं मेरा अल्लाह कर रहा है। मेरे बन्दे मैं तेरा रब हूँ जिसने तेरी माँ के दिल में तेरा प्यार डाला, तेरे बाप के दिल में तेरी शफ़क़त को डाला। अगर मैं यह काम न करता तो न माँ तेरे लिए तड़पती, न बाप तेरे लिए ख़ानेवाल के बाज़ारों में धक्के खाता, रेढ़िया लगाता, बूट पालिश करता। यह मैं तेरा रब हूँ जो उन्हें ऐसा बेक़रार कर देता हूँ कि तू खाए नहीं तो वे खा नहीं सकते, तू सोए नहीं तो वे सो नहीं सकते। ऐसे रब का बाग़ी बनता है, ऐसे हसीन-रब का बाग़ी बन जाना, ऐसे मेहरबान अल्लाह को सज्दा न करना, ऐसे प्यारे अल्लाह की रोकी हुई चीज़ों पर दिलेर हो जाना। वह कहता है गाना न सुनना, यह कहता है इसमें क्या हर्ज है, वह कहता सूद न लेना, यह कहता है फिर कारोबार कैसे होगा?

ऐ मेरे प्यारे नबी की उम्मत की बेटियों! पर्दे में आ जाओ। कहती हैं लोग क्या कहेंगे पर्दे में हो गए, पिछड़ापन पसन्द करने लगे? अरे ताजिर ख़्यानत न करना धोका न देना। बच्चों को रोटी कैसे खिलाएं? मेरे ऐसे शफ़ीक़ अल्लाह की बग़ावत, मेरे ऐसे मेहरबान अल्लाह की बग़ावत जब मैं नुत्फ़ा था तो उसकी मुझ पर नज़र थी, मैं अलक़ा था तो वह मुझे देख रहा था और सिर्फ़ मैं ही नहीं था बल्कि करोड़ों माँओं के पेट में उस वक़्त नुत्फ़ा ठहरा हुआ था, करोड़ों अंडों में तख़्लीक़ का अमल चल रहा था, करोड़ों मादा जानवरों के पेटों में तख़्लीक़ का अमल जारी था, घोड़ियाँ, बकरियाँ, क्या शेरनियाँ, क्या बिल्लियाँ, क्या फ़ाख़्ताएं तसव्वुर करो। परिन्दों की मादा, चौपायों की मादा, दोपायों की मादा, तैरने वालों की मादाएं, रेंगने वालों की मादाएं, पेड़ों में नर व मादा, फूलों में नर व मादा और ज़मीन व पानी में कितनी मादाएं हैं जिनके अन्दर तख़्लीक़ का अमल जारी था। उसमें मैं भी बन रहा था। मेरा रब अगर एक सैकेंड के करोड़वें हिस्से मेरी तख़्लीक़ से ग़ाफ़िल होता तो मेरी आँखें माथे से निकलकर मेरे पाँव में जा लगतीं। मैं क़ुर्बान जाऊँ उस रब के जिसने माँ के तीन अंधेरों में मुझे देखा, मुझे चाहा, मुझे परवान चढ़ाया, मुझे नुत्फ़े से अलक़ा बनाया, अलक़ा से मुज़ग़ा बनाया, मुज़ग़ा से इज़ामा बनाया, इज़ाम पर लहम लगाया, लहम पर खाल को चढ़ाया, मेरी आँखें बनाईं, मेरी पलकें बनाईं, मेरे होंट बनाए, मेरी ज़बान बनाई, मेरे बाल बनाए, मेरे कान बनाए, मेरे हाथ बनाए, मेरी उंगलियाँ बनायीं, हथेली को बग़ैर बालों के बनाया, हथेली के ऊपर बालों को पैदा फ़रमाया, मेरे पाँव के तलवों को कैसा बनाया। यहाँ बाल न होने

दिये वरना मेरा बन्दा चल न सकेगा, ऊपर बाल बनाए नीचे ख़ाली रखी और अल्लाह तआला ने घुटनों के बीच में जोड़ बनाए जो मेरे रब की तख़्लीक़ की खुली निशानी है। ये आपस में फंसी हुई दो हड्डियाँ नहीं यूँ दो हड्डियों के ऊपर दो हड्डियाँ खड़ी हुई हैं। यह कौन है जो दोनों को आपस में मिलने नहीं देता, टकराने भी नहीं देता, मोड़ता है और चलाता भी है, पीछे भी चलाता है आगे भी चलाता है, सिकुड़ने की ताक़त भी देता है, फैलाने की ताक़त भी देता है। यह मेरा अल्लाह है। मैं बना तो वह ग़ाफ़िल न हुआ, मेरी आँख बनी तो उसने ख़्याल किया कि उसकी आँखों का रंग किसी और का न बन जाए, कहीं हमशक्ल होने की वजह से शुब्हा न हो जाए, मेरी शक्ल बनने लगी तो उसने ख़्याल रखा कि मेरी शक्ल किसी और से न मिल जाए कि माँओं को धोका न लग जाए। मेरी आवाज़ बनाने लगा तो उसने ख़्याल रखा कि मेरी आवाज़ किसी और के मुशाबेह न हो जाए, मेरे फिंगर प्रिन्ट बनाने लगा तो उसने ख़्याल रखा कि उंगली का निशान और उस पर बना हुआ प्रिन्ट और उस पर छपा हुआ छापा किसी और का न हो वह उसी का हो। मेरी नाक का नथना बनाया तो सबसे जुदा किया, मेरे छोटे से कान बनाए तो सबसे जुदा बनाए तो धरती में ऐसे होंट किसी के न बनने दिए, मेरे दाँत बनाए तो धरती में किसी के दाँत ऐसे न बनने दिए, मेरी पलकें बनायीं तो किसी और को ऐसी पलकें नहीं दीं, मेरी उंगलियाँ बनायीं तो काएनात में किसी को ऐसी उंगली नहीं दीं, मेरे नाख़ून बनाए तो किसी के ऐसे नाख़ून नहीं बनाए, मेरा मिज़ाज बनाया तो किसी का ऐसा मिज़ाज नहीं बनाया, अंधेरे में चलता हुआ आ रहा है तो तारिक़ जमील

आ रहा है। अंधेरे में कैसे पता चला? चाल से पता चला वह आ रहा है।

मेरा रब और हम उससे बाग़ी हो गए। अरे बग़ावत करनी थी तो अपने आप से करते, अपने ख़िलाफ़ बग़ावत करते, अरे जुलूस निकालना था तो हुकूमत के ख़िलाफ़ क्यों निकालते हो जैसे हम वैसे वे, हम छोटे चोर वे बड़े चोर।

अपने लिए भी दुआ करो, उनके लिए भी दुआ करो। उनको गालियाँ न दो। यह सही नहीं है कि हुक्मुरानों को गालियाँ देनी शुरू कर दो। फ़ौज वालों को गालियाँ देनी शुरू कर दो। नहीं-नहीं इस किश्ती के डूबने में मैं भी ज़िम्मेदार हूँ।

दुनिया इम्तिहान की जगह है सज़ा की जगह नहीं

आप भी ज़िम्मेदार हैं। चपरासी भी ज़िम्मेदार है बादशाह भी ज़िम्मेदार है। कोई भी ज़िम्मेदारी से बरी नहीं है। माँ को गालियाँ देने वाले, बाप का गिरेबान पकड़ने वाले, बाज़ार में बैठकर जुआ खेलने वाले, केबिल डिश चलाने वाले हम सब इसके ज़िम्मेदार हैं। ब्याज पर फ़ैक्टरियाँ चलाने वाले, नौकरों को, ड्राइवरों को माँ-बहन की गालियाँ देने वाले क्या ये ज़िम्मेदारी से बरी हैं? अरे मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम! बैतुल्लाह को तोड़ना छोटा गुनाह है और मुसलमान को माँ-बहन की गालियाँ देना बड़ा गुनाह है।

तंख़्वाह कम देते हो। तीन हज़ार। तीन हज़ार कौन देता है? हमारे देहातों में पन्द्रह सौ, बारह सौ, एक हज़ार और ज़रा सी उसने कमी की तो तेरी माँ, तेरी बहन। हाय! हाय! आसमान क्यों

न टूट पड़ा? ज़मीन क्यों न फट गई? समुंद्र क्यों न बिखर गया? हवाएं पागल होकर बेलगाम क्यों न हों गयीं? कि अल्लाह तआला ने दुनिया को जज़ा सज़ा की जगह नहीं बनाया। अगर यह जज़ा सज़ा की जगह होती तो माँ-बहन की गालियाँ देने वाले वहीं मसख़ होकर ख़त्म हो जाते। माँ-बहन इतने बड़े तक़द्दुस को पामाल कर दिया कि तू पानी वक़्त पर क्यों नहीं लाया। इतनी सी बात पर इतना सस्ता है यह तक़द्दुस?

आज अल्लाह को मना लो

तो मेरे भाईयो! ऐसे मजमे कम मिलते हैं। अहबाब जमा हैं। मैं हाथ जोड़ता हूँ साल की शुरूआत है आओ हम तौबा करें। आओ आज हम अपने अल्लाह को मनाएं। पता नहीं कहाँ-कहाँ से आए हो? मुझे यह राहत तो हो रही है कि इनमें अक्सर नौजवान नज़र आ रहे हैं। नई नस्ल नज़र आ रही है। यह बहुत बड़े हौसले की बात है कि बातिल जितनी मर्ज़ी चालें चल जाए मगर सुबह हो रही है। रात के आख़िरे हिस्से में चाँद भी थककर डूब जाता है। तारे भी जाग-जाग कर आँखें मूंद लेते हैं और यूँ लगता है कि अब कभी अंधेरों में से रौशनी नहीं निलकेगी। अचानक पूरब से रौशनियाँ फूटती हैं और सारी काएनात उजाले का लिबास पहनती है। रात भागती है फन सिकोड़ते हुए, वाल समेटती हुई दीवानों की तरह उसे जगह नहीं मिलती, भागती है।

आज रात काली है, तारीक है। मुसलमान बच्चे भी नाच रहे हैं, मुसलमान बेटी भी सरे बाज़ार घुंघरू की छन-छन और पायल

की झंकार से सरेबाज़ार नज़ारे की दावत दे रही है मगर इसके साथ-साथ सुबह भी हो रही है।

तो मेरे अज़ीज़ो! मेरे भाईयो! आज हम तौबा करें। अपने अल्लाह को मनाएं। हमसे अल्लाह हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु जैसी क़ुर्बानी नहीं लेगा। वह उन्हीं के लिए थीं। वह बड़े थे और बड़ों के साथ तो बड़े इम्तिहान होते हैं। मुझे पता है हम कमज़ोर हैं। अरे हम हराम छोड़ दें हमारे लिए यही करबला है।

हम झूठ छोड़ दें, माँओं के गिरेबान पकड़ना छोड़ दें, बाप पर गुर्राना छोड़ दें, बहनों से लड़ना छोड़ दें, पड़ौसी को सताना छोड़ दें, तराज़ू की नाप-तोल में कमी करना छोड़ दें, सूद के सेविंग एकाउन्ट से पैसा निकालकर करंट एकाउन्ट में रख दें, अपनी फैक्टरी के कारोबार को सूद से निकालो, नज़रें झुकाना सीखो और गानों की कैसिटें तोड़ दो, क़ुरआन सुनो। उसी में जियो उसी में मरो। हमारी यही करबला बन जाएगी। अल्लाह जानता है कि ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें मैं आज़माऊँ। ये वे लोग नहीं हैं जिन्हें उस तरह आज़माया जाए जैसे पहलों को आज़माया गया था।

मेरे ग़ैर की मुहब्बत को न बसाओ

याक़ूब अलैहिस्सलाम चालीस साल तक रोए। अल्लाह तआला ने मिलाया फिर फ़रमाया बताओ याक़ूब क्यों जुदा किया था? कहा बताओ क्यों जुदा किया था? कहा तुम नमाज़ पढ़ रहे थे यूसुफ़ बराबर में सो रहा था। एकदम तड़पकर रोया तो नमाज़ के दर्मियान तेरी नज़र यूसुफ़ पर चली गई क्योंकि मुहब्बत थी याक़ूब

अलैहिस्सलाम बेक़रारी की मुहब्बत थी। तो तेरी नज़र यूँ गई कि यूसुफ़ क्यों रोया? यूसुफ़ क्यों रोया? तो बस यहीं पर मैंने कह दिया कि मेरा रसूल हो, मेरा नबी हो और नमाज़ में मेरे ग़ैर को सोचे जिन आँखों से देखा है वे आँखें वापस ले लूँगा और जिसको देखा है उसको जुदा कर दूँगा। चालीस बरस तक। हम तो बग़ैर किसी वजह के नमाज़ में इधर-उधर देख रहे होते हैं। हमारे साथ तो यह नहीं करेगा, उसे पता है कि ये छोटे लोग हैं। कम अमल पर शबाश, ज़्यादा बज़ारी लोग हैं।

अमल कम शबाशी ज़्यादा

मेरा छोटा बच्चा तीन चार साल का है। वह कापी पर ऐसे उल्टी सीधी लकीरें मारकर मुझे दिखाता है बाबा कैसा लिखा है? मैं कहता हूँ माशाअल्लाह बेटा आपने बहुत ज़बर्दस्त लिखा है। कुछ किया तो शाबाश मिली। अल्लाह की क़सम हम इस बच्चे की तरह हैं। हमारें पास कोई अमल भी अल्लाह के लायक़ नहीं है। है ही नहीं जिसका दावा कर सकें।

अरे कुछ करो तो सही, (चाहे) ग़लत करो। करो तो सही। मस्जिद को आओ तो सही, सिर झुकाओ तो सही, आँसू बहाओ तो सही, अपनी माँ के क़दमों में बैठो तो सही, उनकी दुआएं लेना शुरू करो तो सही, अपने तराज़ू तो ठीक करो।

हम कितने ही बुलन्द हो जाएं फिर भी उस बच्चे की उल्टी सीधी लकीरों के सिवा हमारे पास कुछ नहीं है। मैं जब बाप होकर अपने बेटे की उल्टी लकीरों को कहता हूँ शबाश बेटा तूने

बहुत अच्छा लिखा है तो मेरा रब तो ऐसा है कि काएनात में उस जैसा कोई मुहब्बत करने वाला नहीं। मैं कहूँगा अल्लाह बस यही किया तो अल्लाह कहेगा शबाश! शाबाश! चल जा।

नाचने वाला और मुसल्ले पर खड़ा होने वाला बराबर नहीं हो सकते

देखो भाईयो! अगर मुजरिम और आबिद बराबर हो जाएं, रात का शराबी और नमाज़ी अगर एक बराबर हो जाए, रात का नाचने वाला और रात का मुसल्ले पर तड़पने वाला एक जैसा हो जाए, रात का गाने वाला और तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ने वाला अगर दोनों के लिए क़ानून एक जैसा हो जाए तो पागल था हुसैन रज़ियल्लहु अन्हु का क़ाफ़िला जो ऐसे ही अपनी जानें लुटा गया। अगर हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और इब्ने ज़ियाद को एक तराज़ू में रखना था, अगर शिमर लईन, इब्ने ज़ियाद और हुसैन व अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा और क़ासिम को एक ही तराज़ू में रखना था तो इतनी दर्दनाक कहानी वजूद में लाने की ज़रूरत क्या थी? अगर रिश्वत वाला और सिर्फ़ तंख़्वाह पर गुज़ारा करने वाला पैसे ख़त्म हैं बच्चा बीमार है, दवाई चाहिए, पैसा कोई नहीं, बच्चा तड़प रहा है, आँसू छलक रहे हैं और दवा के पैसे नहीं। वह सब्र कर रहा है कि बच्चे को हराम नहीं खिलाऊँगा चाहे तू भी मर जाए और मैं भी मर जाऊँ अगर इसको और रिश्वत लेने वाले को अल्लाह ने एक ही तराज़ू में तोलना है तो मेरा रब ऐसा नहीं है। किस किताब में लिखा हुआ है?

ख़ानदाने नबुव्वत के बहत्तर शहीद

मेरे बन्दो! बताओ, अल्लाह कह रहा है किस किताब में लिखा हुआ है कि रात के मुजरिम और महरम को मैं एक जैसा कर दूँगा? अल्लाह बहुत ग़फ़ूरुर्रहीम है।

जब क़ाफ़िला चला। बच्चियों का, बेटियों का और हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा ने पीछे मुड़कर देखा तो बहत्तर धड़ पड़े थे। सिर कटे हुए थे और उसमें मासूम अब्दुल्लाह का सिर भी कटा पड़ा था। अरे ज़ालिमों इसका सिर काट कर क्या लेना था। तो उनके मुँह से निकला था।

जितना रोईं उतना दुश्मन भी रोए कि आजा ऐ मुहम्मद मुस्तुफ़ा तुझ पर अल्लाह का दरूद व सलाम हो। तुझ पर आसमान के फ़रिश्तों का दरूद सलाम हो। आ! हुसैन को देख तो सही। आज बारात का दूल्हा बना हुआ है। उसने जोड़ा पहना है। बड़ा हसीन जो उसके अपने ख़ून से तैयार हुआ है। उसका ताना-बाना उसके ख़ून के क़तरों से है।

आज सेहरा बांधकर और दूल्हा बनकर नेज़े के ऊपर चल चुका है। आज उसे आज़ा कट चुके हैं। जिस्म फट चुका है। घोड़ों की टापों तले रौंदा जा चुका है। आज़ तेरी बेटियाँ क़ैद हैं, तेरी औलाद क़त्ल हो चुकी है। उनको किसी ने कफ़न न दिया तो हवाओं ने आगे बढ़कर गुबार की चादर में कफ़न दे दिया।

इस कहानी को क्यों वजूद मिला? अगर सूद पर कारोबार करने वाले और हलाल कारोबार करने वाला एक ही तरह तोल दिए जाएंगे तो ये क़िस्से क्यों वजूद में आए?

अल्लाह बड़ा ही क़द्रदान है

मेरे भाईयो! अल्लाह हमारा क़द्रदान है। हमारी एक नेकी को दस गुना लिखता है। फिर उसको सात सौ गुना करता है फिर उसको बग़ैर हिसाब कर देता है तो आ जाओ भाईयों हम अल्लाह से सुलह कर लें और तौबा कर लें। इस पैग़ाम का नग़मा सीखो। इस पैग़ाम को फैलाने वाली धुन सीखो। क़ुरआन की धुन हो, रहमान का नग़मा हो फिर इसको लेकर फिरो। महबूबे ख़ुदा की ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत सीखो और नबुव्वत वाले अख़्लाक़ की थाली में उसे सजाकर ज़रा बाज़ार में आओ तो सही। इतने ख़रीदार मिलेंगे कि सिर न खुजा सकोगे। धोखा खा गए हम काग़ज़ के फूलों को गुलाब बताया गया। प्लास्टिक के पेड़ों को चमन बताया गया, रबड़ के फलों को हमें असली फल बताया गया। धोखा खा गए हम। कोई बाज़ार में असली तो फल लाए, कोई बाज़ार में असली फूल तो लाए, कोई बाज़ार में सही आवाज़ तो लगाए, कोई तौहीद का नग़मा तो सुनाए, कोइ रिसालत का गीत तो गाए।

दास्ताने ग़म

मेरे रब की क़सम गाने वालों को सुनने वाले नहीं मिलेंगे। नाचने वालियों को देखने वाले नहीं मिलेंगे पर कोई बाज़ार में तो आए—

बड़े शौक़ से सुन रहा था ज़माना
हम ही सो गए दास्तां कहते कहते

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा मुबारक, अतहर, मुतहर, अनवर, आज़म, अशरफ़, अकमल, आला और मुबारक प्यारी ज़िन्दगी को लेकर सारी दुनिया में फिरना यह हमारा काम है।

आँसुओं की करामात

आओ तौबा करें, अकेले भी सब मिलकर भी। साल की शुरूआत है। पिछला साल गया। बड़ी काली-काली स्यिाहियाँ हमारे दामन पर लगीं। देखता रहा, धब्बे देखता रहा फिर चुप करके अपनी बिसात को लपेटा पिटारी को उठाया और चल दिया। तो आओ आज ऐसी तौबा करें सिर्फ़ पिछला साल नहीं बल्कि पिछली ज़िन्दगी के जितने गुनाह हैं सबको अल्लाह से माफ़ करवा लें कि उसके नज़दीक तो एक हाय एक आँसू सत्तर बरस के गुनाहों, सत्तर हज़ार बरस के हों आँसू के क़तरे पर माफ़ कर देता है। तो आज भाईयो! तौबा करो।

तबलीग़ तबलीग़ी जमात का काम नहीं है। तबलीग़ उम्मते मुहम्मदिया का काम है। नमाज़ बूढ़ों का काम नहीं हर कलिमा पढ़ने वाले के माथे का झूमर है। सज्दे का मेहराब हमारे माथे का झूमर है। सज्दे की मेहराब हमारे पाँ की पाज़ेब है। अत्तहिय्यात में बैठने से जो पाँ में निशान पड़ते हैं।

रौशन पेशानियाँ

यह हमारी पाज़ेब है। देखना क़यामत के दिन कैसा रौशन

होगा? माथा और वह जगहें जिन पर सज्दों और नमाज़ पढ़ने में निशान पड़े। क़यामत के दिन सूरज की तरह रौशनी उनसे खिल रही होगी। तो भाईयो तौबा करते हो? अल्लाह बड़ा करीम है।

हमारा काम तो बड़ा आसान है। ऊपर अल्लाह बड़ा मेहरबान नीचे रसूल बड़ा मेहरबान है। वह ऊपर रऊफ़ुर्रहीम है, यह नीचे रऊफ़ुर्रहीम है। हम दो रऊफ़ुर्रहीम हस्तियों के बीच हैं। काम बड़ा आसान है कि बस तौबा कर लें।

अल्लामा असफ़ेहानी रह० फ़रमाते हैं कि मैं क़ब्र मुबारक पर बैठा पढ़ रहा था। यह वह दौर था जब गुंबद न था, रौज़ा न था। दूसरी सदी या तीसरी सदी का दौर है। कहीं ज़माना देखा न ही किसी किताब में पढ़ा। अन्दाज़ा बता रहा हूँ।

देहाती के दर्द भरे अशआर

एक बद्दू आया और आकर कहने लगा ﴿السلام عليك يا رسول الله﴾ सलाम पेश किया फिर कहने लगा आपके रब का फ़रमान है ﴿ولو انهم .... جاؤا رحيما﴾ तक कि मेरे महबूब अगर तेरी उम्मत गुनाह करके तेरे पास आ जाए और मुझ से माफ़ी मांगे और तौबा करे और साथ में तू भी सिफ़ारिश करे तो मैं उनको माफ़ कर दूँगा। यह क़ुरआन की आयत है। तो कहने लगा मैं आपके पास आया हूँ गुनाहों का इक़रार करके तौबा करके माफ़ी मांग के और आपको सिफ़ारिशी बनाता हूँ। आप अपने रब के दरबार में सिफ़ारिश करें कि मेरे गुनाह माफ़ कर दे। इसके बाद उसने चार शे'र पढ़े। इनमें दो शे'र आज भी जाली मुबारक के जो दो सतून

हैं दांए बाएं इन पर आज भी लिखे हुए हैं। और अल्लामा नुव्वी की किताब मजमुआ में लिखे हुए हैं। ये दोनों बड़ी मज़बूत किताबें हैं। उनमें यह वाकिया लिखा हुआ है तो उसने शे'र पढ़ा–

ऐ वह हस्ती! ऐ वह मुबारक ज़ात! जिसके कब्र में जाने की बरकत से ज़मीन का अन्दर भी मौत्तर हो गया और ज़मीन का बाहर भी मौत्तर हो गया। वादियाँ भी खुशगवार हो गयीं, चोटियाँ भी खुशगवार हो गयीं। मेरी जान कुर्बान हो इस कब्र पर जिस पर आप आराम फ़रमा रहे हैं कि आपके साथ आपकी सख़ावत भी मौजूद है, आपकी बरकत भी मौजूद है, आपका दरगुज़र करना भी मौजूद है, आपका आला ज़रफ़ भी मौजूद।

ये दो शे'र और भी लिखे हुए हैं।

जब पुलसिरात पर क़दम डगमगा रहे होंगे और पत्ते पानी हो रहे होंगे। उस वक़्त आपकी शफ़ाअत का आसरा है कि हम पार हो सकेगें। हमारे पास कोई अमल नहीं जिस पर भरोसा करके उसको पार भेज सकें। जब उम्मते मुहम्मदिया पुलसिरात पर आएगी तो मेरा नबी कहेगाः–

﴿يا ربی سلم سلم﴾

ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को पार लगा दे। अरे मेरे भाईयो जो पुलसिरात पर न भूला, जो दुनिया से जाने के बाद न भूला, जो दुनिया से जाते वक़्त न भूला उसकी सुन्नतों को ज़िब्ह कर दिया हमने। कौन सी शादी है जिसमें ढोल नहीं बजता, नाच नहीं होता। अरे भाई क्या कर हो? अरे बच्चें हैं ज़रा खुशी कर रहे हैं। हाय तुमने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी खुश करने का सोच लिया होता। तुमने अपने बच्चों को तो खुश किया मगर उस

महबूब को नाराज़ कर लिया जो तुम्हारे लिए आँसू बहाता गया।

आपकी नसीहत मुलाज़िमों से अच्छा सुलूक करना

हमारी मुहब्बत मतलब की है। बीवी बात न माने तो सारी मुहब्बत नफ़रत में बदल जाती है। औलादें नफ़रत करतीं हैं और जिन औलादों को पाला है वे ग़ुर्राने लगीं तो माँ-बाप नफ़रत करने लग जाते हैं। हमारी सारी मुहब्बतें मतलब की हैं। मेरे महबूब को मेरे प्यारे नबी को उम्मत से प्यार बग़ैर लालच के था। सिर्फ़ सहाबा से नहीं था। जाने से एक हफ़्ता पहले अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हाज़िरे ख़िदमत हुए। आँखों में आँसू आ गए। आपने फ़रमाया वक़्त आ चुका है। मेरा तुम्हें आख़िरी सलाम हो। मेरे बाद मेरी उम्मत आए उन्हें भी कहना कि तुम्हारा नबी तुम्हें सलाम कह गया था।

ग़ुलाम, मुसलमान, ड्राइवर, बावर्ची, घर के काम करने वालों से अच्छा सुलूक करना। कितने हैं जो नौकरों का एहतिराम करते हैं? कितने हैं जो ग़ुस्से में अपने को गाली से बचाते हैं? आख़िरी वसीयत भी पारा-पारा कर दी।

दोज़ख़ की चीख़

और पुलसिरात आ चुका है। जहन्नम आ चुकी है, जन्नत आ चुकी है और काएनात थर-थर काँप रही है, अर्श सिर पर आ चुका है, फ़रिश्ते तराज़ू थाम चुके हैं। वह हिल रहा है और सबके दम घुट रहे हैं। एकदम दोज़ख़ एक चीख़ मारेगी। इस चीख़ पर बड़े-बड़े इन्सान मुँह के बल गिरेंगे, फ़रिश्ते गिरेंगे और सालेह

अमल रखने वाला इन्सान भी एक वक़्त यूँ कहेगा कि आज मेरी निजात नहीं। बेसाख़्ता नबी पुकार उठेंगे

अंबिया और जहन्नम का ख़ौफ़

आदम अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

शीश अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

नूह अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इदरीस अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

सालेह अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

हूद अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

शुऐब अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

इब्राहीम अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

लूत अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

हारून, मूसा, यूशा अलैहिमुस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

याह्या ज़करिया अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

दाऊद, सुलेमान अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

दानियाल अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी,

ईसा अलैहिस्सलाम बोलेंगे नफ़्सी-नफ़्सी या अल्लाह मैं अपनी माँ मरयम का भी सवाल नहीं करता। मेरी जान बचा। मैं और आप किसको याद करेंगे?

और इधर देखो, इसकी सुनो जो इस सारे मजमे में, सारे महशूर में, इन सारे मर्दों में, इन सारी औरतों में, नबियों में, रसूलों में, फ़रिश्तों में एक हस्ती है जिसकी धुन निराली है, जिसकी आंहें निराली हैं, जिसकी सोज़ और है, जिसकी दुआ और है, जिसकी पुकार और है, उसके हाथ अर्श की तरफ़ उठे हुए हैं और नफ़्सी-नफ़्सी नहीं कह रहा है। वह कह रहा है:

"या रब्बी उम्मती-उम्मती", "या रब्बी उम्मती-उम्मती"

मेरे मौला मेरी उम्मत बचा, मेरे मौला मेरी उम्मत बचा।

नहीं बचाना फिर भी बचा ले। मेरी उम्मत को माफ़ कर दे। नहीं करना है फिर भी माफ़ कर दे। मैंने क्या बदला दिया? मैंने तेज़ धार का ख़ंजर उठाया और उसकी सीरत पर भी वार किया और उसकी सूरत पर भी वार किया। उसे टुकड़े-टुकड़े करके बखेर दिया।

हाय ऐसे वफ़ा करने वाले से जफ़ा कर गए। पुलसिरात पर से गुज़र रहें हैं और कह रहे हैं ﴿يارب سلم سلم﴾ अल्लाह मेरी उम्मत को पार लगा दे। तो वह बद्दू कह रहा है आपके तुफ़ैल ही से तो पुलसिरात पार होगा।

या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं अबूबक्र, उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को भी नहीं भूल सकता। उनका भी उम्मत पर एहसान है। मेरा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर सलाम हो और होता रहे और पहुँचता रहे और चलता रहे जब तक लिखने वाले का क़लम लिखता रहे, अदीब का अदब शहपारे बखेरता रहे, जब

तक कागज़ कलम चलते रहें, कापियाँ दफ़्तर स्याह होते रहें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरा आपको सलाम पहुँचता रहे। आज भी उस बद्दू का सलाम हुज़ूर को जा रहा है कि कलम चल रहे हैं, कापियाँ ख़त्म हो रही हैं और रजिस्टर काले हो रहे हैं।

शराब के जाम

अल्लाह तआला ने ऐसा हुस्न व जमाल उनको बख़्शा है कि एक हाथ में जाम दूसरे हाथ में सुराही होगी। कहेंगी कि यह ले तूने अपने आपको हराम से बचाया। आज हम पिला रहे हैं। एक इससे ऊपर का दर्जा है वह तो साक़ी भी निराला है और महफ़िल भी निराली है और आलम भी दोबाला वाह! वाह! क्या होगा?

﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا.﴾

वहाँ अल्लाह खुद डाल कर पिला रहा होगा। आ जाओ मैं पिलाता हूँ। वाह! वाह! साक़ी अल्लाह जाम तसनीम हो। तसनीम जन्नतुलफ़िरदौस की शराब है जो दूसरे जन्नतियों को नहीं मिलेगी। सिर्फ़ जन्नतुलफ़िरदौस वाले पिएंगे। थोड़ी सी मिलावट करके बाक़ी जन्नतियों को दी जाएगी लेकिन फ़िरदौस वालों को ख़ालिस पिलाई जाएगी।

﴿مزاجه من تسنيم عينا يشربو بها المقربون.﴾

नीचे वालों को मिलावट करके ऊपर वालों का ख़ालिस दी जाएगी।

वहाँ शराब तसनीम है, जाम फ़िरदौसी है, साक़ी अल्लाह है। अब मैं इसको कैसे बयान करूं? और आप कैसे समझें? तो जब अल्लाह कहता है यह न करो तो मुफ़्त में नहीं कह रहा है बहुत कुछ दे रहा है। कहा ज़िना न करो मुफ़्त में नहीं कह रहा है मैं तेरी शादी करूंगा।

जन्नत की हूर "लाएबा" का हुस्न

﴿وزوجهم بحور عين﴾ मैं तेरी शादी करूंगा जन्नत की हसीन लड़कियों के साथ। जन्नत में एक हूर है जिसका नाम "लाएबा" है। वह ऐसी हसीन है जिस पर खुद जन्नत की हूरें आशिक़ हैं। मुश्क ज़ाफ़रान, अंबर, काफ़ूर से बनी है। और जन्नत की हूरें अगर हमें उसका हुस्न पता चल जाए तो कुछ तेरे लिए क़ुर्बान कर दें। पर मुश्किल यह है कि वह नज़र नहीं आ सकतीं अगर नज़र आ जाएं तो हम सह नहीं सकते, मर जाएं। लाएबा खेलने वाली अपने ख़ाविन्द से लाड करने वाली। उसके माथे पर लिखा हुआ है।

﴿ما احب ان يكون له مثلى فليعمل برضاء ربى.﴾

जो मुझ से शादी करना चाहता है। मेरे रब को राज़ी करे। मुझे राज़ी करे। जो मेरे रब को राज़ी करे मैं उसकी हूँगी। जन्नत की औरतें पैदा नहीं होतीं जैसे दुनिया की औरत का बच्चा, बच्ची पैदा होती है। वह ढकी हुई है। उसके अन्दर मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर मिलता है जैसे आटा गूंधा जाता है मशीन में यूँ चलता है। एकदम से अल्लाह का नूर आकर उसमें पड़ता है तो

उसमें से जन्नत की हूर तैयार होकर बाहर निकलकर आती है। अल्लाह तआला ने उसे सौ-सौ जोड़े पहनाए, उसके चेहरे पर अपने नूर की तजल्ली डाली। अब अरबों खरबों साल भी उसका हुस्न मांद नहीं पड़ेगा, दमकता जाएगा, चमकता जाएगा, महकती जाएगी न हुस्न में कमी न नाज़ व अन्दाज़ में कमी आएगी और हर नज़र में पहले से बहत्तर गुना हसीन हो जाएगी। जब यह निकलकर बाहर आती है तो उनको ख़ेमों में बिठाया जाता है। फिर ये मिलकर गाने लगती हैं।

सत्तर साल तक गाना सुनने वाले कौन?

एक दफ़ा जुनैद जमशेद कहने लगा कि हमारा गाना होता है साढ़े तीन मिनट का। लोग खुश होते हैं तो हम एक गाना गाते हैं तो दस मिनट आख़िरी हद है। मैंने कहा तुम्हारा लम्बे से लम्बा गाना दस मिनट का और जन्नत का छोटे से छोटा गाना सत्तर साल और कौन सुनेगा? अल्लाह पाक ऐलान करेगा मेरे वह बन्दे कहाँ हैं जो ख़ानेवाल में गाना नहीं सुनते जो दुनिया में गाना नहीं सुनते थे?

कहाँ हैं वह बन्दे जो दुनिया में गाना नहीं सुनते थे। आओ आओ आज सुनो! अपने रहमान की जन्नत में और एक आदमी ऐसा बैठा होगा, यूँ लेटा होगा, यह उसका हाथ होगा। दो लड़कियाँ ऐसे बैठी होंगी और दो सिरहाने में फिर उनसे कहेगा मैं ख़ानेवाल में गाना नहीं सुनता था अल्लाह ने हराम किया हुआ था। वे कहेंगी तुम ने किस गंदी चीज़ का नाम लिया आओ हम

तुम्हें जन्नत के गीत सुनाते हैं। वह ऐसे ही बैठा होगा और दूसरी तरफ़ दो पाँव की तरफ़ बैठी होंगी। वह एकदम सिर उठाएंगी, उसके साथ पेड़ साज़ बन जाएगा, हवा मौसिक़ार होगी, पेड़ साज़ होगा, हूर की आवाज़ होगी। ये तीन मिलकर शुरू होंगे तो सत्तर बरस तक गाएंगी।

जन्नत के ख़ूबसूरत परिन्दे

और वह आदमी यहाँ से न सो सकेगा। इसी में मस्त पड़ा हुआ है। वह जब चुप होंगी, यह नहीं कहेगा चुप हो। जिस चीज़ से अल्लाह ने रोका है आगे उसकी क़ीमत लगाई है। मुफ़्त में नहीं रोका। करो तो सही, हराम न खाना, क्यों खाने तैयार हैं तेरे लिए।

﴿ولحم طير فاكهة مما يشتهون.﴾

फल आ रहे हैं, झुके हुए, पके हुए, लटके हुए, सजाए हुए, छिलका कोई नहीं। खाओ पाख़ाना नहीं, पियो पेशाब नहीं। परिन्दे उड़ते हुए आ रहे हैं, जानवर भागे हुए आ रहे हैं। हमें आप खाएंगे? परिन्दे आ रहे हैं, हमें आप खाएंगे? परिन्दों में मुक़ाबला हो रहा है। यह कहेगा मुझे खाओ, वह कहेगा मुझे खाओ, तीसरा कहेगा मुझे खाओ, चौथा कहेगा मुझे खाओ। एक कहेगा मुझे खाओ मैं जन्नतुलफ़िरदौस की घास खाकर आया हूँ, सलसबील के चश्मे से पानी पीकर आया हूँ। एक तरफ़ से कबाब खिलाऊँगा। मुझे खाओ। अपने फ़ज़ाईल ख़ुद बता रहा है। मुझे खाओ क्योंकि उन्हें पता है कि मरना कोई नहीं। यहाँ तो अपने घर में मुर्ग़ी उसके अंडे से बच्चा निकला, उसको दाना खिलाकर परवान

चढ़ाया। अब उसे ज़िब्ह करने के लिए ले गए।

जन्नत के लज़ीज़ खाने

और यहाँ बड़े मज़े हैं। वह ख़ुद आ रहे हैं। आप हमें खाएं, आप हमें खाएं। उन्हें पता है कि खाने के बाद हम ख़ुद ज़िन्दा हो जाएंगे। मौत नहीं है। फिर जब कहेगा खिलाओ तो अपने पर फैला देगा। सत्तर हज़ार होंगे फिर उनको ऐसे-ऐसे करेगा तो हर पर से खाने की एक क़िस्म गिरेगी। सत्तर हज़ार क़िस्में खाने की एक परिन्दे की खाएगा। खा रहा है, खा रहा है, खा रहा है। हर लुक़्मे की लज़्ज़त पहले से बढ़ जाएगी। अब वह ज़माना नहीं कि दाँत टूट गए। बनावटी दाँत अब वह ज़माना गया। खाओ अब हर लुक़्मा की लज़्ज़त पहले से बढ़ रही है। मुँह में रोटी रखी, ख़्याल आया चावल का तो चावल मंगाने नहीं पड़ेंगे। वही लुक़्मा चावल बन गया।

ख़्याल बोटी का आया तो बोटी की तरफ़ हाथ बढ़ाने की ज़रूरत नहीं। वही लुक़्मा बोटी बन जाएगा। उसे खाते-खाते ख़्याल आया मछली के कबाब का तो वही लुक़्मा मछली का कबाब बन जाएगा। उसी के खाते-खाते ख़्याल आया केले का तो वह केला बन जाएगा, आम का तो आम बन जाएगा, अमरूद का तो अमरूद बन जाएगा, अनार का तो अनार बन जाएगा, पिस्ते का तो पिस्ता बन जाएगा। एक लुक़्में में नियतें बदलता जाए वह वह होता जाएगा। मिठाई का ख़्याल आया तो मिठाई हलवे का ख़्याल आया तो हलवा बना, खीर का तो खीर बना, आलू का

ख़्याल आया तो आलू बना, कबाब का ख़्याल आया तो कबाब बना।

﴿ولكم فيها ما تشتهي انفسكم ولكم فيها ما تدعون.﴾

जो चाहोगे अल्लाह से तो मुफ़्त कोई चीज़ नहीं है। बड़ी कीमत लगेगी, बड़ी कीमत लगेगी। मेरे भाई दुनिया को गुज़रगाह बनाओ।

आख़िरत की तैयारी कर लो

जन्नत के आमाल को ज़ख़ीरा बनाओ आख़िरत के लिए। एक दिन यक़ीनन ऐसा आएगा कि हम में से एक भी धरती पर ज़िन्दा न होगा और एक दिन यक़ीनन ऐसा आएगा कि हमारे नाम के जानने वाले भी मर जाएंगे और फिर हमारे तज़्किरे भी मिट जाएंगे और हमारी क़ब्रें भी मिट जाएंगी और बेनिशान हो जाएंगे। एक अकेला वह रह जाएगा। तन्हे तन्हा वाहिद अल्लाह। तो जन्नत का शौक़ रखो। दोज़ख़ का ख़ौफ़ रखो तो इस जहान में भी मज़े हैं।

आख़िरत में भी मज़े। अल्लाह हिम्मत दे तो चार-चार महीने जल्दी लगा लें। हिम्मत करो चार महीने जल्दी लगाओ और अपने अख़्लाक़ अच्छे कर लो। नुस्ख़ा बताता हूँ जन्नतुलफ़िरदौस में घर बनाने का अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैं ज़ामिन हूँ तुम अख़्लाक़ अच्छे करो, मैं जन्नतुलफ़िरदौस में घर लेकर दूँगा।

अच्छे अख़्लाक़ पैदा करो

अच्छे अख़्लाक़ किसे कहते हैं? जो तोड़े उससे जोड़ो, जो गाली दे उसे दुआ दो, जो तुम्हारे ऐब उछाले तुम उसके ऐब छिपाओ, जो तुम्हारा हक़ छीने तुम उसका हक़ अदा करो तो इन अख़्लाक़ पर अल्लाह जन्नतुलफ़िरदौस में घर देगा।

बड़े-बड़े तहज्जुदगुज़ार इबादतगुज़ार, नीचे होंगे और अच्छे अख़्लाक़ वाले ऊपर होंगे। तो मेरे नबी ने फ़रमाया कि जो अपनी सारी ज़िन्दगी सारी रात तहज्जुद पढ़े, सारी ज़िन्दगी सारे दिन रोज़ा रखे इतना बड़ा अमल लेकर आए मगर अच्छे अख़्लाक़ वाला उससे भी ऊँचे मक़ाम पर होगा। भाई गुस्सा पीना सीखो, निकालना न सीखो, पीना सीखो। मुहब्बतें परवान चढ़ जाएंगी, अदावतें वीरान हो जाएंगी। इन्साफ़ ज़िन्दा हो जाएगा। और बेटियों को जाएदाद में से हिस्सा दो। अरे हम यहाँ ज़मींदार लोग अपनी बच्चियों का ज़मीन में से हिस्सा नहीं देते। यह ज़ुल्मे अज़ीम है, जुर्मे अज़ीम है। जिस पुश्त के पानी से बच्चा बना उसी से बच्ची बनी और बेटियों का हक़ खा जाना, बहनों का हक़ न देना हर साल हज नहीं रोज़ाना अगर अरफ़ात बन जाए और तुम रोज़ाना हज करो, रोज़ाना रमज़ान बन जाए तुम सारी ज़िन्दगी रोज़े रखो फिर भी अल्लाह की पकड़ से नहीं बच सकोगे। अगर बेटियों और बहनों का हक़ खा लिया तो हम ही ज़मींदारों में कोई दस्तूर नहीं, बेटियों को ज़मीन नहीं देते कि हमारी ज़मीन पराई न हो जाए मगर बहुत बड़ी क़ीमत देनी पड़ेगी। इसका पता नहीं ताजिर क्या करते हैं? ज़मींदार तो नहीं देते। सबसे पहले इस

इलाक़े में मेरे बाप ने बेटियों को हिस्सा दिया था।

मेरा ताया लड़ पड़ा था। बजाए शाबाश देने के सबने लान-तान किया मेरे बाप को। यह हिन्दू धर्म में बेटियों का कोई हिस्सा नहीं। अपनी बेटियों को हिस्सा दो। विरासत मौत के बाद है मगर अपने बाद ऐसा इन्तिज़ाम करके जाओ कि तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे बेटे बहनों का हक़ न खाएं वरना आप भी पकड़े जाएंगे। अल्लाह पाक ने अपने नबी को बेटियाँ दीं। बेटे दिए तो उठा लिए। अल्लाह तआला जिसको दो बेटियाँ दें या दो बहनें दे और वह उन पर ख़र्च करता रहा, पालता रहा फिर शादी की डोली में बिठाया, पिया घर पहुँचाया फिर उनकी शादी के बाद भी उन पर ख़र्च करता करता मर गया तो उस पर जन्नत वाजिब हो गई। कोई बहन दुखी हो, माँ-बाप न हों, भाई देने को तैयार नहीं होते।

अरे ये हमारे अपने बच्चे हैं, इन्हें देखना है तो भाई अपनी बहनों का हक़ दो।

मौलाना जमशेद मद्दज़िल्लहु का ख़ौफ़े ख़ुदा

मैं एक दफ़ा राएविन्ड गया अपने घर से शहद लेकर गया। मेरे उस्ताद हैं मौलाना जमशेद साहब मैंने उनसे तफ़सीर पढ़ी है। मैंने उनकी ख़िदमत में पेश किया तो पूछने लगे कहाँ से लाए हो? अपने बाग़ से? कहने लगे तेरे बाप ने अपनी ज़मीन में से बहनों को हिस्सा दिया था? यह नहीं कहा माशाअल्लाह जज़ाकअल्लाह। जिनहोंने आख़िरत को सामने रखा होता है उनके अन्दाज़ भी सुन लो। मुझसे कहने लगे कहाँ से लाए? मैंने कहा अपने बाग़ से। तेरे बाप ने अपनी ज़मीन में से अपनी बहनों का हिस्सा दिया था?

मैंने कहा मेरे बाप की बहन नहीं थी सिर्फ़ दो भाई थे। अच्छा तेरे दादा ने ज़मीन में से अपनी बहनों को हिस्सा दिया था? मैंने कहा मेरे पैदा होने से पहले के सवाल न करो। मुझे नहीं पता। हंसने लगे कहने लगे अच्छा ठीक है रख दो। बाज़ार का आम नहीं खाते मैं भेजता हूँ वह खाते हैं। कहते हैं कि ये जितने ज़मींदार हैं हराम तरीक़े से बाग़ का सौदा करते हैं कि बाग़ आमतौर से पत्तों पर बिक जाते हैं। अभी बाग़ काटा गया अभी आगे बेच दिया। हलाल रोटी हराम करना ख़ालिस हलाल रिज़्क़ को हलाल कर दिया। अरे चार दिन सब्र कर लो फल ज़ाहिर होने दो फिर बेच लेना। फल अभी नहीं आता और बेच देते हैं। मेरे बारे में उनको पता है सही करता है। मैं जब भेजता हूँ बस वह खाते हैं। तो भाईयो उलमा से पूछो रिज़्क़ कैसे कमाया जाता है?

तो मेरे भाईयो! आओ हम तौबा करें। अपने रब को मनाएं, उसके हुक्मों पर आएं। उसको लेकर दुनिया में फिरें। यही तबलीग़ का काम है। इसमें अख़्लाक़ के साथ मुहब्बतें फैलाओ, नफ़रतें न फैलाओ। ऐ मेरे भाईयो ग़ीबत के लिए होंट सी लो।

ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है

मेरे रब की क़सम एक हज़ार तसबीह से ज़्यादा मुक़द्दस अमल और अफ़ज़ल अमल है किसी की ग़ीबत से ज़बान को बन्द कर लेना। सैकड़ों और हज़ारों नफ़्लों से भारी है किसी की चुग़ली से मुँह को सी लेना, किसी को ताना देने से होंट सी लेना। किसी की ग़ीबत करने से अपने आपको बचा लेना, लगाई बुझाई से अपने आपको बचा लेना। मेरे भाईयो ज़बान को रोको। यह जो

चलना शुरू होती है तो माँओं से भी नौकरों जैसा सुलूक हुआ।

मासूम बच्ची के मोटे मोटे आँसू

अभी कुछ दिन पहले की बात है मैं एक बच्ची को सुन रहा था अपनी माँ से कह रही है भूख नहीं और उसके मोटे-मोटे आँसू गिर रहे थे। माँ के आँसू गिर रहे थे अर्शे इलाही हिल रहा है, धरती थरथरा रही है, कपकपा रही है और गालियाँ हुकूमत को दे रहे हैं, फ़ौज बड़ी गंदी है, हुकूमत बड़ी गंदी है, पुलिस बड़ी गंदी है।

माँ की आँखों की ठंडक बनो

अरे उस बेटे ने, उस बेटी ने धरती को आग लगा दी जिसने बाप का गिरेबान पकड़ा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के सामने किसी ने माँ को कंधे पर बिठाकर तवाफ़ कराया। आकर कहने लगा क्या ख़्याल है मैंने माँ का हक़ अदा कर दिया? हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया तेरी माँ नें तुझे पालते हुए पता नहीं कितने साँस लम्बे-लम्बे लिए होंगे उनमें से एक साँस का भी हक़ अदा नहीं हुआ। माँओं की आँखों की ठंडक बनो, बाप की दुआएं लो। हाँ फ़रमाबरदारी के अन्दर नाफ़रमानी में नहीं। बाप कहे दाढ़ी मुंढा दो। यहाँ बाप की इताअत जाएज़ नहीं है। माँ कहे हराम कमाकर ला इसमें माँ की इताअत जाएज़ नहीं है और मेरे भाईयो! माँ-बाप को जन्नत बनाओ वे तुम्हारी जन्नत हैं, वह तुम्हारी दोज़ख़ हैं।

उनकी मानकर उनको खुश करो जन्नत है उनकी नाफ़रमानी करो जहन्नम है।

माँ का नाफ़रमान जहन्नम में जाएगा

सहाबी सब जन्नती। कोई सहाबी दोज़ख में नहीं जा सकता। सब सहाबा जन्नती हैं और जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने मर गए और आपने जनाज़े पढ़ाए वे हज़ार फ़ीसद जन्नती हैं। आपकी ज़िन्दगी में एक सहाबी मर रहे हैं। भागे हुए लोग आ रहे हैं।

या रसूलुल्लाह! आपका गुलाम कलिमा नहीं पढ़ रहा है। आप बेक़रार होकर उठे। देखा किस गुनाह ने कलिमे से रोक दिया है। उनकी माँ को बुलाया। माँ आयीं। कहा अम्मा! अपने बेटे को माफ़ कर दे। कहा या रसूलुल्लाह! इसने मुझे बड़ा तंग किया है मैं माफ़ नहीं करूंगी। आपने कहा फिर मैं इसको आग लगा दूँ? हमेशा औलाद ही गुस्ताख़ हुआ करती है। माँ-बाप नहीं छोड़ते औलाद को औलाद ही माँ-बाप को छोड़ देती हैं। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं यह तो सह नहीं सकती कि आग लगा दें। कहा अगर तूने माफ़ नहीं किया तो सीधा दोज़ख की आग में जाएगा। सहाबी होना भी उसे बचा नहीं सकता। उसने कहा मैं माफ़ करती हूँ। उसने इधर कहा माफ़ करती हूँ उधर उसने कहा "ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" और साथ जान निकल गई।

बेहयाई को आग लगा दो

तो मेरे भाईयो! आओ तौबा करें, नया साल है, नई ज़िन्दगी

की बुनियादें रखें। सुबहें होने वाली हैं, इन्शाअल्लाह बातिल ज़ुल्म व सितम, बेहयाई इन सबकी आग ख़त्म होती है और हो रही है दिन ढल नहीं चुका बल्कि मग़रिब के उफ़क तक पहुँच चुका है अगर यह काएनात अल्लाह की है तो यह होकर रहेगा। तौबा करते हो सारे? एक दफ़ा मुँह से कह दो या अल्लाह मेरी तौबा जिन्होंने की है सच्ची तौबा, मेरे कहने पर नहीं, सच्ची तौबा की है उनको मुबारक हो। अल्लाह की क़सम उनके सब गुनाह माफ़ हो गए और अल्लाह उनका अर्शों पर नाम लेकर कह रहा है, फ़लाँ बिन फ़लाँ ने तौबा की फ़रिशतों तुम गवाह हो मैंने माफ़ कर दिया। हक़ तलफ़ियाँ माफ़ हो गयीं, हक़ बाक़ी रह गए। नमाज़ नहीं पढ़ता था, बहुत बड़ा गुनाह किया, माफ़ हो गया लेकिन नमाज़ की क़ज़ा बाक़ी है ज़मीन दबा ली थी, दबाए रखी। बहुत बड़ा जुर्म किया, माफ़ हो गया लेकिन ज़मीन की वापसी बाक़ी रह गई। यह मतलब है माफ़ होने का कि फ़राईज़ व हक़ूक़ तलफ़ी का गुनाह माफ़ हो गया।

तबलीग़ को अपना मक़सदे ज़िन्दगी बना लो

तो मेरे भाईयो! सारी उम्मत से तौबा कराना, सारी नस्लों से तौबा कराना, सारी दुनिया के इन्सानों को पैग़ामे हक़ सुनाकर उनके कुफ़्र से तौबा कराना यह हमारा काम है। यह हमारी मेहनत है। इसी के लिए घरों को छोड़ना, मुल्क-मुल्क फिरना, दर-दर फिरना इसके लिए हम वक़्त मांगते रहे हैं। इसलिए बोलो भाई तौबा तो कर ली। सब ने तौबा पक्की कर ली। अब बोलो भाई कौन-कौन तैयार है? चार महीने के लिए चालीस दिन के लिए।

﴿كنتم خير امة﴾ तुम सबसे बेहतर उम्मत हो। बेहतरीन होना किस वजह से है। यह हमारी अकेले की इबादत की वजह से नहीं है बल्कि अल्लाह तआला ने हमें यह दौलत दी है। दावत व तबलीग़ के काम की वजह से।

﴿خير امة﴾ बहुत अच्छी हो तुम घरों से निकलते हो। क्या करते हो?

﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر تؤمنون بالله﴾

भलाई फैलाते हो बुराई से रोकते हो और इसका बदला अल्लाह तआला से लेते हो।

﴿تؤمنون بالله﴾ का मतलब अल्लाह पर ईमान लाते हो लेकिन इशारा यह है कि सारी मेहनत का सिला अल्लाह से ले। अल्लाह ने सदियों के बाद इस मेहनत को इज्तिमाई तौर पर ज़िन्दा किया है। यह नहीं कि तबलीग़ का काम हुआ नहीं। तबलीग़ का काम कभी नहीं मिटा वरना तो इस्लाम ही मिट जाता। अफ़राद करते रहे। बड़े ज़माने के बाद अल्लाह तआला ने इसको ज़िन्दा किया है कि अवाम भी कर रहे हैं, ख़्वास भी कर रहे हैं, उलमा भी कर रहे हैं और दुनियादार भी कर रहे हैं और अनपढ़ भी कर रहे हैं और अल्लाह हर एक से कोई न कोई भलाई फैला रहा है। औरों को अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से हिदायत दे रहा है। तो आप कितनी तकलीफ़ गवारा करेंगे? हर महीने तीन दिन तो लगा लिया करें। हर महीने तीन दिन लगाएं। आप किसी गाँव से आए हो, शहर से आए हो, क़स्बे से आए हो, वहाँ से जमात बने, वहाँ से न बने यहाँ मर्कज़ में बने, यहाँ तीन दिन की जमात में निकल गए। तीन दिन निकलना यह आपकी ज़िन्दगी को बदल देगा।

नमाज़ में सुस्ती न किया करो

आहिस्ता-आहिस्ता पूरी ज़िन्दगी का रुख़ बदल जाएगा। इसको मामूली न समझें। नमाज़ एक फ़र्ज़ है कि जिसकी किसी हाल में माफ़ी नहीं और मर्द की नमाज़ मस्जिद में है घर में नहीं। आज़ान के साथ ही दुनिया के काम छोड़ देने का हुक्म है और मस्जिद की तरफ़ क़दम बढ़ाने का हुक्म है। तो आप लोगों से गुज़ारिश है कि जब आज़ान हो तो अपनी-अपनी दुकानें बन्द कर दें, दफ़्तर बन्द कर दें।

﴿حي على الصلوة﴾ के बाद क़लम रुक जाएं, तराज़ू झुक जाएं और मस्जिद को क़दम उठें। शटर गिरा दो दुकानों के अल्लाह खुश होगा कि मेरे लिए काम छोड़कर जा रहे हैं।

खेत में जहाँ है काम छोड़ दो। मस्जिद क़रीब नहीं है आज़ान दो, वज़ू करके ज़ोर से आज़ान दो, कोई आदमी मिले उसे मिलाकर जमात कराओ कोई नहीं मिलता तो इक़ामत कहो और अल्लाहु-अकबर कहकर नमाज़ शुरू करो ज़ोर से कह इस इलाक़े में जितने मुसलमान जिन्न हैं आपके साथ नमाज़ में शरीक हो जाएंगे। आज़ान दे और तकबीर पढ़े इसके साथ वहाँ के अहले ईमान जिन्नात भी शरीक हो जाएंगे। तो नमाज़ को ऐसे ज़िन्दा करो भाईयो! कि जब आज़ान हो तो पूरा ख़ानेवाल बन्द हो जाए, सारे दफ़्तर बन्द हो जाएं, दुकानें बन्द हो जाएं, घरों में चुल्हे बुझ जाएं, औरतें मुसल्लों को दौड़ें। यह मेरे और आपके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आख़िरी वसियत थी।

﴿الصلوة، الصلوة﴾ नमाज़! नमाज़! नमाज़! कहते-कहते आप

दुनिया से चले गए तो कोशिश करेंगे। जिन भाईयों पर ज़कात फ़र्ज़ है उसका पूरा हिसाब लगाकर अदा करें। ज़मींदारों के लिए अश्र अल्लाह ने रखा है कि उसको पूरा अदा करें। और गेंहूँ कटकर आने को है अभी से नियत करके रखें कि इसका अश्र अदा करना है। बीसवाँ हिस्सा अश्र से मुराद यहाँ क्योंकि हमारी ज़मीने बारानी नहीं है इनको कुँए का नहर का पानी लगता है तो यहाँ बीस मन पर एक मन है।

ज़कात देने में कोताही न करो

बारानी इलाक़ों में दस मन पर एक मन और नहरी इलाक़ों में बीस मन पर एक मन है। बीस मन में से एक मन निकल जाए तो पता भी नहीं चलता लेकिन सारे दाने पाक हो जाते हैं। सौ मन में से पाँच मन बचाकर कोई काम न हो सकेगा। पूरा सौ का सौ नापाक हो जाएगा। लाख में ढाई हज़ार बच जाएं तो कोई बड़ा मस्अला हल नहीं होगा लेकिन लाख पूरा नापाक हो जाएगा। ज़कात दें अल्लाह रिज़्क़ बढ़ा देगा और रिज़्क़ को बढ़ाने के लिए सूद पर ना चलो। अपने बैंकों में से सेविंग एकाउन्ट ख़त्म कर दो।

मेरे भाईयो! अल्लाह से लड़ाई न लड़ो। अल्लाह से जंग न करो। भाईयो! दो आदमियों को दोज़ख़ में सबसे शदीद अज़ाब होगा एक सूद लेने वाला एक क़त्ल करने वाला। क़ातिल और सूदख़ोर दोज़ख में सबसे शदीद अज़ाब उठाएंगे और माँ-बाप का नाफ़रमान दुनिया में भी सज़ा भुगतकर मरेगा। यह वाहिद जुर्म है जिसकी सज़ा मरने से पहले मिलेगी।

क़यामत की निशानी! औलाद वालिदैन पर ज़ुल्म करेगी

माँ-बाप की नाफ़रमानी की सज़ा आगे भी मिलेगी यहाँ भी मिलेगी। सूद से बचो अगर रखना ही है तो करंट में रखो सेविंग में न रखो और अब तो लोग भी सूद पर पैसे देते हैं।

हमारे नबी ने मैराज में देखा किसी को साँप काट रहा है। किसी को बिच्छू, किसी को फ़रिश्ते मार रहे हैं, किसी को पत्थर मार रहे हैं, कोई ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ है। एक आदमी देखा जिसका पेट गेंद की तरह उसके पेट के अन्दर साँप घुसे हुए थे। उसे अन्दर से काट रहे थे और आपको पता है कि अन्दर का दर्द बड़ा शदीद होता है। आपने कहा यह कौन हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा यह सूदख़ोर हैं, सूद खाने वाले। तो अपने आपको भाईयो सूंद से बचाओ। माँ-बाप ज़िन्दा हैं तो उनकी दुआएं ले लो। उनके लिए दर्द न बनो उनके लिए राहत बनो। जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने पूछा या रसूलुल्लाह! क़यामत कब आएगी? आपने कहा पता नहीं अल्लाह ही जानता है कब आएगी? उन्होंने कहा कोई निशानी तो बताएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम देखो कि औलाद माँ के साथ नौकर जैसा सुलूक करती है तो समझना क़यामत आ रही है। नौकरों का सा सुलूक माँओं को मारते हैं।

क़ुरआन से मज़ाक क़ुरआन ख़्वानी के ज़रिए

तो इसलिए मेरे भाईयो! माँ-बाप ज़िन्दा हैं तो उनकी राहत

बनो। मर गए तो उनके लिए ईसाले सवाब करो। उनके लिए सदक़ा जारिया बनो। हमारे यहाँ क्या तरीक़ा है कि कोई मर जाए तो औरों को बुलाकर क़ुरआन ख़्वानी क्या करते हैं। मदरसों में जाते हैं। मदरसों में क़ारी साहब ख़त्म कर देंगे। कहते हैं हाँ लिख लो सौ ख़त्म।

यह क़ुरआन के साथ मज़ाक़ न करो। बेटे का एक दफ़ा मुँह से "क़ुलहुवल्लाह" पढ़कर बख़्श देना वह मदरसे के सौ क़ुरआन से ज़्यादा सवाब है। हमारे एक अज़ीज़ हैं उनके वालिद का इन्तिक़ाल हुआ तो उन्होंने मदरसे से बच्चे बुलाए थे क़ुरआन ख़्वानी के लिए। खुद सारे बैठे गप्पे मार रहे थे। उनको बुलाया क़ुरआन पढ़ने के लिए तो मैंने कहा चलो मैं भी बैठकर उनके साथ क़ुरआन पढ़ लेता हूँ तो मैं उसी कमरे में चला गया जहाँ वे बच्चे पढ़ रहे थे। उस वक़्त मैच लगा हुआ था क्रिकेट का तो लड़के कमेन्टरी सुन रहे थे। मैंने कहा बच्चे हैं उनको क्या कहूँ कि क्या हो रहा है तो बैठे रहे बैठे रहे कमेन्टरी सुनते रहे।

तो यह हमारी बड़ी जहालत की रस्म है। खुद अपने माँ-बाप के लिए सदक़ा जारिया बनो अगर चले गए हैं।

हम दुआ मांगते नहीं पढ़ते हैं

अल्लाह की किताब है। इसीलिए तो शरियत का हुक्म हुआ कि अगर बाप मर जाए तो जनाज़ा बेटा पढ़ाए। बेटा अगर किसी को कहे तो वह अलग बात है लेकिन पहला हुक्म बेटे को जो है वह जनाज़े की दुआ पढ़ेगा मांगेगा। पढ़ना और मांगना बड़ा फ़र्क़

है। हम लोग दुआएं मांगते नहीं पढ़ते हैं। इसलिए हमारी दुआएं क़ुबूल नहीं होती।

ग़ैरों से कहा तुम ने ग़ैरों से सुना तुम ने
कुछ हम से कहा होता कुछ हम से सुना होता

अरे कुछ अल्लाह को मनाओ तो सही हम तो दुआ मांगते नहीं हम दुआ पढ़ते हैं और दुआ तो मांगने की चीज़ है न कि पढ़ने की चीज़।

हमारी बदक़िस्मती जनाज़े की नमाज़ से महरूम औलाद

जब कोई मस्जिद का इमाम आकर या कोई आलिम आकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ाता है तो वह दुआए जनाज़ा पढ़ता है मांगता नहीं है। मुझे इस बात का पता चला पहली दफ़ा जब मैंने अपने बाप का जनाज़ा ख़ुद पढ़ाया। 14 अगस्त सन् 1988 ई० को मुझे उस दिन पता चला कि मैं जनाज़े की दुआ मांग रहा हूँ पढ़ नहीं रहा हूँ मांग रहा हूँ। हमारी बदक़िस्मती यह है कि आज की औलाद को पता नहीं कि जनाज़ा पढ़ाना कैसे है हालाँकि एक ही चीज़ है पढ़ना और पढ़ाना। ग़ुस्ल माँ-बाप को औलाद दे। माँ को बेटी दे बाप को बेटा दे तो फिर उसके साथ-साथ हाय हाय भी होगी। जिस मुहब्बत से वह बाप के पहलू बदलेगा दूसरा तो नहीं बदलेगा। तो नादार माँ-बाप हैं जो कहते हैं कि मेरा बेटा डाक्टर बन जाए, इन्जीनियर बन जाए, ताजिर बन जाए, ज़्यादा पैसे कमाए। अरे बाबा तेरे किस काम के। औलाद का मुक़द्दर

माँ-बाप नहीं बनाया करते।

तर्बियत औलाद का हक़ अदा करो

माँ-बाप के ज़िम्मे है औलाद को दीन सिखाना। उनको हलाल कमाई का तरीक़ा सिखाना भी और उनको मुसलमान बनाना भी। उनको ईमान वाला बना दें तो वे हमारे काम आएंगे।

अल्लाह से मांगा जाता है, अल्लाह के सामने कमज़ोरियाँ पेश की जाती हैं।

तो मेरे भाईयो! माँ-बाप के लिए हम ठंडक बनें। उनके मरने के बाद भी उनके लिए ईसाले सवाब हो। यह नहीं कि मदरसे से बच्चे बुलाकर पढ़वा दिया खुद पढ़ो, खुद करो। यह मैं इंकार नहीं कर रहा हूँ कि बच्चों ने पढ़ा तो सवाब नहीं होगा। उसमें भी सवाब होगा। उसके लिए ईसाले सवाब किया तो उसका भी अज्र होगा लेकिन जो तेरा एक बार "क़ुलहुवल्लाह" शरीफ़ पढ़ना इस पर भी भारी होगा। तो अगर माँ-बाप हम से पहले चले जाते हैं तो हक़ बन जाता है कि हम उनके लिए ईसाले सवाब करें। इनको दीन सिखाकर मरें।

माफ़ करना सीखो

तो मेरे भाईयो! छोटी छोटी बातों पर लोग मरते हैं। तो माफ करना सीखो, दरगुज़र करना सीखो। छोटी-छोटी बातों पर लोग अदालतों में जा पहुँचते हैं। बाएकाट कर देते हैं। पी जाओ पी

जाओ माफ़ करो। अल्लाह ऐसी इज़्ज़त देगा कि सारा जहाँ देखेगा।

अरे अल्लाह का नबी ज़ामिन खड़ा है। अल्लाह के नबी ने फ़रमाया मैं ज़ामिन हूँ तुम माफ़ करो अल्लाह तुम्हें इज़्ज़त देगा। इससे बड़ी ज़मानत कहाँ से लाएंगे? तो भाईयो हम इन बातों का ख़्याल करें तो आपस में मुहब्बतें बढ़ेंगी। दीन भी बढ़ेगा। आपस में इख़्तिलाफ़ तो होता ही है लेकिन मुहब्बत फिर भी करो। हमारे मसलक का जो इख़्तिलाफ़ है वह इख़्तिलाफ़ से बढ़कर नफ़रत में तब्दील हो चुका है और नफ़रत इस हद तक बढ़ चुकी है कि एक दूसरे को कुफ़्र तक पहुँचा दिया और एक दूसरे की शक्ल देखना भी गवारा नहीं और एक दूसरे को सलाम करना भी गवारा नहीं। तो मेरे भाईयो! हमारे नबी ने यह दुआ मांगी थी कि या अल्लाह इनमें इख़्तिलाफ़ न हो। तो अल्लाह तआला ने अपनी हिकमत के तहत कहा नहीं मेरे महबूब मैं तेरी यह दुआ क़ुबूल नहीं करता। इनमें इख़्तिलाफ़ रहेगा। यह इन्सानी फ़ितरत है लेकिन उसके बावजूद मुहब्बत फ़र्ज़ है। इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी मुहब्बत करना सीखो अगर हम एक दूसरे से नफ़रत कर गए तो उसका आख़िरी फ़ायदा काफ़िर उठाएगा। मुसलमान कभी नहीं उठाएगा। यह सब हम पर पड़ेगी इज्तिमाई तौर पर। इसलिए भाई हर एक के बारे में ख़ुशगुमान रहो, बदगुमान न रहो और पर्दा रखो, पर्दा दरी न करो। ज़ैद बिन हरमला रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे या रसूलुल्लाह मैं मुनाफ़िक़ हूँ मेरे लिए दुआ करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ कर दी। वह पक्के मुसलमान हो गए। फिर उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! मैं और मुनाफ़िक़ों के नाम जानता हूँ। आपको

बता दूँ? आपने फ़रमाया नहीं नहीं मैं किसी के पर्दे खोलना नहीं चाहता। उसके लिए दुआ करूंगा जो नहीं आएगा उसका मामला अल्लाह पर छोड़ दूँगा।

ऐब तलाश न करो

तो एक दूसरे के ऐब तलाश न करो। नज़रें चुरा लो। छिपा लो। अल्लाह आपके ऐब छिपाए रखेगा। यहाँ भी वहाँ भी। अपने रिज़्क़ को हलाल तरीक़े से खाओ। हराम राहों में न जाओ। एक वज़ीफ़ा बताता हूँ बड़ा आसान वज़ीफ़ा है। एक सहाबी आए कि या रसूलुल्लाह! रिज़्क़ की तंगी है कोई वज़ीफ़ा बताएं? आपने फ़रमाया बावुज़ू रहा कर तेरा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। कुछ नहीं करना पड़ेगा, कोई ज़िक्र न कोई तिलावत न तस्बीह। जब वुज़ू टूटे फ़ौरन वूज़ू कर लो। तुम्हारा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। कहा नमाज़ पढ़ो, वुज़ू से रहो तुम्हारा रिज़्क़ बढ़ जाएगा। यह आपका मर्कज़ है।

अपनी मस्जिद से जमाअतों को मत धक्के दिया करो

मस्जिदों से निकालना अल्लाह के मेहमानों को मारना अगरचे बहुत कम हो गया है। फिर कुछ जगहें ऐसी हैं जहाँ मस्जिद से निकाल देते हैं। भाई इनको भी समझाओ और अगर कोई ऐसे भाई बैठे हों तो मैं उनके हाथ जोड़ता हूँ कि अल्लाह के मुसाफ़िरों को दर-ब-दर करना ठीक नहीं है।

हमारे नबी ने तो पक्के काफ़िरों को मस्जिद में बिठाकर खाना खिलाया है। यहाँ वह अनपढ़ किस्म के लोगों ने ज़हन बना लिया है कि नापाक होगी मगर मैं चश्मदीद गवाह हूँ मेरे साथ खुद ऐसा हुआ है। मुक़ामी लोग (जोकि बिदअती थे कहने लगे) वहाबी आ गए, काफ़िर आ गए, गुस्ताख़े रसूल आ गए। हमारे नबी ने कबीला बनू सक़ीफ़ के काफ़िरों को मस्जिद में बिठाया, नजरान के ईसाइयों को मस्जिद में बिठाया। यहाँ वहाँ के काफ़िर मस्जिद में आकर बैठे आपने तो मस्जिद को नहीं धोया था। कितनी बड़ी ज़्यादती है हमारा नबी काफ़िरों को मुसलमान बनाने आया था न कि मुसलमान को काफ़िर बनाने।

भाई दरगुज़र करो, दरगुज़र करो।

राय के इख़्तिलाफ़ के बावजूद भी मुहब्बत करो। अल्लाह आपकी ज़िन्दगी में बरकत देगा। नस्लों में बरकत देगा। किसी को समझाने का तरीक़ा यह नहीं है कि उस पर चढ़ाई कर दो। जुनैद जमशेद है छः साल ये उसके पीछे फिरे। एक दफ़ा भी नहीं कहा तू हराम खाता है और हराम करता है। अब अल्लाह ने उसको पक्का कर दिया है तो उसने मुझ से कहा कि अगर आप एक दफ़ा भी कह देते कि तुम हराम करते हो, हराम कमाते हो तो मैं कभी तुम्हारे क़रीब नहीं आता तो ऐन गुनाह करने वाले को अगर कह दो कि तूने गुनाह कर रहा है तो वह कहता है कि तो कोई मेरा ठेकेदार है। इन्सानी फितरत है कि वह तन्क़ीद पर बिखरता है और प्यार मुहब्बत से कहो तो मान जाता है।

तो मुहब्बत से कहो तो मान जाएगा। तन्क़ीद करोगे तो

तुम्हारा दुश्मन बन जाएगा। तो हमारा जो दीनदार तब्क़ा है वह उन लोगों को नफ़रत से देखता है कि बहुत सी दीन से दूरी का सबब ये लोग हैं। यह कैसी हिमाक़त है। उसको लोग तंज़िया नज़रों से देखेंगे, तंज़िया हँसी हँसेगे तो उन लोगों को पहले ही शैतान उचका हुआ है। हम भी ऐसे बैठे रहेंगे तो कैसे मस्अला हल होगा।

जन्नत के हसीन ज़ेवर

मैं बार-बार रोज़ाना कहता हूँ कि ज़िन्दगी का यह एक बहुत बड़ा खुलासा है। ज़िन्दगी के पुरसकून होने का ज़रिया हैं न कि पैसे गाड़ी, क़ीमती लिबास, ज़ेवर पहनते हैं। हमारे नौजवान, मैं सुबह सैर के लिए निकला तो देखा कि एक नौजवान आ रहा था गले में सोने की चेन डाले हुए, सोने की अंगूठियाँ पहने हुए। तो जन्नत भूल गए हो। अल्लाह ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है जो जन्नत वालों के लिए सोने के ज़ेवर बनाता है और कोई काम नहीं करता। जिन सांचों में वह ज़ेवर बनाता है अगर वह सांचा सूरज को दिखाएं तो सूरज नज़र नहीं आएगा तो ज़ेवर कैसा होगा? तो मेरे नबी ने फ़रमाया कि जन्नत की औरतें भी ज़ेवर पहनेंगी आदमी भी तो अल्लाह तआला मर्दों को जो ज़ेवर पहनाएगा वह उनके जिस्म पर औरतों से ज़्यादा हसीन नज़र आएगा। जिस चीज़ से अल्लाह रोकता है वह आगे देता है। शराब का दौर है और काफ़ूर की शराब लेकिन यह सब नीचा दर्जा है कि सुराहियाँ पड़ीं हैं, हमाम पड़े हैं। खुद उठाते हैं और भरकर लेते हैं।

﴿ان الابرار يشربون من كاس كان مزاجها كافورا.﴾

सुराही उठाई, जाम उठाया, उंडेला फिर मुँह को लगाया। क़ुरआन यह एक नक़्शा खींचता है कि देखो यह एक महफ़िल है बड़ी लोगों को पेश की जाती है। पिलाई जाती है। एक दर्जा उससे ऊपर आया:

﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا.﴾

वहाँ सुराहियाँ फ़रिश्तों के हाथों में नौकरों, हूरों के हाथों में हैं, गुलामों के हाथों में हैं और वे सुराहियाँ भरकर, जाम भरकर और थालियों में भरकर उनके आगे पेश कर रहे हैं आक़ा नोश फ़रमाइए:

﴿ان المتقين مفازا حدائق واعنابا وكواعب اترابا وكاسا دهاقا.﴾

वाह! वाह! क्या कमाल है ऐ मेरे नेक बन्दो! सब्र करो, तुम्हारे लिए कामयाबियाँ, हसीन बाग़ात, हरे भरे जाम, उभरे हुए सीने वाली हसीन बीवियाँ और हूरें जो तुम पर आशिक़ हैं:

﴿اترابا كانهن ياقوت ومرجان﴾

जैसे याक़ूत व मरजान हैं कि सूरज को उंगली दिखाएं तो सूरज नज़र न आए, समुंद्र में थूक डालें तो वह शहद बन जाए, दुपट्टा लहराएं तो काएनात मौअत्तर हो जाए, मुर्दों से बात करें तो उनमें ज़िन्दगी की लहर दौड़ जाए और ज़िन्दों को झलक दिखा दें तो उनके कलेजे फट जाएं, कलाईयों को अंधेरे में दिखा दें तो अंधेरे रौशन हो जाएं।

दरूद शरीफ़ पढ़ो

दुआ

اللهم لك الحمد كما انت اهله وصل على سيدنا ومولانا محمد
كما انت اهله وخيرنا ما انت اهله انك اهل التقوى واهل المغفرة.
ربنا اتنا فى الدنيا حسنة وفى الاخرة حسنة وقنا عذاب النار.

ऐ ज़मीन, आसमान, अर्श, फ़र्श के तन्हे तन्हा मालिक! या अल्लाह! हम सबके सब ने तेरे दर पर बैठकर हाथ फैलाए हैं, फ़क़ीर बन कर आए हैं, साइल बनकर आए हैं, या अल्लाह! हम सबकी तौबा क़बूल फ़रमा ले, या अल्लाह! हम सबकी तौबा क़बूल फ़रमा ले, या अल्लाह! हमने बड़े जुर्म किए और बड़े गुनाह किए, या अल्लाह! धरती का कोई चप्पा ऐसा नहीं जो हमारी नाफ़रमानी से गंदा न हो चुका हो, मेहरबानी कर दे, हमें भी माफ़ कर दे, हमारी ख़ताएं भी माफ कर दे, हमसे भी दरगुज़र फ़रमा और हमारी ख़ताओं को भी माफ़ कर दे। यह जितना मजमा आकर बैठा है सबको कबूल फ़रमा ले। इनमें अक्सर जवान हैं मेरे मौला, बूढ़े भी बैठे हुए हैं, सब के हाथ तेरे सामने उठते हैं, तेरा घर है, तेरा दर है, रात आधी होने के करीब हो चुकी है। या अल्लाह जुमा की रात है और तू पहले आसमान पर है, हमें मुहब्बत भरी नज़र से देख ले या अल्लाह हमारी तौबा की क़ुबूलियत का ऐलान कर दे, हमारी माफ़ी का ऐलान कर दे। अपने फ़रिश्तों को भी कह दे मैंने इन्हें माफ़ कर दिया है। हम सब से राज़ी हो जा।

या अल्लाह हमें अपनी मुहब्बत दे दे? दिल में उतार दे? सीने में उतार दे? अपने महबूब की मुहब्बत दे दे? दिल व दिमाग़ में

उतार दे? हमारे वजूद को या अल्लाह! नूरानी कर दे? हमें नमाज़ों वाला बना दे? हमें ज़िक्र व तिलावत वाला बना दे और जिनके माँ-बाप उठ गए है, माँ-बाप चले गए उनको माँ-बाप के लिए सदक़ा जारिया बना दे? जिनके बच्चे जवान हैं या अल्लाह! उनके नेक रिश्ते फ़रमा दे? औलादों को नेक सालेह कर दे? या अल्लाह! जो बेरोज़गार हैं उन्हें हलाल रोज़गार अता फ़रमा दे?

या अल्लाह! सूदी माशियत को हम से दूर कर दे? या अल्लाह! सूदी माशियत ने तेरे महबूब की उम्मत के चूल्हे ठंडे कर दिए और सारी दौलत दुनिया के क़ारूनों के हाथ में चली गई। मेरे मौला तूने मिस्र के क़ारून को जल्दी पकड़ लिया था, हमारे क़ारूनों ने सारा जहान लूटा है, या अल्लाह! तेरे महबूब की उम्मत के करोड़ों बच्चे रात को भूखे सो जाते हैं, उनके पेट या अल्लाह! कमर को लगे हुए हैं, माँओं की छातियाँ खुश्क हो गयीं हैं, सुबह को उनके चूल्हे ठंडे और या अल्लाह! क़ारूनों की मसहरियाँ भी सोने की, ऐ मौला! बेशक हम से नाराज़गी की वजह से तेरी सज़ा है पर अब हमें माफ़ कर दे और क़ारूनों को पकड़ ले? या अल्लाह! जिन्होंने घर-घर में हमारे बच्चों के मुँह से निवाले छीन लिए, हमारी बेटियों के सिरों से आंचल उतार लिए, हमारे घरों के चिराग़ बुझा दिए हैं, अपने चिराग़ चला लिए हैं, हमारे घरों को वीरान करके उन्होंने अपने रक़्स-कदे, बुत-कदे तामीर किए ऐ मौलाए करीम हम तुझे न सुनाएं तो किसे सुनाएं? दुनिया के बादशाह तो वैसे ही कमज़ोर हैं, हमारी फ़िक्रें भी तेरे सामने हैं, हमारी फ़रियादें भी तेरे सामने हैं, हमारी पुकारें भी तेरे सामने हैं, मौला हम कमज़ोर हैं, हमें कोई कन्धा चाहिए जिस पर सिर रखकर रो सकें और आज कोई कन्धा

ही नहीं है जिस पर सिर रखकर रोया जाए, हमें कोई कान चाहिए जिसे ग़म सुना सकें और आज लोगों के कान ही बन्द हो गए किस को सुनाएं? तू तो सुन ले? या अल्लाह! न तू सुनने से थकता है न सहारा बनने से थकता है हमारा सहारा बन जा, हम तेरे आसरे पर खड़े होना चाहते हैं, तेरे पाँव पकड़कर रोना चाहते हैं, या अल्लाह! तू सामने होता तो तेरे पाँव पकड़ लेते, बच्चे की तरह लोट-पोट होकर तुझे मनाते, हम तो घरों में देखते हैं मेरे मौला बच्चे माँओं के आगे चीख़ चिल्लाकर उन्हें मना लेते हैं, लोट-पोट होकर उल्टी-सीधी ज़िदें मना लेते हैं मेरे मौला हमारी ज़िदें तो बड़ी अच्छी हैं या अल्लाह! हमारी ज़िद तो हमारी ज़रूरत है या अल्लाह! तू रूठा हुआ है हम तुझे मनाना चाहते हैं, हमारी ज़िद मान ले? तू आज राज़ी हो जा? तेरी तरफ़ से सख़्तियाँ आई हुई हैं, हम उनकी दूरी चाहते हैं। हमारी मान ले, आज मौला बड़ा मजमा है, इतनी बड़ी पंचायत को दुनिया के बादशाह भी रद्द नहीं करते, इतना बड़ा वफ़्द किसी भी बादशाह के दर पर चला जाए, मेरे मौला और माफ़ी की दरख़्वास्त करे तो मेरे मौला वह भी माफ़ कर देगा हालाँकि वह बशर है तू तो मौला है तू रब है तू तो करीम है तू रहमान है तू तो रब्बे मूसा कलीम है, तू तो रब्बे मुहम्मद है, तू तो रब्बे ख़लील है, तू तो रब्बे हारून है, तू तो रब्बे यूशा व दानियाल है, मुहब्बतें या अल्लाह! तेरी निशानी है, रहमत तेरी चादर है, तेरी रहमत या अल्लाह तेरे गुस्से से आगे है, तेरी रहमत तेरे गुस्से से आगे है।

हमारी ज़िद को मान ले या अल्लाह! रो-रो कर गले भी बैठ गए, आँसू भी ख़ुश्क हो गए, इबादत का दामन सिकुड़ गया,

सिकुड़ते-सिकुड़ते ख़त्म हो गया है, अब तो आहों के सिवा कुछ नहीं, हाय के सिवा कुछ नहीं, ठंडी साँसों के सिवा कुछ नहीं, या अल्लाह! काफ़िर तो काफ़िर था अब मुसलमान भी तेरे दीन का मज़ाक़ उड़ाते हैं जिनको मुसलमान माँओं ने जना है वह परचम उठाकर तेरे दीन के ख़िलाफ़ बग़ावत कर रहे हैं, तेरे दीन पर क़दग़न लगा रहे हैं, तेरे महबूब की सुन्नतों का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

मेरे मालिक! तेरे दुश्मन के रूप में कोई आए तो अज़ाब का हक़दार हो जाता है मेरे मौला! गुनाह की वादियों में जाने वालों के लिए असबाब बहुत ज़्यादा बन गए हैं, तेरी तरफ़ आने वालों के लिए हिमालय पहाड़ जैसी रुकावटें खड़ी हो गयीं हैं, इन्हें हम कहाँ से दूर करें, टकरा-टकरा कर सिर फूट गए हैं। मेरे मौला चल-चल कर पाँव में छाले पड़ गए हैं, मेरे मौला दूर-दूर तक निशाने मंज़िल नहीं है, मौलाए करीम आज का बातिल ख़ुदा बन चुका है, हमें कहता है जाओ अपने रब को बुलाकर लाओ, हम तुझे बुलाने आए हैं, मेरे आक़ा हम तुझे लेने आएं हैं, मेरे मौला बच्चा भी बाहर गली में पिटता रहता है, दौड़ा-दौड़ा जाता है, रोता-रोता जाता है, अब्बा-अब्बा कहता जाता है, अम्मा-अम्मा कहता जाता है उसके माँ-बाप कितने ही गए गुज़रे हों, ग़रीब क्यों न हों, एक दफ़ा तो वे भी मुहब्बत व शफ़क़त से बेक़रार होकर बाहर ज़रूर आते हैं, मेरे मालिक सारा बातिल हमारे ताआक़्क़ुब में है, करोड़ों हमारे मासूम कट चुके, मासूम फूल जैसे चेहरे या अल्लाह हँसना भूल गए इस तरह जलकर सोख़्ता हो गए कि हमें उनकी एक हड्डी भी न मिली जिसको हम चादर पहना कर दफ़ना सकते, हमारे बूढ़े माँ-बाप उनकी लाशें बे गोर व कफ़न सारी दुनिया में पड़ी फ़रियाद कर रही हैं, हमारी बेटियों की इज़्ज़तें नीलाम हो रही

हैं, भेड़-बकरियों की तरह उन्हें बेचा और ख़रीदा जा रहा है, अपने भी ज़ुल्म कर रहे है ग़ैर भी ज़ुल्म कर रहे हैं हम भाग कर तुझे बुलाने आए हैं, या अल्लाह! हम तुझे लेने आए हैं, या अल्लाह! तू चल हमारे साथ बड़ी देर हो गई, आक़ा बड़ी देर हो गई, जब भी बातिल ख़ुदा बना है तूने उसे पकड़ा फ़िरऔन ने भी कहा था मैं ख़ुदा हूँ तूने पकड़ा था उसे मौला तू आज के फ़िरऔनों को भी पकड़ ले।

जब भी नमरूदों ने कहा हम ख़ुदा हैं, जब भी शद्दाद बोले हम ख़ुदा हैं तूने उन्हें पकड़कर दिखाया कि ख़ुदाई तेरे हाथ में है, इन बुतों के हाथ में नहीं है। आजका बातिल बड़ा ज़ोर आवर हो चुका है, वह कहता है हम सब कुछ कर देंगे, तू आकर उन्हें बता दे सब कुछ तू करता है या अल्लाह! अब हम कोई अबूबक्र नहीं कि उसे पेश कर सकें उसके तुफ़ैल मदद चाहें ऐ मेरे मौला यही गंदे उठे हुए हाथ हैं, ऐ मेरे रब! वह बनी इसराईल में तीन आदमी ग़ार में गए थे ऊपर पत्थर आ गया था, दर बन्द हुआ था तीनों ने अपने अमल का तुझे वास्ता दिया था उनके अमल थे ही ऐसे तूने उनके तुफ़ैल पत्थर हटा दिया था, अब हम कौन सा अमल तुझे पेश करें हाय! हाय! मौला पीछे मुड़कर देखते हैं तो एक अमल भी ऐसा नहीं है जो तुझे पेश कर दें कि इसके तुफ़ैल कर दे। है ही कुछ नहीं, हम वह गली के फ़कीर हैं जो कहता है अल्लाह के नाम पर दे दो, बाबा जो कहता है अल्लाह के नाम पर दे दो, बाबा मेरे मालिक! हमारे पास कोई अमल नहीं जो तुझे पेश करें न नमाज़ न रोज़ा न जिहाद न तबलीग़ न दर्स-तदरीस ने विलायत न नयाबत कुछ भी नहीं है हमारे पास ऐ मालिक!

हमारी ज़िल्लतें, पस्तियाँ, फ़क़्र, हमारी वीरानियाँ, हमारी ठोकरें, हमारी बेबसी के आँसू हैं या अल्लाह तुझे तेरे रहम का वास्ता तू उम्मत के दिन फेर दे या अल्लाह तुझे तेरी क़ुदरतों का वास्ता है हम भी तेरे दर पर ज़िद किए बैठे हैं हमारी ज़िद मान ले मेरे मौला तू सामने होता तो हम तेरे पाँव पकड़ते, तेरे क़दमों पर सिर रखते, तुझ से लिपट-लिपटकर रोते, तुझे अपने दुखड़े सुनाते, अब भी तुझे ही सुना रहे हैं तू सुन रहा है। ऐ मेरे मौला हमारी बस हो चुकी है इस उम्मत के दिन फेर दे मेरे मौला यह साल हमारा बना दे, पिछला साल बड़े दर्द देकर गया है, बड़े ग़म देकर गया है, बड़ी करबलाएं हमारे सिर पर तोड़ गया है, करबला तेरे हुसैन के लिए ठीक थी हमारे लिए तो ठीक नहीं है, हम इस क़ाबिल कहाँ हैं मेरे मौला, हम इस क़ाबिल नहीं हैं मेरे मौला।

मेरे अल्लाह! यह साल बदर वाला साल बना दे, यह साल हुनैन वाला साल बना दे, यह साल हमारी इज़्ज़तों का साल बना दे, यह साल हमारी बुलन्दियों का साल बना दे, मेरे मौला हमारी मदद को आ जा, सारा जग हमारी मज़ाक़ उड़ा रहा है तू आजा या अल्लाह आ जा मेरे मौला आजा, नहीं आना फिर भी आजा मेरे मौला, आ जा या अल्लाह किस का तुझे आँसू पसन्द आ जाए कोई हाय तो पसन्द कर ले या अल्लाह! कोई फ़रियाद तो पसन्द कर ले, या अल्लाह! किसी का आँसू तो पसन्द कर ले या अल्लाह! ऐ मस्जिद के फ़रिश्तों आओ हमारा साथ दो, हमारे रब को मनाओ, आज हम रो रहे हैं तुम भी रोओ, ऐ आज इस मर्कज़ के फ़रिश्तो! तुम भी हमारे साथ बैठे हो हमारी दुआओं में शरीक हो

O O O